❀ श्री राधावल्लभो जयति ❀

❀ श्री हिताचार्य हरिवंश महाप्रभु जयति ❀

श्री ब्रजप्रेमानन्द सागर

रचयिता—

ब्रजभाषा साहित्य सम्राट रविजावर प्राप्त आशु कविराज

चाचा श्रीहित वृन्दाबनदास जी महाराज

* * *

प्रकाशक—
श्री ब्रजरज सेवी
मुखिया ब्रजबल्लभदास शुक्ल श्रीराधाबल्लभीय
छोटी सरकार वृन्दाबन

प्रथमबार १००० }

पाटोत्सव:
कार्तिक शु० १३, सं० २०१५

❀ जय जय श्री हरिवंश ❀

वन्दना

नमो नमो राधा जप जापी ।
जिन हित कृपा प्रिया-अह्लादनि धर्म सिखावनि पद्धति थापी ॥१॥
आचारज गोस्वामि व्यास सुत मंत्र माहिली संपति आपी ।
तिनके करदत जिन जिन पाई तिनकी सुमति सार सुख धापी ॥२॥
झुर झुर मरत जु असहन निन्दक करमठ वादी क्रूर कलापी ।
परम धर्म सबकौ जु सिरोमनि तिहिं बिसरावत मूढ सुरापी ॥३॥
अगतिन कौं गति दई कृपानिधि तारे बहु कलियुग के पापी ।
जयति जयति राधा सुधाम जहाँ पहुँचाये सु भये परतापी ॥४॥
प्रभु सेवन लघु जु सुमेर सम आन धर्म हरि सीम न चाँपी ।
भक्तन सँग हरि लरे अस्व* चढ़ि विमुख भगाये तिन मति काँपी ५॥
तब बंशी, अब आचारज बपु दसधा भक्ति गिरा आलापी ।
"वृन्दाबन हित" सब धर्मन तजि हित रस रासि अकूतन नापी ॥६॥

भैया, जो निगम तत्व कौं चाहौ ।
तो छिनु छिनु ब्रज बीथिनु मांहीं मन लगाय अवगाहौ ॥ १ ॥
जोगी ग्यानी घट में खोजत क्यौं तन कष्ट बिसाहौ ।
राधा संग कुञ्ज थल खेलत धर उर बिपुल उमाहौ ॥ २ ॥
प्रेमी भक्तन सौं मिलि ताके चरित गाय लहि लाहौ ।
सब बस होहि सहज हीं ब्रज बस प्रेम चाह हलवाहौ ॥ ३ ॥
हरि लीला बेली हिय सींचौ जगत वासना दाहौ ।
"वृन्दाबन हित रूप" श्याम घन मिलि हैं राखि उछाहौ ॥ ४ ॥

---

* श्री जयमल राठौर की कथा राधावल्लभ भक्तमाल में देखिये ।

❀ 'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' की विषय-सूची ❀

लहरी	लीला		पृष्ठ संख्या
१.	श्री मंगला चरन वरनन		१
२.	,, कृष्ण बाल विनोद वरनन	[१ विश्राम मास परायण]	६
३.	,, श्रीकृष्ण दामोदर लीला वरनन		११
४.	,, कृष्ण बच्छ पालक वरनन	[२ वि० मास]	१७
५.	,, कृष्ण दधि माखन चोर आरसी लीला वरनन		२३
६.	,, कृष्ण दधि माखन चोरी द्वितीय लीला वरनन	[३ वि० मास]	३०
७.	,, राधा बाल चरित लीला वरनन		३९
८.	,, राधा बाल चरित लीला वरनन		४६
९.	,, राधा बाल चरित लीला वरनन	[४ वि० मास] [१ वि० सप्ताह]	५७
१०.	,, राधा बाल चरित लीला वरनन		६३
११.	,, राधा बाल चरित लीला वरनन	[५ वि० मास]	७२
१२.	,, राधा सांझी खेल उत्साह लीला वरनन		८०
१३.	,, राधा सांझी खेल उत्साह लीला वरनन	[६ वि० मास]	८९
१४.	,, राधा दीपक दान उत्साह लीला वरनन		९५
१५.	,, राधा भैया दौज उत्साह लीला वरनन	[७ वि० मास]	१०३
१६.	,, राथा रावलि दरस उत्साह लीला वरनन		१०८
१७.	,, राधा रावलि बाल केलि लीला वरनन	[८ वि० मास] [२ वि० स०]	११४
१८.	,, राधा खेल सुख समूह लीला वरनन		१२१
१९.	,, राधा ढूँक मीचनी खेल लीला वरनन	[९ वि९ मास]	१२९
२०.	,, कृष्ण गेंद खेल गो चारन मतौ लीला वरनन		१३८
२१.	,, कृष्ण गो चारन मंगल महूरत लीला वरनन	[१० वि० मास]	१४६
२२.	,, कृष्ण गो चारन प्रथम अनुराग लीला वरनन		१५४
२३.	,, कृष्ण भूख छाक कौतूहल लीला वरनन	[११ वि० मास]	१६१
२४.	,, कृष्ण भूख छाक कौतूहल लीला वरनन		१६८
२५.	,, कृष्ण भूख छाक कौतूहल लीला वरनन	[१२ वि० मास] [३ वि० स०]	१७५
२६.	,, कृष्ण गऊ नाम जस लाड लीला वरनन		१८२
२७.	,, कृष्ण प्रथम गो दोहन मैया मुख कहानी वरनन		१९०
२८.	,, कृष्ण गो चारन तथा ढूक मीचनी लंका आदि खेल वरनन	[१३ वि० मास]	१९८
२९.	,, कृष्ण हिम रितु शिशर रितु वसन्त होरी खेल वरनन		२०७
३०.	,, कृष्ण वसन्त रितु तथा ग्रीष्म रितु बन विहार गो चारन वरनन	[१४ वि० मास]	२१५
३१.	,, कृष्ण सावन उत्साह वरनन		२२४
३२.	,, कृष्ण वरस गांठि तथा दसहरा उत्साह वरनन	[१५ वि० मास]	२३४
३३.	,, कृष्ण दीपमालिका उत्सव वरनन		२४४
३४.	,, कृष्ण गऊ पूजन तथा गऊ खिलावन वरनन	[१६ वि० मास]	२५४
३५.	,, कृष्ण तिलक उत्कण्ठा लीला वरनन	[४ वि० स०	२६१

लहरी लीला पृष्ठ संख्या
३६. ,, कृष्ण तिलक उत्साह लीला वरनन [१७ वि० मास] २६६
३७. ,, राधा लगन मंगल वरनन २७४
३८. ,, कृष्ण मंगल लगन वरनन २८०
३९. ,, राधा हरद हाथ मंगल वरनन [१८ वि० मास] २९०
४०. ,, राधा तेल तथा बांन मंगल लीला वरनन २९७
४१. ,, राधा मंगल तथा भात मंगल लीला वरनन [१९ वि० मास] ३०४
४२. ,, कृष्ण हरद तथा हाथ मंगल लीला वरनन ३१३
४३. ,, कृष्ण तेल वरनन ३२१
४४. ,, कृष्ण मंडफ दिन को मंगल वरनन [२० वि० मास] ३२७
४५. ,, कृष्ण विवाह दिन मंगय बरात निकासी वरनन ३३७
४६. ,, खेत दाइजौ तथा वारोठी मंगल विवाह बरनन ३४५
४७. ,, लाडिली लालजू के विवाह दिन ज्यौंनार वरनन [२१वि० मास][५ वि० स०] ३५३
४८. ,, लाडिली लालजू की भांबरि मङ्गल वरनन ३५९
४९. ,, दूलह दुलहिनि गौरनी वार तथा कुंवर कलेऊ तथा सजन आवन वरनन ३७१
५०. ,, कृष्ण मङ्गल विवाह वडहार ज्योंनार तथा वर पुरी वरनन [२२ वि० मास] ३७९
५१. ,, राधिका वल्लभ पालिकचार मङ्गल वरनन ३८७
५२. ,, राधिका वल्लभ विवाद मङ्गल विदायगी वरनन ३९६
५३. ,, नव दुलहिनि दूल्ह श्री नंदपुर आगम वरनन [२३ वि मास] ४०४
५४. ,, दूलह दुलहिनि नन्दग्रह प्रवेस पुनि सुहाग राति जगावन वरनन ४१२
५५. ,, दूलह दुलहिनि कंकन छोरन तथा छरी खेल वरनन [२४ वि० मास] ४२१
५६. ,, सदा सिव जू को आइबौ दूलह दुलहिनि को लाड अधिक वरनन ४३१
५७. ,, कीर्ति वृषभान प्रेम अधिक श्रीदामा जी कौ नंदग्राम आइवौ तथा श्री यशोदा जी कौ श्रीवृषभाननन्दिनी जू प्रति लाड सनेह अधिक विदायगी वरनन[६वि.स.]४३९
५८. श्री लाडिली जू बरसाने आगमन विवाह मङ्गल वरनन [२५ वि० मास] ४४९
५९. ,, कृष्ण ब्रजराज जी गोपनि सहित श्रीवृषभान पुर आगमन गौंनौ प्रसंग वरनन४५९
६०. ,, राधाकृष्ण गौंनौ प्रसंग सजन हास विनोद तथा ज्यौंनार वरनन[२६वि० मास]४६९
६१. ,, राधाकृष्ण गौंनौ प्रसंग विदायगी वरनन ४८१
६२. ,, राधाकृष्ण गौंनौ प्रसंग श्रीनंदपुर प्रवेश तथा प्रथम समागम वरनन[२७वि.मा.]४९१
६३. ,, लाडिली लाल जी को मङ्गल शृङ्गार लाड वरनन ५०१
६४. ,, वृषभाननंदिनि नंदनंदन वसंत होरी खेल विहार वरनन [२८ वि० मास] ५११
६५. ,. राधा लाड गुन रूप उतकर्ष महरि मुख वरनन तथा श्रीवृषभानपुरको आ० व०५२४
६६. ,, राधा तात ग्रह प्रवेश पुरजन परिवार मिलन आनंद वरनन[२९ वि.मास] ५३५
६७. ;, राधावल्लभ रास रचन बन विहार सज्मा सुख वरनन ५४५
६८. ,, महरि मनोरथ पत्रिका श्रीराधा कृष्ण लीला सूचनका वरनन ५५६

सप्ताह पारायण के प्रत्येक विश्राम लहरी ९-१७-२५-३४-४७-५७-६८ (७ वि०) लहरी की समाप्ति पर निर्णीत हैं। मास पारायण के प्रत्येक विश्राम लहरी २-४-६-९-११-१३-१५-१७-१९-२१-२३-२५-२८-३०-३२-३४-३६-३९-४१-४४-४७-५०-५३-५५-५८-६०-६२-६४-६६-६८ लहरी की समाप्ति पर निर्णीत हैं।

❋ प्रकाशक का निवेदन ❋

"श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर" के प्रकाशन के सम्बन्ध में कुछ लिखते हुए सर्व प्रथम मुझे अपने परम पूज्य गुरुदेव श्री राधाबल्लभीय सम्प्रदायाचार्य पूज्यपाद गोस्वामी श्री १०८ श्री बनमालीलाल जी महाराज छोटी सरकार का पुनीत स्मरण होता है कि जिनकी पवित्र प्रेरणा एवं आज्ञा से मैं इस प्रकाशन में प्रवृत्त हुआ। पूज्य गुरुदेव, 'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' के रचियिता चाचा श्री वृन्दाबनदास जी के गुरु प्रातःस्मरणीय गोस्वामी श्री १०८ श्री हितरूपलाल जी महाराज के वंशज थे। आप उच्च कोटि के भजनानन्दी, परम रसिक एवं समर्थ प्रचारक थे। अनेक व्यक्ति आपके आकर्षक व्यक्तित्व तथा भजनानन्दी स्वरुप के दर्शन मात्र से श्रद्धावनत होकर आपकी शरण में आजाते थे। समय एवं सहयोग आदि के अभाव के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन शीघ्र न हो सका और गत वर्ष श्री महाराज जी निकुञ्ज बासी होगए। 'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' उन्हीं के घर की वस्तु है। उनकी वस्तु का प्रकाशन उन्हीं के पवित्र कर कमलों में समर्पित करते हुए उनके आशीर्वाद की अभिलाषा करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव के स्मरणार्थ उनका चित्र भी ग्रन्थ के साथ प्रकाशित किया जारहा है जिससे कि प्रेमी जनों को उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता रहे।

'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' के प्रकाशन का विचार तो मन में था ही सहसा भक्तवर श्री धर्मचन्द जी रिटायर्ड टी. ऐम. रेलवे अजमेर तथा श्री कन्हैयालाल जी रिटायर्ड प्रिंसिपल गवर्नमेंट कालेज अजमेर से परिचय हुआ। कुछ दिन वाद उक्त सागर के प्रकाशन की चर्चा भी उनसे हुई। मैंने उनसे इस कार्य में सहयोग की अपेक्षा की और उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी। आपने 'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' की प्रतिलिपि तयार की और यथासाध्य कठिन स्थलों की टिप्पणी भी लिखी। आप दोनों सज्जनों ने ग्रन्थ के प्रूफ संशोधनादि कार्य में भी बहुत परिश्रम किया है एवं टिप्पणी लिखने में काफी सावधानी रखी है फिर भी सम्प्रदायिक भावना की दृष्टि से यदि कुछ त्रुटियां रह गई हों तो पाठक उन्हें सुधार लेने की कृपा करें। मैं दोनों सज्जनों के प्रेमपूर्ण सहयोग के लिये कृतज्ञ हूँ।

पूर्ण सावधानी रखने पर भी ग्रन्थ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये शुद्धि पत्र लगा दिया गया है। कृपालु पाठक सुधार लें।

ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व होने के कारण श्री चाचा वृन्दाबनदास जी का प्राचीन एवं सुन्दर चित्र भी ग्रन्थ के साथ प्रकाशित किया जाता है। यह चित्र आपके गुरुदेव के साथ में है। इस चित्र के लिये अनन्त श्री गोस्वामी श्री हित रूपलाल जी महाराज के वंशज श्री राधाबल्लभीय सम्प्रदायाचार्य पूज्यपाद गोस्वामी श्री गोवर्धनलाल

जी महाराज तथा गोस्वामी श्री देवकीनन्दन लाल जी महाराज तथा गोस्वामी श्री नवललाल जी महाराज बड़ी सरकार से प्रार्थना की गई तत्पश्चात श्री गोस्वामी नवललाल जी महाराज से मुझे यह चित्र प्रकाशनार्थ प्राप्त हुआ है। एतदर्थ मैं आप सभी का कृतज्ञ हूँ। चित्र दर्शन से रसिक जन तृप्त होंगे। ग्रन्थ की प्रकाशकीय त्रुटियों के लिये क्षमा याचना करते हुए मैं रसिक जनों की कृपा का अभिलाषी हूँ।

❀ चित्र–परिचय ❀

(१) श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य पूज्यपाद गोस्वामी श्री १०८ श्री बनमाली लाल जी महाराज, छोटी सरकार, वृन्दाबन जिनकी पवित्र प्रेरणा एवं आज्ञा से श्रीव्रज प्रेमानन्द सागर का प्रकाशन हुआ है।

(२) श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय प्रवर्तक आचार्य वर अनन्त श्री गोस्वामी श्री हित हरिवंश महाप्रभु के रास मण्डल (गोविन्द घाट) पर श्री चाचा जी के गुरुदेव पूज्य गोस्वामी श्री हितरूपलाल जी महाराज विराजमान हैं और तन्मय होकर रसिकजनों को अपना रसमय वचनामृत पान करा रहे हैं। पास में ही आपके प्रतापी पुत्र पूज्य गोस्वामी श्री किशोरीलाल जी महाराज विराज रहे हैं। और उनके पास श्री चाचा वृन्दाबनदास जी हैं तथा सामने श्री गोपालदास जी, श्री कृष्णदास जी, श्री प्रेमदास जी तथा श्री काशीदास जी आदि तत्कालीन रसिकजन पूज्य गुरुदेव का वचनामृत पान कर रहे हैं।

श्री व्रज रज सेवी
मुखिया व्रजवल्लभदास शुक्ल
(छोटी सरकार)

श्री वृन्दाबन
श्री पाटोत्सव
कार्तिक शु० १३, सं० २०१५.

श्रीराधावल्लभीय-सम्प्रदायाचार्य, श्रीहितकुलभूषण,
पूज्यपाद गोस्वामी श्री १०८ श्रीवनमालीलालजी महाराज
छोटी सरकार, वृन्दावन

[प्रकाशक के श्रीगुरुदेव]

आविर्भावः— **निकुञ्ज प्रवेशः—**
मार्गशीर्ष शु० १२ सं० १९२६ कार्तिक कृ० ३ सं० २०१४

❀ श्री जी ❀

प्रस्तावना

"श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर" श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रसिद्ध रसिक अनन्य श्री चाचा वृन्दाबनदास जी की सरस एवं भाव पूर्ण रचना है। आप श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आचार्य, श्री हितावतार, प्रातःस्मरणीय गोस्वामी श्री १०८ श्रीहित रूपलाल जी महाराज के कृपापात्र शिष्य थे। आपके जन्म सम्वत् का ठीक पता नहीं चलता सम्प्रदाय के इतिहास वेत्ताओं की खोज के अनुसार विक्रम सम्वत् १७६५ के आस पास आपका जन्मकाल निश्चित किया गया है। आप किस वर्ण के थे, किस आश्रम के थे और कहाँ के निवासी थे ये सब प्रश्न अभी इतिहासज्ञों की खोज के विषय बने हुए हैं। आपकी वाणी के आधार पर ऐसा अनुमान होता है कि आप जाति के ब्राह्मण, ब्रज के ही निवासी और गृहस्थ रहे होंगे। आश्चर्य है कि जहां आपने 'अनन्य परिचावली' तथा 'श्रीहितरूप चरित्र वेलि' आदि ग्रन्थ लिखकर सम्प्रदाय एवं अपने पूज्य गुरुदेव के पवित्र इतिहास का वर्णन किया है वहां अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा। यह आपके उदात्त चरित्र का एक उदाहरण है। प्रतीत होता है कि आप प्रसिद्धि से दूर रहना चाहते थे। श्री सेवक जी ने लिखा है कि 'जे श्रीहरिवंश प्रेम रस भिले, क्यों सोहैं लोगन में मिले' अर्थात् जो श्री हरिवंश महाप्रभु के प्रेम रस में निमग्न हैं वे कुल परम्परादि के द्वारा लोगों में मिले हुए अच्छे भी नहीं लगते। उनका सर्वस्व तो श्री प्रियाचरणारविन्दों पर न्यौछावर होकर सफल हो जाता है।

श्री चाचा जी का ब्रजभाषा में अति विपुल एवं नव नव भावोन्मेषी विशाल साहित्य उपलब्ध है। अब तक आपके प्रकाशित और अप्रकाशित लगभग १७५ ग्रन्थ प्राप्त हो चुके हैं। जो सम्प्रदाय के आचार्य चरणों एवं वैष्णवों के पास सुरक्षित हैं। श्रीराधा रस प्रधान उपासक होने के कारण आपका बहु संख्यक साहित्य निकुञ्ज परक है। आपके १४ अष्ट याम अति प्रसिद्ध हैं। इनमें श्रीजी की निकुञ्जगत अष्टयाम सेवा का अद्भुत वर्णन किया गया है। इन अष्टयामों में आपकी प्रौढ रचनाओं का दर्शन होता है। इसके अतिरिक्त आपके अनेक ग्रन्थ, सैंकड़ों बेलियां तथा श्रीजी की नित्य-नैमित्तिक सेवा से सम्बन्धित हजारों भाव पूर्ण पद विद्यमान हैं जिनमें निकुञ्ज रस का विलक्षण वर्णन किया गया है।

श्री चाचा जी ने प्रिया प्रियतम के निकुञ्ज रस वर्णन की भांति ही उनके ब्रजरस का वर्णन भी अति सरसता से किया है। आपके ब्रज रस परक अनेक ग्रन्थों में 'श्री राधा लाड सागर' तथा 'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' ये दो ग्रन्थ अति प्रसिद्ध हैं। प्रथम प्रकाशित हो चुका है और द्वितीय सम्प्रति प्रकाश में आरहा है। जन श्रुति तो यह है कि श्रीचाचा जी ने ७ सागरों की रचना की है किन्तु अभी तक की खोज में प्राप्त २ ही हो सके हैं।

श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर कथा शैली से लिखा हुआ अति सरस भाव पूर्ण प्रबन्ध है। इसमें श्री चाचा जी के सरस हृदय की अनेक सुन्दर भावनाऐं साकार हुई हैं। श्री राधा-

कृष्ण के शैशव से लेकर विवाह पर्यन्त की सुन्दर लीलाओं का समावेश इसमें किया गया है। इस ब्रज प्रेमानन्द सागर की ललित लहरों में पड़ा हुआ रसिक पाठक कभी ऊबता नहीं प्रत्युत: उत्तरोत्तर उत्कंठित होता जाता है। इस श्री राधा केलि कथा सुधासागर की महा वीचियों से आन्दोलित प्रेमी रसिक का मन श्री कालिन्दी तट गत निकुञ्ज मन्दिर के सुन्दर अलिन्द (प्राङ्गण) में प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार उसे सहज ही श्रीराधा किङ्करीत्व की प्राप्ति हो जाती है। यह श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर ६८ लहरियों और ६१४७ छन्दों (दोहा चौपाइयों) में समाप्त हुआ है। इसकी ३४ वीं लहरी तक श्री राधाकृष्ण की सुमधुर बाल लीलाओं का वर्णन है और इसके आगे विवाह, गौना, रास, बनविहार, शय्यासुख आदि अनेक रस पूर्ण प्रसंग वर्णित हुए हैं। जिन्हें पढ़कर जीव की सहज ही श्रीराधा चरणारविन्दों में रति उत्पन्न हो जाती है।

यहाँ यह जिज्ञासा हो सकती है कि निकुञ्ज रस रसिक श्री चाचा जी के द्वारा ब्रज रस का वर्णन कैसे संगत है और उसका लक्ष क्या है ?

इस विषय में ब्रज और निकुञ्ज रस की स्थिति समझनी होगी। इसे श्री चाचा जी ने इसी ग्रन्थ में समझाया है। यथा—

लहरी—ब्रज वृन्दाबन क्रीडत सदा ।। बरसत अतुलित सुख सम्पदा ।
देहरि दीपक धरिये जैसे । यह वह समुझि लीजिये ऐसे ।।
घर में के घर ही में जानें । आँगन के आँगन ही मानें ।। (ल० १-१७।१८)

अर्थात एक ही नित्य विहारी श्री प्रिया प्रियतम ब्रज-वृन्दाबन में सदा क्रीडा करते हैं एवं अतुलित सुख सम्पत्ति की वर्षा करते रहते हैं। इनके और इनकी लीला के स्वरूप को "देहली-दीपक" न्याय से समझना चाहिये। जैसे देहली पर रखा हुआ दीपक घर में भी प्रकाश करता है और आँगन में भी। घर के लोग उस दीपक को घर में मानते हैं और आँगन के लोग आँगन में। वस्तुत: प्रकाश एक है और उसका आधार भी एक ही है। इसी प्रकार ब्रजरस और निकुञ्जरस एक ही प्रिया प्रीतम के प्रकाश स्वरूप हैं। भिन्न नहीं। अत:—

ह्याँ, व्हाँ राजत इक रस नित्त । धर्मी मरमी समुझत चित्त ।।
(ब्र० सा० ल० १-१६)

यहाँ और वहाँ—ब्रज और निकुञ्ज में एक रस होकर ही आप सुशोभित होरहे हैं। इस बात को मर्मज्ञ धर्मी ही अपने चित्त में समझते हैं। इससे यह निष्पन्न हुआ कि श्री चाचा जी का ब्रज लीला वर्णन करना कुछ असंगत नहीं सुतरां सुसंगत ही है।

यहां एक बात और भी ज्ञातव्य है कि श्री चाचा जी का ब्रज रस वर्णन अन्य महानुभावों के ब्रज रस वर्णन से भिन्न है। आपका ब्रज रस वर्णन श्री राधावल्लभीय सांचे में ढला हुआ है। सामान्यतया ब्रज रस वर्णन में श्रीकृष्ण की प्रधानता होती है किंतु आपके ब्रज रस वर्णन में श्री राधा की प्रधानता है। श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर के किसी भी अंश को पढने से श्री राधा की ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। अत: ब्रज रस में भी श्री राधा की प्रधानता स्थापित करना आपका उद्देश्य रहा है।

सामान्य ब्रज रस वर्णन में श्रीकृष्ण विषय हैं और गोपीजन आश्रय हैं । श्री चाचा जी के ब्रज रस वर्णन में श्रीराधा विषय हैं और श्रीकृष्ण आश्रय हैं । यह मौलिक भेद समझने योग्य है । फलितार्थ में जहाँ सामान्य ब्रज रस की अनुभूति से श्रीकृष्ण चरण प्रधान प्रीति का उदय होता है वहां श्री चाचा जी की ब्रज रसानुभूति से श्री राधा चरण प्रधान प्रीति का उदय होता है । ब्रज लीला में ही श्री राधा रति उत्पन्न करा देना श्री चाचा जी का लक्ष है जिसका आस्वादन निकुञ्ज लीला में होता है ।

एक बात और भी उल्लेखनीय है कि श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रवर्तकाचार्य अनन्त श्री गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु ने नित्य नूतन शृङ्गार रस के लिये श्री राधाकृष्ण की उपासना नित्य दूलह-दुलहिन रूप में अपनी सम्प्रदायमें स्थापित की है । वे नित्य रासलीला के प्रसिद्ध उपासक हैं । किन्तु यह रास लीला नित्य दूलह-दुलहिन की रास लीला है । यह भाव आचार्य चरण की श्रीमुख वाणी 'श्रीहित चौरासी' से स्पष्ट है । यथा—'खेलत रास दुलहिनी दूलहु' इत्यादि । श्री चाचा जी ने आपके इस दूलह-दुलहिन भाव का आस्वादन ब्रज लीला में भी किया है उन्होंने इसी सागर की प्रथम लहरी में लिखा है कि:—

लीला चरित अनेक विधि करे सुवन ब्रज राय । जो जाकों प्यारौ लगै सो सुख लेहु अघाय ।
नन्द और वृषभानु घर सजन सगारथ रीति । श्री हरिवंश जु मन रुची इहिं नाते दृढ प्रीति ॥

अर्थात् आनन्दकन्द श्रीकृष्ण ने अनेक प्रकार के लीला चरित्र किये हैं । उनमें जो जिसको प्रिय लगे वह उसका सुखानुभव करे । श्री हरिवंश महाप्रभु जी के मन को रुचे हुए प्रिया प्रियतम के दूलह-दुलहिन भाव सम्बन्ध को लेकर ही श्रीनन्द और वृषभानुजी के घर की सजन सगारथ रीति यानी वैवाहिक रस पद्धति में मेरी दृढ़ प्रीति हुई है ।

तात्पर्य यह है कि अपने आचार्य चरण की रसमयी भावना के अनुसार ही श्रीचाचा जी ने ब्रज रस का वर्णन भी किया है । आपके ब्रज रस वर्णन में दूलह-दुलहिन भाव द्वारा नित्य नूतन शृङ्गार रस की अनुभूति ही चरम लक्ष है । इस रहस्य को समझने के लिये श्री चाचा जी ने इसी ग्रन्थ की प्रथम लहरी में श्री हरिवंश कृपा का स्मरण किया है और उसीको साधन बतलाया है । यथा—

श्रीहरिवंश कृपा बली जाकी ओरी होय । ब्रजरस लीला सिन्धु तें रतन काढि है सोय ॥

अब तक श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर प्रेमी जनों के लिये दुर्लभ था । इस ग्रन्थ का प्रकाशन करके सम्प्रदाय के परम प्रचारक मुखिया श्री ब्रजवल्लभदास जी शुक्ल ने बड़ा उपकार किया है । इसके लिये मुखिया जी प्रशंसा के पात्र हैं ।

आपके पिता विद्वद्वर पं० श्री प्रियादास जी शुक्ल भी सम्प्रदाय के परम अनुरागी एवं समर्थ प्रचारक थे । श्री मुखिया जी अपने पूज्य पिता जी का अनुकरण कर रहे हैं यह प्रसन्नता का विषय है । श्रीजी आपको उत्तरोत्तर सम्प्रदाय की सेवा करने की शक्ति दें ।

प्रेमी रसिक जनों से साग्रह अनुरोध है कि वे श्रीब्रज प्रेमानन्द सागर के पठन, श्रवण, मननादि द्वारा अपने हृदय को सरस बनाते हुए श्रीजी की कृपा के भाजन बनें ।

श्री वृन्दाबन
श्री पाटोत्सव
कार्तिक शु० १३, सं० २०१५.

श्रीराधावल्लभीय-सम्प्रदायाचार्य—
श्री व्रजजीवनलाल गोस्वामी
(छोटी सरकार)

हमारा दृढ़ विश्वास है कि—

लीला रसिक चाचा वृन्दावनदास जी महाराज की प्रथम कृति जो अब तक अप्रकाशित दशा में थी, पाठकों के लोचनगोचर हो रही है। इसमें सन्देह नहीं कि यह ग्रन्थ रत्न नित्य किशोर, दिव्य दम्पति, नित्य निभृत निकुञ्ज क्रीडारसासक्त, परस्परानुरागी श्रीहिततत्त्वात्मक, अभिन्न युगल श्री राधावल्लभलाल की बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था की भक्तजनानुग्रहार्थ ब्रज में प्रकाशित लीलाओं को अत्यन्त स्वाभाविक रीति से सरल भाषा में लोकभोग्य बनाकर उपस्थित करता है। यह ब्रजप्रेमानन्द सागर केवल रसमर्मज्ञ गूढ़भाव वेदी प्रमियों को ही नहीं अल्पज्ञ साधारण जनता के हृदय को भी आकृष्ट करके रसोन्मुख एवं रसासक्त करने के लिये है। अब तक हमारी दृष्टि में ब्रजलीला सम्बन्धी जितने ग्रन्थ आये हैं, उनके साथ तुलना करने पर यह बात निःसङ्कोच कही जा सकती है कि ब्रज की शुद्ध संस्कृति का निरूपण करने में यह बेजोड़ है। ब्रज की रहन सहन, संस्कार, त्यौहार, व्रतपर्व, लेना देना, विवाह आदि किस रीति से सम्पन्न होते हैं इन सब का—बहुत छोटी छोटी बातों का भी इसमें विशद वर्णन है। इसको पढ़ते पढ़ते अनजान में ही मन खिंच कर ब्रज के गावों में चला जाता है और कभी श्री यशोदा मैया के साथ तो कभी श्री कीर्तिरानी के साथ, कभी सखाओं के तो कभी सखियों के यूथ में मिलकर संसार को छोड़ देता है एवं श्री लाड़िली लाड़िले लाल के ललित ललित, लोल लोल, लीला सुधा सिन्धु में उन्मज्जन-निमज्जन करने लगता है। यही तन्मयता गाढ़ होने पर अप्राकृत दिव्य रसास्वादन के योग्य चित्त भूमि का निर्माण करती है। योग्य भूमि में ही भगवत्कृपा एवं आचार्य कृपा का आविर्भाव होता है। कृपा ही केवल कृपा ही रस दान करने में समर्थ है।

इस दुर्लभ ग्रन्थ की सुलभता युगल सरकार के अनुग्रह का ही आविर्भाव है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इसके अखण्ड, सप्ताह, पक्ष, मास आदि के क्रम से पाठ अध्ययन, एवं रसास्वादन से भक्तजन लौकिक, पारलौकिक तथा अलौकिक सर्वविध लाभ के भाजन बनेंगे।

अखण्डानन्द सरस्वती
दावानलकुण्ड, वृन्दावन

:::: सागर विषयक अपनी बात ::::

पूज्यपाद चाचा श्री वृन्दाबनदास जी के प्रस्तुत ग्रन्थ श्री ब्रजप्रेमानन्द सागर के विषय में परिचय देने से पूर्व उनके श्री गुरुदेव गोस्वामी पाद श्रीहित रूपलाल जी जिनके दर्शन ग्रन्थ में दिये गए चित्र में पाठक करें—के सम्बन्ध में कुछ यशोगान श्रीचाचा जी की कृपा प्राप्ति का हेतु होगा। यहाँ उनके दो पद उद्धृत करके पाठकों को उनके गुरुदेव के हित मय स्वरूप का परिचय कराया जाता है।

पद— अनुभव कथा कही नहीं जाइ। शब्द अर्थ निजु सदन विराजत दरशतु जिहि २ भाइ॥ सुरत सहेली बुद्धि अकेली गुरु अनुगत मन लाइ। जै श्री रूपलाल हित रूप रसासव छकि छकि प्रेम बढाइ॥

पद— सब जग सोवै प्रेमी रोवै नैंन समोवै धोवै। नेह लुकोवै आनंद बोवै हित जोवै दुख खोवै॥ छिन २ गावै हरिहि लडावै विरह व्यथा तन भोवै। जै श्री रूपलाल हित चित नित रस वश मिलै तबहिं कछु होवै॥

इस पद में "चित नित रस वश मिलै" में एक तात्विक अनुभव लक्षित है जो श्री गीता के वचनानुसार सूचित करता है कि:—'रस वर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते'...

श्री चाचा जी का ग्रन्थ लाड सागर अभी छपा नहीं था कि दास ने यहां उपासना की सहायता के लिये इस की महिमा सुन कर खोज की तो एक सज्जन से हस्तलिखित प्रति प्राप्त करने और लिखने को मन किया। अभी व्यवस्था कर रहा था तो पता चला कि उस के छपने की आयोजना श्री रतनलाल जी सेठ बेरी वालों द्वारा होगई है। छप जाने पर उनकी कृपा से दास को प्रति प्राप्त हुई। लाड सागर के आस्वादन करते समय प्रत्येक पद पर भावार्थ लिखने का उत्साह अपने अन्तः सुख के लिये हुआ। इन भावार्थों के लिखने की चर्चा जब श्री ब्रजवल्लभ जी मुखिया से हुई तो उन्होंने श्री चाचा जी के प्रस्तुत ग्रन्थ श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर की निज की एक हस्तलिखित प्राचीन प्रति आस्वादन को दी। जिसे स्वाध्याय के बाद दास को पता चला कि श्री १०८ गो० तुलसीदास जी के मानस की तरह यह ग्रन्थ युगल श्री राधाकृष्ण उपासकों के नित्य पाठ तथा श्री मद्भागवत की तरह पारायण की घरेलू निधि है। क्योंकि यह सरल भाषा में दोहे चौपाइयां में प्रबंधित है।

श्री लाड सागर राग रागनियों तथा क्लिष्ट शब्दों तथा निगूढ भावों में है। इस भाव को मन में रख कर एक बार आद्यन्त आस्वादन करके दास ने लिखाई कुछ टिप्पणियों के साथ अपने पास रखने के लिये प्रारम्भ कर दी। उस समय जबकि २३ लहरी लिख चुका तो इस ग्रन्थ की चर्चा दास ने न्यस्त दंड श्री १०८ स्वामी अखंडानन्द जी सरस्वती से की और यह प्रार्थना की यह सागर युगल उपासकों के लिये मानस की तरह अखण्ड पाठ आदि का कार्य सम्पादन कर सकता है।

जब इस सागर की चर्चा पूज्यपाद इष्टधाम अनन्य श्री १०८ बाबा प्रियाशरण जी महाराज से सत्संग में हुई तो उनको बहुत प्रसन्नता हुई कि अधिक सरल होने से इस सागर के छपने से रसिकों तथा जनता का उपासना सम्बन्धी विशेष हित होगा।

प्रतिलिपि की समाप्ति के बाद १ साल से ऊपर यह प्रति श्री मुखिया जी द्वारा टिप्पणि आदि निरीक्षण के लिये श्री हित राधावल्लभीय गोस्वामी स्वरूपों के पास रही। फरवरी ५८ में दास से श्री मुखिया जी ने इसके प्रकाशन की कुछ आयोजना की चर्चा की और उनकी इच्छानुरूप व्यवस्था होगई जिसमें दास की सेवा भाव से सहयोगता सहर्ष स्वीकार की गई। मार्च में यह कार्य प्रारम्भ हुआ। मेरे हाथ की लिखी प्रति होने से प्रूफ संशोधन का सौभाग्य दास को मिला। तथा चौथी बार इन सरस हृदयद्रावी प्रेम-वर्धक युगल लीलाओं को आस्वादन करने का सहज सौभाग्य मिला। इस ग्रन्थ के प्रथम लिखने पुनः संशोधन–प्रूफ के समय भी मूल के साथ आवृत्ति कराने में मेरे अग्रज तुल्य गुरु भाई श्री कन्हैयालाल जी माथुर रिटायर्ड प्रिंसिपल गवर्नमेंट कालेज अजमेर का बड़ा घना सहयोग रहा तथा उन्हें भी उपासना की दृष्टि से बहुत सुख मिला। इसके प्रकाशन में मुख्य उत्साह तथा उद्देश्य श्री राधाकृष्ण उपासकों को एक ऐसे ग्रन्थ की प्राप्ति होना है जो २०० साल पूर्व श्री चाचा जी ने जनता के भविष्य कल्याण के लिये अपने अनुभव राज्य में सब से पहले इसे ही लिखा। उपासना में एक निष्ठता ही सफलता का प्रधान अंग माना गया है। जैसे श्री राघवेन्द्र राम जी के भक्तों के लिये श्री गोस्वामी जी के ग्रन्थ हैं ऐसे ही ब्रज के साहित्य के ग्रन्थ श्री युगल उपासकों के लिये हैं। परन्तु जितने ग्रन्थ सब रसिक आचार्यों के अब तक छपे और दास ने सात साल धाम बास में आस्वादन किये सभी अपने २ प्रसंग में पूर्ण हैं फिर भी मेरी यह धारणा है कि इस ग्रन्थ में श्री युगल के जन्म से लेकर विवाह पर्यन्त जिन समस्त अनुपम लीलाओं का क्रम बद्ध सरल दोह चौपाइयों में उल्लेख है वह कहीं भी न होने से गृहस्थी, बालक, बालिका तथा माताएँ जो भाषा का साधारण बोध रखते हैं अपने भावों की तुष्टि के हेतु इससे लाभ उठा सकेंगे। इसका अखण्ड पाठ सप्ताह मास पारायण श्रीमद्भागवत की तरह किया जा सकता है जिसके लिए उचित सूची इस ग्रन्थ में अन्यत्र दी हुई है।

इस ग्रन्थ की लिखाई आदि कार्यों में दास को व्यक्तिगत इष्ट आचार्य रसिक कृपा की प्राप्ति हुई वह स्वसंवेद्य होने पर भी उसका कुछ प्रसाद उन पदों में है जो कई स्थानों पर स्फुरित हुए इस ग्रन्थ में कहीं २ दिये गए हैं। जो मधुर कवि श्री चाचा जी के आनुगत्य का फल है। प्रूफ संशोधन एक जटिल सा काम है। जीवन में कभी इसका अवसर नहीं बना था दास ने प्रयत्न तो भरसक किया है कि अशुद्धि न रहें फिर भी जहाँ रह गई हैं वहाँ के लिये शुद्धि पत्र छाप दिया गया है-पाठकों से प्रार्थना है कि अशुद्धियों को प्रथम यथा स्थान शुद्ध करके पाठ करें। इस ग्रन्थ को प्रोत्साहित करना श्री युगल उपासकों का काम है कि जल्दी से जल्दी फिर छपे। मेरी यह सम्मति है कि कन्याओं को दहेज में एक प्रति प्रत्येक गृही परमार्थ दहेज के रूप में साथ देकर अपने इष्ट से ममत्व की वृद्धि करें। ग्रन्थ के रस का यह प्रभाव देखा कि १०३ ज्वर में भी इसे उत्साह से लिखा करता था। माताएँ घरेलू मांगलिक समय २ की रीतियों को इसमें पढ़कर आचरण करें और प्रचलित कुरीतियां तज दें तो गृहस्थ सुखों की वृद्धि होगी।

पुस्तक छपने के समय इसे कहाँ छपाएँ यह प्रश्न धाम महिमा को सन्मुख रखकर यहाँ ही श्रीयुत दानविहारीलाल जी शर्मा विद्यालय प्रेस की विशेष सहायता से श्री बन के छोटे प्रेस होने पर भी यहीं से प्रकाशित हुआ।

धर्मचन्द मुलतानी

मन्दिर दावानल विहारी दावानल कुंड श्रीधाम वृन्दाबन

श्रीहित रासमण्डल (गोविन्द घाट) पर रसिक-गोष्ठी

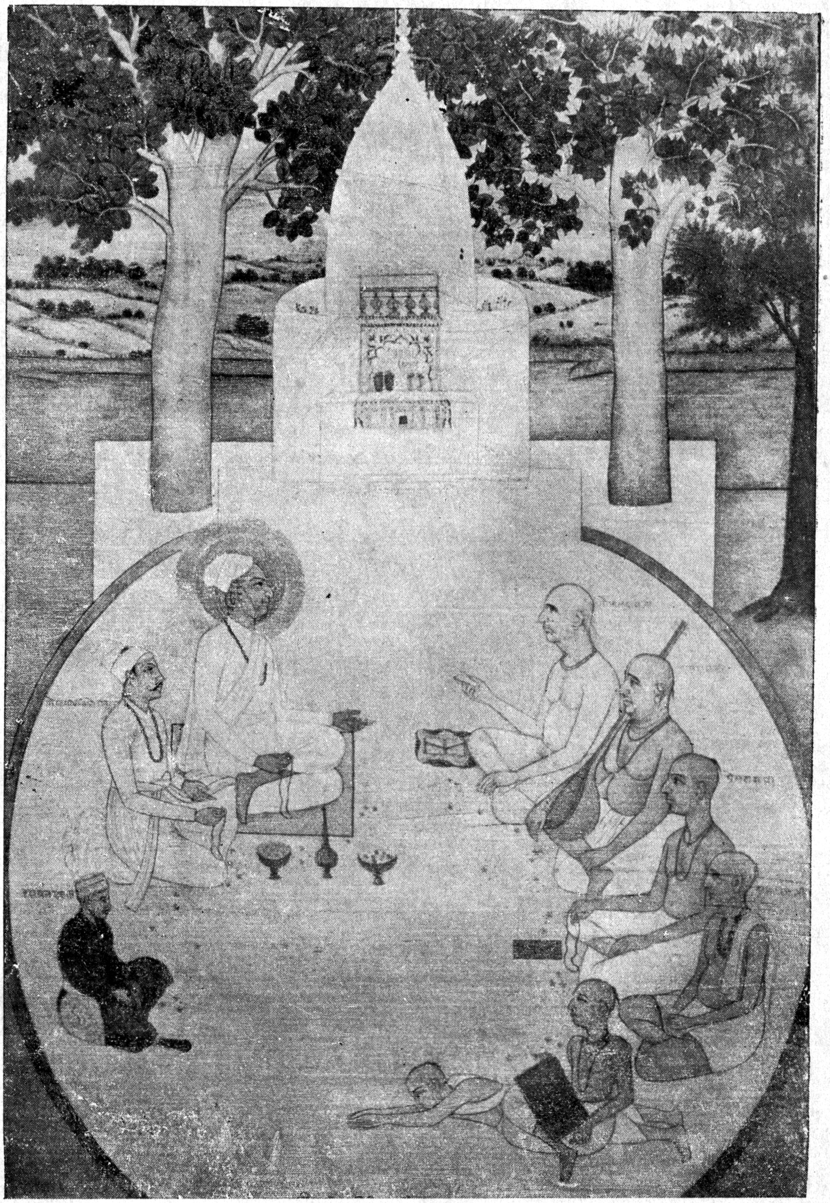

बाँई ओर :—आचार्यवर गोस्वामी श्री १०८ श्री रूपलालजी महाराज,
(ऊपरसे) आचार्यवर गोस्वामी श्री १०८ श्री किशोरीलालजी महाराज,
चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी।
दाहिनो ओर :—श्री गोपालदासजी, श्री कृष्णदासजी, श्री प्रेमदास जो,
(ऊपरसे) श्री काशीदासजी आदि ।

* श्री हितहरिवंशचन्द्रोजयति *

।। श्री हित राधावल्लभोजयति ।।

।। श्री हित रूप गुरुभ्यो नमः ।।

अथ श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर

(चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत)

⁂

दोहा—बन्दौं हित जो जुगल उर, पर हित भयो सदेह ।
गौर श्याम को गोप्य अति, बरन्यौ विदित सनेह ।।१।।
रस पद्धति कीनी प्रचुर, करुना कुशल कृपाल ।
धनि रसिकनि मनि चक्कवै, प्रनितनि के प्रतिपाल ।।२।।
व्यास वंश उद्दोत कलि, तिमिर विध्वंशन काज ।
प्रचुर करी रस रूप प्रभु, भक्ति सु रसिक समाज ।।३।।
गायौ नित्य विहार रस, हित कौ अद्भुत खेल ।
हित धर्मी मरमी लखैं, गाढ़ हिलग कौ मेल ।।४।।
तुम समरथ चित वृत्ति कौं, राख्यौ है जिहिं ठौर ।
कृपा पात्र ही समुझि हैं, भेदी नहिं कोउ और ।।५।।
अति दुर्लभ वह देस है, कृपा एक ही साध्य ।
वह रस खेल जु तब लखैं, तुम पद सुविधि अराध्य ।।६।।
व्यास नन्द मम सिर धनी, ढ़रि हौ कृपा सुढ़ार ।
सुमति उदित तब होहिगी, और न वनतु विचार ।।७।।
ब्रज रस अति गरुवो कह्यौ, सजन सगारथ[1] रीति ।
हित वचननि ही समझि हैं, जा उर गाढ़ी प्रीति ।।८।।
श्री हरिवंश कृपा बली, जाकी ओंरी होइ ।
ब्रज रस लीला सिन्धु तें, रतन काढ़ि हैं सोइ ।।९।।

---

[1] नाते ।

॥ चौपाई

(श्री) तारा तनय विदित मम ईश❀करौ अनुग्रह कर धरि शीश।
तुम प्रिय दम्पति चरित जु कथा❀सो प्रेरौ मम बानी जथा १०
सब लाइक बरदाइक नागर❀जग में निर्मल सुजस उजागर।
तुम प्रसाद बिभु कृपा जु आगर❀बरनौं ब्रज प्रेमानन्द सागर ११
गुरु हित रूप सुदृष्टि जु करौ❀मेरे सकल मनोरथ भरौ।
भांन सुता पद बल जु गरूर❀कलि के विघन किये सब चूर १२
राधा पद कियौ दृढ़ विश्वास❀आँन धर्म की करी न आस।
धनि गौरंग[2] विरद जिहिबांकौ❀भजनमांहिदियौपरननझांकौ[3] १३
हित पथ धीर टेक दृढ़ गही❀दै आंनक[4] निर्भय निर्बही।
अस समरथ गुरु कृपा स्वरूप❀मोकौं दीजै सुमति अनूप १४
ब्रज रस चरित फुरैं मम हीय❀जे लागैं रसिकनि कों प्रीय।
ब्रज वृन्दाबन लीला जैसैं❀गुरु प्रसाद कहौं ब्यौरौ[5] तैसैं १५
श्री राधावल्लभ कुंजविहारी❀सब अवतारनि के अवतारी।
नित्य केलि वृन्दाबन[1] धाम❀जहां विराजत श्यामा श्याम १६
रस लीला माहिली[6] अगम्य❀दम्पति[7]खेल रचैं अति रम्य।
निगम हुँ परस्यौ नांहि न जास[8]❀कहौ कौन करि सकै प्रकाश १७
ब्रज वृन्दाबन क्रीड़त सदा❀बरषत अतुलित सुख संपदा।
देहरि[9] दीपक धरियें जैसैं❀यह[10]वह समुझि लीजिये ऐसें १८
घर में के घर हीं में जानैं❀आंगन के आंगन ही मानैं।
ह्यां[11]ह्यां राजत इक रस नित्त❀धरमी मरमी समुझत चित्त १९
निगम न परस्यो मुनिगम नांहिं❀सो रस वृन्दाबन हीं मांहिं।

१—व्यापक या समष्टि, २—श्री हरिवंश, ३—अन्तर—व्यवधान, ४—घोष, ५—विस्तार करके, ६—निभृत निकुञ्ज महल, ७—युगलकिशोर, ८—जिसको, ९—चौखट में (दहलीजमें) १०—यह पृथ्वी का वृन्दावन, वह नित्य-नित्य निकुञ्ज भवन चिन्मय ११—भूमि पर परोक्ष नित्य निकुञ्ज में अपरोक्ष,

नग[1] अमोल धर्यौ डबुआ लुकोइ❀देखे विनु क्यौं कीमत होइ२०
को परचै विनु देखै सुनैं❀क्यौं रसना करि जस रस गुनैं।
ह्यां ते जाइ न ह्वां ते आवै❀कौन बांनिगी[2] रस की लावै २१
इक रस विहरत सदासुतंतर[3]❀पलक परन कौ सहैं न अन्तर।
तिन कौ आविर्भाव न बनै❀इच्छा ही कौ कारन गनैं २२
रस अमोघ अपनो बल कर्यौ❀उमगन लग्यौ सुभर जब भर्यौ।
लीला ललित करन सुखरासी❀प्रगटे जुगल निकुञ्ज निवासी २३
कांनन को रस रहसि[4] विलास❀रसिक चितावन सो रस रास।
कारन एक कृपा ही जहां❀कहन सुनन चलै कावौ तहां २४
अतर्कि कृपा रसिक जन ओर❀मन करि लरजे[5] जुगलकिशोर।
गोपिन ग्रेह आइ अवतरे❀सफल मनोरथ सब के करे २५
गोकुल रावल के दोऊ रांनें❀जिनके चरित पुरान बखाने।
गोकुल पति गृह जसुमति रानी❀कीरति भांन भँवन सुखदानी २६
यसुमति कूंखि प्रगट भयेश्याम❀भादौं वदि आठैं अभिराम।
नक्षत्र रोहिनी आधी निसा❀सुर हरषे भइँ निर्मल दिसा २७
नन्द दान एतो कछु दीयौ❀संक्यौ देखि कुबेर जु हीयौ[7]।
गोपी गोप महा आनन्दे❀सर्वसु दै विप्रन पद बन्दे २८
इहि विधि सौं जु कियौ दधि कादौं❀मानौ लग्यौ महा झर भादौं।
हरि अवतार देवमुनि जान्यौ❀थिर चर सबहिनु मंगल मांन्यौ २९

* अवतार का मुख्य हेतु *

दास अनन्य भजन रस हेत❀लाल प्रगट भयो नन्द निकेत।
नव किशोर ने सिसु वपु धर्यौ❀रसिकन पै जु अनुग्रह कर्यौ३०
तिन हित श्री श्यामाँ सुख धांमाँ❀हिता[8] कूँखि प्रगटी अभिरामाँ।

१—नित्य विहार रूपी नग, २—नमूना, ३—स्वतंत्र, ४—एकान्त ५—दुर पड़े, ६—लज्जित, ७—हृदय, ८—हिता मैया कीर्ति के लिये है श्रीजी हित की कूंखमें अवतरी हैं।

भादौं सुदि अष्टमी जु बरनी❀जन्मी राधा मंगल करनी ३१
अरुन उदय जु नक्षत्र बिसाखा❀तात मात पुजई अभिलाषा।
बिनु[1]मित दान भिक्षुकनि दयौ❀अस मंगल जु भान घर भयौ ३२
बनिता करैं जु जूथनि[2] गाँन❀सुर नर लोक बजे नीसाँन।
सर्वेश्वरि अवनी अवतरी❀गोपिन ग्रेह संपदा भरी ३३
ऐसौ मंगल दुहुँ घर भयौ❀विधि हूँ देखि थकित ह्वै गयौ।
कीरति यसुमति को पय[3] पांनि❀लाडसहित कियौ अति रुचिमानि ३४
बैकुण्ठ जु गौलोक जु बियौ❀सुधा पांनि तहां बहु विधि कियौ।
ताहू कौ जु स्वाद बिसरायौ❀ऐसो ब्रज को पय मन भायौ ३५
वह ईश्वर्य्य सुधा कियौ[4] हरुवौ❀ब्रज माधुर्य चरित कियौ गरुवौ[5]।
लोक वेद हूं दुर्ल्लभ महा❀याते ह्वै रहे सब मुँह चहा[6] ३६
है जु अलौकिक सब तें न्यारौ❀सब रस सकल सुखनि तें भारौ।
दुहुँ घर सुख देखिये नित नयौ❀ब्रज कौतुक जु अपूरब भयौ[7] ३७

दोहा—ब्रज परिकर ब्रज नित रहै, दरसैं समयौ पाइ।
बरनत रसिक अनेक विधि, पारु न पायौ जाइ ॥३८॥
बाल[8] कुमार पौगंड पुनि, नव किशोर तब होइ।
नव किशोर बालक भये, यह अचरज दृग जोइ ॥३९॥
ब्रज लीला माधुर्य्य रस, सकल सुखनि सिर मौर।
या सुख कन की बाँनगी, मिलै न दूजी ठौर ॥४०॥
लीला चरित अनेक विधि करे, सुवन ब्रज राइ।
जो जाकौं प्यारे लगै, सो सुख लेहु अघाइ ॥४१॥
नन्द और वृषभान घर, सजन सगारथ[9] रीति।
श्री हरिवंश जु मन रुची, इहिं नातें दृढ़ प्रीति ॥४२॥

१—बेहद, २—झुंड के झुंड, ३—स्तन पान, ४—हलका' ५—प्रतिष्ठित, ६—दर्शनाभिलाषी, ७—जो पहले ही हुआ, ८—तीन अवस्था दस साल की आयु तक, ९—सम्बन्धी

॥ चौपाई ॥

ग्रन्थनि हूं ऐसी विधि गायौ❀लोक रीति माधुर्य्य चितायौ ।
रस माधुर्य्य बली अस भयौ❀सब ईश्वर्य्य ढांपि जिन लयौ४३
भई कीरति यशुमति मन भाई❀गर्भ समय ही वदी[1] सगाई ।
प्रगट भयें सोई विधि करी❀तादिन तें लागी रस झरी ४४
नव नव लाड लडाये इत उत❀श्री वृषभानु सुता ब्रजपति सुत ।
जननींनुके अहलाद बढै नित❀मुख लखि डूबत रहैकोमल चित४५
❀अलभि लाभ लह्यौकीरति यशुमति,दुर्ल्लभवरनी निगम निजिनगति
को सुकृत्त को भाग्य जु कहिये❀समुझि २ मौंगौ ह्वै रहिये ४६
गौर श्याम सुन्दरताकी हद[3]❀उपमा देत सबौ जु भई रद[4] ।
चुटकी दै वनिता दुलरावैं❀धाँम काँम तजि देखन आवैं४७

दोहा—कोटि कोटि ईश्वर्य सुख, तजै जु जिहि सुख काज ।
सो सुख विलसत गोप ग्रह, चकित मुनि सुर राज[5] ॥४८॥
इत[6]उत बाल विनोद कौ, सुख सागर बिनु पार ।
सिव विधि सारद शेष हूं, करि न सकैं निरधार ॥४९॥
दास अनन्यनि कारनें, बने मनोहर ग्वार ।
परम ललित लीला जु अब, करि हैं जग विस्तार ॥५०॥
गोकुल रावल में कियें, चरित परम अभिराम ।
लगी रहै नित जात[7] सी, दुहुं भूपनि के धांम ॥५१॥
अगैं अगैं ऐसी मोहनी, सब चित लिये चुराइ ।
वृन्दाबन हित[8]रूप दृग, देखे बिनु न सुहाइ ॥५२॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर श्री चाचा जी कृत मंगला चरन वरनन प्रथम लहरी की
जै जै श्री हरिवंश श्री राधे ॥

❀अलभ्य १—प्रण कर लिये, २—मौन, ३—असीम, ४—तिरस्कृत, ५—इन्द्र, ६—नन्दगांव बृषभानु पुरे, ७—तांता आने जाने का, ८—श्री श्यामा श्याम हित मय रूप ।

लहरी २, दोहा—अब बरनौ ब्रजपति भवन, यसुमति लाडति लाल
हरषि झुलावति पालनें, देति चखौंड़ा* भाल॥१॥

॥ चौपाई ॥

कर डोरी जु पाट की गहि कैं❀सुन्दर कर टारति रहिरकैं।
सुतहि निरखि मैया मन हौंसे[1]❀लाल अँगूठा पुनि पुनि चौंसे २
चुटकी दै दै कैं दुलारावैं❀नारायण की कृपा मनावैं।
पीत झुगुलिया तन अति राजै❀टोपी सिर तासकी बिराजै ३
नाक नथूली बघ नख[3] गरैं❀माइ खिलावति अंकनि[4] धरैं।
निरखि निरखि कैसुन्दरआँनन[5]❀जननी चिबुक[6]प्लोवतिपाँनन[7]४
कबहूं कान्धे धरि दुलरावैं❀पुनि उर धरि पय पान करावैं।
चंदन पलिकियां[8] पुनि पौढ़ावै[9]❀निकट बैठि कै मंगल गावैं ५
तहां पूतना बिहँसति आई❀लाल गोद भरि लियौ उठाई।
तिन कछु खोटी बुधि निर्मई❀जननी की गति ताकौं दई ६
गोप गोपिकनि अचरज मांन्यौं❀कियौ सहाय नारायण जाँन्यौं।
विप्र बुलाइ पढ़ाये वेद❀मिट गयो सबके मनको खेद॥७
औरौ जतन अनेक जु करे❀मँगल दर्बि आँनि ढ़िग धरे।
टूक टूक गाडा[10]करि डार्यौ❀सकटासुर इहिं विधि सौं मार्यौ॥८
त्रिनावर्त गोदी में धरि कैं❀लै गयौ गगन बहुत बल भरि कैं।
गरौ पकरि कै ताकौं मार्यो❀असुर प्रचण्ड अवनि[11]लै डार्यौ९
या बालक कौ रक्षक कोई❀आवै विघन जाइ टरि सोई।
ऐसे सबै घोष[12]जन कहैं❀कौतिक देखि अचर्ज ह्वै रहैं १०
यशुमति सुख कें सागर तरैं❀लालन पालन सुत को करैं।
वदन देखि तन्मय ह्वै जाइ❀पुनि पुनि लागैं लैंन बलाइ ११

---

*दिठौना १—हुलास में आती है, २—जरीदार, ३—सिंह का नाखून, ४—गोदी में, ५—मुख ६—ठोडी, ७—हाथों से, ८—पलंग पर, ९—लिटा देती, १०—छकरा, ११—भूमि, १२—गोकुल वासी।

विधि तन अचंल छोर पसारैं❀कबहूं राई नौंन जुवारैं।
गोपीं मिलि बैठैं जु समाज❀लाड लडावैं सुत ब्रज राज १२
ऐसो प्रेम उदय ह्वै आवै❀देखे बिनु घर रह्यौ न भावै।
अहो महरि चेटक[1] तुम बारौ❀अधिक प्रेम बढ़ि गयो हमारो १३
सुनि सुनि महरि मोद मन भरैं❀गोपिनु सौं विनती यौं करैं।
तुम असीस मैं यह फल पायौ❀सुत कौ मुख विधनाँजुदिखायौ १४
भवन मध्य राजतु है पलना❀ललहि झुलावति ब्रज की ललना।
दिन दिन बढ़ै नन्द कौ लला❀सुकल पक्ष जैसे ससि कला १५
झिलकति दमकति मुख में दतियां❀मैया हरषि लगावति छतियां।
बहुरि जु श्याम घुटुरुवनि चले❀खेलत अजिर[2] लगत अति भले १६
टेकि हथेरी चलत जु भू पर❀झनक झनक पग बाजत नूपुर।
अधिक प्रसन्न होत मन सुनिसुनि❀मुरि मुरि देखतपाछेपुनिपुनि १७
हौंसनि[3] चलतु अगमनौ लाला❀विहरतु मनु सावक[4] जुमराला।
आगे ह्वै टेरैं जब माइ❀तित हीं कौं जु चलत हैं धाइ १८
अँगुरी गहि कै ठाढौ करैं❀बैठि जाइ पुनि पुनि हंसि परैं।
लाइ धरैं पुनि विविध खिलौंनों❀इन सौं खेलौ मेरे छौंनौं[5] १९
ग्रह कारज लगी करन जु रानी❀तब लखि मचल्यौ सुत सुखदांनी
तब हीं आये ब्रज पति धाम❀लियौ उठाइ गोद सुत स्यांम २०
पुचकारैं सिर पर कर फेरैं❀भरि अनुराग बदन तन हेरैं।
लाल तात की गहि रह्यौ दाढी❀निरखि हसँति ब्रजरांनी ठाढी २१
मन ही मन विहँसै ब्रजरानौं❀सुकृत सार बटोरत मांनौं।
भये अति चपल लाल के गात❀माइ गोद में कौं अकुलात २२
रांनी लियौं रँवकि भुज भरि कैं❀वदन चूम्बि पुनि आंकौ धरि कैं।
अंचल ढांपि[6] धापि पय प्यायौ❀खेलन पुनि आंगन बैठायौ २३

---

[1] मन मोहना सुन्दर, [2] आँगन में, [3] हुंकार भरकर, [4] हंस का बच्चा. [5] शिशु, [6] रजाकर।

सुन्दर स्यांम चलन पग लगै❀अजिर[1] मध्य डोलत हैं भगै।
कबहुं लटकि २ पग राखैं❀वचन तोतले मुख तें भाषै २४
बालक वृन्द जु खेलन आवैं❀अपु खेलैं पुनि तिनहिं खिलावैं।
मैया देति खिलौना हाथ❀राम कृष्ण विहरत मिलि साथ २५
कटि कौंधनी[2] बनी जु लँगोटी❀धरें हाथ पर माखन रोटी।
कूदि कूदि मुख ग्रास जु लेंहीं❀ सबकें हिय अति आनंद देंहीं २६
किंकिनी नाद होतु है ऐसें ❀ कूजत हैं मराल[3] सुत जैसें।
ज्यौं ज्यौं मन रोचिक धुनि लगै❀ त्यौं त्यौं पग पटकाइ जु भगै २७
तात मात कें पोष जु पलैं ❀ राज द्वार लगि आवत चलैं।
नन्द सुवन गोपनि सुत संग ❀ खेलत होइ रज मंडित अंग २८
मात हाथ गहि ग्रह लै आवैं ❀ करि उबटन जल उष्ण न्हवावैं।
अंग अंगोछि फुलेल लगावैं ❀ लघु भूषण लघु पट पहिरावैं २९
अति कमनीय सांवरे गात ❀ कछु तुतराइ कहत मुख बात।
ठुमकि ठुमकि पग अजिर जु धरैं ❀ तात मात उर आनन्द भरैं ३०
गूंझा कर में दीनौं मैया ❀ छीन लै गयौ सो बल भैया।
धरि मन रोस माइ पै गये ❀ बलि को करतबु कहत जु भये ३१
रांनी लीने अंक लगाई ❀ बहुरि हाथ दियौ गूझा लाई।
गूझा दूरि बगाइ[5] जु दियौ ❀ बहुत रोस मैया सौं कियौ ३२
गूझा वही लाइ दै मोहि ❀ काम करन तब देहौं तोहि।
बलि की तू राखति है कांनि ❀ मोकौं रांनी छोटो जांनि ३३
यौं कहि लोटि अजिर में गये ❀ रवँकि रोहिनी भुज भरि लये।
अहो महरि तुमने कह्यौ कहा ❀ यह मन रोस भरि गयौ महा ३४
बेटा तू रूठ्यौ है कासौं ❀ तेरे बरैं[6] लरौं हौं तासौं।

१—आंगन में, २—कमर का तागा, ३—हंस, ४—एक प्रकार की मिठाई, ५—फैंक दिया कि यह नहीं वही अपना लूँगा ६—पक्ष लेकर।

करतें गूभा बलि लै भाग्यौ❀मैया हौं ता पाछे लाग्यौ ३५
मोसौं कहै करूटा[1] भौंडौ❀यह सुनि हौं आयौं जु पिछौंडौ।
अब न तुम्हारे घर हौं रहौं❀दाऊ की अनीति क्यौं सहौं ३६
हँसति हँसति ब्रज रांनी आँईं❀बलि हूं कौं कर गहि जु लाँईं।
कहति रोहिनी बलि तू धूत❀मोहन मेरो राजा पूत ३७
महरि पीठ दै कर पटकाये❀कहति बलिहि मैं हाथ लगाये।
यह सुनि अधिक मुदित भयेश्याम❀अबन बहुरिअरियौबलराम ३८
पुनि इक दिन रविजा[2] तट गये❀बहुत खेल तहां खेलत भये।
मोहन काहू डाटन लगे❀ते आये मैया पै भगे ॥३९॥
ऐसी बात जु आइ सुनाई❀कान्ह तुम्हारे माटी खाई।
माइ छरी लैकैं जु डराये❀नैंननि तें आंसू बहि आये ४०
माटी खान कुटेव जु गही❀तू नहिं मानै मेरी कही।
ऐसो लाड न मोकौं भावै❀बाहिर जाइ उपाधि मचावै ४१
कांपन लागे सब ही गात❀मुख तें नाहिं न निसरति बात।
अरे चपल तू कांपतु कहा❀हौं जानति तू धूत जु महा ४२
ऐसे कहत सयाने लोग❀माटी खात बढ़ै तन रोग।
मैं माटी नहिं खाई माइ❀झूँठ कही इँन लरकनि आइ ४३
ये सब लरि आये कहि मोहि❀मैया पै पिटवावैं तोहि।
तेरी बात मानि हौं तबहीं❀वदन पसारि दिखावैं जब हीं ४४
वदन पसारि जु लाल दिखायौ❀त्रिभुवन उदर मध्य दरसायौ।
देखि भईं चकित नन्दरांनी❀रचनां दई विलच्छण जांनी ४५
सत्य किधौं यह देखति सपनौ❀इहिं कौतुक जु भ्रमतु मन अपनौ।
कछू रोग सुत उदर निहारि❀करते छरी दई तब डारि ४६

१—काला कलौटा, २—यमुना।

अस करुना जु आई उर भरी❀मन तें गुसा दूरि परिहरी।
पुनि पुचकारि लाल उर लायौ❀दान पुन्य बहु बिधि करवायौ४७
नई नई दिन दिन की कथा❀हौं बरनौं ज्यौं मो मति जथा।
जिहि घर मोहन खेलन जाइ❀ते सब बातनि लेहिं लगाइ ४८
कोऊ कहै लाल पिढ़ी लै आवौ❀कोऊ कहै वह पट्टा जु उठावौ।
कोऊ कहै मुहि नेति पकराइ❀कोऊ कहै लाल रई दै लाइ४९
वे कुछु वस्तु जु और मँगावैं❀यह विनु जाने और हि लावैं।
समुझि समुझि मुसकाइँ जु बाला❀मिल्यौ खिलौना ब्रजपति लाला
जहाँ जाँइ सोइ जु खिलावैं❀इन को कौतिक सब मन भावै।
मोहन कैं जु मोहिनी अँग❀लरिका लगे फिरैं सब सँग ५१
जाके घर जा दिन नहिं जाँइँ❀तिनकौ देखे विनु न सुहाइँ।
गली गल्यारैं ते लेहिं टेरि❀तिन घर खेलन जाँइँ जु फेरि५२
खेलैं खेल अनोखी रीति❀मांखन चोरन बाढ़ी प्रीति।
गोपिन सुत लैंइ संग लगाइ❀मांखन दही चुरावन जाइ ५३
मन करि सुखित होति हैं सबै❀मोहन जिहि घर आवै जबै।
चोरी करन गीधि[1] गयौ ऐसें❀अचरज मानैं गोपी तैसें ॥५४॥

दोहा–ऐसे कुमार जु नन्द सुत, गोकुल करत विनोद।
गोपी देहीं उराहनें, मैया मानैं मोद ॥ ५५ ॥
नगर बगर कौतुक विविध, रचै नन्द कौ पूत।
मैया मानै साधु अति, गोपी मानैं धूत ॥ ५६ ॥
इहि सुख सोभा प्रीति कौ, नहीं बानगी और।
वृन्दावन हित रूप अस दरसतु याही ठौर ॥ ५७ ॥

---

[1] —सीख।

सदन सदन मंगल जु नित जहाँ, लाल चलि जाइ ।
उझकि निहारति गोपिका कब इत निकसै आइ ॥५८॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर श्री चाचा वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण बाल विनोद बरनन द्वितीय लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ लहरी तृतीय प्रारम्भ ॥

दोहा—प्रभुता प्रभु पाछें लगी, ब्रज आवत सकुचाइ ।
मोंकौं निपट निरादर्यौ, माखन खात चुराइ ॥ १ ॥
बन्धे जु ब्रज जन प्रीति, उर नन्द सुवन घनश्याम ।
अब चाहत तन हूं बन्ध्यो, धरन दमोदर नाम ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

दिन दिन खेल रचै जु मनोहर❀लरिकन संग फिरै गोपिन घर।
इक दिन महरि बिलोवै दही❀मोहन गाढी अरबी[1] गही ॥३॥
माइ कलेऊ दै अब मोहि❀काम करन तब दै हौं तोहि ।
तू ग्रह काज मगन ह्वै गई❀यौं कहि ठिनकि[2] गही कर रई॥४
छाडौ रई चलावन देहु❀मेरी शिक्षा मांनि जु लेहु ।
मोहन चपल बुद्धि भई तेरी❀अरबी करन लग्यौ जु घनेरी॥५॥
माखन काढ़ि तुरत ही लैहौं❀पहिलं लौंदा तो कौं दैहौं ।
यौं सुत कौं समुझावत माइ❀ये ठाढे पटकावत पाइ ॥६॥
इत सुत उत पय भाजन उफन्यौं❀ऐसौ आइ संयोग जु बन्यौ ।
जसुमति मन विचार अस करै❀बडौ दोष पय अगिनी जरैं ॥७
सुतहिं छाडि पय थांभन चली❀मंगल विधि जु विचारी भली ।
शीतल कियौ पय भाजन जाई❀हरि फोर्यौ दधि माट रिसाई[3] ८
लोचन लोल जु चितवत जात❀भरे गुसाँ फरकत सब गात[4] ।
कांम विगार्यौ मन में डरैं❀हरैं हरैं[5] पग आगें धरैं ॥९॥

१—हठ जिद्द, २—झाक कर, ३—रूठ कर, ४—अङ्ग, ५— धीरे धीरे कि आवाज न हो ।

डोलैं बह्यौ अजिर सब दही❀मोहन बाट[1] भगन की गही।
यसुमति पाछें लागी दौरिं❀गहि लियै जाइ बाहिरी पौरिं१०
पूत कह्यौं कि तोकौं धूत❀घर कौ सबु हीं कियौ कुसूत❀
देखि तैं जु यह करतबु कर्यौ❀मोते रंचक[2] नांहिन डर्यौ ॥११॥
अति हीं चपल नचावै गात❀मन में तकै भगन की घात।
जाइ छुडाइ माइ गहि लावै❀मोहन ऐसे खेल खिलावै ॥१२॥
धक पक होति लाल मन माहीं❀मैया लै जु चली गहि बाहीं।
[3]अजिर मच्यो जहां दधि की कीच*ठाढ़ कियै लाइ तिहि बीच१३
अरे धूत यह करतब तेरो❀तैं घर काम विगार्यौ मेरो।
तो कौं हाथ लगाऊँ ऐसे❀वहुरि न काम विगारै जैसे ॥१४
घर घर काम विगारत डोलै❀सब हीं सौं बढि बढि कैं बोलै।
हौं सब के उराहनौं सहौं❀तो सौं कबहूं कछू नहिं कहौं॥१५
उनिकी बातनि झूठीं मानौं❀तु मुख कहै सो सांची जानौं।
रहै पेट तो खोट जु भरो❀आजु निकसि यह बाहिर परी१६
छोटे से मुख बात बनावैं❀अधिक दया मो मन उपजावै।
आजु समुझि मैं मन करि लीये❀यह कौतुक तैं घर घर कीये १७
अति लाडिलो तात को भयौ❀मेरौ हु डर डारि जु दयौ।
सूधौ सौ मेरो बलराम❀कब हूं घर न विगारै काम १८
भयो अनोखौ मो घर लला❀खेलतु है नट की सी कला।
अहो रोहिनी देखौ आइ❀फोरि माट दधि दियौ बहाइ १९
कह्यौ रोहिनी कान जु लागी❀डाँटो तो बन जै है भागी।
कहां फिरौगी ढूँढति तबै❀लिहु पुचकारि लाल कौं अबै २०
इक तौ विगर्यौ घर कौ कॉम❀बहुरि रूठि जै हैं घनश्यॉम।
दही दूध कौ टोटौ[4] कहा❀याहि गयें होइ चिन्ता महा ॥२१

१—रास्ता. * उलट पुलट कर दिया, २—जरा भी, ३—आंगन में. ४—कमी नहीं।

[1]बड़ी करति तुम याकी कौंन❀लरिकैं परति बुरी यह बाँन।
पर घर काम बिगारि जु आवै❀गहे बाँह सो तुम पै लावै ।।२२
सुनि उराहनौं मौंगी[2] रहौं❀कबहूं सुत सौं बात न कहौं।
[3]दधि ते तौ प्यारौ है बारौ❀काहें अब झगरो जु पसारो २३
[4]यह तौ भयौ ढीठ अति भारी❀मेरी सुनै न सुनै तिहारी।
सिक्षा विनु कबहूं न सुधरि है❀कांम विगारत पुनि नहिं डरि है२४
इनि यह टेव भली नहिं गही❀ऐसें बलि जननी सौं कही।
औरिन कें बालक जु अनेक❀कोटि बराबरि मेरें एक ।।२५।।
यह सुधरै करिबैं विधि सोई❀मुहि उराहनौं देइ सब कोइ।
सुतहिं सुबुद्धि दियौ हि चाहैं❀यह अभिलाष महरि मन माहैं २६
लैकर छड़ी डरावति भई❀तैं कुटेब यह पकरी नई।
कछू डरैं कछु धीरज धरैं❀ठाढे नीची ग्रीवां करैं ।।२७।।
संकित से जु कहत घनश्याम❀मैया अब न बिगारौं कांम।
अरे तनिक से सांवल गात❀सोक्षो बहुत बनावत बात ।।२८
[5]ईस्वरता पाछें दुरि रही❀उन हूं बुद्धि बचावन चही।
मैया को जु प्रेम अति बली❀वा हू की प्रभुता नहिं चली ।।२९
यसुमति यह जु विचारी मन मैं❀चपल जाइ जिनि भजकै बन में।
राखौं याहि बांधि कै दाम❀तब लगि करि लैउँ घरकौ काम
नेती लै जु कमरि पर धरी❀द्वै आँगुरी सो ओछी परी।
जोरी और दूसरी कोऊ❀द्वै ही आँगुरि घटि भई दोऊ।।३१
घर घर ते लावैं सब कोइ❀द्वै ही आँगुर घटती होइ।
सब हीं नगर की जोरीं लाइ❀द्वै ही आँगुरि घटि घटि जाइ३२
कोऊ हँसैं कोऊ चुपकी रहैं❀कोऊ हँसि बचन महरि सौं कहैं।

१—जेठानी जी, २—चुप, ३—श्री रोहिनी का वचन है, ४—यशोमति वचन है,;५—ईश्वर्य शक्ति बचाना चाहती है परन्तु प्रेम के सन्मुख वह हार माने खड़ी रही।

हम उराहनें कबहुँ न मानैं❀आज पूत लच्छन पहिचानैं ॥३३
जबहि बिगारयौ घर को काम❀तब क्यौं बान्धन लागी दाम।
कहैं श्याम के श्रवननि लागि❀आजु क्यों न गये बाहिर भागि३४
ठग [1]बग सखा न लागे साथ❀मैया जबहिं लगाये [2]हाथ।
जो कहौ मैं चोरी परिहरी[3]❀तौं छुटाइ दैंइ याही घरी ॥३५॥
नीची ग्रींव किये मुसिकात❀[4]औसरु नहीं कहन कौ बात।
गोपी जुरीं नगर की आइ❀देखि देखि मन लाल सिहाइ ३६
ज्यौं ज्यौं मैया [5]ताडन करैं❀त्यौं त्यौं [6]मोद लाल उर भरैं।
कबहूं भय करि [7]सकुरैं गात❀[8]लोल दृगन करि चितवत जात३७
जातैं डरैं काल कौ काल❀सो डरपतु मैंया तें लाल।
यशुमति हठ करि बान्ध्यौ चहै❀बन्धन जब तब घटि ही रहै३८
श्रमित भई ब्रज रानी जबै❀अचिरज एक पर्यौ लखि तबै।
वही [9]कौंधनी है कटि मांहिं❀बन्धन इतै बन्धैं क्यौं नांहिं ॥३९
मैया करि हारी बहु जोर❀तब चितये लोचन की कोर।
जननी अंग श्रमित अति भये❀घर की नेती में बन्धि गये॥४०॥
प्रेम प्रबल चाहै सो करै❀निर्बन्धन तन बन्धन धरै।
यातें कृष्ण [10]अतर्कि जु कथा❀मुनिनु प्रकाश करी मति यथा ४१
लरिकनि ढिग बैठारि जु गई❀घर कौ कारज करति जु भई।
हरि[11]उखारि लियौ ऊखल भलैं❀[12]हरैं हरैं जु घुटुरुवनि चलैं ॥४२॥
ज्यौं[13]खरको पावै नहि माइ❀ऊखल [14]पाछे कढिरतु जाइ।
अर्जुन [15]जमला वृक्ष जु जहां❀दुहुंनि बीच ह्वै निकसे तहां॥४३॥

१—बगले जैसे ठग सखा, २—पिटे, ३—फिर चोरी न करोगे प्रतिज्ञा करो, ४—बात करने का मौका नहीं मैया क्रुद्ध है, ५—घुरके मारे, ६—प्रसन्न होते, ७—सिमटे अङ्ग, ८—गोल गोल नेत्र, ९—कमर का तागा चेलकी, १०—तर्क से परे, ११—ऊखल भी पृथ्वी में कुछ धसा था उखारा, १२—धीरे धीरे, १३—आहट, १४—पीछे पीछे लुढकता, १५—अर्जुन के जुरे हुए दो वृक्ष एक जड़ में थे।

ऊखल तिन सौं अँटक्यो जाइ❀अँच्यो तरवर चरन लगाइ।
तरू समुल ढहि [1]अवनीं परे❀लाल देखि मन मुद अति भरे ४४
अस भई गरजनि पर ही न कह्यो❀तिहि छिन [2]हाली सब ही मही[3]
दिव्य देह द्वै पुरुष जु निकसे❀नन्द सुवन कौं देखत विकसे[4]४५
परिक्रमा वे करत जु भये❀बार बार चरननि में नये।
प्रभु वन्धन छोडे जु हमारे❀श्राप वज्र तें तुम निरवारे[5]॥४६॥
पूरव जन्म कथा सव कही❀भक्ति सुधन प्रभु कें दत्त लही।
अज्ञा पाइ स्वर्ग कौं गये❀लरिका कौतिक देखत भये ॥४७
[6]ब्रजपति देखि दूरि तें फिरे❀ये तरु अवनी कैंसे गिरे।
बन्ध्यौदाम लखि अपनौं लाल❀चकित अधिक भये तिहि काल४८
हिय व्याकुल मुख तें हा* कह्यौ❀बन्धन छोरि भुजनि बिच गह्यौ।
सुनि सुनि ब्रजवासी सब धाये❀गिरे तुंग [7]तरु लखि पछिताये४९
विनु कारन यह गिरे जु सूझैं❀आइ आइ सव लरिकनि बूझैं।
वे कहैं डारे नन्द कुँवार❀हम देखैं अब याही बार ॥५०॥
आडौ ऊखल करिकैं झटके❀दोऊ वृक्ष अवनिं पर पटकैं।
इन में ते द्वै सिद्ध जु कढे❀या आगें जु मंत्र से पढे ॥५१॥
इहि पद लगि वे गये अकास❀हम देखत बैंठे हैं पास।
कहैं लरिका लरिका की बात❀को है इनके वचन [8]पत्यात ॥५२
नन्द गये लैं तेहि छिन ग्रेह❀मानि पुत्र सौं अधिक सनेह।
यह धौं कर्म जु कौने कर्यौ❀वालक कें तन वन्धन धर्यौ॥५३
[9]नारायण तें रंचक डरौ❀ऐसी शिक्षा भूलि न करौ।

१—भूमि पर, २—हिल गई, ३—पृथ्वी, ४—प्रफुल्लित हुए, ५—निवृत किये, ६—नन्दराय, * हा हा यह क्या हुआ पुकार उठे। ७—बहुत ऊंचे वृक्ष, ८—बालकों की बातें कौन विश्वास करे, ९—नन्द जी घर में मानो शोर मचाते कहते घुसे कि नारायण से डरो क्या नन्हे बालक को यों बांधा जाता है यशोदा जी से कहते हैं।

नारायण हैं रक्षक याकौ❀विघन कहा करि सकैं जु ताको५४
विप्रनि बोलि देत हैं दान❀करैं वधू जन मंगल गान।
नीके कीनी जाकी सेव❀भयौ सहाइ इष्ट कुल देव ॥५५॥
केशर जल लै श्याम न्हवायौ❀करि श्रृंगार चौकी बैठायौ।
जननी अंगन को टकटोरैं[1]❀नारायण आगे कर जोरैं ॥५६॥
तुम हीं कृपा करी मो ऊपर❀गिरि से तरवर गिरे जु भू पर[2]।
मेरौ बालक तहां बचायौ❀तुम सेवन में यह फल पायौ॥५७
बार बार विनवति हैं रांनी❀इष्ट कृपा की कहत दहांनी।
सुत साधारण बालक मान्यौं❀देख्यौ तदपि प्रताप न जान्यौ५८
उर अनुराग लोक ज्यौं रीति❀बढ़ै अपूरब छिन छिन प्रीति।
जनम बधाई सी यह मांनी❀सब हीं कौं सनमानित रांनी ॥५६
मंगल लगो वेद ध्वनि हौंन❀मैया वारति राई लौंन।
घर घर तें सब टीको लावैं❀करि न्यौंछावरि कुशल मनावैं ६०
गोदी भरि भरि मेवा देति❀यसुमति मुदित असीसैं लेति।
ब्रजपति मंगल भूर[3] मनाइ❀कनक रतन बहु दीनी गाइ[4]॥६१॥
मेवा अरु बहु पाक मिठाई❀मिश्री मिश्रित दही मलाई।
सुतहिं जिमावति अपु[5]कर रांनी❀ग्रास देति मुख कहि मृदु बांनी६२
लाल भूलि गये सब ही बतियां❀जेंवत हँसि हँसि दमकति दतियां
गोपिनि के बालक जुरि आये❀महरि प्रीति करि ते जु जिमाये६३
अरे मित्र अब खेलन जैं हैं❀मैया पै जु खिलौना लै हैं।
ऐसो बात दमोदर करैं❀जननी के उर आनन्द भरैं॥ ६४
रानी जल अँचवाइ सिहानी❀[6]वारि डीठि डर पीयौ पानी।
लै बैठीं जु रोहिनी गोद❀अधिक बढ्यौ हिय जिय में मोद६५

१-एक २ अंग परस्पती है, कहीं चोट न हो. २-भूमि पर, ३-भली प्रकार ४-गौदान, ५-अपने हाथों से मुख में ग्रास देता है, ६-मेरी दृष्टि न लगे इसलिये जल वार कर स्वयं पी रही हैं।

दोहा–पंच नाद[1] धुनि होत हैं, करति आरती माइ।
सबहिं बधाईं देति हैं, भीर न भवन समाइ ॥ ६६ ॥
मैया कौ चह्यौ कियौ, ऐसे प्रीति अधीन।
निर्बन्धन निगमनि[2] विदित तदिप[3] बन्धे प्रवीन ॥६७॥
ईश्वरता अहुराइ[4] कैं, सबल प्रेम कियौ राज।
यातै कहत रसज्ञ जन, यह[5] सब कौ सिरताज ॥ ६८ ॥
दामोदर लीला ललित, कही जु मति परमान।
वृन्दाबन हित रूप जस, सुनहु रसिक दै कान ॥६९॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर श्री चाचा जी कृत श्रीकृष्ण दामोदर लीला वरनन तृतीय लहरी की जै जै श्री हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ चतुर्थ लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–खेलैं रेती रवँन जहाँ, बालक वृन्द निसंग।
सौभग[6] सींवा नन्द सुत, राजति हाथ पतंग ॥ १ ॥
खेलत मगन इहि विधि रहैं गनैं न संध्या भोर।
रविजा[7] तट कौतुक रचत, राम कृष्ण इक[8] जोर ॥२॥
थकित रहैं पंछी पथिक, ऐसो अचरज रूप।
करैं प्रशंसा नारि नर, सुकृत फल ब्रज भूप ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

धन्य महा बन गोकुल नगरी❀विधि रचना ते रचना अगरी[9]।
करैं नर लीला लोकन धनी❀जाकी प्रभुता परहि न भनी ॥४॥
शिव चित हीं में चिन्ततु रहैं❀विधना[10] जाकौ अन्त न लहैं।
सुर[11]पतिहूं की गम नहीं जहाँ❀मुनि हूं भरत भांवरे तहाँ ॥५॥

१—आरती के समय घरियाल घंटा झांझ आदि ५ बाजे बजते हैं, २—वेदो के बचनों में भगवान् बन्धन रहित है, ३—फिर भी ४—हलकी कर दिखाइ, ५—मधुर प्रेम पन्थ, ६—अनन्त ऐश्वर्य मय, ७—यमुना तीर, ८—अनुपम जोरी राम कृष्ण, ९—अतीत या परे की १०—नही वर्णन में आसक्तो, ११—इन्द्र।

देखौ अखिल भवन कौ पालक❀मैया बान्ध्यौ सो गनि बालक।
कबहूं बान्धे कबहूं छोरैं❀तिन संग रमैं हाथ पुनि जोरैं॥६
रिषि जु विवेकी ऐसे कहैं❀ [1]स्वामी की इच्छा दिशि चहैं।
सुख[2] इश्वर्य लग्यौ कछु हरुऔ❀लीला गोप लह्यौ सुख गरुवौ[3] ७
तरु पहाड़ से पौरी परे❀तब तें देखि गोप मन डरे।
विघन बहुत बालक कौं आवैं❀अब ह्यां बसत नहीं सुख पावैं ८
बैठे आरज[4] गोप जहां हैं❀ऐसो करत बिचार तहां हैं।
दुरि दुरि आवत ह्यां बहु छली❀यह बालक जु भाग कौ बली॥६॥
नारायण कइ बार बचायौ❀पुन्य नन्द कौ आडो[5] आयो।
अब मिलि कीजै यह जु विचार❀बेगि हीं उतरौ यमुना पार ॥१०
जहां गोवर्धन परवत कमनी❀हरे त्रिननि करि सोभित अवनी॥
हम हौंइ सुखी सुखी हौंइ गाइ*निर्भय बसै जहां सचु[6] पाइ॥११॥
नौ हूं भानु जु नौ हूं नन्द❀करि यह मतौ भरे आनन्द।
आगैं गोधन वृन्द जु करैं❀सकटनि मांहिं साज सब भरैं॥१२
गोपी गोप सबै मिलि चलै❀मारग सोभा देत जु भले।
बैठीं यसुमति सकट मँझार❀बड़भागिनि जु रोहिनी लार[7]॥१३
राम कृष्ण राजत तिन आगैं❀बतियाँ मधुर कहन पुनि लागैं।
देखि देखि पशु पंछी बन में❀मोहन मुदित होत अति मन में१४
ठोड़ी पकरि कहत लड़काइ❀मैया इनके नाम बताइ।
कहि कहि नाम माइ समुझावैं❀सुनि सुनि के मोहन सुख पावैं॥१५
गोप गोपिका नौकनि चढे❀राम कृष्ण मन आनन्द बढे।
कच्छ मच्छ रविजा जल लसैं❀राम कृष्ण देखैं पुनि हँसैं ॥१६॥
सकट सोहनौ रचना जांमें❀कीरति रानी राजति तामें।

---

[1]—लीला का कारण एक मात्र प्रभु की स्वतन्त्र इच्छा ही है, [2]—एश्वर्य सुख हलका, [3]—गहन सुख, [4]—बड़े बूढ़े, [5]—सहायक, [6]—सुख शान्ति [7]—साथ।

श्री राधा तिन आगें सो है❀रूप पुंज सम उपमा को है॥१७
बरनौं कहा गोधन विस्तार❀संपति संग भरे बहु भार।
गोकुल[1]पति अरु रावलि[2]राइ❀गोप अनेक अनन्त जु गाइ[3]॥१८
यमुना उतर पार जब भये❀तहाँ सकटनि के घर करि लये।
बिस[4] कर्मनि मन्दिर निर्मये[5]❀सुर हूं देखत अचरज भये॥१९॥
इत बरसानौं उत नन्द ग्रांम❀दरसे धाम परम अभिराम।
भांन वंश की थिर रजधांनी❀पूरब बरसांने जु बखांनी॥२०॥
तहाँ जाइ कें गोधन छाये❀भूप भयाने विदित कहाये।
प्रभुता बडी तात श्री राधा❀सुख संपति बिलसत निरबाधा २१
निधि सिधि सेवत पौरी जास❀श्री सदेह कियौ भवँन प्रकाश।
नन्दीस्वर कियौ ब्रजपति बास❀जहां नित नव नव बढ़त हुलास२२
सुख संपति सोभा की भीर[6]❀भवँन अनेक जु बसैं अहीर।
घर घर अमित संपदा भरी❀गोपनि हूं नहिं जांनी परी[7]॥२३
[8]अमीं स्वाद सम जाकौ नीर❀पावन सर राजै गंभीर।
गिरि की सिखर धाम ब्रजराज❀जहां अपूरब मंगल साज॥२४॥
ठौर ठौर जल सरवर भरे❀तरु बहु जाति जु फूलं फरे।
लीयें गोपनि सुत जु समाज❀विहरत तहाँ सुवन ब्रजराज॥२५
दिन दिन बढ़त कृष्ण बलराम❀नित सुख पलत तात के धाम।
जहँ तहँ खेलन के सुन्दर थल❀देखि देखि हर्षत मोहन भल[10]२६

दोहा—बाबा की ठोडी पकरि, कहत स्यामु लरिकाइ।
गांव गोइरे जाइ अब लाऊँ बच्छ चराइ॥ २७॥
हिय हरषे ब्रजराज जू, सुत के सुन अस बैन।

१—नन्द बाबा, २—वृषभानु जी, ३—गौए, ४—विश्वकर्मा, ५—तय्यार कर दिये. ६—अपार, ७—निज संपति कितनी है उन्हें स्वयं पता नहीं है, ८—अमृत, ९—नन्द श्याम, १०—भली प्रकार।

सिर कर धरि दई आसिसा, मुख लखि फूले नैंन ॥२८॥
धनि मेरे मन मोहना, किये चहतु कुल कृत्य ।
अबहीं खेलौ बैठि घर, बच्छ चरैं हैं भृत्य[1] ॥ २९ ॥
बाबा मुहि प्यारे जु अति, लागत बछरा गाइ ।
बलि दाऊ कौं देहु संग, लावैं हम जु चराइ ॥ ३० ॥
हिय सुख वर्धन साँवरे, मेरे मोहन मदन ।
मीठे मीठे बचन अब निसरत तेरे वदन[2] ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥

तात मात अति मंगल कियौ❋बछरनि संग स्याम कौं दियौ ।
संग लिये गोपिन के बालक❋श्याम भये बछरनि के पालक३२
पावन सरवर तीरें लसैं❋खेल अनोखे करि करि हँसैं ।
पीठि बछरुवन की कर फेरैं❋मोहना[3] सोहना कहि कहि टेरैं ३३
पी पी दूध पुष्ट ह्वै रहे❋जब भगि चले जांइ नहिं गहे ।
परम सचिक्कन जिनके अंग❋धौरे पीरे नाना रंग ॥ ३४ ॥
गहि गहि पूंछ भजावैं जिनकौं❋अधिक प्रीति सौं पोषैं तिनकौं।
सबल जात वे पूंछ छुड़ाइ❋हँसि कै लाल बैठि तब जाइ ३५
तारी दै दै नाचैं ग्वार❋[4]पोलौ देख्यौ नन्द कुमार ।
तब अति चिरैं जु सन्मुख जुरैं❋[5]भुज पटकाइ सखिन सौं घुरैं ३६
बलि दाऊ जु बीच[6]कर लेहीं❋पुनि स्याबास श्याम कों देहीं ।
भैया तू जु बली अति भयौ❋दौरत बछरा कौं गहि लयौ ॥३७
दाऊ कूट[7] करावत मेरी❋हौं समुझत हौं बात घनेरी ।
पी पी दूध बड़ौ अब ह्वै हौं❋सब हीं को जु पटक धरि दैहौं३८

---

[1]—नोकर, [2]—मुख, [3]—बछड़ों के नाम है, [4]—फुफस निर्बल, [5]—भुजाओं पर ताल मारें कि ओ रे देखो है कौन जो मेरे साथ आकर लर कर बल देखे, [6]—छुड़ा देते लरने न देते, [7]—ईंठो ,

तब यों कहन लगै बलिरांम❀गाल बजावन[1] सीख्यौ स्याम।
पूंछ बछरुआ की गही जब हीं❀बह कूद्यौ जु बैठि गये तब हीं॥३९॥
[2]अब हौं करौं सु देखत रहि हौ❀ऐसी बात बहुरि नहिं कहि हौ।
[3]हौं सीखौं जु पेंच पुनि दावन❀तब लगि हौं सब हीं मुन्चावन४०
बाबा कही लई मैं मानि❀दाऊ की तू कीजौ कांनि[4]।
याते तुम सौं नहिं कछु कहौं❀और होहि तिहिं अब हीं महौं[5]४१
सुनि हँसि परे साथ के सब हीं❀मोहन कुपित भये मन तब हीं[6]।
डारि लकुटिया घर कौं भगे❀लरिका सब हीं पाछे लगे॥४२॥
लिये सुबल ने तब समुझाइ❀आये बहुरि पिछौंडे पाइ।
बार बार जो चिरि हैं मोहँन❀तौ यह सखा लगैंगे गोहँन॥ ४३
मित्र[7] मंडली की यह बात❀नहीं सुनाइ मात पुनि तात।
भैया और सबनि सौं अरि हौं[8]❀दाऊ जी की कांनि जु करि हौं४४
आकनि पै तैं बौंडी तोरी[9]❀सबहिनु लीनी भरि भरि झोरी।
तकि तकि कैं सब मारन लगे❀दै दै पीठि जु बालक भगे॥४५॥
तब मनसुखा चल्यौ भजि आगैं❀मोहन हँसि तिहि पाछे लागैं।
बौंडीं मारि रिझायौ जाकौं❀पकरि जूथ में लाये ताकौं॥४६॥
अधिक चिरावैं हँसि हँसि परैं❀लैइँ मनाइ पुनि लागैं गरैं[10]।
पुनि पावन सर जल अनुसरैं❀पाछैं लागि मीन ज्यौं तरैं॥४७॥
अंजुलि भरि भरि जल जु बगेलैं❀एक एक कौं अंक सकेलैं[11]।
निकसैं पुनि पुनि कूद जु परैं❀अति कौतूह[12] परस्पर करैं॥४८॥
बुडकी लै जल ही जल आवैं❀अंग चुहुंटियां भरि जु डरावैं।

१—लबार मारने, २—श्याम बोले अच्छा अब कि देखो तो, ३—दाव पेंच पहलवान से सीखा हूँ, ४—लिहाज व मान, ५—पकड़ का बदला ले लूँ, ६—पीछे पड़े रहेंगे सुबल समझाता है, ७—सुबल वचन है, ८—श्याम वचन, ९—आक के झाड़ से फूल की डाल तोर लीं, १०—गले लगते हैं, ११—जल को फुहारें हाथों से छोड़ते तथा कभी छाती में जाकर सटा लेते हैं, १२—आश्चर्य क्रीड़ा।

एक कहैं जल भरयौ अथाह❀एक कहैं या में है गाह[1] ४९
एक कहैं यह मोहन धूत❀महा चपल व्रजपति कौ पूत।
सब के अंग चुहुटियां भरै❀काहू की संका नहिं करै ॥५०॥
जल में बहुत उपाधि जु मांडै❀जो बोलै तिहि गारिनु भांडै[2]।
सरवर[3] वार पार ह्वै आवै❀याकौ अति धमतूरौ[4]भावै॥५१॥
मैया कही सीख सुनि लेहु❀जल में श्याम धसन[5]जिनि देहु।
इनि जल पैरन[6] अरबी गही❀काहू की नहिं मानत कही ॥५२
नीठ[7] नीठ जब जल तें निकसे❀पहिर[8] बसन सब तन मन बिकसे
बच्छ चराइ जु लाये घर कौं❀माइ लडावै हरि हलधर कौं॥५३
यसुमति अति आनन्दित भई❀बहुत बधाई ग्वालनि दई।
बच्छ पाल भयो कुँवर कन्हैया❀रानी हरषी लेतिं बलैया ॥५४॥

दोहा—महा मगन व्रजपति भये, लयौ अंक भरि लाल।
घेवर सुहथ जिमावही, जेंवत मदन गुपाल ॥ ५५ ॥
गाँव[9] गोंइरे बाछरू, लावौ लाल चराइ।
बन मैं बढि कैं जाहु जिनि जे है गाइ चुखाइ[10] ॥ ५६ ॥
अग्रज[11] ओर चितै हँसे, अधिक भरे हिय लाड।
वृन्दावन हित छवि बढी, परति कपोलनि गाड॥ ५७ ॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री कृष्ण बच्छ पालक लीला बरनन चतुर्थ लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

१—मगर मच्छ, २—बेढब गालों से नाक में दम करते, ३—तालाब या अति शीघ्र, ४—धूम धराका ऊधम करते, ५—घुसने न पावैं, ६—तैरने की हठ पकड़ी है, ७—रजकर मुश्कल से, ८—सारा शरीर कांपने से हुलास में भर जाता है, ९—गांव के आस पास, १०—बछरा गाय का जो मन में होसी हैं दूध पी जाएगा, ११—दाऊ जी की ओर देखा कि कोई मेरी शिकायत न करने लग पड़े कि जल में तैरता है इत्यादि जब देखा कि वह संकेत से कहते हैं डरो मत नहीं कहूँगा तो हँसने लगे इसलिये भैया की इशारे से खुशामद कर रहे हैं।

॥ अथ पंचम लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा-अब बरनौं ज्यों नन्द पुर, लीला करत जु स्याम ।
दधि मांखन चोरत फिरत, ब्रज बासिनु के धाम ॥१॥
अमृत[1] और ईश्वर्य्य तजि, बने मनोहर ग्वार ।
घर घर मांखन चोरि कै, खात जु नन्द कुमार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मित्र मंडली लै कै लार[2]❀फिरैं नगर की गलिनु मँझार ।
काहू के घर में घुसि जाइ❀दधि अरु दूध चोरि कैं खाइ ॥३॥
मित्रन को करि ओक पिवावैं❀गोपी देखि गहन कौ धावैं ।
यह भजि गयौ सखा लै साथ❀गोपी मीडति रहि गई हाथ ॥४॥
बहुरि गये जु दूसरी ओर❀नन्द सुवन दधि माखन चोर ।
उनि बिलोइ लै छींकै धर्यौ❀इननि दूरि तें दृष्टि सु कर्यौ॥५॥
छल बल करि जु अलग लै आयौ❀आपु खाइ मित्रनि जु खवायौ।
वह भरि लाई जल की जेहरि❀ये निकसे ऐसौ करतब करि ॥६॥
पौरि अचानक भेंट जु भई❀वह मनि करिकै जानि सु गई ।
क्यौं खोली रे धूत कपाट❀माखन खाइ चल्यौ गहि बाट॥७॥
जेहरि सिर तें धरी उतारि❀ग्वारि लगी पाछें ललकारि ।
ना जान्यौं कित गयो पलाइ❀पारौसिन सौं कह्यौ जु आइ ॥८
अरी घरबसी[3] तैं कहा कियौ❀मो घर कौं आहट नहिं लियौ[4] ।
ये जु लरी दोऊ तन तोरि[5]❀खाय गयो वह माखनि चोरि ॥९
तकी और दिन औरे घात❀गोपी सखिन लगाइ बात ।

१—भगवत्ता भुलाकर, २—साथ पीछे पीछे आगे स्वयं जाते, ३—ताना है घर बरबाद कराने वाली, ४—खट खट की आवाज़ तक न सुनी ऐसी मस्त रही, ५—क्या तू मेरे से लरी हुई है, ६—गोपीको बातोंमें उलझा रखा ।

पिछवारे ते छांनि[1] उठाइ❀यह बैठ्यौ गाढी दधि खाइ ॥१०॥
आहट लै वह घर कौं चली❀मुख[2] दधि छिरकि दौरि गही गली
लैं जु लकुट वह पाछें धाई❀जो कछु बची सो ग्वालन खाई ११
जब लगि वह इन पै फिर आई❀हँसि भागे तारी पटकाई।
री यह छली नन्द कौ लला❀खेलि गयो नट की सी कला॥१२
एक महा गरबीली रहै❀ऐंड की बात लाल सौं कहै।
मारि कपाट सु पहिरौ देइ❀चहूं ओर कनहेरि[3] जु लेइ॥१३॥
हौं घर की रक्षा करौं भली❀कित ह्वै आवैगो वह छली।
मोहन यह छल भेद उपायौ❀और भवन ह्वै कैं चढि आयौ॥१४
माखन खायौ छीको तोर्यौ❀हरैं हरैं वह भांढौ फोर्यौ।
ताकौ सब्द कांन कछु पर्यौ❀उनि पकरन कौ उद्दिम कर्यौ १५
चूँन मूठ भरि नैननि डारि❀गयो पलाइ कपाट उघारि।
कछु हँसी कछू रोस जु कर्यौ❀उदिम[4]सब ही रहि गयो धर्यौ १६
पायो खोज परोसिनि ओर❀तू मैं लखी मिलनियां चोर[5]।
मो घर कौ यह हाल करायौ❀तेरे भवन खोज मैं पायौ ॥१७॥
हौं[6] तो भरन गई ही पानी❀तू क्यों करै मोहि नक बानी[7]।
नाहिन भवन ओहँडौ दीयौ[8]❀तैं चढाइ इत हीं ह्वै लियौ॥१८।
औरनि आइ वाहि समुझाई❀होत होत ही बची लड़ाई।
सखा एक ऐसी सुध लायौ❀इक गोपी अस दही जमायौ॥१९
भैया वह जिहि तिहि विधि लीजै❀वेगे चलौ गहरु[9] नहिं कीजै।

१—छप्पर छत का अलग कर अन्दर घुस गये, २—जब वह अन्दर पहुँची उसके मुख पर दही दे मारी जो गाढी थी उसके नेत्रों में ठीक निसाना लगा मारी वह नेत्र मलती रह गई, ३—कान लगाये रहती सूक्ष्म खटका सुनने को. ४—यतन, ५—तू चोर की सहयोगिन है वह तेरे ऊपर से आया पग के चिह्न खोज देते हैं, ६—दूसरी गोपी का उत्तर है ७—मेरे पर दोष न लगा, (नाक न चढा)। ८—पहली गोपी बोली पानी भरने तो ताला क्यों न लगा गई सो जान बूझ कर चढ़ाया है, ९—विलम्ब।

गाइ दुहावन हीं वह गई❀घर कें द्वार किवारी दई ॥२०॥
खोली पर तारी जु लगाई[१]❀वह दधि महा स्वाद सौं खाई।
लटकति लिये दोहनी आई❀द्वार किवारी खुली जु पाई ॥२१॥
हरि मन उरझौ दही सवाद❀कांन परि गयौ बिछुबनि नाद।
मुख ओरी देखत रहि गये❀उनि दोऊ हाथ पकरि तब लये२२
लै जु गई यसुमति कें लारे❀ये कौतिक किये पूत तिहारे।
महरि देखि कैं मुदित जु भई❀वाकी ठोडी कर गहि लई ॥२३॥
अबहिं गयौ दधि घेवर खाइ❀क्यौं तेरे घर चोरी जाइ।
मोहि आइ काहें सकुचावौ❀ठाली लै उराहनें आवौ ॥२४॥
कर[३]दधि लग्यौ बहरि मुख चहौ❀मोकौं काहे झूठी कहौ।
क्यों[४] तू लला और घर जाइ❀चोर नाम आवै धरवाइ ॥२५॥
भूलि जाइ जिनि या घर ओर❀तेरौ नाम परैगौ चोर।
मैया यह मुहि नाचन कहै❀बार बार मेरे कर गहै ॥२६॥
याकें कहै न नाचौं जब हीं❀चोरी मोहि लगावै तब हीं।
गोपी रही चिबुक कर धरि कैं❀लला चातुरी की सुधि करिकैं २७
मोहन रूप निहारत भई❀अधिक मगन ग्वालिनि ह्वै गई।
मोहन मन में धरी मरोर[५]❀यह कहि गई जु मो सौं चोर ॥२८॥
सखा संग सब मनमिल[६] लये❀इक दिन निपट भोर हीं गये।
वह निद्रा जुत सोई खाट❀इननि जाइ कैं खोली टाट[७]॥२९॥
सनय सनय घर में पग धार्‌यौ❀ढँक्यौ नांद सौं दही निकार्‌यौ।
मोहन सब सौं कहन जु लगै❀मति सोवति ते नाहरि जगैं[८]॥३०

१—पास परोसिन से गोपी की ताली खो गई है ऐसा कह सखा द्वारा तालियां मँगा कर लगाली, २—पांव की अँगुरियों के भूषण का शब्द, ३—गोपी बोली हाथ में दही लगा है देख लो, ४—मैया बोली, ५—बैर या गुस्सा, ६—जो एक ही विचार धारा के थे ७—अन्दर घुसने का रास्ता टटो का बना, ८—शेरनी जग न पड़े।

धापि धापि दधि सब हिनु पीयौ❀बच्यौ सो ढोरि अवनि पर दीयौ।
भांडो इक पकवान जु भरचौ❀सो उठाइ लै आंगन धरचौ।।३१
बांनर सैंना लई बुलाइ❀आपु निकसि गये दबैं जु पाइ।
कूदि कूदि वे लागैं खांन❀गोपी जगी भनक सुनि कांन ३२
वनरनि घुरकि लई वह घेरि❀तब उन लई परोसिनि टेरि।
अजिर धरि गयौ को यह माट❀खुली टाट अरु खुली कपाट।।३३
सबैं पकवांनि बांनरनि खायौ❀मेरौ घर किनि आइ लुटायौ।
बहुरि जु देख्यौ घर में जाइ❀दधि खायौ अरु दियौ ढरकाइ ३४
अरी भटू जान्यौं मैं जान्यौं❀देखे खोज चोर पहिचांन्यौ।
चोर कहैं ते गयौ जु चिरि कैं❀मेरे घर आयौ वह फिरि कैं।।३५
अब उराहनौं देन न जैं हौं❀वाही सौं सनेह करि लैं हौं।
यौं कहि गोपी मगन जु भई❀नेह बेलि उपजो उर नई ।।३६।।
इक गोपी जु ओट ह्वै रही❀आंगन माट धरचौ भरी दही।
उन मन कियौ उपाइ जु ऐसें❀पकरि लेउँ दधि चोरहिं जैसैं।।३७
मोहन दधि खै हैं जब आइ❀हौं पकरौंगी तब हीं धाइ।
उभकति रहै पौर की ओर❀कब आवै वह दधि को चोर।।३८
अजिर मांहि दधि मटुका धरचौ❀नन्द सुवन की दृष्टि परचौ।
कहां गई इहि घर जु धन्यांनी[1]❀ऐसे कही मित्र सौं बांनी ।।३९।।
भैया इन जुलहा[2] सौं डारचौ❀हम पकरन कौ जतन बिचारचौ।
जतन करत यह नांहिन चूकी❀देखौ कहूं होहिगी ढूकी[3] ।।४०।।
उभकति है कर छरी जु लीयें❀दृष्टि हमारी ओरी कीयें।
मैं देखी यह अब ही नीठ❀सब गोपिनु में यह अति ढीठ ४१
जौ अब पाइ[4] अगमनें धरि हौं❀तौ भैया याके बस परि हौं।

---

[1]—मालकिनि, [2]- ताना बाना का जाल, [3]—छिपी. [4]—आगे की ओर

कोरें[1] लागि रही घर माहिं❀दूजी[2] नारि बगर इहिं नाहिं॥४२
इनि कियौ छल तौ तुम हूं छलौ❀सब मिलि कैं पिछबारें चलौ।
कांधे धरि धरि सबै चढ़ाये❀मोहन उतर चौक में आये॥४३॥
दौरि किवारी सांकरि दई[3]❀गोपी भीतर ही रहि गई।
वह कूकै किवारी पुनि कूटै❀सांकरि मरी सु कैसे खूटै[4]॥४४॥
मित्रन सहित दही सब खायौ❀औंधौ करि मटुका लुढकायौ।
हाथ धोइ सब गये पलाइ[5]❀बाहिर कौ फाटक जु लगाइ॥४५
पारौसनि नें देखे जात❀वह आई कछु बूझन बात।
फाटिक खोलि अजिर में आई❀वह जु किवारी कूटत पाई॥४६॥
यह निकासि कै बूझन लगी❀अरी भटू तू कौने ठगी।
कौन छली तो कौं छलि गयौ❀कैसो विधि यह कौतिक भयौ॥४७
हम कौं तू जो गनति ही भोरी❀स्यांनी तू कराइ रही चोरी।
मोहन गहन उपाइ जु कीनौ❀पारौसिनि सौं सबक जु दीनौ४८
इक हांसी पुनि सोच जु महा❀जाइ महिर सौं कहिये कहा।
नंद सुवन सीख्यौ बहु घातैं❀लाजनि मरिये कहत जु बातैं४९
बालक पुनि चतुराई ऐसी❀देखी सुनी शृष्टि नहीं जैसी।
रंचक नहीं बुद्धि मो चली❀हौं स्यांनी तदपि इन छली॥५०
कोउ उराहनौं दैंन जु आई❀हौं रीझी याकी चतुराई।
दधि अरु दूध घनौ घर मांहिं❀याकें खायें घटि है नांहिं॥५१॥
इक सुन्दर दूजें नृप पूत❀क्यों करियै या सौं जु कुसूत[6]।
मन तें गुसा डारि सब दई❀गोपी मन आनन्दित भई॥५२
पारौसिनि उठि बोली ऐसें❀करें परेखौ तू बलि कैसें।

१—किसी अन्य कमरे के कोने में होगी क्योंकि यह, २—एक ही नारी इस घर में है इसके बिना और है ही नहीं, ३—जिसमें घात लगाए थी उसे बाहिर से बन्द कर कूंडा लगा दिया ४ खुले कैसे, ५—भाग गये, ६—बैर या द्वेष भाव।

या में छल बल भरे अनेक❀ऐसें सुन्दर हू यह एक ॥५३॥
यह जु पच्यौ कछु टौंनौं टांवँन❀काम बिगारैं तऊ मन भावँन।
लहटू[1] सौं मो द्वारें फिरै❀जब हौं टोकौं तब हीं चिरै॥५४
तिरछौ चितवै जैसें चोर❀दृष्टि रहै दधि भाजन ओर।
इत उत जहाँ तहाँ ह्वै आवै❀मेरी पौरी धूम मचावै ॥५५॥
मैं जु कही सुनि नन्द कुँवार❀खेलौ लला आपनें द्वार।
द्वार हमारौ तू धौं कौंन❀जाइ बावरी अपने भौंन ॥५६॥
मोहि चिरावै आंन[2] न मोरि❀बात कहै तिनुका[3] ज्यौं तोरि।
मैं घर की जु बुहारी करी❀काढि आरसी पीढ़ां धरी ॥५७॥
अछन[4] अछन आयौ लै गयौ❀रंचक हूं नहिं खटको भयौ।
मुरि देखौं जु आरसी नांहिं❀हौं सोचौं अपने मन मांहिं ॥५८॥
मैं अधिकौं जु मचायौ सोर❀मेरे घर आयौ को चोर।
जब इत उत लागी टक टोहन[5]❀काहू कही लै गयौ मोहन ॥५९॥
हौं पाछे ही लागी गई❀उनि लै और सखा कौं दई।
मैं कहा लला आरसी दीजै❀ऐसो काम बहुरि नहिं कीजै ६०
पीत पिछौरी झारि दिखाई❀चोरी मोहि लगावन आई।
करहु न हाँसी देहु आरसी❀लीनी अब न लगी बार[6]सो॥६१
तो घर और पाउँ नहिं धरयौ❀कैसे मोहिं चोर तैं करयौ।
खोज[8] बने देखौ बलि आई❀नापि लीजियै अपने पाइ ॥६२॥
मोसे हैं बालक बहुतेरे❀झूँठे वचन न मानौं तेरे।
मारग में कहुं डारि जु आई❀मोसौं चपरी[9] लेत लराई ॥६३॥
लला जाई यसुमति सौं कहिहौं❀हौं चुप होइ घर बैठि न रहिहौं।

---

[1] —फुरती मे गोल मोल लट्टू की तरह. [2] —शंका या लिहाज. [3] —दो टूक बात करता है, [4] —अत्यन्त धीमे धीमे पांव, [5] —खोज करने. [6] —देरी भी न हुई. [7] —कैसे मुझे ही एक चोर निश्चय कर लिया क्या सबूत है. [8] —खोजी से मेरे पांव तो पहिले नाप करा ले यों श्याम बोले, [9] —जोरा जोरी लराई मोल लेनी है।

तू सूँ मिनि दही दबकावैं[१] ❀अपनें लरिका हूं कौं खावैं॥६४
काहू ग्वाल डरी[२] वह पाई❀सो तेरे घर ओर बगाई[३]।
चलि हम संग ढूँढि देंइ तोहि❀चोरी बहुरि लगाइ न मोहि॥६५
हौं तब अहुटि[४] जु घर कौं चली❀पाछें लगी ग्वाल मंडली।
मुहि कह्यौ तू जु ढूँढि चौबारैं❀घर आंगन सब हम जु निहारैं ६६
हौं ऊँचै चढ़ि ढूँढति रही❀उनि जू बैठि घर खायौ दही।
ऊँचे ते हौं उतरी जबै❀वे भाजे बाहिर कौं सबै॥६७॥
पौंरि जाइ कै कही जु मोंहँन❀क्यौं अब लगी हमारें गोंहँन[५]।
ढूँढि आरसी हम तुहि दई❀तू प्रसन्न नहिं तौ हूं भई॥६८॥
वह दिखि तो पीढा पै धरी❀यों कहि मोहि खिस्यांनी[६] करी।
ले सँभारि अपनौं घर बार❀क्यौं आवति लागी हम लार ६९
इक दिन यौं मुहि नाच नचाई❀यह लरिका कौतिकी महाई।
जद्दिप अस औगुन या मांहिं❀तद्दिप मन तें बिसरै नांहिं॥७०॥
दोहा—सुन्दर सुघर जु कौतिकी, निरषि रहै[७] सब ओर।
बालक कै यह[८] पेखनौं, दधि मांखन कौ चोर॥ ७१॥
आये काम बिगार हीं, बिनु आये न चित चैंन।
यह चेटक इहि अंग है, कहें देत मन नैंन॥ ७२॥
अस कौत्तिक रचैं नगर में, संग लिये बहु ग्वार।
वृन्दाबन हित रूप बलि, मोंहँन नन्द कुँवार॥ ७३॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री कृष्ण दधि माखन चोर आरसी लीला बरनन पंचम लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे॥

१—छिपा २ के, २—मैया पै न जाए पहिले इसका दही खा लें सो कहा एक ग्वाल को मिली थी राह में गिर पड़ी थी, ३—फैंक दी, ४—वापिस, ५—पीछे लगी है, ६—शर्मिन्दा या उल्लू बनाया, ७ - सब तरफ पैनी नज़र, ८—इतना शिशु और यह परीक्षा।

।। अथ षष्टम लहरी प्रारम्भ ।।

दोहा—दधि माखन को चोरिबौ, यह चित रहै विचार ।
रसना रस चसकैं परी, पुनि कौतिक रिझवार[1] ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

एक बाट[2] में चलत जु टोकैं❀अपने घर दिस आवत रोकैं ।
सावधान वह रहै सदाई❀स्याम सखनि कौं घात बताई ।।२।।
जब यह छाक[3] जु बन लै जाई❀तब याकौ घर खोलौ आई ।
ताकि गये सब वाही बरियां❀कोठी की खोली जु किवरियां।।३।।
माखन कौ भांडौ जु निकारयौ❀लै कै मोहन मुख में डारयौ ।
तामें कछु करुवाहट आयौ❀नाक चढ़ाइ सु दूरि बगायौ[5] ।।४।।
बड़ी सूमिनि कौ कर परस्यौ❀या में कछु स्वाद नहिं दरस्यौ ।
घर सोवतु हौ वा कौ ढोटा❀खाट बांधि दियौ ताकौ चोटा।।५
मांखन भांडौ ढिग धरवायौ❀कछू बदन कछु हाथ लगायौ ।
गर्जति तर्जति कलहा[6] आई❀स्याम सखन संग गये पलाई।।६।।
घर कौ ऐसो हाल निहारयौ❀बेटा कें मुख चापट[7] मारयौ ।
वह रोवै उत मैया बकै❀चुटिया बांधि उठि नहिं सकै।।७।।
ग्वालिनि मन निश्चै यह धरयौ❀यह कौतुक नन्द सुत करयौ ।
पौंरि आय ठाढे भये मोहन❀लगे ग्वालि कौं चित टक टौहन[8]
है लराक सूँमिनी निराट[9]❀सुत की चुटिया बांधी खाट ।
प्रात दृष्टि जिहि तो मुख परै❀सो बासर मुख[10] अन्न न धरै ।।९

---

[1] —रिझाना ही मुख्य हेतु रहा. [2] —एक गोपी. [3] —पति को बन में भोजन देने जावे, [4] —कड़वा माखन [5] —फैंक दिया, [6] —घर दूर से खुला देख शोर मचाने लगी, [7] —क्रोध आया कि पुत्र ने घर की संभाल न करी उसे तमाचा जड़ दिया, [8] —उसकी ड्योढ़ी पर श्याम सुनने लगे कि भीतर क्या हो रहा है, [9] —श्याम बोले बेटे की चोटी बांध गई कि पीछे उठे तो माखन न खाले निपट कंजूसनी है, [10] —दिन भर भूखा रहे जो प्रात: तेरा मुख देख ले ।

जाहु चल्यौ लरिका इतरे[1] ❀ यह कौतिक सब तैं ही करे ।
शुभ लच्छण गहि सुत ब्रजराइ ❀ आयौ ब्याह न ज्यौं फिर जाइ[2] १०
अजू[3] ब्याह आयौ जु कहां तें ❀ फिरि समुझाइ कहौ यह बातें ।
जौ तुम कहूं खबरि है पाइ ❀ तौ तुम कौ हौं देहुं बधाई ॥११॥
हँसत हँसत तब नेरे गये[4] ❀ अधिक सनेह जनावत भये ।
ह्वै आधीन गोपी जु निहोरी ❀ वाके सुत की चुटिया छोरी ॥१२
मो सौं मीठी बातें करौ[5] ❀ दधि चोरी तें अब जिन डरौ ।
ग्वालनि[6] इनके मन की पाइ ❀ पलिका[7] पर दीनें बैठाइ ॥१३॥
नृप[8] सुत लला चलौ कुल रीति ❀ सब कोऊ तुम सौं करि है प्रीति ।
भलौ भलौ कहि हैं सब कोइ ❀ जस की विरधी नई नित होइ ॥१४
दोहा—होहि सुसील मिठ बोलनौं, सुन्दर राज कुँवार ।
ऐसे[9] बर कैं नृपनि की, फिरैं सगाई लार ॥ १५ ॥
सुन्दर[10] हौं जु सुशील हौं, मिठ बोलन निरधार ।
खबर करौ तुम बेगि दै, जौ कोऊ नृप रिझवार ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

गोपी सुनि कै हर हर हँसी ❀ लला चाह उर ब्याह जु बसी ।
पहिलें बात जु मीठी करी ❀ पाछे हांसी जानी परी[11] ॥१७॥
महा चबाई है यह ग्रांम ❀ सुधरन दै है काको कांम[12] ।
लला ब्याहु नहिं कोठी धर्यौ ❀ ब्याहु न मिलै बाट में पर्यौ[13] १८

१—गोपी बोली भाग जा रे लरिके बढ़ा घमन्डी है २—श्याम से चाल की व कहा कि तेरा ब्याह इस तरह रुक जावेगा इससे श्याम कुछ ठनक कर ढीले पड़े, ३—पूछा कि ब्याह की तो कोई सूरत ही नहीं यदि तू करादे तो तुझे बधाई दूँगा ४—गोपी के समीप गये और नम्रता से उसे बश में कर लिया, ५—गोपी बोली आओ लाला मुझ से मीठी बातें करो ६—इनके मनोनुकूल होकर, ७—पलँग पर बिठाया, ८—शिक्षा देने लगी कि राज पुत्र की भी चलन चलो सब प्रीति करेंगे इत्यादि, ९—गोपी ने समझाया गुणवान के लिये सगाई तो पीछे २ फिरा करती हैं, १०—श्याम बोले मैं कोई कम हूँ जल्दी तू ही खबर पहुँचा कि कोई नृप रीझकर सगाई देवे, ११—लाल गोपी के हँसने से समझे कि यह विनोद कर रही है, १२—श्याम बचन, १३—गोपी बचन ।

तुम में होइ सीलता बड़ाई❀बडो सजन तब करै सगाई।
तात मात खरचैं बहु दांम❀तब ह्वै है जु ब्याह घनस्यांम १९
चोरी की जु बांनि तजि देहु❀तब तुम नाम ब्याह कौ लेहु।
हम कौ चोर जु कौंने करयौ❀कहौ कौंन कौ बकुचा[1]हरयौ[2] २०
गोपी बचननि रचना करी❀सुनि मन लाल चटपटी परी।
आइ माइ सौं कह्यौ उमाहु❀मेरौ करि दै अब हीं ब्याहु॥२१
हौं न कह्यौ अब मानौं तेरौ❀बेगि ब्याह जु करै न मेरौ।
ग्वालनि कौ जु ब्याह जब होहि❀अधिक उमाहौ बाढै मोहि ॥२२
तूँ हाँ करै ब्याह की जब हीं❀भोजन आजु करौं हौं तब हीं।
और लाड बहुतेरे करै❀बात ब्याह की मन नहिं धरै २३
बड़ी[3] माइ हू कौं जु सिखावै❀ब्याह बधाये बहू न गावै।
गोपिन के सुत ब्याहि जु आवैं❀सो लरिकनि में मोहि चिरावैं२४
ब्याह करै कारे को कौंन❀हौं सुनि कै मुख धरि रहौं मौंन।
बलिदाऊ जु मिलै उनि ओर❀तब कछु चलै न मेरौ जोर ॥२५
ब्याह सन्देसौ सुनि हौं जब हीं❀बछरा लै वन जै हौं तब हीं।
यौं कहि लोट गोद में गये❀जननी कण्ठ लगाइ जु लये॥२६
दोहा–हँसति यसोदा रोहिनी, रहीं वदन तन हेरि।
बेटा तैं जु कहा कह्यौ, अब के कहि यह फेरि ॥ २७ ॥
नित लावै जु उराहने, सब के घर घर जाइ।
ब्याह कौन विधि होइगो, चोरि दूध दधि खाइ ॥ २८ ॥
मैया ब्याहु न करैगी, तौ जै हौं ननसार[4]।
चोर कहन तुम हूं लगी, न्याव न[5] इहिं संसार॥ २९ ॥
यह लै पीत पिछौरिया, घर धरि लकुट उठाइ।

---

[1]—गठरी या सिन्दूक, [2]—श्याम वचन, [3]—रोहिनी जी बड़ी मा, [4]—नाना के घर [5]—न्याय नहीं।

खरिक बन्धे रहैं बाछरु, हौं न चराऊँ जाइ ॥ ३० ॥
फरकन लागे अधर[1] कछु, भौंह चढी भर रोस ।
रहौं न तेरे नगर अब, मोहि लगावत दोस ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥

मचलि लोटि गये गोदी महियां❀महरि मनावति गहि गहि बहियां
बेटा ब्याहु करौं तो ऐसो❀ब्रज में कियौ न काहू जैसो॥३२
तू मांगे जैसो जु खिलौना❀सो मँगाइ देंउँ अब ही छौंना ।
कोऊ दिन मन धीरज धरि है❀बडो भूप तौ ब्याहु जु करि है३३
रोस न कीजै मेरे ललनां❀भई सगाई तेरी पलनां ।
मैं अब लग तोकौं न जताई❀तू अरबीलौ कुँवर कन्हाई ॥३४
ग्वाल लबार चिरावैं तोकौं❀आइ गुसाँ तू करै जो मोकौं ।
वे बालक पुनि बालक तूं जु❀मानै नहिं कहौं सो हूं जु[2] ॥३५॥
गोपी एक और उठि बोली❀लाल गुननि[3] की थैली खोली।
मां बेटा बतरात जु घर में[4]❀औरैं चरचा सुनि नगर में ॥३६
गुसा न करिये ब्रजपति ढोटा❀खोलि कहौं कि राखौं ओटा ।
जौ तुम चलौ तात की रीति❀तौ सब करैं जु तुम सौं प्रीति॥३७
सीखे कछु जु न्यारे लच्छन❀समुझति हैं पुर वधु विचच्छन[5]।
ब्याह कर्यौ जो चाहौ लला❀नगर नचन की छाडौ कला[6] ३८
मैया[7] को यह बैठी आइ❀सोवति सी जु कछू बरराइ ।
सुपनें की सी कहति पहेरी❀कै यह वाइ[8] रोग ने घेरी ॥३९॥
सबै हँसि परीं छोटी बड़ी❀भामिनी सुनत लाज उर गडी।

---

[1]—होंठ फरके मन के प्रतिकूल अवसर से, [2]—मैं जो कहूँ नहीं मानता है, [3]—गोपी ने श्याम को खिझाने को निन्दास्पद शब्द कहे, [4]—घर में मा-बेटा जो भी कहो परन्तु नगर की कुछ पता है लोग लाला से कैसे तंग हैं, [5]—चतुर, [6]—नगर भर को नचाना छोडो अथवा घर घर नाचते फिरते हो उसे छोड़ो तो विवाह होगा, [7]—यहां कहां से आई काम बिगारू, [8]—वायु रोग के कारण बेपर की बात बिना पूछे बकती है,

अधिक जु रुचति ब्याह की बातें❀नाहीं कियें लला सतरातें[१] ॥४०
ऐसी दुलहिनि ब्याही आवै❀मोहन तुम पै पाइ दबावै।
जाके आगे नाचत रहि हौ❀कबहूं बढ़ि बढ़ि बात न कहि हौ
सुनि हँसि चितये भामिनी ओर❀चपल भई नैंननि की कोर[२]।
भोरी बात लला की सुनैं❀मैया सुकित कौ फल लुनैं॥४२॥
स्यांम अनोखी बातैं कहैं❀नित नव मंगल पुर में रहैं।
भोर हीं उठि ग्वालनि में आये❀समाचार सब कौं जु सुनाये॥४३
सब उराहनैं दै दैं जाती❀सुनि सुनि कै मैया सकुचाती।
मैया अब निसंक हौं भयो❀चोर नाम मैया हूं लयौ॥४४॥
अब तुम रोर नगर[३] में पारौ❀जिय में हक[४] धक कछु न विचारौ
एक बसति बरसानें वारी❀वाकें है मन ऐंड जु भारी॥४५॥
वह मोकों न दृष्टि तर लावै❀देखै जहां तहां जु चिरावै।
इक मन ह्वै सब उहि घर चलौ❀बुधि बल करिकै वाकौ छलौ ४६
सब हिनु मिलि कै हां हां करी❀यह बात सब मन में धरी।
वा घर और न कोऊ जाइ❀खरकौ लेहि धरत हूं पाइ[५] ॥४७
काहू की लई चोरि किवार❀जाइ धरी वाकें पिछवार।
एक एक कैं कन्ध चढायौ❀पकरि मुडेरी[६] सो चढि आयौ४८
ऐसी विधि सब भीतर गये❀तहां उपाय विचारत भये।
दधि माखन के बासन भरे❀लै गये जाइ छात्ति[७] पर धरे॥४९
वाही के जु कटोरा थारी❀अछन अछन लै गये खिलारी।
ऊपर छाति रची मंडली❀जेंवन लागे सब विधि भली ५०

१—ब्याह की नाहीं सुनते ही लला चिढ़ता है २—चपल नैन से मानो कहा कि तू भी पति से पांव दबवानी होगी और तेरे आगे वह नाचता होगा, ३-नगर भर में ऊधम मचा दो, ४—अपना पराया का भेद न रखो न शंका करो, ५—पग धरते ही आहट सुन लेती है, ६—दीवार का सिरा पकड़ कर, ७—छत पर।

भैया उतमें ताकत रहियौ❁आवति दीसै तब हीं कहियौ।
वह बैठी पौरी बतराइ❁उतहीं राखी दृष्टि लगाइ ॥५१॥
एकु सखा पुनि कृष्ण पठायौ❁बूरे भरी मथनियां लायौ।
और दिवारी[1] कौ पकवांन❁लै लै आवैं सखा सुजान ॥५२॥
जेंवत सबै मौंन मुख गहैं❁सैंनन ही में बातें कहैं।
तुष्टि पुष्टि सब ही जब भये❁तब पुनि बोलि बांनरा लये ॥५३
उनके आये माच्यौ सोर❁ये जु उतरि चले वाही ओर[2]।
उनि[3] लखि पायौ मोहन चोर❁तब दौरी उत हीं सह जोर ॥५४
भजी जाइ पुनि टेरति जाइ❁तन में गयो पसीना आइ।
आवौ री आवौ तुम सबैं❁भलौ दाव यह पायौ अबैं ॥५५
सबनि निकसि वे घेरि जु लये❁छल बल चलै न वसु परि गये।
जहां ह्वै चढै तहां लै आई❁जुक्ति देखि मन अधिक सिहाई ५६
देखैं तुम कैसे हैं आये❁वाही मारग फेरि चढ़ाये।
भोजन विधि की रचनां देखी❁गोपी मुदित भई जु विशेषी ॥५७
चोरी आये मो घर लला❁सीखे कहां कुबुद्धि की कला।
मेरो नाम न सुनि कैं डरै❁ये करतब मेरे घर करै ॥५८॥
देखत के छोटे से लगौ❁स्यांनी निपट तिन्हें हू ठगौ।
जौ उराहनो लैं कोउ जाइ❁तौ मानै न तुम्हारी माइ ॥५९॥
दोहा–मोहि बुलावैं महरि नित, हौंहिं अधिक आधीन।
तू है ब्याह बिचौलिया[4], दीषति परम प्रवीन ॥ ६० ॥
ब्याह तुम्हारे कारने, मैया करति उपाइ।
लला प्रगट गुन ये करत, काकौ मन जु पत्याइ ॥६१॥
तुम गुन परखन को लला, बसी नन्द पुर आइ।

१—दीपमाला, २—जिस रास्ते आए उसी से लौटे क्योंकि घर की ड्याढी पर गोपी बैठी थी. ३—गोपी ने, ४—दलालन बनने को यसोदा मेरी प्रार्थनाए करती रहती है,

भली भांति लच्छन जु तुम, दीनें सब दरसाइ ॥ ६२ ॥

॥ चौपाई ॥

बिनु[1] बोलेंई मो घर आय❀सखा बराती मनु सजि लाये ।
बैठे भली मंडलो जोरि❀सामग्री सब लाये चोरि ॥६३॥
बिनु आदर ही भोजन कर्यौ❀प्रगट हिं सब कौ जान्यौ पर्यौ।
दूलहु दिषियतु आतुर महा❀मौरु[2] न बान्ध्यौ कहिये कहा ६४
फेरिनु[3] बरियां रहे खिस्याइ❀फिर क्यौं चले पिछौंडे पाइ ।
सकुचे बहुत बात यह सुनि कैं❀नीची ग्रींवा करि जो पुनि कैं ६५
ऐ पै सुनीं ब्याह की बात❀मन फूलैं पै सिमटे गात ।
सखनि[4] के अंग चुहुटियां भरी❀इनकी कछु इक कांनि जु करी६६
नाचौ अब यसुमति के जाये❀जैसे तुम सब नाच नाचाये ।
जौ तुम अब नाचौगे आछें❀तौ हौं छोड़ देउँगी पाछें ॥६७॥
छोडन कह्यौ संक मन भाजी❀नाचन लगे भये हिये राजी ।
गोपी हँसि तारी पटकावैं❀विविध भांति करी इनहि नचावैं
कांन पकरि के अब कर जोरौ❀बहुरि न मो घर माखन चोरौ ।
गोपी के मन आनन्द भयौ❀चोरी कौ दुख भूलि जु गयौ॥६८
सब[5] जोरी जु परोसिनी साथ❀ग्वालनि के गहि लीनें हाथ ।

१—गोपी श्याम को ताने से कहने लगी कि ऐ रे लाला तुम बिना बुलाये ही मेरे घर मानो बराती साथ लेकर विवाह को चले आये इतने उतावले कि सिर पर, २—दुलह का मौर भी नहीं बान्धा अच्छा दूलह है, ३—जब फेरे देने का समय हुआ तो घबड़ा कर पीछे के पांव करके चल दिये क्या यों विवाह होते हैं, ४—श्याम ने उसको बरसाने को जाना तो था परन्तु यह पता नहीं था कि मेरी सगाई जो बरसाने में गर्भ के समय की माता बताती है यह उसी को बिगाड़ देगी इसलिये अपने सखाओं के चुहुटियां भर कर संकेत किया कि भाई मेरा काम न बिगड़ जाए सो तुम अब सब चुप से सहलो इसलिये उस गोपी से अब उलझना न चाहा और यहां तक कि उसके कहने पर आगे नाचना स्वीकार किया तथा कान तक पकड़ लिये, ५—एक उत्सव सा बनाकर गोपियों को साथ ले मंडली के ग्वालों के हाथ पकड़ कर महरि के घर चली ।

सब कोउ संग जु लाग्यौ आयौ❀कौतिक भलौ नगर दरसायौ ७०
सब कहैं धनि धनि तू बड़भागी❀चोर[1] घरी तो हाथ जु लागी।
ढोटा अब हुँ मन में डरौ❀नगर माहिं जिन चोरी करौ॥७१
गोपी हँसति नन्द घर गई❀जाइ महरि ढिग बैठति भई।
मुख तें बचन कहति अनखाति[2]❀मन ही मन में अधिक सिहाति
दोहा—पिछवारें जु किवारि धरि, मो घर चढ़ि गयौ लाल।
हौं पौंरी बैठी जु इन, रची मण्डली ग्वाल॥ ७३ ॥
दधि मांखन पकवान सब, लियौ किंवारी खोलि।
भायौ सो खायौ जु इन, पुनि लिये बान्र बोलि॥७४॥
बासर[3] मध्य जु घर मुस्यौ, रात्ति अँधेरी नांहिं।
हौं पहरें[4] बैठी रहीं, वाही पौंरी मांहिं॥ ७५ ॥
पूत धूत ऐसो महरि, देख्यौ सुन्यौं न कान।
ताको तुम ब्याहन कहति, बेटी श्री बृषभान॥ ७६ ॥

॥ चौपाई ॥

ए जू तुम बरसानें बासी❀सांच कहतु है कै कछु हांसी[5]।
या पै तुम जु दया ही करौ❀बात खेल की मन जिन धरौ७७
मो मन यह उपज्यौ जु हुलास❀तुम्हैं पठावन कीरति पास[6]।
पहिले यह कारज करि आवौ❀तब हांसी के वचन सुनावौ॥७८
लरिकनि खेल अधिक मन भावै❀ताकौ को उराहनौं लावै।
महरि बहुत आधीन जु भई❀गोपी हँसति आपु घर गई॥७९
ऐसे कौतिक नित नित करैं❀महरि न सुनि मन रंचक धरैं।

---

[1]—घरों में चोरी कराने वाला सरदार चोर घरी, [2]—दिखाने का क्रोध करने लगी. [3]—दिन देखते ही मैं तो लूटी गई, [4]—पहरा देती रही तो भी चोर नहीं माना, [5]—यसोदा बोली [6]—यसोदा कह रही है मैं तो सगाई के लिये तुझे भेजने को थी और तू उराहने देने आई है।

गोपी भींजीं कृष्ण स्नेह❀सब चाहैं आवैं हम ग्रेह ॥८०॥
विधि हुँ न पायौ शिव हुं न लह्यौ❀ऐसो सुख सागर ब्रज बह्यौ।
निगम न परसी लीला एह❀जो प्रभु कीनी ब्रजपति ग्रेह ॥८१
मंत्रनि मुनि आवाहन करैं❀तदपि न परस्यौ सब ते परैं।
सो गोपिन के घर घर डोलैं❀हेलनि[1] कर ब्रजबाला बोलैं॥८२
नहीं निरादर मन में धरैं❀तिनके घर में रूस्यौ परैं।
कहैं भाग्य कोउ ब्रज जन कहा❀अचरज मानत शिव विधि अहा
दोहा–दूध जमावत बार अस, गोपी कहैं जु बैंन[2]।
जमियौ गाढ़ौ मिष्ट ज्यौं, रुचैं कमल दल नैंन ॥ ८४ ॥
सब उर प्रीति जु महरि सम, प्रगट जनावैं नाहिं।
देखन आवैं इह जु मिस, दैं उराहनें जांहिं ॥ ८५ ॥
कृष्ण प्रेम भींजे रहैं, सबै नगर नर नारि।
दृग देखन की चाह अस, पल हू न देति बिसारि ॥८६॥
लालन पालन कृष्ण कौ, करत तात पुनि माइ।
छिन छिन प्रति आनन्द बढै, तन मन हूं न समाइ॥८७
ईश्वरता अस सुख कहां, जो ग्रह गोप विनोद।
वृन्दावन हित रूप बलि, विपुल बढ़ायो मोद ॥८८॥
जिन उर प्रेम जु महरि सम, समुझि लोक सिरमौर।
बच्छ हरन बरियां लयौ तिन हू कें कर कौर[3] ॥ ८९ ॥
बच्छा हूं ते सत गुनो हरि सौं जिनको नेह।
तिन गाइन के बाछरू, भये जु कृष्ण सदेह[4] ॥ ९० ॥

१—मंत्रों के आह्वादन से अप्राप्य श्री कृष्ण प्रेम वश गोपियों के हेला हेला कह कर गँवार ढङ्ग से बुलाने पर दौरे आते हैं न अपना निरादर मानते हैं, २—मानो दूध को चेतन मान कर कहती हैं कि अरे दूध ! गाढ़ा जमियो पानी वाली दही न जमना, ३—जो गोपी वात्सल्य भाव की थीं, ४—ब्रह्मा के ग्वाल हरने पर स्वयं ही ग्वाल गो बछड़े बने थे यह प्रेम लीला का वर्णन है।

अस कृपाल को लोक में, सोधौ वेद पुरान ।
भरत मनोरथ व्रज जननि, कहँ लगि करौं बखान ॥६१॥
कहा न कौतिक व्रज किये, व्रज बासिनु के काज ।
हरुवे गरुवे चरित बहु, लगैं प्रिय रसिक समाज ॥६२॥
तात मात करैं लाड हद, तदपि न भाजैं भूष ।
छिन छिन नव नव रुचि बढै जैसे स्वाद पियूष[1] ॥६३॥
लाड जु गरुवौ अस निरखि, हरुवौ लगत सुमेर ।
प्रेम गहर अनकूत है, सागर हूं मित फेर[2] ॥६४॥
पिता कौन व्रजराज सम, को यसुदा सी माइ ।
रीझे जिनके लाड पै, रहे हिय हाथ बन्धाइ ॥ ६५ ॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण दधि माखन चोरी द्वितीय लीला वरनन षष्ठम लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ सप्तम लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—अब बरनौं श्री राधिका बाल चरित्र अनूप ।
लाइक[3] दाइक सुमति मुहि, गुरु वर श्री हित रूप ॥१॥
कीरति कृपा सदेह मनु, सुता जु रूप सदेह ।
मंगल निकर[4] सदेह तहाँ, अस रावलि पति ग्रेह ॥२॥
अजिर भूप वृषभानु कें, राजति गोपी वृन्द ।
चारु[5] चकोरी मुदित मनु, निरषति अद्भुत चन्द ॥३॥
सुन्दर मन्दिर पालनौं, लली झुलावति माइ ।
कर गहें डोरी पाट की, हरष न हिये समाइ ॥ ४ ॥
सिर पर टोपी तास[6] की, कोर लगीं मणि माल ।
पीत झँगुरिया तन लसैं, दिपतु चखौंडा[7] भाल ॥५॥

१—अमृत, २—प्रेम की गहराई नहीं मापी जा सकती सागर की फिर भी थाह लग जाती है, ३—सद्बुद्धि देने वाले एक गुरु ही हैं, ४—निधि या समूह, ५—चकोरी की तरह चन्द के दर्शन को प्यासी, ६—ज़रीदार सिल्मे की, ७—काला दाग नजर न लगे ।

॥ चौपाई ॥

कीरति कुँवरि झुलावै पलनां❀आइ जुरैं सब पुर की ललनां[1]।
चुटकी दै दै कै दुलरावैं❀महा मोद भरि मंगल गावैं ॥६॥
किलकि किलकि बहु कौतुक करैं❀चरन अँगूठा मुख में धरैं।
अम्बुज[2] कनक खिली मनु कली❀इह विधि सोभित आँनन[3] लली
सब अवतारनि कौ जो मूल❀ताके कोटि प्राण सम तूल।
कीरति दूध पलति[4] है सोई❀अतरकि[5] कथा कहै कहा कोई ८
लै बैठें जु अंक जब रांनी❀महा भाग जो मुनिनु बखांनी।
स्तन पान करैं कंचन तनी❀मुख तें झरति दूध की कनी ॥९
सो ब्रज के वाइस[6] चुनि खात❀ब्रह्मादिक जाकौं पछितात।
बदन[7] निरखि प्रमुदित ब्रजनारि❀दिन दिन बढ़त जु राज कुँवारि
भेष बदलि सब शक्ति जु आवैं❀दरशन अवसर तेऊ न पावैं।
शिव विधि आदि उमा हैं रहैं❀बाल चरित सब देख्यौ चहैं ११
जो सुख गोप गोपिकनि लह्यौ❀फनिपति[8] हूं पै परतु न कह्यौ।
गोधन बढ़ै बढ़ै सुख छिन २❀बढ़ै लच्मी घर घर दिन दिन १२
लाड बढ़ै कीरति उर नयौ❀प्रेम प्रकाश सकल ब्रज भयौ।
जब गौरंग[9] घुटुरुवनि चली❀बाजति पग पैंजनियाँ भली॥१३
ज्यौं ज्यौं होतु घूँघुरिनु नाद❀कुँवरि हिये बाढ़तु अहलाद।
जब मुरि देखति मैया ओरी❀अधरनि में मुसिकनि थोरि थोरी
जननी उर सनेह जब सरसै❀दूध उरोजनि[10] तें तब बरसै।
भुज भरि लेंइ पय पान करावैं❀चन्दन पलिकियां[11] पुनि पौंढावैं[12]

१—गांव भर की नारियां इकट्ठी हो जातीं, २—स्वर्ण रंग की कमल कली के समान, ३—मुख ४—कीरति के स्तन के दुग्ध से पालन पोषण, ५—तर्क से परे, ६—कौवा दुग्ध का कण खा जाता है, ७—मुख, ८—शेषनाग, ९—गौर अंग वाली श्री राधा जी, १०—स्तनों से, ११—छोटे से पलंग पर, १२—सुला देती हैं।

झीने पट छनि छनि छबि निकसै❀राँनी देखि देखि हिय बिकसै ।
भूख लगै तब हीं पुनि जगैं❀मचलैं कर पद पटकन लगैं ॥१६
लेइ उठाइ ताही छिन अंक❀जननी निरखै वदन मयंक[1] ।
अति लड़ि कौ पय धापि[2] पिवावैं❀हाथ खिलौना पुनि जु गहावैं १७
दइ बैठारि अजिर के मांहिं❀ठाढी करैं जु गहि गहि बांहिं[3]।
पुनि मैया पग चलन सिखावैं❀घर की देहरि ताहि नखावैं ॥१८
देहरि नाखी भानु दुलारी❀जननी मॉंन्यौ मंगल भारी ।
राधा नाम माइ कहि बोलैं❀भरै हूंकरा पुनि मुख खोलैं ॥१९
नाम आपुनौ समुझन लगो❀जो टेरैं तित आवैं भगी ।
कनक घूघंरू झनकैं खरैं❀कर पग चूरा हंगुली गरैं ॥२०॥
श्रवन झूमिका शोभित महा❀नथुली की छबि बरनौं कहा ।
इन्दु नील मणि कठुला लसैं❀ज्यौं उर रुरकै त्यौं लखि हँसैं॥२१
दिन दिन अति लडि भई सयानी❀मुख ते निसरै मीठी बानी ।
तात देखि मन उपजै मोद❀दौरि जाइ कैं बैठी गोद ॥२२॥
बाबा अपने हाथ जिमांवैं❀लै लै ग्रास कुँवरि सचु[4] पावैं ।
कबहूं अंगुरि करि जु बतावैं❀बाबा वह दिखि[5] वाँनर आवैं २३
लागैं[6] गरैं कछू मन डरैं❀गौरंगी अस कौतुक करैं ।
बाबा कहै कुँवरि मोहँनी❀लाउ उठाइ दूध दोहँनी ॥२४॥
जाइ दोहँनी कर सौं गहैं❀उठै न तब बाबा तन चहैं ।
अधिक हँसैं लखि रावलि ईश❀रवँकि[7]गोद लैंइँ कर धरि शीश२५
ऐसे लाडत निगमनि थाती[8]❀सीतल क्यौं न होहि तिन छाती
अँगुरी गहैं अजिर मधि डोलैं❀बाबा मैया कहि कहि बोलैं ॥२६

---

[1]—मुख चन्द्र. [2]—खूब छकाकर, [3]—भुजा पकड़ कर खड़ा करती है, [4]—आनन्द [5]—वह देखो बन्दर आरहा है, [6]—बाबा की छाती से भय के कारण चिपट गईं, [7]—उछल कर पिता ने गोद में ले लिया, [8]—वेदों को अमानत,

श्रमित होहि तब बैठि जु रहै❀मुहि[1] लै गोद माइ सौं कहै।
बेटी मो लगि दौरी आउ[2] ❀तू करि गहिं कैं मोहि उठाउ ॥२७
फूली फूली राधा आवैं❀जननी को कर गहि जु उठावैं।
करि करि जोर लली उचकावैं❀हँसि हँसि कै कीरति सम्हरावैं २८
बेटी अब कै बल करि फेरि[3]❀श्री दामा भैयौं ले टेरि।
बैठे उठैं जोर पुनि करैं[4]❀मैया टारी हूं नहि टरैं ॥२९॥
उठि कै रांनी ठाढी भई[5]❀बढ़ी कुँवरि मन फूल जु नई।
बेटी मोहि उठाइ जु लई❀हौं अब तो पै बलि २ गई॥३०
ऐसे लाड लडावैं नित नित❀रांनी सुख भींजी जु रहै चित।
अतर्कि सुकृत कीरति लह्यौ❀को अस समरथ चाहै कह्यौ ॥३१॥
दोहा—ऐसी जा मुख मोहँनी, बचन बिलोवत हीय।
न्याइ धन्य कीरति भई, जिन अस जाई धीय[7] ॥ ३२ ॥
सर्वेस्वरि जाकें उदर, बास कियौ दस मास।
मुक्ति अचाही हूं करत, जा पौरी[8] की आस ॥ ३३ ॥

॥ चौपाई ॥

भानु पौरि खेलति गौरंग❀गोपनि सुता अनेक जु संग।
लाड तोतली बातें करैं❀मैया कें उर आनन्द भरैं ॥३४॥
अँगुरि गहि रांनी लै आई❀आँगन मांहिं आंनि बैठाई।
अजिर मांहिं हीं खेलति रहौ[9]❀बाहिर जाँन टेव जिनि गहौ ३५
बाहिर एक जु हाऊ आवैं❀लरिका लरिकिन कौं डरपावैं।

---

*१—थक जाने पर मैया को कहती हैं मुझे गोद में ले, २—मैया ने कहा तू स्वयं दौड़ कर आ मुझे खड़ा कर बल लगा देखूं तेरे में कितना बल है, ३—मैया कहती है फिर बल लगा और साथ ही श्रीदामा भैया को बुलाले तेरी सहायता करेगा फिर तू उठा लेगी, ४—मैया जरा भी न हिल सकी, ५—स्वयं खड़ी हो गई, ६—हृदय मथित होता जब जब वचन बोलती, ७—बेटी, ८—ड्योढ़ी, ९—महल से बाहर जाने की आदत न पड़ जाए ड्योढ़ी तक खेलो।

पौरी बाहर पांव न धरिये❀वा हाऊ ते अति मन डरिये ३६
मैया हाऊ कहत जु काकौं❀कैसो है बताइ दै ताकौं।
बेटी वाको नाम न कहनौं❀वह उतारि लै जै हैं गहनौ ॥३७
बाबा[1] वाहि न आवन दै हैं❀मौं कौं जाइ बचाइ जु लै हैं।
पुनि श्री दांमा खेलतु आयौ❀ताकौं राधा टेरि[2] बुलायौ ॥३८॥
हाऊ कहां रहतु है भैया❀मो सों कहि गई अब हीं मैया।
अरी बहिन तुहि माइ डरावै❀ह्यां हाऊ नहिं आवन पावै ॥३६॥
मोहूं को डरपावै अब हूं❀मैं हाऊ देख्यौ नहिं कबहूं।
वीर बहिन ऐसे बतराये❀दोऊ मिलि मैया पै आये ॥४०॥
झूँठ नाम हाऊ कौ लेहि❀हमहि न बाहिर खेलन देहि।
बाबा सौं करि हैं जु पुकार❀हमें डरावति बारम्बार ॥४१॥
बेटा महा धूत श्री दांम❀मोहि न करन देहि घर काम।
अब यह कूटक[3] नयौ बनायौ❀बहिन्यैं हूं सिखाइ कै लायौ ॥४२
इक अरबीली राधा लली❀ताहि सिखावत तू विधि भली।
फैंनी मिश्री दूध मिलाइ❀भाजनि भरि धर्यौ आगे लाइ४३
बहिनि वीर जेंमो इक ठौर❀हरैं हरैं मिलि लेहु जु कौर।
राधा कौं श्रीदाँम जिमावै❀बिच बिच ग्रास आप मुख लावै४४
राधा कहै तोतलीं बतियाँ❀रीति सुनि सुख उपजै छतियाँ
भैया खेलन लै चलि मोहि❀गुडिया एक देउँगी तोहि ॥४५॥
जौ तू बाहिर खेलन जाइ[4]❀मैया को जिनि बात सुनाइ।
जाइ कपाट पौरि कै दै है❀मो पै तो पै गुसा जु ह्वै है ॥४६
रांनी सुनति जु दै कैं कान❀मन ही मन लगै अधिक सिहान[5]
लली लला जेंयेइ इक साथ❀जननीं आइ धुवाये हाथ ॥४७॥

---

[1]—श्री राधा जी ने मैया से कहा, [2]—हाऊ के सम्बन्ध में पूछने को समीप बुलाया और पूछने लगी, [3]—रहस्य खोल दिया, [4]—श्री दामा बहन से बोले [5]—हर्षोत्फुल्ल मन,

जल अचवाइ खिलौना दये❀बैठि अजिर दोऊ खेलत भये ।
गोपनि सुता आइ भई भैंली[1]❀नांनाँ विधि के खेल जु खेंली॥४८
राँनी निकट बोलि सब लई❀गोझनि[2] भरि भरि मेवा दँई ।
बेटी लली खिलावौ घर में❀जाँन देहु जिनि और बगर[3] में ४९
लली निकसि जब बाहिर जाइ❀मोकौं घर आँगन न सुहाइ ।
बाहिर जान जु अरबी करै❀कहौ बात ज्यौं यह मन डरै ॥५०
काकी[4] लै गोदी बैठावैं❀तन उबटन करि कै जु न्हवावैं ।
प्रफुलित वदन मनौ जल जात❀दमकत हैं दर्पन से गात[5] ॥५१
तिनकौं पौंछति काकी कर बर❀पुनि पहिरावति सुन्दर अम्बर।
लघु भूषन पहिराये अंग❀अचिरज रूप कुँवरि गौरंग ५२
काकी उर अति भरी हुलास❀लै आइ कीरति के पास ।
रज मंडित जु कुँवरि के तन में❀देखत भइ खटक मो मन में॥५३
नव नव लाड जु तुम विस्तरौ❀लेहु न्हवाइ न आलस करौ ।
अति खेलन इहि बांनि जु पड़ी❀रहै राति दिन रज में भरी ॥५४
बेटी सिख तू सुनै न मेरी❀देइ उराहनौ काकी तेरी ।
हौं लेहुँ जबहिं न्हावन नाम❀बाहिर भाजै तजि कै धाम ॥५५
चोटी गुहन मोहि नहिं देही❀गुहन लगौं तब दृग भरि लेही[6]
यह सुनि सकुचि कुँवरि जो भोरी❀चितै रही मैया मुख ओरी ५६
हँसि लागी काकी कै गरैं[7]❀सोभा की उलँड[8] मनु परैं ।
बाल बिनोद कुँवरि अस रचै❀तात मात पुरजन[9] सुख सचै[10]
पिढा पटा मैया जु मँगावै❀कुँवरि जाइ कर सौं उचकावै[11]
औचैं फिरैं अजिर के महियां❀माइ जाइ गहि लावै बहियां॥५८

---

[1] इकट्ठ हुई, [2] झोलियां, [3] इधर उधर गलियों में, [4] चची, छोटे भान की बहू, [5] अंग, [6] रोने लग पड़ती है, [7] गले में चिपट गई, [8] बाढ़ आगई. [9] नगर के नर नारी, [10] भीजे या सने रहते, [11] उठाने के लिये बल पूर्वक उठाती हैं।

डिबिया आरैं[1] धरी बतावै❀ताहि लैंन कौं राधा धावै।
पहुँचै नहिं तब उद्दिम[2] करैं❀मूढा खैंचि चरन तर धरैं ॥५९॥
लेइ उतारि पुनि मुरि मुरि देखैं❀जननी अपनौं भाग विशेषैं।
लाइ माइ कैं हाथ गहावैं❀रानी रोम रोम सचु पावैं ॥६०॥
राधा मेरी भई सयाँनी❀यौं कहि वारि वारि पियौ पानी।
दृष्टि बँचाइ जु छाप बगेलैं[3]❀लली हिं खिलावैं आपुन खेलैं ६१
मैं मुन्दरी कहुं डारि जु दई❀ढूँढि लाउ हौं बलि बलि गई[4]।
किलकि किलकि कैं डोलैं भगी❀तुरत ही हाथ मूँदरी लगी ॥६२
अँगुरिनु पहिरैं खसि खसि परैं[5]❀पद पटकावैं कौतिक करैं।
अधिक गुसा करि पटकि जु दीनी❀कीरति हँसि उठाइ कर लीनी ६३
मैया मुँदरी भौंडी तेरी❀यह तौ बनी न अँगुरी मेरी।
जौ तू प्यारी मेरी माइ❀या मुँदरी कौं देहि बगाइ[6] ॥६४
वह मुँदरी दूजैं कर लई[7]❀बोली यौं बगाई मैं दई[8]।
रांनी कह्यौ कर्यौ तैं मोरौ❀बहुत भलो मैं मान्यौ तेरौ ॥ ६५
हँसि कै लई लगाइ जु अंक❀चूम्बन लागी वदन मयंक।
आनन्द सिन्धु मगन रहै मात❀निसि बासर नहिं जानैं जात ६६

दोहा–लाड और आनन्द कौ, भाँन भँवन मित[9] नांहि।
छेह[10] परतु नहि भीर कौ, गोपी आवैं जांहि ॥ ६७ ॥
खेलति हरि अह्लादनी, मन्दिर रावल भूप।

१—ऊँचे आले में रखी. २—हाथ नहीं पहुंच पाता तो मूढ़ा आदि रख कर युक्ति रचती हैं. ३—राधा न देख सके ऐसी युक्ति से मुँदरी फैंक दी, ४—फिर मैया ने कहा राधा तू ढूढ ला दे, ५—राधा अपनी अँगुली में पहनती है परन्तु वह बड़ी होती है क्योंकि मैया के हाथ की है, ६—राधा खिज गई थी सो मां से कहा कि इसे फैंक दे. ७—मैया ने छल कर दूसरे हाथ में ले प्रथम हाथ दिखाया कि देख मैं ने फैंक दी है, ८—राधा को बहका दिया, ९—बे अन्त हैं १०—न्यून, कम।

दिन दिन के विनु मित चरित वृन्दाबन हित रूप ॥६८॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा बाल चरित
लीला वरनन सप्तम लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ अष्टम लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—जब पिछिली रजनीं रही, कुम्वरि जगी तिहिं बार।
मैया कौं जु जगावही, झटकि झटकि उर[1] हार ॥ १ ॥
रौंनी तू निद्रा जु बस, सुनति न मेरे बैंन।
मोहि कलेऊ दै जु अब, भोर[2] भयो लखि नैंन ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अति लड़ि[3] पुनि पुनि ऐसें कहै❀सुनि कीरति चुपकी ह्वै रहै।
प्रात[4] भयो उठ बैठो माइ❀मोहि कलेऊ देहु कराइ ॥ ३ ॥
बेटी[5] अबहिं दरशति राति❀तू कहा सोवति में बरराति।
इतनीं बात मात की सुनि सुनि❀गहि अंचल झकझोरति पुनिपुनि
सोवत[6] ते बाइस[7] हू जागे❀प्रात जनावत बोलन लागे।
कुरुकुट[8] नाद उच्च सुर कीयौ❀तू न सुनति पै मैं सुनि लीयौ॥५
अरी मेरी राधा निपट सयांनी❀हौं वारने गई तो बांनी।
करुना भीजि उठी तब मैया❀लेति लली की भूरि बलैया ६
दीपक धर्यौ चौमुखौ बारि[9]❀दधि के भाजन धरे निकारि[10]।
अपु[11]कर दांतिनि ललिहिं कराई❀भरि कटोर गाढी दधि लाई७
पीसी मिश्री तामें डारी❀पुनि लाडू दियौ कर सुकुँवारी।
मैया मुहि तू हाथ जिमाइ❀पाछें दधि को मथियौ जाइ ॥८॥

१—गले का हार खींच कर, २—प्रात:काल, ३—अत्यन्त लाड योग्य, ४—मैया को राधा जगाती है कि प्रातः होगया उठ मुझे भूख लगी है, ५—मैया बोली अभी रात्री है, ६—राधा प्रातः होने का प्रमाण देती है, ७—कि कौवे बोल रहे हैं, ८—मुरगा, ९—जलाया १०—निकाल कर रखे, ११—आप दातुन की फिर राधा को कराई अथवा अपने हाथों से राधा को कराई ।

माइ जिमावति गाढी प्रीति❀गावति गिरि जस की रस रीति[1]
प्रात जानि श्री स्यामा जग्यौ❀आइ माइ पै ठिनकन लग्यौ ॥
बाहू कौं दांतिनि करवाइ❀अपनी ढिंग बैठार्यौ लाइ।
वीर बहिन जेंवति इक ठौर❀होडी होडाँ माँगत कौर ॥१०॥
रानी कहै न ऊधम करौ❀हरैं हरैं ग्रास बदन[3] तुम धरौ।
गाइ खरिक[4] तें दुहि दुहि लाये❀काँवरि[5] ग्वाल काँध धरैं आये ११
धरि धरि जात अजिर के माहीं❀इक आवैं पुनि इक फिरि जांहीं।
भरि गये भवँन भरे पुनि अगँना[6]❀देखि देखि राधा भई मगनां[7] १२
मैया पय[8] भाजन हैं कितमें❀मोहि गनाइ देहु तू तितने।
राधा तू अरबीली महा❀भाजन गनि कैं करि है कहा[9] १३
मैया अपने घर की संपति❀मुहि न बतावै तू स्यांनी अति।
केते खरिक जु देस भयानें❀किते खरिक है इहि बरसांने॥१४
किती गाइ अरु केती बाछी[10]❀कहि मोसों मेरी मैया आछी।
गाँव गाँव गोधन छये घनें❀बेटी मोपै[11]गनत न बनै ॥१५॥
गन्यों चहै जो बछियाँ गाइ❀तौ तू बूझि तात[12] सौं जाइ।
मैया जो तू भई उदास[13]❀तौ हूं जाउँ तात के पास ॥१६॥
अब तू राधा भई सयांनी❀मेरी बात जु उलटी मांनी।
तब हीं आये रावल राइ❀राधा लई कण्ठ लपटाइ ॥१७॥
बैठे चौकी आनन्द भरि कैं❀लीनी अंक सीस कर धरि कैं।
कहा[14]कहा भोजन रुचैं जु तोकौं❀सो सो कहि दे तू अब मोकौं१८

१—गोवर्धन का यशोगान करती जाती हैं, २—झगड़ो नहीं, ३—धीरे धीरे मुख में ग्रास लो, ४—गोशाला में से, ५ - बैंगी, ६—कोठे तथा हवेली सब भर गये, ७—विस्मित तथा मगन होगई, ८—दूध के भरे, ९—गिन कर क्या करेगी, १०—बछियां कितनी संख्या में हैं, ११—मुझ से गिनती नहीं होती तुझे कैसे गिनाऊं, १२—खीज सी गई कहा जा पिता से जाकर पूछ, १३—तू प्रश्नोत्तर से ऊब गई है, १४—क्या वस्तु रुचि से खाती है।

मुहि उदास तू लागति कांहैं❀करयौ कलेउ है किधौं नांहैं ।
बाबा हौं जु उठी ही भोर❀माइ जगाई मैं बरजोर[1] ॥१९॥
करयौं कलेऊ तब जु अघाइ❀एक बात मैं बूझी माइ ।
बछियाँ गाइ हमारें केती❀तू गनाइ दै मोकौं तेती ॥२०॥
वह उदास सी परी जु सूझि❀कह्यौ अपने बाबा सौं बूझि ।
सुनि हँसि परे जु रावलि धनी❀बेटी निपट सयाँनी गनी ॥२१॥
पुनि कह्यौ तू भोरी निरधार❀गाइ गनत को पावै पार ।
देस भयानें ठांवैं ठांव❀गोधन[2] खरिक छये बहु गाँव२२
मंडल सांधि नंदीस्वर रानौं[3]❀उनि घर गोधन कितौ बखानौं
नौ भ्रातनि की अस प्रभुताई❀गोधन संख्या करी न जाई ॥२३
दोहा–इत उत बहु गोधन बढ्यौ, इहि ब्रज मंडल मांहिं ।
गाइनु संख्या को करै, ग्वालनि की मत नांहिं ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

बाबा मैया साँची कही❀मैं यह अरबी यौं ही गही ।
भीतर ते पकवाँन मँगायौ❀बाबा ने अपु[5] हाथ जिमायौ॥२५
बेटी तुहि को रुचै खिलौंना❀बाबा दिहु मँगाइ मृग छौंना[6] ।
पढे शुक सारौ और जु मैंना❀मदनी गाइनु को इक टैंना[7] ॥२६
करि दिहु उनको खरिक जु न्यारौ❀मोकौं अति हीं लागैं प्यारौ ।
मणि पिंजरा करि देहु अनूप❀तिन में पंछी नाना रूप ॥२७॥
सब कौ पग पैंजनी गढावौं❀सोंनी[8] सुघर खोजि बुलवावौं ।
तात मात मो बीर मल्हावैं❀ऐसे पंछी मोकौं भावैं ॥ २८ ॥

१—मैया की शिकायत मानो कर रही है कि इसे नींद बहुत आती है, २—गांव के गांव सब गौशालाओं से भरपूर हैं, ३—नन्द बाबा की सीमा नन्दीस्वर से उनके गौधन के सब खरिक हैं, ४—ग्वाले वे अन्त हैं फिर गौएँ कैसे गिनें, ५—अपने हाथ से, ६—हिरन का बच्चा, ७—गाय के गले की घंटी, ८—चतुर सुनार।

गुडियनि कौं शिंगार हौं करौं❀नीकी विधि मणि चौकी धरौं।
भैया मो सौं कहि कहि जाइ❀तेरी गुडियाँ दैंउँ बगाइ ॥२९॥
ऐसें कहैं जहूं दिसि फिरैं❀देखन देउँ न तब वह चिरैं।
पुनि पुनि कहैं जु ऐसें मोकौं❀कारी सासु मिलैगी तोकौं ॥३०
दौरचौ आवै यौं कहि जाइ❀जब तब मोकौं देहि चिराइ।
हौं भैया के गीत जु गाऊँ❀सब सखियनि मिलि कै दुलराऊँ
मेरी गुडिया धरै दुराइ❀करौं निहोरो तब देइ लाइ।
बेटा[1] लाड बहिन कौ करौ❀गुडिया अब दुराइ[2] जिनि धरौ ३२
हौं गुडिया देखन कौं आऊँ[3]❀बहु पकवान भेंट कौं लाऊँ।
तबहीं पट आड़ौ करि लेहि[4]❀मोहि न गुडिया देखन देहि॥३३
मोसौं कहै चोर तू भैया❀याकौ पक्ष करै पुनि मैया।
बहिनि वीर कौ झगरौ सुन्यौ❀रावलि पति सुकृत सुख लुन्यौ[5]
दृग भरि आये आनन्द बारि❀दोऊ मिलाइ दीने पुचकारि।
बेटा बहिनि लिये मन रहौ[6]❀वचन कठोर न मुख ते कहौ ३५
दोहा—रावलि पति आनन्द भरि, दहलि गये सब गात।
सुता और सुत लाड में, सुख भींजे बतरात ॥ ३६ ॥
श्री राधा मुख जो कह्यौ, सो दियौ भाँन मँगाइ।
पँछी पिंजरा पैंजनी, मृग सुत मदनी गाइ ॥ ३७ ॥
गिरि की कृपा विचारि कैं, गये अथांई राज[7]।
शीतल रवि ज्यौं दिपत हैं, बैठे गोप समाज ॥ ३८ ॥
चहूं दिशि फूले कमल से, पुरजन पुनि सब भ्रात।
रवि[8] कुल विरद बखाँन हीं, जाचक अलि मंडरात ॥३९

१—पिता श्रीदाँमा को शिक्षा दे रहे हैं, २—मत छिपाया करो, ३—श्री दांमा अपनी शिकायत करता है कि मुझे गुडिया के दरशन नहीं कराती है, ४—पर्दा डाल देती है ५—अपने महान पुण्य उदय समझे, ६—बहिन छोटी है उसके मन के अनुकूल चलना बड़े भाई का कर्तव्य है ७-राज दरबार, ८—सूर्य वंश।

जहां तहां के दूत सब, कहत सन्देसे आइ।
मन दै नीकें[1] सुनत हैं, लायक रावल राइ ॥ ४० ॥

॥ चौपाई ॥

भोजन बरियाँ भीतर आये❀पाई धाई पुनि पटा बिछाये।
बैठे आइ सहित परिवार❀कीरति रांनीं परसे थार ॥४१॥
छोटी झारी छांटी थारी❀श्री दांमा राधा कौं न्यारी।
टेरि टेरि वृषभाँनु बुलावैं❀खेल मगन वे सुनैं न आवैं ॥४२
बेटी राधा दौरी आउ❀भैया श्री दाँमा कौं लाउ।
राधा श्रवन टेर सुनि परी❀आई दौरि हियें मुद भरी[2] ॥४३
आउ आउ श्री दांमा भैया❀तुहि बोलत हैं बाबा मैया।
कर पद धाइ जु बैठे पास❀भान[3] भरे मन अधिक हुलास ४४
एक ग्रास राधा मुख देत❀दुतिया ग्रास श्री दांमा लेत।
बाबा मोकौं खीर जु प्यारी❀देहु भराइ सु मेरी थारी ॥४५॥
मैया कहै न मोपै मांगै❀बाबा जू पै ठिनकन लागै।
गाइनु[4] गिनती कही न मोसौं❀क्यौं अब हौं बोलौंगी तोसौं ४६
तेरे बाबा हूं न बताई[5]❀तऊ तोहि परतीत न आई।
तब बोल्यौ श्री दांमा वीर❀राधा थार भराई खीर ॥४७॥
यौं ही मुहि भरि दै कहौं तोहि❀न तरु[6] बहिनि चिरावैं मोहि।
नाना विंजन[7] रांनीं परसैं❀जेंमत सब हीं कौ मन सरसैं[8] ४८
भोजन अधिक मानि रुचि कीनौं❀अँचवन बहुरि सबनि मिलिलीनौं
कीरति कहै बेटी सिख मानि❀अब तू मोहि परोसि[9] जु आंनि४९

---

[1] ध्यान से प्रेम पूर्वक, [2] उल्लास, [3] वृषभानु पिता, [4] मैया को श्री जी स्मरण कराती हैं कि मैंने एक दिन कहा था कि हमारी गायों की संख्या क्या है सो तू खीझ गई मुझे न बताई थी, [5] मैया कहती है बाबा ने भी तो नहीं बताई थी तुझे टाल कर समझा बुझा दिया था, [6] नहीं तो मुझे राधा चिरावैगी, [7] खाद्य वस्तुएँ, [8] हर्ष होते हैं, [9] मैया ने कहा कि बेटी का कर्तव्य है कि मैया को परोसे जब सब खा चुके हों।

तब श्री राधा हौंसति[1] आई❀पाक भवन जननी जु पठाई।
भाजन[2] भारे उठैं न जब हीं❀मैया कौं जु पुकारी तब हीं ५०
मोहि परोसनि जुक्ति बताइ❀भारौ थार सकौं न उठाइ।
भरि जु कटोरा थोरौ लाइ[3]❀राधा मोकौं तू जु जिमाइ ॥५१
कबहूं जाइ माइ कैं करैं❀कबहूं कर भाजन खसि परैं।
लै लै नाम जु पाक मँगावैं❀रांनी मन कौतिक अति भावैं ५२
ज्यौं ज्यौं मैया करैं बड़ाई❀फूली कुँवरि न अंग समाई।
श्रमित होहि तब बैठि जु रहै❀मैया बहुरि चौंप दै कहै ॥५३॥
लली मोहि तू नाच नचावैं❀अब कैं क्यों न कढी लै आवैं।
परसि गई जु कटोरी भरि कैं❀पुनि सिखिरिनि बेला भरि धरिकैं
कबहू लै जु [4]अथानैं धावैं❀बहुरि मुरब्बा खँडरव लावैं।
तास ओढनी शिर ते खसी[5]❀मैया देखि कुँवरि दिशि हँसी ५५
दोऊ हाथ दही सौं सनैं[6]❀सीस ओढनी धरत न बनैं।
हँसि दौरी रम्भा भौजाई❀कुँवरि सीस ओढनी उढाइ ५६
भोजन करि अँचयो जल रांनी❀महा भाग्य की महिमाँ मांनी।
राधा के कर चरन धुवाइ❀लीनी आप अंक बैठाइ ॥५७॥
बेटी तैं मुहि परसि जिमायौ❀बड़ो भाग्य मैं आजु मनायौ।
समित भई मेरी चंपक बरनीं❀भांति २ मुहि सुखित जु करनीं५८
जूथनि मिलि अलि[7] खेलन आई❀कीरति उठि कैं सबहिं जिमाई
बाबा जू कें अजिर मँझार❀बैठी सब चक्र अकार[8] ॥५९॥
राधा सुन्दरि सब [9]मधि लसैं❀खेल उमाहैं मृदु मृदु हँसैं।

१—हौसला करके जिमाने का साहस इतनी छोटी अवस्था में किया, २—बोझ अधिक होने से भारी उठ न सका, ३—मैया ने समझाया कटोरों में भर के ले आ जितना उठा सके, ४—अचार, ५—सिर से जरी की ओढनी उतर गई हाथ दोनों दही से भरे हैं कैसे स्पर्श करें असमंजस में पड़ी हैं, ६—सिर पर कैसे ओढ़े, ७—सखियां, ८—गोल मण्डल बना कर, ९—केन्द्र में श्री राधा,

लघु आभूषन राजैं अंग❀सब तन[1] अम्बर नांनां रंग ॥६०
दोहा—मधि[2] शोभा को कलप तरु, सींच्यौ जल अनुराग।
भान अजिर अभिराम मनु, खिल्यौ रूप को बाग ॥६१

॥ चौपाई ॥

कुँवरि खेल नाना विस्तरैं❀तात भवँन में कौतिक करैं।
चन्द कला सी सखी प्रकास❀राजति अति लडि कीरति पास
राधा नाम सु मैंना[3] पढ़ै❀अच्छर सुद्ध[4] वदन तिहि कढ़ै।
इक तोता मोहन उच्चरैं❀बजति पैंजनी आँगन विचरैं ६३
वह जु नन्द पुर तें है आयौ❀नन्द बहुत हित मानि पठायौ।
कबहूं कुँवरि चरण में लोटै❀कबहूं सखियन के मन पोटै[5] ॥६४
मैंना निपट कुँवरि की अंगी❀राधा कहै कहै गौरंगी[6]।
यह मैंना अति ही गुन ग्रांमा❀अपने करनि चुँगावति स्यामा६५
मंगल भौंन भवँन में सच्यो❀गुडिया गुडरा ब्याह जु रच्यौ।
मैया सों कहि आई लली❀ब्याह सौंज[7] सजि दै विधि भली
दोहा—कीरति मन हरषित भई, आगम सगुन मनाइ।
इहि आँगन होइँ वेग हीं सांचे फेरे आइ[8] ॥ ६७ ॥
गुडरा राधा कुँवर कौ, रच्यौ ब्याह बिस्तार।
गुडिया ललिता लली की यह कियौ सबनि विचार ६८
ललिता चंपा[9] पै गई, मन दै सुनौं जु माइ।
सांमा गुडिया ब्याह की, सब हीं देहु मँगाइ ॥ ६९ ॥

॥ चौपाई ॥

इत घोड़ी उत लाड़ी गावैं❀सजनी सब हीं न्यौतौ लावैं।

---

[1] वस्त्र [2]—उपमा कल्प तरु दी है, [3]—मैंना राधा को मन से मानो किंकरी रूप है नाम का जप करती है, [4]—अत्यन्त शुद्ध मनुष्य वत बोलती, [5]—मनोरंजन करता है प्रत्युत्तर करता है, [6]—मैंना कभी राधा ना कभी गौरंगी भी कहती है, [7]—विवाह की सब सामग्री [8]—राधा का सच्चा ब्याह कर इस चौक में होगा मनन मानो, [9]—ललिता की मां चम्पाथी

इत उत सखी बांटि कै लई❀सुखहि बढावन दुहुँ दिशि भई७०
हंसि हंसि रीति भांति सब करैं❀आई लगन लै जु कर धरैं।
कोऊ लगाइत कोऊ सिरदार❀करन लगी सब मंगल चार॥७१
कोऊ भई दूलह ओर बरैती❀कोऊ दुलहिनि की ओर घरैती।
मैया घर ते पाक जु लाई❀मंडप तर ज्यौंनार कराई ॥७२॥
फूलीं फिरैं व्याह छिन आयौ❀ललिता सुन्दर मंडफ छायौ।
रचना करी वितान तनायौ❀सजन आगमन अति मन भायौ७३
श्रीराधा बरात सजि लाई❀खेत[1] रीति ललिता जु कराई।
बारौठी[2] बिधि करीं जु ऐसें❀दियौ दाइजौ[3] रस रह्यौ जैसें॥७४
दै जनवासौं[4] पुनी बैठाये❀गारी करि जेंवन जु बुलाये।
पाइ धोइ मनुहारि जु करी❀राधा ललिता अति मुद भरी७५
दोहा–मंडफ तर जेंवन लगीं, परसैं सब ही साज।
सोभा दृग देखैं बनैं, ऐसो बन्यौ समाज ॥ ७६ ॥

॥ चौपाई ॥

सादर परसति गह मह होति❀मंडफ बाढ़ी शोभा जोति।
लेहुँ लेहुं तुंग विद्या भाषैं❀चित्रा बांतनि अति रंग राषैं ॥७७
सखी सुदेवी नीकें परसैं❀मुख मृदु हँसैं हियें सुख सरसैं।
इन्दु लेखा रंग देवी संग❀कुँवरि साथ जेंवति भर रंग ७८
चंपक लता विसाखा कोद❀भोजन करति बढ़ावति मोद।
औरौं सखी वृन्द बहु लार[5]❀जेंवति अपनी रुचि अनुसार॥७९
ग्रास बदलनौ इत उत कर्यौ❀सुख सनेह सब हिनु लखि पर्यौ
करि अँचवन पुनि बीरीं लईं❀सबहिं कुँवरि संग भेलीं भईं॥८०

१, २—विवाह की कुछ ब्रज कुल रीतियां करने का वर्णन है, ३—दहेज भी परम्परानुसार दिया, ४—बरातियों को दुलह पक्ष वालों को भोजन कराया, ५—अपने अपने झुंड सखियों के साथ हैं।

करि रस रीति भाँवरी पारि❀पुनि कियौ पालिक[१] चार विचारि
कीरति सुखित भईं जु निहारि❀कौतिक आईं सब पुर नारि।।८१
राधा खेल अलौकिक महा❀लगै लोक वत कहिये कहा[२] ।
नये नये खेल करैं जु उदोत[३]❀लखि आनन्द सबनि मन होत८२
बासर[४] बीत्यौ रजनी भई❀कीरति बोलि कुँवरि ढिग लई।
तो मन बहुत खेल में रहै❀मोसों कबहुं न बातें कहै ।।८३
तात संग अब ब्यारू कीजै❀मिश्रित सिता धापि[५] पय पीजै।
भाँन लई पुचकारि जु अंक❀मनहु[६]कनक गिरि उदित मयंक८४
कुँवरि जिमावत जेंवत आपु❀राधा मुख मृदु सुनत अलापु ।
बाबा मेरौ भ्रात न आयौ❀पहिलें तुम क्यौं मोहि जिमायौ।।
राधा की सुनि कैं हित बाँनी❀भये मन मुदित राइ पुनि रानी ।
सुनि बेटी वह तो सौं लरै❀तू क्यौं पच्छ वीर की करै ।।८६।।
लरै तऊ मन होइ न उदास❀मोहि वीर बिनु रुचै न ग्रास ।
सुनि अति लडि के मीठे बैंना❀तात सजल ह्वै आये नैंना।।८६
खेलत तें सी दांमा आयौ❀कर पद धाइ ताहि बैठायौ ।
वीर बहिनि मिलि भोजन करैं❀तात मात लखि आनन्द भरैं ८८

दोहा—पय अधवट मिश्री परी, दुहुँनि धापि कियौ पाँन ।
तन मन अति हीं सुखित ह्वै, जेंवत श्री वृषभाँन ।।८६।।
मैया पलँग बिछाइ कैं, मोहि देहु पौंढाइ ।
बाबा हूं अब जेंइ चुके, तू जिनि गहरु[७] लगाइ ।।९०।।

१—एक दूसरे के कंठ लगना, २—राग भक्ति वत कैवल्य है सो शास्त्र सिद्धान्त है इसीलिये सर्व भूत हित भक्ति पथ सुलभ है, ३—रच लेती हैं कि जगत के जीव भी सहज अनुकरण कर सकेंगे, ४—दिन बीता सायंकाल आया, ५—जी भर कर दूध पियौ, ६—वृषभानु जी गौर वर्ण सोने के पर्वत हैं और श्री जी गौर चन्द्र समान उस पर्वत पर मानो उदय हुआ हो यह उपमा दी है, ७—विलम्ब न करें नींद ने मानो घेर लिया है ।

॥ चौपाई ॥

रावल राइ आचवँन लियौ❀बीरी खाइ सैंन पुनि कियौ।
कीरति जेंयौ सबनि जिमाइ❀कुँवरि हिं पलिका दियौ बिछाइ
मैया मोसों कहि जु कहाँनी❀अति रोचक मेरे मन माँनी।
बूढी एक पौरि पै आई❀मधुर मधुर मोसौं बतराई ॥९२॥
उनि मुहि कह्यौ रावल पति सुता❀हौं सुनि भई जु अचरज जुता
रावलपति कह्यौ तात सु नाम❀रावलि कोऊ देस कै ग्रॉम ॥९३
सब कोऊ जु नाम यह लेंहि❀मुहि किनि कथा सुनाइ सु देहि
मैया हिय जिय अधिक सिहाँनी❀जानी बेटी निपट सयांनी ॥९४
बैटी भानु सुता के तट में❀रावलि गोकुल बसत निकट में।
रावलि है तो तात सु ग्रॉम❀याते है रावलि पति नाम॥९५॥
गोकुल है दूजो रजधाँनी❀भान सुता तट परम रवाँनी[1]।
भाँन सुता दूजी को कहियै[2]❀यह जु मोहि समुझायौ चहियै ९६
भान सुता अनुजा. यमराज❀यमुना सब तीरथ सिरताज।
अरी भली मेरी कोरति माइ❀यमुना रावल मोहि दिखाइ ॥९७
अरु तैं गोकुल निकट बतायौ❀ताकौ भेद न कहि समुझायौ।
यह नन्द ग्रॉम निकट ही राजै❀तहाँ जु राजा नन्द विराजै ॥९८
तिन कौ पहिलें राज ठिकाँनौं❀तातें कहियै गोकुल रॉनौं।
वे गोकुलपति यह रावलपति❀सुनि राधा यौं कहति जु कीरति९९
पुनि बूझन लागी अति लडी❀कह रजधाँनी काकी बडी।
इत उत गोधन विनु जु प्रमाँन❀तातें दरसत एक समान ॥१००॥
इत तौ मैया तू है राँनो❀उनि घर राँनो कौन बखाँनी।
नाम जसोदा जगु जस जाकौ❀नीकौ शील सुभाव जु ताकौ॥१०१

---

[1]—रमणीक, [2]—राधा जी ने माता से पूछा एक तो मैं भी भान (वृषभानु) सुता हूँ दूसरी भान सुता कौन है खोल कर समझा दे।

उनि कौ मेरौ परम सनेह❀ह्याँ हौं गनति एक हम येह।
उनकै पुत्र जनम जब भयौ❀घर घर मंगल बाढ्यौ नयौ॥१०२
हौं तब दैंन बधाई गई❀अधिक अधीन यशौमति भई।
गर्भ समय ही बदी सगाई❀विधि कीनीं त्यौं ही मन भाई॥१०३
जब भई तेरे जनम बधाई❀तब ब्रज रांनी चाव[1] सु लाई।
बहुत भांति करिकैं मनुहारि[2]❀लई सगाई गोद पसारि॥१०४॥
गोकुल पति ने बारम्बार❀मन क्रम बच यह कियौ विचार
रावल पति मो मान जु राखौ❀हेत सगाई मुख हौं भाखौ॥१०५
ज्यौं वांछित हे सब ब्रज लोग❀त्यौं ही विधि जु बनायो जोग।
तुम सज्जन लायक ब्रज एक❀कहिबौ बनै न बार अनेक॥१०६
ब्रज रांनी ब्रज पति हित मांनी❀कीनीं हौं घरु वरु सम जांनी।
पलना में दोऊ पौंढाये[3]❀भई सगाई मँगल गाये॥१०७॥
बहु न्यौंछावरि यसुमति करीं❀सब हिनु मुख जै धुनि उच्चरीं।
गारी गाई नौबत बाजी❀ब्रज जन सब ही देखि भये राजी॥
अब जु ब्याह दिन आये लली❀मांमाँ तात सजी विधि भली।
सुनि भई मुदित सकुचि कछु गई❀निद्रा बस जु अति लाडि भई १०९

दोहा—बढ़ै मनोरथ माइ मन, निरषन चरित अनूप।
नित गौरंगी तन बढ़ै, तन संग बाढै रूप॥११०॥
बाल चरित्र अमी मनौं, पीवत धापैं नांहि।
भोरी बतियां लाड की श्रवननि सुनति मिठांहि॥१११॥
राधा मूरति मोहनी करैं, सु लागै नीक।
वृन्दाबन हित रूप रचि, विधना काढी लीक[5]॥११२॥

---

[1] —अपने पुत्र श्री कृष्ण को उत्साह से लाई [2] —विनम्रता नम्र वचन कह कर, [3] —श्री राधा कृष्ण को एक पालने में सुला दिया। [4] —श्रीजी की सब क्रिया मनो मोहक होती थी, [5] —विधि की सीमा से बाहिर का हित तत्व है यह भाव है।

रोम रोम प्रति होहिं जौं, रसना करन प्रसंश ।
तदपि न चरित कहैं परैं, स्वामिनी श्री हरिवंश ॥११३॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा बाल चरित लीला बरनन अष्टम लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ नवम लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—कृष्ण रुचै ददि चोरिबौ, राधा रुचिकर माइ ।
अस प्रिय तक्र[1] जु घोष कौ, सक्र[2] देख पछितांहिं ॥१॥
लली लियौ दधि मचलि कैं, लाल बन्यो दधि चोर ।
मिष्ट जु लाग्यौ अमी तें, रस स्वादी दुहुँ ओर[3] ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कुँवरि मचलिबौ बरनौं अबै❀सुनि लिहु ताकौ ब्यौरौ सबै ।
दही बिना न कलेऊ करै❀प्रात जांनि कै जगि जगि परै ३
रजनी देखि सोइ पुनि जाँइ❀ऐसे कौतिक देखै माइ ।
रानी सुखित होहि मन महियां❀उर लगाइ लेइ गहि २ बहियां ४
सुख में रजनी गई बिहाई❀माँगी ग्वाल दोहँनी आई ।
जागे सब ही दासी दास❀गो दोहन को हियें हुलास ॥५॥
खरिकनि चले अलंकृत ह्वै कैं❀अपने अपने साजनि[4] लै कै ।
सुनि कैं श्रवन चिरैयन[5] सोर❀कीरति जु उठि बैठीं भोर ॥६॥
नित कृत अपनौ सुविधि जु कियौ❀पुनि ग्रह के कारज मन दियौ ।
आईं[6] दही विलोवन हारी❀रई मथनियां सबहि निकारीं ॥७॥
जहाँ तहाँ दही घमरकौ राजै❀मन अभिराम मनौ घन गाजै ।

---

[1] —गाढ़ो मथी दही, [2] —इन्द्र भी देव स्वाद को तरसता है, [3] —श्री जी व श्याम दोनों रस के लोलुप हैं, [4] —गौ दोहन की आवश्यक वस्तुएँ लेकर, [5] —कीरति मैया ने चिड़ियों की चहक सुन कर प्रातः हुआ समझा और उठीं, [6] —दासियां जो दही बिलोनेको नित्य आती वह आईं ।

पुनी[1] कीरति दधि मथन जु लगी❀सुनिकैं कुँवरि अति लडी जगी॥
लली लला सद[2] माखन चाहैं❀आपु मथैं इहिं हिय जु उमाहैं।
यह उत्साह रह्यौ हिय बाढि❀थोरौ लैंऊँ बेगि दै काढि ॥९॥
ठिनकन लगी लली अरबीलीं❀जननी जनक लाड़ गरबीली।
मचलि आइ कैं नेती गही❀मैया देषि बदन तन रहीं ॥१०॥
जननी पहिल जिमाइ जु मोहि❀तब दैऊँ दही बिलोवन तोहि।
बेटी तब लग तू मुख धोइ❀जब लग लेंउँ हौं दही बिलोइ ११
सद माखन बिनु तू नहिं खाइ❀नेंक विरमि[3] काहे अकुलाइ।
कबहूं बात समुझि नहिं कहै❀दिन दिन अधिक भुराइ[4] गहै १२
मैया तू बोलति अटपटी❀मोहि भूख लागी चटपटी।
तोहि भूख दोपहर को लगै❀मीठी बातें कहि मोहि ठगै॥१३
बेटी निपट अनोखी दीखी❀लरिबे की बातें कहाँ सीखी।
मेरी अति लडि प्रौन समानिं❀मांखन काढि लेंन दै मांनि॥१४
बहुरि लडकि अँचल गहि लीनौं❀कीरति दधि मथिबौ तजि दीनौं
अपु कर रांनी बदन धुवायौ❀दधि में सिता[5] मिलाइ जिमायौ १५
पय कौं मथि जु पिवायौ घैया❀दियौ कराइ कलेऊ मैया।
तब मन हरषी बारिज मुखी[6]❀जननी निरषि भई मन सुखी १६
बहुरि लाड करि घेवर दीयौ❀दही बिलोवन पुनि मन कीयौ।
लला अजिर में खेलति डोलै❀आउ आउ कहि बनचर[7] बोलै १७
आवत देख्यौ तब हीं भगी❀घेवर डारि माइ उर लगी।
वह दिखि काटन आयौ धाइ❀मोकौं लै अँचल जु छिपाइ:॥१८
सँकति महा धीर नहिं धरैं❀बड़ीं बडीं मुख स्वांस जु भरैं।

---

[1]—वात्सल्य स्नेह वशी पुत्र पुत्री के लिये रानी स्वयं मथा करतीं, [2]—ताजा, [3]—कुछ काल ठहर जा, [4]—भोला स्वभाव, [5]—खांड या मिश्री, [6]—कमल से मुख वाली [7]—वानरों को बुलाती है,

डारि डारि लडुआ जु गिधाये[1]❀अब ये दिखि घर भीतर आये १९
मेरो कह्यौ न करै अरबीली❀बेटी तेरी बांनि हठीली।
वारौं मरकट घुरकी दई❀मेरी राधा अति डरि गई ॥२०॥
उर लगि रहीं कँपित हैं गात❀मुख ते निसरति नाहि न बात।
प्यारी आँगन खेलौ जाइ❀अब मैं बनचर दिये भगाइ ॥२१
गुनी[2] बुलाऊँ लेहुँ परोच्छा❀तो तन बेगि कराऊँ रच्छा।
दौरीं जाह लली की धाइ[3]❀कोऊ इक जोगी लाउ बुलाइ २२
हाथ[4] दिवाइ बहुत देउँ ताहि❀जो कोऊ कुँवरि भली कर जाहि
इक[5] जोगी नित फेरी आवै❀दरसन कौ समयौ नहि पावै २३
पौरी[6] बोल्यो सो तिहिं बार❀जागै अलख राज दरबार।
आदर दै कै भीतर लाई❀रानी देखत अधिक सिहाई[7] ॥२४
सीस[8] नाइ रांनी कहे बचनाँ❀जिन में बहुत दया की रचना।
तुम दयाल मो पै सुख[9] ढरौ❀मन दै जतन कुँवरि कौ करो २५
माई[10] मेरे आगें आवौ❀अपनी गोदी में बैठावौ।
डरी होहि तौ फेरौं हाथ❀भली करैगो मेरो नाथ ॥२६॥
गुरु प्रताप अब अलख सु जागै❀सब बलाय या घर की भागै।
बसन ढांपि कै कुँवरि हिं लाई❀मैया को रावल समुझाई[11] ॥२७
यौं[12] तौ छाया दृष्टि न आवै❀जब लगि कुँवरि न बदन दिखावै

१—मैया कह रही है तूने ही इन्हें लड्डू डाल डाल कर आदत डाली है राधा देख अब यह घर के अन्दर निशंक घुस आता है. २—कोई टोना ताबीज देने वाला ज्योतिषी आदि, ३—मैया ने श्री जी की देख रेख करने वाली दाई को कहा, ४—मैया ने कहा उसे न्यौछावर बहुत भेट करूंगी, ५—दाई ने मैया को उत्तर दिया, ६—जब राधा जी भय भीत थी उसी समय वह महल की ड्योढी पर अलख अलख पुकार उठा, ७—मुग्ध हुई, ८—जोगी महल में आया तो उससे दीनता से कहा, ९—सुख की वर्षा अपने मंत्र तंत्र से करो. १०—जोगी बोले, ११—कीरति जी को रावल श्री वृषभानु जी ने जैसा समझाया रखा था वैसा ढक कर लाई. अथवा जोगी बोले, १२—जोगी ने चतुराई से काम लिया जिससे दरसन का सौभाग्य प्राप्त हो।

लली भली हौं करन जु आयौ❀तैं उलटौ मो तें डरुपायौ ।।२८।।
नाथ[१] सुखित तुम आयें भई❀तुम क्यों ऐसी मन धरि लई ।
बसन खोलि कैं बदन दिखायौ❀रावल[२] अपनौ हाथ फिरायौ २९
कर फेरत मुख लेत जँभाइ❀अब मैं छाया दूरि भगाई ।
चुटकी दै पुनि अलख जगावैं❀लै लै अंग भभूति लगावैं ।।३०।।
कुँवरि चरन मो सीस धराइ❀तेरी सुता न बहुरि डराइ ।
तुम दरसतु जोगिन के राइ❀क्यों मो सुता धरैं सिर पाइ ।।३१
जोग जुगति जोगी ही जानैं❀माई तू जिनि डर मन मानैं ।
जो मो सौं तू हठ जु करैगी❀तौ अब हीं तुव सुता डरैगी।।३२
लै कै चरन धरायौ सीस❀रावल दीनी गहिक असीस[३] ।
तुव अति लडि होहि अस परताप❀अलख पुरुष हू जपि हैं जाप ।।

दोहा—रांनी अब लगहूं जु तैं, मेरी करी न चिन्हार[५] ।
गंडा बांधि गयौ गरैं, राधा जनम सु बार ।। ३३ ।।
देहुँ कुँवरि की ओढ़नी, थार भर्यौ पकवाँन ।
अति लडि हाथ दिखाइयै, हौं अब करौं पयान ।।३४।।
नाथ[६] हाथ लच्छन परखि, कहिये बचन विचारि ।
मेरी अति लडि राधिका, होइ सुख विलसन हारि ।।३६।।
पूरब सुख विलसे घनें, अब सुख विलसन हार ।
हौं अज्ञाँ जैसे करौं, सो कीजै उपचार ।। ३७ ।।
भलौं नन्द घर बालका, भागवंत गुन वंत ।
तुम सँकौ जिनि देखि सुनि, रचि हैं खेल अनन्त ।।३८।।
सुता सगाई कीजियौ, नन्द महर घर जाइ ।

१—मैया बोली, २—जोगी दयालु ३—मैया ने भय माना कि अपराध होगा कि साधु और जोगी के सिर पर गृहस्थ बालक पांव धरे, ४—उमग में भर कर आसीस दी, ५—मुझे पहिचाना नहीं. ६—मैया बोली और भी हस्त रेखा देखो फल बताओ ।

सुख सुहाग संपति बढै, कहैं जातु[1] समुझाइ ॥ ३९ ॥
सुता सुलच्छन तुम जनी, यावौ अचल सुहाग ।
रांनी तुम अति कीजियौ, अति लडि सौं अनुराग॥४०॥
बासी उत्राखंड कौ, नाथ पठायौ प्रेरि ।
कुँवरि ब्याह जब होहिगौ, तब आँऊँगौ फेरि ॥४१॥
कीरति नवि चरननि लगीं, बांछित दियौ मँगाइ ।
नाथ मगन निर्तन लगे, आनन्द उर मन समाइ ॥४२॥
कुँवरि जरी पट ओढनी, नाथहिं दई उढाइ ।
मेवा अरु पकवान सौं, खप्पर दियौ भराइ ॥ ४३ ॥
माता अब सुनि आसिका[2], नाथ कह्यौ समझाइ ।
नर[3] देवन में जो बली, पौंरि नवैं इहि आइ ॥४४॥
फेरि लेत जु अजिर में, कीनौं सींगी नाद ।
नाथ विदा ह्वै के चले, उर बाढ्यौ अहलाद ॥ ४५ ॥
रावल पूरौ सब गुननि, धारैं भस्म शरीर ।
राजतु चन्द लिलाट जिहि, झरतु जटन ते नीर ॥४६॥
भाग्य बली मेरी राधिका, जापै फेर्‌यौ हाथ ।
छाया दृष्टि बलाय सब, जोगी लै गयो साथ ॥४७॥
गोपनि सौं ऐसे कहति, रांनी रावलि भूप ।
मो चाह्यौ सब होतु हे, अति लडि भाग अनूप ॥४८॥

॥ चौपाई ॥

रावल लाग्यौ अपनी बाट[4] ❀ कीरति तन मन मुदित निराट[5]
राधा कुँवरि सुखित अब भई ❀ मेरे मन की शंका गई ॥४९॥

१—भविष्य सत्य सत्य कह रहा हूँ, २—जोगी आशीरवाद पढ़ने लगा, ३—तेरी ड्योढ़ी पर सब से बली नर व देवता भी झुकेंगे, ४—जोगी अपने रास्ते चल दिया, ५—भली भांति, सर्व प्रकार ।

राज कुँवांरि सु दिन दिन बढै❀त्यौं छबि जोति अँग २ कढै।
तात मात मन बढ़ै उमाह❀आये निकट सुता दिन व्याह ५०
श्री राधा अति मिठ बोलनी❀पुर उपबन बन खेलन डोलनि।
कबहूं सखिन संग लै भीर❀खेलन जांइ सरोवर तीर ॥५१॥
अति सुन्दर जु मृत्तिका लाइ❀सुहथ[1] खिलौना रचति बनाइ।
सदन बनावैं न्यारे न्यारे[2]❀तिन में धरैं खिलौना प्यारे॥५२
ग्रह के सब कारज करैं[3]❀खेल मगन कौतिक बिस्तरैं।
सब कौं सब जु बाँइनौं[4] देंहिं❀सब पै तें सब सादर लेंहि ॥५३॥
टोलनि टोलनि मँगल गावैं❀कुँवरिहिं नाना खेल खिलावैं।
कबहूं झूलहिं गहि गहि तरवर[5]❀कबहूं केलि करैं जल सरवर ५४
कबहूं लैं जु मीन गति तरैं❀जल में महा कुलाहल करैं।
कबहूं जल मुख पर लै सींचैं❀कबहूं पाछें रहि द्दग मींचैं[6]॥५५
कबहूं तोरि जु कमल बगेलैं[7]❀तकि तकि तन मारैं यों खेलैं।
बुडकी[8] लै जलहीं जल धावैं❀भरैं चुहुंटियां अंक लगावैं ५६
पुनि जल पैठैं उछरैं ऐसें❀मीन करत कौतूहल जैसें।
तन अँगोछि पहिरैं जु निचोल[9]❀मिलैं जु अपने अपने टोल॥५७
जब भोजन की बरियां जानैं❀तात भवँन कौं करैं पयानैं।
गोप घरनि मनु कृपा सदेह❀बिटियनि कें भींजी रहैं नेह ५८
दोहा—प्रान उठत हैं लैंन कौं, जबहिं परत हैं द्दष्टि[10]।
यातैं ब्रज जानी परति सबहिं अलौकिक स्रिष्टि ॥५९॥
लाड अपूरब नित नयौ, नित जु अपूरब प्रीति।

---

[1]—अपने हाथों मिट्टी लाकर खिलौने बनाती हैं. [2]—अपने अपने अलग मिट्टी के घरौंदे बनाये, [3]—कन्याओं के समान घर के सब काम खेल खेल में कर रही हैं, [4]—भेंट या खाने की वस्तुएँ, [5]—वृक्षों की डालियां पकड़ कर झूलती हैं, [6]—आंखें बन्द कर लेना [7]—फैंकती हैं, [8]—गोता लगाकर, [9]—सूखे वस्त्र ऊपर की ओढनी या चादर। [10]—देखते ही गले लगने को प्रान उद्विग्न हो उठते हैं।

विधि हूं ध्यान न आवहिं, व्रज गरुवी रस रीति ॥६०॥
श्री राधा उर भरि लई, जननी मोद मनाइ ।
बीत गये मोहि कलप से, दूरि खेलन जिनि जाइ ॥
सुहथ जिमाइ प्रीति सौं, रही बदन तन हेरि ।
बेटी खेलौ ग्रह अजिर, दूरि जाहु जिनि फेरि ॥६२॥
मैया मोकों लै गई, साथिनि संग लगाइ ।
मेरी उन सौं प्रीत अति, न्यारें रह्यौ न जाइ ॥६३॥
परचि[1] रहीं तो लाड सौं, खेलत मो ढिग आइ ।
मेरे वे सब प्रांन सम, सुनि लै कीरति माइ ॥ ६४ ॥
श्री राधा के वचन सुनि, मैया भरि लिये नैंन ।
बारी मेरी कुल मणीं, सीखी मीठे बैन ॥ ६५ ॥
कनक तनी कीरति सुता, पुर वर्द्धने आनन्द ।
वृन्दाबन हित रूप अस निकर[2] लज्यानि चन्द ॥६६॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा बाल चरित लीला बरनन नवम लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ दशम लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—पावस रितु जु सुहानी, बोलत केकी कीर ।
देहु गढाइ हिंडोरना, मेरे प्यारे बीर ॥ १ ॥
हरित भूमि पुनि द्रुम लता, सागर भरे गंभीर ।
साँवन मन भाँवन जु यह, माइ रँगावौ चीर ॥ २ ॥
श्री राधा वानी सुनत, मैया मुदित न थोर ।
रोप्यौ मानिक चौक में, रतन जटित हिंडोर ॥३॥
साँवन मासनि मुकट मणि, राधा कौ त्यौहार ।

---

[1] —श्री राधा कहती है तू सब से मेरे समान लाड़ करती है इस लिये यह सब मेरे साथ खेलना चाहती हैं। [2] —चन्द्र भी सुन्दरता देख लजाता है।

अगनित गोपिन की सुता, झूलति जाकें लार[1] ॥४॥

॥ चौपाई ॥

बेटी प्यारौ साँवन मास❀आयौ भरी जु हियें हुलास।
झूलति भौंन भवँन भई भीर❀रच्यौ हिंडोरो प्यारे बीर ॥५॥
छबि हिंडोर न आवत भँनी[2]❀जामें झूलति कँचन तनी।
श्री राधा मन आनन्द जितौ❀इक रसना हौं बरनौं कितौ ॥६॥
काकी ताई कीरति मैया❀आइ झुलावत लेति बलैया।
लघु भूषण जगमगि रहे अंग❀सोभित सखी वृन्द जिहि संग।
बोलनि महा लाड की भरी❀मुख विधु मनौं सुधा झरपरी ॥
झोटा दै जा सोदर[3] मोहि❀नीकें हौं जु मल्हाऊँ[4] तोहि ॥८॥
नेरें आइ झुलावौ माइ[5]❀हौं गाऊँ त्यौं तू हूं गाइ।
पुनि सुनि लौ मैया चित लाइ❀बीर मल्हावन मोहि सिखाइ ६
तू लै अपने सोदर नाम[6]❀त्यौं हौं दुलराऊँ श्रीदाँम।
तू अपने जु तात कौ गाइ❀हौं जु मल्हाऊँ रावलि राइ १०
तू कहि अपु जननी अनुराग❀हौं गाऊँ कीरति बड़ भाग।
ऐसी बात कही अति लड़ी❀सुनि सुनि हँसी जु छोटी बड़ी ११
कहौं हिंडोर जु सोभा कहा❀भौंन भवँन जगमगि रह्यौ महा।
रतन जड़ाये रचि रचि पांति❀बढै जोति मिलि रवि ससि कांति
डोरी गुही पाट मखतूल❀रच्यौ वितान जु सुरंग दुकूल।
बीर रँगाई यह चूँनरी❀ललिता निरषि आइ तू नरी[7] ॥

१—साथ २—हिंडोरे की शोभावर्णन में कैसे आवे जब कि वह श्री राधा जी का है अर्थात समस्त ऐश्वर्य मूर्त रूप वहां है, ३—सगा भाई श्रीदामा, ४—पुचकारूँ और वर्षा की आशीष का गीत गाऊँ, ५—अब मैया से कह रहा है कि समीप आकर झुला, ६—मैया से श्री जी कहती हैं तू अपने भाई के नाम से गा वही गीत मैं अपने भाई श्रीदामा का नाम बदल कर गाऊँगा, ७—वस्त्र की सूक्ष्म रंगत व बुनाई देख।

बरनौं कहा बधू कौ हेतु❀हँसि हँसि पुनि २ झौंटा देतु।
कीरति सम न माइ जग और❀पुर[1] आरज बनितनि सिरमौर१४
साँवन लाड लडावन काज❀सजे अपूरब सब ही साज।
पिता भयानें देस जु धनो❀सँपति अमित परति नहिं भनी॥
मेरे लाड चाय हिय सरसै❀कृपा[2] जलद ज्यौं नित सुख बरसै
मो[3] हित रच्यौ अजिर हिंडौर❀ब्रज जन सब हिन कौ चितचोर१६
आई अब साँवन सुदि तीज❀उर उपजावन आनन्द बीज।
कीरति माइ सिंधौरा कीजै[4]❀मेरी सखिनु ओढनी दीजै॥१७
नाना बिधि के घृत पक सचौ❀मेरे हाथनि मँहिदी रचौ।
नव नव भूषण अम्बर लै हौं❀तब हीं तीज खेलन हौं जै हौं १८
मोहि कहत सब नृप की लली❀तातें करि शिंगार विधि भली।
जे जे करत जु मो सों नेहु❀तिन हूं कौं पट भूषन देहु॥१६
तब तुम राँनी सोभा पावौ❀मेरी सब साथिनि पहिरावौ।
मो संग चलैं सखी मिलि सगरी[5]❀हौं लागौं तिन में छबि अगरी२०

दोहा—श्री राधा विधु[6] बदन तें, निसरत अँमृत बैंन।
छाती माइ सिराति सुनि, मुख लखि शीतल नैंन॥२१
प्रात जाइ कै झूलि हौं प्रेम सरोवर तीर।
मोकों सुविधि झुलावहीं, चलि श्री दाँमा वीर॥२२॥
कुँवरि करनि[7] मँहिदी रची, कीने पाक अनेक।
सुता सुविधि दुलरावने, कीरति लायक एक[8]॥२३॥
ललितादिक सब सखिनु कौं, पट आभूषण देति।
नीकें लली झुलाइयौ, सबनि वारनैं लेति॥ २४॥

१—नगर भर की आर्य्य स्त्रियों की सरदार. २—कृपा के बादल की तरह, ३—मेरे सुख के लिये, ४—सब के माथे पर सिंदूर लगाना, ५—सारी की सारी जितनी हैं, ६—चन्द्र समान, ७—हाथों में मेंहदी लगाई, ८—कीरति मैया केवल सामर्थ्य है।

॥ चौपाई ॥

मँहदी रची सबनि के हाथ❀बेटी सब मिलि जैयौ साथ।
राधा मेरी चम्पक बरनी❀सब हिनु के उर आनन्द भरनी॥
ब्रज में तीज कुशल सौं आई❀मैं मन मानी अधिक बधाई।
तुम सब मेरें प्राँन समानि❀मिलि खेलियौ सीख मो मानि२६
उत्सव महा तीज हरियारी❀सब मन बाढ्यौ आनन्द भारी।
यौं समझाइ विदा पुनि दीनी❀आपुन राँनी सैन जु कीनी २७
प्रात हीं कीरति कुँबरि जगाई❀करि उबटन नीकें जु न्हवाई।
राँनी सुहथ[1] शिंगारति भई❀लै बलाइ चकित रह गई ॥२८॥
दृष्टि[2] भार संका कछु भई❀देखि न सकति अँक भरि लई।
प्रथम हीं राई लौंन उतारति❀पुनि छबि पर त्रिन तोरि जु डारति
सजि सजि आईं सब जु सहेली❀गावति मंगल भई जु भेली[3]।
तन साजा मन अधिक उमाह❀तीज खेल कौ अति उतसाह ३०
अति लडि आगैं लै सब चलीं❀सोभित करीं भानु पुर गलीं।
किधौं[4]अद्भुत सागर अनुराग❀किधौं चल्यौ पगनि रूप कौ बाग॥
किधौं अद्भुत सिसु[5]तडित जु एह❀किधौं रूप घन अवनि सदेह।
अस बानिक सौं गवनी लली❀जो देखियति तीज सुष[6] फली३२
प्रेम सरोवर तट अति कमनी[7]❀मन मथ कौ मन मोहनि अवनी[8]
तहाँ हिंडोरौ निर्मित कियौ❀मनो अवनि चेतन्नि जु हियौ[9] ३३
बनीं ललित कदम्बनि की पांति[10]❀लता लपट रहीं अद्भुत भांति
सरवर मणिनु खचित चहुँ ओर❀कोकिल कीर नदित जहां मोर३४

१—अपने ही हाथों से. २—अपनी नजर लगने का सन्देह हुआ, ३ ईकट्ठी. ४—ऐसी शोभा थी मानो अनुराग का सागर जो अद्भुत था उमड़ कर चल रहा हो. ५—बिजली का बच्चा अर्थात् लघु मात्रा में, ६—सुख मई तीज, ७—मन भावना, आकर्षक, ८—भूमि, ९—मानो भूमि ने अपने दिल को चेतन रूप से हिंडोरे में प्रगट कर दिया हो, १०—कतारें।

षट[1] पद गुंजत सौरभ[2] लोभ❀तरु बेलीनु बढावत सोभ[3]।
निर्मल नीर भर्यौ गँभीर❀ठाढी भई कुँवरि तिहिं तीर ३५
पावस रितु जु हरित भई मही[4]❀ताकी सोभा पड़त न कही।
सजल[5] घननि कीं उमडी सैंनी❀देखि मुदित बाला मृग नैंनी॥३६
झूलैं फूलैं तरवर तट में❀दमकत गात रंगीले पट में।
कौंधि दामिनी घन दुरि जाति[6]❀देखि कुँवरि छवि मनहु लजाति॥
रमकैं झमकैं छवि सों झूलैं❀परसि परसि द्रुम डारिनु फूलैं।
कोऊ झुलवति हैं निकट जु रहिकैं❀कोऊ रिझवति हैं बातें कहि वैं॥
सब मिलि करैं रँगीलो गाँन❀मदन मरम मनु बेधति बांन।
ललित वदन हर श्रम कन दिपैं[7]❀ससि मंडल मनु उडुगन[8] छिपैं ३९
तन फहरात कुसुँभि चीर❀अँग २ उझलति सोभा भीर।
दुति[9] धर वारौं वदन विलोकि❀सखिनु दृष्टि राखी जिनि रोकि[10] ४०
झूलैं आप अपनें ओसरैं[11]❀उतरि भटू यौं कहि हँसि परैं।
इक पुनि झूलन कौं अरबरैं[12]❀श्री राधा सौं बिनती करैं॥४१
अरी बहिनी तू राज कुँवारि❀रंचक हम हूं ओर निहारि।
मुहि झूलन अभिलाषा बढी❀तुहि बूझे विनु अजहूं न चढी॥४२
ललिता तुम जु सम्हारें रहौ❀नहिं झूलैं सु मोहि किन कहौ।
तुम संग झूलन कौं जु उमाह❀पुनि २ दिखियति सब मन चाह॥
एक झूलि उतरें इक चढैं❀औसर तकैं एक मन बढैं।
तीज हरियारी आनन्द भरीं❀झूलन की परबी[13] सी परी ॥४४
इक राधा के निकट जु आइ❀बोलैं अपनो प्यार जनाइ।

---

[1]—भँवरे, [2]—सुगन्ध लोभी, [3]—सोभा, [4]—वर्षा ऋतु होने से पृथ्वी हरी हरी हो रही है, [5]—जल से भरे बादल मानो फौज चढ़ी है, [6]—बिजली चमक मार कर बादलों में झट छिप जाती है मानो राधा जी की छवि से लजा गई हो, [7]—चमकैं, [8]—तारागण [9]—चन्द्रमा, [10]—सखियां टकटकी लगा कर दरशन कर रही हैं, [11]—बारी बारी से, [12]—उतावली, [13]—पर्व. मेला सा लगा है।

अबकैं मुहि अपु निकट जु लेहु❀मन की साध[1] पुजै सब देहु।।४५
आऊँ परसि उच्च द्रुम डार❀झौंटा लै ह्वौं मन अनुसार।
झूलैं करैं परम कौतूह❀जहां बरषै आनन्द समूह ।।४६
कीरति पाक[2] डला पठवाये❀ललिता ने सम्हराइ धराये।
दधि माखन के माट मथांनी❀दै पठये रावलिपति रांनी ।।४७
सबनि आइ प्यारी सौं कही❀भूख नाहि परती अब सही।
पनवारे[3] किये पात पलास❀सब मन जेंवन कौ जु हुलास ४८
पंकति करिकैं सब बैठारीं❀कोऊ भई सुघर परोसन हारी।
कोऊ भरि पाकनि लै लै आवैं❀कोऊ भई ठाढी जुक्त बतावैं ।।४९
दोहा—चक्रा[4] कृति बैठीं सबै, मध्य कुँवरि गौरंग।
सोभा मंडल ससि उदित, पूरन कला जु संग ।।५०।।
सब जेंवति रुचि मांनि कै, नाना विधि पकवांन।
दधि माखन मिश्री मिल्यौ, परसतु चतुर सुजान ।।५१।।

।। चौपाई ।।

प्यारी को ललिता सु जिमावैं❀जो २ रुचै सु लै लै आवैं।
वैस वरन एकै सुकुँवारी❀मनु सोभा के सांचे ढारीं ।।५२।।
एकै रुचि सौं भोजन करैं❀इक इक मन लै बातनि ढरैं।
इक मुखि हंसि हंसि धरैं जु कौर❀इक पकवाँन मँगावैं और ।।५३।।
इक लै स्वाद सराहै[6] भारी❀एक करैं एकनि मनु हारी।
इक कीरति की प्रीति[7] विशेषैं❀एक छकी यह कौतुक देखैं ।।५४
बन बिहार रुचि भोजन कियौ❀आइ प्रेम सर अँचवन लियौ।

---

[1]—मन को सब इच्छा पूरी कर दो, [2]—भोजन की वस्तुएँ भरे टोकरे, [3]—पतले दोने आदि, [4]—गोल दायरा बना कर कि सब परस्पर देखती रहें, [5]—ऐसी चर्चा करती हैं जिसमें अन्य सखी के मन की प्रसन्नता का मुख्य हेतु होता, [6]—प्रशंसा करती हैं कि कैसा अद्भुत स्वाद है, [7]—मैया कीरति ने कैसे २ भोजन भेजे है उसके प्रेम की प्रशंसा करती हैं।

कुँवरि सबनि को राखति माँन❀हँसि हँसि देति आपु कर पाँन ॥
बूझति सब सों करि जु सनेह❀झूलौगी कि चलौगी ग्रेहँ ।
बेटिनु कौ जु तीज त्यौहार❀तात भवँन अति मंगल चार ५६
प्यारि जु जब लगि होहि न सांझ❀तब लगि झूलौ सखियनि मांझ
कोउ कहै रहि गयौ बासर[1] थोरो❀चलौं कुँवरि घर मानि निहोरौ[2]
प्यारी सुनौ बात चित लाइ❀मारग[3] देखति कीरति माइ ।
रही अधिक उर लाड जु भरि कै❀लै हैं भवँन आरतौ[4] करि कै५८
कौऊ भोरी चतुर सयांनी❀बोलति अपनीं अपनीं बांनी ।
ललिता कहति विचार जु बात❀अब तुम चलौ कुँवरि घर तात५९
कुसुम[5] बीनि बहु भूषन रचै❀सब हिनु अपने अंग अंग सचै[6]
कुसुम गेंद पुनि कुसुमनि छरीं❀खेल उमाहैं सब मन भरीं ॥६०
कुसुम शिंगार कुँवरि तन कियौ❀कुसुमनि कौ जु छत्र रचि लियौ।
राधा सिर जु फिरावति चलीं❀खेल अनोखे रचती जु अली ६१
कुसुम बींजना[7] कुसुमनि चौंर❀मडल रची बैठीं इक ठौर ।
गावति भरीं नवल अनुराग❀फूल्यौ मनौ रूप कौ बाग ॥६२

दोहा—अस क्रीडा करि घर चलीं, गावति अस छवि दैंन ।
सुनि[8] के टेर कुफेर अति, परि जु गयो मन मैंन ॥६३॥
चंप तनी नख सिख बनीं, भींजीं उर आनन्द ।
गोपनि कुल दुलरावहीं, रचि रचि नव नव छन्द ॥६४॥
हँसनि लसनि दसनावलि[9], दमकत उन्नत लिलाट[10] ।
सैंना मदन लज्यौंवनी, अस छबि वरषति वाट[11] ॥६५॥

१—दिन, २—हित की बात मान कर, ३—मैया कीरति रास्ता देखती होगी कि कब तुम आती हो, ४—पहुँचते ही तुम्हारी आरती करेगी, ५—फूल चुनकर, ६—सजाये ७—पँखा भी फूलों का बनाया, ८—गायन की तानों तथा ऊँचे मधुर स्वरों से मन में काम का उदय हो जाना, ९—दान्तों की पंक्ति की चमक १०—मस्तक की चमक, ११—मार्गमें

अति सुख वरषैं घोष में, धन्य तीज त्यौहार ।
आई जहां हिंडोरना, रच्यौ वृषभाँनु दुवार ॥६६॥
सुख समूह उतपति करति, राधा शोभा ऐंन ।
माइ लई करि आरतौ, लखि शीतल भये नैंन ॥६७॥
कीरति सबहिनु कौं दियौ, ओलिनु[1] भरि पकवाँन ।
तात अजिर बैठी लसति, अतिलडि श्री वृषभाँन ॥६८
साँवन सुख की लूटि सी, गोप सुता मिलि लेति ।
राँनी राधा[2] कुँवरि सम सब कौं आदर देति ॥६९॥
नित उठि रंग हिंडोरना, झूलति भरीं हुलास ।
नित उठि खेल नये रचैं, ललितादिक रहि पास ॥७०॥

॥ चौपाई ॥

कबहूं पाडर[3] खंडी जहाँ❀रचैं हिंडोरौ इहि विधि तहाँ ।
कबहूं नौं बारी चौ बारो[4]❀झूलैं श्री वृषभानु दुलारी ॥७१॥
कबहूं भान सरोवर तट में❀झूलैं फूलैं सखी संघट[5] में ।
कबहूं निकट साँकरी खोरी❀झूलति कुँवरि मुदित नहिं थोरी
[6]कबहूं राधा चंपक बरनी❀गहबर झूलैं कौतिक करनी ।
कबहूं गढ़ विलास सुख मचैं❀गिरि की सिखर हिंडोरौ रचैं ७३
कबहूं कुंड दोहनी नीरें❀कबहूं पीरी पोखर तीरें ।
सांवन अस हुलास श्री राधा❀झूलत कबहूं न पूजै साधा[7] ७४
कबहूं सिला खिसिलिनी जाइ❀तहाँ झूलैं हिंडोर चित चाइ ।
कबहूं सूरे खरिकैं कूल❀झूलति फरकैं अंग दुकूल ॥७५

१—पल्ले भर भर कर, २—राधा के समान अन्य सखियों से व्यवहार करती, ३—ब्रज के एक स्थान का नाम है बरसाने के आस पास, ४—बरसाने के गांव में स्थान का संकेत है, ५—समूह में, ६—बरसाने के आस पास के शुभ तीर्थों के नाम हैं, ७—श्रीजी कभी रजती नहीं हैं ।

कबहूं भूलैं ताऊ[1] धाम❀कबहूं काका[2] ग्रहु अभिराम।
कबहूं भूलैं बट संकेत❀कमनी ठौर बढै लखि हेत ॥७६
अरुन अरुन द्रुम पल्लव कौंप*देखि बढै भूलनि कौं चौंप।
मन को मोद बढावैं सखी❀सब सनेह की मूरति लखी ॥७७
दोहा–भयौ सलून्यौं जा दिना, सुख बढि पर्‌यौ अनन्त।
तात ग्रेह आनन्द निधि, उमग्यौ तिहिं नहिं अन्त ॥७८॥
राखी बान्धति बीर कर, जुर्‌यौ सकल परिवार ।
[3]शिर जव धरि पुनि तिलक करि, लाडू भरि दिये थार॥७९
नौ भाँननि की नंदिनी, राखी बाँधति पाँन[4]।
तात मात सोदरनि तें, वांछित पावति माँन ॥८०॥
साँवन सुख अरु लाड सुख, कौ लै जानै और।
बिलसन हारी राधिका, सबहिंनु की सिर मौर ॥८१॥
आनन्द वरषै राधिका, पावस[5] बरषै तोइ।
वह करै अँवनी हरित इहि, निरखि हरित हिय होइ ॥८२
विनु मित लाड कहा[6] भनौं, रसना[7] नांहि अनेक।
वृन्दावन हित रूप निधि, क्यौं कहैं रसना एक ॥८३॥
मन्दिर भाँन वधावनौं, कबहूं परत न छेह[8]।
पै साँवन त्यौहार सौं, राधा अधिक सनेह ॥ ८४ ॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा बाल चरित
लीला वरनन दशम लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

१—श्री वृषभानु के बड़े भाई के घर में, २ छोटे भाई०, ३—मंगल रीति सिर में जौ धरे, ४—हाथों में, ५—वर्षा रितु, ६—एक रस नहीं अनन्त हैं, ७—वरनन करौं, ८—अन्तर नहीं पड़ता है सतत बधाई हैं।

॥ अथ एकादश लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–भादौं निर्मल नभ मनौं, अद्‌भुत चन्द्र प्रकास ।
प्रणत[1] चकोरिनु सुख भरन, भये भाँन रनिवाँस ॥१॥
श्री राधा सर्वेश्वरी, निंदति दुतिधर गोत[2] ।
ता आगें पाछें सखी, रसमय कला उदोत[3] ॥२॥
भादौं सुदि हीं कौ जनम, वरन्यौं ग्रंथनि माहिं ।
तिहि विधि व्यौरौ करि कहौं, अपनी बुद्धि बल नाहिं ॥३॥
नौ भाँननि की नँदिनी, बरस गांठि सब ग्रेह ।
सब घर मंगल साजियत, सब उर अधिक सनेह ॥४॥

॥ चौपाई ॥

भादौं सुदि त्रितिया तिथि भली❀वरष गांठि तुंग विद्या[4] लली
गह मह भई रुचि भाँन जु धाम❀मंगल रच्यौ परम अभिराँम॥५
भाँमा जननी प्रमुदित महां❀सुता लाड विधि बरनौं कहा ।
केशरि उबटि न्हवावति भई❀सुविधि शिंगार कियौ बिधि नई॥
टीकौं भेंट सबै सजि लावैं❀सबै सभागनि मंगल गावैं ।
नौ भाननि की रांनी जहां❀मंगल विधि कीजति सब तहां ७
ललो जिमाई आरतौ कियौ❀दाँन माँन सब हीं कौ दियौ ।
भवँन भीर अतिमय कौतूह❀वरषत हैं आनन्द समूह ॥८॥
दोहा–अष्ट सखी राधा लली, मिलि बैठीं इक ठौर ।
येई मंगल मूल सब को उपमा देंउँ और ॥९॥
वरष गांठि ललिता लली, वरनि सुनाऊँ वैंन ।
भादौं सुदि छठि छबि भरी, सब उर आनन्द दैंन ॥१०॥

---

[1] शरणागत रसिक रूपी चकोरिया के लिये, [2] चन्द्र वंश के प्रकाश अर्थात् श्री कृष्ण को भी मात करती हैं, [3] यहां सखियां चन्द्र की कलाएँ हैं, [4] सखी का नाम है।

॥ चौपाई ॥

पिता विसोक सारदी माइ[1]❀मंगल रच्यौ सु कह्यौ न जाइ ।
महा भान पुनि दूजौ नाम❀त्यौं चम्पा जु माइ गुन ग्रांम ॥११
ललिता मणि चौकी बैठारी❀केशरि तन उबटी सुकुँवारी ।
माइ न्हवाइ अंगोछे अंग❀भूषन बसन सजे नव रंग ॥१२॥
×पंच नाद होंइँ जाकें अँगना❀नाचैं गावैं सब भये मगना ।
धुजा पताका वन्दन वार❀कदली रोपै अजिर मझार ॥१३
नीर गुलाब जु सींची मही❀दीप वरैं[2] जग मग ह्वै रही ।
सब पुर वधु तिलक लै आवैं❀गावैं ललिता नाम मल्हावैं॥१४
सुविधि जिमाइ तिलक पुनि कियौ❀सबनि तंबोल जु मेवा दियौ
साजि आरतौं कियौ विधि भली❀गलिनु[3] गलिनु बाढी रंगरली
दोहा—सजि समाज बैठी जहां, घरनी नौं हूं भाँन ।
वरष गांठि ललिता लली, कीनीं विधि जु विधाँन॥१६॥
श्री राधा चौकी मणिनु लै पहिराई ग्रींव ।
दिषियति[4] श्रीवृषभांनपुर नित उत्सव सुख सींव ॥१७॥
वरस गांठि राधा कुँवरि, तिथि अति परम पुनीत ।
भादौं सुकला अष्टमी माइ गवावति गीत ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

हरे हरे गोबर अँगन लिपायौ❀बोलि सुहागिनि चौक पुरायौ ।
जानि सुभ घरी पटा धरायौ❀लली भली विधि लैं बैठायौ १९
घसि केशरि उबटनौ करायौ❀उष्ण नीर सौं सुविधि न्हवायौ।
जननी सुविधि अँगौछे अंग❀पट पहिराये पियरे[5] रंग ॥२०॥

---

[1] —सखी ललिता जी के पिता का नाम विसोक माता का नाम सारदी है, ×पांच प्रकार के वाद्य-पिटकर-फूंककर-टकराकर-छेड़कर तार आदि अँगुरी से घिसाकर सारंगी आदि बजने वाले, [2] —जल रहे हैं, [3] —प्रत्येक गली में, [4] —बरसाने में नित्य नवीन उत्सव हैं, [5] —केसरी पीले रंग के ।

डारि फुलेल सँवारे केश❀तिलक रच्यौ मृग[1] मद जु सुदेश
माइ सभागिनि उर जु उमंग❀भूषन विविध सचे अंग अंग२१
धरयौ घट मंगल नीर[2] संजूत❀श्रीफल[3] सीस सुपल्लव नूत।
कनक चौमुखे दीप बराये❀कदली ललित सु अजिर रुपाये॥
धुजा धरी रोपे जु वितान[4]❀जनम बधाये चहुँ दिशि गाँन।
नीर सुगंधिनु सींची गली❀बनिता आवति तिन मधी चलीं॥
टीकौ भेंट सवै सजि लावैं❀कनक थार हाथनि छवि पावैं।
रोरी अच्छित माथे धरैं❀मँगल दधि भेंट सब करैं ॥२४॥
गावत गुनी समाजनि साजैं❀राज दुवारैं नोबत बाजैं।
काकी ताई मूठि उठावैं❀भाग्य भरी राधैंइ दुलरावैं ॥२५॥
राँनी वांछित सब कौं दई❀गोदी ओट असीसैं लेई।
मेवा विविध भरति हैं ओली❀पुनि बांटति पाँननि की ढोली ॥
इक आवति गावति विधि भलीं❀एक विदा ह्वै घर कौं चलीं।
एक लली मुख लखि आनन्दैं❀इक राँनी के चरनन बन्दैं ॥२७
इक ठाढी मन मन जु सिहांहीं❀एक वारने लै लै जाहीं।
मैया अपने हाथ जिमावै❀ग्रास देति मन अति सचु पावै॥२८
नेह निहोरि देत मुख कौर❀कहै पुचकारि लेहु कछु और।
त्रिपित भई जब ग्रींव ढुरावैं[5]❀जननी तब जल पान करावैं २९
ललिता कुसुम चन्द्रिका लाई❀पहिराई प्यारी मुस्काई।
फूल माल पहिराइ विशाखा❀सफल करी मन की अभिलाष।३०
चम्पक लता जु बटुवा दीयौ❀अति हित मानि कुँवरि सो लीयौ
चित्रा दियौ आंनि मृग छौंना❀तुंग विद्या दियौ गेंद खिलौंना॥

---

[1]—कस्तूरी का तिलक, [2]—कलश जल से भरा रखा जो मंगल का सूचक होता है [3]—कलश के ऊपर नारियल रखा तथा कोमल आम आदि के पत्ते रखे गये, [4]—तम्बू ताना गया, [5]—जब खाते खाते रज गई तो मुख में ग्रास बोल न सकी तो गरदन हिलाकर बस कर यह संकेत किया।

इन्दु लेखा इक[1] सारौ लाई❀राधा[2] कहि कहि लेति बलाई।
रंगदेवी लाई इक पोपट❀राधा नाम पढतु है चटपट ॥३२
लाल मुनैया पिंजरा भरी❀सखी सुदेवी भेंट जु करी।
श्री राधा की सखी अनंत❀लाई भेंट बनति नहिं गन्त[3] ३३
कोऊ कुसुम हार पहिरावैं❀कोऊ रचि रचि पाँन खवावैं।
बीर दियौ गुडियनि को जोरा❀माइ दियौ कंचन को तोरा ॥३४
भूआ आनि आरतौ कीयौ❀झगरि नेग भाभी सौं लीयौ।
सबहिं परस्पर मिलैं जु हरषैं❀पट भूषण ढाढिन पर बरषैं ३५
रावलि धनि गुनिनु देहिं दाँन❀सब कौं सुविधि करैं सनमाँन।
गोप सभा बैठे है जहाँ❀सब देहिं आइ आसिका तहाँ ३६

दोहा—प्रेम बली करवावहो, सबै अलौकिक रीति।
समझैं प्रेमी हीं रसिक, ब्रज जन गरुवी प्रीति ॥३७॥
रावलि पति आये भवँन, राधा दृगनि विलोकि।
लै बैठारी गोद में, हियो प्रेम लियौ रोकि ॥ ३८ ॥
पट अमोल भूषन रतन, नौतम दिये मँगाइ।
श्री राधा अति लाड भरि, सौंपे अपनी माइ ॥ ३९ ॥
पौंनि छतीसौ नगर, जे देत बधाई आइ।
अति उदार सनमाँन देहिं, सब कौं रावलि राइ ॥ ४० ॥
सखी विसाखा कौ कहौं, बरष गांठ उत्साह।
दुलरावन जननी जनक, उर बाढी अति चाह ॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥

बरष गांठि सु विसाखा लखी❀मंगल में मंगल यह सखी।

१—मैना पक्षी, २—मैना राधा राधा नाम सीखी थी, ३—गिनती नहीं हो सकती,
४—श्री राधा जी के जन्म दिन के साथ साथ दुगुना उत्सव होगया।

भादौं सुदि आठैं तिथि महा❀दुगुनौ मंगल कहिये कहा ।।४२
केशरि उबटि लली जु न्हवाई❀मैया सुहथ[1] शिंगार बनाई ।
पीत बसन भूषन जु ललित नग❀दर्पन से जु अंग होइँ जगमग ।।
सत्य भान जिहि तात उदार❀सुविधि कियौ मंगल विस्तार ।
नवजोबनी[3] धन्य तिहिं माइ❀धन खरचति मन अधिक सिहाइ।।
चोक पूरि चौकी जु बिछाई❀तापै लली आइ बैठाइ ।
दीपावलि पुनि कदली रुपाये❀चारु[4] चन्दोवा अजिर तनाये ४५
धुजा पताका बन्दन वार❀बनिता गावति मंगलचार ।
करि अतिलाड जिमावति मैया❀वारि आरतौ लेति बलैया ।।४६
राधा सहित सखी सब आईं❀भेंट देति पुनि पुनि जु बधाई ।
रोरी अच्छत तिलक बनावैं❀सब मिलि मन आनन्द बढावैं।।

दोहा—पुर मंगल मंगल भवँन, लली सुमंगल रूप ।
सत्य भान नवजोबनी, दरसत भाग्य अनूप ।। ४८ ।।
अब बरनौं चंपक लता बरस गांठि सुख दांन ।
समिता माइ सुलच्छनी, पिता नाम गुन भाँन ।। ४९ ।।

।। चौपाई ।।

सुदि भादौं अष्टमी पुनीत❀सदन गाइयत मंगल गीत ।
अजिर लिपाइ सुचौक पुराइ❀केशरि उबटति अंग बनाइ ५०
नाइनि डोलति नगर बुलावति❀बनिता आवति मंगल गावति।
उष्ण नीर सों सुविधि न्हवावैं❀तनहिं अंगोछि बसन पहिरावैं।।
भूषन सजे अमोलिक सबै❀सौरभ[5] चरचि जिमावति तबै।
रोरी अच्छत तिलक जु कीयौ❀न्यौछावरि करि बहु धन दीयौ ५२

१—मैया ने अपने हाथों से, २—मैया का नाम नव जोबनी था, ३—सुन्दर रंग बिरंगा तम्बू आंगन में तान दिया, ४—सुगन्ध इतर आदि से तर करके ।

श्री राधा कियौ तिलक सु भाल[1] ❀ पहिराइ मोतिन की माल।
देति बधाई पुर महँतौनि ❀ लावत भेंट छतीसौ पौंन ॥५३॥

दोहा–नौ नन्दन[3] मही भाँन के, देत गुनिनु बकसीस।
द्विज दच्छना लैं लैं भलैं, सब हीं देत असीस ॥५४॥
धर्म भाँन सुभगा घरनी, बेटी लेखाचित्र[4]।
वरष गांठि दसमी सुदी, भादौं मास पवित्र ॥५५॥

॥ चौपाई ॥

केशरि उबटि न्हवावैं गावैं ❀ तिलक करैं पुनि भेंट जु लावैं।
मन्दिर रचना ठौरैं ठौर[5] ❀ जित देखौ तित औरैं और ५६
काकी ताई सब हीं मिली ❀ कुँवरि लाड के सुख में झिलीं।
सब हीं भरि भरि अंकनि लेहिं ❀ कर धरि सीस असीसनि देहिं ५७
लली सुकुन्दन की सी पुतरी ❀ मनु मूरति धरि नभ तें उतरी।
सब दुलरावैं मूठि उठावैं ❀ कोउ पट कोउ आभरन जु लावैं॥
अष्ट सखी मिल राधा साथ ❀ मैया सबनि जिमावत हाथ।
करति आरतौ अति मुद भरी ❀ कुसुम वृष्टि चहुँ दिशि तें करी॥

दोहा–आज महा मंगल भयौं, धर्म भाँन के ग्रेह।
लली चित्र लेखा भली, वरष गांठि दिन एह ॥६०॥
भादौं सुदी एकादशी, बाढ्यौ अतिशय रंग।
इन्दु लेखा कौ जनम दिन, सब मन गाँन उमंग ॥६१॥
इन्दु लेखा इन्दु जु वदन, बेटी श्री वर भाँन।
राँमा नाम जु माइ तिन, मंगल रच्यौ विधाँन ॥६२॥

१—मस्तक पर श्री राधा जी ने सखी को तिलक लगाया, २—नगर की महान स्त्रियां। ३—मही भांनु के नौ पुत्र, ४—चित्रलेखा सखी का जन्म दिन, ५—जगह जगह मकानों पर सजावट भिन्न भिन्न है।

॥ चौपाई ॥

गौ गोबर सौं लीप्यौ अँगनौं❀चौक पुरावति अति मन मगनौं
केशरि उबटति अपने कर वर❀बनितनि महा भीर जाकें घर६३
अंग अंगौछि शिंगारी लली❀सब तन उझली सोभा भली।
रोरी तिलक भाल पै करें❀भेंटैं लाइ जु आगें धरें॥६४॥
ढाढिनि नित्त करति छबि पावें❀लैं न्यौछावरि सबनि रिझावें।
आये पुरजन सब परिवार❀मंगल बाजे बाजत द्वार॥६५॥
जेंवति सब साथिनि संजुता[1]❀सोभित मध्य भानु की सुता[2]।
अस मंगल जु भवँन बरभाँन❀इहिं पुर देख्यौ नहिं कहूं आँन६६
दोहा—कौतिक विथकित घोष जन, विसरत नित कृत नेंम।
सुन्यौ न देख्यौ शृष्टि इहिं, यह जु अलौकिक प्रेम॥६७
मंगल दरस्यो विधि भली, श्री सुभानुके धाँम।
रँगदेवी के तात कौं, गावत जस अभिराम॥६८॥

॥ चौपाई ॥

नाम मालिका[3] लली सु माइ❀वरष गांठि दिन जानि सिहाइ।
केशरि सौं उबटति है अंग❀चुनि पहिरावति वसन सुरंग ६९
जूथनि गोपी मिलि संग आवैं❀वरष गांठि दिन मंगल गावैं।
चित्रित सदन किये सब ठौर❀सोभा दरसति जहाँ तहाँ और७०
चौकी पर बैठारी लली❀तिलक करति जुवति विधि भली
नौं भाँनन की सुता विराजै❀सब तन बसन आभरन साजै७१
जेंवति हैं मिलि सब ही संग❀ग्रास लेति मन भरी उमंग।
पंच नाद पुहपाँजुलि[4] वारैं❀जै धुनि करि आरती उतारैं॥७२

१—मिलकर, २—श्री राधा जी, ३—रंगदेवी जी की माता का नाम मालिका, ४—पुष्पों को वर्षा रहे हैं।

दोहा-अंग अंग अति सुथरता[1] बढति रूप की जोति ।
हँमैं लसैं सब के बदन, लखि चख चौंधी होति ॥७३॥
भादौं पून्यौं तिथि ललित जनम द्योस इक संग ।
रंग देवी अरु सुदेवी वरष गांठि भरी रंग ॥७४॥

॥ चौपाई ॥

बुध्यमती के मंगल आजु❀भवँन भीर जुवतीनु समाजु ।
लली सुदेवी उबटन कियौ❀केशरि चरचि न्हवाइ जु लियौ॥
करि शिंगार मुदित भई जनिता,छबि लखि त्रिन तोरतिसबबनिता
भवँन अलंकृत मंगल साज❀करति फिरति सबमंगलकाज७६
बुध्यमती भरि अति मन मोद❀लै बैठी जु सुता कौं गोद ।
जहाँ बैठीं नौ भाँननि घरनी❀मंगल हूं कौं मंगल करनी॥७७
अप[3]अपनी गोदनि लियें सुता❀सबहि जिमावति हैं छबि जुता ।
देव नाग नर पुर जु कुँवारि❀इनकी छबि पर डारौं वारि ७८
तिलक सुदेवी के जब कियौ❀वारि वारि धन सब हिनु दियौ ।
नौ हूं रानिनु इतनौ दियौ❀ढाढिन[4] कौं दरिद्र टरि गयौ७९
लै लै नाम सबनि कौं बोली❀सादर मेवा भरि दई ओली ।
देत असीस बधू सब निकसीं❀अति बड़भागिनि तन मन बिकसीं
भये अति मुदित तात रति भांन[5]❀सबकौं दियौ दान सनमान ।
यह गोपनि कुल मंगलचार❀विधि हूं कैं आवै न विचार ८१
दोहा-मही भाँन नृप[6] सुतनि की, बेली फली अनूप ।

१—पवित्रता उज्वलता, २—सुदेवी सखी की माता का नाम, ३—नौ रानियां अपनी अपनी पुत्री को गोद में लिये बैठी भोजन करा रही हैं, ४—राज महलों की नाचने गाने विनोद कराने में चतुर नारी ढाढन होती है, ५—सुदेवी के पिता नाम रति भानु, ६—मही अर्थात पृथ्वी तल पर के सूर्य या राजा मही भॉन के पुत्रों का वंश इस प्रकार फला फूला था ।

या[१] विधना की स्रिष्टि ते, न्यारौ दरस्यौ रूप ॥८२॥
वरष गांठि उत्सव महा, वरन्यौं मति परमाँन।
वृन्दावन[२] हित रूप कौ, सागर कुल मही भाँन ॥८३॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा बाल चरित लीला वरनन एकादश लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ बारहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—गोप दुलारिनु को जु अब, आयौ प्रिय त्यौहार।
सांझी[३] सब चीतन लगीं, तात भवँन दरबार ॥ १ ॥
तिन में राधा मुकट मणि, सब भईं ताकें लार।
सांझी कौ दिन जांनि कैं, आंईं साजि सिंगार ॥ २ ॥
सनय सनय एकत भईं, कीरति अजिर मझार।
राधा सौं सब यौं कहति, साँझी खेलन बार ॥ ३ ॥
एक सुभाव जु चाव इक, एक वैस समतूल।
कुँवरि माइ अग्यौं जु लै, निकसीं तोरन फूल ॥ ४ ॥
कीरति मेंवन कोंथरी[४], भरि दईं सब के हाथ।
भूख लगै तब जेंइयौ, सबहिं बैठ इक साथ ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

सब हिलु करीं दुकूलनि झोर[५]❀कुसमनि खोजति हैं चहुं ओर।
जहाँ जहाँ देखें फूली डार❀तहाँ तहाँ करैं सबै किलकार ६
आवौ री तुम दौरी सबै❀बहुत फूल हम पाये अबै।
तिनहिं तोरि कैं आगें चलैं❀करैं खेल कौतूहल भलैं ॥७॥

---

[१]—ब्रह्मा की सृष्टि में उदाहरण के लिये वैसा एक भी रूप गुन नहीं प्राप्त होता था, [२]—वृन्दावनदास जी कहते हैं कि श्री धाम वृन्दावन के समस्त रूप हित तत्व हैं जो मानो राजा मही भांन के कुल में रूप का एक सागर ही उमड़ पड़ा था जब यह सब अवतरित हुईं, [३]—श्राद्धों के पीछे यह त्योहार बड़ा प्रसिद्ध कन्याएँ मनाती हैं भूमि पर पुष्पों से देवी देवता आदि की चित्र रचना करती हैं बेल बूटे बनाती हैं, [४]—थैलियां या डलियां, [५]—झोलियां।

कहूं बेलि फूलि नवि[1] रहीं❀तिनकी डरियां[2] जाइ जु गहीं ।
कोउ ऊँची ते हाथ न आवैं❀इक लै एकनि कंध[3] चढावैं ॥८॥
तिन तें लिये तोरि विधि भलीं❀पुनि ताहू पें आगें चलीं ।
पहुँची प्रेम सरोवर तीर❀कुसुम बहुत पै भवँरनि भीर ॥९
वे ऐसी विधि गुँज जु करैं[4]❀मनु रखवारे तोरत लरैं ।
अरी भटू अब कीजैं कहा❀इनको देखि डरैं हम महा ॥१०
प्यास लगी गई अँचवन नीर❀बैठी करी मंडली जु तीर ।
कोऊ इक राधा कें ढिग गई❀ऐसे वचन कहति सो भई ॥११
प्यारी जो अब अज्ञा दीजै❀भूख लगी तो भोजन कीजै ।
पात पलासनि तोरि जु लावौं❀दौंनाँ अपने करनि बनावौं॥१२
खोलि कोथरी दोंना भरौ❀ऐसी विधि सब भोजन करौ ।
खोजि मिष्ट फल बन तें लावैं❀ते राधा के हाथ गहावैं[5] ॥१३॥
जेंवति कुँवरि भई अहलाद❀कहैं भटू यह अधिक सवाद ।
ऐसे फल चुनि लावौ और❀कौन वृच्छ उपजें किहि ठौर॥१४
लावैं पावैं अचवैं नीर❀आगें चली सखिनु लैं भीर ।
फूलनि लोभ गईं संकेत❀लखि बन कमनी बढ्यौ हिय हेत
जहां कुशमनि के झुकि रहे झबा❀मानौ खुले छबिनु के डबा ।
प्यारी बैठीं वट की छांहीं❀अति आनन्दित भई मनमाँहीं
फूलनि सौं ओली भरि लई❀गहने सुहथ रचति सब भई ।
पहिरैं कुँवरि सबनि पहिरावैं❀बन कौं कौतिक अति मन भावैं॥
मधुरे बाजे बाजत आवैं❀वधू वृन्द मिलि मंगल गावैं ।

१—झुकी है, २—डालियां फूल से भरी, ३—परस्पर कंधे पर चढ़ा कर ऊँची डालों से फूल तोड़ लेती हैं जब हाथ नहीं पहुंच पाता, ४—फूलों के ऊपर भौंरों के झुंड गुंज करते यह सूचित करते हैं कि वे रखवारे हैं फूल तोड़ने नहीं देंगे, ५—पकड़ा देती हैं, ६—गुच्छो ।

आई एक सहेली भगी❀ऐसें कहन कुँवरि सौं लगी १८
को आवति यह जाति जु कहां❀हम चलि कौतिक देखैं तहां[१] ।
उनि में ते आई इक बाल❀कहन लगी सो बचन रसाल १९
री तुम निपट[२] ऊजरे गात❀दामिनि अरु ससि निकर लज्यात
काकी बेटी का पुर रहौ❀मोसौं साँची बात जु कहौ ॥२०
यह वृषभाँन नृपति की लली❀याके संग ये जु सब अली ।
आई फूल लैंन के हेत❀अति कमनी इहिं बन संकेत[३]२१

दोहा—निरखि निरखि भामिनि कहति, धन्य तात पुनि माइ ।
जाके गरुवे रूप ने दियौ, बन तिमिर नसाइ[४] ।
हौं नित काँनन सुनत ही, आजु लखी भरि नैंन ।
या अति लडि के रूप पै, वारौं रति युत[५] मैंन ॥२३॥
पुनि बूझन ललिता लगी, तुम जु बसति किहि ग्रांम ।
अगनित बनिता वृन्द संग, जाति कौंन से कांम ॥२४॥
यह रानीं ब्रजराज की, आई हैं इहि हेत ।
पूजन कौं अपनें सुहथ, देवी बट संकेत ॥२५॥
यौं कहि कैं पाछें हटी, मिली संग में जाइ ।
कही बात सब महरि सौं, कांन लागि समुझाइ ॥२६॥
बिनु पूजैं हीं फल मिल्यौ, आगें परत न पाइ ।
धनि संकेत निवासिनि, वांछित दियौ दरसाइ ॥२७॥
जसुमति के हिय जिय बढ्यौ, सुनि आनन्द अकूत[६]।
उरकौ उरभयौ पहिल ही, जाइ कुँवरि सौं सूत[७] ॥२८॥

१—नन्द गांव की ओर से एक गोपियों का समूह आता देखा. २—तुम सब बिजली तथा चन्द्रमा को लज्जित करने वाली ऐसी उज्ज्वल सुन्दर किन की बेटिया हो यह पूछा, ३—संकेत बन का नाम है नन्द गांव, बरसाने के मध्य में, ४—अन्धकार दूरकर दिया है, ५—कामदेव तथा उसकी पत्नी रति देवी, ६—बे अन्त. ७—ममता सूत्र सहज उरभा ।

देवी पूजन कौं दई, विप्र वधू जु पठाइ।
राधा ओर चलीं खँकि, मुरली धर की माइ॥२९॥
बैठी सखियनि वृन्द में, रूप की आनन्द पुंज।
महरि देखि दहली सुअंग[1], किहिं विधि मिलिये कुंज॥

॥ चौपाई ॥

चली महरि मन साहस धरिकैं❀पहुँची निकट सु आइ कुँवरिकैं।
मन[2] की बात सु कासौं कहैं❀बार बार विधना तन चहैं॥३१
मेरी ओर लरजियौ[3] दई❀फल प्रापति की बरियां भई।
है देवी तू साँची महा❀तेरी महिमाँ बरनौं कहा॥३२॥
हौं नहि सकी चरन लगी आइ[4]❀मन अभिलाषा दई पुजाइ।
नख सिख रूप बिलोकनि लगी❀नैंननि भूख सतगुनी जगी॥३३
कुँवरि लई गोदी बैठारि❀बढ्यौ रूप नहि सकति निहारि।
कहति[6] अति लडी मो घर चलौ❀दिहु सब हीं कौं आनन्द भलौ॥
मैं देखी तू जनमी जबै❀तब[7] तें दई मिलाई अबै।
बूझौं सुनौं सन्देश कांन❀उहां बनै नहि आवन जाँन॥३५
कबहूं हेरे बदन तन रहैं❀कबहूं गाढे अंकनि गहैं।
कबहूं रीझि वारने लेंहि❀शिर कर राखि असीसें देहि ३६
पुनि आठौं भाननि की बेटी❀बोलि बोलि सब हीं उर भेंटी।
सब कौं लाड बिना मित कर्यौ❀सब के माथे कर वर धर्यौ॥३७
ललिता मधुर कही तब बानी❀हम कौं अज्ञा दीजै रानी।

१—यशोदा जी के अंग मानो मूर्छित हो गये, २—यशोदा के मन में जो श्रीजी को लाल से विवाह का भाव है वह किसे कहे, ३—दया कीजियो या दुआ, ४—कहती हैं कि देवी संकेत केवल तेरी पूजा के संकल्प से ही अभिलाष पूरी हो गई तेरे चरण लगूंगी तो पता नहीं क्या सिद्धि होगी, ५—सौगुना, ६—श्री राधा जी से दुलार देते यशोदा जी ने कहा कि हमारे घर चलो, ७—तेरे जन्म दिन के बाद आज भाग्य से फिर मिलाया है,

साँझी पूजन कौ दिन आज❀आई फूल तोरने काज ॥३८॥
तोरति फूल अधिक बढ़ि आई❀बहुरि कृपा करि तुम बिरमाई[1] ।
हमकौ बेगि विदा अब दीजै❀आपु नन्द पुर गवन जु कीजै ॥
कीरति छिनु न विसारति जाहि❀कैऊ[2] घरी बीति गईं ताहिं ।
अपने[3] मन करि उनि मन बूझ्यौ❀जसुमति कौ सति भाव जु सूझ्यौ
दोहा–रानीं लै रही अंक में, सबल ह्वै रह्यौ प्रेम ।
कह्यौ जु सूझैं कौंन कौं, साँझी पूजन नेंम ॥४१॥
नाम हिता तो माइ कौ, सुनि अति लडि वृषभाँन ।
कहियो पा लागन जु मम, दै कै बहु सनमान ॥४२॥

॥ चौपाई ॥

ललिता[4]मो बिनती सुनि लीजौ❀रानीं सौं ऐसें कहि दीजौ ।
प्रथम बचन की बरियाँ भई❀लाइक[5] तुम सु नाइ हम दई४३
कुँवरि चलन कौं अति अरबरैं[6]❀तब हीं रानीं हिय गहबरैं ।
जिहि तिहि विधि सुरझाइ जु लई❀मन धीरज धरि अज्ञाँ दई॥४४
धरें नन्द पुर सन्मुख पाइ[7]❀मुरि मुरि इतकौं देखति जाँइ ।
यह लै फूल चलीं घर तात❀महरि लाड की करति जु बात ४५
जहाँ जहाँ देखैं कमनीं ठौर❀कुँवरि खेल तहां २ रचै और।
तौरैं[8] फूल कुँमुद कुँमुदनी❀सरवर धसी कोऊ इक जनी॥४६
वै लै लै जु पारि[9] पै धरैं❀कोऊ इक ताकी चोरी करैं ।
कोऊ इक कहैं ताहि समुझाइ❀और लाउ री फिर धसि[10] जाइ ॥

---

[1]—परचा लिया, रोक लिया, [2]—बहुत काल गुजर चला, [3]—ललिता यशोदाजी के भाव को मन से ताड़ गई, [4]—यसोदा जी बोलीं कीरति को यह सन्देसा कहना. [5]—हम तुम्हारे बराबर की तो कदापि नहीं हैं परन्तु अपने बचन को पालना, [6]—शीघ्रता कर रही हैं, [7]—नन्दगांव की तरफ पांव बढाया, [8]—कुमुद कुमुदनी चन्द्र को देखकर फूल जाता है इसलिये श्रीजी ने उन्हें तोड़ा कि मानो उन्हें मुख चन्द्र दिखाकर प्रफुल्लित किया. [9]—किनारे पर, [10]—फिर जल में घुस जा और तोड़ ला।

वे घसि लाइ लाइ कैं देहिं❀बांटि बांटि यह सब हीं लेहिं ।
बरियाँ[1] बड़ी भई जब लखी❀कीरति एक पठाइ सखी ॥४८॥
उनि सब कह्यौ सन्देसौ आइ❀मारग हेरति तुमरी माइ[2] ।
सुनि सब आतुर गति सौं चलीं❀गौरी गावति[3] सब हीं अली४९
एकत भईं बड़ी अरु छोट❀मनु[4] सोभा को दरसतु कोट ।
सब मुद भरी मल्हावैं बोर❀बरनी परै न छबि की भोर ॥५०
पौरी भान पाउ जब दियौ❀मैया हरखि आरतौ कियौ ।
लाड सहित आँकौं भरि लई❀अंचल वदन अँगोछति भई ५१
केशरि चन्दन लीपी भीति❀गो गोबर धरि साँझी चीति ।
चहुं दिसि गोबर कोटि जु रच्यौ❀मधि सिसु मार[5] चक्र पुनि रच्यौ
रवि ससि मंडल इहि विधि धरयौ❀लखि विधि मन सन्देह जु पर्यौ
चहुँ दिसि चीते[7] अगनित तारे❀बड़डे ग्रह कर आपु सँवारे ॥५०
बिच २ फूल बीच नग पांति❀कुँवरि धरे रचि नीकी भांति ।
सब में दरसति ऐसी ओप[8]❀उपमा मानों करियति लोप[9] ॥५४
श्री राधा के साथिनि साथ❀सब चीतति अप[10] अपने हाथ ।
अगर धूप सौरभ करि चरची❀खेल मांहि अति लडि मन परची
जल गुलाब चहुँ दिशि छिरकाइ❀दीपक पंकति धरी बनाइ ।
सबै कहैं लघु वैस जु अहा[11]❀कर चतुराई[12] कहिये कहा ॥५६
सब कोउ अस परसंश जु करैं❀सुनि कीरति उर आनन्द भरैं ।
आरज गोपिनु लै कै संग❀आँइ देखन मन जु उमंग ॥५७

१—बहुत देरी होती देखी, २—मैया कीरति रास्ता देख रही है ३—राग गौरी, ४—सोभा के किले की तरह इकट्ठी होकर दीख रही थीं ५—आकाश के तारा मण्डल की तरह ६—ब्रह्मा को सन्देह हुआ कि श्रीजी अपने खेल खेल में नई सृष्टि न रच दें, ७—अगणित तारे चित्रित किये, ८—चमक, झलक, ९—उपमा रही ही नहीं, १०—चित्रित कर रही हैं, ११—छोटी आयु, १२—चतुराई का क्या कहना ।

ललो हाथ लगीं चूम्बन माइ❀रीझी पुनि पुनि लेत बलाइ।
सकुचि कुँवरि लइ दृष्टि दुराइ❀हिय फूलनि वरनीं नहिं जाइ॥५८
कह्यौ कुँवरि तब मृदु मुस्काइ❀मैया दीजै भोग मँगाइ।
मेवा बहु पकवाँन मँगायौ❀लली भली विधि भोग धरायौ॥
साथिनि सुघरनि ऐसो गायौ❀मनु साँझी कौ टेरि बुलायौ।
कर जोरें विनवति सब ऐसे❀साँझी होहि प्रसन्न सु जैसे॥६०
ठाडी सबहि ध्यान सो करैं❀मुख तें मनहुँ मंत्र उच्चरैं।
अखिल कलनि की स्वामिनि जोहैं❀लीला बाल मगन भई सोहैं॥
भोग उसार्यौ जल अँचवाइ❀बीरी अर्पी पुनि चितचाइ।
बाढी आरति करन हुलास❀सब सिमिटीं जु कुँवरि के पास॥
दोहा–किधौं कि शीतल दामिनि[1], किधौं निकर ससि[2] जोति
सजि आरति ठाढी भई, तन दुति जगमग होति॥६३
आरति वारति कुँवर जु, पुहपांजुलि सखी कोइ।
मन करि आरधति सबै, पंच नाद धुनि होइ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

मिलति परस्पर नवँनी करि २[3]❀ग्रीवा बाहुँ लाड सौं धरि धरि।
यौं रजनी[4] मुख पूजन कियौ❀खेल विनोद सन्यौ सुख हियौ॥
कीरति सबनि भवँन लै आई❀कनक[5] सूत ओढनी उढाई।
ओलिनु भरि भरि मेवा दई❀सब राधा ढिग बैठति भई॥६६
कीरति कहति गई किहिं दिशि बन[6]❀बेटी तू कछु श्रमित भई तन।
मैया देखीं कुंजैं कमनी❀प्यारी लागी बन की अँवनी ६७
बढि गई बट संकेत जु कूल❀ओलिनु भरि भरि तोरे फूल।

१—ठण्डी बिजली, २—चन्द्र की निर्मल चान्दनी, ३—नम्रता करती परस्पर गले लगती है उत्सव के समाप्त होने पर एक विधि है, ४—सायंकाल, ५—सुनहरी सूती, ६—वन में कौन कौन दिशा फूल चुनती हुई घूमी।

तहाँ इक कौतिक परयौ जु सूझि*सो तू अब ललिता सों बूझि।।
दोहा—सखी[1] कहति हम बन गईं, फूलनि तोरन हेत।
महरि जु आईं पूजिबे, देवी बट संकेत ।।६९।।
आरज गोपी संग बहु, करति उच्च स्वर गान।
हम उनिके कौतिक लगीं भूलीं आंवन जाँन ।।७०।।
आई चतुरा नारि इक, हम सौं गई बतराइ।
भेद भाव उन महरिकौं सब हीं दियौ जताइ ।।७१।।

।। चौपाई ।।

जब राधा की खबर जु पाई*तब रांनी पाछें फिर आई।
कुँवरि हि लखि विह्वल भई महा*सरस्यौ प्रेम सु बरनौं कहा७२
आँकौं भरि कै भेंटी प्यारी*करन लगी परशंसा भारी।
सब कौ लाड बहुत विधि कीनौं*करजनि[2] चटक वारनौं लीनौं।।
अपु घर[3] लै चलिबे मन कीयौ*हम जु समझि तब ऊतरु दीयौ।
साँझी पूजन की यह बार*रांनी समझि लेहु निरधार ।।७४
मारग देखति होइगी माइ*हम पै क्यौं अब बिरम्यौ[4] जाइ
महरि लगाइ रही यौं छाती*जैसें रंक न बिसरै थाती ।।७५
जब हम चलिबे कौ अकुलानीं*तब अज्ञां दीनी ब्रज रांनी।
तुम कौं बहु पा लागन कह्यौ*पुनि सन्देश कहि दृगजल[5] बह्यौ
राधा जननी लाइक जैसी*महि हि सूझै जग में ऐसी।
मेरो अपनौ पन दृढ़ करि हौ*इत उत मन अभिलाष सु भरि हौ
दोहा—वचन[6] किये जे परस्पर, हम तुम खिले सु चित्त।

---

[1] —ललिता सखी कह रही है, [2]—चुटकी मार कर बलिहारी गई, [3]—नन्द महल में ले जाने की इच्छा थी, [4]—रुक नहीं सकती लौटने में देरी हो जाएगी, [5]—नैनों से जल बहने लगा, [6]—यसुमति तथा कीरति दोनों एक साथ गर्भवति थीं तो एक बार यमुना पर मिलीं वचन परस्पर किया कि बेटा बेटी हुईं तो सगाई करेंगी वह यसुमति याद कराती हैं

रौंनी ते सुधि कीजियौ, हौं सुधि करत जु नित्त ।।७८।।

।। चौपाई ।।

कीरति सुनि कै हियें सिहाँनी❀महरि हियें की लाग सुजाँनी।
राधा बरनी आपु मुख बाँनी❀कैसी लाइक ब्रजपति राँनी ।।७९
कुँवरि सकुचि कै चुप ह्वै रही❀ललिता ने जु कथा सब कही।
कोमल हृदै गिरा सुख सनी[1]❀उर उदारता दरसी घनी ।।८०।।
हम सौं प्रीति करी यह भांति❀इक मुख सों बरनी नहिं जाति।
समाचार कहे जसुमति जिते❀ललिता बरन सुनाये तिते ।।८१
सांझी की जु जात[2] सी लागी❀देखन आवैं सब अनुरागी।
कीरति पूरब सुक्रित कर्यौ❀राधा प्रगटी सो लखि पर्यौ ८२
अस रचना प्यारी कर[3] देखी❀विधि हूं ते चातुरी विशेषी।
ब्यारू सुहथ कराई माइ❀जल अचमन करि पौढीं जाइ ।।
सोरह[4] तिथि भरि खेलीं इहि विधि, दिन २ बढ्यौ प्रेम आनन्द निधि
दिन दिन के जु खेल बहु न्यारे❀सब विधि लगै सबनि कौ प्यारे ८४
परिवा परब मनावति भई❀मान सरोवर तीर जु गई।
बाजे बाजैं मंगल गावैं❀श्री राधा सांझी जु सिरावैं ।।८५
भुज भरि २ जु परस्पर मिलीं❀मेवा बांटति अति सुख झिलीं।
वन्दन करि करि घर कौं आंईं❀कीरति सबहिं सखो पहिराइ ८६

दोहा—राधा पद सेवति रहै, मंगल मूरति वंत।
वृन्दावन हित रूप निधि, आनन्द निकर न अन्त।।८७

---

[1]—श्री यसोदा जी का स्वभाव ललिता जी कह रही हैं, [2]—मानो सांझी सजीव व्यक्त ही हो गई अथवा आने जाने वालों की यात्रा सी लगी हो जो दर्शन को आरहे थे, [3]—प्यारी जी के हाथ की कुशलता इतनी शिशु अवस्था में प्रगट देख रही हैं, [4]—सोलह दिन पूरा आश्वन पक्ष यह खेल रहा।

तात मात के लाड युत, कीनी खेल प्रशंस ।
बाल विनोद प्रचुर करे, स्वामिनि श्री हरिवंश ।।८८।।

।। इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्रीराधा सांझी खेल उत्साह लीला वरनन बारहवी लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ।।

।। अथ तेरहवीं लहरी प्रारम्भ ।।

दोहा—झाँझी माँझी[1] होहिगो, घर घर अति कोतूह ।
राधा खेलन निकसि हैं, लै संग सखिनु समूह ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

साँझी खेल जु झाँझी रचै❀खेल कुँवरि पै कोऊ न बचै ।
भाजन में बहु छिद्र जु करैं❀मध्य चौमुखो दीपक धरैं ।।२।।
गोप सुता सिमटीं सब साँझ❀राधा सोभित तिन के माँझ ।
सुबटा[2] गावैं बीर मल्हावैं❀कीरति सब कौ भवँन बुलावैं ।।
चलौ चलौ यों कहति जु राधा❀झाँझी खेल बढ़ी मन साधा ।
सबहिं चलीं रावर में झमकीं❀मुख विधु तन दामिनि ज्यों दमकीं
एक सखी सिर झाँझी धरी❀तापै बहु विधि रचना करीं ।
दीपक कांति विविध नग पांति❀गोप सुता देखति जु सिहांति ५
मन हु बाल रवि[3] किरनि जु कढी❀यह अचरज रजनी मुख बढी ।
निशि बासर न संभवै मेल❀सहज कुँवरि राधा कौ खेल ।।६
कीरति बैठो भरी हुलास❀आरज[4] गोपी राजैं पास ।
चौकी ते उठि ऐसे लसी❀मानौं रोंम रोंम तन हँसी ।।७।।
लली आइ भई आगें ठाढी❀मनु सोभा सांचे में काढी ।
गावति तात मात लै नाम❀झाँइ पूरि रही मणि धाम ।।८।।

---

[1] —नाच गान व बाजे बजेंगे एक प्रकार का खेल झांझी होता है, [2] —ब्रज का एक प्रकार का सांझी उत्सव का गीत, [3] —यद्यपि सायंकाल था अंधेरा होता परन्तु श्रीजी तथा सखी समूह की अंग कांति के प्रकाश से ऐसा मालूम होता जैसे प्रातःकाल का अरुणोदय हो. [4] —आर्य, बड़ी बूढ़ी !

रावल पति सुत सोदर[1] मेरौ❀मुहि लागै प्यारो जु घनेरौ ।
गुन निधि रम्भा[2] भाभी मेरी❀ताहि मल्हावौ सब मिलि एरी ९
मो झाँझी की पूजा करौ❀मैया आइ भेंट तुम धरौ ।
मीठी लगी लाड़ की बांनी❀अति लडि कह्यौ कर्‌यौ त्यौं राँनी
रजित रुक्म[3] नग एकत करिकैं❀दियौ सखी की ओली भरिकैं ।
वीर जिवौ चिर देति असीश❀अचल राज रहो रावलि ईश ११
कीरति छिनहूं न विसर्‌यौ चहै❀राधा लाड भरी उर रहै ।
जांनि खेल रुचि बरजैं[4] नांहि❀सुखा[5] रहै राधा सुख मांहि ॥
अज्ञां दीनी खेलौ लली❀बेगि आइयौ घर कौं चली ।
झाँझी लै कैं सब हीं निकसीं❀खेल उमाहैं हिय जिय बिकसीं १३
प्रथम हीं महा भाँन[6] घर गईं❀हित मूरति दुलरावति भईं ।
लखि हरषी ललिता की मैया❀चम्पा[7] रानी लेति बलैया ॥१४
प्यारी प्राँन भाँवती लली❀झाँझी चीती[8] तैं विधि भली ।
अँजुरी भरि कै रतन जु लाई❀ओली भरि अति हियैं सिहाई १५
पुनि गई सत्य भाँन के ग्रेह❀कीयौ नवजोवनी[9] सनेह ।
बेटी नीकैं सुबटा गावौ❀तात मात पुनि वीर मल्हावौ १६
दीपक गो घृत सौं लै भर्‌यौ❀झाँझी कौं सिर नवन जु कर्‌यौ
लली विशाखा जु की मैया❀गोद भरी पुनि लई बलैया १७
पुनि गुन भाँन भवँन में आई❀समिता[10] सब हीं अंक लगाई ।
चंपक लता लली की माइ❀लखि भयौ आनन्द उर न समाइ
सब बैठारीं अपने अँगना❀गींत गवावति भई अति मगना
फूलनि झाँझी पूजति भई❀बेटिनु कौं जु आसिका दई ॥१९

---

[1]—भैया का मंगल मल्हा रही हैं एक माता के गर्भ से जाया सहोदर भाई, [2]—भाभी का नाम रंभा लेकर मंगल गारही हैं [3]—चान्दी सोने की मुद्रा तथा हीरे नग, [4]—रोकती नहीं [5]—आराधा के सुख में सुखी है, [6]—ताऊ के घर, [7]—ताई का नाम चम्पा [8]—चित्रित करी, [9]—दूसरी ताई का नाम [10]—गुन भानु की पत्नी का नाम समिता ।

मंगल दवि दुहूं कर लै कै❀ओली भरयौ जु आदर दै कै।
धर्म भौंन मन्दिर जब धसीं❀शीतल दांमिनि शिशु मनु लसीं
आगें आईं सुभगा[1] राँनी❀धनि यह घरी कहति भईं बाँनीं
राधा लली लईं भरि बाथ❀सबनि लडावति जे इन[2] साथ ॥
झाँझी में पुंगी फल धरि कैं❀मुदित होति मन बिनती करि कैं।
सखी बोलि ग्रह भीतर लईं❀ओली भरि कैं दवि[3] जु दई॥२२
कियौ लाड राधा की काकी[4]❀जननी सखी इन्दु लेखा की।
आईं सब रुचि भान जु धाम❀जूथ अनेक अली अभिराम॥२३
गाँन अलौकिक रीति जु करैं❀भाँमा राँनी को मन हरैं।
राधा तुंग विद्या गर बहियाँ❀अति छवि बढ़ी अजिर के महियाँ
बेटी कछू बैठि कैं गावौ❀मेरे मन कौ अधिक जु भावौ।
री[5] गौरंगी हम कुल भूषन❀मुख[6] मयंक श्रवि वचन पियूषन॥
कोकिल कंठी गावति भई❀काकी कौं रिझाइ अति लई।
रजित रुक्म नग भरि दइ ओली❀पुनि दीनी पाँननि की ढोली२६
पुनि आईं मन्दिर बर भौंन❀राँमा[7] सुखित भई सुनि गाँन।
लाइक इन्दु लेखा की जनिता[8]❀ऐसी और कौन जग बनिता २७
राधा निरखि भरी अनुराग❀फूल्यौ अजिर रूप मनु बाग।
लईं अंक भरि कीरति जाई❀रतननि सौं सखि गोद भराई २८
यौं झाँझी की भेंटनि लेहिं❀सोदर तात असीस जु देहिं।
सोभा भीर गलिनु के माहीं❀इह घर ते पुनि उहि घर जाहीं२९
मिलि सुभान के आईं गावति❀कनक लता सी सब छबि पावति।

१—धर्म भानु की पत्नी का नाम सुभगा, २—जो जो साथ थीं सब को समान लाड किया, ३—भेंट में धन तथा मांगलिक वस्तुएँ, ४—पिता से छोटे भाई की पत्नी चाची या काकी ५—श्री राधा जी को संबोधित किया, ६—मुख चन्द्र सा तथा बचनों में अमृत झरता है, ७—दूसरी छोटी चाची का नाम है, ८—माता।

हरखीं देखि मालिका[१] रानी❀रँगदेवी[२] की माय सयाँनी ॥३०
गोझा भरि भरि मेवा दीनीं❀प्रीति करी हिय अति सुख भीनी
दीयौ दधि दुहूं कर भरि कैं❀लाडति कुँवरि चिबुक कर धरिकैं
पुनि गँवनी रति भाँन भवँन में❀आगें लसति कुँवरि सखि गन में
बुध्यमती काकी हिय फूली❀लाडति कुँवरि प्राँन सम तूली॥
सखा सुदेवी जू का माइ❀लीनीं सबहिं अजिर बैठाइ।
मोद भरी ब्यारू करवावैं❀श्री राधा कौं आपु लडावैं॥॥३२
झाँझी वी जु भेंट अस दीनी❀गीत पुनीत सुनत सुख भीनीं।
झाँझी खेलति कीरति लली❀पुर बीथीनु[३] बढी रंग रली ॥३४
जौ काहू ग्रह कुँवरि न जाइ❀ते सादर लै जाँहिं बुलाइ।
श्री राधा सब विधि सुख वरषैं❀सब काहू कौ हिय लखि हरषैं३५
प्रथम जाम रजनी जब गई❀कुँवरि तात घर आवति भई।
कीरति लीनी अरघ बढ़ाई❀बदन अँगोछयौ अंचल लाइ ३६
गोपिन सुता अजिर बैठारीं❀ब्यारू[४] करन परोसीं थारी।
कीरति को हित गरुवौ[५] महा❀भोजन स्वाद बरनिये कहा ॥३७

दोहा—दूध जो मदनी गाइ कौ, तामें सिता मिलाइ।
राधा अति लडि यौं कहे, मैया मोकौं प्याइ ॥३८॥
सिता मिलाइ सिराइ कैं, पय भाजन कर लाइ।
जननी दियौ पिवाइ कै, पुनि आचमन कराइ ॥३९॥
सबहीं सखी घर कौं गईं, प्यारी कियौ सुख सैन।
प्रात उठत राधा कहै, मैया सौं अस बैन ॥४०॥
आजु दसहरा पूजि हैं, तात भयानें ईश।

---

[१]—सुभान की पत्नी का नाम, [२]—श्री निम्बार्काचार्य जी रंगदेवी सखी का अवतार प्रसिद्ध हैं, [३]—गलियों में, [४]—रात्री का भोजन, [५]—पुत्री से असीम हित करती है।

सौदर माथें तिलक करि, हौं धरि हौं जव सीश ॥४१॥
रानी सुनि प्रमुदित भई, रही बदन तन हेरि।
राधा बेटी वचन अस, मोसौं कहिये फेरि ॥४२॥

॥ चौपाई ॥

रावलि राइ भवँन जब आये❀कीरति ऐसें बचन सुनाये।
सुनियौ हो अति लड के तात❀कुँवरि कही इक मोसौं बात ॥
बीर सीश पर हौं जव[2] धरि हौं❀माथे सुन्दर तिलक जु करिहौं।
आजु कलेऊ[3] की सुधि भूली❀फिरत भवँन में फूली फूली ॥४४
श्री वृषभाँन बोलि तब लई❀हँसति कुँवरि बाबा ढिग गई।
बेटी क्यों न कलेऊ करी❀कौन बात अरबी[4] मन धरी॥४५
भैया के सिर जब जव धरिहौं❀तब ही तात कलेऊ करि हौं।
यह सुनि हँसे भयानें राइ❀राधा लीनी अंक लगाइ ॥४६॥
श्री दाँमा तिहि बार बुलायौ❀करि शिंगार अति लडौ आयौ।
नौ भाँननि के जुरे कुँवार❀अष्ट सखी राधा कें लार ॥४७॥
रोरी अच्छत तिलक जु करैं❀श्रीफल लाडू गोदनि भरैं।
जव धरि सीश मुदित अति लडी❀लखि भई फूल माइ मन बडी॥
कहत तात आनन्दित महा❀बेटी दच्छना लै है कहा।
भैया अधिक मल्हाऊँ तोकौं❀गुडिया बहुत लाइ दै मोकौं॥४८
अरु दुहि दै मेरी मदनी गाइ❀बहुरि[5] न मोकौं जाह चिराइ।
सुनि राधा की भोरी बतियाँ❀तात मात शीतल भई छतियाँ॥
दसमी विजय जु उत्सव महा❀संपति राज बरनिये कहा।
राज सिंघासन बैठे भाँन❀गहरे[6] घुरत पौरि नीसाँन ॥५१॥

१—देखने लगी, २—जव—जौ के अंकुर नवीन भाई के सिर पर धारण कराना, ३—प्रातःकाल का बच्चों का लघु आहार, ४—आकुलता, ५—मुझे कभी तंग न किया कर यह दछना दे, ६—बहुत ऊँचे निसान लहलहा रहे हैं दरबार के ऊपर अथवा उच्च शब्द से नगारे बज रहे हैं।

गाँव गाँव ते भेंट जु आवैं❀सब सनमान राज घर पावैं ।
रजनी मुख झाँझी लै चलीं❀सोभित कुँवरि सखिनु मधभली।।
निर्तत अलि झाँझी सिर धरैं❀बगर बगर अति कौतिक करैं ।
श्री राधा सुख करि सरसांनौं❀सोभित गोप राइ बरसानौं ।।५३
पुर कौतूह करैं श्री राधा❀गोपिनु देखन की मन साधा ।
दिन दिन आनन्द बढै सवायौ❀इक रसनां करि जातु न गायौ५४
पून्यौं क्वार जु पूरन भई❀उतकंठा बाढै नित नई ।
इहिं सुख खेल सात दिन भये❀प्रेम बीज सब हिनु उर वये[1] ।।५५

दोहा—कहति अति लडि माइ सौं, पूरन को दिन आजु ।
जाऊँ सिरांवन[2] भान सर, कर दे पूजा साज ।।५६।।
रूप जोति गोपिनु सुता, सिमिटीं कीरति भौंन ।
झांझी चलीं सिरांवने, उपमा वरनौं कौन ।।५७।।

॥ चौपाई ॥

अति लडि कह्यौ माइ सो कीयौ❀पूजा साज सबै सजि दीयौ ।
गावति चलीं जु गोप कुँवारी❀मनु छबि की फूलीं फुलवारी ५८
तिन मध्य राधा चंपक बरनी❀आनन्द के उर आनन्द भरनीं ।
सखिनु सहित भानोखरि[3] गई❀झांझी सुविधि सिरावति भई ५९
मिली परस्पर बाढ्यौ मोद❀लाडू बांटे भरि भरि गोद ।
मंगल गावति घर कौं आंईं❀सबहिं परस्पर देति बधाई ।।६०
करि आरतौ लई घर माइ❀भूरि भाग्य अपनौ जु मनाइ ।
गोपिन ग्रह नित मंगल रहै❀लली खेल सुख[4] सरिता बहै ६१
खेल नित नये परहि न गनैं❀को समरथ जो सब हीं भनैं ।
नभ उडुगन ज्यौं अन्त जु नांहिं❀अपै कोउ २ गनैं जु जाहिं ६२

१—प्रेम बीज सब के मन में बो दिये, २—ठंडी करने अथवा झांझी का शान्ति पूजन, ३—भान सरोवर, ४—सुख की नदी ।

राधा खेल जानि लिहु ऐसे❀हौं लघु मति कहि सकौं जु कैसे।
ब्रज लीला सब हीं रस मई❀भावुक उरनि प्रकास जु भई ६३
सागर[1] पैलौ पार न लहैं❀कितनौऊँ पैरो[2] उत हीं रहैं।
ऐसें राधा चरित दुराधि[3]❀जो वरनैं सु कृपा ही साधि[4]६४
दोहा—झांझी खेली राधिका, पुर पूर्‌यौ अनुराग।
वृन्दाबन हित रूप बलि, ब्रज जन उघर्‌यौ भाग ॥६५॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री राधा झांझी खेल उत्साह वरनन लीला तेरहवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ चौदहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—बाल केलि श्री राधिका, मन कौं अति अभिराम।
नित आनन्द वरषत रहैं, कीरति जु के धाम ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

इक दिन दही बिलोवत मात❀राधा जागी बडे ही प्रात।
अति ललि कहै अंक मुहि लेहु❀रांनी कहै बिलोवन देहु ॥२॥
कैसें ग्वाल दुहत हैं गाइ❀तहां मोहि ले चल जु दिखाइ।
बेटी तू अरबीली महा❀प्रात हीं झगरौ ठांन्यौ कहा॥३॥
यह सुनि कैं जु गुस्सा मन भरी❀माइ चिरावन की जिय धरी।
अलन अलन[5] चली भीतर जाइ❀दुरि[6] बैठी जु कपाट[7] भिराइ ॥४
सब दिसि लगी बिलोकन माइ❀राधा कित हूं न पडी लखाइ।
मन में अधिक चटपटी लगी❀किधौं रूठि गई बाहिर भगी ॥५
आइ गयौ श्री दांमा भैया❀ताकौं बूझन लागी मैया।
बेटा बहिन दृष्टि कहूं पड़ी❀किहिं घर गई गुसा मन भरी ॥६

१—दूसरा या परला किनारा, २—भले कितना तैरो, ३—दुराराध्य या अगम्य, ४—जो भी जितनी मात्रा गावे उस पर उतनी कृपा हुई समझो साधन बल नहीं है, ५—धीरे धीरे पता न चले, ६—छिप गई, ७—दरवाजे।

दधि[1] परौंधि मैं डारो रई❀वाहि गोद की अरबी भई।
मैं माखन काढन मन दियौ❀जानि न पड़ी गवँन कित कियौ
सखी मंडली आँगन जुरी❀इन हूं तें न्यारी कहूं दुरी।
ललिता बेटी आगें आउ❀तू कहूं ढूँढ़ि कुँवरि कौं लाउ॥८
हँसति सबै चहुँ दिस कौं चलीं❀खोज्यौ नगर बगर सब गली।
फिरि आंईं ऐसे सब बोलीं❀मैया नगर बगर हम डोलीं॥९॥
किन हूं न देखी बाहर जात❀कहौ बूझिये कासौं बात।
श्रीदामा जब भीतर गयौ❀वही कपाट जु खोलतु भयौ॥१०
बीरहिं देखि कुँवरि हँसि परी❀रानी रँचकि अंक तब भरी।
पुनि रानी बोली मृदु बांनी❀बेटी तू तौ निपट सयांनी॥ ११
इकली दुरि बैठी जु भवन में❀क्यौं धीरज रह्यौ तेरे मन में[2]।
राधा[3] कह्यौ मानि मो लीजै❀ऐसी गुसां न कबहूं कीजै॥१२॥
तब बोली अरबीली लली❀हौं तौ ही बाहिर कौं चली।
आगें देख्यौ ठाढौ भैया❀तब हौं फिरि घर आई मैया १३
तू दधि मथन लोभ मन करै❀मेरी बात कांन नहिं धरै।
अब हौं ताई के घर जैहौं❀तेरे हाथ दही नहिं खैहौं॥१४॥
गहि गहि चिबुक मनावै माइ❀पुनि रूठै पुनि हँसि हँसि जाइ।
सुन्दर गुड़िया अब जु मंगाऊँ❀पुनि सुन्दर जु बसन पहिराऊँ १५
मानि लेहु तू मेरो कहनौ❀पुनि सुन्दर जु गढ़ाऊँ गहनौं।
सुन्दर चौकी नई गढ़ाऊँ❀ता पै तो गुड़िया बैठाऊँ॥१६
धरिबे कौं सुन्दर जु पिटारी❀पुनि गढाइ देऊं तारौ तारी[4]।
यह सुनि मुदित भई श्रीराधा❀समुझि माइ की प्रीति अगाधा॥

१—मथानी में दही उलेडी और रई चलाने की तयारी की (मानो श्रीदामा के कारण पूछने पर मैया ने बताया) २—क्या तुझे इकला कमरे में भय नहीं लगा था, ३—बेटी मैया का कहा मान लिया कर गुसा अच्छी बात नहीं है, ४—ताला चाबी लगा दिया कर कि भैया न लेजाए।

लली कहति ललिता सौं ऐसें❀बरनैं निपट सयाँनी जैसे ।
बाबा देस भयाने धनी[1]❀मैया लाड करै विधि घनी[2] १८
श्रीदाँमा सौं को जग बीर❀लायक सुन्दर गुन गंभीर ।
बरसानें सम पुर नहिं अवँनी❀खेलन कौ जु ठौर जहाँ कमनी[3]॥
मेरी सी साथिनि हैं कहाँ[4]❀मन[5] लिये संग फिरैं जहाँ तहाँ ।
प्रमुदित महा माइ ढिग गई❀कछु सन्देह जु बूझति भई ॥२०
घर घर में उत्साह जु महा❀यह त्यौहार कहावैं कहा ।
बेटी यह त्यौहार दिवारी[6]❀बैस[7] वंश कौं अति हीं प्यारी२१
मैया कै दिन रहे बताइ❀याकी रीति भांति सब गाइ[8] ।
कीरति हँसी वचन अस कहे❀बेटी अब दिन थोडे रहे ॥२२
काकी ताई चित्रित भौंन[9]❀आउ देखि तू करि तहां गौंन[10]।
कीरति पाक विविध विधि करैं❀लै लै भीतर भवँन जु भरैं ॥२३
अगनित वधू टहल में लगीं❀अति उत्साह फिरत रँग मगीं ।
चित्रकार रचि चित्र बनावैं❀अप अपनी सुघरता[11] दिखावैं ॥
मन्दिर राज अलंकृत ऐसो❀सुर[12] नर नाग लोक नहिं जैसो
चित्रित घर घर अटा अटारी❀जगमग होति किवारीं बारी॥२५
लीपे पोते सब घर अँगना❀गोपी सवैं फिरत मन मगनां ।
नाना धातु करनि[13] सब घसैं❀चित्रित किये सदन[14]अति लसैं[15]॥
ग्वाल अनन्त जु जाकें लार[16]❀श्रीदाँमा मधि राज कुँवार ।
बैठे जहाँ भयानें राइ[17]❀सुत ने सीस नवायौ जाइ ॥२७

१—मालिक या राजा, २—असीम या गहरा, ३—आकर्षक सुन्दर, ४—जैसी तुम सब मेरी सखी सहेलियां ऐसी कहीं हैं ही नहीं, ५—सदा मेरे सुख में सब का मन सुखी है तत्सुख सिद्धान्त कह दिया है, ६—दीपमाला, ७—वैश्य का प्यारा त्यौहार है, ८—बिस्तार से बता. ९—घर द्वार अन्दर बाहिर, १०—चलो चलें, ११—चातुरी कला १२—नर लोक-सुरलोक-नागलोक में वैसा नहीं था, १३—हाथों से, १४—ग्वालों के घर, १५—चमकते हैं, १६—साथ साथ, १७—श्री वृषभानु राजा ।

दै असीस दियौ अंक लगाइ❀अज्ञा दई शिंगारौ गाइ[1] ।
गाँव गाँव बहु खरिक जु छये[2]❀जहाँ तहाँ दूत दौरि कैं गये॥२८
रावलि पति के कहत फिरत भृत[3]❀भैया कीजौ गाइ अलंकृत[4] ।
सुनि सुनि सब मन भरी उमंग❀घसियन लागै नाना रंग ॥२९॥
ग्वाल शिंगारन गाइनु लगे❀झूमरि[5] गंडा गर जगमगे ।
बछियाँ चीतीं सुन्दर[6] गात❀पुर मंगल समूह दरसात ॥३०॥
मणि पट्टी सु बछरुवनि गरें❀चन्दा मोर सीस पर धरें ।
भवँन भवँन महकत पकवांन[7]❀ग्वाल करैं सब हीरौ[8] गांन॥३१
पुर वृषभाँन अलंकृत भारी❀कुशल घोष आइ जु दिवारी ।
अजिर आइ कैं हटरी धरी❀श्री राधा लखि आनन्द भरी३२
कहन लगी यौं कीरति मैया❀हटरी पूजैगो तो भैया ।
बासर[9] गयो भयो रजनी[10]मुख❀सब हिंनु कें उर बढ्यौ परम सुख ॥
नगर बगर बहु दीपक बरे❀सजि सजि पंकति जहां तहां धरे।
सात खननि[11] लग रचना रची❀कनक[12] चौमुखे पंकति सची ३४
जारिनु[13] बारिनु बोथिनु माहीं❀दीपक रचना की मित नाहीं ।
मूरति धरें दिवारीं जांनौ❀कुँवरि दरस हित आई मानौ ॥
गिरि कन्दरा सरोवरि कें तट❀दरसत दीपक सौभा संघट ।
पुर को उपमा नहि सम तूल❀मानौ फूल्यौ सोरन फूल ॥३६॥
अस रचना जु घोष सब पुर २❀देखि देखि फूलत सब उर उर।
दीपक रचना सब पुर भली❀मुहि[14] दिखाइ दै कहति जु लली
मचलि परी मन अरबी बढी❀तब लौं माइ सत[15] खनें चढी।

---

[1]—गाओं को शिंगार करावों [2]—गौशाला फैली हुई थीं, [3]—नौकर चाकर, [4]—सजाओ, [5]—घंटियां तथा तावाज, [6]—चित्रित करी सुन्दर २ अंगों अंगों में, [7]—दीपमाला के सम्बन्ध की मिठाई, [8]—दीपमाला पर गोपों का गीत, [9]—दिन, [10]—सन्ध्या, सायंकाल, [11]—क्रम से सात कतारैं दीपकों को लगा कर जलाईं, [12]—सब सोने के चौमुखे दीपक थे, [13]—जालों में खिड़कियों में गलियों में, [14]—श्री राधा जी मैया से कहती हैं मुझे दीपमाला की शोभा चलकर दिखा, [15]—सात पुर का राजमहल था ।

गिरि की सिखर जु महल उतंग❀कनक जटित मणि नाँनाँ रंग ३८
कहै गाँवनि कें नाम जु लै कें❀बेटी देखि दृष्टि उत दै कें।
वे गिरि ऊपर दीपक बरें❀जाइ गगन के तिमिरहिं हरें॥३९
वह कहिये जु नन्द रजधाँनी❀जिनकें नाम यशोमति राँनी।
वे री! टौरें[1] ऊचें ग्रांम❀ये संकेत परम अभिरांम ॥४०॥
वे दीपक जु[2] पिसायें दरसैं❀आँज[3] नौख अति सोभा सरसैं।
लगति खिदिर[4] बन जोति सवाई❀वे दीपक सोभित उमराई[5] ४१
ये कमई करहला[6] मँझार❀वे दीपक दरसैं जु सहार[7]।
मरने[8] अरु सिंवारि जग मगैं❀नीम ग्रांम पुनि नीके लगैं ॥४२
गिरि गोवर्धन दीपक लसैं❀मानौ भाग अवनि कें हँसैं।
वे दीपक मो तात सु धाम❀मुखराई जु नगर कौ नाम ॥४३
सीही पर सौं पाडर[9] दमकैं❀ये दीपक कुंजेरा चमकैं।
ये दीपक जु हाथिये[10] ग्रांम❀वे जानू मैंरौली नाँम ॥४४॥
रांकौली नारहैं जु सचे❀वे दीपक इँदरौलीं रचे।
ये चिकसौंली वे जु डभारें❀वे दीपक जु बरे कनवारें ॥४५॥
वे दीपक जु काम बन जहाँ❀सुमुख गोप रजधानी[11] तहाँ।
ये जु सुनहरा वे बजहेरें❀ये जु मान गढ़ दरसतु नेरें॥४६
ये दीपक जु अकाते माहिं❀वे ढिलावठी में दरसाहिं।
ये दीपक ऊँधां के बास❀वे महरानें लखि जु प्रकास ॥४७
मंगल महा घोष के माँझ❀कनक फूल[12] फूली मनो साँझ।
अब तू देखि तात कौ ग्राम❀दीपक रचना सब हीं धाँम ॥४८

---

[1]—वे दीपक जो चमक कर पता दे रहे हैं, [2]—पिसाये गांव, [3]—अजनौख गांव है, [4]—खिदिर बन का नाम, [5]—उमराइ गांव का नाम, [6]—कमई करहला गांव [7]—सहार गांव [8]—गांव का नाम [9]—पाटल वृक्ष का नाम, [10]—सब गांवन के नाम बता कर श्री कीरति मैया लली को दीपमाला दिखा रही हैं, [11]—कामबन सुमुख गोप के राज की राजधानी थी, [12]—स्वर्ण का फूल पृथ्वी पर सन्ध्या बन कर फूल रहा हो।

गो घृत पूरति निर्मल जोति❀रँगी किवरियाँ जगमग होति।
सब गाँवनि के नामनि सुनि २❀श्री राधा आनन्दित पुनि २ ४९
मैया की ठोडी गहि लई❀करज[1] चटकि जननी बलि गई।
ऐसें कुँवरि प्रसन्न जु करिकैं❀लै आई पुनि बाँह पकरि कैं ५०
गोपी मंगल गावति आई❀आदर दै जु भवँन बैठाई।
गोप संग लिये रावलि राइ❀राज सिंहासन बैठे आइ ॥५१॥
जुरि मिलि विप्र जु आये लार❀भई[2] पुजावन हटरी बार।
आये बनिक[3] जुहारी[4] करैं❀कन्द[5] खिलौंना भेंट जु धरैं ५२
पौंनि छत्तीस[6] सबै मिलि आवैं❀जो जो उचित सु भेंट चढावैं।
सब कौं पुनि दोजत हैं पाँन❀यथा योग्य सबकौं सनमाँन ५३
श्रीदाँमा राधा लै गोद❀हटरी पूजत भरि मन मोद।
बैठे विप्र वेद धुनि करैं❀आसिष वचन सबै उच्चरैं ॥५४
दछिना बाँटत वल्लब[7] राज❀सनमानैं सब विप्र समाज।
खील बतासें हटरीं भरैं❀मिश्री कन्द खिलौना धरैं ॥५५
कोरति बांटति है पकवाँन❀वधुनि[8] असीस सुनति हे काँन।
खील बतासिनु ढेर कराइ❀बैठी कुँवरि अँजिर में आइ५६
सखियनि कौ ओली लैं भरैं❀नाम सम्भार सबनि की करैं।
एक एक कौ बोलि जु लेंहिं❀गुझिया[9] कन्द खिलौना देंहिं५७
आजु दिवारी मंगल राति[10]❀सोदर[11] तात मल्हावति जाति।
दैंहि लैंहि बाइनौं जु घर घर❀करैं शिंगार फिरैं नारी नर५८
भाँन भवँन उत्साह जु महा❀सोभा भीर बरनिये कहा।

---

[1]—अँगुरी से चुटकी बजा कर बलैयां लीं. [2]—दीपमाला की हटरी पूजने की बारी आई. [3]—बनिये, [4]—मिलते हैं गले लग कर, [5]—खाँड के खिलौने, [6]—भानु राजा की प्रजा का भाग, [7]—प्रिय प्रजा पालक राजा, [8]—सुहागिनि, [9]—एक प्रकार की मिठाई [10]—रात्री [11]—भाई तथा पिता, [12]—दीपमाला की मिठाई लेना देना।

गो घत पूरित दीपक करैं[1]❀जैसें सब[2] रजनीं भरि बरैं ॥५९
गोप कुँवर मिलि हीरों गावैं❀श्रीदांमा को सुविधि रिझावैं।
अपने अपने टोलनि राजैं❀बेंनु विषान बाँसुरि बाजैं ॥६०॥
श्री वृषभांन बोलि सब लये❀ओलिनु भरि पकवाँन जु दये।
सिमिट्यौ मही भांन परिवार❀भोजन करत सबै मिलि लार ॥
नाना विधि पकवांन जु परसे❀भोजन करत स्वाद सुख सरसे।
बाबा ढिग राधा श्रीदांम❀बूझत पकवांननि कौ नाम॥६२
नाम लेत मुख देत जु कौर❀आनन्दित गोपनि सिर मौर।
पूरन भये आचमन लेत❀रावलि राइ पांन पुनि देत ॥६३
नौ हूं बन्धु[3] जु पुरजन संग❀अतर फुलेल सु चरचतु अंग।
बडडे गुनीं करत हैं गाँन❀रावलि धनी सुनत दें काँन॥६४

दोहा—सब ग्वालनि कौं संग लै, खरिक गये श्री दांम।
थापे पीठि[4] जु माड हीं, लेत गऊनि के नाम ॥६५॥
कांन जगावैं गउनि के, चौंकति हैं बल मांन।
राज भवँन आये बहुरि, करत जु हीरो गांन ॥६६॥

॥ चौपाई ॥

श्री राधा कौं जब सुधि आई❀अपनी मदनी गाइ मँगाइ।
नाना धातु चित्र तन किये❀थापे माडि पीठि कर दिये ॥६७
सुन्दर घंटा गर पहिरायौ❀जो अमोल मणि नगिन जड़ायौ
सींग सुनहरी जटे जु लाल❀मणि पट्टी दमकति है भाल ६८
झबियां[5] कनक भरी मखतूल❀मनहुँ स्याम कमलनि के फूल।
मदनी गरें जु लै पहिराइ❀धौर वरन[6] तन अति छबि पाइ।

---

[1]—हाथों में, [2]—इतना गौ का घी दीपकों में है कि सारी रात वे जला करें बुझ न जावें, [3]—नौ भाई, [4]—पीठ पर हाथ फेर कर, [5]—फुंदे छोटे छोटे, [6]—सफेद रंग।

झूल परी सकलाती पीठ❀पूंछ चरन रँगे रँग मजीठ।
रूपै मढीं खुरी अति चमकति❀पन्ननि की हमेल उर दमकति७०
थार भर्यौ पकवांन जिमायौ❀मुख पुचकारि पीठ कर लायौ।
जल भरी कुंडी जु आगें धरी❀मदनी को परिकर्मा करी ॥७१॥
कीरति मैया आगें आउ❀मदनी कौं तू हूं सिरनाउ।
लली कह्यौ त्यौं कीरति कियौ❀मदनी देखि सिरायौ हियौ ॥७२
कीरति बैठी बधुनि समाज❀मंगल राति जगावन काज।
राधा कौं पय पांन कराइ❀पुनि दीनीं सज्यां पौंढाइ ॥७३॥
इष्ट मिष्ट[1] जस बधुनि गँवावैं❀लली लला की कुशल मनावैं।
बीती निसा भोर ह्वै गयौ❀सुख जु दिवारी इहिं विधि लयौ॥
परिवा कुल कृत सब बिधि कियौ❀गोधन पूजि दियौ सुख लियौ
भैया द्यौज होहिगी प्रात❀यह सुनि राधा फूली गात॥७५॥
दोहा—भैया द्यौज जु प्रात है, सुनि लै कीरति माइ।
बीर जिमांऊँ प्रीति सौं, नाना पाक बनाइ ॥७६॥
नौं हूं भाननि के कुँवर, सब श्री दाँम समान।
तिनकौं सुविधि जिमाइ हौं, प्रातहि रचि पकवाँन॥७७॥
मंगल निधि त्यौहार बड, कहति दिवारी एह।
राधा हरि दरसन करन, ब्रज आइ जु सदेह ॥७८॥
श्री हरिवंश प्रसाद यह, कियौ संक्षेप बखांन।
ऐसें हौ ब्रज राज घर, उत्सव दीपक दान ॥७९॥
वृन्दावन हित रूप बलि, दुहुँ घर अस कौतूह।
गौर स्याम सुख लाड हित, दीपक रचै समूह ॥८०॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा दीपक दान उत्साह वरनन लीला चौदहवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

१--अपने इष्ट देव का मधुर यश।

॥ अथ पन्द्रहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—ज्यौं उत्सव रविजा[1] कियौ, दुतिया बीर जिमाइ ।
त्यौं जु करति वृषभांनु जा, मंगल महा मनाइ ॥१॥
जनक मुदित जननी मुदित, मुदित सकल परिवार ।
उत्सव भैया द्यौज, श्री राधा कियौ विस्तार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

रजनी बीतीं भोर जु भयौ❀अति लडि सब कौं न्यौंतो दयौ ।
राज सुता यह उत्सव मान्यौं❀घर घर सब हीं पुर में जान्यौं ३
कुँवरि पास ललितादिक आई❀न्यौंतो दै दै सब हि बुलाई ।
श्रीराधा की साथिनि प्यारी❀फूली फिरैं जु गोप दुलारी ॥४॥
जूथ २ मिलि निकसीं पुर ते❀अति अनुराग द्रवै जिन उर ते ।
सोभित करति भाँन पुर अँवनी❀एक तें एक कुँवरि अति कँवनी[2]
किधौं एक ही सांचे ढारीं❀किधौं एक ही कलम सँवारीं ।
किधौं विधाता इनकौं न्यारौ❀यह[3] विधि तरसै दरस विचारौ ६
तिन मधि[4] श्री राधा शिरमौर[5]❀जाकी सम इह शृिष्टि न और ।
कौतिक मुदिता सुख संजुता❀गावति निकसीं जस[6] रवि सुता
इहि विधि पुहुप[7] वाटिका गईं❀पुनि भांनोखरि आवति भईं ।
कुशम चढ़ाये जल शिर नाइ❀भईं प्रसन्न भांन सर न्हाइ ॥८॥
नौतन पाटम्बर तन सचे❀कुशमनि के आभूषन रचे ।
कनक बेलि सी फूलीं सबै❀तात भवँन कौं गवनी तबै ॥९
कहति कुँवरि सुनि कीरति माइ❀नाना विधि के पाक बनाइ ।

१—यमुना जी ने जैसे यमराज से यम दूज मनाई, २—कमनीय सुन्दर, ३—इस लोक का ब्रह्मा इन सब की रचना से विस्मय में पड़ा कि यह मैं ने तो बनाई नहीं वह कौन अन्य ब्रह्मा होगा, ४—मध्य में, ५—सरदारनी ६—यमुना जी की महिमा, ७—पुष्पों की बगीची में ।

पाक रचन लागे बहु जनैं❀बेटी तो पै परहिं न गनैं ॥१०
अधिक उमाहैं भरी जु डोलै❀काहैं मो सौं मुख हूं न बोलै ।
प्रात कलेऊ तू करि लेती❀मोहि काम तब करन जु देती ११
आजु न कियौ कलेऊ लली❀रूठो[1] कै मानी रंग रली ।
हँसि[2] हँसि जाइ कहै नहिं बात❀तब लगि मन्दिर आए तात ॥
गह मह होति भवँन में महा❀कहि राधा आजु उत्सव कहा ।
रचियत है नाना विधि पाक❀आज कहाँ कौ जै है छाक ॥१३
हँसि पुचकारि गोद भरि लई❀राधा नें ऐसें कहि दई ।
मैं न्योंत्यौ श्रीदांमा भैया❀पाक रचति है मेरी मैया ॥१४॥
पहिल जिमाइ बीर को दै हौं❀ता पाछें जु ग्रास हौं लै हौं ।
धर्मराज रविजा जु कहानी❀सो मैं सुनी माइ मुख बाँनी १५
भैया द्योज कहत हैं यासौं❀मो मन प्रीति बढ़ी है तासौं ।
बीर[3] भेंट तेरी कहा करि है❀कहा पाइ तू आनन्द भरि है १६
यह मांगि हौं हौं सुख पाइ❀मेरी गुडियां देइ न बगाइ[4] ।
सुनि राधा की भोरी बात❀मैया हँसी हँसे पुनि तात १७
श्रीदांमा सौं कह्यौ बुलाइ❀बेटा बेगैं आवो न्हाइ[5] ।
यह बालक जु अधिक हठ परी❀नाहिंन आजु कलेऊ करी ॥१८॥
उत्सव मान्यौ भैया दूज❀अब कछू गहरु करै जनि तूज[6] ।
तोहि जिमाइ करैगी भोजन❀कुँवरि आजु लीयौ है यह पन[7]॥
अरी बहिनि हौं जेंऊँ पाछें❀तूं करि लेहु कलेऊ आछे ।
भैया आजु मानि हौं हौं न❀तू भोजन करि है जौ लौं न २०

१—मैया पूछ रहा है कलेवा न करने का कारण रूठना है या भैया को तिलक करने का उत्साह है उसी में तू मगन है, २—राधा जी हँसती जाती हैं मैया की भ्रम पूर्ण दशा से, ३—पिता वृषभानु जी पूछ रहे हैं भाई से क्या भेंट लेगी, ४—छुपा न दे या इधर उधर फैंक न दें, ५—जल्दी स्नान करे कि राधा जी बहुत प्रतीक्षा में भूखी न रहे, ६—तू तो देरी मत करे, ७—प्रतिज्ञा ।

एकत[1] भये कुँवर नौ भाँन❀गवनें भांन सरोवर न्हाँन।
राधा रविजा सुनी कहाँनी❀बीर जिमाँवन अरबी ठाँनी २१
बेगि न्हाइ कै चलौ जु भैया❀करुना भींजत बाबा मैया।
आये न्हाइ सबै नर नारी❀परबी[2] परी भाँन सर भारी॥२२
वह जु भाँन जा[3] या सर भाँन❀सब हिनु कीनौ प्रात स्नाँन।
द्विजन दान दै पुनि घर आये❀रचि रचि तिलक शिंगार बनाए
भोजन कौं सब कुँवर बुलाये❀आदर करि जु भवँन बैठाये।
श्रीदाँमा कहै सुन री माइ❀राधा[4] हाथ मोहि परसाइ॥२४
लघु भाजन भरि लै लै आवैं❀आनन्दित ह्वै बीर जिमावैं।
रँवकि चलै भाजन गिरि परै❀तब हीं अति लडि कौतिक करै
आउ आउ री बेगी माइ❀मुहि यह भाजन देहु उठाइ।
हँसि २ कहै श्रीदाँमा बीर❀बहिनि[5] पियौ मदनी को खीर
बात भेद की बूझौ मोहि❀तो में बल जु कहाँ ते होहि।
मैया बहुत[6] निहोरौ कियौ❀बड़ी गाइ[7] कौ दूध न पियौ॥
भैया अब चिराइ जिनि मोहि❀मैं जु आजु न्यौंत्यौ है तोहि।
अब[8] हौं बड़ी गाय इक लैं हौं❀ताही को दधि माखन खैं हौं २८
मदनी सौं जु प्रीति अति मेरी❀ताहि राखि हौं अपनें नेरी।
भैया बहिनि लाड की बात❀सुनि सुनि जननी जनक सिहात
कीरति कहति सुनौ अति लडी❀मो उर करुना उपजी बड़ी।
जेंवत बीर जेंइ तू लली❀हौं परसौं सब कौं विधि भली३०

---

[1]—नौ भया भानु के सब पुत्र राज कुँवर इकठे भान सरोवर स्नान करने गये, [2]—परब या त्योहार का मेला लगा, [3]—सूर्य पुत्री यमुना, [4]—बहिन श्री राधा हो मुझे भोजन परोसे मैं तब खाऊँगा, [5]—अर्थात ताना दिया कि मदनी गा का खीर व्यर्थ पिया निर्बल रही जो मैया को बुला रही है, [6]—खुशामद या मिन्नत की, [7]—भैया कहता है माता ने,—बहुत समझाया बड़ी गाय का दूध नहीं पिया सो तू निर्बल रही यही रहस्य है, [8]—श्री राधा जी कह रही हैं।

तिलक वीर कें माथें धरौं❀मैया तब हौं भोजन करौं।
मुहि बहकावति भोरी जांनि❀तेरी बात लेंहुं क्यौं मांनि ॥३१
सब जेंवैं सब हँसि हँसि परैं❀सुनि सुनि बात मोद मन भरैं।
परसति कीरति कर वर थार❀राधा कुँवरि फिरत है वार ३२
भोजन करि सब पूरन भये❀जल आचमन सबनि पुनि लये।
कुँवरि देत बीरीं रचि पाँन❀भैयनि कौं कर कर सनमाँन ॥३३
बैठे कुँवर पालथीं मारि❀मनु फूली सोभा फुलवारि।
रोरो अच्छित थारनु धरैं❀तिलक सबनि कें माथें करैं ॥
मृदु पद चलत पैंजनीं बाजैं❀रोरी रंजित[१] कर जु विराजैं।
अरी राधा तू भूलि जु गई❀बाँटत मोहि न बीरी दई ॥३५
दौरि दौरि कैं पुनि लैं आवैं❀श्रीदाँमा के हाथ गहावैं।
भैया हौं भूली नहिं तोहि❀बार बार दौरावैं मोहि ॥३६॥
तात बोलि कें अंक जु लई❀अधिक प्रसन्न अति लडी भई।
रविजा धर्म कहाई कथा❀वेद व्यास वरनी है जथा ॥३७
उत्सव लोक प्रचुर यह कीयौ❀भैया बहिनि सिरायौ हीयौ।
ऐसे गावन लागी भाँम❀रविजा कौ जस अति अभिराँम
भेंटे धरत हँसति लखि लली❀प्रफुलित मुख वारिज मनु कली
लेति वारनें देति असीश❀भैया सब हीं नवावत सीश ॥३८
छोटे करनि हलावति जाति❀देखि देखि कैं माइ सिहाति।
अरी बहिन अब तू कहि मोहि❀प्यारी अधिक वस्तु कहा तोहि४०
मोकौं प्यारी मदनीं गाइ❀ता[२] सिर कौं झूमरि जु बनाइ।
अति सुन्दर मखतूल मँगाइ❀मोतिनु के झूमकि जु लगाइ ४१
मदनीं के सिर सोभा पावैं❀यह खिलौंना मोकौं भावैं।

---

[१]—रोरी के लाल रंग से हाथ रंगीन शोभा पारहे हैं. [२]—गाय के सिर का एक भूषण झूमरी होता है.

सोदर[1] कह्यौ बनाइ जु दैन❀अस सुख वरण्यौ कहत बनैं न[2] ४२
भोजन करति कुँवरि गौरंग❀ललितादिक बैठी सब संग।
ढिंग लैं बैठे रावलि धनीं❀बूझत कहि मेरी कंचन तनी ४३
तैं मन बडौ जु धीरज धर्यौ❀अब लगि नाहिंन भोजन कर्यौ
तात बन्धु मोहि अति हीं प्यारौ❀बहिनि[3] बीर यह उत्सव न्यारौ४४
हौं जु[4] लाड सोदर ते चहौं❀नित गावति जु मल्हावति रहौं
औरनि के सोदर जु अनेक❀मेरे सोदर लायक एक ॥४५॥

दोहा—समझि[5] बडी पुनि बैस[6] लघु, नृप मन रहे विचार।
जैसें काहू न लखि परै, सागर[7] पैली पार ॥४६॥
भोरी यह भोरी सखी, जिन संग सदा जु मेल।
ऐसी समुझ कहाँ लही, खेलति भारे खेल ॥४७॥
कोऊ लौकिक कोऊ अलौकिक, कहति वचन तुतराइ।
हीयौ बिलोयौ प्रेम नें, दहलैं रावलि राइ ॥४८॥
सनय[8] सनय अचमन लियौ, कहि न सकत यह बात।
लै बीरी घूँमत[9] चले, बचन बिचारत जात ॥४९॥
जेंयौ पुर परिवार सब, अचमन बीरी लेत।
भान वंश की नन्दनिनु, भेटैं वांछित देत ॥५०॥
कीरति जु भोजन करति, परसति कुँवरि अनूप।
अचिरज में छकि रहति हैं, लखि गौरंग स्वरूप ॥५१॥
अति लडि खेलन यह जु नित, भांन भवँन यौं होत।
वृन्दाबन हित रूप कौ, नित नव[10] विपुल उदोत॥५२॥

---

[1]—श्रीदामा भाई [2]—बरनन नहीं किया जा सकता है, [3]—भाई बहिन के स्नेह सूचना का यह अनोखा उत्सव एक ही तो है. [4]—मैं भाई से अपने प्रति लाड करावने की इच्छा रखती हूँ तो भाई से स्वयं भी वैसा करती हूँ यह भाव है, [5]—बुद्धि, [6]—आयु, [7]—सागर का परला पार. [8]—धीरे धीरे आचमन किया भोजन समाप्त करके. [9]—प्रेम विभोर उन्मत वत विचलित हैं, [10]—नित्य नवीन महा वृद्धि पर रहता है।

उत्सव भैया द्यौज यह, कियौ संक्षेप प्रशंस ।
दरसि परयौ अनियास[१] उर, कृपा जु सी हरिवंश ॥५३॥

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्रीराधा भैया द्यौज उत्साह लीला बरनन पन्द्रहवी लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ सौलहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—सब लोकन को मुकट मणि, बरसानौं कमनीय ।
राधा पद अँकित भई, जहाँ ललित अवनीय ॥१॥
बाल चरित औरौ मधुर, बरनौं हित परशाद ।
अनुरागिनु कें उर बढै, सुनत अधिक अहलाद ॥२॥
कुल ढांढिन ने भोर हीं, दीनी आइ असीश ।
सुख संपति दिन दिन बढौ, कीरति रावलि ईश ॥३॥
चिरजीवौ राधा लली, अरु सोदर श्रीदाँम ।
मंगल देखौं नित नयौ, हौं जु तुम्हारें धाम ॥४॥
दछिना भैया दूज की, लै गई गोद भराइ ।
श्री राधा बूझन लगी, ठोडी गहि कैं माइ ॥५॥
बैठी जननी गोद में, कुँवरि कहति लडकाइ ।
मैया रावलि पुर कहां, ताकौं मोहि बताइ ॥६॥
रावलि पति रांनी कहैं, मैया तुहि सब कोइ ।
रावलि कैसो धाम है, मुहि दिखाइ दै सोइ ॥७॥
बेटी अरबीली परयौ, याही तैं तौ नाम ।
बात अनोखी बूझि हीं, करन देहि नहिं काम ॥८॥
मांगि खिलौंना और कछु, पट भूषन जु अनूप ।
रावलि देहि दिखाइ तो, जनक जु रावलि भूप ॥९॥

१—बिना श्रम सहज में, २—कृपा या प्रेरणा ।

॥ चौपाई ॥

जाइ[1] पिता को कर गहि लियौ❀मन में रोष अधिक बढ़ि गयौ।
दधि कौ भाजन दियौ लुढाइ❀नैंननि मींडैं पटकैं पाइ ॥१०॥
मोकौं माइ रुठायौ तात❀मांनीं नाहिं जु मेरी बात।
मैं रावलि देखनि कौ कह्यौ❀उनि न सुनीं मैं ढोरी दही ॥११
यह सुनि बहुत हँसे वृषभांन❀लई मनाइ कह्यौ लै जांन।
लली दही तैं ढोरी हाथ[2]❀हौं न चलौंगी तेरे साथ ॥१२॥
यह सुनि कै बाहिर कौं भगी❀रानी तब उठी पाछें लगी।
बजति पैंजनि रुनझुन पाइ❀सुनि सुनि मैया अधिक सिहाइ ॥
पौरीं जाइ अँक भरि लई❀बदन चूँबि पुनि लाडति भई।
मैया हौं मानौंगी तब हीं❀रावलि चलन कहै तू जब हीं१४
तब हँसि बोले श्री वृषभाँन❀राधा एक बात सुनि काँन।
दूजौ माठ ढोरि पुनि दह्यौ[3]❀बेटी मानि मो जु यह कह्यौ १५
दौरि आइ लगि मेरे अंक[4]❀बातें करि तू निपट निसंक।
कुँवरि सुनी बाबा की बांनी❀ताकति चली जु दही मथांनी१६
दोहा—दधि मथनी पुनि ढोरि कै, दौरी चरन उठाइ।
बाल चरित लखि कुँवरि कौ, प्रमुदित रावलि राइ॥१७
तारी दै अति लडि हँसी, अजिर भई दधि पंक।
मैया कौं जु चिरावही, बैठी बाबा अंक ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

मैया कहति सुनौं री लली❀ये बातें तू सीखी भली।

१—मैया ने मानो श्री जी को खिजा दिया सो पिता के पास पहुँची और शिकायत करने लगी, २—कीरति मैया श्री जी से कह रही हैं, ३—श्री वृषभान जी ने कौतुक बुद्धि को कहा कि और दही का मटका उलट दे ४—श्रीजी ने मानो कहा कि मैया का भय है तो कहा कि तू आकर मेरी गोद में बैठ जाइयो फिर मैया क्या करेगी।

काम बिगारि चली जु पलाइ❀मोहि चिरावत है बलु पाइ॥१९
ह्यां ते गुडिया लेहु उठाइ❀अब तू राखि तात ढिंग जाइ।
मेरो बेटा है श्री दांम❀सो कबहूं न बिगारै कांम ॥२०
अधिक लाडिली तात जु करी❀मोते रंचक नांहिंन डरी।
कबहूं बातें करै सयांनी❀कबहूं होय तू निपट अयांनी २१
दिन दिन गहति हठीली बांनि❀मेरी तनक न राखति कांनि।
मैया तू रूखी जु निराट❀रावलि की न दिखावै बाट ॥
तोहि चैन तब लगि नहिं दैहौं❀जब लगि हों रावलि नहि जैहौं
सुनि २ कै अति लडि की बांनी❀दै मुख अंचल मुसकीं रांनी २३
सिखै सिखै वृषभांन चिरावैं❀मीठी बातें सुनि सचु पावैं।
मैया[1] तो बातनि न पत्यैं हौं❀तेरे संग ननसार न जै हौं॥२४॥
अब तू क्यों मोसों अनख्याइ[2]❀रावलि देहिं बाबा जु दिखाइ।
बचन अमीं से पीवति जाइ❀रूखी सी मैया बतराइ ॥२५॥
लली ढीठ तू भई जु दीखी❀घर के काम बिगारन सीखी।
जांहिं[3] अथाईं रावलि राइ❀तब तू बैठे को ढिग आइ॥२६
दूध कटोरा को भरि प्यावै❀नई पहेरी कौन सुनावै।
बेटी सिख मानै नहिं मेरी❀परि गई रूठनि बांन जु तेरी॥

दोहा—तात गोद बैठी लली, मो तें नाहिं डराइ।
रूखी बातें करति है, सिखवत रावलि राइ ॥२८॥
मो सों बैठी रूठि कै, रावलि दरश उमाह।
लाडी कौन गवाइ हैं, नियरौ आयौ ब्याह ॥२९॥

---

[1]—अब मैया तेरे वचनों का मुझे विश्वास नहीं रहा, [2]—नाराज है मैया ने कहा, [3]—जब पिता अपने राज दरबार में जा बैठेगे तब तू किस के पास जाकर बैठेगी मैया पूछ रही हैं।

॥ चौपाई ॥

जब मैंया अस बात जु कही❀बाबा कौ मुख देखि जु रही।
बाबा कही बात तब हरैं[1]❀बेटी अब जु जाइ लग गरैं॥
जौ रच्या तो करै न माइ❀गुडिया लै है बीर चुगाइ।
सुनि यह सीख तात की भली❀मैया सन्मुख दौरी चली ॥३१॥
नाहिं नाँहि कीरत जू करैं❀लली चिपट गई गाढी गरैं।
रानी लींनी प्रेम दबाइ❀लाड करत नहिं मन जु अघाइ
दोहा–तात मात मन क्रम वचन, कीनौं चलन विचार।
साजन लागे रथ सकट, अनुचर ताही बार ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

आनन्दे सब ही मन मांहि❀रावलि देखैं रविजा न्हांहि।
पुर के उमहे सब नर नारि❀चलैं बडौ यह लोभ विचारि ३४
कुटुम्ब सहित मिलि नौं हूं भांन❀रावलि सन्मुख कियौ पयांन।
बड़े बडे गाडा जुति चलै❀नर बाहनि बहिली रथ भले ३५
श्री राधा कीरति कें पास❀बैठी मन अति भरी हुलास।
रावलि पति जब रथ पर चढे❀विप्रनि वचन आसिका पढे ३६
सबहिं कुँवर चढि चले तुरंगनि❀सुविधि नचावत भरि रस रँगनि
पुरते निकस गोइरैं[2] आये❀सबहि सम्हारि २[3] बुलाये ॥३७॥
करहा[4] सकट चले लदि भार❀चारचौ वरन लिये नृप लार।
मंगल वचन द्विजन उच्चरे❀भांन चरन रावलि दिशि धरे३८
माला[5] मृगनि दाहिनीं आई❀किलकि कुँवरि मैया हि बताई
जननी इन कौ नाम जु लेहु❀नीके[6] मुहिं समुझाइ सु देहु ॥३९

१—मन्द शब्दों में, २—नगर के बाहिर का घेरा या कोट, ३—सब को संभाल कि कोई रह तो नहीं गया, ४—ऊटों के छकड़े, ५—हिरणों का झुंड दाई ओर शुभ शकुन हुआ, ६—भली भांति।

बेटी इन कौ नाम जु हरना❀राति दिना बन मांहि विचरना
जहां तहां दरसै सुन्दर अवँनीं❀ब्रज मण्डल नव कुंजै कँमनीं॥
कुँवरि संग आठौं जु सहेली❀तातैं मल्हावैं गावैं भेली[1] ।
फूले तरु वल्ली बहु भांति❀तिन्हैं लडैती देखति जाति ४१
वारिज[2] फूले सर गँभीर❀तरुवर तुंग[3] जु तिन कें तीर ।
गुंजै अलि खग चहचर करैं❀सब काहू के मन कौं हरैं ॥४२॥
काँनन सोभा औरैं और[4]❀बिरमि रहैं सब हीं सब ठौर ।
रविजा दरस दूरि तें भयौ❀सब मन बाढ्यौ आनन्द नयौ ॥
तीर आइ कैं बन्दन कियौ❀न्हाइ अमीं सम जल पुनि पियौ
फूल चढ़ावैं दछिना देहिं❀विप्रनि की जु आसिका लेंहिं ४४
श्रीकीरति जू कुँवरि न्हवाई❀पुनि बन्दन करि आपुनु न्हाई।
भेंट समर्पी नाँनाँ रीति❀रविजा जस गावति करि प्रीति४५
जै जमुना जग पाँवन करनी❀मंगल रूपी मुनि जन बरनीं ।
महा तेज धर रवि नंदनी❀अनुजा धर्म जगत बन्दनी॥४६
अभय दांन प्रनितनि कौं दैंन❀वारि दरस होइ हिय दृग चैंन।
तो जल कन परसै जिहि गात❀तातैं डरैं दूत तो भ्रात[5] ॥४७॥
श्री वृषभाँन बन्धु जुत न्हाइ❀दई सबच्छ विप्रनि कौं गाइ ।
कुल[6]की मानि रवि सुता जांनि❀यातैं पूजी अति हित मानि ४८
पकवाननि की गाँठ जु खोलि❀देहिं लेहिं सब कौं सब बोलि।
भोजन करि आनंदित भये❀पुलिन मनोहर देखन गये ॥४९
हंस हंसनी रविजा कूल❀देखि कुँवरि मन बाढी फूल ।
कहि मैया तू इन कौ नाम❀ये उज्जल[7] जु परम अभिराम॥

१—मिलकर एक स्वर से, २—कमल, ३—ऊँचे ऊँचे, ४—जहां तहां भी शोभा देखती वहीं वहीं मन आकर्षित हो जाता, ५—भ्राता यमराज के दूत, ६—सूर्य वंश की यमुना तथा वृषभानु जी भी ७—सफेद स्वच्छ रंग के।

इनकी मुनि जन करत प्रसंश❀बेटी ये जु कहावत हंश ।
मैया इक मगाइ इन छौंना❀मोकौं प्यारौ लगै खिलौना[1] ॥
जेवैं कहा कहा इन रीति❀इन पंछिनु में कैसी प्रीति ।
बेटी यह मोती ही चरैं❀नहीं मिलै तौ लंघन करैं ॥५२
सदा एक ही संग जु रहैं❀पलक बिछोहो नांहिन सहैं ।
आये उलटि जु वाही बाट❀जहां पार उतरन कौं घाट॥५३
नौका बैठि पार सब भये❀महा मुदित मन रावलि गये ।
अपनौ राज भवँन है जहाँ❀रावलि पति प्रवेश कियौ तहाँ ॥
भेटैं लै पुरवासी धाये❀मिलै सबै सादर बैठाये ।
पुर बनिता सब गावति आंई❀कीरति जू मिलि ते बैठाई ॥५५
राधा देखत आनन्द भरीं❀भेंट धरीं न्यौछावर करीं ।
करीं जनम दिन की सी रीति❀वैसीयैं सब मन बाढी प्रीति ॥५६
रावलि मंगल साज्यौ घर घर❀भरे सनेह फिरैं नारी नर ।
वैसोईं करैं दाँन सन्मान❀वैसोई पुर वीथिनु में गाँन ॥५७
वही नछत्र विसाखा आयौ❀अति लडि तन उबट्यौ रु न्हवायौ
बरस गांठ कोसौ[3] शिंगार❀मैया करति भई इहि बार ॥५८
सखिनु सहित अति लडिहिं जिमावैं,धरि २ भेंट सबहिं दुलरावैं ।
सुख में बीत्यौ दिन पुनि राति❀छिन हूं सम जानी नहि जाति५९

दोहा—राधा सब कें जाइ घर, सब हीं मानैं मोद ।
मन बच क्रम जु असीस देहिं, विधि तन[4] करि २ गोद६०
सर्वेश्वरि जनमीं जहां, पुरी अलौकि एह ।
न्याइ[5] बढै यौं जानिये, या रावलि सौं नेह ॥

१—हंस के बच्चे के साथ खेल करना, २—इसी प्रकार जैसे जन्म महोत्सव हो, ३—उसी प्रकार का, ४—पलरा गोद फैलाकर, ५—सब प्रकार उचित है कि रावल गांव से प्रेम हो ।

यह रावलि रँग वरषनीं, जहाँ गड्यौ राधा नार ।
वृन्दाबन हित रूप बलि, तहाँ अस मंगल चार ॥६२॥
संपति श्री हरिवंश की, राधा चरित जितेक ।
वृन्दाबन हित रूप निधि, हौं बरनौं जु कितेक ॥६३॥
रजधानी वृषभाँन की, रावलि रविजा तीर ।
खेलति हरि अहलादनीं, तहाँ सखियनि लिये भीर ॥६४॥

॥ इति श्रीव्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दाबनदासजी कृत श्रीराधा रावलि दरसउत्साह लीला वरनन सोलहवी लहरी की जै जै श्रीहित हरिवंश राधे ॥

॥ अथ सत्रहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—देखन गोकुल महा बन, हठ कीयौ गौरंग ।
भोर चले वृषभान जू, सब परिकर लै संग ॥१॥

॥ चौपाई ॥

आनन्दित सब ही मन भये❀पुनि गोकुल जु महाबन गये ।
नन्द भवन देख्यौ अभिराम❀जहाँ जनम लियौ सुन्दर श्याम॥
कान्ह कुँवर दुरि माटी खाई❀रानी कौं सो ठौर बताई ।
सकटासुर भंज्यौ इहिं धाँम❀दई बचाइ लियौ घनस्याँम ॥३
बकी पापिनीं इहि ठाँ मरी❀काहू देव जु रच्छा करी ।
त्रिनावर्त्त व्यौम ते पर्यौ❀बालक उबर्यौ पापी मर्यौ ॥४
बहुरि राव तिहिं ठौर पधारे❀जहाँ उखारि दोउ तरु डारे ।
ह्याँ नारायण करी सहाइ❀दाँम बन्ध्यौ लियौ बीच बँचाइ ॥
माट फ.रि दियौ दधि ढरकाइ❀बान्ध्यौ दाँम यसोमति माइ ।
बाल केलि करी मोहन जहाँ❀रेती रमन निहारी तहाँ ॥६॥
सब ही ठौर चिन्हार कराइ[१]❀चले आपु घर रावलि राइ ।

---

[१]—पहिचान ।

भई प्रसन्न राधा अति लडी❀जहाँ तहाँ देखी रचनां बडी ॥७
आगें ह्वै सब पुर जन लाये❀भूपति भवँन आपनें आये।
दिन दिन के जु चरित्र अनेक❀कहाँ लगि बरनौं रसना एक॥८
पुरजन गोप सबै मिलि आवैं❀रावलि पति कौं माथौ नावैं।
बैठे सब मिलि सभा बनाइ❀मधुरी प्रभुता कही न जाइ ॥९॥
सुर अभिमान आपनें जरैं❀कैसें इन की सरबर[1] करैं।
राधा रविजा नीर कलोलैं❀सखियनि बाहाँ जोरी डोलैं॥१०
अँजुरि भरि भरि जल सब सींचैं❀कर बर[2] चलैं आंखि पुनि मींचैं
कीरति रानी टेरि बुलावैं❀खेल रच्यौ मन सुनि बहरावैं[3]।
अंग अँगोछति जल तें निकसीं❀पुनि पट भूषन सचि मन विकसीं
कर दृग ढाँपै पाछैं रहि कै❀सब[4] कहैं भटू नाम दै कहि कै१२
धाइ जाइ कैं कर गहि लाई❀माइ लाड जुत सुहथ जिमाइ।
सुखित किये सब रावलि बासी❀गिरा वदन विधु श्रवत सुधा सी ॥
राधा कहति सुनौ री सखी❀अपनी जनम भूमि अब लखी
धनि धनि तात मात सुख दैंन❀मुहि यह भूमि दिखाई नैंन॥१४
मेरो नार गड्यौ इहि धाम❀न्याइ लगै यह प्यारौ ग्राँम।
कीरति सुनि ओट तें बात❀प्रेम पुलकि भइ सब हीं गात१५
अरी बैस लघु मेरी बेटी❀बात फुरैं याहि प्रेम लपेटी।
कीरति कथा नृपति सौं कही❀उनि हूं कें दृग वारि जु बही १६
अवधि भुराई अति लडि मांहिं❀चतुराई[5] की हूं मिति नांहिं।
नारद मुनि यौं करी प्रसंश❀अहलादिनि प्रगटी तुम वंश १७
ऐसेंई लच्छन जानैं परैं❀जनमत निधि सिधि भवँन जु भरैं

१—बराबरी, २—नेत्रों में पानी पड़ता तो हाथों से बन्द करतीं, ३—अन सुनी करती है, ४—एकाएक किसी सखी की बेखबरी में आंखें पीछे से आकर बन्द कर दीं फिर बन्द करने वाली का नाम पूछती हैं, ५—भोले पन की तथा चतुराई दोनों की असीम निधि श्री राधा जी हैं।

यौं कहि कैं पुनि चुप ह्वै गये❀मन करि दई मनावत भये ।।१८
रॉनी कोऊ दांत न धरौ[1]❀देखी कौं अनदेखी करौ ।
शिव विधि कैं गिरि कौ परशाद❀यामें अधिक न करौ विवाद १६
कुँवरि ललितपुर वीथिनु डोलैं❀सखिनु मंडली मध्य कलोलैं ।
लाड तोतली बातें कहैं❀सबकौ उर सुख भींज्यौ रहैं ।।२०
बासर सब खेलत ही जाइ❀रजनीं खेलैं मन्दिर आइ ।
लोक[2] अलौकिक खेल अनंत❀सब हि रस मई परैं न गंत ।।२१
महा भाग कीरति सुख लह्यौ❀सहस[3] वदन हूं परहि न कह्यौ।
पलिका ऊपर बैठी लसैं❀गावति है रविजा कें जसैं[4] ।।२२
राधा कुँवरि विराजै अंक❀जो निन्दति हैं निकर मयंक[5] ।
राका[6] निसा बढी ससि ज्योति❀मणि मन्दिर में जगमग होति।।
देखि देखि कैं राधा कहै❀मैया तू किनि ऊँचे चहै[7] ।
या[8] चन्दा कौं ईहाँ बुलाइ❀हौं देखौं जु निकट तें जाइ ।।२४
यामें इतौ उजेरौ का है❀यह बूझन हौं रहौं उमाहैं ।
नियरे तें सब परि है सूझि[9]❀यह सन्देह बाहि लैउँ बूझि।।२५
बिहँसति मुख मनु बारिज कली❀अति अरबीली बारी[10] लली ।
मिहीं ओढनी में तन दिपैं❀ससि दामिनी दुति निरखत छिपैं।।

दोहा—कीरति राधा वदन दिश, चितवति बारम्बार ।
बेटी भोरी निपट तू, कहाँ सुन्यौ यह जु विचार ।।२७।।

---

[1]—भाव यह है कि इसकी चर्चा ही न किया कर कहीं दृष्टि न लग जाए यों पिता वृषभानु शंकित रानी से कह रहे हैं, [2]—अलौकिक शक्तियां लोक में अवतीर्ण होकर लोक जैसे खेल रच रही हैं जिनकी गिनती कहीं नहीं हो सकती है, [3]—शेष नाग जो हजार मुख से, [4]—यशोगान, [5]—चन्द्रमा की सुन्दरता को लज्जित करती हैं, [6]—तारागन, [7]—आकाश के चन्द्र को क्यों नहीं पकड़ा देती, [8]—अथवा चन्द्र को नीचे बुला यदि तू ऊँचे नहीं जा सकती है, [9]—पास से प्रगट होगा या उससे ही प्रश्न करके पूछ लूँगी, [10]—बालिका ।

॥ चौपाई ॥

मचलि रहै पुनि ठोडी गहै❀मैया सों पुनि पुनि यों कहै।
अरी भली मेरी कीरति माइ❀चन्दा कौं अब हीं जु बुलाइ २८
हौं तब हीं पाऊं आनन्द❀मो खेलन जु बुलावै चन्द।
बेटी चन्द खिलौंना नाँहीं❀वह दिखि बसतु गगन के मांहिं॥
मैया कहा बहरावति मोहि❀हौं सोवन नहिं दै हौं तोहि।
गहि गहि अंचल ऐंचैं लली❀दृग सलोल दरसति छबि भली।
कीरति सोचति है मन मांहिं❀यह मचली हठि तजि है नांहिं।
कुँडी फटिक मणि नीर भराई❀लै जु अजिर कैं मध्य धराई॥३१
बेटी मैं दिखि चन्द्र बुलायौ❀दरशन दैन अवनि पर आयौ।
राधा किलकति तारी दै दै❀टेरति नाम सखिनु के लै लै॥
सब हीं आवौ बेगी धाइ❀चन्द बुलायौ मेरी माइ।
कुँवरि टेरि सुनि आईं भगी❀सब हिं चन्द कौं देखन लगी३३
बेटी याकौं ढांपि जु धरौ❀अब तुम रंचक बिलम्बु न करौ
पुनि रानी बोलीं मुस्काइ❀खुल्यौ रहै तौ यह भगि जाइ३४
ढक्यौ कुँवरि लै कंचन थार❀माइ राखि दै कोउ रखवार।
मेरी मैया बड़ी दयाल❀चन्द बुलाइ दियौ इहि काल ३५
बेटी अब तुम सोवौ जाइ❀प्रात खेलियौ मो ढिग आइ।
करि ब्यारू पौढीं अति लडी❀प्रात उठी खेलन रुचि बढी॥३६
मैया तैं नहिं पहिरो दयौ❀कुँडी खोलि चन्दा भजि गयौ।
मैं देखी जु खुली यह परी*रही जहां की तहाँइ धरी॥३७
कहति अति लडि सखियनि मांझ❀चन्दा फिरि आवैगो सांझ।
आजु राखि हैं जतननि करिकै❀देइ कपाट घर भीतर धरि कै॥३८
सुनि २ यह अति लडि की बाँनी❀बदन मोरि मुस्काँनी रानी।

हँसि २ सबहिं कलेऊ करैं❀मैया के उर आनन्द भरैं ॥३९
कीरति राजैं बधुनि समाज[१]❀आरज[२] बनितनि की सिरताज।
दाँन माँन सब विधि सुखदायक❀रावलपति रानी अस लायक४०
पूरब करनीं ऐसी करी❀राधा सी बेटी उर धरी।
लालन पालन इहिं विधि करैं❀रजनीं द्यौस[३] न जान्यौ परैं ४१
श्री राधा अग्रज[४] श्री दाँम❀तात मात प्यारौ छबि धाम।
कीरति भाँन लाड के भाजन❀सुख दैंहिं गोपी गोप समाजन॥
भांन कुँवरि सब हीं सुख दायक❀पुर जन मोद बढावन लायक।
बल्लब[६] कुल के जस कौं धरैं❀तात मात अज्ञा अनुसरैं ॥४३॥
जिनमें गुन देखियें गरिष्ट[७]❀फली भाँन कुल बेली मिष्ट[८]।
प्रभु दीनी मधुरी रजधांनी❀मान अमानिनु कौं बड दाँनी ॥

दोहा—रावलि कौ रांनौ विदित, लोक लोक सब ठौर।
अहिलादिनि जा घर सुता, अस सुकृति कौ और ॥४५
धनि रावलि रविजा निकट, सुर बांछित जहाँ बास।
निगम[९] दुराधि जु राधिका, तिहिं ठाँ कियौ प्रकाश ॥४६

॥ चौपाई ॥

श्री वपु कियौ प्रकाश जु तहाँ❀भाँन वंश रजधांनी जहाँ।
महिमा महत जाति नहीं कही❀राधा पद अँकित जिहि मही४९
लोकनि कौ जस लागै हरुवौ[१०]❀रावलि जस सब तें भयो गरुवौ।
रविजा तट राजति जु स्वांनी❀सारद[११] छबि कहि सकति न बांनी
महा[१२] रमां विचरैं जु सदेह[१३]❀अचल संपदा गोपिन ग्रेह।

---

[१]—बहुओं के झुंड में, [२]—आर्य अर्थात श्रेष्ठ स्त्रियों की सिरताज या मुख्या [३]—दिन. [४]—बड़ा भैया. [५]—पात्र या अधिकारी, [६]—नाना का कुल बल्लव राजा थे, [७]—सर्वोत्तम तथा बहुत. [८]—मधुर या मीठी, [९]—वेद से अगम्य, [१०]—हलका या तुच्छ, [११]—स्वामिनी, [१२]—श्री राधा जी [१३]—अवतार लेकर।

जाकी महिमा निगमनि गूढ़❀कीरति गोद रहति आरूढ़ ४९
पद रज वांछित शिव मनमांहीं❀बिना अनुग्रह प्रापति नाहीं ।
विहरति गोप सुतानि मंझार❀अत्तर्कि रचना बनै न विचार ५०
मुनि जन सदा अराधैं जाहि❀गोपी बैठी खिलावैं ताहि ।
राधा सब आनन्दनि मूल❀मंगल सबै रहै अनकूल ॥५१॥
पुरी अलंकृत[1] है सब ऐसी❀उपमा नांहिं लोक कहौं कैसी ।
महल उत्तंग नये पुनि बनैं❀बाग लगाये सरवर खनैं[2] ॥५२
गोपुर चारि उतंग जु महा❀सोभा निकर बरनिये कहा ।
कोट[3] कँगूरा अति ही कमनी❀अति मोहनी जहाँ की अवँनी ॥
चौखूँटे जहाँ चौक बजार❀मणिनु चौतरा सब अगिवार[4] ।
जगमगाति वीथीं सब द्वार❀नग मणि कुन्दन जटित किंवार
नौ भांननि के सदन जु न्यारे❀मणि नग खचित अथाई[5] द्वारे ।
पारिजात बहु वृत्त जु जहाँ❀अलि[6] सौरभ लै गुँजत तहां ॥
देवनि भवन पुरी चहुँ ओर[7]❀अगर धूप लखि निर्तत मोर ।
सुखित जु दांन मान भुव देव[8]❀रवि कुल तिलक करैं तिन सेव ॥
ठौर ठौर राजैं चटसार[9]❀नाना विद्या पढ़त कुँवार ।
चारयौ वरन बसैं जा पुर में❀परम धर्म रति सब के उर में५७
रविजा तट बहु मणि मय घाट❀सौरभ पूरि रही पुर बाट ।
नाना विधि के पंछी लसैं❀चहुँ दिशि उपवन तिनमें बसैं ॥
विधि[10] रचना की उपमा कौंन❀अस राधा जु तात कौं भौंन ।
सब हिय जिय दायक अहिलाद❀बरन्यौ श्री हरिवंश प्रसाद॥५९

---

[1] —सजी धजी हुई, [2] —तालाब खोदे हुए हैं, [3] —चार दिवारी तथा शिखर, [4] —चौकों के मध्य भाग में मणियों के चबूतरे शोभित हैं, [5] —कचहरी या बारहदरी, [6] —भौंरें सुगन्ध पर मंडराते गूँ गूँ कर रहे हैं [7] —चारों दिशा में भिन्न देवताओं के मन्दिर हैं, [8] —श्री वृषभानु जी सब की विधि वत पूजा की चिन्ता रखते हैं, [9] —पाठशालाएँ, [10] —ब्रह्मा जी सृष्टि में ढूँढने से उपमा है ही नहीं क्या दें ।

दोहा–वृन्दारण्य सुधामिनी, ब्रह्मादिकनि अलक्ष्य ।
सो या रावलि नगर में, खेलति हैं परतक्ष्य ॥९०॥
जो आनन्द को निकर है, ताहू आनन्द दैंन ।
भान वंश की महा मणि, अमृत बरषनि बैंन ॥९१॥
कौतिक मुदिता सोभनी, अति सौभाग्य उदोत ।
बाल चरित बरनन करत, हिय अतुलित[1] सुख होत॥९२
दिन दिन की लीला ललित, फुरित होइ मम चित्त ।
रसना सुविधि लडाइयै, वृन्दाबन हित नित्त ॥९३॥
खांनि भरी मानिकनि सौं, चहिये तितने लेहु ।
कृपन बिसाहि सकै नही, खांनि हिं दोष न देहु ॥९४॥
बाल कुमार पौगंड पुनि, लीला ललित किशोर ।
रसिक जौहरिनु उर सचे, चरित रतन नहिं ओर ॥९५॥
भाव गम्य लीला जु यह, फुरि है गुरु[3] गम रीति ।
कहा लौकिक कहा अलौकिक, परचै नहिं बिनु प्रीति ॥९७
बन्दो रावलि पति सुता, जाके चरित गरिष्ट ।
तिन हीं कौं दरसैं भलैं, जिनकें इन पद इष्ट ॥९७॥
श्री हरिवंश सुदृष्टि करि, प्रेम संचरै हीय ।
राधा चरित जु लागि हैं, ताही कौं अति प्रीय ॥९८॥
हित रूपी ब्रज की कथा, बरनी भांति अनेक ।
वृन्दाबन हित मुहि रुची, हित नाते विधि एक ॥९९॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा रावलि बाल केलि बरनन लीला अठारहवीं लहरी का जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

१—जो अनन्त, २—अगत, ३—गुरुनिष्ठ होने से ।

॥ अथ अठारहवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–कबहूं बरसांने बसैं, कबहूं रावलि माँहिं ।
तात मात रुचि लिये रहैं, कुँवर लाड मित नांहिं ॥
रावलि ते चाहत चल्यौ, बरसाने वृषभांन ।
सजे सकट रथ पालकी, अस्वनि[1] किये पलाँन ॥२॥

॥ चौपाई ॥

रावलि बास बहुत दिन कियौ❀पुर जन सुख दीयौ पुनि लियौ
सुधर्म रति नर पुर में रहैं❀राज प्रताप उदौ नित चहैं ॥३
तिन को कीयौ पुर रखवारे❀आपु भान पुर कौं पग धारे ।
राधा कहति इहाँ रहौ तात❀अति सुख उपजत रविजा[2] न्हात
हँसि पुचकारि चढ़ाइ रथ में❀सबनि संग लै गवनैं पथ में ।
रसिक भक्त जन की बल भुजा❀नदी नदिन की जो सिर धुजा॥५
वन्दत सुर मुनि नर जु समाज❀जग पाँवन अनुजा[3] धर्म राज ।
दरसि परसि पुनि पार जु भये❀न्हाइ दाँन विप्रनि कौं दये ॥६॥
गिरि गोवर्धन सन्मुख आवैं❀ग्राम कुण्ड लखि अति सुख पावैं
कीरति जू को पीहर जहाँ❀बल्लव राज बसे निशि तहाँ[4] ॥
कीरति जू हरषी मन गात❀भेंटति भई मात पितु भ्रात ।
राधा प्रान सुधन सौ पाई[5]❀आँकौ[6] भरि नांनी जु सिहाई॥८
इंदु सैंन रावलि पति मिले❀मानौ सुख के सागर झिले[7] ।
श्री दामा राधा लै गोद❀नाँना भरयौ परम मन मोद ॥९
असन बसन करि आदरु दियौ❀भेंटि परस्पर हरष्यौ हियौ ।

१—घोड़ों की जीनें कसीं और चल पड़े, २—यमुना में, ३—छोटी बहिन, ४—एक रात श्री राधा जी नाना के घर रहीं रास्ते में पड़ा, ५—प्रान धन के समान, ६—हृदय से सटा कर ७—उछल पड़े ।

माइ ग्रेह कीरति आनन्दित❀आइ आइ भाभी पद बन्दित ॥
पुर बनिता पद वन्दन करैं❀श्री राधा कौं आँकौ भरैं ।
धन्य भाग सब मानति भई❀कुँवरि हिं देखि मगन ह्वै गई ११
गिरि पूजन श्री कीरति चलीं❀संग लई श्री राधा लली ।
हाँडी डलनि[1] पाक भरवाइ❀लिये जननि कैं सीस धराइ ॥१२
पंच[2] नाद मंगल धुनि भई❀गिरि कैं निकट सबैं मिलि गई ।
कुँवरि हाथ गिरिवर पुजवायौ❀मेवा पाक सु भोग धरायौ ॥१३
मंगल गावैं भरी सनेह❀करैं बीनती गिरि सौं एह ।
सुन्यौ दयाल तू जु गिरिराज❀कुशल राखियौ गोप समाज १४
गिरि जु महा हरषित सो भयौ❀मनु सदेह ह्वै दरसनु दयौ ।
कमनी कुंज लसति चहुँ ओर❀सैल[3] सिखर पर नित्तत मोर १५
ठौर ठौर अस झरननि नाद❀करति कन्दरा मनहुँ विवाद ।
फूले फले बहुत तरु जाति❀उग्र[4] भाग संपति दरसाति ॥१६
नाना रंगनि पंछी लसैं❀अनुरागी जु सैल इहिं बसैं ।
नाँना धातु अंग जिहिं दरसैं❀मनु भूषण पहिरैं छबि सरसैं १७
गुपत प्रगट गिरि रूप दिखायौ❀श्रीराधा इहिं भांति जिमायौ ।
अचवन दै आरतौ करायौ❀सादर बधुनि सीस तब नायौ १८
गिरि प्रसन्नता जानी परी❀सबहिनु मिलि परिकरमा करी ।
गिरि चहुँ ओर कुंड अति कमनीं❀मंगल रूप जहां की अवँनी ।
कुँवरि संग गावति हैं अली❀मुखरा लै अपने घर चली ।
कीरति रही बहुत दिन पीहर❀पुनि मन कियौ चलन अपने घर
नित नव आदर मुखरा[5] कीयौ❀भांति २ सुख दीयौ लीयौ ।
बिदा करन कौं मुखरा कहैं❀ऐ पै मन करि नाहिंन चहै ॥२१

---

[1] टोकरी. [2] ताल मृदक शंक, घटा झांझ पांच बाजे., [3] परवत की चोटी पर [4] उग्र अथवा अग्र होना चाहिये मूल में उग्र है. [5] श्री राधा की नानी का नाम ।

ये कहैं चलन राखि लेइ मैया❀पुनि बरजैं भाभी अरु भैया ।
राधा कौं परचाइ जु लीयौ❀नाँनी नैं अति ही हित कीयौ २२
बहु विधि खेल खिलावैं माई❀कुँवरि कहैं मां रहौ इहांई ।
जौ तेरे मन बडो हुलास❀बेटी रहि तौ नानी पास ॥२३॥
बड़े भोर बरसांने जैं हौं❀राधा तोहि संग नहिं लै हौं ।
सुनत दौरि बाबा पै गई❀गोद बैठि यों कहति जु भई २४
मैया मो सौं भई उदास❀राखि जान कहै नानी पास ।
यौं कही महा रोस मन भरी❀घर चलिबे की अरबी धरी ॥२५
लई पुचकारि गोद में तात❀मीठीं मीठीं कहत जु बात ।
कहि अपनी जु माइ सौं जाइ❀तू जिनि रंचक मन जु डराइ ॥
हौं जैं हौं बरसानें प्रात❀तू रहि नानी के घर मात ।
दौरि गइ ऐसें हीं कही❀मैया देखि बदन दिसि रही ॥२७
सुनि मॉन्यौ सबहिनु मन मोद❀नानी लई कुँवरि भरि गोद ।
राधा सुधन पाइ सब हरषैं❀निशि बासर जु लाड सुख बरषैं ॥
दोहा–नौं भांननि परिवार सब, पट भूषन पहिराइ ।
कीरति कौं कीनी बिदा, लायक मुखरा माइ ॥२९॥
राधा कौं निरषत बदन, तृपत होत दृग नांहि ।
रहैं कछुक दिन और हूं, यह सब के मन मांहि ॥३०॥
नित राखैं नित होंहि बिदा, ऐसो बढ्यौ सनेह ।
कीरति हू मन रुचतु अति, तात मात कौ ग्रेह ॥३१॥
रावलि पति करि बिनती, बिदा भये बरजोर ।
अपनौ संग समाज लैं, चले बरसांने ओर ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

जब यह खबर नगर में गई❀सब के तन मन फूलनि भई ।

मंगल दर्बि धरैं सब द्वार❀छये जरी पट हाट बजार॥३३॥
पुर के लोग लैंन कों आवैं❀जुवती जन मिलि मंगल गावैं।
मंगल कलश वधुनि कैं सीश❀द्विज वर आये देत असीश॥३४
पंच नाद धुनि होत जु जहां❀नगर सींव सब आये तहां।
पद नवनी करि भेंटैं देंहिं❀दैं सन्मान भेंटि पुनि लेंहि ॥३५
जहां तहां जै जै धुनि होइ❀पुहपांजलि वारैं सब कोइ।
काहू कों लैं अंक लगावैं❀काहू ओरी कर जु उचावैं ॥३६
काहू कों द्दग[1] करि सन्मानैं❀प्राँन समान सबनि कों जानैं।
श्रीवृषभाँन पौरि पुर[2] आये❀तब गहरे नीसान बजाये ॥३७॥

दोहा—सबहिँ सुविधि सनमाँन दै, राधा तात कृपाल।
पुर प्रवेस कियौ सुभ घरी, जै धुनि भई तिहिकाल॥३८

॥ चौपाई ॥

घर घर में गह मह ह्वै रहीं❀पुर की शोभा परत न कही।
बल्लव कुल के मुकुट जु मनी❀विदित जु देस भयांने धनी॥३९
आये भवँन सुखित सब किये❀पुर बासिनु भये शीतल हिये।
करि करि असन मनायौ चैंन❀रजनी कियौ सबनि सुख सैंन ४०
बड़े प्रात हीं राधा जगी❀मैया कौं जु जगावन लगी।
रानी उठौ कलेऊ देहु❀मेरो वचन मानि तुम लेहु ॥४१
बेटी अब हीं रजनी घनी❀उर लगाइ लई कंचन तनी।
कुरुकुट[3] बोल्यौ सुनि री माइ❀उनि हीं दीनो भोर जनाई ॥४२
तू कत बहरावति है मोहि❀अब न देउँगी सोवन तोहि।

---

[1] —नजर से निहाल कर देते हैं, [2] —पुर के मुख्य द्वार पहुंचे नगर प्रवेश का फाटक
[3] —श्री राधा जी मैया से कह रही है सुन तो सही कुकुर बोल रहा है जो यह सूचित करती है कि प्रातःकाल हो गया है।

पसर[1] चलीं खरिकनि तें गाइ❀वे रांभति[2] सुनि कांन लगाइ४३
गहि २ अँचल को झकझोरैं❀चिबुक प्रलोवैं लली निहोरैं[3]।
मोकों भूख लगी है भारी❀कहति अति लडी भांन दुलारी
सुनत सुता की ऐसी बांनी❀हिय अकुलाइ उठि तब रानी।
कुँवरि वदन विधु किरनि जु सरसैं❀भोर भयो तहां कैसे दरसैं ॥४५
दांतिनि चौकी बैठि कराई❀मैया माखन मिश्री लाई।
जेंवति लली बहुरि यौं कही❀माइ लाइ दै गाढो दही ॥४६॥
जो जो मांग्यौ सो सो दियौ❀अति रुचि मानि कलेऊ कियौ।
ललितादिक आंईं सब पास❀खेलन कौ मन बढ्यौ हुलास ४७
तोता मैंननि कौं पुचकारैं❀कुँवरि चुगो अपने कर डारैं।
लाड करत मन नहीं अघाइ❀बहुत दिननि में देखे आइ॥४८
पीरी पोखर खेलन आईं❀गोझा[4] भरि भरि मेवा लाईं।
कूरम[5] पुनि मछरीनु चुगावैं❀वे जल ते कढि बाहिर आवैं४९
तहाँ इक आयौ बीना धारी❀रचन लग्यौ वह कौतिक भारी।
नाचै गावै बीन बजावै❀हियौ प्रेम सौं भरि भरि आवै ॥
सबहिं मुदित भईं बींना सुनि कैं❀एकत[6] ह्वै ढिंग गईं जु पुनि कैं।
देखि रहीं तिहिं ओर जु सबै❀मन करि कै अवधूत जु नवै ॥
बार बार परिकरमा करै❀बार बार उर आनन्द भरैं।
भिच्छा मांगैं हाथ पसारि❀कर मेवा जु धरैं सुकुँवारि॥५२
सरस्यौ प्रेम बिबस ह्वै गयौ❀निरखि कुँवरि मन अचरज भयौ
अँवनीं लौटैं बात न कहैं❀नैंननि सौं पानीं सौ बहै ॥५३॥
श्री राधा कौं आगे करिकैं❀भजी गाँव दिसि सब हीं डरिकैं।
श्रमित भईं सब कोमल गात❀कछु २ निसरति मुख ते बात ५४

१—बाहर निकल रहीं हैं, २—गौएँ रँभा रही हैं, ३—खुशामदें करती हैं कि उठ जाग, ४—जेब या झोली, ५—कछुए तथा मछलियों को, ६—इकट्ठी होकर।

पाछें देखैं पुनि पुनि मुरि २❀कीरति पास गईं सब जुरि जुरि।
चकित थकित सीं सबहीं बाला❀मनु[1] औदरी मृगिनु की माला५५
कीरति सबहिं निहारि निहारि❀पुचकारति पोंछति मुख वारि।
बेटी तुम काते हो डरी❀मों कौं ऐसी जाँनी परी ॥५६॥
मैया इक अवधूत जु आयौ❀उनि नीकें सुर बींन बजायौ।
हम आगें उनि नित्त जु करयौ❀दृगनि कछू पानी सौं झरयौ॥५७
बोल्यौ नहि दियौ हाथ पसारि❀मैं दियौ मेवा गोझा झारि।
बडे स्वाँस लियौ हमैं निहारि❀अँवनीं लोटयौ बींना डारि ॥५८
ऐसौ कौतिक वाने करयौ❀देखि सबनि हीं कौ मन डरयौ।
काहू कौं धीरज नहिं रह्यौ❀आई भाजि सु तो सौं कह्यौ ५९
बेटी जो बींना हो अँक❀तो क्यों तुम मानी उनि संक।
बे जु कृपा सब ही पै करैं❀उनि ते कोऊ भोरे डरैं[2] ॥६०॥
तेरो जनम भयौ हो जबै❀गंडा वे रचि लाये तबै।
गर पहिराइ जु रच्छा करी❀तब तें मेरी कुँवरि न डरी ६१
कर वर धरि गये तेरे सीस❀बेटी वे जु कृपालु मुनीस।
यौं समझाइ सुखित अति करी❀पुनि पुचकारि अंक लै धरी॥६२
लाडू धरि दिये सब कें हाथ❀खेलति अजिर सबै मिलि साथ
काँउँ काँउँ करि कागा धायौ❀कुँवरि हाथ करि ताहि चुगायौ
बदन फारि[3] पुनि सन्मुख आयौ❀करतें[4] लाडू कुँवरि बगायौ।
सबहिं सखिनु मन संका भई❀लली भाजि मन्दिर दुरि गई ॥
हँसति हँसति कीरति जू आई❀बेटी तोहि काग डरपाई।
कारे काग कुरूप महाई❀तैं मेरी लाडिली डराई ॥६५॥

१—जैसे कोई हिरनियों की पंक्ति या झुंड भय भीत हो, २—उनसे कोई भोला व्यक्ति डरेगा या भूलकर भी उनसे डरना नहीं चाहिये, ३—मुख (चोंच) फाड़ कर कौआ श्रीजी के सामने आया, ४—हाथ से लड्डू डर करके दूर फेंक दिया।

राई लौंन उतारति रानी❀बहुरि वारि पियौ आपुनु पानी
कीरति की प्रांननि संपदा❀लली लाड भींजी रहै सदा ६६
भेष बदलि मुनि देव जु आवैं❀भाँन पौंरि रज तन लपटावैं ।
कुँवरि सकल सुन्दरता सार❀खेलति गोप सुतानि मंझार ६७
गढ विलास इक कौतिक रच्यौ❀कुशम दलनि सिंहासन सच्यौ ।
भाँन सुता कौं राजा करयौ❀कुशम छत्र रचि माथें धरयौ ६८
ललिता कौं मंत्री जु बनायौ❀चँवर विसाखा कर जु ढुरायौ ।
एकनि गहि लावैं बर जोर❀महाराज पकरयौ यह चोर ॥६९
एकनि पै जु अनुग्रह करैं❀इक डरपैं इक पाइनु परैं ।
इक फल लावैं भेंटैं धरैं❀इक मुख विनय वचन उच्चरैं ७०
एक दूत ह्वै कैं बनि चलैं❀एक सन्देसो कहति जु भलैं ।
इक ह्वै गाइन[1] सुविधि रिझावैं❀इक मन वांछित रीझ[2] सु पावैं।
इक बातें करि करि जु हँसावैं❀एक आसिका दै दै आवैं ।
एक चलैं इक तिन कौं टोंकैं❀एक छरी लियें एकनि रोकैं॥७२
एक राज की फेरैं आँन❀एक जु करैं मतौ लगि कान ।
चलैं कहूं कौ सैंना साजि❀इक भय मानि देखि चलैं भाजि।
दोहा—खेल जु बाल विनोद के, अति प्रिय अति अभिरांम ।
भोजन बिरियां जानि कैं, सब उठि चलीं जु धाँम ॥७४॥

॥ चौपाई ॥

मैया कहै कहाँ रही प्यारी❀मेरे प्राँन सुधन सुकुँवारि ।
खेलत तू कबहूं न अघाई❀डोलत गयो बदन मुरझाइ ७५
जो रोकौं तौ रूठि जु रहै❀रूखी रूखी बातैं कहै ।
ऐसें कहि भोजन करवायौ❀नैंन प्रांन अति ही सुख पायौ॥

---

[1] गाने वाली बन कर, [2] इनाम ।

बासर बीत्यौ रजनी भई❀माइ सुवाइ आपु ढिग लई।
कहि मैया सुन्दर जु कहाँनी❀आगे जे भये राजा रानी ॥७७॥
राजा ब्रज परजन्य जु भयौ❀तिन सुन्दर तप कौ ब्रत लयौ।
तेरह वरष महा तपु कियौ❀गवरीपति[१] तिन कौं बर दियौ॥
पाँच पुत्र ह्वै हैं कुल दीप❀तिनमें नन्द जु घोष महीप।
घरनीं नाँम बरेयसी रानी❀पांच पुत्र जाये सुख दानी ॥७६
सानंदा जु नन्दनी नाम❀ये द्वै सुता परम अभिराँम।
जनें चार सुत दूजी घरनी❀श्री प्रजन्य की निर्मल करनी ८०
श्री उपनन्द धरा ध्रुव नन्द❀पुनि अभिनन्द नन्द जगबन्द।
सुठि सुनन्द पुनि निर्मल नन्द❀करमाँ धरमाँ भरे आनन्द ॥८१
सुनि अतिलडि सुन्दर जु कहानी❀राजा नन्द यशोदा रानी।
तिनके पुत्र परम अभिराम❀प्रगट भयौ श्रीकृष्ण सु नाँम ८२
कीरति कही कथा सुख सँनी❀निद्रा वश भई कंचन तनी।
रजनीं अधिक भई सुख मई❀जानि न परी बीति कब गई ८३

दोहा—सुख ननसार जु सुनि कथा, राज खेल विस्तार।
वरन्यौ राधा कँवरि कौ, बाल चरित्र उदार ॥८४॥
मन दै सुनी जु नृप कथा, बेटी रावलि राइ।
वृन्दावन हित रूप बलि, बरनी कीरति माइ ॥८५॥
रस आलय लीला ललित, कहाँ लगि करौं प्रशंस।
[२]प्रचुर करन जग अवतरीं स्वामिनी श्री हरिवश ॥८६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा खेल सुख समूह बरनन लीला अठारहवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

---

[१]—श्री शंकर गौरी पति, [२]—विस्तार या प्रचार या सुलभ।

❀ अथ उन्नीसवीं लहरी प्रारम्भ ❀

दोहा—ढूँक मींचनी[1] कौ जु अब, बरनौं खेल अनूप ।
दै हैं सुमति चिताइ मम, गुरुवर श्री हित रूप ॥१॥
जे आनन्द कदंबिनी, भाँन वंश उत्पन्य ।
कहत सुनत रस मय चरित, ते जन जग में धन्य ॥२॥
कौतिक वपु कौतिक कथा, कौतिक जा कौ धाँम ।
कौतिक खेल जु नित रचित, हौं बलि राधा नाँम ॥३॥
परम धन्य ब्रज लोक यह, धनि बरसानौं ग्रांम ।
परम धन्य भयौ गोपकुल, नित मँगल जिन धांम ॥४॥

॥ चौपाई ॥

ढूँक मीचनी खेलन जाइ❀सब सखियन कौं संग लगाइ ।
ललिता बैठारी इक ठौर❀जांई दुरन कौं सब हीं ओर ॥५
इन्दु लेखा के मूँदे नैंन❀ललिता कहति जु ऐसें बैन ।
मुहि छीवै जीतैगी सोई❀यह गहि लावै हारै जोइ ॥६॥
यौं कहि दियौ सब जहां जुरीं❀न्यारे न्यारे भवँननि दुरीं[2] ।
नैंन खोलि बोली मुस्काइ❀तू[3] अब काहू कौं गहि जाइ॥७
इन्दु लेखा यह सुनि के चली❀धर्म भाँन घर की गहि गली ।
गह्यौ चित्रलेखा कौ हाथ❀हँसति हँसति लै आई साथ ॥८
सब भेंटी ललिता सौं आइ❀फूलति अपनी जीति मनाइ ।
अब मीचीं चित्रा की अँखियां❀दुरन गईं पुनि सब हीं सखियां ॥
जहां तहां सब हीं दुरि गईं❀आंखि खोली ललिता ने दईं ।
चित्रा चकृत करति विचार❀एक गोप कैं गई जु द्वार ॥१०॥
इक गोपी नें सैंननि कह्यौ❀जाइ विशाखा कौं कर गह्यौ ।

---

[1] —आंख मिचौनी का खेल, [2] —छिपीं, [3] —किसी को पकड़ कर लादे ॥

चित्रा हँसति कहति पुनि ठाढी❀याकी अँखियां मींच अब गाढी ॥
सब पटकावनि लागी तारी❀अब की बेर विशाखा हारी ।
श्रीराधा मुस्काइ जु कही❀किहिं विधि तैं जु विशाखा गही
यह जु सबनि में स्यांनी महा❀पहिले गहि लइ कहिये कहा ।
आंखि मूंदि कैं ललिता रही❀जाइ दुरौ यौं सब सौं कही ॥१३
सावधान हूजौ तुम सबै❀हौं खोलति इहि आंखि जु अबै
सब दुरि रहीं स्वाँस नहिं भरैं❀गहि लेबै तें मन में डरैं ॥१४
आँखिनि संपुट[1] खोलि जु दियौ❀गहि लावन कौं उद्दिम कियौ ।
कौंने छिपी पकरि लई जाइ❀मन जु विसाखा अधिक सिहाइ
रँगदेवी जू चतुर खिलारि❀अब क्यों तैं जु मनाइ हारि ।
सब नाचैं सब कूटचौ[2] करैं❀हँसि २ चिबुक आंगुरी धरैं॥१६
अरी भटू कोऊ कछु जिनि कहौ❀ललिता आंखि मूंदि इहि रहौ।
यह सब गई और ही ओर❀यह लै फिरी जु घर २ टोर[3] ॥
चरन खोज लखि तित कौं धाई❀जात हीं दुरी सुदेवी पाई ।
और देखि जहां तहां ते भगीं❀ललिता कौं जु छुवन सब लगीं
सखी सुदेवी भोरी भारी❀उझकन लागी इन जु निहारी।
रंगदेवी लाइ तिहि घेरी❀सब हीं हँसति वदन तन हेरी१९
राधा कहति दुरि तू कहाँ❀इनि गहि लई पहिल हीं तहाँ।
आंखि मिचाई ललिता हाथ❀ये भई न्यारी तजि २ साथ ॥२०
ललिता ने तब खोले लोचन❀लगी सुदेवी मन में सोचन ।
कौंन[4] पाइसें किहि दिशि जैये❀बडी चतुरता ही गहि लैये ॥२१
यह जु उपाय सुदेवी करै❀चम्पक लता हाथ ज्यौं परै ।

१— दोनों हाथों से दोनों नैन एक साथ खोले, २— ताने देने लगी अर्थात कहां गई चतुराइ इत्यादि ३— खोज या ढूढ ढूढ कर खाली वापिस आई ४— कहां मिलेंगी

नापि[1] लिये हैं ताके पाँइ❀खोज तकति वाही घर जाँइ २२
वह बैठी भीतर ओबरैं[2]❀दै किवार मुख मौंन जु धरैं।
इक[3] लरिका खेलै तिहीं पौंरि❀कही सुदेवी सों तिन दौरि ॥२३
एक दुरी है या घर माहिं❀जाइ सुदेवी गहि लइ बाहिं।
और जु ललिता सन्मुख धाईं❀कहैं हम जीती किलकति आईं ॥
कहति चातुरी इन जु अति करी❀बड़े जतन करि मैं यह पकरी।
यह जु खेल में कबहूं न डरती❀सखी कूट सबहिनु की करती२५
ऐसी हूं कौं हौं गहि लाई❀मीचौ आंखि छूटि न जाई।
चम्पक लता चतुर सब महियाँ❀क्यौं पकराई या पै बहियाँ ॥२६
बुद्धि उथली हम अब तोली❀श्रीराधा तब ऐसें बोली।
हाँ री हाँ परि है अब जाँनी❀सब बोलति अप अपनी बांनी
आंखि मींचि ललिता मुसिकाइ❀दुरन चलीं सब हीं जु सिहाइ।
लैंन चलीं यह पूरब टोर❀ये सब दुरी जु पच्छिम ओर २८
उतकौं जात एक नें लखी❀ये सब दौरि आइ गईं सखी।
चम्पक लता फिरीं पछमनी❀ललिता ढिग देखीं सब जनीं२९
कूट करन कोउ आगें भगी❀हारी हारी कहन जु लगी।
[4]उपरैंनी जु गोमटी करि कैं❀सब हीं लीनी आगें धरि कैं३०
ललिता कहति भटू क्यों चिरै❀देहु पोत पाछैं किनि फिरैं।
कीरति की लाडली सिखावै❀सब पै मेरी कूट करावै ॥३१॥
दूरि भई मुसकति है ठाडी❀मन में फूल अधिक है बाढी।
अब[5] तू मोपै आंखि मिचाइ❀कौंन कौंन सौं लरि है जाइ ३२

१—उस के चरण चिन्ह पहिचान कर उसी ओर चल दी कि पकड लाऊं, २—नीचे सिमट कर छिपी हुई. ३—एक बालक ने दोड कर सुदेवी से कहा कि चम्पक लता इधर छिपी है. ४—सिर को ओढ़नी को बट कर कोरा बनाकर मारने लगी, ५—ललिता कह रही है चल जाने दे अपनी आंखें दूसरी बार बन्द करा कर छुट्टी पा लड़ मत।

[1]ललिता कहति पच्छ लै बांनी❀राधा की जु मिलनियां जांनी।
अब[2] के पोत परायौ देहु❀बहुरि जाइ काहू गहि लेहु ।।३३
सजनी आंखि मिचावति भई❀सब दुरि जाउ सु अज्ञा दई ।
खोलि २ री लोचन ढँपनीं❀हौं अब जीति मनाऊँ अपनीं ३४
अरबरात[3] है पर वस घुँटे❀खँजन मनु पिंजरनि ते छुटे ।
चली चौंप अति मन में धरिकैं❀लाऊँ काहू बेगि पकरि कैं ।।३५
घर घर फिरैं उपाइ जु करैं❀कोऊ याकी दृष्टि न परैं ।
एक वधू इक घर तें निकसी❀चम्पकलता देखि कै बिकसी ३६
तासौं अति आधीन जु भई❀बात भेद की उनि कहि दई ।
बछिया बछरा हैं जिहिं भौंन❀तुँगविद्या जु तहाँ कियौ गौंन ।।
मन भायौ जु बचन उन कह्यौ❀चाहति ही याही कौ गह्यौ ।
सुधि पाई तहाँ रूरी[4] गई❀बरजोरी जु अंक भरि लई।। ३८
सबैं भईं इक ठौरी जहाँ❀लै आई ललिता ही तहाँ ।
लली कछु न औसर बनि आयौ❀तुंगविद्या क्यों नाम धरायौ ३९
प्यारी जू अब ललिताहिं खिलावौ❀इहाँ विशाखा कौ बैठावौ ।
बोली कुँवरि कही तैं भली❀तब ललिता दुरिबैं कौं चली[5] ।।
बडडे नैंन ढांपि लिये दुहुँकर❀कह्यौ सखी दुरि जाउ सु घर घर
वह देखन जु अधिक अरबरैं❀गाढे कर जु विशाखा करैं ४१
सबैं दूरि दुरि गईं जब जाँनी❀तब दृग खोलि दिये जु सयाँनीं
तुंगविद्या सोचति मन ऐसें❀ललिता हाथ लगैं मो कैसे ४२
इन्दुलेखा जु अटारीं दुरि कैं❀देखति ही खिरकीं लगी मुरि कैं
दृष्टि परी कह्यौ गहौ न तोहि❀ललिता कहाँ बताइ जु मोहि ४३

१—चम्पकलता बोली. २—ललिता बोली, ३—चम्पकलता आंखें खुलने को छटपटा रही हैं, परन्तु परवश है ललिता ने बन्द कर रखे हैं, ४—सुन्दरी, ५—छिपने को सखियों के साथ खेल में सम्मलित हुईं ।

उनि जिहिं ओर आँगुरी करी❀इनि धप[1] वाही ओर जु धरी।
अछन[2]अछन गई धरति जु पाइ❀कर गहि ललिता लई उठाय ॥
गावौ गावौ री सब गीत❀मैं पाई सर्वोपरि जीत।
सब के दृग मीचे इन पुनि पुनि❀याकै गाढे मींचौ अब सुनि ॥
ललिता के ढांपौ दृग लोल❀बढि २ बहुत कहति हो बोल।
तुंगविद्या कियौ सब कौ चीत्यौ❀ललिता कौं जु खेल में जीत्यौ ॥
मीचे नैंन गाढ करि अँजुरी❀दूरी दूरी सब जाई जु दुरी।
खोले नैंन जाह अब जहाँ❀दुरि २ वैठी हैं सब तहाँ ॥४७॥
जाकें गहैं जीत हौं पाऊँ❀ललिता कहै ताहि गहि लाऊँ।
गौरंगी सब की शिर मौर❀या बिनु हौं न गहौं अब और ॥
बुधि बल यह जु विचारत भई❀ना जान्यौं कित कौ हैं गई।
काहू पै जु भेद लै लीजै❀तव गहिबे कौं उद्दिम कीजै॥४६
बगर बगर खोज्यौ सब ग्राम❀राधा लखी न काहू धाम।
अपनी ही बैठक में गई❀मैये[3] हूं न दिखाई दई ॥५०॥
दीपक हूं शीतल करि दीनौं❀बोलन हूं जु मौन गहि लीनौं।
आवत जात न काहू लखी❀फिरत निहारति ललिता सखी५१
महा चतुर गोपनि की बेटी❀सब हीं आइ विशाखाहिं भेंटी।
ललिता हू व्हांईं फिरि आई❀कहति मैं न कहूं राधा पाई ॥५२
ललिता तुम न काहू छियौ❀पोत दूसरो चहियै दियौ।
जब लगि श्रीराधा नहिं आवै❀तब लग पोत न कोऊ पावै ५३
हारि[4] तुम्हारे हीं यह बांटैं❀ललिता तुम्हैं बनै नरिं नाटैं[5]।

१— शीघ्रता से दौडा उसी तरफ, जहां ललिता सखी थी, २— पांव का खडका न हो धीरे धीरे पांव रखती थी, ३— मैया कीरति को भी पता न लगा था, ४— ललिता कह रही है तुम्हारे कहने से मैं कैसे हार गइ और दूसरी बार नेत्र मुंदवा लूं अभी श्री राधा को आने दो यह भाव है, ५— नाचै।

राधा कुँवरि और घर नांहिं❀चलौ बड़े घर हीं अब जांहिं ५४
अंक बहुत उहि चरननि तलैं❀तिन कौं हौं पहिचानति भलैं।
दीपक जोरि लेहु धरि हाथ❀सब खोजति चलौ मेरे साथ॥५५
खोज[1] चलैं गवनौं तिहिं ओर❀मिलि है हमें हमारो चोर।
दीपक जोरि लये द्वै चारि❀चलीं खोज लगि सबहि निहारि
एक कहैं जु यहै वह खोज❀एक रचैं कछु औरै चोज[2]।
अरी[3] चौंकि हैं कीरति माइ❀जो यह बात कहै कोऊ जाइ ५७
बाबा की जु पौरि लौं गई❀तहाँ जाइ सब ठाढी भई।
जो राधा है रावर मांहि❀तौ काहू विधि छिपि हैं नांहि॥
लरिकनि कौ जु सोर अति सुनिकैं❀खिरकी रंचक उझकी पुनि कैं[4]।
चन्द उदौ किधौं दामिनि लसी❀ललिता निरखि मन्द मुख हँसी
अरी भटू पाछें पग धरौ❀दीपक जोति जु शीतल करौ।
सनय सनय इकली चली गई❀औचक आइ अंक भरि लई ६०
जो तुम तनिक सोर ह्याँ करयौ❀तौ सब खेल रहैगो धरयौ।
तब मिलि गईं विशाखा पास❀कुँवरि देखि मन बढ्यौ हुलास॥
प्रमुदित सबै कुलाहल करैं❀अप अपनीं बांनी उच्चरैं।
कोऊ कहै जु ललिता हारी❀लाई[5] खोजि सबै सुकुँवारी ६२
कोऊ कहैं नांहिं री नांहिं❀यही जु गहि लाई हैं बांहि।
श्री राधा मानो रँग रली❀कौतिक देखति हैं विधि भली६३
ललिता कहै न्याव अग करौ❀झूँठि साखि न कोऊ भरौ।
राधा सौं सब हीं की प्रीति❀ऐ पै करौ खेल की रीति ॥६४॥

---

[1]— चरणों के चिन्ह या अंकुश वज्र आदि पता देने वाले सगुन सहायक है जिधर गई है, [2]— मन का वहलाना [3]— राधा नहीं मिल रही यह सुन कर चौंकेगी, [4]— श्री राधा जी ने जरा खिड़की खोली तो उन की सहज छटा चमकी ललिता ने भांप लिया इधर हैं, [5]— अर्थात ललिता ने इकली खोज नहीं लगाई औरों की सहायता से दीपक जला कर गई।

जो अब राज कुँवरि हम गनि हैं❀लेहु विचारि खेल नहिं बनि है।
चम्पकलता यों जु उठि बोली❀हौं हूं संग सबनि लिये डोली ६५
कैसो पोत जु माँगति अबै❀लाई ढूँढि भटू हम सबै।
ललिता कहैं सुनो मो बैन❀तुम आई जु देखि सब नैन॥६६
दुरी हुती भुज भरि हौं लाई❀तुम यह कैसी धूम मचाई।
रौंटिस[1] करैं ते खेल न बनैं❀बात तुम्हारी को सखी गनै ६७
ललिता ढूँढि जु हम पै आई❀तैं जु कही मैं कुँवरि न पाई।
तब हम सब लागी तो लार[2]❀खोज लेत गई राज द्वार॥६८
हम उपाइ कियौ तब तू लाई❀अब माँगन लगि जीति बधाई
ललिता कहति पक्ष तू करै❀झूँठ बोल तैं नाँहिन डरै॥६९
बिनु छिये आवति पलाइ[3]❀मिलती जौ रु विशाखैं आइ।
दूजो पोत्त सखी हौं देती❀बचन मानि सब हीं कौ लेती॥
बिगरत खेल कुँवरि जो जान्यौं❀पोत दैन अपने मुख मान्यौं।
मींचौ आंखि विशाखा आइ❀सब कौं दुरिबैं देहु पठाइ॥७१
यह सुनि कै ललिता मुसिकांनी❀मेरी बात कुँवरि नें मांनी।
विलम्ब न करि अब तू जु विशाखा❀करि सब की पूरन अभिलाषा
लई विशाखा कर उपरैंनी[4]❀तब मुसिकांनी सारग नैंनी।
सूहे बसन ढांपि दृग लये❀कौतिक दरशन लागे नये॥७३
सुन्दर चपल मीन बिबि[5] खरे❀ते अनुराग[6] जाल मनु पड़े।
किधौं खेलत हैं खंजन छैया❀बसन उठाइ स्वाइ गई मैया॥७४

१— छल या बहाने करना या मुकर जाना, २— साथा साथ लगीं, ३— भाव यह है कि यदि भाग कर बिना भेरे स्पर्श विशाखा को अपने को आकर राधा अर्पण करती तो जीती थी ललिता यह न्याय का पक्ष खेल का बता रही हैं, ४— हाथ कठोर न लगा कर कपडे से नैन बन्द किये यद्यपि खेल में सब के हाथों से नैन मूंद रहीं थीं, ५— दोनों नैत्र मानो दो मीन हैं, ६— लाल सूहा कपडा मानो अनुराग है अनुराग का रंग लाल माना जाता है।

सोभा राशि मनौं सची धरी❋सोभा नें मनु आँको भरी।
साथिनि सबै परम अनुरागी❋बदन कुँवरि कौ देखन लागी ॥
मन हुँ जलद अनुराग मयंक❋ढांपि लियौ तदपि निरसंक।
खंजन जोट अंक तिहिं खेलैं❋सबल जलद कौं चहत बगेलैं।
श्रीराधा की अस छबि दरसै❋आंखि मींचनीं यह सुखु बरसै।
सखी सोर सब करन जु लगी❋चहूं ओर दुरिबे कौं भगीं ॥७७
भींनें बसन मांहि लखि लई❋जिहिं घर दुरन जु ललिता गई।
दूरि गई वे तू सुनि लेहु❋मेरे नैंन खोलि अब देहु ॥७८॥
खुलै नैंन इत उत जु निहारैं❋वाही घर ओरीं पग धारैं।
कुँवरि जबहिं उहिं पौंरी धसी❋घर रखवारि देखि कै हँसी ॥७९
श्री राधा लच्छन पहिचांनि❋या घर दुरी लई जिय जांनि।
जाइ अजिर में ठाढी भई❋मन करि उक्ति[१] उपाई नई ॥८०
अरी[२] भटू इक मेरो चोर❋आयौ है तेरे घर ओर।
लली[३] कहा उन चोरी करी❋ऐसे कहि कै पुनि हँसि परी ८१
नांहि नांहि मुख सौं बतराति[४]❋सैननि मांहि बतावति जात।
ह्वै ह्वै सबै विशाखा अंग❋आइ मिलीं प्यारी के संग॥८२
सखियनि सौं जु अजिर भरि गयौ❋महा कुलाहल ता घर भयौ।
तकति फिरैं लिये सखियन भीर❋ललिता बैठीं मारि जँजीर[५] ॥
राधा बैठी वह घर घेरि❋सब हीं सखी बुलाईं टेरि।
दूजौ द्वार नांहि यह भौंन[६]❋भीतर तें तारो देइ कौंन ॥८४॥

१-एक नई युक्ति से काम लिया, २-मकान वाली से श्री राधा बोलीं मेरा चोर तेरे घर में घुस गया है, ३— मकान वाली पूछने लगी, ४— रखवाली मकानवाली मुख से कह रही है यहां नहीं यहां नहीं है परंतु आँख के इशारे बता रही है इधर है, ५-अन्दर से कुंडा देकर कमरे में बन्द, ६-श्री राधा कह रही है सुनो सखी इस घर का दूसरा रास्ता दरवाजा जब नहीं अन्दर से किस ने ताला लगा दिया जो भी अन्दर है इसी मार्ग से निकलेगा।

प्यारी कहै बात मैं पाई❀यह ललिता ही की चतुराई।
या घर की अधिकारिनु आउ❀भीतर कौ तारौ खुलवाउ ।।८५।।
कहाँ लगि ललिता धरि है धीर❀हम पकरैंगी तोरि जँजीर।
निकसौ चतुर यहै जस लेहु❀प्यारी जू कौ दरशन देहु ।।८६।।
खोलि जँजीर जु बाहिर भगी❀पौंरि की कपाट तहाँ लगी।
तब लगि जाइ कुँवरि कर गह्यौ❀हारी ललिता सबहिंनु कह्यौ८७
रजनी अधिक गई लखि परी❀घर कौं चलन सबनि मन धरी।
ललिता जिन दीजौ बिसराई❀कालि पोत हम लै हैं आई ८८
चन्द्र प्रकास सरद रितु रजनीं❀खेलति कुँवरि संग सब सजनीं।
वह नभ इक यह अगिनत अँवनीं❀भाँन नगर अद्भुत नभ कँमनीं ।।
षोडश कला जु वा शशि मांहि❀राधा वदन कला मित नांहि।
वह शशि अमीं श्रवैं मिलि राति❀यह इक रस जु श्रवै दिन राति

दोहा—जुरि मिलि कैं सब हीं चलीं, राधा जननी पास।
खेल वधाई दैंन कौं, सब मन भरी हुलास ।।९१।।
आवति सखियन वृन्द में, दरस्यौ वदन मयंक।
कीरति उर सींच्यौ सुधा, लई रँवकि भरि अंक ।।९२।।
बेटा साथिनि आपनी, पंकति करि बैठारि।
सबनि संग व्यारू करौ, मेरी प्राँन अधारि ।।९३।।
बैठी गोप सुता सबै, मंडल रचि कमनीय।
मनु शीतल दामिनिनु की, माल रची अँवनीय[1] ।।९४।।
रानी परसति प्रीति सौं, नाना विधि पकवाँन।
कनक[2] तनी भोजन करैं, रूप खांनि ग्रह भाँन ।।९५।।
एक वैस सब सोहनी, मधि राधा सुकुँवारि।

---

[1]—अवनीय पृथ्वी पर, [2]—अर्थात सब के शरीर स्वर्ण वर्ण के हैं।

रूप[1] कल्प तरु की मनो, कीनीं सोभा बारि ॥९६॥
सब राधा के प्राँन सम, राधा सब कें प्राँन ।
परिकर नित्य अनादि जो, कन्याँ भइ कुल भाँन ॥९७॥
खेल रचति सब लोक वत, झलक अलौकिक मांहि ।
दरसत अनुरागी जननि सब काहू कों नांहि ॥९८॥
भोजन करि पय पान करि, लगी आचमन लैंन ।
सब अप अपनें घर गईं, राधा कीनी सैंन ॥९९॥
भोर हीं उठि अहलादनीं, रचैं नित खेल अनन्त ।
हौं बरनौं कहा अलप मति, सारद लहै न अन्त ॥१००॥
पैरति सागर लाड के, सुख सागर गौरंग ।
सेवा सुख मूरति सबै, सखी रहति नित संग ॥१०१॥
ढूंक मींचनी खेल में, राधा अधिक सनेह ।
गोपी आनन्द मान हीं, आइ दुरैं जिनि[2] ग्रेह ॥१०२॥
समरथ मुहि दाइक सुमति, तिन बल कियौं अलाप ।
वृन्दाबन हित रूप यह, श्रीहरिवंश प्रताप ॥१०३॥

॥ इति श्री व्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्रीराधा ढूंक मीचनी खेल बरनन लीला उन्नीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ बीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—विधि सारद शिव शेष हूं, वरनी सकैं नहिं भाग ।
विश्व ईश सर्वेश्वरि, पले गोपनि अनुराग ॥१॥
बाल चरित वृषभाँन घर, ज्यौं वरण्यौ आनन्द ।
त्यौं ही वरनौं मति यथा, कृष्ण चरित घर नन्द ॥२॥

---

[1] १—मध्य में राधा कल्प तरु हैं इरद गिरद सब सखी शोभा युत मनो वृत्त रक्षा की दीवार या थांवरा हो, [2] २—जिन के घर में ।

प्रथम कियौ बरनन कछू, चोरयौ दधि नव नीत ।
सबको लागै परम प्रिय, कृष्ण कथा जु पुनीत ॥३॥

॥ चौपाई ॥

नन्द सुवन सब गुन करि पूरे❀असुर अनेक खेल करि चूरे[1] ।
ब्रज माधुर्य्य मधुर ही राख्यौ❀श्री शुक मुनि भागौत सु भाख्यौ
जिन असुरनि सुर मद दियौ झारि❀जे डारे जु खेल मिस मारि।
ऐसे बडे गगन लगि दीसे❀बिन हथियार हाथ करि पीसे॥५
महा मनोहर लीला करी❀ईश्वरता काहू न लखि परी।
जहाँ रंचक हूँ झलकी आइ❀ब्रज जन मान्यौ देव सहाइ ॥६॥
तात मात कें लाड जु पलैं❀मित्रनि अंश भुजा धरि चलैं ।
ब्रज जन भींजे रहैं सनेह❀खेलन जाँइ सबनिकें ग्रेह ॥७॥
घोष कियौ हरि पुर शिर मनी❀रचैं मधुर रस लीला घनी ।
करैं गोप सुत मिलि कौतूह❀छबि पर वारौं मदन[2] समूह ॥८
इक दिन खेल जु यह मन धरयौ❀मोहन मतौ सुबल सौं करयौ ।
जुरि आये बालक जु अहीर❀नन्द भवन भई सोभा भीर ॥९
करयौ कलेऊ खेलन गये❀लरिका सबै संग करि लये ।
बैठे पावन सर के बाग❀खेलन कौ सब मन अनुराग १०
राम कृष्ण जिहिं भांति सिखावैं❀तेई खेल जु लरिकनि भावैं ।
सुबल श्याम अपु ओरीं लयो❀बलि की ओर मनसुखा भयौ ॥
डंडा गेंद श्याम कर लियौ❀अँवनी पटक ढोल तब दियौ।
गेंद गहन सब फिरैं जु साथ❀काहू कें आवै नहिं हाथ ॥१२॥
लै आवैं जु ढोल पुनि देंहिं❀लरिका दौरि दौरि कैं लेंहिं ।
भैया हम कौं श्याम हरायौ❀सुबल हमारी ओर न आयौ॥१३

१—खेल खेल में चूर चूर कर डाले, २—काम देवों के झुंड ।

बडडे ढोल जु मोहन देहि❀कोऊ सुघर लपक नहिं लेहि।
फेंट[1] बांधि भयौ सुबल जु ठाढो❀गेंद गहन कियौ उद्दिम गाढो॥१४
दृष्टि बँचाइ ढोल पुनि दयौ❀सुबल देख तोई रहि गयौ।
दीनीं सुबल गेंद ढरकाइ❀लागी वा डंडा में जाइ ॥१५॥
जीत्यौ जीत्यौ सबहिंनु कह्यौ❀डंडा आइ सुबल ने गह्यौ।
काहें सुबल आतुरे होत❀अब हीं मेरे कैऊ पोत ॥१६॥
बोलो भैया साईदार[2]❀गनि दिहु हौं जीत्यौ कै बार।
कीयौ न्याव पोत गनि दये❀मोहन तब पुनि ठाढे भये ॥१७॥
जब जब ढोल गेंद कौ देहिं❀तब तब सुबल लपक कर लेहि।
पोत पुग्यौ सब कहैं पुकारि❀डंडा गेंद श्याम दिहु डारि १८
सुबल ढोल तू दै सह जोर❀स्याम हिं लावौ इत की ओर।
कहा मुख देखि रहे हौ मारे❀लावौ पीत पिछौरी वारे ॥१६॥
हम जीते जु ग्वाल किलकारैं❀स्याम ओर के सब हीं हारे।
आडी तिरछी गेंद चलावैं❀काहू के वह हाथ न आवैं ॥२०॥
गेंद गहन कों जतन जु करैं❀हाथ न आवै तब सब लरैं।
मोहन फेंट झगा की बांधि❀गेंद गहन कों रहे कर सांधि॥
ढोल देहिं तब कर में लेहिं❀अवँनी गेंद परन नहि देहिं।
लेइ गहि ऐसे गेंद बगेलैं❀मनहुँ[3] सुघर नट विद्या खेलैं॥
इत उत पोत बराबंर रह्यौ❀तब मधु मंगल ऐसें कह्यौ।
मारग देखति सब की मैया❀रोटी खाँन चलौ अबै भैया २३
सब अपनें अपनें घर गये❀भोजन करि पुनि एकत भये।
मोहन कौ हँसि कर गहि लीनौं❀रैंता पैंता मतो जु कीनौ ॥२४॥
जब मिलि चलि हैं ग्वालनि गनमें❀कौतिक बहुत देखि हैं बनमें

१—कमर कस कर बाँध ली, २—खेल के न्याय लेखक मध्यस्थ, ३—जैसे कोई बाजीगर अपने करतब दिखावै।

अब तु होहु गाइन कौ पालक❀राजा तू सैंना सब बालक।
पी पी दूध बली अति भयो❀कबहुँ न गाइ चरावन गयौ।
बाबा कहैं न कहैं जु मैया❀कैसे बन चलिये रे भैया ॥२६॥
मित्र मंडली सबै ठठोरा[1]❀राखैं अपनों अपनो तोरा[2]।
अरे मित्र मो मन की पाई❀भली बात तैं आजु सुनाई ॥२७
मोहि राति दिन यहै उमाहौ❀बन में चलि लीजै सुख लाहौ।
जासौं कहौं हँसि परै सोई❀मेरी बात सुनैं नहिं कोई ॥२८॥
रैंता पैंता कहैं समुझाइ❀बात हमारी सुनि चितलाइ।
पहिलें मतौ सुबल सौं कीजै❀मधु मंगल हू कौं संग लीजै २६
स्याम सुबल सौं मतौ जु कीयौ❀मन कौ भेद सबै कहि दीयौ।
गाइ चरावँन मो मन हरषैं❀कोऊ मो हिय की नहि परषैं ३०
हौं बाबा सौं कहि नहिं सकौं❀याते ओट तिहारी तकौं।
कहैं सुबल की ठोडी गहि २❀अरे मित्र तू मैया सौं कहि॥३१
स्यामहि ग्वाल गोअनि कौं करौ❀मैया मन संका परिहरौ।
बात हमारी धरौ जु कॉंन❀यह पी दूध भयौ बलमाँन ॥३२
जो तू सुबल मित्र है मेरौ❀तौ बाबा हूं को मन फेरौ।
बन लै चलौ जु संग लगाइ❀हौं चराइ हौं सब की गाइ ॥३३
अतिहिं भलौ तुम्हारौ मानौं❀परम मित्र करिकै हौं जानौं।
सुबल कहै तू धूत जु महा❀मेरो कह्यौ मानि है कहा ॥३४॥
ऊधम अधिक नगर में करै❀बन जै है तब का सौं डरैं।
हम परष्यौ जु नगर ही मांहिं❀कैसे तोहि[3] बरहैं लै जांहिं ॥३५
भलैं सुबल समुझौंगौं तोहि[4]❀अब हीं दोष लगायो मोहि।
मैं दधि माखन तोहि खवायौ❀तऊ काम मेरे नहिं आयौ ॥३६॥

१—मखौल करने वाले, २— अभिमान या चाल ढाल, ३—गो चारन की भूमि
४—श्याम सुबल को धमका कर कह रहे हैं अच्छा मैं समझ लूँगा मुझे दोषी ठहराता है।

जब मैं ऊधम कर्‌यौ नगर में❀मो संग तू हूं फिर्‌यौ घर २ में
अपनौ दोष बिसर तू गयौ❀मेरे औगुन बरनतु[1] भयौ ॥३७
तेरौ कहा गांठि तें जाइ❀एक बात जौ कहै समुझाइ।
दै हौं तोहि पाट की सेली[2]❀गाइ राखि हौं तो संग भेली[3] ३८
तू बिचौलिया[4] होहि जो मेरौ❀भैया गुन मानौंगो तेरो।
बन[5] की हौंस बहुत तुहि लला❀खेलि लेहु घर हीं सब कला ३९
बन में बहुत भांति की भै हैं[6]❀फिरत फिरत बन ही दिन जै हैं
बन में लाभ कहा तू लहै❀सो तू बात न मो सौं कहै ॥४०॥
बछरा मैं बहु दिन जु चराये❀कोऊ सगाई करन न आये।
गो पालक मो नाम जु परै❀ता दिन सजन सगाई करैं ॥४१॥
ज्यौं[7] छलि कै दधि माखन खायौ❀ऐसें हूं जु ब्याहु ठहरायौ।
स्याम सुबल सौं भये उदास❀बहुरि गये मधु मंगल पास॥४२
जाइ मित्र की भुज गहि लीनीं❀बात मते की सब कहि दीनीं।
मेरे मन अब ऐसी आई❀गाइ चरावन चलि हौं भाइ ४३
तेरो कह्यौ सुनै मो तात❀भैया यह बनाइ दे बात।
बन लै चलन बाँह मो गहौ❀ऐसे गोप राज सौं कहौ ॥४४॥
बाबा नीकौ सुदिन सुधावौ❀स्याम हिं गाइनु संग पठावौ।
मोहन भयौ गोपालन जोग❀ऐसें कहत नगर के लोग ॥४५॥
मित्र खबरि यह बेगीं देह❀मैया हू के मन की लेह।
मधु मंगल तो[8] कह्यौ जु करि हौं❀कबहुँ न तोसौं बाथी[9] परि हौं॥
सब में मेरो तू हितकारी❀नन्दन-विप्र[10] परम उपकारी।

---

[1]—बरनन करता है, [2]—रेशमी दुपट्टा या चादर, [3]—तेरी गैया अपनी गऊन के साथ मैं हाकूँगा, [4]—वकील या सिफारसी, [5]—सुबल बोला, [6]—डर हैं, [7]—सुबल बोला, [8]—जो तू कहेगा किया करूंगा, [9]—भिड़ना, झगड़ना या गले पड़ना, [10]—ब्राह्मण का पुत्र ।

अरे उपाधि तुहि सब जानैं[1]❁बाबा क्यों यह बात जु मानैं ४७
मैया कौ लाडिलौ कहावै❁ताको क्यों बन गयौ जु भावै।
पांच बार नित तोहि जिमावै❁सो क्यों गाइनु संग पठावै ।।४८
बहुत आतुरी बातें करै❁मोहन मन धीरज नहिं धरै।
सूनौ घर लखि छींकौ तोरौ❁जाउ खाउ दधि भांडौ फोरौ।।४९
तुम अन्याई हो सब ग्वार❁चपरि लगावत मो कौ झार।
ताक लगाइ जु तुम लै गये❁हौं कियौ चोर साह तुम भये ५०
अरे[2] मित्र मुरली दैंउँ तोहि❁जा दिन बन लै चलि है मोहि।
हौं[3] तेरी न बात में आँऊँ❁मुरली लै कहा चोर कहाऊँ।।५१

दोहा–मैया यह सब गाँव में, एक्यै है तू धूत।
विदित नाम तेरो भयौ, चोर नन्द कौ पूत ।।५२।।

।। चौपाई ।।

सबहिं चोर तुम सब अन्याई❁सब हिंनु चोरि चोरि दधि खाई
औरन हीं को औगुन सूझै❁अपनो औगुन कोऊ न बूझै ५३
बरजोरी[4] बिचौलिया करै❁आइ भोर नित मोसों लरै।
यसुमति नन्द लाडिलौ कर्यौ❁डोलैता[5] गुमान सौ भर्यौ ।।५४
मेवा अरु पकवाँन जु लावै❁आपु खाइ अरु सबन खवावै।
तिरछौ चितवै मेरी ओर❁अधिक चिरावै करि दृग कोर ।।
महाधूत इन गुनिनु कहायौ❁काम परें अब बूझन आयौ।
मेवा पाक गोद भरि लाऊँ❁मैया नीके तोहि जिमाऊँ ।।५६
मुहि कराइ गाइनु कौ ग्वार❁तेरौ यह मानौं उपकार।

---

[1]—मधुमंगल ने उत्तर दिया सब जानते हैं तू बड़ा शरारती है बाबा का एक पुत्र है वह क्यों स्वीकार करेंगे, [2]—श्याम ने अब मधु मंगल को प्रलोभन देते कहा, [3]—मधुमंगल ने उत्तर दिया, [4]—मधुमंगल कह रहा है जोरा जोरी मुझे दलाल बनाने लगा है, [5]—आवारा गर्द-फिरन्दर–जगह जगह चक्कर काटने वाला ।

ताही घरी मनसुखा आयौ❀मधुमंगल जु समुझि मुसिकायौ ।।
सनय सनय सब हीं जुरि आये❀लगि २ काननि यौं बतराये ।
गाइ पाल जौ मोहन होइ❀तौ सुख पावैगो सब कोइ ।।५८
मैया सब कौ आदर करि हैं❀सब की गोदी मेवा भरि हैं ।
मोहन की जु बात में रहौं❀एकै वानी सब मिलि कहौं।।५९
संग सुबल मधुमंगल लेहु❀इन कौं अधिक बडाई देहु ।
स्याम गुनीलौ इन सौं लरयौ❀इक दिन कह्यौ न इन कौ करयौ।।
वे न्यारी सी करि हैं बात❀तब न मानि है मोहन तात ।
कहत मनसुखा सुनि मो बाँनी❀यह जु नन्द कौ महा गुमाँनी६१
तात मात कौ यह अति लडौ❀मानतु है अपु कौ अति बडौ ।
जो यह सब सौं जोरै हाथ❀तौ लै चलौ जु याकौं साथ ।।६२
मना कहत मनसुखा गरूर❀बात कहन में तू अब कूर[1] ।
तेरे वचन कान को धरै❀मोहन सौं जु इरषा करै ।।६३।।
जो बन स्याम चरावै गाइ❀तौ कहा तेरे घर कौ जाइ ।
सज्जनताई सीख्यौ नांहि❀रहै ईरषा तो मन मांहि ।।६४।।
मन तोहि कछु स्याम[2] चढायौ❀ताके बरैं लरन तू आयौ ।
यह अति धूत होहिगो काकौ❀मना पच्छ तू करतु सु जाकौ ६५
नन्द सुवन मोगौ ह्वै[3] रह्यौ❀श्रवन सुन्यौ जु सबहिनु कह्यौ।
अर्जुन भोज कही तब ऐसें❀रुचै जु बात स्याम मन जैसें ६६
मोहन ग्वाल होहिगो जबै❀सुखी होंहि सब ग्वाल जु तबै ।
ग्वाल फाँकुरे[4] सब हीं करैं❀मुख आवै सोई उच्चरैं ।।६७।।
कोऊ सूधौ कोऊ करै मरोर❀कोऊ करैं बिनु समुझैं सोर ।

---

[1]—क्रूर-टेढा, [2]—मनसुखा बोला अरे मना तुझे श्याम ने कुछ रिश्वत दी है ऐसा नजर आता है, [3]—श्याम चुप खड़े रहे, [4]—अपनी अपनी बातें हांकने लगे शोर मचाने लगे, ।

कोऊ कहैं गहि जु पीट पट छोर❀लाला देहु कछु हमें अकोर[1] ६८
काहू तू न वदतु नन्दलाल❀यौं ही भयौ चहतु हैं ग्वाल ।
हम अपनो मन भायौ लैं हैं❀तब वृन्दावन देखन दै हैं ॥६९
यह सुनि स्याम हँसत भये भारी❀धनि भैया तू बन जु पुजारी ।
कोऊ कहैं पहिले रावर[2] चलौ❀मैया दै हैं आदर भलौ ॥७०॥
कोऊ कहै चलौ पास व्रजराज❀सब ग्वालनि कौ सजैं समाज ।
सुबल कहैं तजि ऐंठ जु देह❀सब लरिकनि सौं राखि सनेह ७१
भयौ चहै जो तू गोपाल❀हम सिखवैं चलि तैसी चाल ।
भैया कह्यौ जु तेरो करि हौं❀सूधौ चलौं कबहुँ नहिं लरिहौं७२

दोहा—गाइ चरावन कौ मतौ, कीनौ मिलि गोपाल ।
भये आधीन जु सबनि कैं, हँसत परस्पर ग्वाल ॥७३॥
तू है राजा कौ कुँवर, छिन में जै है नाटि[3] ।
भैया मेवा लाइ दै, अब हीं लेइँ हम बांटि ॥७४॥
अछन अछन मोहन गये, मैया दृष्टि बचाइ ।
मेवा मिश्री गोद भरि, ग्वालनि दीनी लाइ ॥७५॥
छोटे छोटे यौं कहैं, बांटि बराबर लेहु ।
कहै मधुमंगल मनसुखा, हम कौं अधिकी देहु ॥७६॥
अपनी हीं गौं गरज कौं, समझावत हैं स्याम ।
भैया और जु लाइ देहुँ, जिनि रु बिगारौ काम ॥७७॥
लाइ लाइ दैं साँवरौ, बांटि बांटि लैं ग्वार ।
सबहिंनु बाँह[4] बचन दिये, चले नन्द दरबार ॥७८॥
ये कौकित नन्द लाल के, सखा कौतिकी लार ।

१—भेंट. २—नन्द भवन (राज महल) ३—मुकर जावेगा, ४—प्रतिज्ञा करते हाथ से हाथ मिलाया ।

वृन्दाबन हित रूप भयौ, चाहत गाइनु ग्वार ॥७६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दाबनदासजी कृत श्रीकृष्ण गेंदखेल गो चारन मतौ बरनन लीला बीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ इक्कीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—एकत ह्वै सब गोप सुत आये ग्रह ब्रजराज ।
ब्रज रानी बैठीं जहां, आरज बधुनि समाज ॥१॥
ग्वाल जुहारी[1] करत हैं, महरि आसिका देति ।
सबनि पास बैठारि कैं, भूर बलैया लेति ॥२॥
बेटा[2] कौं आनन्द की, कहन जु आये बात ।
नींके वदन प्रकासिये, सुनि शीतल होइ गात ॥३॥
राम कृष्ण स्यांने भये, देहु हमारे साथ ।
कुल कृत गाइ चराइबौ, लकुट[3] गहावौ हाथ ॥४॥
मना मनसुखा सुबल पुनि, मधुमंगल सुनि लेहु ।
मैं जांनी तुम स्याम सौं, करत जु अधिक सनेहु ॥५॥
हौं चाहति मन में अधिक, जो तुम भाषत बैंन ।
श्री पति विप्र प्रसाद अब, यह दिन देखौं नैंन ॥५॥

॥ चौपाई ॥

रँहसे फूले ग्वाल जु डोलैं❀सब हीं बचन आतुरे बोलैं ।
गाँव[4] फिरै धरबावतु नाम❀बन में गये सुधरि हैं स्याम॥७॥
बडडे ग्वाल बाँह जब गहि हैं❀या सौं बचन सीख के कहि हैं ।
बाबा[5] बैठि अथाई रहौ❀या सौं गाइ चरावन कहौ ॥८॥

१—मिलने पर अभिवादन आदि यथा योग्य किया, २—मैया ने पूछा कौन सी आनन्द की खबर लाये हो कहो, ३—लाठी गाय हांकने की हाथ में देने का मुहूरत करा दे, ४—मैया कह रही कि व्यर्थ गाँव में लोग मेरे बेटे का(भला बुरा नाम रखते हैं अच्छा है बन में जाकर गांव की ग्वालिनियों का रोज रोज का दिक्क करना बन्द होगा) ५—बाबा को इसे अब गायों का कार्य सौंपना चाहिये ग्वाल कह रहे हैं मैया तू बाबा को यह मन्त्रणा दे कर राजी कर.वह अपने समाज में कचहरी में बैठे रहा करैं ।

मैया वचन मानि जो लैं है❀अधिक सुखी तू हूं ह्वै जैहै।
गाइनु सौं ह्वै हैं जु चिन्हार❀मोहन जो नित रहि है लार॥९
विप्र बोलि अब सुदिन सुधाइ❀स्यामहिं गाइनु संग पठाइ।
भांति भांति के रचि पकवाँन❀ग्वाल जिमाइ द्विजनि दै दाँन॥
सब की मुरि मुरि लेति बलैया❀मो पै भयौ दयाल जु दैया[1]।
तुम मुख बचन सुन्यौ मैं ऐसें❀बरषै अमीं तपित कौं जैसें॥११
सुत भयौ गाइ चरावन लायक❀पुरजन गुरुजन अति सुखदायक
मैं गिरि गोधन दूध न्हवायौ❀यह मंगल देखन परचायौ॥१२
मेरौ कँन्हि गौंउन संग जाइ❀ता दिन पूजौं भाग्य मनाइ।
उनि जु कृपा करि यह दिन कर्यौ❀मंगल वचन श्रवन यह पर्यौ॥
लावौ बोलि कृष्ण के तात❀उनि हूं कौं जु सुनावौ बात।
बेटा सुबल सयानौ तू अति❀ऐसें हीं समुझावौ ब्रजपति॥१४
मधुमंगल तू नेरो आउ❀भीतर तें रोहिनी बुलाउ।
यह सुनि तुरत रोहिनीं आंई❀लागी महरि जु दैंन बधाई॥१५
सुनौ रोहिनीं तुम चित लाइ❀ग्वालनि कौं प्रेर्यौ गिरि राइ।
राम स्याम के सखा जु प्यारे❀जुरि मिलि इन अस बचन उचारे॥
मंगल बचन कहत यह बालक❀कीजै राम कृष्ण गो पालक।
सुनत रोहिनीं भरि मन मोद❀सुबल लियौ बैठारि जु गोद १७
बेटा तुम काहू पै सुनी❀कै तुम अपने मन सौं गुनीं।
मैया भैया दोऊ सुख दायक❀भये जु गाइ चरावन लायक १८
सुबल जाइ ब्रजपति लै आयौ❀समाचार सब कहि समुझायौ।
नौहू नन्द और पुर आरज❀बैठे सब प्रफुलित मुख वारिज[2]॥
बोलौ बड़े बड़े सब ग्वार❀कहा तुम मन में कियौ विचार।

---

[1]—दैव या विधि रचियता विधाता, [2]—कमल।

राम कृष्ण दोऊ स्यांने भये❀कबहूं न संग गऊनि कें गये २०
या तें हम मन ऐसी पाई❀गाइनु संग चलैं दोऊ भाई।
राम कृष्ण कों बूझौ जाइ❀जो वे कहैं चरावन गाइ ॥२१॥
तौ हम नीकौ सुदिन सुधावैं❀गाइनु के संग उनहिं पठावैं।
दोऊ भैया जौ हाँ करैं❀तौ हम यह मंगल विस्तरैं ॥२२
बात कहौ तुम सब मन खोलि❀जौ हाँ करैं तौ लावौ बोलि।
तुम बालक बालक पुनि एहा❀या ते उपजत है सन्देहा ॥२३॥
बडडे ग्वाल संग हौं दै हौं❀बहुरि सबेरी छाक[1] पठै हौं।
अति सुकुँवार पले ये छांहि❀जिनि जिय डरै जात बन मांहिं॥
सुबल गयो यह सुनि के दौरि❀खेलत मिलै बाहिरी पौरि।
भैया बात बनि गई तेरी❀बाबा बात सुनि लई मेरी ॥२५
मैया सुनत मगन ह्वै गई❀गऊ चरावन अज्ञा दई।
अब तुम मन खुलि कै कहि देहु❀बाबा पै ते अज्ञा लेहु ॥२६॥
उनि मन देहु सन्देह निवेरि❀ऐसौ दाव न मिलि है फेरि।
सदा मानियौ भलौ जु मेरौ❀मैं अभिलाष पुजायौ तेरौ ॥२७
दोऊ भैया आए भगे❀सुबल सखा के गर सौं लगे।
बाबा कैसें कही जु तो सौं❀भैया साँची कहि दै मो सौं ॥२८
तू है सुबल हँसोरा[2] भारी❀जिनि बहकाइ दिवावै तारी।
अरे स्याम तू दरसतु छोटौ❀ए पै बडो पेट कौ खोटौ ॥२९॥
ज्यौं त्यौं करि मैं बात बनायौ❀तऊ तोहि विसवास न आयौ।
अरे[3] मित्र तू बुरौ न मानि❀हौं बूझत हितकारी जानि ३०
और न काहू तें हौं डरौं❀बाबा ही की संका करौं।
बाबा[4] मैया प्रमुदित महा❀कहौं आज की फूलन कहा ३१

---

[1] —दाम दामीं आदि भाजन की सामग्री समय पर बन में पहुंचा आते हैं वह छाक होती है, [2] —मखौलिया ठठेबाज, [3] —श्याम सुबल की मानो बढाई करते अब कह रहे हैं, [4] —सुबल ने कहा कि एक बाबा ही क्या मैया भी मैंने सहमत कर ली है।

बातें करत चलत हैं धाइ❀ऐंडे बैंढे परत जु पाइ।
व्रजपति देखत हरषित भये❀राम कृष्ण आंकों भरि लये ॥३२
बेटा खेलत मन न अघाइ❀भूखे गयौ बदन कुम्हलाइ।
बदन पौंछि कर लाड़ू दयौ❀राम कृष्ण मन आनन्द भयौ ॥
तेरे मित्र सबै यौं कहैं❀गाइनु ग्वाल करन तुहि चहैं।
तुम अपु मन कौ कहौ हुलास❀दोऊ बन्धु बैठि के पास ॥३४॥
गऊ चरावन जौ मन इच्छा❀तौ सुनि लेहु हमारी सिच्छा[1]।
बन में जाइ न ऊधम कीजौ❀ग्वाल बडिन की सिख सुनि लीजौ
गहरे जल न्हैयो जिनि जाइ❀ऊँचे तरु चढियौ जिनि धाइ।
बात बडे की सुनि जिनि चिरियौ❀कूरप[2] सुनि लखि पाछें फिरियौ
नाम बूझि बन के फल खैयौ❀संग छाडि न्यारे जिनि जैयौ।
सूखे तरु डारी जिनि झूलै❀करते[3] लकुट डारि जिनि भूले३७
अधिक मगन ह्वै बन जिनि खेलौ❀अँवनी[4]बिल में कर जिनिमेलौ
मित्र वस्तु जिनि धरौ लुकोइ❀बन जिनि रहौ अकेले सोइ॥३८
मोर[5] पच्छि की पट्टी रचियौ❀पहिल व्यात गाइनु शिर सचियौ
कुंज अँधेरी देखौ जहाँ❀भूलि पाउ जिनि धरियौ तहाँ३९
जबहिं जाउ रविजा कें तीर❀न्हैयौ जहाँ कमरि होइ नीर।
क्रीडा बहुत न जल में करौ❀गहरैं नीर जाइ जिनि तरौ॥४०
कच्छ मच्छ यमुना में घनें❀औघट न्हान करतु हौं मनें।
बड़े मित्र को आदर दीजौ❀छोटौ जानि दया अति कीजौ४१
दाऊ की अज्ञा में रहियौ❀बढि कै वचन न कबहूं कहियौ।
काली दह जु ताल बन ओरी❀गाइ जात लीजौ जु बहोरी[6] ४२

१—शिक्षा, २—खड्ढ या गड्ढा, ३—हाथ की लाठी कहीं मत रखना न भूल जाना, ४ भूमि के छेदों (बिलों) में हाथ मत घुसाना, ५—पहिली बार गौ ब्यावे तो उसके सिर में मोर पंख की पट्टी सजाना, ६—बटोर लेना वापिस हाँकना।

बहुत हरे त्रिन देखो जहाँ❀गाइनु जाइ चरैयौ तहाँ।
ऊँचे टीलै बैठक कीजौ❀ग्वाल मंडली संग करि लीजौ॥
बासर जाम दूसरौ जाइ❀सरवर नीर प्याइयौ गाइ।
गऊ ब्याइ ताकी सुधि लीजौ❀सब की सुविधि संभार जु कीजौ
छींके छाक जु तरवर धरियौ❀भूख लगैं तब भोजन करियौ।
ग्वालनि सौं कीजौ अति प्रीति❀यह अपने कुल की रस रीति४५
इहि विधि शिक्षा करी जु तात❀पुनि बूझी मोहन सौं बात।
गाइनु पाल भयो जु चहौ❀सकुचि छांडि तौ मो सौं कहौ॥
तव हँसि कह्यौ कमल दल नैंन❀बाबा सुनि लेहु मेरे बैंन।
अधिक उमाहौं राखौं मन में❀गाइ चरायौ चाहौं बन में ॥४७॥
जिहि बन कहौ तहाँ लै जै हौं❀सखा सबनि कौं आनन्द दै हौं।
मैं यह कही बात सुनि लेहु❀गाइ चरावन अज्ञा देहु ॥४८॥
तुम[1] जु कही सो मन में धरि हौं❀गाइनु कौं जु सुखित अति करिहौं
मेरे संग बलि दाऊ चलौ❀सुदिन मुहूरत सोधौ भलौ ॥४६
बड़े भोर गोधन जु उठाऊँ❀घास अछीकर जाइ चराऊँ।
पय भाजन करि घर भरि दैहौं❀जादिन हौं कर लाठी लै हौं॥५०
बिनती सुनौ घोष के नाथ❀अब हौं फिरि हौं गाइनु साथ।
छोटौ जानि न तुम जिय डरौ❀अब प्रसन्न ह्वै अज्ञाँ करौ॥५१॥
बातें करत श्याम सह जोर[2]❀ब्रजपति चितवत मुख की ओर
गाइ चरावन हौंसत मन में❀बेटा खबरि परैगी बन में ॥५२॥
कोमल गात कहौं हौं कहा❀धूप लगै कुम्हिलै हौ महा।
बच्छ चराये निकट जु ग्राम❀अब परि है बर है[4] सौं काम॥५३

---

[1] —लीला धारी भगवान ने पिता को कहा मन में सब शिक्षा है परन्तु आचरण नहीं करना था सब कुछ बिरुद्ध करना था सो प्रतिज्ञा नहीं की कि पालन करूंगा, [2] —धीरता वीरता की।

यौं हँसि कही घोष के ईश❀पुनि पुचकारि धरयौ कर शीश
मोहन कह्यौ करौंगो तेरौ❀तो[१] धीरज देखन मन मेरौ॥५४
विप्र पढैला[२] सुबल जु लावौ❀तासौं कहि कै सुदिन सुधावौ।
मैं लीनी दुहुँ मन की थाह❀गाइ चरावन है जु उमाह ॥५५
सुबल ओर तब सैंन जु दीनीं❀पुनि मन करि कीनी आधीनीं।
मोहन मन की बात जु पाइ❀सुबल उठ्यौ तब हीं मुस्काइ ५६
ताही छिन जु गरग रिषि आये❀अधिक मान दै भँवन बुलाये।
नन्द नवायौ सादर सीश❀हरषि दई रिषि राज असीश ५७
महरि अरघ दै आसन दियौ❀हाथ जोरि पा लगन कियौ।
कुशल क्षेम बूझी चित लाई❀पुनि बोल्यौ जु नन्दीस्वर राइ५८
अन्तर जामी तुम जु कृपाल❀कियौ मनोरथ हम इहिं काल।
राम श्याम गोचारन शुभदिन❀कहौ विचारि अहो मुनि इहि छिन
पत्रा खोलि विचार जु कीयौ❀समझि गरग तब ऊतर दीयौ।
अति उत्तम यह कातिक मास❀आठैं सुदि शुभ लगन प्रकास ६०
श्रवन नक्षत्र और गुरुवार❀गो चारन दिन यह जु विचार।
भलौ महूरत निर सन्देह❀इहि रितु अधिक न आंधी मेह॥
अधिक धूप नहिं अधिकौ शीत❀कीजै यह कारज जु पुनीत।
निर्मल गगन दिसा सब मही❀जल निर्मलता जात न कही ६२
घास बहूत विधि अँवनी बढैं❀तरु बेलिनु नव पल्लव कढैं।
ज्यौं ज्यौं गाइ हरे त्रिन चरैं❀देखि ग्वाल मन आनन्द भरैं ६३
मुरली धर जब ह्वै हैं ग्वार❀तुम घर गोधन बढौ अपार।
गाँन वाद्य धुनि बहु विधि कीजौ❀रवि कैं उदय लकुट कर दीजौ॥
पुर रचना अस कीजै नन्द❀ज्यौं सुत मन बाढै आनन्द।

१—तेरे धैर्य की परीक्षा करनी है, २—ज्योतिषी ब्राह्मण।

मन दै सुनौ घोष की रांँनी❀नारायण परशाद कहांँनी ॥६५
बिप्रन कौं बहु दच्छिनांँ देहु❀गोदी ओट असीश जु लेहु ।
बडी वयस सुत विधिना दीयौ❀गऊ चरावन कौ दिन कीयौ ॥६६
मन दै कै पूजे भुव देवा❀तुम्हैं फली यह तिनकी सेवा ।
खेलति रमा घोष के मांहि❀जा मंगल कौ अन्त जु नांहि ६७
सुनि ब्रजपति मन अति अनंदे❀दछिना दै जु गरग पद बन्दे।
यसुमति सुनत मोद मन भरी❀पूजा सुविधि गरग की करी६८
ब्रजपति पुनि चरनन में नये❀सुनि श्रीकृष्ण मुदित मन भये ।
नौ हूं नन्दनि दछिना दई❀पुर घर २ में खबरि जु भई॥६९
हँसि २ एक एक सौं कहैं❀नित मंगल जु बडे घर चहैं ।
तन मन अति फूले बलराम❀हँसि कर गहि लियौ सुन्दर स्याम
लाल भयौ चित चीत्यौ तेरौ❀अब कछु गुन मानैगौ मेरौ ।
सुनि जुरि आये ग्वार समूह❀लागे करन परम कौतूह ॥७१॥
सब कौ मतौ सफल भयौ भैया❀किये प्रसन्न जु बाबा मैया ।
फल्यौ मनोरथ मुरलीधर कौ❀पुनि चीत्यौ पुर नारी नर कौ ७२
एक एक कें दियें गर बहियाँ❀फूले फिरैं गलिनु के महियाँ ।
सेली[1] रचन लगे सब ग्वाल❀पोहन लागे गुँजनि[2] माल ॥७३
मोर पच्छ के चन्दवा लै कैं❀माथे धरत मुदित मन है कैं ।
अंबर कंवर धोवन लगे❀इक गिरि धातु लैंन कौं भगे७४
घँसि घँसि चित्रित हैं सब गात❀नट भट से बनि हिये सिहात ।
सुनि सुख सरस्यौ सब कौ हियौ❀ब्रजपति भँवन अलंकृत कियौ॥
मंगल सजियति[3] रचना घर २❀किये शिंगार फिरैं नारी नर ।
अति रचना पुर लग्यौ विराजन❀नोबति लगीं नन्द घर बाजन॥

---

[1]-कमर में बांधने का दुपट्टा, [2]-ज्ञालरी (रत्तियो) की माला पिरोवन लगे, [3]-सजाई गई

सब के बदन डहडहे[1] राजत❀ग्वालनि कौं पट भूषन साजत।
सब सनबंधी न्यौति[2] बुलाये❀गोप राज घर बिहँसत आये ७७
पौरिनु पौरिनु सोभा ऐसी❀कहत न आवै उपमा जैसी।
भवँन भवँन महकत पकवाँन❀भवँन भवँन होइ मंगल गाँन७८
हरखित स्याँम सखिन लियें साथ❀मधुमंगल कौ गहें जु हाथ।
[3]चुपरें डोलें सब हीं आँनन❀भैया काल्हि चलैंगे कानन॥७९
बेनु बाँसुरी सब हीं लावौ❀कैसी सुन्दर मोहि दिखावौ।
नये नये अलगोजा[4] लीजौ❀नांनां रंगनि चित्रित कीजौ॥८०
एक बार बनि निकसौ ऐसें❀पुर बासी जु प्रसंशैं जैसें।
न्यौते ग्वाल घोष महँतौनि❀पुनि पुर की जो छतीसौं पौंनि॥
सबै जिमाये नीकी भांति❀गो चारन की दीनी[5] पांति।
राम कृष्ण हूं भोजन करिकैं❀सैंन करी उर आनन्द भरि कैं८२

दोहा—ग्वालनि कींनी बीनती, नन्द सुनी दै काँन।
गो चारन कौं साँवरो, करि हैं भोर पयान ॥८३॥
मुरली धर के लाड कौं, किंहिं सम करौं बखान।
यसुमति सम माता नहीं, पिता न नन्द समान ॥८४॥
अभिलाषा भई कृष्ण उर, बन बन चारन गाइ।
सो ब्रज पति पूरन करी, मंगल सुदिन सुधाइ ॥८५॥
बरने हैं पुनि बरनि हौं, मंगल चरित अनूप।
भृत्यनि[6] कौं लागै जु प्रिय, वृन्दावन हित रूप ॥८६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्रीकृष्ण गो चारन मंगल महूरत बरनन लीला इकीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

---

[1] —फूले फूले, [2] —न्यौता, निमंत्रण या बुलावा दे के बुलाया, [3] —सब के मुख चिकने तेल फुलेल लगे चमक रहे हैं, [4] —एक प्रकार की बाँसुरी, [5] —प्रीति भोजन दिया, [6] —दास भाव उपासकों को।

❀ अथ बाईसवीं लहरी प्रारम्भ ❀

दोहा—श्री हरिवंश प्रशाद कहौं, गो चारन नन्द नन्द ।
जा करि दिन दिन बरषि है, काँनन अति आनन्द ॥१॥
बीति गई सुख में निशा, पंछिनु कियौ अलापु ।
जागीं रानी घोष की, नित कृत कियौ जु आपु ॥२॥
जागे दासी दास पुनि, सजियत मंगल साज ।
गोचारन त्यारी करन, आये यह ब्रजराज ॥३॥
ढोली ढोल बजावहिं, अरु बाजे समुदाइ ।
मंगल बांनी सब पढैं, पौरि भीर भइ आइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

यसुमति प्रात सबनि सौं कही❀बेगीं[1] लगौ बिलोवन दही ।
आज लाल गोचारन जै हैं❀सद[2] माखन की अरबी दै हैं ५
हरे हरे गोबर अजिर लिपायौ❀बोलि सुहागिनि चौक पुरायौ ।
केशरि घँसि जु उबटनौ कियौ❀सुविधि न्हवाइ तिलक रचि दियौ
पट पहिराये पियरे रँग❀भूषन विविध सचे अँग अँग ।
शिर पर रच्यौ मुकेशी चीरा❀कलँगी कनक जटित नग हीरा॥
रतन पेंच रचि बान्ध्यौ तात❀सोभा लखि मन मन जु सिहात ।
मंगल गावति पुर की बनिता❀सब कौं सनमानति हरि जनिता॥
आये विप्र वेद ध्वनि करैं❀जाँचक विरद पौरि उच्चरैं ।
सिमटे[3] सब पुर के नर नारि❀आये ग्वाल सिंगारि सिंगारि ॥६
नौ हूं नन्द आइ जब जुरे❀बडी पौरि सादानैं[4] घुरे ।
बलि शिंगार कियौ ऐसी भांति❀सोभा नांहिन अंग समाति ॥१०

१—शीघ्र, २—ताजा, ३—इकत्रित, ४—हर्ष सूचक बाजे ढोल सहनाइ आदि एक ही बार बजाए ।

दोउनि सुविधि जिमावति माइ❀मन रुचतौ पकवान जु लाइ।
जैंवत राम कृष्ण दोउ भैया❀लाईं काढि रोहिनी घैया ॥११॥
ग्रास ग्रास मनुहारि जु करैं❀हँसि हँसि लाल[1] वदन तब धरैं
भवँन भीर पुनि वीथिनु भीर❀आवत जात न मिलै उछीर[2] १२
भोजन करि कैं तृपत जु भये❀दोउ भैयन अँचवन लये।
रोरी अक्षत करैं जु टीकौ❀लाल भाल लागतु है नीकौ १३
आरज[3] गोपी धरि कर सीश❀अंचल लै लै देति असीश।
गोधन बढौ तात कै धाम❀चिरजीवौ जु कृष्ण बलराम॥१४
करजनि चटकि बारनें लेहिं❀न्यौछावरि जु भिक्षकनि देहिं।
ब्रजपति नें तब ग्वाल बुलाये❀भूषन बसन सबनि पहिराये॥१५
नारायण के मन्दिर गये❀मोहन भेंट धरत तहाँ भये।
बहुरि नन्द गो दान करायौ❀गरग चरन कौ माथौ नायौ॥२६
भूआ आइ आरतौ कीनौं❀ब्रजपति बांछित ताकौ दीनौं।
सबहि बजावत गावत गये❀थापे पीठि गौअनि के दये ॥१७
ग्वाल संग सब लीने बोलि❀खरिकनि के फाटक दिये खोलि
जब निकसे गाइनु के ठाट[4]❀पुर चहु ओर गई रुकि बाट १८
करि शिंगार निकसे नर नारी❀पंच नाद कोलाहल भारी।
राम कृष्ण ग्वालनि मधि राजैं❀मनु शशि उडुगन मध्य विराजैं १९
गांव गोइँरे विरमे जहाँ❀छोटे बड़े मिले सब तहां।
ब्रजरांनी तब ग्वाल बुलाये❀ठोडी गहि गहि सब समझाये २०
प्रेम द्रवत उर ऐसें बोली❀बेटा हौं ओटति हौं ओली[5]।
यह बालक बन कबहुँ न गये❀आजु तुम्हारे संग मैं दये ॥२१
इनकौं मन लीयें सब रहियौ❀छोटी बड़ी बात जिनि कहियौ

---

[1]—हँस हँस कर मुख में ग्रास लेते हैं, [2]—माग, रास्ता, अवकाश, [3]—आर्य्य, बड़ो बूढ़ो, [4]—झुंड या टोल, [5]—अर्थात अंचल पसार कर भिक्षा मांगती हैं।

अति लघु वैस जु दोऊ वीर❀प्यास लगै पिवाइयौ नीर ॥२२॥
धूप लगैं जु विरमियौ छांह❀चलत संग लीजौ सब माँह[1] ।
सब विधि रच्छा इनकी कीजौ❀मेरी मान बीनती लीजौ ॥२३॥
मैया मोहन निपट सयाँनौ❀तुम छोटौई सौ जिनि जानौ ।
याके पेट बहुत गुन भरे❀हमकौं नीकैं जांनैं परे ॥२४॥
बेटा यह हाँसी की बात❀भोरौ मेरौ साँवल गात ।
सब की ओलीं मेवा भरचौ❀बन कौं स्याम बिदा तब करचौ॥
ठाडे जहाँ जु नौ हूं नन्द❀इह उत्साह भरे आनन्द ।
स्यांने ग्वाल दिये बहु साथ❀तिन्है गहायौ सुत कौ हाथ॥२६
गिरि गोवर्धन सन्मुख जाउ❀आजु मानसी गंगा न्हाउ ।
गाइ अछीकर चरि हैं घास❀गिरि लखि होइ उर स्याँम हुलास
स्याम गऊनि के पाछे चले❀सोभित मध्य सखनि के भले ।
मंत्र कियौ सो सफल जु भयौ❀सखा श्रवन लगि यौं कहि दयौ

दोहा—सखनि संग मोहन चले, लटकनि परम अनूप ।
खग मृग विथकित होत हैं, ऐसो कमनीं रूप ॥२९॥
गाइनु हूं मान्यौ जु मन, मंगल आज अभूत ।
हमैं सुविधि अब पालि हैं, नन्द महर कौ पूत ॥३०॥
विश्वपाल पाल्यौ महरि, कीने चरित रसाल ।
सो गाइनु पाछैं चल्यौ, नाम परचौ गोपाल ॥३१॥

॥ चौपाई ॥

धौर गऊनि के चलौ जु टैंन[2]❀बही गंग मनु महित जु फैंन ।
पांयर टोल चले यौं जान्यौं❀बागु बसन्त जु फूल्यौ मान्यौं ॥

१—मध्य में, २—झुंड, समूह ।

स्याम बरन बन लसीं जु ऐसें❀स्याम सैल रविजा धसें जैसें ।
अरुन बरन छबि परत न कही❀मनु सह जोर सरस्वति बहीं॥३३
कोऊ टोल चलीं तीतुर बरनीं❀कांनन अवँनि अलंकृत करनीं।
कोउ इक लहँडे[1]अम्बर रंग❀मोहन चले चरावन संग ॥३४॥
बिरमें[2] ग्वाल जु बट संकेत❀तरवर सरवर जहाँ छबि देत।
बीनति[3] कुँवरि सखिनु संग फूल❀चमकैं तिन तन सुरंग दुकूल३५
भैया[4] लखि उनि बेलिनु कूल❀दमकत हैं दुकूल कै फूल ।
सोभा[5] कौ सौ लगतु समूह❀सुनियतु तहाँ परम कौतूह ॥३६
अरे[6] मित्र व्यौरौ कहि एह❀मन को करि जु दूरि सन्देह।
कौतिक दरसतु है यह महा❀मन उत्साह बढतु कहौं कहा॥३७
हम तुम न्यारे चलें जु दोऊ❀तीजो और लखै नहिं कोऊ ।
लीनों संग जु सखा सुबाँहु❀देखन कौ उर बढ्यौ उमाँहु ॥३८
दृष्टि बचाइ सबनि की गये❀कुंज ओट ह्वै देखत भये ।
मनु सोभा तन धरैं अनंत❀गोप दुलारी सब गुनवन्त ॥३९
दोहा—गौर तेज मधुरौ महा, अँग अँग परम अनूप ।
ताहि देखि विथकित भयौ, ढोटा गोकुल भूप ॥४०॥
संग सहेली सोंहनी, महा मोहनीं ए जु ।
मोहन चख[7] चौंधी दई, अस जु रूप कौ तेजु ॥४१॥
भूख लगी कै प्यास तुहि, भैया मुख ते बोलि ।
चक फेरीं सी लेत कहा, मो सौं कहि मन खोलि ॥४२॥
अरे मित्र चेटक कछू, मोहि दरसतु तुहि नांहिं ।

१—लहरिया रंग, २—विश्राम किया, ३—बट संकेत पर संयोग वश श्रीजी सखियों के साथ फूल चुन रही थीं, ४—श्याम सखा से पूछ उठे ५—शोभा का मानो कोई पुंज उधर है ऐसा कह रहे हैं; यह श्रीजी का प्रथम दरसन प्रसंग है, ६—श्याम पूछ रहे हैं कि इस दृश्य का रहस्य कहो मेरे विकल्प को दूर करो, ७—प्रथम दरसन से नेत्र चौंधिया गये जो अवस्था श्याम की हुई उसे सखा सुबाहु पूछ रहा है ।

मुख कहि आवतु है नहीं, समुझतु हौं मन माहिं ।।४३।।

।। चौपाई ।।

बरजत है बन चलि जिनि लला❀अब खेलतु नट की सी कला ।
बेगौ चलि अब मिलै सखनि में❀ढूँढत ह्वैंगे सघन लतनि में ।।
भैया अब आतुर जिनि होहि❀रंचक सुचित हौन दै मोहि !
तू चलिबे कौं करत बिचार❀मो मन गयौ जु काहू लार ।।४५
बाबा[1] शिक्षा बहुत जु करी❀लला तैं न मन रंचक धरी ।
गाइनु संग आजु हीं दियौ❀तैं बन में यह कौतिक कियौ ४६
तुहि तब लग भोजन नहिं भावै❀जब लग कछु ऊधम न मचावै ।
बिनु ही ताल पखावज नचै❀तोते कोऊ स्वांग न बचै ।।४७।।
नगर कुलाहल बहुत जु करै❀बन में हू तू नाहिन डरै ।
खेलौ खेल जु ग्वालनि संग❀लला न ऐसो सीखौ ढंग ।।४८।।
कहा देखि तू बिथकित भयौ❀मो कौं मन कौं भेद न दयौ ।
भैया अन कहनी है बात❀तू सुनाइ है तात जु मात ।।४९
जो मन मरमी तू भयौ चहै❀तौ जिनि काहू सौं यह कहै ।
हौं बूझौं सो तू कहि देह❀तब मो मन कौ भेद जु लेह ५०
साँचौ सखा कहावै सोई❀मित्र हि रुचै बात करैं जोई ।
लला बात तो मन की पाई❀इनि बातनि नहिं रहै बड़ाई ५१
रूप सवादी[2] लोचन महा❀ऐसे हाथ लगैंगो कहा ।
काज सरैंगो[3] धीरज धरैं❀कछु न होइ छन्द बँद जु करैं ।।
वे जु गईं बरसाने सबै❀तू चलि मिलि ग्वालनि में अबै
जहाँ गईं तहाँ लै चलि बीर❀मो मन नांहि धरतु है धीर ५३

---

[1] —सखा सुबाहु कह रहा है, [2] —रूप पर लट्टू होने वाले नैन, [3] —यथा समय काम होगा तो सुन्दर होगा।

गहलौ[1] भयौ कि स्यौंनौं स्याम❀चलि है उहाँ कौन के धाँम।
मुख ते अब जिनि अलबले भाखि❀मन की डोरि हाथ गहि राखि
यह सुनि कछु चेत से भये❀सखा अंक उठि कैं लगि गये।
भैया तू कहि भलौ कि भौंडौ[3]❀मेरो यह विचार है औंडौ[4] ॥५५
प्रथम ही रूप बौंहनी[5] भई❀निरखी बन वैभव यह नई।
को ही ये जु रहति है कहाँ❀मित्र बताइ ठौर तू तहाँ ॥५६॥
जौ यह कह्यौ मानि है मेरौ❀तौ हौं भलौ काज करौं तेरौ।
कहा नाम सुन्दरि गुनि आगरि❀गोप सुता जाके संग नागरि ॥
कौंन भूप की यह अति लडी❀रूप अधिक संग संपति बडी।
कौंन धाम यह उतपति भई❀निर्मित करी कौंन वह दई ॥५८
देखि रही नहिं चित वृत्ति ठौर❀भैया अधिक कहा कहौं और।
मो दृग मीन अधिक अरबरे[6]❀रूप सिन्धु में जाइ जु परे ॥५९
हौं काढन कौ बल करि रह्यौ❀ये मानत नहिं मेरौ कह्यौ।
जल अरु मीन सदा संयोग❀ऐसें कहत सयाने लोग ॥६०॥
मधुर रूप कौ सो यह पुंज❀कियौ प्रकास सघन इहिं कुंज।
भूषन रतन अलंकृत अंग❀करी नैंन मन की गति पंग॥६१
रंचक इत उत चलि नहिं सके❀रहे बल छाडि रूह उहि छके।
बरति गई कोऊ ऐसी घरी❀मेरे मन लीनी भाँवरी ॥६२॥
भैया बड़ी रूप की चोट❀ढाहि दियौ जिन लज्या कोट।
अरे मित्र तू भेदी नांहि❀जो बीतति मेरे मन मांहि ॥६३
भैया हौं बूझतु हौं तोहि❀अब कछु जतन बताइ जु मोहि
तबहिं सखा ने हँसि कर गह्यौ❀बचन विचार जु ऐसें कह्यौ ६४

१—बांवरो या मूढ बुद्धि, २—बे सिर पैर की बातें मत बोल, ३—कुत्सित विचार या अनर्थक, ४—असमयक बे मर्याद, ५—बन के पहिले दिन ही मंगल सकुन हुआ कि बन का एक अपूर्व वैभव मानो इस रूप दरसन से हुआ अर्थात् गो चारन अनेक मंगलों का हेतु होगा, ६—व्याकुल होगये ।

दोहा–रे भँगरैला[1]! नन्द के, मो सिख सुनतु न कॉन।
बोलत निपट कराहि कैं, कहा ह्वाँ वरषे[2] बॉन ॥९५॥
भैया वचन कठोर अति, तू सुनाइ जिनि मोहि।
जो उपाइ बूझ्यौं जु मैं, सो अब करनौं तोहि ॥९६॥
कहि ब्रज में बड़ देव को, सेऊँ बड़े उमाह।
सो जु देहि बरदॉन तब, होहि भॉन घर ब्याह ॥९७॥
यह जिय सोचि विचारि कै, मोकौं जुक्ति बताइ।
कहत नन्द को लाडिलौ, सुनत सखा मुसिकाइ ॥९८॥
पॉवन सर में न्हाइ कै, बन्दनि करि गिरिराज।
मोहन ह्वै हैं बेगि हीं, तो मन वांछित काज ॥९९॥

॥ चौपाई ॥

मन जु लगायो तैं जिहि ठौर❀गोप सुता वह सब शिर मौर।
विधिना रचित होहि जौं जूरी❀तौ अभिलाष होहि तो पूरी॥७०
इन बातनि तें मन अहुराइ[3]❀अब चलि मिलैं सखनि में जाइ
भैया तेरौ कछू न करि हैं❀मो सौं ग्वाल जु[4] बाथी परि हैं॥
वे सब दोष जु मेरो मानैं❀तेरे मन की तू ही जानैं।
बेगौ[5] चलि हौं कहतु जु टेरि❀सनय सनय[6] या मनहिं सकेरि७२
मित्र जतन हौं करत घनेरौ❀मन सौं चलै न पराक्रम मेरौ।
तो कौं मैं बहु विधि परचायौ❀नांम ठॉम तैं तऊ न बतायौ॥७३
तब हँसि कहत सखा अस बॉनी❀सुनि अब मन रुचती जु कहॉनी।
भॉन नगर सब पुर शिरमौर❀हरिपुर[7] हू ते कमनी[8] ठौर ॥७४

१—भाँग पीने वाले, २—क्या कोई तुझे तीर मर्म में लगा है जो पीरा से चिल्ला रहा है, ३—देर मत करे, ४—मेरी ख्वारी होगी कि पहले दिन श्याम को तू कहां रखे रहा, ५—शीघ्र चल, ६—धीरे धीरे प्रयत्न करके मन को सचेत कर, ७—वैकुण्ठ, ८—शोभा मय या सुन्दर।

श्री वृषभान भूप रजधानी❀महा सुलच्छन कीरति रांनी।
श्री राधा यह तिनकी सुता❀तोरति फूल सखिनु संजुता॥७५
तहाँ गये हे तुम अति रूरे❀नन्द सुवन सब गुन करि पूरे।
भली[1] भई रहे कुंजहिं ओट❀आगे गये निकसती खोट॥७६॥
मैया गिरि पूजति इहि हेत❀पुनि पूजति देवी संकेत।
कमलापति[2] आराधति रहै❀तुहि व्याहन बरसाने चहै॥७७
तू जु अधीरज दीखतु भैया❀कहा करैं तात कहा करैं मैया।
दृष्टि मिलत भरि सकै न पैंड[3]❀राखत बड़ी सखनि में ऐंड॥७८

दोहा—मन के मरमी सखा ने, कहै कृष्ण सों बैंन।
तदपि फेरि सके न मन, रूप उरझि गये नैंन॥७९॥
भाँनि कुँवरि हू प्रथम ही, देखे नन्द कुमार।
उदै भयो अनुराग उर, पूरबली जु चिन्हार[4]॥८०॥
बाँनी कहा लग बरनिये, गाढ प्रेम हिय लाग।
वृन्दावन हित रूप कह्यौ, प्रथम उभै अनुराग॥८१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्रीकृष्ण गो चारन प्रथम अनुराग बरनन लीला बाईसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे॥

॥ अथ तेईसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—सखा संग पाछें चले, जहाँ मंडली ग्वार।
छल बल की बातें रचत, मोहन बडे खिलार॥१॥

॥ चौपाई ॥

तोरि गोद भरि बन फल लये❀इहिं मिस हँसत सखनि में गये।

---

[1] —भाव यह है कि अच्छा हुआ कि कुंज की आड में तुझे दरसन हुए कहीं पास गये होते तो क्या पता तेरी क्या दशा होती तेरे मन की चपलता क्या रंग लाती, [2]—नारायण कुल देव, [3]—कदम न भर सके, [4]—अनादि सिद्ध सम्बन्ध की जाग्रति हुई।

आजु प्रथम ही हौं बन आयौ❀यह फल भेंट तुम्हारी लायौ ॥२
बाँटन लगे सखनि के गन में❀स्याम परम आनन्दित मन में।
तुम जु मोहि गाइनु पै लाये❀मैं तुम कौं बन फल जु खवाये ॥
छाक पठावैगी जब मैया❀सोऊ बांटि लेंहिंगे भैया।
आजु हीं स्याम ढीठ तू भयौ❀हमैं छाडि बन इकलौ गयौ ॥४
हम समुझतु सब तेरी गटी❀करतु फिरतु बातें अटपटी।
बाबा ने कह्यौ बचन जु भलौ❀गाइनु लै गोवर्द्धन चलौ ॥५॥
गिरि कें सन्मुख गायें चलीं❀चरि जु हरे त्रिन गोधीं भलीं।
जहाँ तरवर मिलि लपटीं बेलीं❀मनु पति भेंटी वधू नवेली ॥६॥
कुशम भूमिका झूमैं जिन में❀भ्रमत मत्त अलि दिषियत तिनमें।
अति रुचि दायक झिरननि नाद❀सुनत हियें बाढतु अहिलाद ॥
जहाँ पसु पंछी अति से लसैं❀सोभित सुखित सु निर्भय बसैं।
गिरि की सिखिर स्यामु चढि गये❀देखि परम आनन्दित भये ॥८
शुक पिक चहचर कुहकत मोर❀इहि:विधि गिरि सोभा चहुँओर।
बैठे मित्र मंडली जोरि❀सखा पके फल लाये तोरि ॥९॥
एकनि दैंहिं एकनि जु चिरावैं❀कर पसारि एकनि डहँकावैं।
हम तेरी राखी जु बडाई❀लाइ दिये फल तो कौं भाई॥१०
हम हीं कौं डहँकावत ए रे❀भैया चाकर हैं कहा तेरे।
मित्र बकैं जिनि आगें आउ❀ये फल सब हीं मिलि कै खाउ ११
सुबलहिं सैंन मनसुखा दई❀मुरली चोर स्याम की लई।
भैया मेरी मुरली कहाँ❀अधिक कुलाहल माच्यौ तहाँ१२
मोहन बहुत करत क्यौं सोर❀जा पै निकसै सो तो चोर।
चोरहिं नहीं सही तू करै❀बिना बिचारैं सब सौं लरैं ॥१३
तैं हो पहिल चिरायौ सबै❀तोहि चिरावत ये सब अबै।

कहतु मनसुखा डरी[1] जु पाई❀लेहु दाम दै कुँवर कन्हाई ॥१४
मैया जो कछु दैनौं करि हैं❀तौ मुरली तो हाथ जु परि हैं।
मोहन मन मैलौ जिनि कीजै❀मैया यह जु मुरलिया लीजै॥१५
लागी भूख छाक नहिं आई❀एती बार कहाँ जु लगाई।
कै कहूं भूलि सघन बन परी❀कै आवत जु बाट में लरीं ॥१६
ऊँचे चढि किलकार जु देहु❀छक हारी कौं नाम जु लेहु।
कै जु कहूं गहवर बन धसीं❀कै कहूं बैठि रहीं घर बसीं॥१७
मैया किनि यह भूख बनाई❀वाकौं रंचक दया न आई।
भीतर बैठी रौंहद[2] करै❀काहू ते यह तनिक न डरै ॥१८
सब हीं कौ यह खोलै मर्म❀रहन न देई धीरज धर्म।
बन में आयें अधिक सतावै❀या डाकिनि कौं को समुझावै १९
उदर मध्य यह नाचै भारी❀तोरै छाती की जु किवारी।
तब बोल्यौ जु नन्द कौ लाल❀देखौ मैया या कौ हाल ॥२०॥
अरे मनसुखा तू अति भाँड❀भूखौ मनो डहारतु[3] साँड।
भूखौ तौ सब कोऊ रहै❀ऐ पै मुख ते यौं नहिं कहै ॥२१
तनक लाज गहि दई सँवारे❀क्यों जु भूख के पढ़त पँवारे[4]।
तोहि न भूख सतावै लल्ला❀माइ खवावै मेवनि गल्ला ॥२२॥
राँनी लाड करति बहुतेरौ❀उठत हिं देई जिमाइ सबेरौ।
कैसे तू जू भूख सौं डरै❀उठत खाट तें पेट जु भरै ॥२३॥
जासौं बीतै जानै सोई❀पीर पराई लखै न कोई।
तब मधुमंगल बोल्यौ ऐसें❀राजी होहि मनसुखा जैसें ॥२४
नीकें कहतु मनसुखा मीता❀बाँची भली भूख की गीता।

---

[1]—गिर परी थी हम को पाई है दाम देकर ले लो, [2]—मन्थन या लतार डालना, [3]—चिल्ला रहा हो, [4]—अरुचि कारक विस्तार।

भये बली यह किनिहुँ न मारी❀इनि करवाये मुनि जु भिखारी२५
या कें सनमुख कोऊ न लरैं❀यह सब कौं आधीन जु करैं।
भैया भूख अधिक पापिनीं❀डँसै आतमनि यह सापिनीं॥२६
याकी लहरि उतरि है तब हीं❀मिलै अहार पेट भरि जब हीं।
छक हारी जु गारडू बोलौ❀सुखी होहु जब छींके खोलौ॥२७
भैया बोल्यौ भूखौ बाँमन[1]❀लाग्यौ यहू गाइ ज्यौं राँभन।
भूखौ बाँमन ब्याई गाइ❀समुझ[2] वारि इन ते बचि जाइ॥
यौं मुसिकाइ स्याम ने कही❀मधुमंगल पै परी न सही।
कान्ह चपरि जिनि मोहि चिरावै❀अपने औगुन क्यौं कहवावै॥२८
यह भूख तोहिं लीयें डोली❀घर घर कुठिला[3] कोठी खोली।
बहुरि भूख परचौ तुम पायौ❀जब मैया पै दाँम बन्धायौ॥३०
भोर हीं जब सोवत तें जगे❀ठिनक कलेऊ माँगन लगे।
देत देत ही फोड़े भांडे❀अब अदेस करन बनें पांडे॥३१
चोरि २ दधि दूध जु गटकें❀करन लगे अब बातनि चटकें[4]।
ऐसैं स्याम समुझि लिहु मनमें❀अब जु पंच ह्वै बैठे बन में॥३२
हर हर हँसे जु ग्वाल परस्पर❀बोले बहुरि लाल मुरलीधर।
लावौ खोजि घिलौंटे[5] बन तें❀भूख भजावौ इनके तन तें॥३३
कै पाके भुर[6] बेर जु लावौ❀ज्यौं त्यौं इनकी भूख भगावौ।
कै छक हारिनु सौं होइ भेंट❀इन भूखनु के भरैं जु पेट॥३४॥
हँसि धुकि लगे सखा भुज अंश❀मोहन नीकी करी प्रशंस।
भैया कूट[7] करन तजि देह❀अब जु बोलि छक हारिनु लेह३५
नीठ नीठ वे दृष्टि जु आईं❀तब मधुमंगल टेरि बुलाईं।

१—ब्राह्मण, २—इनके आघात से बच कर रहे, ३—छोटी कोठरी गृह की, ४—चतुराई की या ऐंठ की, ५—लता का नाम, ६—बन में भरे हुए बेर, ७—बातें अधिक न बढ़ावौ।

आवौ री तुम सूधी चलीं❀भूलीं फिरत कुंज घन गलीं ॥३६
वे आई सूधी सुनि कौंन❀ये सब लागे गंगा न्हान।
धरि धरि छाक बैठि सब गई❀शीतल नीर जु अँचवति भई ॥

दोहा–सब धँसे गंगा मानसी, पैरत निर्मल वारि।
वे भोजन कौ टेर हीं, बैठीं ऊँचि पारि ॥३८॥
इक एकनि पाछें लगैं, गहि गहि गोता देत।
एक जाइ उछरैं कहूं, नाम स्याम को लेत ॥३९॥
मोहन कहैं जु मनसुखा, गोता दै गयो तोहि।
भैया वासौं समुझि लै, दोष देहि जिनि मोहि ॥४०॥
जल हीं जल आये दुरे, अति कोविद[2] बलराम।
गोता दे गये सुबल कौं, तके दूरि तें स्यामँ ॥४१॥
भैया ऐसो को बली, करि गयो मो सौं घात।
मेरौ मित्र सोई सही, देइ बताइ यह बात ॥४२॥

॥ चौपाई ॥

स्याम सैंन बलि ओरीं दई❀सुबल बात यह समुझि जु लई।
स्वाँस साधि जल हीं जल गयौ❀बलि कौं गोता देत जु भयौ ४३
जल तें निकसे सब इक संग❀कर बर लगे अंगोछन अंग।
कोऊ फूल कोऊ फल जु चढावैं❀कोउ मेवा पकवाँन जु लावैं॥४४
गिरि गंगा कौ बन्दन कीयौ❀गिरि हिं भोग धरि हरष्यौ हीयौ।
बसन आभरन पहिरत भये❀पुनि छक हारिनु कें ढिग गये४५
किनि हूं रचे पात पनवारे❀किन हूं रचे जु दौंना न्यारे।
रची मंडली हलधर बीर❀सब हीं बैठे गंगा तीर ॥४६॥
कोऊ पात कमल के लाये❀किन हूं हरे त्रिन अवनि बिछाये।

१—पर्वत का नाम, २—कुशल।

सिला धोइ बैठे जु अनेक❀अति खिलवार एक तें एक ४७
एक एक की खोलत छाक❀नाँनाँ विधि के परसत पाक।
राम कृष्ण राजत मधि नायक❀बनी मंडली देखन लायक ॥४८
भैया काकी माइ सु तेंवन[१]❀करौ प्रशंस लगौ सब जेंवन।
कैसौ सुघर बघार[२] जु दियौ❀कैसौ लौन जु मिश्रित कियौ४९
आजु परिच्छा लेहु जु आछें❀जिनि कोउ गाल बजावहु पाछें
अरे मित्र तैं नीकी कही❀तेरी बात जु मानी सही ॥५०॥
सब हीं लाइ लाइ कै देंहि❀मोहन स्वाद सबनि कौं लेंहि।
काहू की रुचि जेंवैं छाक❀काहू कौं जु चढावैं नाक ॥५१॥
काहू कौं जु सुघर अति कहैं❀काहू कौं जु मौंन गहि रहैं।
सब हिंन कौं अपने ढिग बोलैं❀हाथ आपने छींके खोलैं ॥५२॥
काहू कौं कोऊ लेहि चुराइ❀सो कहैं दौरि स्यॉम सौं आइ।
भैया अब न रहौं तो लार❀ये अन्याइ तेरे ग्वार ॥५३॥
एक एक की करैं जु कूटि❀इनि मनसुखा मचाइ लूटि।
काहू की सेली लै लई❀काहू की जु पिछौरी गई ॥५४॥
कोऊ छीनि २ कैं खात❀कोऊ उचकि उचकि लै जात।
एक जु ठाडे न्याइ चुकावैं❀इक एकनि लरिबौ जु सिखावैं५५
इक हँसि २ पटकत हैं करतल❀इक एकनि कौं तोलत हैं बल।
नन्द सुवन कौं ऐसोई भावै❀नये खेल लखि अति सुख पावै॥
जहाँ तहाँ होत कुलाहल भारी❀जेंवत यह लीला विस्तारी।
कौतिक देखि हँसे बलि बीर[३]❀मानसि गंगा अँचयौ नीर ॥५७
मैं राखी ही फेंट जु मांहि❀भैया मेरी गेंद जु नांहि।

---

[१]—अपने अपने सवाद तेंमन अर्थात शाक भाजी आदि को चख कर बनाने वाली काकी माता की प्रशंसा करते हैं. [२]—तर्का लगाया हुआ है सुगन्ध मय मसालों का तवन में यह भाव है, [३]—बलदाऊ जी के भैया श्यामसुन्दर।

जेंवत बार खोलि ही धरी❀सो काहू के हाथ जु परो ।।५८।।
दाऊ की मेरी जु पिछौरी❀दोऊ धरी हुतीं इक ठौरी ।
इहाँ न दूजो आयो कोई❀जिनि लीनी बताइ दिहु सोई।।५९
सब की नंगा झोरी लेहु❀तब जैहैं मन को सन्देहु ।
जापै है सो दीजै डारि❀मोहन ऐसे कह्यौ पुकारि ।।६०।।
देखौ[1] नन्द लला अति गुनीं❀काहू की पुकारि नहिं सुनीं ।
अपु गौं गरजी हम लखि पायौ❀गेंद गये बहु सोर मचायौ ।।६१
अधिक धरैं मन मांहि मरोर❀औरनि कौं ठहरावैं चोर ।
सब को सैंननि दै जु सिखावैं❀लकुट पिछौरी यह चुरवावैं।।६२
अरे मनसुखा करि न अनीत❀झूठी बातनि लियो जग जीत।
तनक लाज नहि तो कों आवै❀मोकों चपरचौं[2] दोष लगावैं।।६३
भैया स्याम न लेहि लराई❀ग्वालनि की जुरजाइसि[3] पाई ।
सब को वस्तु सबनि हीं दीनीं❀करि करि प्यार भुजा गहि लीनी।।

दोहा—छाक खात कौतिक किये, मुदित भये अति स्याम ।
छक हारी फल फूल लै, चलीं आपने धाँम ।।६५।।
तुम बन फल खाति जु रहीं, हम चढ़ि हेरीं ढाँक[4] ।
और दिना ते लाइयौ, बेगि सबेरी छाँक ।।६६।।
मधुमंगल अरु मनसुखा, अकुलाने जु निराट ।
पढे पवारे भूख कें, वने जगा कुल भाट ।।६७।।
सुनि सुनि के बनिता हँसी, मोहन मुख के बैंन ।
कहत मनमुखा स्याम तुहि, हांसि बिनु नहिं चैंन ।।६८।।

---

[1] १—भाव यह है कि औरों की वस्तु जब खोई गई तो कुछ भी ध्यान न दिया अब अपनी गेंद के लिये कितना शोर मचा रहा है तलाशियां लेने की धमकी दे रहा है ऐसा मतलब का पक्का है ग्वाल कह रहे हैं, [2] २—जबरदस्ती जोरा जोरी, [3] ३—हार्दिक इच्छा जानकर सब ने सब की वस्तु दे दी, [4] ४—ढाक के पेड़ पर ।

सुबल साँचु कहि इनि दुहुंनि, कैसो कूट्यौ पेट ।
अब मुख भयौ जु डहडहो, खाइ रोट इक जेट[1] ॥६९॥
भैया सब भूटेंन कौं, राजा कीजै तोहि ।
नये नये कौतिक जु रचि, अधिक चिरावै मोहि ॥७०॥
ग्वाल गौंगदौ[2] करत हैं, आनन्दित ब्रजचन्द ।
वृन्दावन हित रूप यौं, बन बिहरत नन्द नन्द ॥७१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण भूख छाक कौतूहल बरनन लीला तेईसवीं लहरी की जै जै श्री हित हरिवंश श्री राधे ॥

❀ अथ चौबीसवीं लहरी प्रारम्भ ❀

दोहा—यमुना गाइ पिवाइये, करौ जल ग्वाल कलोल ।
घेर बहुरि जु लै चलौ, अपनें अपनें टोल ॥१॥
बोल सुनावौ नाम लै, चढि विटपनि की डार ।
सब ही दौरीं आइ हैं, यौं कह्यौ नन्द कुँवार ॥२॥
धौंरी धूँमरी नाम लै, टेरन लागे ग्वार ।
आईं सनमुख स्याम के, सुनत न करी अबार[3] ।

॥ चौपाई ॥

अब चलि कै यमुना जल प्यावौ❀खेलैं बहुत विलम्ब जिनि लावौ ।
ब्यान[4] हार हैं बहुत जु गाइ❀तिन कौं बेगि देखिये जाइ ॥४
बाबा हूं यह मो सौं कही❀लागे खेल नहीं सुधि रही ।
सब मिलि गये गँऊनि के पास❀चरत हरे त्रिन भरी हुलास ॥५॥
दृष्टि परि गई काजर ब्याई❀मुदित स्याम मनु नव निधि पाई ।
भैया सुन्दर बछिया जाई❀बाबा पै चलि लेंहिं बधाई ॥६॥

१—ढेर, २—शोरगुल गम शम, ३—देरी, ४—प्रसूत होने वाली गौए ।

वडडे पात पलास जु लावौ❀तिनके रचि दौंना जु बनावौ ।
काजर कौ दुहि दूध जु लेहु❀करि पेवसीं[1] बांटि सब देहु ॥७॥
कोऊ बैसाँदर[2] लै आये❀कोऊ तोरि पात पुनि लाये ।
दुहि गाय पेवसी जु करी❀बाँटत स्याम फूल उर भरी ॥८॥
लै लै जाँइ रौंटि[3] पुनि करैं❀मित्र हमें न दई कहि लरैं ।
मोहन तेरी व्याइ गाइ❀या ही तें जु चलौ इतराइ ॥९॥
भैया काल्हि[4] व्याइगी मेरी❀हौं बंचिकता[5] करि हों तेरी ।
रे मनसुखा कुटीचर[6] भारी❀तौ कौं लगै लराई प्यारी ॥१०
अब तू सब तें दूनीं लेहु❀मुहि उराहनौ फिर जिनि लेहु ।
जौ तू देहि चौगुनीं मोकौं❀अब हौं स्यामपत्यांउँ न तोकौं ११
हँसतु २ तब सुबल जु आयौ❀ज्यौं त्यौं करि मनसुखा मनायौ ।
भैया गुसाँ न ऐसी कीजै❀मैया पै तें अधिकी लीजै ॥१२
कौंनन गाइ देति छबि भलीं❀यमुना जल पीवन कौं चलीं ।
ठठुकि चलति ऐंननि कें भार❀करत फिरत मोहन जु सँभार१३
हूंकि हूंकि मोहन दिसि आवैं❀गायें अपनो प्यार जनावैं ।
नाना रँग की राजति पांति❀महा पुष्टि तन दमकति कांति१४
मुरली धर आये तिन साथ❀करि अति लाड खुजावत हाथ ।
कौंनु बरनिये[8] तिनकौ भाग❀नन्द नन्दन कौ अस[9] अनुराग
पियौ रविजा जल तुष्टि जु भई❀कदँमनि छाँह बैठि तहाँ गई ।
उज्जल[10] बरन लसति अस सैंनी❀हँशनि पांति मनो छबि दैंनी ॥

१—ब्याई गाय का प्रथम दूध अमृत माना है उसे फटा कर पेवसी कहते हैं, २—अग्नि, ३—छल या लेकर मुकर जाना, ४—कल को जब मेरी गाय प्रसूत होगी, ५—मैं तुझे भी नहीं दूंगा यह भाव है, ६—झगड़ालू, ७—विश्वास न करूँगा, ८—कौन वरनन कर सकता है, ९—महान उत्कृष्ट अनुराग, १०—जो सफेद रंग की एक श्रेणी में बैठी थी ऐसी छवि बनी मानों हंसों की पंक्ति बैठी हो ।

ऊँचे मुँह करि २ जु उगारैं[१] ❀ग्वार गुशाईं[२] ओर निहारैं।
गाइ नन्द की भागिनु बली❀शिव विधि जाँचत रज पद तली
कामधेनु पछतात जु उर उर[३]❀हमैं विधि जन्म न दियो नन्दपुर
नन्द नन्दन ऐसौ हित करते❀प्रभु कर कमल पीठि हम धरते ॥
पुनि करते जु धापि पयपाँन❀मुरली धुनि सुनती हम काँन।
दुहते करनि[४] दोहनीं लै कै❀हँमैं पुचकारि जु आदर दै कैं ॥
श्री वृन्दाबन भूमि विचरतीं❀यमुना जल जु पाँन नित करतीं।
कृपा दृष्टि हरि चितवत रहते❀परम सोंहनीं हम सों कहते ॥२०
हम सुरलोक कियों बसि कहा❀मन रह्यौ यह पछितावौ महा।
धनि २ ते जन्मीं ब्रजमाँही❀कृष्ण चरावन तिनकों जाहीं २१
सुरह गऊँनि मन यह काँमनाँ❀व्रज आँवन करैं उर भाँवनाँ।
राधा कृष्ण कृपा होइ जबै❀व्रज में जन्म पाइयै तबै ॥२२॥
खेलत हरि रविजा के तट में❀सखा मंडली के संघट में।
पट उतारि धरे पुलन मँझार❀जल में न्हान घुसे सब ग्वार२३
गहत छुटत पुनि गहन जु चहैं❀गर्बित बचन परस्पर कहैं।
जल ही जल आवत हैं दुरि २❀गोता दे पुनि जाति जु मुरि २ ॥
भैया कौंने गोता दयौ❀जानि न पर्यौ जु कित ह्वै गयौ
पैरत हैं जल में सह जोर[५]❀पाछैं लागि मचावत सोर ॥२५
लै बुडकी जु चहुटियाँ भरैं❀पुनि उछरैं लै अँकनि धरैं।
टीलौ उच्च पुलिन कौ जहाँ❀लै गये पकरि मनसुखे तहाँ ॥२६
हाथ पाइ गहि कै जु भुलायौ❀बहुरि तहांई ते लटकायौ।
कोऊ मलत पुलिन सौं गात❀भुज पटकाइ कहत हैं बात ॥२७
उछरि २[६] इत उत ते धुरैं[७] ❀हारैं जीतैं भुज गहि जुरैं।

१-जुगाली करती है, २-मालिक ग्वाल ३—मन मन में, ४—अपने हाथों से हमें दुहते यह भाव है, ५—बलवान ग्वाल जलमें तैर रहे हैं, ६—उछल उछल कर, ७—कुसती करते हैं।

लगैं एक कें एक जु गौंहन❀दै दै सैंन लरावैं मोहन ॥२८
हारैं ताकौं तारी दैंहिं❀रूठि चलैं मनाइ तिहि लेंहिं ।
काहे भैया अब जु खिस्याइ❀निबलौ[1] दूध पिवायौ माइ ॥२९
इक मेंडुक कीसी धप[2] धरैं❀इक मृग की सी छागर[3] भरैं ।
इक नित्त त है जैसे मोर❀इक बनैं अस्व एक बनैं चोर ३०
इक बनि रच्छक पहिरौ दैंहि❀पाछें लागि पकर तिहिं लेंहिं ।
करि जु गोमटी तारैं ताहि❀छोड़ैं तब जब हा हा खांहि ३१
रविजा रज घँसि जल के संग❀एक लगावैं नख सिख अंग[4] ।
गहि मुख मौन बनैं अवधूत❀मन हुँ बडे तपसी कौ पूत ॥३२
लै फल फूल भेंटि तिहिं धरैं❀परिकरमा दै बन्दन करैं ।
इक[5] बनचर ह्वै घुरकी दैंहिं❀एकनि की जु पिछौरी लेंहिं ३३
एक छुडावैं पाछैं लागि❀वे चढि जांहि विटप पर भागि ।
इक बनि आवैं नकली भाँड❀एक डहारैं जैसें साँड ॥३४॥
इक बग[6] कौं सौ ध्यांन जु धरैं❀जल की ओर दृष्टि कौं करैं ।
इक कूजत हैं जैसे हंस❀एक करैं तिनकी परशंस ॥३५॥
मोहन मित्र मंडली बनीं❀खेलनि रचना[7] परति न भनीं[8] ।
रविजा न्हाये सब मिलि संग❀पुनि पट भूषन सचे[9] जु अंग ३६

दोहा—विधि जप फल शिव तप जु फल, फल व्रत ज्ञान मुनीश
करतु खेल संग ग्वाल जो, अखिल अंड को ईश ॥३७
ये जु मगन भये खेल में, चरन गईं उठि गाइ ।
वन घन दृष्टि न आव हीं, बोल्यौ सुत व्रजराइ ॥३८॥

१—भैया के दूध में ताकत नहीं रही इसलिये यह दुबला है, २—छलांग मेंडक की तरह लगाता है, ३—चौकरी (चार टांग मृग जैसे कूदता है) भरना, ४—पांव से लेकर चोटी तक सारे अंगों में रज घिस कर मल रहा है, ५—बन्दर की नकल करता है घूरता है, ६—बगले की तरह, ७—विविध प्रकार के खेल श्याम रचते हैं, ८—जिनका वरणन नहीं हो सकता है, ९—सजा कर पहिन लिये ।

खेलनि[1] रचत अघाइ नहीं, ह्वै बैठत रिझवार ।
मोहन गाइ बताइ अब, यौं कहैं सब हीं ग्वार ॥३९॥
हौं खेल्यौं खेले जु तुम, बोलौ जिनि तजि नीति ।
मो कौं घुरकी देत अब, बनुचर[2] की सी प्रीति ॥४०॥
जहाँ गाइ तहाँ लै चलौं, धीरज[3] राखौ चित्त ।
क्यों जु फिरादू[4] से फिरत, नेह बिसरि गये मित्त ॥४१॥

॥ चौपाई ॥

भैया लिह गाइनु कौ खोजु[5]❀किहिं बन गईं न दरसति सोजु।
देति गई इहि मारग सोभ❀गींधीं[6] हरे त्रिननि के लोभ ४२
यह दिखि साँड भिरे इहि ठौर❀दूजौ खोज मिल्यौ यह और ।
आगें चलैं उठावौ पाइ❀अब कहूं नेरे दरशैं गाइ ॥४३॥
देखीं गाइ अखै बट तीर❀अति हीं मुदित भये बलबीर।
आगें खोज लेतु हौं आयौं❀नीठ[7] नीठ यह गोधन पायौ४४
मो सौं खोजी और न दूजौ❀अब तुम मोहि बडो करि पूजौ।
अरे नन्द के गल बाजारी[8]❀तनक बात की रौर जु[9] पारी४५
संग हमारे चल्यौ जु आयो❀तापै खोजी बडौ कहायौ।
लला[10]गरग कुल जो अवतरते❀तौं हम सब हीं पूजा करते ४६
खेलैं संग बहुरि संग रहैं❀तोकौं सिद्ध कौंन विधि कहैं ।
तुम कहा जानौ बड़े लवार❀हौं जानौं जु बात कौ सार ४७
हौं राजा कौ बेटा भैया❀ब्रजरानो है मेरी मैया ।

---

[1]—ग्वाल श्याम को दोष देने लग पड़े, [2]—बन्दर की तरह, [3]—धीरज रखो मैं तुम को ले चलता हूँ, [4]—फिकर में इधर उधर चिन्तातुर फिरते रहना [5]—खुरों के चिह्नों से खोज करो, [6]—आकर्षित हुई, [7]—कठिनता से, [8]—बहुत बातूनी लबार, [9]—शोर गुल मचा रहा है, [10]—गरग जैसे ज्योतिषी ब्राह्मण का बेटा होता तब तो निशंक तेरी पूजा है अब तो हम जैसा ग्वाल है पूजा कैसी कराया चाहता है ग्वाल ताना दे रहे हैं।

मेरे से गुन तुम में नांहिं❀बड़े ह्वै रहे अपु मन मांहिं ४८
गो चारन उत्साह जु मेरौ❀बाबा खरच्यौ दर्बि घनेरौ।
मैया अधिक बधाई करी❀सब की गोदी मेवा भरी ॥४९॥
तऊ बडौ नहिं मान्यौं मो कौं❀हौं कब बदौं मनसुखा तो कौं।
देखौ नौबति बाजी द्वार❀पहिराये तुम सब हीं ग्वार ॥५०
पुरजन सबनि बडौ मुहि कीयौ❀तब गाइन के संग जु दियौ।
पहिलैं तिलक जु मेरे भयौ❀पाछें और सबनि कें दयौ ॥५१
मोहन तू बढि बोला दीख्यौ❀यह बातें जु कहाँ ते सीख्यौ।
भूलि गयौ घर की सब बात❀बन में विरच्यौ[1] सांवल गात५२
हम करि लाये तो कौं ग्वार❀आजु हीं पायौ है अधिकार।
नन्द बाबा की कौंन जु करैं❀बहुरि कछू मैया तें डरैं ॥५३॥
कारे पै गुन कीजै जेतौ❀औगुन हीं दरशावै तेतौ।
नन्द सुवन सुनि कै हँसि दियौ❀प्यारौ मित्र अंक भरि लियौ ५४
अक्षै बट की बैठे छांही❀अति आनन्दित सब मन माहीं।
स्याम खेलि अब नट की कला❀तो में है छल बल अति भला ॥
भलौ मित्र तौ हमें हँसाइ❀तेरी गाइ लेंहि सम्हराइ।
पट कौ जंघ बजै मनु ढोल❀बैसेंई सब बोलौ बोल ॥५५॥
उलटी सुलटी कला जु लेहीं❀अति सनमान सखा सब देंहीं।
कबहूं रज लैं मलत स्वयं भल[2]❀कबहूं स्याम चलैं करतल बल[3] ॥
ग्वार सबै पटकावत तारी❀बट पै चढैं कबहुं गहि डारी।
नाँनाँ विधि की कला दिखावैं❀बट पै नित्त त अति छबि पावैं॥
ग्वाल कहैं लैं जा चक्र[4] फेरी❀अब की कला बदी नहिं तेरी।

१—मुकर गया है काला ही तो है यह भाव है, २—दोनों हाथ पांव भुजा आदि में नट कला बाज की तरह रज मलते हैं, ३—हाथ के बल सिर नीचे किये चलते हैं, ४—चक्कर लगा या चरखरी ले।

मित्र बचन सुनि वैसी लईं❀रीझयौ सुबल पिछौरी दई ॥५९
नीचे कूदे गहि कैं डार❀भैया कोऊ है रिझवार।
मधुमंगल ने सेली दीनी❀बहुत प्रशंसा ताकी कीनी ॥६०
एक सखा कौं काँधें धरैं❀नट विद्या की नकल जु करैं।
आपु चढैं काहू कें कांधें❀पीत पिछौरी माथे बान्धें ॥६१॥
अलग कंध तें कूदि जु परैं❀हंसि काहू के लागैं गरैं।
पुनि काहू कौं अवनि लुटावैं❀ताकौ तन ढोल ज्यौं बजावैं ॥
वह उठि भजे मुसाँ अति करैं❀सब कोऊ हर हर हँसि परैं।
भलें भलें यसुमति के लला❀नीकी हमें दिखाईं कला ॥६३॥
विद्या सब सेवति हैं जाकौं❀बालक खेल रुचै अति ताकौं।
कोऊ ह्वै मेंढा बनि आवैं❀स्याम तिन्हैं टकरनि लरावैं ६४
कोऊ बनि आवैं हरनां सौंहन❀तिन्हें लराय हँसैं अति मोंहन।
कोऊ वृषभ से टाडन[1] लागैं❀भिरैं बरजोर बिचरि पुनि भागैं
कोऊ ह्वै अरना[2] भैंसा बनैं❀लरैं दिखावैं कौतिक घनैं।
पुनि कोऊ अज्या[3] जुद्ध सौं करैं❀कमल नैंन उर आनन्द भरैं ६६
कोऊ रज लै लै अंग लगावैं❀दाइ पैंच करि भुज पटकावैं।
एक एक कें सनमुख जुरैं❀मल्ल अखारौ रचि कै घुरैं ॥६७
देंई स्याबासि स्याम घन जिनकौं❀चाव चौगुनो बाढै तिन कौं।
पूरे गुरु तुहि सुबल सिखायौ❀गल बाजी मनसुखा हरायौ ६८
पुनि कहैं रहे बराबरि दोऊ❀भैया रोस करौ जिनि कोऊ।
सुबल भलो तैं जोर दिखायौ❀दूध अधौटा मैया प्यायौ ॥६९
सब अप अपनें बल कौं तोलैं❀गर्बित बचन परस्पर बोलैं।
नाना कौतिक रचित जु ग्वार❀लाल ह्वै रह्यौ कौतिक हार[4]७०

---

[1]—माथे से मिट्टी खोदना सांड की तरह डकारना, [2]—जंगली, [3]—बकरे की तरह, [4]—तमाशबीन या दर्शक।

दोहा—मन्द हंसै अतिसै लसैं, उर सुख सचैं अनेक।
गोप कुँवर संग सोहनें, हरि मधि नाइक एक[1] ॥७१॥
वृन्दाबन हित रूप यह, लीला ललित अनूप।
सकल सुखनि कौं भोगता, अतिलड सुत ब्रज भूप ॥७२

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री कृष्ण भूख छाक कौतूहल बरनन लीला चौबीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ पच्चीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—भैया दिन थोरौ रह्यौ, हँसि बोले नन्द लाल।
गायें फेरौ गाँव दिश, सावधान होहु ग्वाल ॥१॥
बैनु विखांन जु बाँसुरी, लकुट सम्हारि जु लेहु।
बन की भूलि वस्तु फिर, काहू दोष न देहु ॥२॥

॥ चौपाई ॥

हँसि हँसि बोलैं सब हीं ग्वाल❀तैं कछु कपट कियौ नन्दलाल।
बात कही सन्देह जु भरी❀यातें हम कौं जानी परी ॥३॥
कोऊ कहैं मेरी महुवरि[2] गई❀कोऊ कहै गई पिछौरी नई।
कोऊ कहैं मेरी सेली देहु❀कौंने लई नाम तिहि लेहु ॥४॥
कोऊ कहैं मेरी रंगित छरी❀दिहु भैया कौंनें लै धरी।
कोऊ कहैं मेरी गुंजनि माल❀तैं हरि लई देहु नन्द लाल ॥५॥
कोऊ कहै मधुमंगल अन्याई❀इन हीं मेरी गेंद चुराई।
कोऊ गहि बाँह जुझगरन लगे❀कोऊ ढूँढत जु फिरत हैं भये ॥६॥
माचि रह्यौ धमतूरौ महा❀कौतिक बाढ्यौ कहिये कहा।
बोले स्याम बैठि सब माँझ❀भैया नेरे आवति सांज ॥७॥

---

[1]—गोप कुमारों के एक मात्र नायक (सरदार) हरि मध्य में शोभायमान रहते हैं, [2]—एक प्रकार का बाजा तूंबी का बना हुआ।

हाँसी तजौ मानि सिख लेहु❀सब कोऊ वस्तु सबनि की देहु ।
[1]पुलिन माँहि ते गड़ी उखारी❀लै लै सब हीं भये सुखारी ॥८॥
धरि भुज अंश परस्पर लटकैं❀हँसि हँसि पुनि कर तारी पटकैं ।
मोहन यह सब तेरे काम❀ऐसे हँसि बोले बलराम ॥९॥
दाऊ यह सब सखा खिलारी❀इन कौं लागै हाँसी प्यारी ।
यह देखौ जु घोष व्यौहार❀हाँसी बिना रुचै न अहार ॥१०॥
पुनि यौं टेरि सबनि सौं कह्यौ❀भैया बासर [2]थोरो रह्यौ ।
गाँव ओर गाइनु बगदावौ❀बन गई फैलि सम्हारि जु लावौ ॥११॥
सुन्दर नामनि लै लै टेरौ❀एक संग सबहिनु कौं फेरौ ।
नन्द गाँव सनमुख भई जानौं❀सोभा [3]घन जु ऊँनयौ मानौं ॥१२॥
कोऊ विटपनि पै चढ़ि चढ़ि हेरैं❀कोऊ धौरी धूमरि कहि टेरैं ।
गाइन कौं अस बोल चिन्हार❀आईं सिमटि सबै इक बार ॥१३॥

दोहा—नन्द ग्राम सागर मनो गोधन सरिता धार ।
उमगी आवत छवि सहित पावस सन्ध्या बार ॥१४॥
लटकतु आवतु साँवरौ सखा मंडली माँझ ।
उमग्यौ मनु उडगन सहित पूरन शशि यह साँझ ॥१५॥

॥ चौपाई ॥

गोखुर रेनु जु ऐसी बढ़ी❀गगन पवित्र करन मनु चढ़ी ।
रौंभति गैयां व्याईं जे जु❀जिन कौं अति बछरन सौं हेजु[4]॥
[5]लहँडे छेंकि अगमनी चलीं❀ऐंननि [6]भार झुकति वे भलीं ।
बढि बढि चरन गाँव दिसि धरैं❀ऊँचे टौरा[7] पूँछनि करैं ॥१७॥

१—किनारे की रेती में सब चीजें गाढ़ कर रखी थी, २—दिन, ३—शोभा का बादल जैसे उदय हो गया हो, ४—प्यार, ५—नये बछड़े के नेह में रास्ता छांक अर्थात सुरक्षित देखती आगे आगे चलती हैं, ६—दूध के स्तन भरे झुके हैं, ७—बांस की तरह पूँछ को ऊँचा सीधा करके चलती हैं ।

रोकि रोकि राखत हैं ग्वार❀आगें पाछें करत सम्हार।
तिन में साँड डहारत बली❀मनु छबि घटा जु गरजति भली॥
अति अलबेले मोहन सखा❀सोभित सब शिर मोरनि पखा।
आवत सबहिं भरे छबि ऐंड❀गनि २ धरत रुकौं हैं पैंड[1] १९
गोप कुँवार सबै तन सुथरे❀मनहुँ अलौकिक पुर तें उतरे।
नन्द सुवँन अहिलाद जु दायक❀उपमा और कौन तिन लायक२२
अग्रज सहित मध्य घनस्याँम❀इहि छबि वारौं कोटिक काम।
तन चेटक[2] सब के मन हरैं❀छोटो बडो न जान्यौं पड़े॥२१
रुकति अलक वदन पर ऐसें❀कमल कोश अलिसैंना जैसें[3]।
मल्हकि[4] चलन गजराज लज्यावैं❀नन्द सुवन इहि विधि सौं आवैं
उच्च[5] भाल पर श्रमकन दरसैं❀शशि तें अमीं बून्द मनु बरसैं।
गोल गरूर भौंह मन हरनी[6]❀मदन धनुष उपमा रद करनी२३
श्रवननि कुण्डलदुतिजुकपोलनि❀रविजाजलरविमनौकलोलनि[7]
भुजा मित्र कांधे पर सोहैं❀कन्द्रप कोटि कोर दृग मोहैं २४
केशरि तिलक लिलाट विराजै❀सुन्दर नाशा बेसरि राजै।
अतिसै लसै अधर अरुणाई❀पक्व बिम्ब सम कह्यौ न जाई२५
चिबुक चारु सोभा अति बाढी❀ग्रींवा छबि सींवा मनु काढी।
भुज भुजंग[8] तनकी छबि छीनीं❀बाजू बन्द ओप[9] अति दीनीं२६
उर पर मणि चौकी जगमगैं❀रतन धुक धुकी नीकी लगैं।
कंठी कंठ जलज मणि माला❀कटि किंकनि कौ सब्द रसाला२७

१—कदम गिन गिन कर तथा रुक रुक कर भागते हैं, २—चमक दमक, ३—मुख पर अलक चलने में इधर उधर उड़ती ऐसी शोभा देती हैं मानो भँवरे मुख रूपी कमलों पर सैना समान मंडरा रहे हैं ४—मस्ती में, ५—विशाल मस्तक पर पसीने की बूंद थकावट के कारण हैं मानो मुख चन्द्र अमृत वरषा कर रहा है, ६—गोल भौंह कामदेव के धनुष को भी रद्दी बना रही हैं, ७—श्यामसुन्दर के कुण्डल गालों पर ऐसे प्रतीत होते हैं मानो यमुना जल में सूर्य झिलमिल झिलमिल कर रहे हों, ८—सर्प, ९—चमक।

चरन पदिक चूरा नग खचे❀दाम कुशम नाना रँग सचे।
नख शिख अति ही कमनी रूप❀त्रिभुवन गहनौ सुत ब्रजभूप २८
कमल फिरावैं गावैं गौरी❀खग मृग मनहूं कौ जु ठगौरी।
मुख मृदु २ मुसिकानि रमी हैं❀मानौं शशि तें श्रवत अमी हैं॥
मुरली धुनि सब चित आकरषै❀मन हुँ आनन्द की धारा वरषै।
अहा कहा सोभा गाइनु पाछैं❀मुकट लटक शिर राजैं आछैं३०
पीतांबर जु फरहरतु ऐसें❀घन पर दामिनि ओपीं जैसे।
चलनि ललित गति ग्रीवाँ मुरैं❀विद्रुम माल हिये पर ढरैं ॥३१
पद चिन्हनि भई सोभित धरा❀बडभागिनि मनु किये उर हरा।
गो रज अंग अलंकृत भये❀नैंन चैंन पुर बासिनु दये ॥३२॥
मन्द मन्द गति आवनि घरकौं❀निरखत सब ब्रजराज कुँवरकौं।
बाजति मुरली[१] वैंनु बिखाँन❀धुनि सुनि कैं जु द्रवत पाखाँन[२]॥
सुर बनितनि के चित आकरषे❀सुनत नन्द पुर वासी हरषे।
मुरली धुनि मोहनी निराट❀ठठुकि २ चलैं गायें बाट ॥३४॥
अंटा अँटारिनु भांमिनि ठाढीं❀मनौं चितेरिनु पुतरीं काढीं।
शिथिल अंग भूषन जु दुकूल❀भूलि गईं बरषावन फूल ॥३५॥
करी नन्द सुत अस रस वृष्टि❀भई प्रेम मय सब ब्रज शृष्टि।
बिरमि बिरमि चलैं वीथिनु माहीं❀देखन कौं सब ही अकुलांहीं३६
चहु दिशि दृष्टि फिरत है ऐसें❀चकरी कर जु खिलारी जैसें।
मांनिक चौक घोष पति द्वार❀तहाँ चलि आये नन्द कुँवार३७

दोहा—गऊ गईं खरिकनि सबै, ग्वारनि लई सम्हारि।
हरि देखन आये सबहिं, अनुरागी नर नारि ॥३८॥
कंद्रप मद मर्दन करन, दरस्यौ सुत ब्रज ईश।

---

[१] तीन प्रकार की बांसुरिया भिन्न भिन्न आकार की [२] पत्थर।

मन क्रम बच करि देत सब, ब्रज जन हरषि असीश ३९

॥ चौपाई ॥

पौरि आइ जननी भई ठाढी❀सुत देखन उत्कण्ठा बाढी।
अंचल[1] वदन अँगोछ्यौ रांनी❀संका डीठि वारि[2] पियो पाँनी४०
करि आरतौ मुदित भई मैया❀अरघ वढाइ लिये दोऊ भैया।
करजनि: चटकि जु ऐसै कह्यौ❀बेटा तू बन नीकें रह्यौ ॥४१॥
फूल्यौं अधिक आज बन जाइ❀सब ग्वालनि मैं लियौ रिझाइ।
आजु माँनसी गंगा न्हायौं❀गिरिवर कौ जु भोग धरवायौं४२
गाइ चराइ भली विधि लायौं❀निर्मल रविजा नीर पिवायौं।
काजर गाइ जनी हैं बाछी❀मैया देइ बधाइ आछी ॥४३॥
भलें महूरत लाठी गही❀आजु ही माइ व्याइ बन रही।
लहनौं[3] भयौ बन जैवौ तेरौ❀बडौ सपूत जु मोहन मेरौ ॥४४
रौंनी रोम रोम सुख भरी❀मेवा गोद भरी ता घरी।
दै दै सैंन जु मोहन लाल❀सनय सनय बोले सब ग्वाल४५
ग्वाल कहत मैया सौं ऐसें❀सुनि हिय जिय सुख बाढै जैसें
गाइ चरावन संग लै गये❀मोहन अति सुख हमकौं दये४६
मंगल में मंगल भयौ रौंनी❀काजर माइ आजु ही व्यौंनीं।
हम सब मन जु बिचारत गये❀बडे[4] २ सगुन आजु बन भये४७
मैया यह श्रवननि सुनि लीजै❀दूनी आज बधाई दीजै।
यसुमति मुदित भई सुनि काँन❀सब ओलीनु भरचौ पकवाँन ४८
दोहा—स्याम गही कर लौठिया, लाये गाइ चराइ।

१—अपने वस्त्र के आंचल से लाल का मुख पोंछ धूर झारी, २—नजर लगने के भय से पानी वार कर पिया, ३—लाभ कराने वाला अर्थात पहले दिन ही बोहनी भई कि बछिया पैदा करा लाया, ४—सर्व प्रथम श्री जी के दर्शन का महा सगुन लालजी का हुआ उसी ओर संकेत है।

यसुमति उर आनन्द जो, तौल्यौ कापै जाइ ॥४६॥
गिरि काँनन देख्यौ प्रथम, यमुना प्याई गाइ ।
कुल कृत सीख्यौ स्याम घन, मन २ फूलति माइ ॥५०
तामें ब्याई धेनु बन, मंगल भयौ विशेषि ।
मो अतिलड कौं दाहिनौं[1], विधिनाँ सब विधि देखि ॥
बेटा अब ब्रजराज कौं, समाचार यह देहु ।
लकुट गहत ब्याई गऊ, झगरि बधाई लेहु ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

हरि हलधर बाबा पै गये❀हरषित ह्वै गोदी भरि लये ।
हँसि हँसि कै बूझत ब्रजराजु❀कहाँ लग गाइ चराइ आजु ५३
कैसें बन में देखे सरवर❀कैसें कैसें देखे तरवर ।
कैसो देख्यौ गिरि कौ रूप❀विरमें कहाँ देषि कै धूप ॥५४॥
कमनीं गिरि देख्यौ हम तात❀जहाँ बहु कौतिक कहे न जात ।
ठौर ठौर जहां फिरनाँ झरैं❀खग बहु विधि बानी उच्चरैं ५५
वहुत भांति जहाँ तरवर बेलि❀कुशामत[2] सबै करैं अलि केलि ।
देखो बहुत कन्दरा कमनीं❀अति सोहनी हरित जहाँ अवनीं ॥
देख्यौ रविजा निर्मल नीर❀गऊ प्याइ न्हाये दोऊ वीर ।
बैठारीं कँदमनि की छाँह❀सब ही सुखित भये मन माँह५७
पुनी उठि चरीं अछीकर घास❀अवँनी हरित रवि सुता पास ।
ग्वालनि विविध खेल विस्तरैं❀हम हलधर दोउ देख्यौ करैं॥५८
गउ चरन की सुन्दर ठौर❀बाबा सुनौ बात इक और ।
बन में ब्याई काजर गाइ❀हौं लायौं बछिया जु चुखाइ ॥५६
यह सुनि कें हरषे ब्रज ईश❀रतन पेंच कीनौं बकसीश ।
बाबा काल्हि दुहौंगो गाइ❀तुम चलि दीजौ मोहि सिखाइ॥

---

[1] —अनुकूल, [2] —फूलों से लदी ।

इक हौं दुहौं एक बलिराम❀चलि देखौ दोउनि कौ काम ।
ब्रजपति हँसे गोप पुनि सबै❀मोहन लगे तात गर तबै ।।६१
बलि कहैं मोहन सब सौं लरै❀मेरौ कह्यौ न कबहूं करै ।
बचन कहे अति हीं गरबीलौ❀याकौ है स्वभाव अरबीलौ।।६२
बेटा करौ परस्पर प्रीति❀यह अपनें कुल की रस रीति ।
विद्रुम माला बलि कौं दई❀दोऊनि की अँगुरी गहि लई ६३
भीतर भवँन चले ब्रजपाल❀भूर भाग्य मान्यौ इहि काल ।
कर पद धोइ जु बैठे तहाँ❀सुन्दर भोजनसाला जहाँ ।।६४।।
राम कृष्ण दोऊ राजत पास❀यसुमति परसति भरी हुलास ।
भोजन के भाजन सब धरैं❀पाक अनेक जु तिनमें भरैं ।।६५
दोऊ सुतन जिमावत नन्द❀हिय जिय भरे परम आनन्द ।
मोहन कहैं ग्रास मुहि दै कै❀बहुरि जिमावौ बलि कौं लै कै ६६
देखि रहत आँनन दिश तात❀सुनि अरबीलीं अति लड बात ।
लैकर कोर देंहिं मुख इत उत❀जग्य भोगता जाकें घर सुत।।६७
घटती बढती परन न देंहिं❀दोऊ गनि गनि ग्रासनि लेंहिं ।
यसुमति अधिक लाड करि परसैं❀ज्यौं ज्यौं जेवैं त्यौं मन सरसैं ।।
रसनाँ कौं बिजन रुचै जोई❀मैया लाइ देति है सोई ।
मिश्री दूध मिलाई फैंनी❀मोहन कौं अति हीं रुचि दैंनी।।
दूध अधौटा सिता[1] मिलायौ❀भरि कटोर दोऊनि कौं प्यायौ ।
जल अचवन करि बीरी लई❀जननी लखि आनन्दित भई ७०
कहत कहानी दोऊ भैया❀मुदित होत सुनि बाबा मैया ।
पुनि जेंवत सब हीं परिवार❀परसति सुघर रसोई दार ।।७१।।
सुनि हुती बाबा मुख बाँनी❀मोहन बरनत सोजु कहाँनी ।

---

[1] —मीठा मिला हुआ ।

भोजन करि सब पूरन भये❀अति रुचि मान आचमन लये ॥
मोंहन उठि कै बीरी दई❀ब्रजपति नें कर चूम्बि जु लई।
बाबा दिहु मुहि पलंग बिछाइ❀निद्रा भरी दृगनि में आइ ॥७३॥
घोष नृपति रचि किये बिछौना❀तापै स्वाइ दिये दोऊ छौंना।
मंगल मान्यौं यसुमति माइ❀राति जगाई बधुनि बुलाइ ॥७४

दोहा—बन मंगल मंगल भवँन, गरुवौ मंगल ग्राम।
मंगल रूपी खेल बहु, रचत रँगीलौ स्याम ॥७५॥
हित रूपी मंगल चरित, बरनत कौंन अघाइ।
वृन्दाबन हित रूप बलि, रसनाँ रुचि दुलराइ ॥७६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण भूख छाक कौतूहल बरनन लीला पच्चीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ छब्बीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—पह[1] पीरी फूली जबहिं, आये मिलि सब ग्वाल।
वार कलेऊ की भई, उठि भैया गोपाल ॥१॥
मित्र बचन श्रवननि सुनत, उठि बैठे दोऊ बीर।
बैंनु बिखाँन जु बाज हीं, भवँन भई छबि भीर ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मैया भरि जल झारी लाई❀दाँतनि करत जु दोऊ भाई।
जननी बदन अंगौछे नीकें❀मनौ भरे शशि अमित अमी के३
मिश्री माखन मिष्ट मलाई❀भाजन भरि नन्द राँनी लाई।
बैठी भोर अजिर मंडली❀राम कृष्ण जेंवत विधि भली ४
आपु जेंवैं पुनि सखनि जिमावैं❀जननि निरखि २ सुख पावैं।
भैया आज कौंन बन चलैं❀पहिल[2] मतौ मिलि करि लिहु भलैं

---

[1] —सूर्योदय होने लगा। अरुण प्रकाश फैला, [2]—श्याम कह रह हैं एक मत होकर निर्णय कर लो किस बन में आज जाकर गाय चरायें।

बाँटीं[1] गाई बटैंन जु मांहि❀तिनकौं लै जु सौंन[2] हद जांहि।
बनचारी ह्वै खांभी[3] आवैं❀खेलन बन जु गाइ बिरमावैं[4] ६
यमुना जल प्यावैं विधि भली❀हम खेलैंगे रविजा थली।
पुनि पै गाँव करैं विश्राम❀चलैं छत्र बन अति अभिराम ७
धमसींगा[5] जु खिदिर बन आवौ❀इहि विध गाइनु आजु चरावौ।
भोजन करत मतौ अस कियौ❀सब मित्रनि पुनि अचमन लियो
बाबा आइ आसिका दई❀जननीं भूर बलैया लई।
खरिकनि फाटिक खोले जाइ❀मोंहन चले चरावन गाइ ॥९॥
लागे दुहुंन रह्यवनि मांहि❀दोहँनि की कछु गनती नांहि।
गो दोहँन को सुन्दर नाद❀पुर दधि मथन देत अहिलाद १०
तैंसीयें गोपी गावति गीत❀काढति हैं दधि तें नवनीत।
कृष्ण चरित जिनकौं अति प्रीय❀प्रेम द्रवित रहै कोमल हीय ११
धन्य नन्द पुर अवनीं गहनौं[6]❀कृष्ण बदन नित उठि जहाँ चहनौं
जिहि पुर देखन सुर पछितांहिं❀शिव बिधि ध्यांन जु आवत नांहिं
स्याम गऊनि कें पाछें लगे❀चरन चिन्ह अवँनी जगमगे।
नख सिख राजति अतिसैं सोभा❀तन पौगंड जु उलहीं गोभा[7] १३
अस[8] उपमा कौ सम जो दीजै❀कंद्रप[9] कोटि वारनें कीजै।
सुन्दर कटि पीताम्बर बांधे❀सुन्दर लकुट धरी लै कांधे॥१४
वरहि[10] पिच्छको मुकट जु सीश❀गुंजनि माल गरैं दस बीस।
रतन जटित कुंडल जु कपोल❀प्रति बिंबित भये चलनि जु लोल

१—चंचल गायें बटैंन की तरफ गाय हांक दी जायें, २—स्थान विशेष का नाम, ३—रज कर चालें, ४—गाय विश्राम करें, ५—स्थानों के नाम लेकर निर्णय कर रहे है, ६—भूमि का भूषण नन्द का नगर, ७—सुन्दरता चमक दमक ८—उपमा वहां से दें जब कोई समानता की वस्तु जगत में नहीं, ९—कामदेव, १०—मोर पंख।

यौं राजत बेसरि कौ मोती❀मनु गिरि स्याँम लसतु भृग[१]गोत
सनी फुलेल अलक अस राजैं❀मनुमुखकमल वृन्दअलि[२] भ्राजैं॥
रतन पेंच पर कलँगी दरसैं❀मनु सोभा की गोभा सरसैं।
नगनि[३] खचित बाजू भुज लसे❀मनु मृनाल दुतिया शशि बसे१७
कंठी चौकी मोतिनु माला❀उर पर रुरकति छबि जु बिशाला
चूरा कनक जटित मणि कर वर❀लसति अँगूठी अँगुरिनु सुन्दर॥
कटि किंकनि नूपुर चूरा पग❀धरत उठाइ देत सोभा मग।
ऐसी विधि सौं बनिठनि निकसे❀मित्र मंडली छबि लखि बिकसे॥
दोहा—गऊनि नेह जु कृष्ण सौं, बरनौं मति परमान।
नाम बरन अरु गुण जिते, तिनकौं करौं बखाँन॥२०॥
व्रज परिकरु सब अलौकिक, विधि की सृष्टि जु नांहि।
ओत पोत[४] अनुराग है, सब सौं सब मन मांहिं॥२१॥

॥ चौपाई ॥

धौरी[५] कृष्ण सुहथ करि पलि❀पाछैं लागी आवति चली।
धूँमरि[६] के मन अति उत्साह❀यसुमति सुत देखन जु उमाह २२
काजर[७] गऊ टोल शिरमौर❀स्याम ग्वार बिनु रचै न और।
नाम बुलाही बन घन चरै❀जब तब दृष्टि कृष्ण तन करै २३
यमुना[८] बरनो गाइ अनेक❀गाँग[९] गऊनि को टोल जु एक।
इनके लागत अति प्रिय नाम❀निरखि रहति ये सुन्दर स्याम २४
गाइ रातुली[१०] मुरि मुरि चहैं❀मनु मोहन सौं बातैं कहै।
खैर गऊनि के टोल जु न्यारे❀अति मन भावैं नन्द दुलारे ३५

१—मानो श्याम पर्वत पर चन्द्रमा शोभित हो यह बेसर के मोती की उपमा दी गई है, २—जैसे भँवरे मुख कमलों पर शोभायमान हों, ३—बाजूबन्द दूज का मानो चन्द्रमा कमल की नाल मानो भुजा पर निवास किये हुए हो, ४—ओत प्रोत रोम रोम परस्पर समाया हुआ, ५—रंग, ६—रंग, ७—रंग, ८—रग यमुना जैसा, ९—रंग गंगा जैसा, १०—रता लाल रंग।

तीतर बरनी हिय अति हेज[1] ❀धाईं आवति कर तन तेज[2] ।
पीयरैं[3] ऐसें हूंकति आवैं❀सब तें अधिकौ हेत जनावैं २६
लाखो उर की प्रीति जु परषी❀मोहन ओर निहारि जु हरषी।
गऊ सोभनी स्यांमहिं प्यारी❀महा गुनीली अधिक दुधारी २७
एकनि के जु सींग यौं अरें❀मानौं शिर पर मुकुट जु धरें।
हिरन शिंगारी हूंकति आवैं❀नन्द सुवँन कें अति मन भावैं ॥
स्यामहिं निरखि सुखित होइ भैंड[4]❀आवैं भरति झुकौं हैं पैंड[5]।
चाँदुल[6] लागी फिरति जु पाछें❀लाड करैं मुरली धर आछें ॥२९
धेंनु मंगला मंगल करनी❀मन मोहन मन आँनन्द भरनी।
गाइ टीकुली[7] दैनी मोद❀आवैं झुकी स्याम की गोद ॥
गऊ सरस्वती अस अनुरागी❀मुरली धुनि सुनि आवैं भागी।
टेर सुनैं मोहन की जबै❀घन बरनी उठि धावैं तबैं ॥३१
इंगुर बरनीं पास जु रहैं❀कृष्ण दरस अन्तर नहिं सहैं।
एक टोल की[8] सबै सोहनी❀जिनके नाम हु धरे मोहनी॥३२
एक टोल पाटुली कहावैं❀स्याम बोल सुनि सन्मुख धावैं।
एक टोल सब विद्रुम बरनीं❀लाल छबीले को मन हरनीं ॥३३
एक टोल की मदनीं गाइ❀बजैं पैंजनीं जिनकें पाइ।
नित्त करैं मोहनहिं रिझावैं❀लाल आपु कर तिनहिं खुजावैं[9]॥
एक टोल की सुन्दर मुखी❀हरि तन देखि देखि होइँ सुखी।
एक टोल सुभ लच्छन नामाँ❀दैंनी मोद परम अभिरामाँ ॥३५
एक टोल कीं गोरी गाइ❀तिनकौं देखत स्याम सिहाइ।
एक टोल हाँसुली कहावैं❀मदन गुपाल अधिक मन भावैं ॥

१—वात्सल्य स्नेह, २—वेग वति या पुलकित, ३—रंग पीला, ४—एक प्रकार की गौएँ, ५—पग उठा कर, ६—वह जो जिनके चान्द से चिन्ह मस्तक पर हैं, ७—जिनके मस्तक पर तिलक के से चिन्ह है, ८—अब टोल अर्थात झुण्डों के बरणन कर रहे हैं, ९—खुजलाते हैं।

एक टोल कीं नाम जु हीर❀जिनकें सुन्दर पुष्ट शरीर ।
एक टोल कीं आनन्द दैंनी❀रचि विधाता मनु छवि सैंनी३७
एक टोल कीं हिय हरषनीं❀क्रूर[1] पसुनि कौं अति मरखनी।
एक टोल कीं सब ही नवला❀कृष्ण दरश कौं धावैं सबला ३८
एक टोल की बाँठी[2] महा❀तिनके कौतिक बरणौं कहा।
एक टोल कीं नाम सुसीला❀तिनके शिर मखतूल चुटीला[3]॥
एक टोल कीं कपिला भनीं❀तिन सौं प्रीति कृष्ण की घनी।
एक टोल कीं तन अति उज्जल❀बन[4] सोभा सर हंश मनौं कल॥
एक[5] टोल कीं थन पय श्रवनीं❀जित स्रवनतितितभिंजवतिअवँनीं
एक टोल रंग मोर जु ग्रीवाँ❀लसति मनौ सोभा की सीवाँ ४१
एक टोल रवि की छबि धरनी❀हरि हलधर कौं सुख विस्तरनी।
एक टोल कीं मन्द गांमिनी❀तन दुति मानौ शरद जांमिनी॥
एक टोल चंचला जु नाँम❀प्यारी अधिक कृष्ण बलराम।
एक टोल कीं ऊदी जेतीं❀सवै सुलच्छण बरनौं केतीं ॥४३
एक टोल अहिलादिनि ऐसीं❀सुर लोक हूँ सुनी नहिं जैसीं ।
एक टोल की रंगी चँगी❀कमल नैंन की प्यारी संगी ४४
एक टोल आभा मणि नीली❀कृष्ण लाड करि जें गरबीली।
एक टोल अति हित वर्द्धनीं❀नील मणिनु शिर पट्टी बनीं॥४५
कनक सांकरी घंटा गरैं❀मारग चलत नाद सुठि करैं ।
एकनि शिर पट्टी मुक्ता गन❀कैयों[6] टोल लसति ऐसें बन॥४६
एकनि गर मूँगनि की माला❀तिनके राजत टोल विशाला ।
एकनि के गंडा[7] मखतूल❀एकनि शिर लसैं कंचन फूल४७

१—क्रूर पशुओं को भय देने वाली, २—चञ्चल, ३- सिर में सिलमे सितारे लगे चोट पहने हैं, ४—मानो मान सरोवर के हंस बन में सोभा दे रहे हों. ५—जिनके स्तनों से अपने आप दुग्ध झरता जाता है जहां जाती है भूमिको दुग्धसे भिजाती जाती [illegible]—उनके कई टोल अर्थात झुंड बन में शोभा पारहे हैं,७-तावीज या जन्त्र सिरमें बँधे हैं।

एकनि शिर जू कौंदना पाट[1]❀दमकत तिनके उच्च लिलाट।
एकनि शिर जु मोर के पखा❀तिन्है खिलावत चलत जु सखा॥
एकनि कें शिर पन्ननि दाम❀तिनकौं पन्ना बरनी नाम।
एकनि कें शिर हीरा लसैं❀मानौं इनके भाल जु हंसैं ॥४९
एक अलंकृत ऐसें करी❀जनु इहि विधि शृष्टि न अवतरी
एकनि गर डारी जु हमेल❀ग्रीव हलाइ करत जे खेल ॥५०
एकनि कें शिर झूमरि हलैं❀सोभा देहिं रँवकि जब चलैं।
एकनि मणि कठुला पहिराये❀एकनि सौंने सींग मडाये ॥५१
एकनि के गर बाजैं जंग[2]❀जिनकें परम सचिक्कन अंग।
एकनि माल घूँघुरू राजैं❀चूँनिनु जटित मधुर धुनि बाजैं॥
एकनि सीश बनी मणि पीति❀तिनमें निकसति सुन्दर जोति।
एकनि कें नग जटित जु मुहरी[3]❀एकनि के गर हँसुली दुहरी ५३
अस गाइनु के टोल अनन्त❀बरनि लहैं को तिनकौ अन्त।
दरशति हैं बड़भागिनि सबै❀हरि कर कमलनि पौंछत जबै ५४
जब ऊँचे चढि मोहन टेरैं❀धाइ आइ चहुँ दिशि तें घेरैं।
सूँघन चाटन हरि तन लगैं❀चलैं स्याँम तितही संग भगैं ५५
अस जु लाड गोलोक हुँ नांहिं❀इन्हैं देखि वेऊ पछितांहिं।
ब्रज जन्मी हरि हित करि पली❀न्याइ गाय ये भागिनु बली ५६
कमल नैंन सुख गाइनु दैंहिं❀पुनि इनतें सुख आपुनु लैंहिं।
ओत पोत अनुराग जु बढै❀दिन दिन रंग चौगुनों चढै ५७
जहँ जहँ खोज गऊनि[4] की परैं❀अवनीं के उर आनन्द भरैं।
नित[5] नव बढैं हरति त्रिन गोभा❀नित २ नव नव दरशैं सोभा ५८

१—रेशमी फौंदना, २—घंटी या घूँघरू, ३—मुख पर एक प्रकार का पट्टा जो बलवान गाय को नियंत्रण कराता है, ४—पद चिन्ह, ५—भूमि देवी नवीन २ त्रिण देती हैं

ब्रज धरु चरन अलंकृत हरिकैं❀पुनि[1] चाटी जु बच्छ तन धरिकैं
गोपद चिन्ह भरयौ जल जहाँ❀कोटि २ तीरथ फल तहाँ ॥५९
तीरथ इहि सम कहिये कौंन❀महिमा समुझि मुनिनु गहि मौंन
इहि अँवनी सौभाग्य जु गरुवौ[2]❀विधि कृत कियौ पसारौ हरुवौ[3]।
सब[4] तें दुर्लभ ब्रज की मही❀विधि उद्धव त्रिन हौंन जु चही।
अरु ये मुरलीधर की धेंनु❀देवनि दुर्लभ इन पद रैंनु ॥६१
जहँ जहँ घास अछीकर[5] जानैं❀ग्वाल गाइ संग करैं पयानैं[6]।
जे त्रिन कृष्ण चरन धरि परसैं❀तिन कौं चरत महा सुख सरसैं६२
इक मुख अँवनि घास कौं धरैं❀दूजैं दृष्टि कृष्ण तन करैं।
बछनि तें जु सतगुनी प्रीति❀ऐसी मोहन संग समीति[7] ॥६३
कोसनि लगि बढि जाति सु गाइ❀स्याम चरावैं तहाँ बगराइ।
मतौ[8] कियौ हो तहाँ तहाँ गये❀मोहन गाय चरावत भये ॥६४
छक हारी पाछें तें आवैं❀तरु पलास चढि ग्वार बुलावैं।
ढोटा बहुत फिरी हम बन बन❀तुम लैगये दूरि गाइनु[9] गन ॥६५
अरी भटू हम टेरत रहैं❀तुम जु और ही मारग गहैं।
तुम भूलीं तौ कीजै कहा❀आजु भूख लगी हमकौं महा ६६
कही मनसुखा हँसि यह बात❀भैया यह रही बन फल खात।
बेर बीनि कें भरे जु ओलीं❀जहाँ तहाँ बन दौरी डोलीं ॥६७
खाये बैठि छाँह तर ढाक❀को पहुँचावै हम पै छाक।
तुम[10] कौं रचै जु छाया रूख❀हम कौं भटू सतावै भूख ॥६८॥

१—ब्रह्मा के वत्स हरण पर भगवान वत्स बने तब गऊन को चाटने का सौभाग्य मिला इसलिये भाग्य बली गाय हैं, २—महा महिमा मय, ३—हलका गौण तुच्छ, ४—ब्रज की भूमि का तृन होने को ब्रह्मा उ०व तक चाहते हैं श्रीमद्भागवत दशम स्कंध में है, ५—पुष्ट हरियाली घास, ६—प्रस्थान, ७—मानो मोहन के संग सभा के लोग हों, ८—घर से चलते समय जो परामर्श किया स्थान था उधर उधर को गये, ९—गौओं के समूह, १०—मनसुखा हासियों से कह रहे हैं तुम तो ढाक की छाया में विश्राम करती रहो हम भूखे रहे कुछ तो तर्स किया करो।

मुख[1] आवै सो भूखौ भाखै❀क्यौं काहू की कांनि जु राखै।
लला भयौ तू अति बत बना❀घर तें क्यौं नहिं लायौ चना ६९
भोर हीं सबनि कलेऊ कर्यौ❀तब तुम पाऊँ जु बन कौं धर्यौ।
ऐसें लला भूख तें डरौ❀रंचक मन धीरज नहिं धरौ ॥७१
जे बन फल हमकौं जु बताये❀क्यौं न तोरि ते तुम हूं खाये।
कटुक बोलिबौ बाँट जु पर्यौ❀नाम मनसुखा[2] कौंने धर्यौ॥७२
राम कृष्ण सुनि हँसैं जु भारी❀सखा लगे पटकावन तारी।
भटू[3] बात मैं तेरी पाई❀काहू सों घर में लरि आई॥७२
को[4] चटसार जहाँ तुम पढ़े❀बचन कहत हौ छोले गढ़े।
आवौ आवौ सब मिलि ग्वार❀भोजन कौं जिनि लावौ बार[5]७३
अप अपनें छींके सब खोलौ❀जे हैं[6] दूरि तिन्हे हू बोलौ।
सब हीं बांटि बांटि कै पावौ❀कैसो स्वाद सु कहि समुझावौ७४
भैया घर में स्वाद न ऐसो❀मित्र मंडली मिलि ह्वै जैसो।
छींके खोलि जु भोजन करैं❀लै लै कौर स्याम कर धरैं ॥७५
मोहन बडौ सवादी[7] भैया❀कहि दै चतुर कौन की मैया।
काहू कौं जु सुतेंवन कहै[8]❀काहू कौं मुख मोरि[9] जु रहै ७६
मुख[10] मोरै सो चिरै जु भारी❀दै दै सैंन दिवावै तारी।
बिना कुलाहल कल नहिं परैं❀ऐसे कौतिक मोहन करैं ॥७७॥
कोऊ मित्र रूठि कैं चलैं❀ठोडी गहि जु मनावैं भलैं।
मानि लेह भैया सिख मेरी❀अब कैं भली कहौंगो तेरी ॥७८

१—दासी उत्तर दे रही हैं भूखा व्याकुल बातें बहुत करने लगता है, २—भाव यह है कि कड़वा बोल कर दूसरे का मन दुखाने वाला मनसुखा कैसे नाम रखा गया, ३—मनसुखा उत्तर दे रहा है क्या घर से लर के आई हो, ४—दासी उत्तर दे रही हैं, ५—देरी मत करो, ६—जो ग्वाल दूर फिर रहे हैं उनको भी बुलालो, ७—सवाद की परीक्षा में चतुर, ८—साग भाजी, ९—किसी की साग पर मुख चिढ़ा दें, १०—जिसके साग पर मुख चिढावें वह क्रोधित होता है।

ग्वालिनि मिलि ज्यौंनार जु करचौ❀कुंड[1] नाम ज्यौंनारी परचौ।
खेलन[2] बन में खेलैं जाइ❀ओबै[3] धांमि पिवाई गाइ ॥७६॥

दोहा—सुबल गोद में साँवरौ, पौंढ्यौ सुर तरु छाँह।
गायें बैठी सघन बन, आनन्दित मन माँह ॥८०॥
बिजन[4] करन कोऊ लगे, कोऊ पलोटत पाइ।
श्रमित भये सुकुँवार तन, सोइ गये अलसाइ ॥८१॥
गाइनु लाड शिंगार जस, कृष्ण माहिली[5] प्रीति।
वृन्दाबन हित रूप बलि, बरनीं कछु रस रीति ॥८२॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण गाऊ नाम जस लाड बरनन लीला छबीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ सत्ताईसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—सोये अति हीं सुखित ह्वै, पुनि जागे बलबीर[6]।
दौंना पात पलास रचि, कोऊ भरि लाये नीर ॥१॥
मोहन बदन प्रछालि कैं, धापि कियौ पुनि पाँनि।
बहुरि बजाई बाँसुरी, गऊनि जगाये काँन[7] ॥२॥
खेल रचत मुरली धरन, बैठे रविजा तीर।
विटपनि की छाया सघन, आवत त्रिविध समीर ॥३॥
फूल तोरि लाये सखा, गहने रचे बनाइ।
सुबल शिंगारचौ स्याम तन, उर माला पहिराइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

खेलन लागे रविजा कूल❀वय[8] गुन रूप सखा समतूल।

---

[1]—जहां मिलकर भोजन किया वहां कुंड है उसका नाम ज्यौंनारी कुंड है. [2]—जहां खेल किये उस बन का नाम खेलन बन पड़ गया. [3]—इकत्रित करके गऊओं को जल पिलाया. [4]—पंखा [5]—नित्य बिहार अथवा ग्रंथ कर्ता अपनी नित्य निकुञ्ज की प्रीति को माहिली मधुर प्रीति को संकेत कर रहे हैं यद्यपि लीला सख्य रस की वर्णन की है, [6]—बलराम के भाई, [7]—कान्ह श्रीकृष्ण ने बंशी बजा गाय जगाई अथवा गौओं ने अपने अपने कान खड़े किये, [8]—आयु गुन रूप समान है।

ज्यों ज्यौं रवि रथ पच्छिम जाइ❀त्यौं त्यौं चलैं गाँव दिशि गाइ५
पाछैं आवत ग्वाल चिकनियाँ❀सुन्दर कटि में सोहत तनियाँ ।
घँसि २ धातु लपेटी तन में❀ऐंठ भरी अति जिनके मन में ६
हँसि २ कैं यौं बोले सबै❀मोहन खेल नयो रचि अबै ।
लाल सबनि की मन रुचि पाई❀खेल रचन की जुक्ति बनाई॥७
मोहन कहैं बिलम्ब अब कैसो❀सब मन रुचै खेल रचौं तैसौ ।
यह सुनि हियनि[1]उमाहौ भर्यौ❀सखनि खेल कौ उद्दिम कर्यौ ८
सब में नन्द सुवन सिर मौर❀यातें प्यारौ हमैं न और ।
यह जु मतौ सब हिनु ठहरायौ❀खेल अपूरब मन अति भायौ॥९
छत्र बन आइ छत्र शिर धर्यौ❀तहाँ स्याम कों राजा कर्यौ ।
सब हीं आइ जुहारी देत❀सब की भेंट हरषि कैं लेत ॥१०
कोऊ पढैं विप्र बनि आवैं❀ते ज्योतिष की बात सुनावैं ।
हम वांछित जु राज कल्यान❀महाराज कछु दीजैं दान ॥११
कोऊ बनि गुनी करन लगे गाँन❀स्याम सुनत हैं दै दै काँन ।
दाँन दैंन रूखे ह्वै रहैं❀वे राजा के मुख तन चहैं ॥१२
सुबल प्रधान राज कौ भयौ❀ग्वालनि कौं मिलाइ संग लयौ।
कोउ बने परजा कोउ सिकदार[2]❀कोउ भये बनिक सु रच्यौ बजार
मधुमंगल भयौ रच्छक जाकौ❀सब हीं मानत बचन जु ताकौ ।
तिनमें बन्यौ मनसुखा चोर❀लै दश पांच आपनें जोर ॥२४
कोऊ जगि जगि पहिरौ देहिं❀कोऊ घूत चुराइ जु लेंहि ।
महाराज तुम नगर जु मांहिं❀चोर वस्तु कौ लै लै जांहिं ॥१५
मधुमंगल कौं जबहिं बुलायौ❀स्याम कुपित ह्वै कैं समुझायौ ।
या पैं तें चोरी भरि लेहु❀तब तुम याकौं जान जु देहु ॥१६

१—सबके हृदयों में हुलास भर गया । २—प्रजा के मन्त्री ।

तासौं सबै ग्वाल लगि परै❀तिन कौतिक नाना विधि करै।
अब हौं चोर पकरि कै लैहौं❀कै तुम्हरी चोरी भरि दै हौं ॥१७
ऐसो गाढौ पहिरो दियौ❀चोर मनसुखा पकरि जु लियौ।
ताकौ बहु विधि धक्का दये❀लै राजा कें आगें गये ॥१८॥
चोरी करी चोर तैं काहैं❀तोहि राजा की संका नाहैं।
ढीठ चोर मन नांहिन डरै❀राजा सनमुख बातैं करै ॥१९
जथा[1] धर्म राजा अनुसरैं❀ताही पथ परजा पग धरैं।
चोर शिरोमणि राजा होइ❀ताकी भय मानै क्यौं कोइ ॥२०
हम चोरी कीनी घर एक❀राजा चोरे घर जु अनेक।
याकौ न्याव भली विधि कीजै❀बूझि राज में उत्तर दीजै[2] ॥२१
सब हँसि परे चोर सुनि बाँनी❀जिन राजा की कांनि न मांनी।
भैया यह जु चोर परचंड❀याकौं दीयौ चहिये दंड ॥२२॥
क्यौं अनीति मधुमंगल भाषै❀दंड कमंडल दण्डी राषै[3]।
यौं कहि चोर जु चल्यौ पलाइ❀ग्वार लगे सब पाछैं धाइ ॥२३
दुर्यौ[4] कुंज में हाथ न आयौ❀यौं राजा कौं आइ सुनायौ।
बढि कैं चली गाँव दिशि गाइ❀सबहिं[5] खेल तजि चले पलाइ२४
एक मृगनि कें पाछें लगे❀जैसे वे तैसे ये भगे।
एक कहैं इनि कौं गहि लेहु❀भैया आगें जान न देहु ॥२५॥
वे जु चौकरी लंबी भरैं❀हाथ न आवैं तब हँसि परैं।
[6]छौंना एक मनसुखा गह्यौ❀किनहूं आइ स्याम सौं कह्यौ॥२६
भैया यह सुन्दर जु खिलौना❀मो कौं दै यह मृग को छौंना।
या पलटैं जु बाँसुरी लै हौं❀तव तो कौं मृग छौंना दै हौं॥२७

---

[1] - मनसुखा चोर ने उत्तर दिया राजा चोर तो प्रजा भी चोर ही होगी यही नीति है। [2]—भाव यह है कि बहु मत लिया जाए वोट डाल कर, [3]—सन्यासी दण्ड रखते हैं मैं क्यों दण्ड लूँगा मनसुखा ने कहा, [4] छिपा हुआ, [5]—गाय जब गांव की तरफ अधिक बढ़ गई तो सब ग्वाल खेल छोड़ श्याम के साथ भागे, [6]—मृगी का बच्चा।

होतु अधीन नन्द कौ पूत❀मानत नांहिं मनसुखा धूत ।
सेली दई गले की सोहन❀मृग छौंना पलटे लियौ मोहन२८
हँसत लसत सब आगें चले❀सोभित स्याँम सखनि मधि भले ।
खिदू बन आइ खेद तन गयौ❀नन्द गाँव कौ दरशन भयौ ॥२९

दोहा–गाइ जु प्याईं कुंड में, ग्वालनि अँचयौ नीर ।
अधिक फूल मन में बढीं, पोंछैं सबनि शरीर ॥३०॥
फूलनि तुर्रा शिर सजे, बांधि पिछौरीं फैंट ।
गुंज माल पहरीं गरें,, भरे जु छैल अमैंठ[1] ॥३१॥
नन्द सुवन शिंगार सजि, आवत गाइनु लार ।
न्याइ विस्व मोहन जु पद, लोटत कोटिनु मार[2] ॥३२॥
अलगोजनि की धुनि भई, बाजत बेंनु बिखाँन ।
ब्रज बनिता बिथकित भईं, सुनि मुरली कौ गाँन ॥३३

॥ चौपाई ॥

सुनत बछरुवनि राँभ सुहाई❀गऊ आतुरीं घर कौं धाई ।
अटा अटारिनु चढ़ि ब्रजबाला❀देखन लगी नन्द के लाला॥३४
देववधू हू करी घाव रीं❀ब्रज बनिता होंइ न्याइ बावरीं।
मनमथ हू के मन कौं हरैं❀अस छबि देषि धीर को धरैं॥३५
मुख रुरकति घुँघरारीं अलकैं❀देखत भूलि जाति दृग पलकैं ।
महरि रोहिनीं ठाढी पौरी❀आवति बधू नगर की दौरीं ॥३६
मुरली धुनि घर घर में गई❀हरि[3] आवन की सुधि तिन दई।
सजि पंकति ठाढी भईं नवला❀जिनकैं हिये प्रेम अति सबला३७
मनु मुरली ने न्यौति बुलाई❀ओलिनु फूल भरें ते आई ।

---

[1] —हुलास अहलाद. [2] —करोड़ों कामदेव उनके चरण में लोटते हैं यही महिमा है कि वह अखिल विश्व को अकेले मोहित करने वाले हैं, [3] —मुरली ने मानो दूती बनकर घर घर पता दिया कि श्याम बन से लौट रहे हैं ।

सोभा निकर स्याम अवलोकैं❀पलक परन को गति कों रोकैं३८
जिन यह रच्यौ सुवन ब्रज ईश❀ता विधिना को देति असीश।
देखैं अपनीं अपनीं रीति❀जैसी जाकें हिय में प्रीति ॥३६॥
अँगुरी चटकति आरज भाम❀जिनहिं प्राँन ते प्यारौ स्याम।
नित उत्सव ब्रज राज दुवार❀नित सुख भीजैं कौतिक हार४०
विप्र वधु मिलि मंगल गावैं❀दाँन दच्छिना ते नित पावैं।
दोऊ माइ आरतो करैं❀कुशमनि की जु उलैड़ें[1] परैं॥४१
लै अंचल जु अँगोछति आँनन❀दोऊ जननी अपने पाँनन[2]।
मैया आज दुहौंगो गाइ❀अब हीं हौं जो खरिक में जाइ४२
तू पठाइ दै अब दोहँनीं❀गो दोहँन करि हौं बोंहनीं[3]।
मोहन गये खरिक के द्वार❀तहाँ सिमिट आये सब ग्वार॥४३
बाबा हू सुनि आये धाये❀शिर कर धरि उर अधिक सिहाये।
सूधी सी जु गाइ इक हेरी❀बाहिर खरिक स्याँम ने टेरी॥४४
ता तर[4] बछिया छोडि जु दई❀घोंटुनि[5] बीचि दोहनी लई।
मोहन लगे दुहँनि कों गाइ❀जासु थननि तें दूध चुचाइ॥४५
कोऊ धार अँवनी पै जांहिं❀कोऊ परैं दोहँनी मांहिं।
बाबा कहैं सम्हारि दुहि लाल❀मेरे कोविद[6] मदन गुपाल॥४६
सुनि कैं बचन चोंप चित भई❀सनय सनय गैया दुहि लई।
जानी दूध दोहँनी भरी❀भारी लगी अवँनी तब धरी ४७
यसुमति गीत गवावति आंईं❀संग जोरि ब्रज बनिता लांईं।
आइ खरिक कौं पूजन कर्यौ❀लै पकवाँन गऊ कैं धर्यौ॥४८॥
दूध लिवाइ जु घर कौं चलीं❀अति मंगल कीनौं विधि भलीं।

---

[1]—झरी सी लगी है. [2]—हाथों से, [3]—जैसे दुकान दार बोहनो करता है ऐसा लाल जो ने मैया को कह प्रमुदित किया, [4]—उसके नीचे, [5]—लाल जी ने घुटनों में दोहनी संभाल ली, [6]—चतुर सयाने।

बाबा की जु आँगुरी गहैं❀मोहन मुख तें ऐसें कहैं ॥४६॥
बाबा हौं नित दुहि हौं गाइ❀मोकौं दुहिबौ देहु शिखाइ।
सुनि मुसिकानौं ब्रज को रानौं❀मोहन मेरौ भयौ सयानौं ॥५०॥
भवँन भीर तब लग भई आई❀सबनि सुनी हरि दुहि जु गाइ।
जो दोंहनी स्याम दुहि लायौ❀सो जु दूध बहु माट मिलायौ५१
गाइ दुही मेरे सुन्दर बर❀वही दूध बाँट्यौ लै घर घर।
बहु बहँगीनु भरायौ तब हीं❀गिरि कौ जाइ न्हवावौं अब हीं।
इहि विधि मांनी महरि बधाई❀पुनि सुत कौं व्यारू करवाई।
रांम स्यांम बैठे इक साथ❀महरि जिमावत अपने हाथ॥५३
औंट्यौ दूध सिता बहु डारि❀प्यावति हैं सुत कौं पुचकारि।
जल पिवाइ पौंछति मुख आछें❀फिरयौ लाल मेरौ गाइनु पाछें५४
श्रमित भये मेरे दोऊ छौंना❀पौंढौ पलिग किये जु बिछौंना।
मैया[1] कहै कहांनी जब हीं❀नींद आइ है मोकौं तब हीं ५५
कहौं लाल ऐसी जु कहांनी❀मानौ अमित अमीं की सांँनी।
दोऊ बीर हूंकरा भरौ❀समझि कहांनी मन में धरौ ॥५६
कहियतु इक वैकुंठ जु धांम❀जहां प्रभु तिन नारायन नाम।
सदा एक रस हैं शर्वोपर❀श्री लछमीं पतनी हैं तिन घर॥
खगपति कहिये बाहँन तिनकौ❀अति अखंड ईस्वर्ज सु जिनकौ।
चारि भुजनि में आयुध धरैं❀भक्तनि की नित रच्छा करैं ॥५८
अपनें जनकौ संकट जानैं❀ताही छिन प्रभु गरुड पलानैं।
नृप उत्तानपाद इक भयौ❀ताकें सुत तप कौ हठ लयौ॥५६
दुमात नें अपमान जु कीयौ❀बचन बाँन कहि बेध्यौ हीयौ।
पूरब लैं नहिं प्रभु आराध्यौ❀नाहिंन कोऊ उग्र तप साध्यौ ६०

---

[1] १—लाल जी कह रहे हैं मैया मुझे कोई कहानी सुना तब मुझे नींद आवेगी।

पुत्र न तू मम उदर जु पर्‍यौ❀कूँखि दुहागिनि की औतर्‍यौ।
राज गोद में बैंठे जोई❀मेरे गर्भ प्रगट भयौ सोई ॥६१॥
नृप जु बधू कें बस ह्वै रह्यौ❀सुनि अस बचन कछु नहिं कह्यौ।
ध्रुव रोवतु माता पै आयौ❀उनि पुचकारि सु कंठ लगायौ६२
सौति कियौ सुत ताडन जैसे❀बनितनि आइ सुनायौ तैसे।
कहति मात उनि सत्य सु कह्यौ❀बेटा क्यौं मन रोस[1] जु गह्यौ ६३
तो जु पितामह ने तपु कियौ❀तब प्रभु ने नृप आसन दियौ।
पुत्र भजौ उनहीं कौं जाइ❀दीनबन्धु जन करैं सहाइ ॥६४
जननी कौ जु बचन सुनि लियौ❀हिय भयौ द्रवित गवन बन कियौ
जिन नहिं देख्यौ पुर कौ द्वार[2]❀सो जु चल्यौ बन बिकट मझार॥
राज कुँवार वैस लघु महा❀ताकौ धीरज बरनौं कहा।
सिंघ सर्प तें नेंक न डरयौ❀प्रभु परचावत उद्दिम कर्‍यौ॥६६
पर उपकारी नारद आयौ❀मारग में बालक समझायौ।
अरे बच्छ तू खेल खिलौंना❀प्रभु मिलिबे कौ हठ तजि छौंना ॥
देखौ रे छत्रिनु कौ हियौ❀जीवन आस छांडि इन दियौ।
मेरौं बचन मानि अब भलौ❀फिरि कैं तात भवँन कौं चलौ६८
प्रभु तुम नीकी कही जु बांनी❀पै मेरे हिय नहिं ठहरांनी।
फूटैं कलश न ठहरै नीर❀बचन बांन अस मो उर पीर ६९
अब करि धरि मोकौं अपनावौ❀प्रभु मिलिबे कौ पंथ बतावौ।
मुनि सब भांति अनुग्रह कियौ❀ध्यान धारणा मंत्र जु दियौ ॥७०
जाइ मधुपुरी[3] प्रभु पद जजौ[4]❀कमल नैंन कौ मन दै भजौ।
निर्मल तप करि हरिहिं रिझावौ❀तिनकौ दियौ अभय पद पायौ॥
हरि पुर ते महिमा जु गरिष्ट[5]❀जाइ मधुपुरी सेवौ इष्ट।

१—क्रोध, २—अपने नगर के कोट का फाटक नहीं देखा था, ३—मथुरा में जाकर, ४—यजन अर्थात उपासना करो, ५—वैकुण्ठ से उत्कृष्ट महिमा मथुरा की है।

बेगि रमापति दरशन दै हैं❀तेरे मन को दुख हरि लैं हैं ७२
नारद जु के करि पद बन्दन❀चल्यौ मधुपुरी नृप को नन्दन।
देखि पुरी मन हरष्यौ भारी❀रविजा[1] तट तप ठौर विचारी७३
कछु दिन कीयैं पत्र अहार❀कछु दिन रह्यौ जल कें आधार।
कछु दिन पवँन जु भक्षन कियौ❀स्वाँस जीति हरि पद चित्त दियौ॥
रहि गयौ टेकि एक पग ऐसे❀चित्र लिखी जु पत्तरी जैसे।
तब हरि हिये अधिक अकुलाये❀चढ़ि कैं गरुड़ रमापति आये ७५
पाँच वर्ष कौ हो ध्रुव बालक❀नारायन भये ताके पालक।
नृप सुत कछू बदन[2] तें कहिये❀मांगि २ वरु जो तुहि चहिये॥७६
प्रभु यौं कहत जु ठाढे पास❀ह्वै गयौ मगन रूप में दास।
तब बालक हिय अति अरबरचौ[3]❀चा है कछु प्रभु की स्तुति करचौ
भक्त भाव प्रभु ने लखि लयौ❀संख छुवाइ कपोल जु दयौ।
उर बाँनी जु फुरीं अनयास[4]❀रसना हरि जस कियौ प्रकास७८
प्रभु ध्रुव कौं ऐसो बर दीनौं❀इहि[5] उहि लोक विपुल जस कीनौं
प्रभु तें बरु लहि पुर कौं गये❀तात मात उर आनन्द दये॥७९
पुर घर घर मंगल भयौ ऐसौ❀सुन्यौं नहीं सुर लोक जु जैसौं।
मंत्रिनु मिलि नृप मतौ जु कीयौ❀राज छत्र ध्रुव कें शिर दीयौ८०
बरष छत्तीस हजार जु मही❀पालन कियौ धर्म रति रही।
पुनि ध्रुवकौ ध्रुव लोक बसायौ❀हरि की कृपा अटल पद पायौ ८१
सो नारायन मेरें धाँम❀सेवा तोहि सिखाऊँ स्याँम।
यह सुनि राम कृष्ण मुसिकांनैं❀भेद भीतरौ माइ न जानैं॥८२॥
मैया भली कहाँनी बरनी❀यह तौ सबहिनु कौं मन हरनी।

---

[1]—श्री यमुना जी के किनारे पर तप का स्थान निश्चय किया [2]—मुख से कहो, [3]—व्याकुल हुआ, [4]—सहज में, [5]—इस संसार तथा परलोक दोनों में महा यश हो यह बर दिया।

कहै अपूरब बचन अनूप❀बलि बलि वृन्दावन हित रूप८३

दोहा—मैया आवति नींद मुहि, सोऊँगो सचु पाइ।
भोर हीं आवैं ग्वाल जब, दीजो मोहि जगाइ ॥८४॥
गाढौ दही जमाइयौ, पतरौ रुचै न मोहि।
प्रात कलेऊ करौंगो, कहै देत हौं तोहि ॥८५॥
या बोलनि पै बलि गई, मेरे मदन गुपाल।
दधि भाजन अगनित भरे, तुम जेंवौ मिलि ग्वाल॥८५॥
सुख सोवौ मेरे लाडिले, लै हौं प्रात जगाइ।
वृन्दाबन हित रूप यौं, कहति यसोदा माइ ॥८७॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण प्रथम गो दोहन मैया मुख कहानी बरनन सत्ताईसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ अट्ठाईसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—अजहूं नहिं जागे लला, पौंरि पुकारे ग्वार।
पीरो यह फूली भली, मैया खोलि किवार ॥१॥
खरिकनि में राँभी गऊ, पंछिनु कीनौं शोर।
राँनी सुतहिं जगाइ दै, निपट ह्वै गयौ भोर ॥२॥
ग्वालनि की बाँनी सुनीं, फाटक खुल्यौ जु पौरि।
करन कलेऊ स्याम संग, सखा जु आये दौरि ॥३॥

॥ चौपाई ॥

सुख में रजनी बीति जु गई❀पसर[1] उठाँवन बरियाँ भई।
ग्वालनि आइ कुलाहल कियौ❀मोहन लाल जगाइ जु लियौ ४
मित्रनि कौं अति आदर दीनौं❀बदन प्रछालि कलेऊ कीनौं।

---

[1]—बिस्तर आदि शयन के सब समान।

सब मिलि कियौ मतौ यह भोर❀चलिये आजु काम बन ओर॥५
घर घर तें जु सखा लिये बोलि❀खरिकनि फाटक दीये खोलि।
कांमां[1] सनमुख गोधन चले❀मनु सोभा घन उमडे भले॥६॥
कछु ढिलावटी[2] ढील जु करौ❀पुनि सतबाँस[3] ओर पग धरौ।
नौ[4] नेरैं ह्वै चलौ पहारी❀तहाँ सुनैं घास अछोकर[5] भारी७
अलगोजा महुवरि बहु बाजैं❀बैंनु बिखाननि में सुर साजैं।
मोहन की मुरली सौं लाग❀बाजति भरी परम अनुराग॥८
गायें बढि जु गईं ब्रज छोर❀पुनि आये अजाँनगढ ओर।
जाइ सीकरी प्यायौ पाँनी❀चरन पहारी दिशि फिरि आँनी
लुका लुकी कौ खेल जु कियौ❀बदि[6] बदि पोत आपनौं लीयौ।
जाइ लुकैं पुनि गहि गहि लावैं❀इक जीतैं एकनि जु हरावैं॥१०॥
रौंटि[7] करैं पुनि न्याइ चुकावैं❀इक रूठैं इक जाइ मनावैं।
भैया नन्द महर कौ पूत❀सबहिं लरावैं यह अति धूत ११
मेरौ नाम लेहिगौ कोई❀भैया गारो खै हैं सोई।
जो हार्‍यौ सो पोत जु देहु❀मेरौ नाम कौन विधि लेहु॥१२
यह मनसुखा रौंटि करवावै❀भैया मोहि नाम धरवावै।
बोले तबहिं समुझि बलराँम❀तू रौंटिया सदा कौ स्याम॥१४
सब ग्वालनि में झगर्‍यौ माच्यौ❀झूमकि दै जु मनसुखा नाच्यौ।
सुबल कहै क्यों बाथीं[8] परौ❀अब कै खेल समुझि कैं करौ१४
अपनीं अपनीं बान्ध्यौ जोट❀फूटि मिलैं ताही की खोट।
जो चिराइहौ स्यामहि भैया❀तौ उराहनौं दै है मैया॥१५॥
अरे सुबल तू बडौ चबाई[9]❀तेरे मन की थाह न पाई।

१—काम बन को संक्षेप कांमा कहा, २—स्थान का नाम, ३ स्थान का नाम, ४—पहाड़ी के साथ साथ चलौ, ५—पुष्ट तथा बड़ी २ घास है, ६—अपना २ दाव जबरदंस्ती लिया, ७—दाव के लिये झगड़ा हो जाए, ८—एक दूसरे के गले पड़ हाथा पाई करना, ९—लबार बकवादी।

तैं तो सैंन दई ही मोकौं❀मैं बरज्यौं हो तब ही तो कौं१६
तू ही कांन स्याम कें भरै❀तैसेई यह कौतिक करैं।
देहि खेल में अन्तर पारि[1]❀सब कौं चपरि[2] दिवावै गारि१७
तब मधुमंगल बीच जु पर्‌यौ❀सबनि बुलाइ मिलाय सु कर्‌यौ।
वही खेल पुनि खेलन लगे❀लुकिबे कौं तब सब हीं भगे १८
बलि मूँदे अर्जुन के नैंन❀खोलि खोलि वह भाषै बैंन।
भैया तुम लुकि जैयो सबै❀हौं खोलतु इहि नैंन जु अबै १६
वे जु दुरे पच्छिम दिश जाइ❀यह पूरब कौं चल्यौ पलाइ।
बै बैठे जु आइ बलि पास❀अर्जुन देखत भयौ उदास ॥२०
भैया पोत[3] रह्यौ शिर तेरैं❀फिरि दृग मीचौं आउ जु नेरैं।
पूरब दुरन सबै मिलि गये❀इहिं ढूँढन पच्छिम पग दये २१
बलि कौं आइ छुवत भये ग्वार❀यह खिस्याइ रह्यौ दूजी बार।
पुनि उहिं आंखि मिचाई आइ❀वे जु दुरे उत्तर दिशि जाइ ॥२२
खोज लेतु तब अर्जुन धायौ❀भुज गहि कैं जु मनसुखहिं लायौ
ताकी आंखि स्याम ढँकि लई❀तनकौं अधिक दबोकैं[4] दई २३
जब सब सखा ओट ह्वै गये❀हँसि हरि नैंन खोलि तब दये।
वे सब लुके जु गिरि की खोरी❀ढूँढन यह जु चल्यौ बन ओरी२४
स्याम सैंन दै लये बुलाइ❀लग्यौ मनसुखा पाछैं धाइ।
वे मोहन सौं भेटे सबै❀हार्‌यौ पोत मनसुखा तबै ॥२५
हार्‌यौ कहि कोऊ जु चिरावैं❀कोऊ पुनि तारी पटकावैं।
गाइ अगमनीं बढि गई जहाँ❀खेल छांडि सब गवँने तहाँ ॥२६
स्याम खिलारिन के शिरमौर❀जिहिं सम विधिनां रच्यो न और।
लंका की सी लीला करी❀ग्वालनि लागी प्यारी खरी॥२७

१—खेल में भग डालता है, २—व्यर्थ में, ३—बलदाऊ जी अर्जुन से कह रहे हैं कि आ फिर तेरी आंखें बन्द करूँ तू इस बार हार गया किसी को पकड़ नहीं सका, ४ दबोच दिया अर्थात कस कर बन्द की।

कोऊ बानर कोऊ रीछ बनाए❀धरि मन कोप कुंड ढिग आये।
बढि बढि कूदैं घुरकी देंहिं❀कहैं हम जीति असुर पुर लेंहिं२८
राम कृष्ण मिलि मंत्र जु करैं❀दोऊ बीर धनुष कर धरैं।
पाथर लाइ सेत मनु बांधैं❀असुर सामुहैं[1] बांन जु सांधैं २९
तोरि तोरि कैं कमल बगावैं❀मनु असुरनि परलोक पठावैं।
ऐसौ खेल कियौ मन भायौ❀ग्वालनि हरषि पँवारौ[2] गायौ ३०
बिमल बिमल जल न्हाये स्यांँम❀बिमल कुंड पर्यौ ताकौ नाँम।
पहिरे बसन अँगोछि जु अंग❀आगे चले सखिन लैं संग॥३१
जो सुख बन में गाइनु मांहिं❀भैया सो सुख घर में नांहि।
गोधन लगे मोहि अति प्यारौ❀कबहुँ न होंहुँ गऊँनि ते न्यारौ३२
गाइ हमारी कौंनन गहनौं❀गाइनु सौं गोपनि कुल लहनौ।
गाइ मल्हावौ लै लै नाम❀गाइनु कौ जस अति अभिराम ३३
गायें पय अमृत की दैंनी❀गोरज तीरथ मनहुँ त्रिबेनी।
मन क्रम बच करि सेवौ गाइ❀मो सौं कही तात समझाइ॥३४
इष्ट देव कुल गोपनि एह❀भैया नहिं या में सन्देह।
सुबल कहै सुनि मदनगुपाल❀तू जु भयौ अब गाइनु ग्वाल३५
तैं जु प्रथम मो सौं यौं कही❀वही बात मेरे मन रही।
गाइनु ग्वाल होहुगो जा दिन❀भैया होहि सगाई ता दिन॥३६
मोहि लग्यौ तू बातनि छली❀अजहुँ न बात सगाई चली।
नित उठि करति उपाय जु मैया❀तऊ न सगाई आवै भैया॥३७

दोहा–सुबल कहतु है मैं सुनी, एक बात यह कौंन।
भई सगाई पालनें, तेरी अह वृषभाँन॥३८॥
दौरि सुबल के उर लगे, ठोडो गहि लई हाथ।

---

[1] सनमुख. [2] विस्तृत बन का गीत खेल का बरनन कर के।

तुहि बरात हौं लै चलौं भैया अपने साथ ॥३९॥
तक्यौ दूरि तें मनसुखा, सुबल स्याँम बतरात ।
धाइ आइ कह्यौ सुबल सौं, कहा तू सिखवत बात ॥४०॥
दोऊनि के मन हरष अस, कछू दरयौ स्यौं पाइ[1] ।
अरे गुमानी नन्द के, मोहू मंत्र सुनाइ ॥४१॥
भूष लगी है सबनि कौं, आई नाहिंन छाक ।
कहा सुनावैं धूत तुहि, कहा रचि लायौ पाक ॥४२॥
मधुमंगल चढि कदँब पर, नीकी भांति निहारि ।
कोऊ नंदीस्वर ओर ते, आवति हैं छाकिहारि ॥४३॥
चढि गयो तुंग कदम्ब पर, मधुमंगल धरि धीर ।
भैया दरशति दूर वे राते पीरे चीर ।
यह भूखौ बड़ी बेर कौ, सुनि रे हलधर बीर ।
फूलीं लता करील कहूं, तिनहिं बतावतु चीर ॥४५॥
यह बाँह्मन छुध्यारथी[2], दृष्टि रही नहिं ठौर ।
मन प्रतीत तब आव ही, चढि देखौ कोऊ और ॥४६॥
कुबरीं जनम्यौ अबँनि तू, अरे मनसुखा रोर ।
कै भावति है कलह तुहिं, कै झूठें कै चोर ॥४७॥

॥ चौपाई ॥

तू अलबल बोलत बह्मनेटा[3] ❀ भयौ न तोहि अन्न सौं भेंटा ।
भूखे कौं चित रहै न ठौर ❀ भैया कहै और की और ॥४८॥
देखौ पेट पीठि सौं लग्यौ ❀ याही दुख सौं डोलतु भग्यौ ।
सूझै क्यौं याकौं छकहारी ❀ याके हिये धक पक रहै भारी ४९

---

[1] —मनसुखा ने कहा तुम दोनों को कुछ वस्तु मिली है कि फूले फूले दीख रहे हो,
[2] —भूख का कच्चा, [3] —ब्राह्मन का बेटा ।

बहुत भूख नें याहि सतायौ❀ताहू पै तुव कदँब चढायौ।
आंखिनु मांहिं धूँधरी छाई❀बात और की और बताई ॥५०
बेगौं उतरि कहू गिरि परि है❀तोहि कौंन तब कांधैं धरि हैं।
पतरी सी जु कदम्ब की डार❀टूटि जाइगी तेरे भार ॥५१॥
गोपिन के घर न्यौते खाइ❀यातें देह जु रह्यौ फुलाइ।
धूत मनसुखा झूठौ भारी❀कब न्यौतो तेरी महतारी[1] ५२
थोथौइ जु बजावतु गाल❀याहि सौंह[2] दे बूझि गुपाल।
कब हौं या घर जेंवन गयौ❀पाइ धोइ कब भीतर लयौ ॥५३
महा सूँमिनी याकी मैया❀प्रात नाम नहिं लीजै भैया।
याहि बुलावन हौं घर गयौ❀भोर ही वाकौ दरशन भयौ ५४
यह सुनि हँसे सबै मुँह फारि❀खिस्यौ मनसुखा दीनी गारि।
बलि ने सीतल बचन जु कहे❀तब सब ही चुपके ह्वै रहे ॥५५
छकहारी सब गावति आवैं❀ग्वालनि अपनी टेर सुनावैं।
उनि जु गही कामबन की बाट❀छकहारी की जाति हैं हाट[3] ५६
रैंता पैंता आगें जाइ❀छकहारी लावौ बगदाइ[4]।
अर्जुन भोज बड़े चालाक❀बेगि जाइ लै आवौ छाक ॥५७
मोहन मुरली टेर सुनाइ[5]❀ज्यौं हम ओर धरैं वे पाइ।
ग्वालनि आग्यौं[6] घेर्यौ जबै❀मुरली धुनि सुनि बगदीं सबै ५८
भोजन थारी सब मिलि गये❀सखा धोइ कैं बैठत भये।
छकहारी नेरें जब आई❀मन मन सब मानैं जु बधाई ५९
कोऊ लरैं कोऊ आदर करैं❀कोऊ लै छाक गोद में धरैं।
रची मंडली सुबिधि बनाइ❀भोजन करतु सबै सचु पाइ ६०

---

[1] —मधुमंगल मनसुखा के कटाक्ष का उत्तर दे रहा है, [2]—शपथ उठाकर, [3]—घूमने फिरने वाली. [4]—लौटा कर इधर लाओ वह काम बन की तरफ चली जारही है, [5]—मुरली बजाई कि सुनकर इधर को लौट पड़े, [6]—आगे से दौड़ कर घेर लिया।

राम कृष्ण मधि नाइक दोऊ❀तिनहिं चखाइ लेत सब कोऊ।
अधिक प्रीति सौं जेंवत ग्वार❀मोहन सब की करत सँभार॥६१
भोजन थारी मेवा भरैं❀कबहूं लै पकवान जु धरैं।
आपु खाँइ अरु सबनि खवावैं❀ग्वाल स्याम के जस कौं गावैं६२
काहू कौं आदर सौं देहिं❀काहू पै तें छीनि जु लेंहिं।
नाना विधि के बिंजन आये❀अति रुचि मानि सबनि तें पाये॥
भोजन करि सम तुष्टि जु भये❀जाइ कुंड में अँचमन लये।
गिरि पैं चढैं खिसिलि पुनि आवैं❀यह कौतिक मोहन कौं भावै ६४
बहुत बार खिसिलैगो जोई❀हम मानैंगे जीत्यौ सोई।
होडी होडा खेल जु करैं❀गनि गनि कैं जु काँकरी धरैं६५
कौतूहल अति माच्यौ जहाँ❀सबहिं बैठि कै खिसिलै तहाँ।
उत्तरैं चढैं नहीं श्रम गनैं❀बालक सबहिं सुभट[1] से बनैं ६६
चलत जु बैठे चूतर घसैं❀खेल मगन तन अति हीं लसैं।
जो कोऊ पाछें रहि जाइ❀तारी दै जु चिरावैं आइ ॥६७॥
भैया माइ कृपिन[2] अति तेरी❀दूध न प्यायौ सुनि सिख मेरी।
वाकैं सब हीं पाछें लगैं❀ताहि चिराइ बहुरि हँसि भगैं६८
आगें पाछें खिसिलैं लार❀गिरि तें चली मनो छवि धार।
कै विमान सोभा ससि चढे❀किधौं[3] कि या गिरि हीं ते कढे॥
बलि अरु स्याम बराबर रहे❀ऐसे बचन सुबल ने कहे।
बहुरि काँकरी गनिये लला❀तब हम गनै बराबर कला ॥७०
कोऊ घटि कोऊ बढि गनैं❀ग्वालनि भावैं कौतिक घनैं।
लायौ बात मनसुखा गढि कैं❀बलि काँकरी बताइ बढि कैं ॥७१

१—शूरवीर. २—कँजूसनी, ३—मानो पर्वत से ही छवि के चन्द्रमा उत्पन्न होकर खिसक रहे हों।

सब कहैं भैया रहे बराबरि❀बातनि की जनि करौ अरा अरि[1]।
कोऊ बात न्याइ की कहैं❀कोऊ दुहुँनि लरायौ चहैं ॥७२
अरे मनसुखा दई सँवारे❀तू ऐसेंई पर्‌यौ पँवारे।
बाबा की जु खाइ अब सौंह❀मोहन कही चढ़ाइ जु भौंह[3] ॥७३
तो सों कहि सनेह को जोरै❀बात बात में विष सौं घोरै।
मित्र खेल कौं अब तजि देहु❀गाइ दूरि गईं अब सुधि लेहु७४
एकनि गहे एक के हाथ❀यों कहि दौरे सब ही साथ।
अति सघन कदम्ब जहँ पाँति❀वे देखौ गायें तहाँ जाति ॥[4]७५
बैठे ग्वार कदम्ब तरु छांहीं❀अति आनन्द भरे मन मांहीं।
काहू की जो पिछौरी हसी❀सो अछिया की बछिया करी[5] ॥
एक एक पै लै जु बगेलैं❀वह जु चिरै यह इहिं विधि खेलैं
जब वह निपट रोंवनीं आवैं❀तब ताकौं मोहन जु दिखावैं ७७
अरे मित्र तू रोंवनि सूरति❀किन विधना जु रची तो मूरति
कोऊ गहि डार जु ऊँची झूलैं❀कोऊ गहि नीची खैंचै फूलैं ७८
वार बार वह करै पुकार❀चलिये भैया नन्द कुँवार।
मानत नहिं अन्याइ ग्वार❀हौं जु गिरतु टूटति तरु डार ७९
वह जु डार कर गहि कैं लटकैं❀दूजौ पग गहि लटकै झटकैं।
यह जु ग्राह सों पग ग्रसि रह्यौ❀मानतु नहिं काहू को कह्यौ ८०
चहुँ दिषि तें आये सब धाइ❀लियौ स्यॉम ने ताहि बचाइ।
वासर कछु इक पिछलौ रह्यौ❀सब ग्वालनि सों मोहन कह्यौ ॥
अब जु गाँव दिशि गाइनु फेरौ❀दूरि नन्दीस्वर जानि न नेरौ[6]।

---

[1]—बहुत बात का विस्तार कर झगड़ा खड़ा मत करो जब दोनों भाई बराबर हैं, [2]—दोनों भाई राम कृष्ण को लड़ा कर तमाशा देखना चाहते हैं. [3]—कुछ कुपित नजर से श्याम ने मनसुखा को कहा कि अपने पिता की सौगन्द खा कर कह. [4]—श्याम कदंब की घनी कतारों में गाय दिखा रहे हैं कि सखा घबड़ायें नहीं यह माधुर्य रस का विस्तार है. [5]—गेंद समान बना कर खेल का हेतु बना ली, [6]—नन्दीश्वर शब्द नंद गांव का ही एक नाम है।

गाइनु पाइ उठाये तेज❀बाछरूनि सौं जिनकौ हेज[1] ॥८२
धौरे तन सोभित अतिभले❀मानौं हंश बसेरें चले ।
देह कुंड में पानी पीयौ❀ग्वालनि टेर सम्हार जु कियौ=३
देखि कृष्णकौं अति सुख झिलीं❀सब बरननि की आवति मिलीं ।
बाजन लागे बेंनु बिखाँन❀मोहन कीयौ गौरी गाँन ॥८४॥
पुनि बाजी मुरली मोंहनी❀सुनि निकसीं तरुनीं सोहनी ।
ऐंड[2] मैंड सब हीं को खोवैं❀मनमथ[3] हू के मनहिं बिलौवैं८५
स्याम बदन[4] विधु चढि कैं गाजी❀जननी सुनत आरती साजी ।
परम कृपा की मूरति मानौं❀कै धौं कृष्ण लाड की जानौं८६
पौंरी ठाढी मंगल गावैं❀मेरो लाल दृष्टि कब आवैं ।
सुख सागर भये खरिक जहाँ❀गोधन सलिता मिली तहाँ ८७
नर नारी जु नन्द पुर जेते❀कृष्ण प्रेम भीजे रहैं तेते ।
बली रूप सब चित्त आकरषे❀मोहन आगम सबहीं हरषे ।[5] ८८
नन्द सुवन तन सोभा भर है❀किधौं परम आनन्द निकर है ।
छिन छिन अंग और विधि दरशैं❀न्याइ[6] देव मुनि देखन तरशैं ॥
तात पौरि पै आये जबै❀जननी कियौ आरतौ तबै ।
ओलिनु फूल भरे सब आये❀आरति समय रीझि बरषाये ९०
आरजु गोपो धरैं कर सीश❀राम कृष्ण कौं देति असीश ।
अरघ बढाइ रोहिनी लये❀दोऊ बीर भवँन में गये ॥९१॥
बदन पौंछि चौकी बैठाइ❀उष्ण नीर लै धोये पाइ ।

१—प्यार वात्सल्य स्नेह, २—सुन्दरता का गर्व सब का फीका करने वाली ऐसी सुन्दर थीं अथवा मुरली का नाद सब को मोहित करने वाला है. ३—काम देव भी सोचता है कि मेरी रति भी इतनी सुन्दर नहीं है अथवा मुरली नाद से कामदेव लज्जित हुआ फिरता है कि मेरे काम बान में मुरली धुनि सा प्रभाव नहीं है, ४—श्याम सुन्दर के मुख चन्द्र पर मुरली मानो गर्जना कर रही है सो मैया ने सुनी, ५—वंचित ही है, ६—तरसैं ।

चरन अँगोछि बारनें लेति❀प्राँनन पोष बदन लखि देत ६२
मेवा बहु पकवाँन जु लाइ❀अपने हाथ जिमावति माइ ।
आये मित्र मिलनियाँ ग्वार❀ते बैठाये हरि आपु लार ॥६३॥
अपने सम सब कौ परसायौ❀जेंवत बातनि रंग बढायौ ।
बन के खेलन की सुधि करैं❀माता सुनि मन आनन्द भरैं ॥
लाड सहित बूझत ब्रज राइ❀बैठे मणि चौकी पै आइ ।
बेटा कौंन कौंन बन गये❀कहाँ कहाँ गाइ चरावत भये ६५
सब ठौरन के लीये नाम❀जानें चतुर कृष्ण बलिराम ।
दूध अधौटा मिश्री रर्यौ❀भर्यौ कटोरनि आगे धर्यौ६६
पियौ सिराइ जु दोऊ भैया❀ऐसें कहति यसोमति मैया ।
तन श्रम भयौ चरावत गाइ❀करि पय पाँन जु पौंढौ जाइ६७
पियौ दूध जल अचवँन लये❀लै बीरी पुनि पौढ जु गये ।
दासो दास पलोटत पाइ❀सुख में रजनी गई बिहाइ ॥६८
दोहा—निद्रा सुख रजनीं गई, पौढे तलप अनूप ।
दिन दिन के नव नव चरित, वृन्दाबन हित रूप ॥६९॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्रीकृष्ण गोचारन तथा दूक मीचनी लंका आदि खेल बरनन अट्ठाईसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ उन्तीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—इहि विधि बीती शरद रितु, हिम रितु पुनि जु प्रवेश ।
काँनन गऊ चरावहीं, नित प्रति सुवन ब्रजेश ॥१॥

॥ चौपाई ॥

करै कलेऊ सुचि ह्वै आछें❀पुनि बनि चलैं जु गाइनु पाछें।
सेली गरें काँध पर लाठी❀जिनि भगि चलैं गाइ कोऊ बाठी[1]॥

---

[1] —बाँखरी अर्थात दूध कम होगया हो तथा अड़ियल ।

गाइ चरैं जु नये नित ठौर❀बली करैं कोशनि लगे दौर।
एक एक तें आगे कढैं❀हरे त्रिनानि कें लोभ जु बढैं॥ ३
लाखनि[1] तौ गोपनि घर मांहिं❀नन्द महर घर गिनती नाँहिं।
ब्रजपति कें घर अगनित ग्वार❀तिनके राम कृष्ण शिरदार॥४
लाठिनु सौं घर भरे अनेक❀को बरनैं रसना करि एक।
समुझि न परै मधुर प्रभुताई❀विस्वपाल गोपाल कन्हाई॥५॥
गई शरद रितु हिम रितु आई❀राम कृष्ण दुतही[2] जु बनाई।
बाबा नें लै दिये दुसाला❀ओढे फिरैं नन्द के लाला॥६
शिर पर लसत मुकेसो चीरा❀रतन पेंच मधि दमकत हीरा।
पीत पिछौरी कटि सौं लसैं❀मनु दामिनि जु तेज कौं हँसै॥७॥
अंग अंग बहु भूषन धरैं❀सब कें चित आकरषन करैं।
अपनी[3] छवि लखि अपु मधु पावैं❀रीझि २ कैं ग्रीव डुलावैं॥८
ऐंडे फिरत सखनि के माँहिं❀काहू दृष्टि जु लावैं नाँहिं।
शीतल मारुत फूलित बन मैं❀बैठत ओट जु कुंज सघन मैं॥९
जब चरि आवैं गाइ अघाइ❀बैठौं जु धूप मधि आइ।
भैया तन कौं पवँन कँपावै❀रविजा वारि परसि यह आवै॥
मित्र[4] काल्हि तुम अगिनि जु लावौ❀तापौ तन तें शीत भगावौ।
मैया बाबा को अति लडौ❀शीत भीत भयो कायर बडौ॥११
अरे मित्र यह जाडौ बुरौ❀चलि कैं सघन कुंज मैं दुरौ।
द्वै द्वै ह्वै बैठौ तन लागि❀सब को जाडौ जैहै भागि॥१२
पीवौ दूध अधौटा सबै❀शीत डरैं ग्वालनि तें तबै।
पम्हरी कम्मरी ओढ़ि जु आवौ❀इहि विधि हिम रितु सिसर बितायौ

---

[1]—लाखों की संख्या, [2]—शीत से बचने को दो तह वाली चद्दर, [3]—श्रीमद्भागवत में कहा है कि भगवान अपने रूप पर आप मुग्ध हो जाते थे, [4]—ग्वाल श्याम को विनोद में कहते हैं कि कल से घर से आग साथ लाया कर इतना ठंड से यदि डरता है कायर है मा बाप का बड़ा लाडला है।

मोहन हाथ कहा तो परै❀जाडे की पंचाइत करै।
तोहि बके बिनु कल नहिं परै❀सब के मन बातैं कहि हरै ॥१४
घर तें छाक लाइ है कोऊ❀जाडौ भूख भाजि हैं दोऊ।
मैया नें जु कुनबुसा[1] कियौ❀बन आवत ही डरपतु हीयौ १५
घर हीं में जु मल्ल बनि रह्यौ❀खायौ चोरि नगर कौ दह्यौ।
मैं जु मते की बात सुनाई❀काहू के मन में नहिं आई ॥१६
समझतु नाहिं मनसुखा कूर❀याहि रुच्यौ लरिबौ धमतूर[2]।
खेलैं स्यांम सखानि खिलावैं❀नित उठि यौं बन गाइ चरावैं ॥
पूवरि[3] पौरि पौरि जगमगैं❀तापै ग्वाल जु खेलन लगैं।
नाना कौतिक रजनी रचैं❀मोहन पै कोऊ खेल न बचैं १८
काँधे चढि कैं घर घर डोलैं❀ज्यौं बदैं[4] खेल जु त्यौं हीं बोलैं
अति खिलवार नन्द कौ लला❀नित नित नई रचतु है कला१९
बासर[5] जाइ चरावैं गाइ❀खेलैं राति नगर में आइ।
हिम रितु मित्र जात नहिं जाँनी❀आई शिशिर शीत सरसाँनी[6]२०
बरफ मिली यह पवँन जु बहैं❀या कौ परस अँग नहिं सहै।
कहै मधुमंगल चलियै ओट❀मनसुख लगति पवँन की चोट२१
हँसि हँसि सखा करत धमतूर❀बाँह्मन कहूं न देखे सूर।
आछौ नीकौ खाइ जु जानैं❀मीठी मीठी बात बखानैं ॥२२॥
यह घेर्यौ जाडे नें आइ❀जै है अब घर कौं जु पलाइ[7]।
नाहिं अघात[8] बात यह कहतौ❀बन्यौ रहै ग्वालनि में महँतौ[9]२३
क्यौं बन आवै लै कै गाइ❀दाँन दछिना मांगि न खाइ।

---

[1] —बहुत लाडला बना रखा है कभी गुस्सा तो किया ही नहीं [2]—शोरगुल मचाना झगड़ना, [3]—शीत निवारण को जलती हुई अग्नि जिसमे मकान के प्रवेश पर का प्रकाश खेल मे सहायक था गांव की रीति अनुसार, [4]—दाव पेंच खेल में लेते समय, [5]—दिन के समय, [6]—ठंडक की सीमा पर, [7]—भाग जावेगा, [8]—रमता नहीं अर्थात बक बक बन्द नहीं करता श्याम कह रहे हैं. [9]—महन्त बना फिरता है।

जाड़े तें सब कौं डरपावै❀तो सौं कायर क्यौं बन आवै २४
ऐसे कही नन्द के लाल❀मधुमंगल बोल्यौ तिहि काल।
अरे मनसुखा अर्जुन भोज❀इनि बातनि कौ काढौ खोज २५
आजु कहतु यह मोसौं जैसे❀काल्हि कहैगौ तुम सौं ऐसे।
भली बात कौ घैरा[1] कर्यौ❀यह जु चबाई जान्यौ पर्यौ २६
याकें बढ्यौ हियैं में तेह❀काहू सौं न राखि हैं नेह।
ओढि पाँम्हरी[3] भर्यौ गुमान❀देहु जगाइ जु याके काँन॥२७॥
मुख पै कूट्यौ मेरी करै❀ढीठ भयौ नहिं रंचक डरै।
इतही पहिरि बन्यौ है छैल❀ऐंड्यौ[2] चलत जु गैल ॥२८॥
चमकावतु माथे पर चीरा❀झूठे से जापै नग हीरा।
मोहन नाम धरतु अब मोकौं❀गायँन पाल कियौ मैं तोकौं २९
ठोडी गहतु फिरतु हौ भग्यौ❀अब हीं तू बढि बोलन लग्यौ।
सुधि जु सम्हारी है तैं जब तें❀चोर नाम धरवायौ तब तें ३०
कारौ मानै कहा भलाई❀हौं समुझौंगो तोहि कन्हाई।
अरे मित्र[4] मन गुसा जु धरी❀हांसी तुहि न सहारी परी ॥३१
भुजा धरी जु मित्र भुज अंश❀लागे करन बहुत परशंस।
स्याम[5] न तो बातनि में ढंग❀को खेलै अब तेरे संग ॥३२॥
छिन में सखा रिझाइ जु लीनौ❀मानौ मंत्र मोहनी कीनौ।
हँसिये लसिये मित्रनि मांहिं❀हिय में गांठ पारियै नांहि ॥३३
मुरला धर कौं खेल सुहाइ❀उतरैं चढैं विटप पर धाइ।
कबहू डँडा देहिं बगाइ❀कबहूं गहैं अचानक आइ ॥३४
जाहीं की बन ब्याइ गाइ❀सो दौर्यौ मोहन पै जाइ।

१—निन्दा अपवाद, २—कपट या टेढा पन या क्रोध, ३—पीताम्बर, ४—श्याम बोल रहे हैं और मधुमंगस को शान्त कर रहे हैं, ५—मधुमंगल कह रहा है श्याम तुझे तो बात करने का शऊर नहीं है।

मैया मेरे भई बधाई❀आजु गाइनें बछिया जाई ॥३५
वृच्छन सौं रचि बन्दनवार❀मंगल गावन लागैं ग्वार।
करैं पैवसी दौनानि भरैं❀लै लै सब के हाथ जु धरैं ॥३६
मुरि मुरि कै सब नाचन लागैं❀जल सौं छिरकि छिरकि पुनि भागैं
कोउ बनैं गाइनु के कुलजगा[1]❀कोऊ बनि आये ग्वारनि मगा[2]॥
बन्दी भाट भँडेला बनैं[3]❀नकल करैं रचि कौतिक घनैं।
मंगल मुखी कोऊ बनि आवैं❀पटकैं तारी नैंन नचावैं ॥३८॥
निलजे[4] वचन वदन तें कहैं❀मोहन की जु पिछौरी गहैं।
ऐसे क्रीड़ैं कानन माँझ❀गाइनु लैं घर आवैं साँझ ॥३९
गो दौहन धुनि सुनियत काँन❀बाजत मनहुँ मदन निसान।
दोहा[5] कहत दोह्नीं देहु❀दूध भरी ते कर में लेहु ॥४०॥
काँवरि[6] इती दूध की आवैं❀मारग माँहि छेत[7] नहिं पावैं।
दासी दास भवँन लै धरैं❀महरि सम्हार जु तिनकी करैं ४१
दोहा—मोहन मैया सौं कहैं, हौं भयौ जब तें ग्वार।
दूध बढ्यौ गायैं वढ़ी, कापै होहि सम्हार ॥४२॥
बेटा तू जु सुलच्छनौं, गरग कहि गयौ मोहि।
अपनें मुख ऐसें न कहि, ढीठि लगैगी तोहि ॥४३॥
मेरे मदन गुपाल कौं, शीत कँपावतु गात।
असन करावति प्रीति सौं, बूझति बन की बात ॥४४॥

॥ चौपाई ॥

ऐसेंइ नित प्रति बन कौं जांहीं❀फिरैं मन मगन सखनि के मांहीं
रितु प्रभुता अपनीं विस्तरी❀बन बानिक कछु औरैं करी४५

१—गाय जगाने पर अपनी नियमित बधाई लेने वाला, २—मांगने वाला भिक्षु, ३—बधाई का पूरा अभिनय सब सखा कर रहे हैं, ४—लज्जा रहित शंका रहित, ५—गाय दुहने वाला, ६—बहँगी दूध के भरे पात्र उठाने को, ७—अवकाश ही नहीं मिलता।

सब हीं तरु पतझार जु भये❀तिनमें उलहैं पल्लव नये।
कानन भयो आगम रितुराज[1]❀आनन्दे खग मधुप[2] समाज॥४६
डफ आँनक जु मढाये घर घर❀आनन्दे सब ब्रज नारी नर।
सुकल[3] पक्ष पंचमी जु माह❀मान्यौ सबनि मदन उत्साह ४७
ब्रजपति सभा गुननि के टोल[4]❀सब हीं गावत राग हिंडोल।
कुशल क्षेम ब्रज यह दिन आयौ❀मोहन शीश बसन्त बधायौ४८
रितु पति आगम सब मन हरषैं❀अनहोतौ आनन्द जु बरषैं।
डफहिं आदि बहु बाजेनु बाज❀बैठे गावत गोप समाज॥ ४९
गाइ चरावन जात जु ग्वार❀मोहन खेलत नगर मझार।
फागुन कौ उत्साह जु बडौ❀लियें समाज खेलैं अतिलडौ ५०
कर डफ गावैं मदनगुपाल❀बूका वन्दन उडत गुलाल।
बिलसि बसन्त स्याम सुख ओप्यौ[5]❀पून्यौं माघ जु[6] डांडौ रोप्यौ॥
मोहन मित्र मंडली मांहीं❀दीयें फिरैं सुबल गर बाहीं।
लेत फाग सुख कौ अति लाहौ❀मोहन मन भयौ व्याह उमाहौ॥
बधू कहैं तुम क्वांरे मोहन❀कहा नचावत डोलत भोहन।
सुनि उर होहि अधिक कलमली[7]❀कबहूं न बात व्याह की चली॥
कबहूं न बूझत बाबा मैया❀मोकौं सबै खिस्यावति भैया।
अरे मित्र तू हम हिं जिमाइ❀बेगि व्याह तेरौ ह्वै जाइ॥५४
हम तेरी जहाँ तहाँ करैं बडाइ❀यातें आवै बेगि सगाइ।
मित्र[8] हँसोरा तुम हूं भारी❀तैसेंइ इह पुर के नर नारी॥५५
मेरे मन की कोऊ न बूझै❀सब कौं हाँसी करिबौ सूझै।
कोउ कछु कहौ हौं न मन धरि हौं❀अब तौ धूम फाग की करि हौं॥

१—बसन्त रितु, २—भ्रमर समूह ३—बसन्त पंचमी माघ शुक्ल पंचमी, ४—श्री नन्द जी के सभा मंडप में झुंड के झुंड गुनी (गाने बजाने वाले) आते हैं, ५—स्याम सुख से चमक उठे अह्लाद में भर गये, ६—होली खेलने का डंडा गाढ़ दिया, ७—बेचैनी, उत्कण्ठा, ८—स्याम कह रहे हैं तुम मित्र भी मखौल करते हो।

लहुर[1] बहुरिया जिहिं घर आई❀लाल तहाँ तहाँ धूम मचाई ।
जिहिं घर सखा जु ब्याह्यौ आयौ❀तिहिं घर फाग खेल ठहरायौ॥
अरे मित्र तुम बुरौ न मानौ❀अपु[2] समान मोहू कौ जांनौ ।
अरे नन्द के तू अति धूत❀इनि बातनि ह्वै हैं जु कुसूत[3]॥
तब सब घर दधि माखन तक्यौ❀अब होरी खेलन मिस बक्यौ ।
अरे मित्र मैं हाँसी करी❀तुमनि कहा मन साँची धरी५९
हँसैं हँसावैं खेलैं फाग❀सब हिनु के मन अति अनुराग ।
नाँनाँ विधि के स्वाँग बनावैं❀काँम कांमिनी गांठि जुरावैं॥६०
तबला तुरही बजैं मृदंग❀लागैं फिरैं गोपनि सुत संग ।
भैया यह सुन्दर पेखनौं[4]❀मोहन नित याही देखनौं ।
चाँचरि[5] मची नन्द दरबार❀होरी बोलत सब हीं ग्वार ।
मुख तें बचन बिकार[6] जु भाषैं❀कोउ काहू की कांनि न राषैं६२
फागुन में जु मदन सिरताज❀फिरति दुहाई गोप समाज ।
ग्रह कारज पाछें रहि गये❀होरी के अगिवांनी[7] भये ॥६३
हिय जिय भई सनेहनि कौंप[8]❀फागु खेल अति बाढी चौंप ।
फागुन मनहु ठगौरी डारी❀भरैं भरावैं रंग नर नारी ॥६४
छोटे बडे जु बनि ठनि निकसैं❀होरी बोलैं तम मन बिकसैं ।
शिर तें रंगनि कलश उलैंडे❀काहू चलम देहिं नहिं पैंडैं ॥६५
मुरली धर साजैं संग टोल❀आगे बाजत ढोलक ढोल ।
गावैं ललित धमारि जु भलैं❀अबीर गुलाल पोटरी चलैं ॥६६
मित्र दौर अब घर घर करौ❀काठ लाइ होरी पै धरौ ।

१—छोटी सी नई बहू, २—भाव यह है कि मित्र तेरी नई बहु मेरी ही है यों विनोद कर रहे हैं (श्याम यों सख्य रस की वृद्धि होली में कर रहे हैं), ३—झगड़ा, ४—स्वांग, ५—होरी का राग चांचरि जिसे उच्च स्वर से गा गा कर नाचते भी हैं, ६—गाली ७—मुख्य कार्य होली रचना, ८—बाढ़ ।

होरी डाँडौ रोप्यो जहाँ❀पीढी खाट धरैं लै तहाँ ॥६७॥
चरखा[1] खिरका मूसल धरैं❀देखि लेहिं जेते पुनि लरैं।
काहू के जु बिटौरा[2] फोरैं❀काहू को टाटिनु को तोरैं ॥६८
काहू के जु खरिक की बारि❀लेंहिं देंहिं होरी पै डारि।
काहू के लै जाइँ किवार❀ते उठि लागे लरिकनि लार ६९
लरिकनि नगर मचाई हई❀होरी अति ऊँची ह्वै गई।
ग्वाल बहुत विधि छल बल रचैं❀जो पावै सो होरीं सचैं[3] ॥७०॥
पौंरि पौंरि नित रचैं जु खेल❀डारैं रंग गुलाल बहु रेल।
निसा छबीली अति जगमगै❀नन्द सुवन कौं प्यारी लगै ॥७१
होरी कौतिक सबहिं नगर में❀मोहन खेलत बगर बगर[4] में।
कोऊ बनैं अवधूत दिगम्बर❀कोऊ बनैं रीछ ओढि के कम्बर॥
कोउ मौंनी ह्वै सैंन जु देंहिं❀कोउ बावरे बने सुख लैंहिं।
कोउ हो हो कहैं लै कर जेरी[5]❀कोउ पढैं मदन विडम्ब पहेरी ७३
सुख में बीत्यौ फागुन मास❀आई पून्यौं[6] बढ्यौ हुलास।
होरी की जु मगारन बार[7]❀आनक बजे नन्द दरबार ॥७४॥
घर घर ते पूजा कौ साज❀लीये आये गोप समाज।
गरग पुजाइ होरी आइ❀सुतनि सहित बैठे ब्रजराइ ॥७५
धरि अठावरि[8] पूजी होरी❀अच्छित फूल चढाई रोरी।
बाजे बाजैं जै धुनि करैं❀माल[9] गूलरी सब कोउ धरैं॥७६
परिक्रमां करि दीयौ अर्ग❀बैसाँदर परचायौ गर्ग।
राम कृष्ण होरी जु मगारी❀आनन्द बढ्यौ सबनि उर भारी॥

१—जलाने को दूसरे के छिपा कर जबरदस्ती ले आते हैं, २—सूखे गोबरों के ढेर जो साल भर काम लाने को बन्द करके गांव के लोग रखते हैं, ३—संचय करैं या होरी में डाल दैं, ४—राह चलते रास्तों में, ५—लाठी जिससे कांटे हटाते हैं, ६—पूर्णमासी, ७—जलाने का दिन आया, ८,—होरी की पूजा विधि रीति विशेष के नाम हैं ९—सूखे गोबर की माल।

भुज उचाइ कैं सगुनिनु कह्यौ❀भैया पँवन भली दिस बह्यौ ।
सब हीं नाचैं सब हीं गावैं❀सब हीं मिलि ब्रजपति घर आवैं ॥
महरि आरतौ सुत कौ कीयौ❀सब हिनु को पकवाँन जु दीयौ ।
नर नारी सब देत असीश❀जुग जुग जियौ सुवन ब्रज ईश ॥
दोहा—पुनि खेलैं रजनी जु भरि, बिमल बिमल कै फाग ।
वृन्दाबन हित रूप हरि, ब्रज ओप्यौ[1] अनुराग ॥८०॥
परिवा बन्दन धूरि करि, आये रविजा न्हाइ ।
नव दुकूल पहिरे सबनि, ब्रज कुल कुशल मनाइ ॥८१॥
मन वांछित फगुवा दियौ, पुनि पहिराये ग्वार ।
वृन्दावन हित रूप सुख, दियौ लियौ नन्दलाल ॥८२॥
हिम रितु सिसिर जु बरन तें, सुख बढि पर्यौ बसन्त ।
वृन्दावन हित रूप ब्रज, चरितन को नहिं अन्त ॥८३॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण हिम रितु शिशिर रितु बसन्त होरी खेल बरनन उन्तीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ तीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—नमामि श्री हित रूप गुरु, सुमति करन उद्दोत ।
जैसे रोक्यौ रुकतु नहीं, उमगत सलिता[2] सोत ॥१॥
कृष्ण चरित बरनन करन, चित बाढति यौं चौंप ।
ज्यौं अनियास बसन्त रितु, द्रुमनि होत नव कौंप ॥२॥
काँनन अति कुशमित भयौ, अलिचय[3] मत्त सुवास ।
सुख दायक जु बसन्त रितु, मधु माधव[4] बिबि मास॥३॥

---

[1]—उद्दीप्त कर दिया संचार कर दिया, [2]—नदी प्रवाह, [3]—भँवरे समूह मत गुञ्जार रहे हैं, [4]—दो मास चैत्र वैसाख !

नोट—ब्रज भाषा में ल को र-श को स-स को श-व को ब-ख को प बहुत बरता गया है ।

ग्वाल मंडली संग मिलि, तहाँ चरावत धैंनु ।
अति मन मोहन मदन कौं, कृष्ण कमल दल नैंन ॥४॥

॥ चौपाई ॥

फूलि फूलि बन कुंजैं बनो❀जिनमें सौरभ फैली घनी ।
तरु बहु जात जु फूले फले❀बेलिनु मिलि बढि ऊँचे चले ॥
कहूं ललित कदम्बनि की सैंनी[1]❀पांति कलप तरु अति छवि दैंनी
तिन में होतु अलिनु कौ नाद❀सुनि उपजतु उर अति अहिलाद
हरित भूमि जहाँ रविजा कूल❀झरि झरि परत द्रुमनि तें फूल
वारिज विकसे रविजा जल में❀तिन की गंध फैलि रहि थल में ७
विटपनि तें मकरन्द जु झरैं❀हरि कमनीय तन शीतल करैं ।
अरुन अरुन उलही बहु गोभा❀एक बदन[3] क्यौं बरनौं सोभा॥८
नूत डार कोकिला कलोलैं❀फलनि चाख मधुरें सुर बोलैं ।
औरौ खग बहु चहचर करैं❀रति पति हूं के मन कौं हरैं ॥९
कूँजत हँस हँसजा[4] तीर❀सुनि सुनि मुदित होत बलिबीर
मन्द सुगन्ध शीत बहै पौंन❀परसत तन सुख बरनौं कौंन १०
राइबेल[5] फूली जु चँबेली❀पुनि फूली मल्ली जु नबेली ।
फूल केवरा उठैं जु लपटैं❀मनसिज[6] हू के मन कौ दपटैं[7]॥
ललित सेवती फूलीं बन में❀मोद देति मोहन के मन में ।
उठैं केतुकी तें उदगार❀ताहि प्रशंसत नन्दकुँवार ॥१२
मदन वाँन प्रफुल्लित भयौ महा❀कहौं मोतिया की छबि कहा ।
ठौर ठौर फूली जु निवारी❀पूरित बन सौरभ अति भारी१३
दाऊदी गेंदा जु हजारा❀पीत चँबेली बन विस्तारा ।
राइ सुगंधि औरु कन्नेरि❀सौरभ अधिक मोंगरा हेरि ॥१४

१—श्रेणी कतारें, २—कमल, ३—मुख, ४—यमुना, ५—अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्पों का बसन्त रितु का बर्णन प्रारम्भ कर रहे हैं, ६—कामदेव, ७—वश करलें ।

गुल तुर्रा गुल लाला नरगस❀चम्पा फूल्यौ बासु जु करकस[1]।
करना बरना पाडर फूली❀लता माधुरी फूली झूली ॥१५
सेंमर[2] फूलीं पुनि जु पलास❀काँनन कमनीं भयौ प्रकास।
तरु अगस्त फूलीं कचनेरि❀अम्ब कदम्ब निम्ब पुनि बेरि१६
नीबू दाडिम पुनि किरवारौ❀फूलीं अरनी बासौ भारौ।
फूले डूँगर और करीर❀हींसिनि पर भवरनि की भीर १७
फूल्यौ बन सहजनौं सुहायौ❀तरु तमाल फूल्यौ छबि छायौ।
जांमिनि औरुलिहसौरे मौरे❀तिन पर डोलत षटपद[3] दोरे ॥
फूल्यौ सदा बसन्त कसौंदी❀अति सुख सौंदी फूलीं गोंदी।
इहि विधि सौं फूली जु पिलूखनि❀मधुपनि[4]की जु भजावतिभूखनि
कटहर बडहर फूले तूत❀नारंगी केरानि[5] संजूत।
खट्टा मिट्टा फूले ऐसें❀कौंनन होहि सुवासित जैसे २०
अतिसय फूले सेब सुहाये❀सीताफल फूलनि सौं छाये।
फूले कैथ बिजोरा बेल❀रचत नन्द सुत तिन तर खेल ॥
अधिक राचनी[6] महिंदी फूलीं❀खिरनीं फूल भार[7] करि झूलीं।
मौरसिरी फूली इहिं रीति❀लेत सुबास बढी हरि प्रीति॥२२
अति सोभित अंगूरनि पांती❀फूली मनौ हिये बिकसांती।
फूली छैंकुरि अरु बकाइनि❀सरस जँभीरो फल सुख दाइनि॥
सिरस[8] रैंवजा सीसौ दरसै❀मधुर गन्ध अलि नाशा परसै।
तरु असोक पुनि लता नवेली❀हरि सुख दैन रही ह्वै भेली २४
पुनि गिरि पर फूलीं धौं घनी❀साल ताल छबि जाति न भनी।
सरसैं पेड जु लसित खजूरि❀फूल हू दूरि छाँह पुनि दूरि २५

---

[1]—तीखी गन्ध वाला चम्पा, [2]—अब वृक्षों के नाम वरणन कर रहे हैं, [3]—भौंरे, [4]—भौंरे, [5]—केलों के सहित, [6]—रंग देने वाली, [7]—बोझ के कारण [8]—ऊँचा शीशम का सा एक पेड दूर से सिर मानो ऊँचा निकाले दीख रहा है।

गूलरि को उपमा नहिं बनैं❀बिनु ही फूल देति फल घनैं।
अरुन पत्र बट पीपर कढे❀मनु विधनाँ सोभा सों मढे ॥२६
फूले तरु आड़ू सपतालू❀सघन सिहौंरो औरु सँभालू।
अँबिली अरु आँवरे घनेरे❀महुवा द्रुम फूले जु बहेरे ॥२७
काँनन कौं सोभा देंइँ भारी❀तरु जु नारियल और सुपारी।
बाँसी बाँस चिरौंजी चीता❀बेलि चुहुँटनी फूली मीता ॥२८
हरड करौंदा फूले जु भारे❀अनन्यास बादाम छुहारे।
पारजाति द्रुम फूले जहाँ❀वृन्दावन सम बन है कहाँ ॥२९
दौंना मरुवा सौरभ भली❀तुलसी गंधि जु आवति चली।
लवँग लता फूलीं पुनि एलि❀तिनमें करति मुनैयाँ[1] केलि ॥३०
कुन्द वृन्द फूले सब ठौर❀फूल गुलाब सबनि सिरमौर।
तरु पर बेंलि घिलैयनि पूरीं❀जुही बकेली औंरु कँदूरी ॥३१
गुला बाँस पुनि पिया चाँसौ❀यह ग्वालनि कौ अधिक तमासौ
उत्तम तरु चन्दन के जहाँ❀सघन छाँह हरि बैठे तहाँ ॥३२
करहँज कंजा औरु कटाई❀आलिहिंगोट अकोल सुहाई।
कीकरि अरु पापरी पिंडारि❀गौतनि थूहरि सैंहुँ डबारि ३३
झाऊ और फरास जु सरौं❀तिनकी कौंन प्रसंशा करौं।
फूलैं जबै हार सिंगार[2]❀रँगि रँगि फैंटा पहिरैं ग्वार ३४
तरु बेलनि की जाति अनन्त❀बरनत कौन लहै तिन अन्त।
लौकिक औरु अलौकिक दरसैं❀रितु अनुसार फूल फल सरसैं ॥
घर आयें सब कौं सनमानैं❀भुज पसारि बे लरि नहिं जानैं।

---

[1] —पक्षी का नाम जिसे लाल चिडिया भी कहते हैं. [2] —हार शिंगार के पुष्प की डंडी केसर समान पीले रंग की होती है उसे पानी में डाल रंग निकाल कर कपड़े रग लिये गये हैं यह भाव है।

इनते[1] पैयतु नित उठि मांन❀ग्वालनि कें येई जजमांन ॥३६
बाँटति सँपति ये मन खोलैं❀मुनि सचेत से मुख नहिं बोलैं।
पेंडों[2] हिनु कें रुचि अनुकूल❀कोऊ दैंहिं फल कोऊ दैंहिं जु फूल
मारग कें श्रम को यह हरैं❀छाया दें कै सुखित जु करैं।
तरु अरु बेलि परम उपकारी❀धन्य जनम सब विधि सुखकारी
ग्रेहिनि[3] हूं तें ये अति भले❀पर कारज हीं फूले फले।
ग्रे ही करैं अपु स्वारथ शिद्धि❀इनिकें परमारथ सब रिद्धि ॥३९
ऐसे बन बिहरत हरि सदा❀बिलसत अतुलित सुख संपदा।
श्रीमुख यों जु प्रसंशत नागर❀यह बन सुख सोभा कौ सागर४०
इहिं वैभव कौ पार न लह्यौ❀मुरली धर नें ऐसें कह्यौ।
द्रुम बेली जु सबै चैतन्य❀अवनि अलौकिक यह बन धन्य॥
मधु माधो धनि दोऊ मास❀करत फूल फल अमित प्रकास।
ओलिनु भरि जु सखा फल लावैं❀छाँह बैठि कै मोहन पावैं ४२
बांटि बांटि मित्रनि कौं देहिं❀सब कौ स्वाद भली विधि लेंहिं
कोऊ अमृत सुर लोक कहावैं❀इनि फल स्वाद हि सोऊ न पावैं॥
अरे मित्र लावौ पुनि और❀हौं बैठ्यौ रहिहौं इहि ठोर।
फल जू रसीले कहिये कहा❀रसका स्वाद अलभी महा ॥४४
कहा बरनिये बिटपनि हेत❀अमृत फल उपजनि यह खेत।
मोहि लगत सबहिनु तें प्यारे❀भांति भांति ये पोषन वारे ॥४५
इहिं भूतल कौ बन यह भूषनु❀सब रितु देइ फल फूल पियूषनु[4]
जल पी आवैं सरबर माहीं❀पुनि सोवैं इनिकी परछाँहीं ॥४६
सुबल कही वे ऊँचे तरबर❀सुन्दर पारि तहां जल सरवर।

१—लता बेला सुन्दर कुंज निर्माण करके ग्वालों के खेल के मानो प्रह से उपस्थित करती हैं इस लिये जजमान है, २—मार्ग का संकोच विकास ग्वालों की रुचि अनुकूल करता है इसलिये सचेत हैं, ३—गृहस्थियों से, ४—अमृत तुल्य फल फूल।

निपट रसीले फल हैं जहाँ❀भोजन करि जल पीवैं तहाँ ४७
उहाँ गये चलि हलधर बीर❀खाये फल पुनि अँचयौ नीर।
मित्र अपूरब ये फल पाये❀सुबल आजु तैं मोहि बताये४८
रवि की किरनि परस तहाँ नाहीं❀पौंढे ऐसे तरु की छाँहीं।
त्रिविधि पवन तहाँ आवैं चली❀गायें चरति मानि रुचि भली४९
इहिं सुख जाम तीसरौ गयौ❀पुनि खेलन कौ समयौ भयौ।
मंदिर पौंढि न यह सुख लीयौ❀जैसौ सुख इनि बिटपनि दीयौ॥
काँनन छबि बहु बिधि जु बखांनी❀तदपि न तृपति होत मो बांनी
बलि ग्वालनि जु सुनावत मोहन❀पुनि उठि चले गउनि के गोहन
सखा अंश पर बाँहुँ जु धरैं❀अति छबि छके डगनि कौं भरैं
जगमगात कुंडल अस काँन❀मानौं प्रात उदै भये भाँन॥५२
रूप कल्प तरु झुकतु जु मानौ❀छवि फुलवारि सखा संग जानौ
सुन्दर स्याम सैंन तब दई❀सब मन खेलन इच्छा भई ५३
आकनि[1] बौंडीं झोरिनु भरैं❀तकि तकि चोट परस्पर करैं।
कोऊ बलि दिस कोऊ मोहन ओर❀किलकारत सब ही सहजोर ५४
भीर परैं जु पीठि दै भगैं❀सनमुख ह्वै पुनि पाछें लगैं।
बदि बदि अंग लगावैं चोट❀कोउ देहिं पिछौरी ओट ॥५५
इक ताकत एकनि लगि कांधैं❀एक चलावन कौं कर[3] साधैं।
कबहूं जीतैं जे बलि लार❀कबहूं स्याम संग के ग्वार॥५६
इहि विधि खेलैं वन में खेल❀पुनि करि लेहिं परस्पर मेल।
बल तौलैं पटकावैं बांह❀विरमि रहैं पुनि सुर तरु छांह॥
हरि हलधर जु प्रसंशा करैं❀त्यौं त्यौं हिये अधिक बल भरैं।
स्याम पराक्रम तुम न दिखायौ❀चोरि नगर को माखन खायौ५८

१—आक के फूल के गुच्छे, २—बहुत फूलों की मार परै तब, ३—हाथ से निशाना बांध रहे हैं।

गर्वित बचन मनसुखा कह्यौ❀सो न परयौ मोहन पै सह्यौ ।
डारि छरी सनमुख भये [1]ठाढे❀चुरबैं मन उत्साह जु बाढे ॥५९
दाव पैंच कौं ताकैं दोऊ❀हाँ हाँ करैं सखा सब कोऊ ।
पहिल बराबरि इत उत रहैं❀पुनि उठि हाथ परस्पर गहे ६०
स्याम पेंच कछु ऐसौ कियौ❀अवनीं डारि मनसुखा दियौ ।
बलि नें सुरझाये दोउ आइ❀भैया चलौ दूरि गई गाइ ॥६१
अब सब खेलैं आगे जाइ❀हँसत लसत पुनि चले पलाइ ।
इहिं विधि मित्रनि आनंद देहिं❀रितु बसन्त ग्रीषम सुख लेहिं ६२
तरनि नन्दनी निकट जु गये❀स्याम गउनि जल प्यावत भये ।
छाक उमाह भरे हिय रहैं❀सब हीं ग्वाल गाँव दिस चहैं ६३
दृष्टि परैं छकहाँरी जबैं❀फेरी लै लैं नाचैं सबैं ।
पुलिनु बैठि मंडली बनावैं❀तिन मधि राम कृष्ण छबि पावैं ॥
भोजन करत जु ऐसो रीति❀अधिक कुढैं विधि[2] देखि अनीति
कहा रही ह्यां प्रभु प्रभुताई❀जिन ग्वालनि की जूठनि खाई ॥
प्रभु ईस्वर्ज लुकोइ जु धरयौ❀ब्रज जन हित नित सुख विस्तरयौ
सुरपति[3] विधि जु चिताये आछें❀वे करि गर्व दीन भये पाछें ॥६६
यों खेलैं ज्यों भोरे बालक❀जो प्रभु अखिल भुवँन कौ पालक
बैठे ग्वाल मंडली मांहीं❀लैकर कौर खवावैं खांहीं ॥६७॥
ब्रज सुख सागर गहर बहायौ❀बिधि सुरपति जहाँ गौता खायौ
रस मय वपु प्रभु गोप बिहारी❀निगम गोप्य लीला विस्तारी ६८
जिहिं विधि इच्छया खेलैं तैसे❀विधिवत[4] कर्म कुशल कहैं कैसे ।

---

[1]—चोरी का ताना स्याम न सहकर मनसुखा से कुश्ती करने को सन्मुख उत्साह से आ खड़े हुये यह भाव है, [2]—ब्रह्मा, [3]—ग्रन्थ करता श्री चाचा वृन्दावनदास जी इन्द्र व ब्रह्मा के गर्व हरन लीला को संकेत में इस चौपाई में कह रहे हैं, [4]—कर्म काण्डी विधि निषेध के फंदे में रहते हैं।

ज्ञांनी तत्वनि[१] तें कन चुनैं❀रस लीला सुख सीर न लुनैं ६९
हरि इहिं विधि के कौतिक करैं❀नेमी[२] भक्त कहत मन डरैं।
सखनि चढाइ कन्ध पर लेंहिं❀ब्रह्मादिक चित्त संभ्रम देंहिं ॥७०
ऐसी कथा बरनि को सकैं❀ईस्वरता कौं सब कोऊ तकैं।
भोजन करत मचावत लूटि❀कर ते कौर परत हैं छूटि ॥७१
बरजोरी सब लै लै भागैं❀एक एक कें पाछै लागैं।
ज्ञांनी करमठ सुनि औंदरैं[३]❀विधिवत पूजत ते कुढि[४] मरैं७२
नीरस रहैं सन्देह जु भरे❀अनुरागिनु कें वैंट हार परे।
ग्वाल मनोहर सुत ब्रजराइ❀प्रेमी जन जीवत जस गाइ ७३
ग्रीषम रितु हरि बिहरत भये❀कांनन सुख बिलसैं नित नये।
यमुना जल में क्रीडा करैं❀कमल तोरि ओलिनु में भरैं ७४
तीर खेल की माची भीर❀रुचै धमूतर जु हलधर[५] बीर।
प्रथम चोट कमलनि की करैं❀पुनि छींटैं अँजुरिनु जल भरैं७५
अति किलकारैं पैंडें लगैं❀गोता दै दै थल को भगैं।
बहुरि आई कैं आंखिनु मींचैं❀आंकौं भरि कै तन कौं भीचैं ७६
छोडि छोडि वे मुख ते कहैं❀करैं नकबांनी[६] गाढौ गहैं।
दसौ आँगुरी मुख जब धरैं❀तब छाडैं प्रसन्न पुनि करैं ॥७७
ऐसें जल जु कलोलत मोंहन❀सखा फिरत सब लागें गोंहन।
पुनि उछरैं पुनि बुडकी लेंहिं❀हो हो कहि कहि छींटें देंहिं ७८
ग्रीषम ताप न जांनी परी❀जल क्रीडा यों मोहन करी।
कदंमनी लता झूमी रही जहाँ❀परसति जल शीतलता तहाँ ७९
तट में आइ अँगोछे अंग❀पुनि पहिरे जु बसन नव रंग।

१—ज्ञानी तत्वानुशीलन के कण खोज करने से इस रस लीला रहस्य से दूर रह जाते हैं, २—विधि भक्ति के नियमों में आबद्ध भक्त, ३—चक्कर में पड़ जाते हैं, ४—खेद में रहना या खिजना, ५—बल के भैया श्याम, ६—भला बुरा कहे या निंदा करैं।

भाल तिलक हरि मन्दिर कियो❀चन्दन अरगज तन लेपियो ८०
करी मधुर मुरली की घोर❀गायें फिरीं गाँव की ओर।
बैंनु बिखाँन सखानि बजाये❀नगर निकट मुरलीधर आये ८१
पुरजन हिये प्रेम कलमले❀लैंन जु आगे आये चले।
मुख मुसिकत दृग बांकी फेरनि❀कहूं सूधि कहूं तिरछी हेरनि ८२
दोहा—इहि विधि आये तात घर, कियौ आरतौ माइ।
बदन पौंछि अँचवाइ जल, गोदि लिये बैठाइ ॥८३॥
पुनि मेवा पकवाँन भरि, मैया लाइ थार।
भोजन करि लैं लाडिले, फिर्यौ गोअनि के लार ॥८४॥
राम कृष्ण बैठे अजिर, लेत लाड जुत कौर।
जो मन रुचि होइ दुहुँनि कैं, सो पुनि लावैं और ॥८५॥
दोउ माता ढोरति बिजन, लीये अपनें हाथ।
हलधर अरु मुरलीधर न, जेंवत हैं मिलि साथ ॥८६॥
जेंवौ अति रुचि मानि कैं, मेरे अम्बुज नैंन।
ज्यौं मुख ग्रास जु लेत तुम, त्यौं पावति हौं चैन ॥८७॥
भोजन करि अँचयौ सु जल, पुनि धोये मुख हाथ।
चले जुहारी[1] देन कौं, जहाँ बैठे ब्रज नाथ ॥८८॥
नैंन प्राँन मन भाँवते, सुतनि नवायौ सीश।
रोम रोम हर्षित भये, ब्रजपति दई असीश ॥८९॥
गोद बैठि मोहन कहत, सुनत गोप सिरमौर।
बाबा गाइ बहुत बढीं, खरिक छवावौ और ॥९०॥
बेटा तैं लाठी गही, भले मुहूरत पाइ।
हम घर औरौं बढैंगी, दिन दिन अनगन गाइ ॥९१॥
गांव गांव गोधन छये, अब जु छवैं आरँन्य।

१—गले मिलने का गए।

मन करि मानैं आपने, नन्द भाग धनि धन्य ॥६२॥
मन्दिर आये घोष पति, सिता सहित पय प्याइ।
सुन्दर पलिंग बिछाइ कैं, सुत दीयै पौढाइ ॥६३॥
रितु बसन्त ग्रीषम जु पुनि, बरन्यौ कृष्ण विलास।
रसना त्रिपित न होत तदिप, हित वृन्दाबन दास ॥६४

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण बसन्त रितु तथा ग्रीष्म रितु बन बिहार गोचारन बरनन तीसवीं लहरी की जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ इकतीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—हित प्रसाद बरनौं जु अब, पावस[1] सहित समाज।
जयौं करि हैं लीला जु अब, बन में सुत ब्रजराज ॥१॥
प्रात भयौ रजनीं गई, द्वार पुकारे ग्वार।
करत कलेऊ भोर हीं, जागे नन्द कुँवार ॥२॥
मित्र बाँह गहि लै गये, खोली खरिकनि टाट[2]।
गऊ चरन काँनन चलीं, अति छबि देत जु बाट ॥३॥
रितु बसन्त ग्रीषम गई, पावस पायौ राजु।
ये घन माला ऊनई[3] भैया पच्छिम आजु ॥४॥
तिन में कौंधति दांमिनी, घन भांमिनी सँजूत।
गहकी बोलति कोकिला, बैठी डारिनु नूत ॥५॥
मोर सोर अति करत हैं, सुनि सुनि घन की गाज।
परजा[4] धीरज दैन हित दल साजे सुरराज ॥६॥

॥ चौपाई ॥

बडडी बूँन्दैं आंईं जबै ❀ गिरि कन्दरा दौरि गही तबै।

---

[1] —वर्षा रितु, [2] —छप्पर के फाटक को टाट कहते हैं, [3] —बादल समूह चढ़ आए, [4] —इन्द्र मानो बादलों की सैना से प्रजा को धीरज देते है कि अन्न आदि होंगे।

तीछन बहन लगी चौबाई[1]❀बरषा बडे जोर सौं आई ॥७॥
कुंड सरोबर सब हीं भरे❀उज्जल पात द्रुमनि के करे।
ज्यौं कोऊ जु धर्यौ धन पावै❀उर की फूलानि बदन जनावै ८
इच्छया भौजन ज्यौं द्विज करैं❀दछिना लै आसिक[2] उच्चरैं।
अँग[3] पोष हिय हरष जु होई❀ताको परषि[4] लेंहि सब कोई॥९
यौं तरु बेलि डह डहे भये❀तिन में अँकुर उलहे नये।
भये ऊजरे गिरि सब गात[5]❀जिनमें दरसीं तहाँ जहाँ धात॥
हरित भूमि भई उडति न धूरि❀सरवर सबै रहे जल पूरि।
अँवनि छबी बहु विधि बिस्तरी❀मेघ सींचि कैं शीतल करी॥११
पंछिनु की बोलनि भई और❀इन्दु[6] बधू दरसीं सब ठौर।
सलिता[7] सब सुख बाढीं भलीं❀प्रीतम[8] सागर सनमुख चलीं१२
तरु बेलिनु सौं बढ्यौ सनेह❀परजा रुचि लै बरसतु मेह।
घन गरजैं पुनि दामिनि लसैं❀देखि देखि कैं मोहन हँसैं ॥१३
भैया[9] घन यह कासौं लरैं❀बार बार अति सोर जु करैं।
मुख फारैं दांतनि चमकावैं❀नैननि पे बहु नीर बहावैं ॥१४
अपु तें छबि कहूं लखि जु बिशेषि❀कै यह कुढतु जु ताकौं देषि।
कै घर चंचल दामिनि नारी❀तासौं कलह मचाई भारी ॥१५
वह लज्जित ह्वै बदन लुकोवै❀कैंसे नाह[10] सुखित ह्वै सोवै।
हँसै ग्वाल सुनि ऐसी बाँनी❀मोहन बरनी भली कहाँनी१६
अब[11] जो कन्दरा कौं तजि देहु❀रहि गईं बूँद गऊँनि सुधि लेहु

---

[1] —चारों दिशाओं से वायु की गति तीछन है, [2]—आशीरवाद, [3]—शरीर पुष्ट होने से मन में सहज हर्ष होता है, [4]—पहिचान, [5]—पर्वतों के सब भाग मैल से माटी से धुल गये उनमें अनेक धातु दीख पड़ी, [6]—बीर बहूटी जो लाल रंग की वर्षा में पैदा हो जाती हैं, [7]—नदियां, [8]—अपने प्रीतम पति सागर, [9]—श्याम सख्य रस वृद्धि के हेतु अब सखाओं को विनोदी वाणी में सरस उत्प्रेक्षा करके कह रहे हैं सो आगे की चौपाइयों में आस्वादनीय है, [10]—बिजली का पति बादल, [11]—वर्षा के कारण श्याम सब को गिरि की गुफा में लेकर खड़े थे सो वर्षा थमी तो कह रहे हैं चलो निकलो।

गिरि कन्दरा छांडि कैं भगे❀सब हीं गाइनु पाछें लगे ॥१७
जल पूरित सब अवनी भई❀ग्रीषम ताप सबै मिटि गई।
सलिता बही आपनें जोर❀चहु दिस करत जु दादुर[1] सोर
अति आनन्दित नित्तत मोर❀बोलत सारस शब्द कठोर।
नींठ[2] नींठ करि पाईं गाइ❀ठाढी भई सघन बन जाइ ॥१८
ग्वाल पलासनि पर चढि गये❀बडडे पातनि तोरत भये।
सुन्दर छतना[3] रचे बनाइ❀इक देखत एकनि के जाइ २०
कोऊ कहैं भैया मुहि रचि देह❀मेरो तेरो अधिक सनेहु।
एक चुराइ दूरि कहू धरैं❀ते ढूँढन कौं उद्दिम करें ॥२१
भैया चोर मंडली मांहिं❀मेरौ छतना देत जु नांहिं।
यह रविजा तट उठि जु घटा❀बदरिनु बदरिनु दमकति छटा२२
कमरा[4] स्याम लेंउँगो तेरो❀नहिं दिवाइ दै छतना मेरो।
राजपूत तू अपु कौं मानै❀न्याव नीति की बात न जानै ॥
तेरे भेद वस्तु गई मेरी❀हौं हरि लैं हौं मुरली तेरी।
जब वह गयौ रौंवनी[5] आइ❀तब इन छतना दियौ मँगाइ २४
नित नव सोभा कानन सरसैं❀नित हीं मेह लहरुवनि[6] बरसैं।
नित उठि बढै अवनि हरियारी❀नित रचैं खेलनि गोप बिहारी२५
पाट डोरि सुन्दर कर पकरी❀मोहन खेलत फेरत चकरी।
सबै सखा ऐसी बिधि फेरैं❀कर[7] की लाघवता हरि हेरैं॥२६
काहू[8] कौं करि कूट चिरावैं❀ललित रीति सौं आपु फिरावैं

१—मैंढक, २—वर्षा के कारण सब ग्वाल गिरि गुफा में रुके रहे तब तक गैया बहुत सघन बन में घुस गईं सो उनको बड़ी कठिनता में जाकर पकड़ पाये यह भाव है, ३—पलास के बड़े २ पत्तों के बन के लोग वर्षा के लिये छाता बना लेते है उनका वर्णन है, ४—जिसका छाता चुराया गया वह स्याम से कह रहा है वर्षा हो पड़ी तो मैं तेरी कमली खो लूँगा नहीं तो मेरा छाता दिला दे, ५—रोने तुल्य होने लगा, ६—निरन्तर लहरों की तरह, ७—हाथ की सफाइ चकरी घुमाने की श्याम देख रहे हैं, ८—जिसे ढंग न आवे उसे चिराते हैं।

तुम में कोऊ चतुर कोऊ क्रूर❀सुनि हँसि परत करत धमतूर२७
गज[1] दंतनि के बंगी लाये❀मोहन आगें सबनि फिराये।
सब में कोबिद[2] दाऊ महा❀जानैं फेरि मनसुखा कहा ॥२८
भैया कारौ सब सौं अरैं❀छोटे बडे न काहू डरैं।
अपनें[3] औगुन पाछैं डारैं❀मेरे औगुन अधिक निकारैं २९
तनक बात कौं बहुत बढावैं❀हाँसी बिनु कछु और न भावैं।
अब तुम मेरे सनमुख आवौ❀मेरौ सैं लहट्टू जु फिरावौ ॥३०॥
गल[4] बाजिनु में तैं जस पायौ❀मुरली कें बल सुघर कहायौ।
भैया शाखी[5] होहु जु कोऊ❀लहट्टू हम जु फिरावैं दोऊ ॥३१
काहू की जु पक्ष जिनि कीजौ❀जैसी देखौ सो कहि दीजौ।
लहट्टू प्रथम मनसुखा डार्यौ❀मोहन टोल[6] जु तामें मार्यौ३२
सघन कुंज में पर्यौ जु जाइ❀कहै सखा दै मोहन लाइ।
कहा[7] मनसुखा मोहि डरावै❀जाको पोत सोई लै आवै ॥३३
मौंहन नाहीं नाहीं करैं❀धूत मनसुखा चपर्यौ लरैं।
बलिदाऊ तब न्याव चुकायौ❀जाइ मनसुखा लहट्टू लायौ ३४
बडडी बून्द परन जब लागीं❀ओदरि गाइ गाँव दिसि भागी।
ग्वाल दौरि कै आगें गये❀गाइनु कौं तहाँ थाँभत भये ३५
कामरि की खोही शिर करैं❀ठाढे सघन द्रुमनि कैं तरैं।
मन्द मन्द अति घन हर घोरैं❀वरषैं पाँनी पवन झकोरैं ॥३६॥
दमकैं सबल दांमिनि ऐसैं❀निरषि होइ चषचौंधी जैसैं।
द्वै द्वै मिलि कैं लूहरि[8] गावैं❀मित्र साँवरे कौं जु रिझावैं ॥३७

---

[1]—हाथी दांत के लट्टू या भौंरा. [2]—चतुर लट्टू घुमाने में, [3]—श्याम सुन्दर बोल उठे [4]—सखा ग्वाला बातें गढ़ने में, [5]—न्याय करने वाला कि किस का लट्टू अधिक चला दूसरा फैसला दे. [6]—धक्का मारा, [7]—श्याम कहते हैं धमकाता किसे है जिसकी बारी वह लावै मैं क्यों लाऊँ, [8]—वर्षा की हवा का गीत।

कोकिल मधुरौ करति अलाप❀मोर जपत मनु घन कौ जाप।
दादुर नदित भरै जल ताल❀तैसीयै नकल करत यह ग्वाल।।
कम्बर[1] बसन सुखाये तरवर❀कूदे सखा भरे जल सरवर।
सब कौं बोलि आपु ढिग[2] लीयौ❀मदन गुपाल मतौ अस कीयौ।।
ऊचौ टीलौ एक बनावौ❀अप अपनो बल सबहि दिखावौ
बांधि चौकरी कूदो ऐसें❀उछुरि जातु है हरना जैसें ४०
अधिकी धाप[3] कौंन सौं भरै❀अति बलवाँन सु जान्यौ परै।
दूध निरोगौ काकी मा कौ❀दरसि परै जु पराक्रम ताकौ ४१
वर्षा यौं फूली है अवँनी❀हरी हरी लागति अति कँमनी।
किये रति नाथ बिछौना जानौ❀अब हीं सभा रचैगौ मानौ ४२
ऐंडे बैंडे बचन जु बोलैं❀सखा आपनैं बल कौं तोलैं।
कूदन लगे चौंप चित चढैं❀एक एक तें आगें बढैं ।।४३।।
कोइ इक सब कौ साची रहौ❀जैसें कूदै तैसें कहौ।
इक इक कौ चीरा लै भग्यौ❀तासौं अवँनी नापन लग्यौ ।।४४
सब तें कूदि अगमने गये❀ते तारी पटकावत भये।
सुनि भैया नन्दलाल खिलारी❀तू सिखाइ बजवावत तारी ।।४५
हौं सब तें जु अगमनो गयौ❀तैं भुलाइ नापत में दयौ।
देखि आइ भैया बलि राम❀ये कौतिक करवावतु स्याम ।।४६
दोहा—झूठे[4] कौ सांचौ करै, सांचे देंइ रुवाइ।
कौंन खेलि है संग तुहि, हांसी बिनु न सुहाइ ।।४७।।
नापत में गयौ भूलि जो, अब कैं कूदौ फेरि।
दोष देतु मुहि मनसुखा, स्याम कह्यौ यौं टेरि ।।४८।।

१—भीगे कम्बल वस्त्र वृक्षों पर सुखाये, २—अपने पास बुला लिया, ३—छलांग, ४—भगवान के मधुर रस का स्वभाव कह रहे हैं।

॥ चौपाई ॥

भैया हम सब बलि की ओर❀कौन पत्याइ छाँछ के चोर।
दाऊ तुम याकौं सिख देहु❀या कौं काहू सौं न सनेहु ॥४९
कहैं सुबल यह बल[1] को काम❀कहा करैं स्याँम कहा करैं राम।
खेलत भई बडी अब बार❀चलि गाइनु की करौ सम्हार ५०
गाइनु निकट सबै चलि गये❀झूला डारि जु झूलत भये।
खीर[2] खप्प बन ते लै आये❀रचि मोटे जेवरा बनाये ॥५१॥
ऊँची सुन्दर पारि जु सरवर❀डारी झूल जाइ तहाँ तरवर[3]।
झोंटा दै दै झूल बढावैं❀पहिले मुरलीधर हिं झुलावैं ५२
सब हीं ग्वाल करैं किलकार❀मोहन परसि आउ वे डार।
कछू[4] चरन बल पटुली टारैं❀कछु कर बल करि जोती फारैं ॥
डारिनु[5] सौं परसी बढी झूल❀लाये तोरि लाल तरु फूल।
दाऊ[6] कहत अधिक जिनि बढौ❀उरझत डारिनु में ते कढौ ॥५४
लाल हठोलो सीख न मानैं❀राखि[7] राखि कहैं सखा सयानैं।
पटुली आइ सुबल नें गही❀उतरि लाल ऐसे मुख कही ॥५५
मोहन उतरे हलधर चढे❀ये ताही विधि झोंटा बढे।
बदि बदि कैं ओसरे झुलावैं❀एक चढैं इक उतरि जु आवैं ५६
भरे उमाहन झूलन एक❀करत कुलाहल फिरत अनेक।
तू लाडिलौ नन्द के पूत❀तेरे संग सखा बहु धूत ॥५७॥
सब हीं झूलत बदि बदि बारी❀कोऊ सुनत न बात हमारी।

१—ताकतवर का काम है, २—बांस के मृदुल तील जिनके रस्से बन सकते हैं, ३—तालाब के ऊपर जो वृक्ष छाया था रस्सा बट कर उस में झूला डाला गया, ४—पांव से पटुली को आगे धकेल कर हाथों से दोनों हाथों में पकड़ी रस्सी को फाड़ कर चौड़ा करते हैं जिससे झूला ऊँचा चढ़ता है, ५—सखा के कहे अनुसार श्याम ने डार परस कर फूल भी तोड़ लिया, ६—बलदाऊ कुछ डरे कि कहीं डाली में उलझ न जावे सो रोक रहे हैं कि ज्यादा न चढ़ो, ७—बस बस कर अधिक ऊँचा झूला न कर।

सब तें पहिले तू ही झूल्यौ❀पाइ बडाइ तन मन फूल्यौ ५८
बाँह पकरि मोहन लै आयौ❀पटुली पै ताकौं बैठायौ।
अपने हाथनि झोंटा दयौ❀बहुत प्रसन्न सखा वह भयौ ५६
पुनि टेंढी जु झूल करि दई❀तब वानें चक फेरी लई।
ये जु हँसैं वह करै पुकार❀पटकैं तारी नाचैं ग्वार ॥६०॥
भैया मोकौं लेहु उतारि❀ना तरु दै हौं सब कौं गारि।
तो मन हो जु उमाहो महा❀झूल पेट भरि डरपतु कहा ॥६१
अरे नन्द के समुझौं तोहि❀तैं चक फेरी दीनी मोहि।
ऐसी क्रीडा बन में करैं❀झूलैं फूलैं हिय सुख भरैं ॥६२॥
करैं पिछौरिनु की सब झोरैं❀हींसिनु[1] पै ते हींसा तोरैं।
गहि गहि डार सबै चढि जाइ❀नींबनि पै जु निबौरी खाइ ॥६३
कोऊ पैंचू[2] तोरन कौं धावैं❀कोऊ पक्की गुलकाक[3] जु लावैं।
किनहूं फूल जु तोरे जुही❀सुन्दर कर बर माला गुही ॥६४
पहिलैं कालिह झुलावौ मोहि❀मोहन तौ पहिराऊँ तोहि।
भैया कालिह तीज हरियारी❀झूलैंगे जु सबै नर नारी ॥६५॥
बाबा रतन हिंडोर गढायौ❀सो जु बडी पौरी रुपवायौ[4]।
अप अपने घर सब चलि कहौ❀कालिह तीज भलौं घर रहौ[5] ॥६६
अरे मित्र नीकी सुधि दई❀सुनि कै फूलि चौगुनीं भई।
लै कै गाइ नगर में गये❀ऐसें ही सब कहत जु भये ॥६७
घर घर में महकत पकवाँन❀गोप सुता करैं मंगल गाँन।
सांवन तीज सबन कौं प्यारी❀बीर मल्हावैं गोप दुलारी ॥६८
प्रात शिंगार सबनि मिलि करैं❀गाँव चहूं दिश झूला परैं।

१—कांटेदार खेत झार का एक डंडा तोड़ लिया गोल कपड़े से पकड़ कर तोडा जो पिछौरी का बनाया, २—एक प्रकार का फूल, ३—एक प्रकार का फूल, ४—गाढ कर पक्का लगवा दिया है, ५—अर्थात कल बन गाय नहीं ले जायगे।

सब झूलैं पुनि सबहिं झुलावैं❀गीत मोहनी मुख तें गावैं ॥६९
नन्द सुवन देखन कौं निकसे❀मित्र मंडली मिलि मन बिकसे
सिर पर फब्यौ लहरिया चीरा❀कलँगी कनक जटी नग हीरा७०
सुन्दर कटि में फब्यौ जु तनियाँ ❀कनक किनारी मधि[1] नग मनियाँ
सूहौ नीमा कंचुक लस्यौ❀छोर दार पटुका कटि कस्यौ ७१
नक बेशरि मणि कुंडल कांन❀कुटिल अलक अधरनि मुसिकांन
भाल तिलक दृग अंजन सोहैं❀कँबु कण्ठ वारौं सम को हैं॥७२
कंठी गरें धुकधुकी माल❀रतन जटित चौकी छबि जाल।
धौज चन्द से बाजू लसे❀हाटक[2] टोडर बहु नग गसे ७३
कटि किंकनि मणि चूरा पाइ❀सोभा पदिक[3] न बरनी जाइ।
लसतु पीत पट कांधे धरैं❀जुही फूल के गुञ्जा गरैं ॥७४॥
प्रथम हि पावन सर चलि गये❀यह छबि देखि सुखित सब भये।
अति छबि छके डगनि कौं भरैं❀मनसिज[4] मान कोर दृग हरैं ॥
ठौर ठौर सनमान जु पावैं❀जहाँ जांइ ते हरषि झुलावैं।
मित्रनि मिलि गावैं जु मलार❀सुनि सुनि सिमटे कौतिक हार७६
सुन्दर सुघर निहारैं जहाँ❀मोहन बिरमि रहत हैं तहाँ।
ढोटा बडौ रूप रिझवार❀नवल बधुनि कैं फिरत जु लार७७
ऐसें कहति घोष नागरी❀परषति रुचि जु रूप आगरी।
चोट रूप की इहिं उर लागी❀ह्वै हैं लाल परम अनुरागी ॥७८
सबहिनु लाये संग लगाइ❀आये तहाँ पौरि व्रजराइ।
झँमकि हिंडोरैं पै चढि गये❀साँवन कौ सुख बिलसत भये ७९
हौंसि हौंसि दैंइ झोंटा ग्वार❀छबि सौं रमकत[5] नन्द कुँवार।
तन फहरातु पीत पट ऐसें❀घन कौं ढांपैं दामिनि जैसें ॥८०

१—मध्य में, २—सोने का टोडर भूषन, ३—गले का जुगनू भूषण, ४—ननो के कोने कामदेव का मान भंग कर रहे हैं, ५—सुशोभित हैं दीप्तिमान हैं।

मैया निरषि वारनें लेति❀विप्र वधुनि कौं दछिना देति।
साँवन नित सुख बाढतु दूनौं❀नियरौ[1] आयौ द्यौस सलूनौं[2] ८१
साँवन सुदी पंचमी आई❀महरि गवावँन लगीं बधाई।
नौबति नन्द पौरि पै घुरी❀सब विधि करी अलंकृत पुरी८२
अँगन लिपायौ चौक पुरायौ❀पट्टा पै बलि कौं बैठायौ।
जननी अँग उबटनौं करैं❀कदली रोपि कलश भरि धरैं ८३
मंगल बिबिध रचित हैं धांम❀केशरि तन मंडित बलिराम।
जल न्हवाइ कैं पौंछैं अंग❀चुनि पहिराये बसन सुरंग ॥८४
भूषन रतन सबै अंग सचे❀कलँगी तुरा सिर पर रचे।
टीकौ लिये बधू जन आवैं❀पंच नाद मिलि मंगल गावैं ८५
रोरी अछित तिकल जु करैं❀भेटैं देंईं आशिस उच्चरैं।
बिप्रनि दाँन रोहिनी दीयौ❀महरि बधुनि सनमान जु कीयौ॥
सुतनि जिमावति हैं दोऊ मैया❀जेंवत राम कृष्ण दोऊ भैया।
देति लाड़ जुत मृदु मुख कौर❀जननी कहति लेहु सुत और ८७
सखा कहत सैंननि हीं माहिं❀तुम जेंवत इत देखत नाहिं।
कहैं बलि रंचक धीरज धरौ❀भैया अब हीं धूम न करौ ८८
होंन देहु मंगल बिधि आछें❀सबनि जिमाऊँगौ हौं पाछें।
घर बैठ्यौ मंगल जु गवावैं❀अब तू दृष्टि कौंन कौं लावैं ८९
पहिरि जवाहर बन्यौ शिर मौर❀बन में की बातें हीं और।
जैं[3] के त्रिपित वीर दोऊ भये❀हाथ प्रछालि आचवँन लये ९०
दै तम्बौर आरतौ जु कीयौ❀भूवा नेग आपनौ लीयौ।
वरस गांठि हलधर की माँन❀ब्रजपति देत सबनि कौं दाँन ९१
ग्वाल जिमाइ जु बांटी भाजी❀कियै सबै पुरवासी राजी।
साँवन अति उत्साह जु भरचौ❀मंगल दुगुन नन्द घर करचौ९२

१—समीप, २—साँवन पूर्णिमा रक्षा बन्धन, ३—खा पीकर।

सब झूलैं सब हीं जु झुलावैं❀भवँन भवँन में मंगल गावैं।
शुक्ल पक्ष की आइ ग्यास❀पहिरि पवित्रा भरे हुलास ॥९३
पटवनि[1] गुहे पाट नव रंग❀अति छवि देत साँवरे अंग।
मन अति मुदित चलत ऐंडाइ❀मित्रनि कौं जु दिखावत जाइ९४
करियत गूझा सक्कर पारे❀पूरी गुलगुला घेवर भारे।
राखी बन्धन कौ दिन आयौ❀सबहिनु रचि शिंगार बनायौ९५
छोटी बडी नगर तें कढीं❀गावति मंगल अति मन बढीं।
चलीं जु सुन्दर सरवर तीर❀अँगनि थिरकत[2] सूहे चीर ९६
हाथनि पै जब भाजन धरैं❀हांसि बिनोद परस्पर करैं।
सरवर तट भाजन निसिरावैं❀पुर कुल देश जु कुशल मनावैं॥
दूलह दुलिहिनि गांठि जुरावैं❀रचैं विवाह हरषि दुलरावैं।
तात गात पुनि बीर मल्हावैं❀गावति खेलत घर कौं आवैं॥
लीयें सखनि मंडली लार❀कौतिक देखत नन्द कुम्वार।
भैया भयौ धन्य दिन आजु❀दरस्यौ अद्भुत बधुनि समाज॥
राखी लियें गरग रिषि आये❀ब्रजपति पौंरी बैठे पाये।
दीने अपनें भृत्य पठाइ❀राम कृष्ण कौं लेहु बुलाइ१००
हरि हलधर आये तिहि काल❀तिनके संग राजैं बहु ग्वाल।
सिमिटे सब हीं आरज गोप❀ब्रजपति पौंरि देत अति ओप॥
द्विज मागध बन्दी जन आये❀ढाँढी बिरदनि पढत सुहाये।
उच्चरत बेद गरग रिषि जहाँ❀राखी बन्धन कीजतु तहाँ १०२
राखी बांधि धरे जब सीश❀दछिनां लै मुनि देत असीश।
पाट फौंदना मोती लसैं❀मोहन कर ऊँचौ करि हँसैं १०३
दाऊ की ते सुन्दर मेरी❀यौं कहि स्याम लई चक फेरी।

---

[1] १—पटोली अर्थात रेशम आदि सूतों की गुथाई करने वाले जो रक्षा आदि बनाते हैं, [2] २—लहलहा रहे हैं।

पुनि दौरे जननी पै गये❀दै असीश आंकौं भरि लये१०४
मैया कहि दै सांची मोकौं❀राखी की जु परख है तोकौं ।
मेरी सुन्दर कै हलधर की❀मोहि लगति नीकी मो करकी ॥
लला हठीली तेरी बाँन❀राखै नहीं बडे की कान ।
अति छबि देति दुहुँनि कर माहिं❀इनमें घटि बढि कोऊ नाहिं ॥
पुनि लाला की भूवा आई❀पाट कौंधनीं पहुँची लाई ।
राखी बाँधी सुन्दर हाथ❀मोतिनु झूमक जाकें साथ १०७
फिरैं दिखावत नन्द कुँवार❀कौतिक निरषि मुदित सब ग्वार
घर घर में जु बाइनौ[1] देहिं❀नातौ मांनि परस्पर लेहिं १०८
साँवन सरसै सुख जु सनेह❀मन रुचतौई[2] बरषै मेह ।
बरष मांहिं मुखिया त्यौहार❀नाम सलूंन्यौं मंगल चार १०९

दोहा–यातें अधिकौ भाँन घर, भयौ जु सुख विस्तार ।
जिहिं घर अति लडि राधिका, ताकौ यह त्यौहार ॥११०
वृन्दावन हित रूप बलि, दुहुँ कुल करी प्रसंश ।
राधा हरि प्रगटे जहाँ, जीवन श्री हरिवंश ॥१११॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण सावन उत्साह वरनन इकत्तीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवश श्रीराधे ॥

॥ अथ बत्तीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–भादौं घटा विलोकि कैं, कहत सखनि सौं स्याम ।
बग पंकति यौं लसति मनु, घन उर मोतिनु दाम ॥१॥
देखौ दमकति दामिनी, पुनि घन में दुरि जांहि ।
मनु परदा की भांमिनी, उझकतु खिरकिनु मांहि ॥२॥

---

[1]—राखी की प्रसादी तथा भेंट, [2]—जब मन चाहे वरषा होती जब चाहे बन्द हो जाती ।

अरे मित्र तेरौ बचन, हम कौं लाग्यौ नीक।
बदन न खोलि दिखावहीं, यह लजवन्ती ठीक ॥३॥
कै घन बरषत रीझि कै, प्रेम द्रवत कै चित्त।
यह बात कहि स्याम घन, तुम वे दोऊ मित्त ॥४॥

॥ चौपाई ॥

हौं[1] बन फिरौं गगन वह रहै❀बात कौंनु वा मुख की कहै।
भैया[2] बात समुझि नहिं बूझै❀यह काहू जु पढैलै सूझै ॥५॥
जौ[3] तू जानि शिरोमणि राइ❀हौं बूझौं अब सो जु बताइ।
ये बादर जु कहाँ तें आवैं❀काहे में यह जल भरि लावैं॥६
हाथ पाइ बिनु करैं जु दौर❀इन कौं घर बताइ किहिं ठौर।
स्याम कही यह गूढ पहेरी❀याहि न समझि सकत मति मेरी
मोहन तोहि फुरति बहु घात❀कहन लग्यौ अकास की बात।
मानौ इन्द्र लोक ह्वै आयौ❀सो जु सन्देसो हमैं सुनायौ ॥८॥
मन हीं मन सौं बातैं गढै❀कुपठनि[4] मधि पुरान से पढै।
उक्ति जुक्ति हरि बरनी नई❀ग्वाल कहाँनी पूरन भई ॥९॥
बन गहवरता अति दरशाई❀अवँनी हरे त्रिनानि सौं छाई।
बरषा पोष[5] जु ऐसौ दियौ❀काँनन रूप मोहनी कियौ ॥२०
वृन्दाबन को देखत रहिये❀याही कौ जस रसना कहिये।
काँनन कैधौं सुख सम्पदा❀मोकौं प्यारो लागै सदा ॥११
जा में सुखित होत हैं गाइ❀हम विहरैं जहां नित सचुपाइ।
कोऊ लोक न इहिं सम कहैं❀सुर मुनि याकौं देख्यौ चहैं १२
गाइनु हूं नहिं खरिक सुहात❀इहि बन देखत फूलति गात।

---

[1]—स्याम उत्तर में सखा से कह रहे हैं, [2]—सखा ने उत्तर में कहा, कि बादल क्या कह रहा है यह ज्योतिषी जान लेते हैं, [3]—स्याम उत्तर में सखा से बोले, [4]—अनपढ़ गँवारों में पुरान पढ़ रहा है, [5]—पुष्टि या सींच दिया।

नमो नमो वृन्दा आरन्य❀जाहि देखि भये मो दृग धन्य ॥
मोकों रुचै और सुख नांहिं❀मन रुचि मानी काँनन मांहिं।
लागतु सत चित आनन्द रूप❀नये नये कौतिक रचै अनूप १४
ब्रजपति मुहि दुलरावैं जैसें❀बन हूं लाड लडावैं ऐसें।
यह[1] झुकि आयौ नियरौ मेहु❀बेगें दौरि लता ग्रह लेहु ॥१५॥
थिर चर सुखित करन कें काज❀भादौं मास सबनि सिरताज।
यों कहि कैं जु कुंज दिस भगे❀उमडि घुमडि घन बरसन लगे ॥
मोहन पाछें आवत ग्वार❀बैठे गह्वर कुंज मझार।
बडडो बूँदनि पटकत पात❀मनु तरु करत परस्पर बात १७
सुनत श्रवन यह कोकिल नाद❀भैया उपजतु उर अहलाद।
चहुँ दिशि बन झिंगारत मोर❀तैसी यह गहरी घन घोर ॥१८
रविजा में जल उठति हिलोर❀दुहुँ तट तरु ढाहति बरजोर।
मुरली नाद सिखिर गिरि करैं❀सब कै मन कों बरबस हरैं ॥१९
कोऊ शिर पातनि छतनाँ धरैं❀कोऊ कम्बर की खोही करैं।
फूलीं धौं जु सुगंधि झकोरैं❀कमनीं कुण्ड भरे चहुँ ओरैं ॥२०
मुरलीधर निरषत आनन्दे❀बार बार गिरि राजहिं बन्दे।
बछुबनि की गाइनु सुधि करी❀गाँव ओर सबहिंनु धप धरी २१
पाछें लागे आवत ग्वार❀वे चलीं मनों सुरसुरी धार!
ऊँचो पूँछ जु ऊँचे कान❀रोकीं रुकति न अति बलवान ॥
अंग अंग अति दरशति तेज❀आयौ सरस हिये में हेज।
सोभा सर जु नन्द पुर नेरे❀गऊ आवति कै हंश बसेरे[3] २३
अनुरागी अकुलाहिं निराट❀देखैं हरि आवन की बाट।

१—श्याम कह रहे हैं वह बरषा आई दौर कर सघन लताओं में चल कर बचो, २—गौओं को बछड़ों की याद आई तो उन्होंने गाँव लौटने को लम्बी दौड़ की ३—जैसे हंश अपने मानसर को जाते हैं सो पहले नन्द पुर को सोभा सर कह दिया है।

मानि बधाई मन्दिर लेहिं❀नैंन चैंन सबहिंनु कैं देहिं ।।२४
दोहा–वरष गांठि नन्दलाल की, गरग सुनाई आइ ।
भादौं कृष्ण अष्टमी, मंगल रचौ बनाइ ।।२५।।
नछत्र रोहिनी बार बुद्ध, करौ कृष्ण अभिषेष ।
परम लाड कौ दिन जु यह, आनंद बढै विशेष ।।२६।।

।। चौपाई ।।

रजनी बीती बासर भयौ❀घर घर महरि बुलावौ दयौ ।
चहुं दिस रोपे कदली मूल❀सुन्दर मण्डप छायौ फूल ।।२७
अजिर लीपि दीपावलि धरी❀सिंघ पौरि अति चित्रित करी ।
धुजा पताका रोपे घनें❀सुन्दर सुरंग बितान जु तनें २८
मलयज घँसि भाजन भरे❀मंगल कलश पूरि जल धरे ।
बनिता आवति मंगल साजैं❀पंच नाद मिलि बाजे बाजैं।।२९
यसुमति और रोहिनी राँनी❀उर की फूल न परत बखांनी ।
जे कुल बधू बधायें आंईं❀आदर दै कैं सब बैठाईं ।।३०।।
आपु अलंकृत भईं तन ऐसैं❀श्री हूं सकुचैं देखत जैसें ।
पौंरिनु अस निसाँन जु घुरैं❀घन गरजनि जिन कौं सुनि दुरैं ।।
व्रजपति अंग अलंकृत ह्वै कैं❀बैठे सभा गोप संग लै कें ।
भवँन भीर गहमह जु महा है❀पुर रचना कहि परति कहा है३२
आइ सवासिनि सथिये रचैं❀मालिनि बन्दन माला सचैं ।
रतननि माल जगमगैं तोरन❀केशरि घँसि २ भरी कटोरन ३३
ऐसो मंगल रच्यौ जहाँ है❀पूरे मोतिनु चौक तहाँ है ।
चन्दन चौकी आंनि बिछाई❀रतन जटित जल झारी आई।।
मुख बिहँसत मुरलीधर आये❀जननी ने भुज गहि बैठाये ।
मोरि पालथी बैठे लाला❀उबटन करति सुहागिनि बाला।।

हँसि हँसि मोहन मुख कों मोरैं❀काहू सनमुख दृष्टि न जोरैं।
लाज करैं मैयनि की भारी❀भोर ह्वै रहे गोप बिहारी॥३६
महरि दृष्टि जब इत उत करैं❀बाला अंग चुहुँटियाँ भरैं।
कोऊ गुलचा दै हँसति मोरि मुख❀केशरि उबटति भरी परम सुख॥
सबहीं आई लाल अंग परसैं❀मंजु मुकर आभा ज्यों दरसैं।
होत वेद धुनि मंगल गावैं❀यमुनोदक सों हरिहिं न्हवावैं ३८
सब मुख उचरत जै जै बांनी❀अंग अंगोछति यसुमति रांनी।
पीत धोवती[1] चुनि पहिरावैं❀केशरि तिलक लिलाट बनावैं ३६
डारि फुलेल सँवारी अलकैं❀श्रवननि में मणिकुंडल झलकैं
अँजन सों आंजैं दृग लौने❀सोभित कछुक[2] लजौंहैं कौनें ४०
सिर पर रच्यौ मुकेशी चीरा❀जगमगात कलँगी नग हीरा।
कंचुक पीत कनक कोरनि[3] कौ❀पटुका बन्यौ जरी छोरनि कौ ४१
कनक रतन भूषन अंग सोहैं❀यह छबि निरषि मदन गन मोहैं
रत्तन पेंच माथे पै बांधैं❀कनक उपरना सोभित कांधैं ४२
कुशम सुबासित[4] माला गरैं❀कुशम सेहरा माथें धरैं।
लालहिं देखत सब हिय सरसैं❀आजु नवल दूलह सों दरसैं ४३
सब मन भई अभिलाषा ऐसी❀दई करयौ चाहतु है जैसी।
विधिहिं मनावत सब नर नारी❀बेगिहिं फलौ असीश हमारी ४४
दरशन हेत सबै अरबरैं[5]❀तिलक करैं पुनि भेंट धरैं।
नचत ग्वाल कटि तनियाँ थिरकैं❀हरद दही लै सब तन छिरकैं॥
हँसत फिरैं कर भाजन भरैं❀पीत उपरननि खोही करैं।
इक गहि मुख माडैं जु निसंक❀एक लगैं धुकि एकनि अंक ४६
बन्दी टेरैं लै लै नाम❀गाइन जस गावैं अभिराम।

---

[1] —धोती, [2] —लज्जा युक्त, [3] —किनारा सोने की धारी से जड़ा है, [4] —सुगंध मय, [5] —उतावली में हैं।

ढांढी उचरैं गोप पँवारै१❀भाँडनि बहु कौतिक विस्तारैं ४७
पहपट मंगल मुखी मचावैं❀बोलि बोलि बनिता जु नचावैं।
न्यौंछावरि करि करि कै देहिं❀सादर ओटि ओटि कर लेंहिं ४८
जिवौ यसोमति तेरो लल्ला❀रांनी रीझि दियौ मणि छल्ला।
मूँठि उठावति सब हीं वनिता❀रतन बगेरति मोहन जनिता४९
अँचल ढांपि जिमावति मैया❀जेंवत सुन्दर कुँवर कन्हैया।
लागत स्वाद लाड के कौर❀मुख छबि दरसति औरहि और
जल प्यावैं रहि रहि जु जिमावैं❀बढतु प्रेम उर कहत न आवैं।
बिबिध भांति मेवा पकवाँन❀भोजन करि कीनो जलपाँन ५१
कर मुख धवाइ तम्बोल जु दियौ❀भूवा साजि आरतौ कीयौ।
बधुनि गोद भरि मेवा दीनी❀सब की महरि असीश जु लीनी
विप्र जिमाये पुनि सब पुरजन❀पहिराये जु मांनि अरु गुरजन।
द्विज मंगित जन बांछित दीयौ❀बरस गांठि मंगल अस कीयौ।।
जब जब नछत्र रोहिनी आवैं❀यसुमति सुत इहि विधि दुलरावैं
लाड करन बाढै अभिलाषा❀ज्यों नवीन द्रुम में ते साषा ५४
ऐसो सुत नहिं ऐसी माइ❀जाकी उपमा दीजै लाइ।
को है नन्द महर सौं तात❀सुत लखि फूलैं छिन छिन गात
सुत हूं बहुत ठौर अवतर्यौ❀ऐसो लाड न काहू कर्यौ।
लाड बाबरौ नित हीं रहै❀जो चाहै सु करै अरु कहै ।।५६
तात प्रसाद बहुत गुन आये❀जिन करि ब्रजजन प्रेम बिकाये
तात मात ऐसें दुलरावैं❀जिहिं गुन कोऊ दृष्टि न आवैं।।
काम बिगारि जद्दिप हू भगैं❀तद्दिप सब कौं प्यारौ लगैं।
ऐसी सुघरी जनम जु लयौ❀सब कौं प्राँन भाँवतौ भयौ ।।५८

१—इतिहास, २—कोलाहल मय स्त्रियों का एक मंगल सूचक गीत।

जो यह करै सु सबकौ भावै❀कोऊ न घटि वढि बात चलावै
भैया हम परषी कै बार❀करैं राति दिन यहै बिचार ५६
को धौं या ने साध्यौ जन्त्र❀कैधौं पढ्यौ मोहनी मंत्र।
छबि निरषत मन लगै न हाथ❀मोहन लेहि लगाइ जु साथ ६०
कहा अजान कहा पंडित करै❀यह चेटक कछु समझि न परै।
भैया नन्द महर पुन्याई❀और बात कछु बरनीं न जाई॥
बिधिना ब्रज सुख दैंन पठायौ❀भाग भलौ व्रजपति घर आयौ
वडडे बिघन टारि इहिं दये❀जनु सहाइ श्रीपति ही भये।
नन्द सुवँन की अकथ कहाँनीं❀कहैं गोप मिलि ऐंसी बाँनीं।
अस उत्सव कीनौ ब्रजराज❀देख चकृत भये सुरनि समाज६३
यह लरिका कारज अस करै❀महा मुनिनु हूं जांनि न परै।
यौं बतरात लाग अनुरागी❀जिनकी सुमति कृष्ण रस पागी
बरस गांठि करि निकसे मोहनु❀ऐंडत चलत मरोरत भौंहन।
प्रथम हीं गोप सभा में गये❀तात गोद बैठारि जु लये॥६५
न्यौंछावरि जु रतन बहु कीये❀जे कुल जाँचक तिनकौं दीये।
रतन पैंच कीनौं बकसीश❀शिर कर बर धरि दई असीश६६
खेलन चलै जु आज्ञा लै कै❀सुबल सखा अंशनि भुज दैकै।
बिहरत पाँवन सर के तीर❀लीये संग सखनि की भीर॥६७
मित्र आज नहिं कानन गये❀रचते खेल जहाँ नित नये।
बरस गांठि सुख जात न कह्यौ❀ऐ पै मन जु खेल में रह्यौ॥६८
कहत[१] मनसुखा मौंगे रहौ❀क्यौं ऊपर कीं बातें कहौ।
तुम घर बरस्यौ आनन्द जेतौ❀लला हियें सचि राष्यौ तेतौ ६६

---

[१]—चुप रहो क्यों चापलूसी की बातें करते हो कि बरस गांठ का बडा सुख मिला ।

ता[1] आनन्द की छक अस भई❀मित्रनि की सुधि बिसरि जु गई।
तो[2] बातें ज्यों मेंडुक लात❀काके चोट लगै कहि गात ७०
माइ[3] हाथ के मीठे कौर❀खाइ बनावत बातें और।
लई हमारी ओट कराइ❀आछौ नीको आयो खाइ ॥७१
तब तौ तैं काहू न बुलायौ❀मतौ करन अब हम सौं आयौ।
खेलतु[4] खेल पेट में घनें❀हम को भोरेई तू गनें ॥७२॥
जननी जब शिंगार बनायौ❀तब तेरी कोऊ दृष्टि न आयौ।
चौकी बैठि बन्यौं शिरताज❀हमें ढिंग बोलत आइ लाज७३
अरे[5] मित्र जैं आये अबै❀तुम जो झूँठ बोलत हौ सबै।
बाबा[6] पौंन छतीस जिमाइ❀तिन में गनें जु हम कौ भाई७४
हम जु साथ के जेंवन हारे❀तिनहिं बिसरि गये नन्द दुलारे
बरस गांठि की तुहि छक आई❀हमें भूलि गयौ पाइ बडाई ७५
भैया[7] गोदी देहुँ भराई❀लेहु पेट भरि लाडू खाइ।
अब[8] सब रोष दूरि बगरावौ❀मन मिलाइ मोकौं जु खिलावौ॥
सुबल कहै मोहन रुख राखौ❀खाँन पाँन की बात न भाषौ।
तेरे[9] हिय की हम सब जाँनी❀स्यामहि मिल्यौ मीन ज्यौं पानी॥
अपनौ काज साधि तू लै है❀अरु काहू कौ मिलन न दैं है।
मन[10] भाई बदि लई अँकोर❀यातें करतु स्याम की ओर ॥७८
मिलि गई तुम दोऊँनि की गटी[11]❀तब यह बात करत अटपटी।

---

[1] मनसुखा ताना दे रहा है कि लाला तो अपने घर के आनन्द में निमग्न हम सब को भूल गये अर्थात कुछ खिलाया तक नहीं २—तेरी चिकनी बातें मैंडक की लात हैं, ३—यशोदा मैया के हाथ से स्वयं खा लिये हमें न बुलाया यह भाव है, ४—पेट में कपट रखता है ऊपर से मित्र बनता है, ५—श्याम कह रहे हैं अभी तो सब पंगत में खाकर आये हो चौपाई ५३ में वर्णन है, ६—सखा उत्तर दे रहा है नन्द बाबा ने नौकर अहलकारों के साथ खिलाया उनमें हम को गिनता है क्या यही सखा पन होता है, ७—श्याम सखा को प्रसन्न करते कह रहे हैं, ८—क्रोध छोड़कर अपने साथ खिलाने में शामिल करो सख्य रस में मधुरता भर रहे हैं, ९—मनसुखा सुबल को उत्तर दे रहा है, १०—तुझे मन चाही भेंट निर्मित मिल चुकी हैं, ११—रमज, अन्तरंग सम्मति।

मोंहन मित्र[1] कंध भुज धरैं❀ऐंसे हाँस परस्पर करैं ॥७६॥
वक्र वचन स्नेह सुख सनैं❀कहैं रचैं पुनि खेल जु घनैं।
अह बन जिनकें खेल अहार❀कौतिक रूप कृष्ण बिहार ॥८०
पावस रितु सुख लाहौ लयौ❀पुनि जु सरद रितु आगम भयौ।
बादर रूप जु बदले नये❀अन्न कछू कछु परपक[2] भये ८१
निर्मल[3] भयौ सरनि कौ हियौ❀जल ने पंक जु त्यागन कियौ।
गगन जु अतिसय निर्मल भयौ❀बदल्यौ रूप अवनि को नयौ८२
बारिज[4] बिकसे सरसिनु बीच❀जहँ तहँ सूखन लागी कीच।
उडुगन[5] व्योम महा जगमगें❀पंथी[6] पंथ आपनें लगें ॥८३॥
बरषा हूं अति मंदी परी❀ब्योपारीनु लाँबी[7] धप धरी।
रबि ने तेज प्रचण्ड दिखायौ❀ससि नें अवनि अमीं बरषायौ ॥
भैया मैं देखी सब ठौर❀काँनन छबि बदली कछु और।
सैंध[8] कचरियन छोडे नार❀महकति खेतनि के जु मझार ८५
फूले[9] पचुला तोरि जु लावौ❀तिनकी सुन्दर माल बनावौ।
चन्द चान्दिनी अति जगमगी❀सरद निसा[10] हरि प्यारी लगी८६
अह आवैं नित बन उठि जाइ❀मित्रनि संग चरावैं गाइ।
दसमी विजय क्वार[11] सुदी भई❀आसिष आइ गरग रिषि दई॥८७
पुर कुल कुशल मनावौ राज❀सुदिन दुशहरा पूजौ आज।
अस्व शिंगार धुरे निसांन❀किये बिछौंना तने बितांन[12] ८८
संपति राज सबै सचि धरी❀सभा अलंकृत गोपनि करी।

१—मनसुखा मित्र को प्रसन्न कर रहे हैं जो बिगड़ रहा है, २—परिपक्व हुए ३—तालाब के जल अब निर्मल हुए कीचड थम गई तह में जम गई, ४—कमल तालाबों में खिल उठे, ५—तारा समूह आकाश में चमक पड़े, ६—यात्री ७—लम्बा सफर शुरू किया, ८—पक्के सुगन्धि फलों विशेष या ककड़ी ने जल छोड़ दिया, (नार=जल) ९—वन का एक फूल, १०—शरद की रात रम्य होने से प्रिय लगी। ११—राम विजय दसमी असौज शुक्ल पक्ष की, १२—तम्बू।

सुबिधि दुसहरा पूजन कियौ❀रोरी अच्छित तिलक सु दियौ८९
विप्रनि जब मोहन सिर धरैं❀लाल महा आनन्द उर भरैं।
पूजे अस्व हथ्यार मँगाइ❀नारायन[1] वाहन शिर नाइ॥९०
सब कोऊ दैंन जुहारी आवैं❀भेंट लेंहिं सब कौ पहिरावैं।
द्विज दछिना लै देंहिं असीश❀जुग जुग जिवौ सुवन ब्रज ईश॥
गोपनि जस कहैं बन्दी भाट❀बांछित पाइ चले लगि बाट।
सुतकौं गोद लियें ब्रज राज❀तहाँ राजत जहाँ गोप समाज९२
स्याम अंग ऐसी छबि धरैं❀मदन गुमानी को मद हरैं।
पूजि दसहरा भरे हुलास❀बहुरि गये उठि जननी पास ९३
पाक अपूरब परसति मैया❀जेंवत राम कृष्ण दोऊ भैया।
ब्रजपति जेंवत स्यौं[2] परिवार❀आज दसहरा मंगल चार ९४
अति उत्साह गोप पति घरमें❀देत लेत बाँइनौ नगर में।
भोजनि करि पुनि अँचवन लीयौ❀पाँन डब्बा मोहन कर दीयौ९५
हौंसि[3] हौंसि हरि सब कौं देत❀तात हू मांगि लाल कर लेत।
लै लै जांहिं बहुरि त आवैं❀सखा स्याम के धूम मचावैं ९६
काहू देंहिं काहू डहकावैं❀काहू कौं दूसरे गहावैं।
सुत उदारता देखी घनीं❀हिय जिय हरषे गोकुल धनीं९७

दोहा—कुशल मनाई गोप कुल, पुनि पुर अपनें देश।
इहि विधि पूज्यौ दसहरा, लै सुत संग ब्रजेश॥९८॥
इहि मन्दिर इहि ग्राँम सब, सफल होत त्यौहार।
वृन्दाबन हित रूप निधि, जहाँ ब्रज राज कुँवार॥९९
सब रितु सब तिथि मास सब, सब त्यौहार जु वर्ष।
कृष्ण ललित लीला जु मिली, सब कौ बढ्यौ उत्कर्ष१००

१—गरुड़ जी, २—परिवार के साथ मिलकर, ३—चाह से।

कोऊ नन्द कोऊ भौंन घर, भये जु वर्द्धन प्रेम ।
गौर स्याम पारस परसि, दरसै चोखौ हेम ॥१०१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्रीकृष्ण बरस गांठि तथा दसहरा उत्साह बरनन बत्तीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवश श्रीराधे ॥

॥ अथ तेतीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—सब सौं कहत जु साँवरौ, उर अति भर्यौ हुलास ।
हीरो गावौ ग्वाल मिलि, आयौ कातिक मास ॥१॥
गाइ लडावन के जु दिन, सुनहु मित्र सब कोइ ।
इनि जसु गायें गोप कुल, कुसल सदांइ होइ ॥२॥
जहाँ गऊँनि खुर रज परैं, श्रवन सुनैं गौ नांद ।
सो पुर अवनि पवित्र अति, होहि गऊनि प्रशाद ॥३॥
बाबा मुख ते मैं सुनी, गऊ गोप कुल देव ।
इनकौ जस नित गाइये, कीजैं मन दै सेव ॥४॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु सखा सब सुवल जु आदि❀गऊ गोप कुल पूज्य अनादि ।
मैं यह सुनि गरग मुख कथा❀तुम कौं कहि समुझाई जथा५
सुनि मनसुखा भर्यौ आनन्द❀पंडित तू जो भयौ कुल नन्द ।
हम श्रोता तुहि वक्ता करैं❀कहै भेंट सो आगें धरैं ॥६॥
कोऊ गुनन वँचैगो लला❀सीखन लाग्यौ सब हीं कला ।
पलना में ऐसो जुस कीयौ❀बकी मारि हर्ष्यौ अति हीयौ ७
भैया अचरजु को यह गनैं❀तोतें कौतिक सब हीं बनैं ।
अरे मनसुखा धूत महाई❀चपर्यौ मोसौं लेत लराई ॥८॥
हँसतु हँसतु मधुमंगल आयौ❀लरत दुहुँनि कौ न्याव चुकायौ ।
बडो लरॉक मनसुखा दीष्यौ❀करवे बचन कहन तू सीष्यौ॥९॥

उलटी[1] बातैं कहन जु लग्यौ❀कहा गांठि कौ तेरौ ठग्यौ ।
मोहन बात भली ही कही❀मित्र परी नहिं तो पै सही।।१०
गाइ मल्हावन ग्वालनि धर्म❀बैस्य बंश यह मुख्य जु कर्म ।
और न काहू उत्तर दयौ❀तूँ जो स्याम कें सनमुख भयौ।।
उघटा[2] पुघटा अति ही करैं❀तू मन गरौ[3] न काहू डरैं ।
कूर[4] महूरत जनम जु तेरौ❀भावै तोहि अधिक उरझेरौ ।।१२
सुनि के बात न मोगौं रहै❀जो मुख आवै सोइ कहै ।
गोपी गोपनि के सब जाये❀गाइ चरावन बन में आये ।।१३
गाल[5] बजारयौ मोहन करै❀या की बात न मुहि सहि परै ।
अपु कौं यह मानत है बडौ❀मैया बाबा को अति लडौ १४
अपनी कांनि न जानैं राखि❀सबहिनु कौं जु दिषावैं आंखि।
मैया यह राखैं जु मरोर❀बक्ता बन्यौं छांछि कौ चोर १५
यह तौ नन्द महर कौ बेटा❀बन में बनि बैठ्यौ बह्मनेटा ।
सब कौं यह उपदेश जु करै❀याकी बात कौंन मन धरै ।।१६
जब तब मोहि दिखावै घुरकी❀हौं जांनतु हौं या कें उर की ।
टौंडिक[6] बनि कै चलै नगर में❀उझकतु डोलै बगर बगर में १७
याकी कोऊ परतीति न करैं❀देखि दूर हीं तें सब डरैं ।
आयौ यह लै भगा महर कौ❀चितवनि में टोंना जु जहर कौ।।
यह इनकी पुर मांहि बडाई❀घर घर में कीनीं भँड़ि[7] आई ।
घर में जाइ दृष्टि नहिं लावैं❀बन हीं में मित्रता जनावैं ।।१६
यह देष्यौ अतिहीं गौंगीर[8]❀पेट खुटाई स्यॉंम सरीर ।
तब हँसि कै बोले बलि बीर[9]❀तेरें बडी भूख की पीर ।।२०।।

---

[1]—मधुमंगल कह रहा है, २—नुकता चीनी या छान बीन व्यर्थ की, ३—मगरूर मन का, ४—क्रूर ग्रह के महूरत में, ५—मनसुखा उत्तर देने लगा है कि मोहन बहुत लबार है ६—वर्तमान में जैसे कहते हैं टूंडा लाट साहब यह भाव है, ७—भांड की तरह नाचना गाना, ८—गरज़ का पक्का, मतलबी ६—श्याम ने हँस कर उत्तर दिया कि भूख से गले पड़ रहा है ।

अब हीं छाक न घर तें आई❀आँखिनु माँहि धूँधरी छाई।
भूखौ मनुष्य पवँन सौं लरै❀ताकी बात कौन मन धरै ॥२१
गुन कौं तजि औगुन संग्रहैं❀मिथ्यावादी कहा न कहैं।
भूखे कौ मुख रूखौ दीसै❀कछु न बसाइ दांत तब पीसै २२
मैया दियौ न कलेऊ तोहि❀काहें दोष लगावै मोहि।
यह सुनि कैं सब हँसे जु ग्वार❀अधिक कुब्यौ मनसुखा लबार॥
गोझा में तें मेवा लई❀गोद मनसुखा की भरि दई।
याहि खाह करि मन संतोस❀तजि दें अब तूँ उर तें रोस २४
यौं कहि स्याम गह्यौ हँसि हाथ❀हीरौ गावत सब मिलि साथ।
बैठे छाँह कलप द्रुम तरैं❀हीरौ गाँन सषनि मिलि करैं २५
कोऊ महुवरि जु बिखाँन बजावैं❀ग्वाल साँवरे कौं जु रिझावैं।
हम गावैं तुम नाचौ मोहन❀भैया अधिक लगतु है सोहन॥
ग्वाल प्रबीन भये सब गाइन[1]❀नित्तर्त लाल दिखावत भाइन[2]।
भैया तुम सब जोरौ बाँह❀हौं[3] नाचौं रहि तुम्हरे माँह २७
ठाडे भये सबै कर गहि गहि❀नचत स्याम मुख थेई २ कहि कहि
मुरलीधर ऐसी गति लीनीं❀सखनि रीझि स्याबसि जु दीनीं
मोहन हम बूझत हैं एह❀या कौ समझि जु ऊत्तर देह।
बहु गुन आये तो उर माँहीं❀भैया पढ़न गयौ कहूं नाहीं २९
गुन औगुन सब हीं कौ धाँम❀पेट लिये औतरयौ जु स्याम।
मित्रनि तें जु रीझि यह पाई❀समुझि मुदित भये कुम्वर कन्हाई॥
सुनि भैया हाँसी जिनि जानौं❀मेरी बात सत्य ही मानौं।
अब आयौ त्यौहार दिवारी❀या उत्सव के हम अधिकारी[4] ३१
गाइ सिंगारन के सब साज❀कीजै कहत सुवन ब्रजराज।

१—गान विद्या, २—भाव भेद नाचने के। ३—यह सख्य रस की रास लीला भगवान रचा रहे है, ४—वैश्य वंश होने से कहा।

बूझौ आजु पढैलनि भैया❀भलें कहतु है कुँवर कन्हैया३२
सबहिं बिचार करौ मिलि मनमें❀मोर पच्छि खोजौ चलि बन में।
किलकैं ग्वाल चहूं दिश दौरे❀सब हीं भये प्रेम मनु बौरे ॥३३
मोरपिछ करि करि इक ठौरीं❀सब हीं लाये भरि भरि कौरीं।
पट्टी रचन कोऊ कर लगे❀और लैंन कौं कोऊ भगे ॥३४॥
झूमरि[1] गंडा सबहिं बनावैं❀खोजि खोजि गिरि धातु जु लावैं।
सन्ध्या समयें घर कौं गये❀घोस दिवारी बूझत भये ॥३५॥
लीपैं पोतैं चित्र बनावैं❀गोपनि भवँन महा छबि पावैं।
गरग दिवारी सोधि बताई❀मावस मिलि ससि[2] बार जु आई
ब्रजपति सदन भोर रहै महा❀अति उत्साह बरनिये कहा।
सोंनी[3] पटवा जड़िया घनें❀गाइनु कौं बहु गहनें बनें ॥३७॥
खरिक सँवारि जु उज्जल कीयें❀गोपनि के हरिषत भये हीये।
घर घर प्रति रचियतु पकवाँन❀घर घर रोपैं धुजा बितान ॥३८
चीतो[4] पौरि लाइ गिरि धात❀फिरत बिलोकत साँवल गात।
गली बुहारी मन कौं हरैं❀चौक चौतरा जगमग करैं ॥३९
सदन[5] बदन ऐसी बिधि चीतैं❀सुर पुर हूं की छबि कौं जीतैं।
गो गोबर सौं लीपैं अँगना❀सब कोऊ देषि देषि होंइ मगना॥
अति कोबिद सब इहिं पुर नारि❀चीतैं घर बाहिर जु सँवारि।
घँसि घँसि धातुनि भाजन भरैं❀गऊनि खरिक तहाँ सचि २ धरैं॥
लीयें संग मंडली ग्वार❀हीरो गावत नन्द कुँवार।
द्वार द्वार धमतूर मचावैं❀गोपी जन मिलि देखन आवैं॥
तिथि मावस पावन सर न्हाये❀सबहिनु माथें तिलक बनाये।
हरि न्हाये बाबा के संग❀गोता लेत कंपावत अंग ॥४२॥

१—सिर में पहनने का भूषण जिसमें मोर पंख लगा होता है, २—चन्द्रवार को सोमवती मावस, ३—सुनार पटोली जड़िया, ४-चित्रित करी, ५-घरों के मुख्य प्रवेश द्वार पौरी।

बाबा बसन बेगि पहिरावौ❀अपनौं थिरमा[1] मोहि उढावौ।
सुनि यह बचन नन्द अकुलाये❀अंग अंगोछि बसन पहिराये४४
ओढि पामरी सुखित जु भये❀हिय सौं तात लगाइ जु लये।
बिप्रनि दांन दियौ ब्रजराज❀सुत की कुशल मनावन काज४५
ग्वाल मंडली आये न्हाई❀मुरलीधर लिये संग बुलाई।
तन मन फूले मांनि दिवारी❀सरवर तीर भीर भई भारी ।।४६।।
मंगल गावैं जूथनि गोपी❀बड त्यौहार महा सुख ओपी।
सबहिं अलंकृत घर कौं आवैं❀नन्द सुवन कौं लखि सचु पावैं।।
रचि रचि पाक सुतेंवन करैं❀इष्ट आपनें आगे धरैं।
राम कृष्ण ब्रजपति घर आये❀ब्रज रांनी जेंवन जु बुलाये ।।४८
जेंवत नन्द सहित परिवार❀बलि मुरलीधर सोभित लार।
परसति महा भाग जग जो है[2]❀सम सरि उपमा त्रिभुवन को है।।
सुत की महिमा निगम न जांनैं❀विधना बपुरो कहा बखांनैं।
सो मैया कर मांगै कौर❀प्रभुता समझि होति मति बौर[3]
पहिलें मोहि जिमावौ आछें❀बाबा तुम मुख धरियौ पाछें।
मो मुख देहु यौं जु बलि कहैं❀स्याम मचलि के कर गहि रहैं।।
हँसि हँसि कैं ब्रजपति समझावैं❀त्यौं त्यौं दोऊ धूम मचावैं।
बेटा अरबी जिनि मन धरौ❀हरैं हरैं दोऊ भोजन करौ ।।५२
जब जब देंहि लाल मुख ग्रास❀तात हियें तब बढै हुलास।
पुनि पुनि नन्द बदन तन चहैं❀कबहूं चकित से ह्वै रहैं ।।५३।।
जो कछु रुचै सु मैया परसै❀बदन माधुरी नई नई दरसै।
मठा पान करि पूरन भये❀दोऊ भैयनि अचवनि लये ।।५४
कर पद धोइ जु बीरी लई❀नन्द सबनि कौं अज्ञा दई।

१—अत्यन्त कोमल ऊन का कम्बल, २—यसुमति जगत भर में सब से बड़भागिन हैं, ३—बांवरी।

भैया दीपक रचना करौ❀ऊँचे नीचे भवँननि धरौ ५५
ग्वाल अनंत संग करि लये❀गाइ शिंगारन मोहन गये।
घर घर गाइ शिंगारी बाछी❀मणिपट्टी झूमरि गर आछी ५६
नाना विधि के घोरे रंग❀चित्र विचित्र जु कीने अंग।
मणिनु पैंजनी सब कें पाइ❀सोंने राखैं सींग मढाइ ॥५७॥
सब कैं गर अतिशय राजनैं❀रतन जटित घंटा बाजनैं।
मोर पछि चन्द्रिका जु धरीं❀पीठि झूल सकलाती[1] परीं ॥५८
जैसौ खुलै जासु तन रंग❀तैसेंई माडैं सब कै रंग।
पहिचाँनौ न बाछरुनि[2] परैं❀खरिकनि में अति कौतिक करैं॥
छोटी बडी न चीतन बचीं❀पूछैं रंग मजीठ जु रचीं।
सब खरिकनि की करत सम्हार❀मोहन फिरत संग लियें ग्वार ६०
बाबा मोहि कही समुझाइ❀चीतैं बिनु न रहैं कोऊ गाइ।
गाँव गाँव छाईं बहु गाइ❀ऐसेंइ चीत्यौ तिनकौं जाइ ॥६१
घोष राइ घर गोधन जितनौं❀मोपै सम्भरि परत नहि तितनौं।
खरिक अनंत अनंत जु ग्वार❀भैया कहाँ लग करहुं सम्भार६२
इहि पुर गाइ शिगारी सबैं❀अरु गाँवँनि तुम जाहु जु अबैं।
गाइनि भूषण सकटनि भरौ❀बेगें जाहु बिलम्ब जिनि करौ॥
ग्वार बिदा भये करि परनाम❀लिखि दिये गाँव गाँव के नाम
खरिकनि जहाँ तहाँ दीपक दीजौ❀गाइ अलंकृत बहु बिधि कीजौ॥
जौ मन वांछित करि हौ काज❀तौ देइँ रीझि तुम्हें ब्रजराज।
अज्ञा मोहि दई ब्रज ईश❀मैं सादर धारी है सीश ॥६५॥
ग्वालनि कौं ऐसे समझाइ❀पुनि आये जहां गोकुल राइ।
बासर सेष जु पछिलौ रह्यौ❀नन्द सुवन तब ऐसे कह्यौ ६६

---

[1] —कीमख्वाब की सिलमे दार, [2] —गऊ के बछरा। उन्हें पहिचान नहीं पाते क्योंकि कई प्रकार आभूषण तथा रंग धातु से चित्रित हैं।

बैंनु बिखांन मित्र सब लावौ❀आजु सतखनें चढि जु बजावौ।
ऐसें कहत नन्द पै गये❀लटकि जुहारी देत जु भये ॥६७
तात तुम्हारी अज्ञा पाइ❀करी अलंकृत सब हीं गाइ।
आपु चलौ अब मन्दिर मांझ❀मंगल रूपी फूली साँझ ॥६८॥
फिरत टहल में दासी दास❀कीनी दीपक जोति प्रकास।
रीति अनेक जु पंकति धरी❀सातखननि[1] लगि रचना करी॥
चौक बजार गलीनु मझार❀जहाँ तहाँ दीपक बिस्तार।
गोपनि ग्रह दीपक जगमगे❀कौतिक हारिन के दृग ठगे ॥७०
बाग तडाग पौरि पुर जहाँ❀दीपक बरे समूहनि तहाँ।
देवनि ग्रह तहाँ दीपक जोति❀सुख सोभा की नहिं मित होति॥
मित्रनि सँग लै ऊँचे चढे❀मोहन मन आनन्द अति बढे।
पुर में घर घर दीपक लसैं❀मनहुँ सदन ये वदननि हँसैं ७२
गाँव गाँव दीपकनि समूह❀देखैं ग्वाल करैं कौतूह।
अँवनी भाग मनौं अनुकूल्यौ❀सोरन फूल आजु ब्रज फूल्यौ ७३
रजनी दरस्यौ मंगल भारी❀ब्रज खेलै जु सदेह दिवारी।
भैया मो मन ऐसें चहै❀अस त्यौहार सदा ब्रज रहै ७४
ऐसें कह्यौ नन्द के लाल❀सत्य सत्य बोले सब ग्वाल।
कहतु मनसुखा ऐसी भांति❀और दिखाऊँ दीपक पांति ७५
धवल महल वे दरशतु जहां❀भूप भयानें को है तहां।
श्री वृषभांन विदित यह नांम❀कीरति रांनी जिनके धाँम ॥७६
सुन्दर सुत श्री दाँम जु नाम❀पुर बरसानौं अति अभिराम।
महा रमा खेलति जु सदेह❀महा मोंहनी गोपनि ग्रेह ॥७७॥
दीपक जोति उहाँ जु सवाई❀बरनौं कहा भाँन प्रभुताई।

---

[1] —सात मंजिल तक दीपक की पंक्तियां दासी दास रख रहे हैं यह भाव है, [2] —मोहन सखाओं से ऊँचे शोभा देख कह रहे हैं।

सुनें मनसुखा के ये बचना❀ज्यौं की त्यौं बरनी जिन रचना॥
भैया कथा भली तैं कही❀श्रवन सुनी तैं कै दृग चही।
यौं उर बात फुरी यह मेरे❀बैठी कण्ठ सरस्वती तेरे ॥७६॥
दोहा—भैया उहि पुर की कथा, जौरु करौं विस्तार।
तौ नित लाग्यौ फिरैगो, नन्द सुवन मो लार ॥८०॥
वा पुर की सी सम्पदा, विधि हूं के घर नांहि।
दरसैं रस रूपी रतन, उहि छवि सागर मांहि ॥८१॥
कहाँ पढ्यो तू मनसुखा, बरनी कथा अनूप।
भैया लै चलि प्रात मुहि, देखौं वह पुर भूप ॥८२॥

॥ चौपाई ॥

मोहन तेरी परखी लाग❀उझलि पर्‌यौ हिय कौ अनुराग।
इहि पुर की सोभा नहिं सूझी❀मन दै बात जु उहि पुर बूझी॥
भोरो ह्वै यौं बूझन लगै❀ठग कौ भैया कहि को ठगै।
काल्हि बूझियो यह सन्देहु❀आजु दिवारी कौ सुख लेहु ८४
जब मधुमंगल ऐसे कह्यौ❀मोहन चितै बदन तन रह्यौ।
मोहि[1] मिलै सब मित्र हँसोरा❀खुरी[2] करैं ज्यौं कटूर घोरा ॥८५
बात न कोऊ बूझन देई❀गुन छाडैं औगुन गनि लेई।
चलौ लला ब्रजराज बुलायें❀गरग पुजावन हटरी आये ८६
रजनी आजु दैंन सुख उर की❀देखि लेहु सोभा सब पुर की।
ऐसें कहत चहत चहुँ ओरी❀पुर[3] ससि अँखियाँ भई चकोरी॥
हँसत हँसत ऊँचे तें उतरे❀मोहन संग सखा सब सुथरे।
बैठे जहाँ गोप नौ नन्द❀तहाँ बिहँसत आये नन्द नन्द॥

---

[1]—स्याम बोल, [2]—घोड़े के खुर के चिन्ह, अर्थात एक के बाद दूसरा सखा बोलकर मुझे खुर मे पीछे धकेल रहे हों, [3]—बरसाने की शोभा मानो चन्द्रमा स्याम की आंखे मानो चकोरी बन गई थीं।

हरि हलधर बैठारे गोद❀ब्रज पति भरे महा मन मोद ।
खील बतासेनु हटरी भरीं❀राँम स्याँम कें आगें धरीं ॥८९
मोहन कहै मोहि वह देहु❀मेरी हटरी दाऊ लेहु ।
हौं जु बडी हटरी लै लैहौं❀तब दाऊ कौं पूजन दैहौं ॥९०॥
सुनि कैं हँस्यौ घोष कौ रांनौं❀मुरलीधर तू अधिक सयानौं ।
परम साधु बेटा बलिराम❀तू अति हीं झगरारू स्याम ९१
मोहू ते रंचक नहिं डरै❀बडे बन्धु सौं झगरौ करै ।
हौं लाडिलौ तुम्हारौ जैसे❀दाऊ लाड करौ मुहि ऐसे ॥९२
जब यौं कही सुवँन ब्रजराज❀सुनि कैं रीझे गोप समाज ।
बलि की हटरी हरिहिं दिवाई❀फूलै मानौं नव निधि पाइ ॥९३
विधि सौं हटरी पूजन कीयौ❀नन्द दाँन बिप्रन कौं दीयौ ।
मिश्री कन्द खिलौना बनैं❀आंनि भवँन मधि राखैं घनैं॥९४
सिंघासन बैठ्यौ ब्रजरांनौं❀सुरपति कौं सिरमोर जु मानौं
दैन जुहार लोग सब आवैं❀नाना विधि की भेंटैं लावैं ॥९५
सब कौं देत पाँन पकवाँन❀बन्दी भाट करत जस गाँन ।
अतर फुलेल लपट पुर माहीं❀जाके सम सुर लोक जु नाहीं ९६
ग्वाल करत हैं होरी गाँन❀बाजैं मुरली बैंन बिखाँन ।
गोपी घर घर आवत ऐसें❀रीझैं दीप नालिका जैसें ॥९७॥
बाल विनोद कृष्ण के घनें❀जाहि प्राण ते प्यारौ गनैं ।
जूथनि मिलि जु राजघर आईं❀पकवाँननि सौं गोद भराई ॥९८
गहमह होति महरि कें अँगनां❀मांन पाइ सब हीं होंई मँगनां ।
देति असीश सबै ब्रजबाल❀जुग जुग जियौ सुवँन ब्रजपाल॥
हम कौं सुख दीयौ अब जैसें❀सदा दिवारी आवौ ऐसे ।
जननी जनक कृष्ण सुख देहु❀महरि असीश बहुरि सुनि लेहु ॥

होहु बेगि अब सुत कौ ब्याह❀यह सब ब्रज जन मन जु उमाह।
बन्धुनि जुत बैठे ब्रज धनी❀ग्वाल मंडली हरि संग बनी१०१
रैंनि दिवारी भोजन कियौ❀रसना स्वाद बहुत विधि लियौ।
नाना बिधि पकवाँन जु बनें❀रसना एक परत नहिं गनें १०२
इक[1] जैं जांहिं एक पुनि आवैं❀टेरि टेरि एकनि जु बुलावैं।
दासी दास जिमाये सबै❀सुचित्त भईं ब्रज रांनी तबै १०३
खोल बतासे बीरी देंहि❀झगरि झगरि सब ग्वाल जु लैंहि
भैया भरि दे गोदी आछें❀लै लै जांहि लगैं पुनि पाछें॥
मोहन झोरी भरि भरि लावैं❀वे सब गोंहन[2] लागे आवैं।
लपटि गये मोंहन अंग ऐसें❀उडुगन घेरें ससि कौं जैसें १०५
तब मधुमंगल टेरि बुलायौ❀हँसतु हँसतु सो नियरें आयौ।
ग्वाल ऊधमी माँनत नांहिं❀मोहि घेरि लियौ अपनें मांहिं॥
इनकौं करि इकरौठे[3] आइ❀भैया मो कौं लेह बचाइ।
मोहन[4] दे तू झोरी बगेरी❀ये न आइ हैं तो ढिग फेरि॥
समझि स्याम बगराइ झोर❀कोलाहल माच्यौ चहुँ ओर।
वे दुहुँ करनि समेटन लागे❀संग छाडि मुरलीधर भागे १०८
रंग महल में बैठे जाई❀सखा लिये सब संग लगाई।
राम स्याँम मिलि चौपरि खेलैं❀पौ बारह कहि पासे मेलैं १०९
सखा सम्भारत इत उत दाइ[5]❀मारत गोटनि जीत मनाइ।
कबहूं होइ जु बलि की जीत❀अति प्रसन्न होंई तिनके मीत॥
कबहूं दाव स्याम के परैं❀सुबल आदि कोलाहल करैं।
खेल मांहि अति सुख बढि पर्यौ❀रह्यौ रंग अस कौतिक कर्यौ॥

---

[1] —पंक्ति में खाकर जाते हैं, [2] —मोहन को घेर लेते हैं कि पहले हमारी गोद भर दे, [3] —इनको एक तरफ इकट्ठा कर कि मैं इन्हें बांट कर पकवान दूँ यह भाव है, [4] —मधुमंगल बोला झोली की वस्तु फैंक दे आप ही उधर लग जाएँगे, [5] —दाव।

रजनी भरि नर नारी जगें❀कृष्ण चरित सब हिय रस पगे।
संपति पूरित सब हीं धाम❀दीपक बडे जु चार्यौ जाम[१] ॥
सुख में राति न जानी जात❀सनय सनय ह्वै आयौ प्रात ।
पंछिनु कीयौ मंगल नाद❀सुनि सब उर बाढ्यौ अहिलाद॥
दोहा–दीपमालिका सफल भई, आइ नन्द कें ग्रेह ।
ब्रज निवास रजनी कियौ, भीजी परम सनेह ॥११४॥
नन्द सुवँन सुख दैन कौं, कीयौ विपुल प्रकास ।
कछुक चरित बरनन किये, हित वृन्दाबन दास ॥११५॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्रीकृष्ण दीपमालिका उत्सव बरनन तेतीसवीं लहरी की जै,जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ चौंतीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–गोप मुदित गोपी मुदित, मुदित गाइ पुनि ग्वार ।
कातिक सुदि परिवा महा, मंगल भयौ बिस्तार ॥१॥

॥ चौपाई ॥

परिवा प्रगटी बडे जु भोर❀सब उर आनन्द बढ्यौ न थोर।
चलि आवौ पावन सर न्हाइ❀मोहन बहुरि खिलावौ गाइ ॥२
छोटे बडेनु कियौ नित्त कृत्य❀गाइ दुहावन गये जु भृत्य ।
गऊनि लाड कौ यह दिन आयौ❀खरकान जाइ सिंगार बनायौ ॥
फाटिक खोलैं गायें कढीं❀चलीं रहावनि[२] कौं मन बढीं ।
आइ आइ तहाँ बैठे गोप❀गाँव गोंइरें बाढी ओप ॥४॥
तिनके मधि राजत ब्रजपाल❀गाँइनु खेल करावत ग्वाल ।
मोहन कढि आये तिहिं बार❀लीये संग ग्वार खिलवार ॥५॥

१—सारी रात दीपक जले, २—विश्राम का नियत स्थान ।

प्रथम छेंकि[1] काजरि खिलाई❀पूँछ उठाये हूंकति आई ।
बच्छा कौ सौ हेज जु करैं[2]❀मोर भांवरी[3] सी वह भरै ॥६॥
धौरी धूँमरि पुनि जु बुलाई❀भरति चौंकरी सनमुख धाई ।
खेलन लागीं अपने चाइ[4]❀बजती पैंजनि जिन कें पाइ ७
खैर रातुली नाम जु लियौ❀तिन आवत कछु बिलम्ब न कियौ
करहा की सी गति लै गई❀मोहन अँगनि चाटति भई ॥८॥
गंगा यमुना कहि कहि टेरीं❀श्रवन सुनत आईं जु दरेरी[5] ।
लेति सुलच्छन गति अति सोंहन❀लागी फिरति लाल के गोंहन ॥
लै पलास की सूखी डार❀बिभुकाई[6] गायें खिलवार ।
आहट सुनत सबै औदरीं[7]❀उछरन लगीं अधिक बल भरीं॥
एकनि की गहि लाये बाछी❀निर्त्तन लगीं ते जु गति आछी।
इक मुरली धुनि सुनि कै दौरी❀तिन पै ढँकि दई पीत पिछौरी॥
ऊँचे उछरति दमकती खुरी❀बहुत आइ संग तिन कें जुरी।
सुभगा और सोभनीं नाम❀ये जु बुलाई सुन्दर स्याम ॥१२
खेलन लगी गुनीलीं महा❀हरि सौं हित सो बरनौं कहा ।
भैंड[8] एंड़ सौं पैंड जु भरैं❀सीस डुलावैं निर्त्त जु करैं ॥१३
करती कैंचुली[9] नाना खेल❀जाकी ग्रींवा परी हमेल ।
तीतर बरनीं आई भगी❀गति जु बिलच्छन निर्त्तन लगी॥
हिरन सिंगारौ मुरि मुरि नची❀जा पै नाहि सुघरता बची ।
अम्बर बरनी करति कलोल❀ज्यौं ज्यौं ग्वाल बजावत ढोल ॥
लकुटनि[10] धरि कामरि जु फिराई❀दौरीं देखि गऊ भिलसाई[11] ।

१—शासन में रोक कर खेल दिखाये अन्य गौअन से पृथक कर बुलाया, २—श्याम से बछड़े की तरह भाव दिखा रही है, ३—मोर की तरह चक्कर काट रही है, ४—चाव उल्लास से, ५—रास्ता चीर कर आई, ६—चमकाई या डर पाई, ७—बे मर्याद कूदीं या घबराई सी, ८—नाज नखरे से पांव उठाती हैं प्यार को सूचित करती हैं, ९—गाय का नाम रंग अनुरूप १०—लाठी के सिरे पर कामरी उरझा का फिराई जैसे झंडी हों, ११—गाय की जाति ।

टोलनि टोलनि खेलति गाइ❀देखि देखि प्रमुदित ब्रजराइ १९
मोहन राखी भलीं सधाइ❀सब के गुन दीये दरसाइ।
कुल कौ कृत्य सीखि तैं लियौ❀मोहि प्रसन्न भली विधि कियौ ॥
हरि हलधर पहिराये दोऊ❀पुनि पहिरे जु ग्वार सब कोऊ।
गाइ खिलाईं सुत ब्रज ईश❀ग्वालनि मिली बहुत बकसीश ॥
पूजीं गाइ घोष कें राइ❀बिप्रनि दछिना दई बुलाइ।
गायें काँनन कौं बढि चलीं❀स्याम खिलाईं जे विधि भलीं ॥
ब्रज पति के मोहन अतिलडे❀देत असीश जु छोटे बडे।
आये उलटि भवँन बजराज❀मानी कुशल जु गोप समाज २०
पौरिनु घुरें गहकि नीसाँन❀बनिता करति जु मंगल गाँन।
महरि रोंहनी पौंरी आँइ❀बिप्र बधू सब देति बधाई ॥२१
अरघ बढाइ लाल घर लये❀प्रमुदित सबै नारि नर भये।
मोहन मांन तात तें पायौ❀आजु ग्वाल सिरमौर कहायौ ॥
मन मिलि सखा स्याम संग भये❀करि भोजन गाइनु पै गये।
गऊ अलंकृत काँनन करैं❀कृष्ण शिंगारी सब मन हरैं २३
पुनि गोपनि सुर पूजा करी❀सो न गुपालहिं समभी परी।
बिप्र बुलाइ रची विधि भली❀कुल कृति जैंसें आई चली ॥२४
बालक जानि न काहू कही❀ऐसें बात अगोचर रही।
गाइ चरावत हरि बन डोलैं❀धौरी धूँमरि कहि कहि बोलैं ॥
तिनहि देखि मन हरषित महा❀गोधन त अधिकौ धन कहा।
सुन्दर यह कालिन्दी तटा[१]❀गोधन राजतु मनु छबि घटा ॥
मणिभूषन दांमिनि दुति जांनौं❀सांड डहरात गरजांन मानौं।
नित नित अति आनन्द जु वरषैं❀दृग शीतल होंइँहियजिय हरषैं॥
ऐसें कहत कमल दल नैंन❀सुख पूरत मित्रान सौं बैंन।

---

[१] —गोधन को बादल घटा से उपमा दे रहे हैं।

गायें चरि बगदीं सब घर कौं❀हरैं हरैं गवनति नन्द नगर कौं॥
ऐंननि[1] कैं भारनि सौं भारी❀दिव्य बिधाता तन जु सँवारी।
भुव तल पर जु परम अभिराँम❀मान सरोवर मनु नन्द ग्राँम॥२९
गाइ आगमन करौ प्रसंश❀आवत मनौं बसेरैं हंश।
अस गांइनु के पाछें पाछें❀नटवर बपु बनि आवत आछें॥
ग्रीवा ललित पीट पट कांधें❀अति प्रिय मुरली करवर सांधें।
गाँव[2] निकट हरि कुनित जु करी❀ताकी धुनि सब श्रवननि परी॥
अद्भुत छबि अंग अंगनि धरैं❀सब के चित आकर्षन करैं।
आये खरिक गाइ पहुँचाइ❀करि आरतौ लियौ घर माइ ३२
कर पद वदन प्रछाल्यौ नीर❀साँझ समैं जेवत दोऊ बीर।
सखनि सहित रुचि भोजन कियौ❀शीतल नीर धापि कैं पियौ॥
जननी के उर आनन्द दै कैं❀खेलन चले मित्र संग लै कैं।
अति सोभित ग्रह अँगना सबकें❀देखन जात लाल तहाँ रवकें[3]॥
भैया ये गोपिन के ग्रेह❀मो मन देखन अधिक सनेह।
इहि पुर चतुर गोपिका भारी❀राखीं चीति किवारी जारी[4] ३५
तिनमें दीप चौमुखे बरैं❀जहाँ तिय नवला गांन जु करैं।
कोमल कंठ अलापति राग❀सुनि बाढै उर अति अनुराग ३६
बगर बगर सबकें ह्वै आवौ❀दृगनि[5] धापि कौतिक जु दिखावौ
विरमैं जहाँ रूप ह्वै अगरौ❀आये देखि नगर यौं सगरौ ३७
ब्यारू करन घोषपति आये❀राम कृष्ण दोऊ टेरि बुलाये।
बैठे लै जु साथ ब्रज नाथ❀यसुमति परसति अपनें हाथ ३८
जेंवत दोऊ भैया सचुपाइ❀जो मांगें सो लाइ देइ माइ।

१—दूध के बोझ वाले स्तन, २—गांव के पास आकर बजाई, ३—कूदते उल्लास से दौड़ कर, ४—जाली, ५—नैनों को तृप्त कर तमाशा दिखा लो।

तात देत मुख छोटे कौर❀एक[1] संग कहैं देहु जु और ३९
बेटा जेंवौ धीरज धरि कैं❀भले न लागतु कहतु झगरि कैं
सुतनि जिमावत जेंवत नन्द❀रस बतियनि वरषत आनन्द ॥
इक कहैं बात ग्रास इक लेंहिं❀जननी जनक हिये सुख देंहिं ।
दूध सिरायौ[2] सिता मिलाइ❀पीवत दोऊ बीर सुख पाइ ॥४१
अचवन लियौ घोष के राइ❀राम कृष्ण के हाथ धुवाइ ।
आसन बैठि जु बीरी लई❀लाड सहित सुत कें मुख दई४२
पुनि लीये गोदी बैठारी❀बूझन लगे तात पुचकारी ।
कहि मुरलीधर मन की बात❀किहिं पुर तेरी चलै बरात॥४३॥
कौंन कौंन कौ संग जु लै हौ❀कैसें बसन आभरन दै हौ ।
तन सकुचत मन अधिक सिहात❀कहि न सकत बाबा सौं बात॥
गरुवे लाड मांहिं छकि गये❀इत उत ग्रीवा मोरत भये ।
देतु न उत्तर गहि रह्यौ मौंन❀तो[3] कौं ब्याहन जैहैं कौंन ४५
कैसी सुन्दर घोरी लै हौ❀पुर बिनाइकी[4] जिहि चढ़ि जैहौं
बैठे गोपराज की गोद❀चितवत हैं भैया की कोद ॥४६
तब बलिदाऊ ऐसें कह्यौ❀अब क्यौं मोहन चुप ह्वै रह्यौ ।
देखै नित टीके की बाट❀बूझत भयौ अँजान निराट ४७
दाऊ मोहि चिरावत रहैं❀रूखे बचन बदन तें कहैं ।
बड़ौ जांनि हौं कांनि जु राखौं❀सनमुख कबहूं बचन न भाखौं४८
बाबा तुम समझाइ जु देहु❀बूझौ बोलि[5] सुबल कौं लेहु ।
बाबा कहत सुनैं किनि स्याम❀तू लराक सूधौ बलिराम ॥४९॥
यह सुनि कें भीतर कौं भगे❀जाइ अंक जननी के लगे ।

१—दोनों भैया एक साथ और ग्रास मांग रहे हैं, २—ठंडा किया हुआ मीठा मिला दूध, ३—नन्द जो कह रहे हैं, ४—पुर के राज कुँवर की तरह, ५—सुबल की गवाही बुलावा कर ले लो ।

बाबा बलि की पच्छि जु करी❀मेरी बात सु झूँठी परी ॥५०॥
बरजि देउँ अब हौं बलिराम❀राजा बेटा मेरौ स्याम।
बाबा दुहुँनि मिलाइ जु दियौ❀यौं मनाइ मोहन कौं लियौ॥५१
पुनि पौंढे सज्या पै जाइ❀निद्रा गई दृगनि में आइ।
चौकी पर बैठे ब्रजराइ❀यसुमति दीनी बात चलाइ ॥५२
सजन हियै कौ भेद जु लेहु❀स्याँनौ मनिष पठैं ह्वाँ देहु।
मैं यह बात सुनी है काँन❀साँमा बहुत सजी वृषभाँन ॥५३
मोहन भयौ ब्याहिबे जोग❀ऐसें सहत सयांने लोग।
सकल घोष के तुम सिरताज❀चाहत करन बडे घर काज ॥५४
ताकी कबहूं न बात चलावौ❀तुम दूलह के तात कहावौ।
राँनी तुम उनि मन की लेहु❀अपनी ढाढिनि पठैं जु देहु ॥५५
पलनाँ मांहि सगाई भई❀तब तें तुम हूँ खबरि न लई।
मेरौ उनिकौ मन मिलि रह्यौ❀कबहूं न ब्याह सन्देसौ कह्यौ ५६
अति सज्जन है रावलि राइ❀कहा कहौं तिन कें गुन गाइ।
उनि कौ कियौ काज यह होहि❀कहा सन्देसौ बूझति मोहि ॥५७
काल्हि जाइ ढाढिन ह्वै आवै❀समाचार सब उनके लावै।
यौं कहि ब्रजपति कीनी सैंन❀रांनी सुनि पायौ चित चैंन ॥५८
सोवत में मोहन बरनानें❀भैया[1] ब्याह करौं बरसानैं।
मैं देखी दुलहिनि संकेत❀मेरे हिय कौ तहाँ अति हेत ॥
सुनि ब्रजरांनी जाइ जगायौ❀बेटा तू कैसें बररायौ।
मैया मैं इक सुन्दरि देखी❀ऐसी कहूं न चित्र हूं लेखी ॥६०
गिरि तरहटीं नगर इक बसै❀ताके मध्य भवँन इक लसै।
तहाँ खेलति इक राजदुलारी❀मनु सोभा के सांचे ढारी ॥६१॥
अगनित गोप सुता जिहि लार❀मैं देखी मो याही बार।

---

[1] —निद्रा में श्याम बोल रहे हैं मानो किसी सखा स वार्तालाप स्वप्न में हो रहा है।

इक अवधूत मिल्यौ तिहि पौंरि❀मेरी भुजा गही उहिं दौरि ॥६२
तिन जु कह्यौ यह पुर बरसानौं❀सोभा संपति सौं सरसानौं।
तेरौ ब्याह होहि इहि ग्राँम❀यह वृषभाँन नृपति कौ धाम॥६३
हौं वरराइ परयौ इहि घरी❀कहा कह्यौ सो खबरि न परी।
तैंने आइ जगायौ मो कौं❀मैं यह बात कही अब तो कौं॥
जननी सुन्यौ लाल कौ सपनौं❀महा भाग्य फल मान्यौं अपनौं
सुत कौ कह्यौ सत्य सब मान्यौ❀दइ रचित यह कौतिक जान्यौ॥
कहत ही कहत सोइ गये पुनिकै❀रानी सुखित भई यह सुनि कै।
नारायन की कृपा मनाई❀बहुरि रोहिनीं पास जु आई॥
अहो बड़ी कहा तुम सौं कहौं❀हौं सुनि बात अचम्भे रहौं।
छोटौ सो यह साँवल गात❀कवहूं कहैं बड़ी सी बात ॥६७॥
सुपनौ देख्यौ इनि इक अबै❀भोर कहौंगी तुम सौं सबै।
ब्रजपति जब मंदिर में आये❀भाँति भाँति तब मैं समुझाये ॥६८
सुत ब्याहन जु भूप घर चहौ❀ताकौ ब्यौरो कब हूं न कहौ।
सनत रोंहिनीं मन जु बिचारी❀महरि बात हाँसी में टारी ॥६९॥
कोऊ संदेसौ जाइ न लावै❀घर हीं वैठी मंगल गावै।
भाँति भाँति सजननि मन लीजै❀तब सनबंध राज घर कीजै॥
पलना समय बचन द्वै कहे❀ता पाछैं मौंगैं ह्वै रहे।
बात न बदली कबहूं पुनि कै❀काँन खोलि रांनी लिहु सुनिकै॥
मुख करि लाडू जो नहिं खाइ❀मन करि खाये भूख न जाई।
घर बैठी समधिनि जु सिहांति❀करी सगाई रीति[१] न भांति ७२
नेगी जबहिं सगाई लावैं❀तब सब कोऊ मंगल गावैं।
स्याँनौं मनिष पठावौ प्रात❀लै आवैं सब हाँ की बात ॥७३

१—सगाई का काई लेन देन हुआ नहीं फिर अपने मन में तू कैसा वन से सम्बन्ध माने बैठा है भोली है।

रौजा के घर कन्या क्वांरी ❀ तिन मन चिन्ता होइगी भारी ।
सजियति होइगी सामौं जहां ❀ छानी बात रहैगी कहां ७४
यह तुम खबरि बेगि दै लेहु ❀ तब जै है मन कौं सन्देहु ।
सज्या पौंढीं यौं बतराइ ❀ सुख में रजनी गई बिहाइ ॥७५

दोहा—गाइ खिलाई पूजि पुनि, गोपनि मिलि ब्रजनाथ ।
ग्रह बन सुख बिलसैं घनें, हरि ग्वालनि के साथ ॥७६॥
सुत बिबाह अभिलाष उर, गहकि बढी इक संग ।
तासौं फल अब लागि हैं, महा मधुर नव रंग ॥७७॥
दरसि होहिंगे सुखित सब, करैं मुनि देव प्रसंश ।
वृन्दाबन हित रूप जस, गाइक श्री हरिवंश ॥७८॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्रीकृष्ण गऊ पूजन तथा गऊ खिलावन बरनन चौंतीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ पैंतीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—श्री हरिवंश प्रनम्य पद, बरनौं मंगल ब्याह ।
सब बिधि पूरन होइगी, घोष जननि मन चाह ॥१॥
कृष्ण तिलक अब आइ है, बढि है इत उत लाग ।
दिन दूलह मुरली धरन, फूलैगो छबि बाग ॥२॥
ढाढिनि दीनी आसिका, निपट भुरहरें आइ ।
हरि जननी निद्रा जु बस, तिनकौं लियौ जगाइ ॥३॥
बडे प्रात इक भांमिनी, ऐसें कहि गइ मोहि ।
बेगि जाह ब्रजपति भवँन, महरि बुलाई तोहि ॥४॥
अहो रोंहनी सुन हु किनि, कारज सिद्धि जु होंन ।
हम तुम कही जु श्रवन लगि, यासौं कहि गई कोंन ॥५
ढाढिनि तू जा भांन घर, अज्ञा मेरी पाइ ।

श्री राधा के व्याह की, दीजै बात चलाइ ॥६॥
कीरति बचन जिते कहैं, तू धरि लीजौ ह्येय ।
लागति परम प्रवीन मुहि, बचन भाषियौ प्रीय ॥७॥
प्रथम बूझियौ नगर में, समाचार घर राज ।
पुनि जैयौ रनिवास नृप, भेद सगाई काज ॥८॥
ढाढिनि कहति महरि सुनौ, सगुन परीछा मो जु ।
लाल तिलक होइँ बेगि दै कहै देति हौं सो जु ॥९॥
अज्ञा लै ढांढिन चली, नख सिख अंग शिंगारि ।
मुख सोभा ऐसी बढी, मनौं मैंन[1] की नारि ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

मन उत्साह जु अस बढि गयौ❁जानौं सिद्धि काज सब भयौ ।
मंगल सगुन दाहिनें आये❁असुभ[2] जु बांईं ओर पलाये ११
पग पग धरतें सगुन मनावैं❁रहँसी फूली ढाढिनि आवैं ।
ढाढिनि मिली जु भान भवँन❁बूझी ताहि बात सब मन की ॥
पुनि गवँनी वृषभान सुग्रेह❁कीरति कीनौं परम सनेह ।
प्रथम लगी रांनी कें पाइ❁और बात पुनि दई चलाइ १३
गहमह ह्वै रही सब पुर महा❁हौं बूझति यह उत्सव कहा ।
बडे बडे ब्यौपारी आये❁बस्तु अपूरब सब हीं लाये ॥१४
करहा[3] बाजी बहुत शिंगारे❁साज सुनहरी सब पैं भारे ।
और गोपिका यौं हँसि बोली❁ढाढिन समझि कोथरी खोली ॥
बहुत करति बातनि के चटके❁बीच बीच नैंननि के मटके ।
यसुमति उर अभिलाष घनेरी❁तू आई है उनि की प्रेरी ॥१६॥

१—कामदेव की पत्नि रति हो, २—अशुभ सगुन बांई तरफ हीं रहे, ३—ऊँट घोड़े,
४—अपने मन की बात खोल इधर उधर की बातें क्या चला रही है।

बात परी लखी सब तो उरकी❀है लंगरि[1] उहि लंगर पुर की।
तू ब्रजपति[2] कें उर ढ़ोलना❀तोहि सिखायौ मिठ बोलना १७
मनहुँ स्याँम की दूजी मैया❀पुर बासी सब लेत बलैया।
काहि रिझावन कौं तू आई❀अपनें[3] पलटे महरि पठाई ॥१८
बरसांने कौ ढ़ाढी रूरौ[4]❀तेरौ करै मनोरथ पूरौ।
नख सिख अति हीं बनी जु सुथरी❀मानौ अमर नगर तें उतरी ॥
ऐसें गोपिनु हांसी करी❀ढाढिन उर आनन्द अति भरी।
तुम जु कही सु धन्य मैं मानीं❀अब सुनि लीजँ मेरी बांनी २०
तुम्हरी ढ़ाढ़िन अति छबि आगरि❀मोह ते जु सतगुनी नागरि।
हौं आई कछु अपनें कॉंम❀रांनी पाइ लगन तुम धाँम २१
सुनि ये बात गह्यौं मुख मौंना❀तदिप कियौ तुम मोहि खिलौंना
हौं बूझति कीरति महा रांनी❀कहिये कछु आपु मुख बांनी ॥
राधा[5] जननी मो दिशि चहौ❀समाचार यसुमति कौ कहौ।
मेरौ पालगन पुनि लीजै❀भाग बली मुहि विदा जु कीजै॥
असन कराइ बसन पहिराये❀समाचार सब कहि समझाये।
कहा भेद तू बूझन आई❀दै जजमानहिं जाइ बधाई २४
लै जा संग ढ़ाढ़िनि मेरी❀देहु महरि कौं खबारि सबेरी।
पुनि कहियो पालागनि मेरौ❀टीकौ पठऊँ काल्हि सबेरौ २५
दोऊ ढ़ाढ़िन संग जु भई❀अति मन मुदित नन्दपुर गई।
जाइ चरन यसुमति के गहे❀मंगल समाचार सब कहै ॥२६॥

---

[1]—निस्सक या ढीठ नगर की, [2]—नन्द जी के गले का ढोलना है यह गारी दे दी है, [3]—यह भी गारी विनोद में कही, [4]—सुन्दर चतुर, इन गालियों से स्वभाव की परीक्षा हो रही है कि नन्द पुर के लोग धीर हैं कि नहीं तथा सगाई का नाता करने की सूचना है, [5]—ढाढिनि राधा की माता से बोली अच्छा मेरे पर कृपा दृष्टि रखो कोई सन्देशा अपनी सखी यशोदा को भेजना हो तो कहो मैं पहुँचा दूँगी इसलिये आपके घर चली आई हूँ।

यसुमति मान्यौ अति मन मोद❀भरी दर्ब[1] सौं ढ़ाढ़िनि गोद ।
ब्रजपति सुत खेलत हे पौरि❀बात सुनत ही आये दौरि ॥२७
माइ गोद में बैठे आइ❀यसुमति लई कर चटकि बलाइ
मैया एक बात सुनि मेरी❀कहाँ गई ही ढ़ाढ़िनि तेरी ॥२८
कहा सन्देसौ वह कहि गई❀तूँ सुनि कैं प्रसन्न अति भई ।
मोसौं कही जु भली मेरी माई❀बाबा कौं आऊँ जु सुनाई २९
महरि कहति तू चपल कन्हाई❀सब हीं बात खेल करि पाई ।
तेरें पेट बात नहिं जिरि है[2]❀सबहिंनु सौं जु कहतु तू फिरि है॥
तू नहिं बोझ बात कौ राखै❀बालक बुद्धि जहाँ तहाँ भाषै ।
लैं[3] हौं बूझि बडी हौं मैयै❀पुनि अपनें बलिदाऊ भैये ॥३१
मोसौं बात जु राखत छांनीं❀हौं रूठ्यौ अब सौं रांनी ।
बेटा ऊधम अधिक न दीजै❀तात मात की सिच्छा लीजै ॥३२
आजु[4] रहन दै छाँनी बात❀हौं तोसौं कहि दै हौं प्रात ।
यह सुनि कै प्रसन्न अति भये❀दौरि सखनि में खेलन गये ३३
कृष्ण तात जब मन्दिर आये❀समाचार कहि महरि सुनाये ।
तिलक भेजि हैं रावलि रांनौं❀काल्हि भवँन आयौई जानौं ॥३४
उचित रुचित सो सामा करौ❀अब मन तो चिन्ता परिहरौ ।
राम कृष्ण लै बैठे पास❀भोजन करैं हिय भरे हुलास ३५
आपु जेवैं अरु सुतनि जिमावैं❀मिश्री मिश्रित दूध पिवावैं ।
चट चट बचन स्याम घन कहैं❀बाबा देखि बदन तन रहैं ॥३६
नई बात कोऊ कहि सोहनाँ❀सुनी होहि जो तैं मोहनाँ ।
बाबा नई बात इक आई❀मैया नें मो तैं जु दुराइ ॥३७॥

१—द्रव्य धन. २—हजम नहीं होती या टिकती नहीं पचा नहीं सकता उगल देता है, ३—लाल जी कह रहे हैं अच्छा तू न बता मैं बड़ी मैया रोहिंनी से पता लगा लूंगा, या बलदाऊ से, ४—मैया न कहा आज हठ न कर कल कहूँगी तो मान गये ।

हौं खेलन गयौं ढाढिनि द्वार❀वह बैठी ही अजिर मझार ।
पारोसिनि तासौं बतराई❀वाकौ बात जु मैं सुनि पाई ३८
दोऊनि कह्यौ बाँन बन्यौं नीकौ❀कालिह स्याम कौ आवैं टीकौ ।
बरसांने ह्वै आई आज❀यौं उनि कही सुनौं ब्रजराज ३९
यसुमति हँसी हँसे पुनि नन्द❀बरषि पर्यौ अतुलित आनन्द ।
तुष्टि पुष्टि ह्वै अचवँन लियौ❀आई नींद सैंन पुनि कियौ ॥४०
भयौ प्रात हरषे नर नारि❀राज भवन मंगल जु बिचारि ।
लाल गाइ लै गये जु बन कौं❀मोद देत ग्वालनि के मन कौं ॥
करहिं काम सब घर के भांम❀सुधि[1] लैं जांहिं नन्द के धाँम ।
भट्ट न अब लग नेगी आये❀मोहन कौ टीकौ नहिं लाये ४२
सब दृग चहत भानपुर ओर❀ज्यौं ससि देषन मुदित चकोर ।
मोहन तिलक जु आवन हार❀नगर ओर ताकत सब ग्वार ४३
मित्र चढौ तरवर पर कोई❀नीकें तकौ नगर दिश सोई ।
मारग में जो देखौ जात❀मोसौं कहियौ ताकी बात ॥४४
जिनके[2] हय गो करहा लार❀ते जानो मेरे टिकहार[3] ।
मोहन यों जु मनोरथ करै❀बैठ्यौ ग्वारनि में अरबरै[4] ॥४५॥
अब बरनौं यसुमति अभिलाषा❀रोम रौम उलही सुख साषा ।
प्रात मनाये सब कुल देवा❀मन दै करी रमा पति सेवा ॥४६
मो बांछित सब कीनौं दई❀यौं कही चरन इष्ट के नई ।
पुनि हेरति टीके की बाट❀कब खुलि है मो सुकृत कपाट४७
बाढी उर चटपटी अपार❀चढैं सतखनें बारम्बार ।
हौं जु गनौंगी सो छिन नीकौ❀जब दृग देखौं आवत टीकौ ४८
करि सुदृष्टि बासिनि[5] संकेत❀हौं तुहि पूजौंगी हिय हेत ।

---

[1]—सब गोपी क्षण क्षण में पता लेती हैं कि टीका कब आता है, [2]—जिनके साथ घोड़े गौ ऊँट आदि हों [3]—टीके वाले, [4]—छटपटा रहा, उत्कण्ठित है, [5]—संकेत बट की देवी को मना रह हैं।

दरसावौ टीके कौ साजु❀हौं मानौं धनि बासर आजु ४९
यसुमति मन गति ऐसी भई❀सागर प्रेम मगन ह्वै गई।
दासी दास उमाहैं भरे❀सबहिंनु रचि सिंगार जु करे ५०

दोहा—आजु तिलक घर आई हैं, कहि गई कोऊ नारि[1]।
हौं जु भान पुर तें चली, आई नैंन निहारि ॥५१॥
मदलरा इहिं घर बाजि है, ह्वै हैं मंगल गान।
तिलक आजु हीं होहिगौ, हौं सुनि आई कॉन ॥५२॥
सब के हिय शीतल भये, सुनि यह बचन अनूप।
उतकंठा बाढी अधिक, वृन्दावन हित रूप ॥५३॥
चौंकि चौंकि ब्रजपति परत, बैठे गोप समाज।
प्रेम सदेह जु खेलहि सब, उर इहिं पुर आज ॥५४॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण तिलक उत्कण्ठा वरनन लीला पैंतीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ छत्तीसवी लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—अब बरनौं वृषभाँन कें, मन्दिर अति कौतूह।
जात नन्द घर रोंपना[2], सिमिटे गोप समूह ॥१॥
भाट सजे बन्दी सजे, सजे परोहित राज।
नापित[3] पुनि ढाढ़ी सजे, मनु सुर राज समाज ॥२॥

॥ चौपाई ॥

भाग बली यह राधा लली❀निधि सिद्धि सेवति जिहि पदतली
तिलक सँजोयौ श्री वृषभाँन❀संपति कहाँ लग करहुँ बखाँन ३

---

[1]—ग्रन्थ कर्ता स्वयं मानौ सखी भाव का अपना परिचय लीला में दे रहे हैं, [2]—मोहित करने वाली टीके की वस्तुएँ, [3]—नाई आदि भी मानो इन्द्र हैं भगवान की सगाई का ऐश्वर्य कह रहे हैं।

करहा सजे सजे गज बाज❁रतननि जटित सुनहरी साज ।
रजित[1] रुकम अम्बर बहु भार❁गऊ शिंगारि दई तिन लार ॥४॥
नौ हू भान जु बैठे जहाँ❁पुर जन गुर जन सब हीं तहाँ।
जुरे जौतिसी बिप्र समाज❁सुघरी सोधि धरे सब साज ॥५॥
श्री वृषभान जु अज्ञा दई❁पुनि सब बूझि मुनीशनि लई ।
चले बिप्र अरु नाई भाट❁नन्द गाँव की गहि कै बाट ॥६
पुर तें निकसे जाही बार❁कहा कहौं सोभा बिस्तार।
मंगल सगुन बहुत विधि भये❁नन्द पौंरि जिहिं छिन ये गये॥७
बिप्रनि दई आसिका जाइ❁चरननि नयौ घोष कौ राइ ।
सब नेगीनु जुहारी दई❁खबरि महरि के मन्दिर भई॥८॥
महाराज यह सुदिन जु नीकौ❁याही बार लीजिये टीकौ ।
सब तुर दौरि बुलौवा गये❁गोपी गोप जु एकत भये ॥९॥

दोहा—नेगी बैठारे सबै, सुन्दर न्यारे ग्रेह ।
सरबत कलश पठाइ कैं, कीनौं परम सनेह ॥१०॥
करहा गोधन अश्व गज, लसत सुनहरी साजु ।
चहौं ओर पुर कें छये, कहा छबि बरनौं आजु ॥११॥
को उपमा जो दीजियें, अस बांनिक इहि काल ।
नन्द ग्रांम पहिरी जु यह, मनु सोभा की माल ॥१२॥
घोरी गावति आवहीं, गाँव गाँव ते भांम ।
छबि मलिता मानौ मिली, सागर ब्रजपति धाँम ॥१३॥
पुर रचना हाटक पटनि, छये जु हाट बजार ।
नन्द भवन सोभा जु अस, सुर भये कौतिक हार ॥१४॥
पुर पौंरिनु पौंरिनु घुरैं, मंगल विधि नीसाँन ।

---

[1] १—चान्दी सोना तथा वस्त्रों के भार हाथी ऊँट घोड़ों पर लदे हैं,

रावर बाजैं ढोल बहु, करैं ढाढिनीं गाँन ॥१५॥

॥ चौपाई ॥

एक ग्वार घर रह्यौ जु ता दिन❀आयौ सुन्यौ तिलक तिहिं छिन
बरहे[1] दौरि स्याम पै गयौ❀टीकौ आयौ कहत जु भयौ १६
सुनि कै नाचन लागे ग्वार❀भाग बली अति नन्द कुँवार।
कोउ कहै भैया लेउँ दुशाला❀कोउ कहैं लेउँगो मोतिनु माला
कोउ कहैं लेउँ जरी कौ झगा❀कोउ कहैं लेउँ पाट कौ पगा।
कोउ कहैं जरी पिछौरी लैहौं❀तब बरात हौं तेरी जैहौं ॥१८
कोऊ कहैं लेउँ चढ़न कौं घोरी❀कोउ कहै लेउँ बनाती जोरी[2]।
कोउ कहैं दै गढवाइ जु टोडर❀हाथ[3] मारि तब चलन देउँ घर॥
जो[4] मांगो सो सब कौं दैहौं❀मोरु बांधि जब ब्याहन जैहौं।
फूले स्याम समात न मन में❀माचि रह्यौ कोलाहल बन में २०
गायें अब जु गाँव दिशि फेरौ❀मोहन फल्यौ मनोरथ तेरौ।
लै लै नाम गाइ लई टेरि❀सनमुख करीं गाँव दिशि फेरि॥
नन्द लैन जन बहुत पठाये❀मोहन कौं ताही छिन लाये।
सुविधि अंग उबटन करवायौ❀जसुमति अपनें हाथ न्हवायौ॥
भूषन बसन शिंगारे अंग❀इहिं छवि वारौं निकर अनंग।
बोलि सुहागिनि अजिर लिपायौ❀मंगल विधि सौं चौक पुरायौ॥
तापै सुन्दर पटा धरायौ❀तहँ मुरलीधर कौं बैठायौ।
घोरी गावति सुन्दरि आवैं❀महरि मान दै कै बैठावैं ॥२४
दै आदर उपनन्द बुलाये❀धरा नन्द ध्रुवनन्द जु आये।
पुनि अभिनन्द और सुठिनन्द❀निर्मल नन्द भरे आनन्द ॥२५॥
करमा धरमा नन्द सु नागर❀कृष्ण जनक पुनि नन्द उजागर

---

[1] —पगडंडी के छोटे रास्ते से श्याम के पीछे जहां गौ चरा रहे थे गया, [2] —जूता, [3] —अर्थात प्रण कर हाथ से हाथ मिला कर, [4] —श्याम उत्तर दे रहे हैं।

चित्र विचित्र बिछौना जहाँ❀आइ गोप सब बैठे तहाँ ॥२६॥
तव भीतर नेगी बुलबाये❀टीके कौ जु साज सब लाये।
बिप्रनि सुबिधि वेद उच्चरैं❀बाजे बाजत आनन्द भरैं ॥२७
दुखनें[1] तिखनें बैठीं भाँम❀घोरी गावति लै लै नाँम।
मोहन कर पूजा करवावैं❀जैसो बिधि सौं बिप्र बतावैं॥२८
कलश गणेश अरचि विधि भली❀कीनी रीति उचित मंगली।
जो कुल पुरोहि रावलि राइ❀कीनौ तिलक लाल कें आइ॥
श्रीफल मंगल दर्बि जु लियौ❀मुरलीधर की गोदी दियौ।
उठि कैं गरग आरतौ कियौ❀शीतल भयौ सबनि कौ हियौ॥
बहुरि किये गोपनि कें टीकें❀सब कें बदन बिराजत नीकें।
बाँटत लाडू औरु तम्बोर❀ग्वाल लेति सब भरि भरि झोर॥
मोहन भीतर भवँन जु गये❀जननीं रँवकि गोद में लये।
करजनि चटकि बारनें लेति❀मूठि उठाइ जाचकनि देति ॥३२
बिप्र बधुनि कौं दछिना दई❀सब की हरषि आसिका लई।
मेवा गोद बधुनि कें भरीं❀दै तम्बोल मनुहारि जु करी ३३
जो आनन्द महरि मन मांहिं❀सागर पुनि सुमेर मिति नांहिं।
बनतनि पै घोरी जु गवावैं❀अतुलित रोंम रोंम सुख पावैं ३४
दछिनाँ बँटति नन्द की पौंरि❀जाँचक सुनि सुनि आये दौरि।
नन्द उदार भये इहिं बार❀दर्बि लुटायौ कैऊ भार ॥३५॥
भान राइ कौ प्रोहित आयौ❀टीके कौ सब साज गनायौ।
करहा गोधन हय गय जिते❀रजित रुकम पाटम्बर तिते ३६
प्रोहित सब हीं गनायें जु दिये❀ब्रजपति सचिव समझि ते लिये
अब सुनि लीजै गोकुल धनी❀रावलि पति की बिनती घनी३७

---

[1] —महलों की दूसरी तीसरी मंजिल में।

बारम्बार कही इहिं रीति❀दियौ श्रीफल लीजौ करि प्रीति।
जेंवन कौं सब भवँन बुलाये❀जे हैं बरसांने ते आये ॥३८॥
पुनि बोले जु गोप घर घर के❀आये जेंवन लोग नगर के।
पंकति करि पनवारे फेरे❀पाक परोसन लगे घनेरे ॥३९॥
पुनि जेंवन की अज्ञा दई❀सामां सबहिं रसीली भई।
जेंवत सबहिंनु अति रुचि मानी❀लावौ लेहु देहु भई बांनी ॥४०॥
जहाँ तहाँ सब सादर परसैं❀जेंवन हार स्वाद सुख सरसैं।
भरि भरि भाजन लै लै धावैं❀बोलि बोलि ब्रजपति परसावैं ॥
मोंहन फिरत तात कें लार❀देषि सुषित भये जेंवन हार।
अति हीं सुघर नन्दपुर नारी❀बैठि झरोखनि गावत गारी ४२
चतुरा[1] रचित छन्द रस रीति❀गारी देति बढावति प्रीति।
नाई की नाइनि अभिरामां❀सब के सुबिधि सुधारन कामां॥
बारी[2] की बारिनि जु बिचच्छन❀पर सुख दायक जामें लच्छन।
चंचल महा भाट की नारी❀सबहिनु कौं जु रिझावन हारी४४
प्रोहित घरनीं अति सुख दैंनी❀दछिनाँ दाँन सबनि पैं लैंनी।
जेंवौ सजन नगर कें आछें❀गारिनु बिलगु न मांनौं पाछें४५
भोजन करि सब पूरन भये❀शीतल जल करि अचवँन लये।
बीरी दई रचि सुन्दर पाँन❀पौंढन कौं करि दियौ सनमान॥
पुनि जेंवत सब ही परिवार❀राम कृष्ण बाबा कें लार।
लाड सहित ब्रजराज जिमावैं❀दोऊ बन्धु स्वाद सौं पावैं ॥४७॥
लै लै सब पकवाननि नांम❀लेत मँगाइ कृष्ण बलिराम।
आइ देति मैया मुख ग्रास❀त्यौं त्यौं बाढत अधिक हुलास॥
बेटा भई काज की भीर❀भूखे रहे जु तुम दोऊ बीर।

---

[1] —कोई कुशल गोपी इसी समय अवसर अनुरूप नये छन्द रच कर गारी देती हैं,
[2] —पत्तलें दोने बनाने वाले की स्त्री वारिनि।

जेंवौ धापि रुचै सो लेहु❀मेरे मन कौ आनन्द देहु ।।४९
मिश्री फैंनी दूध मिलाई❀मैया भरि जु कटोरा लाई ।
रसनौं बोधी[1] सरस सवाद❀भोजन कियौ मान अहिलाद५०
दूध अधौटा मिश्री रऱ्यौ[2]❀राम कृष्ण रुचि पांन जु कऱ्यौ ।
त्रिपित भये जल अचवँन लियौ❀बीरी लै पौंढन मन कियौ ।।५१
पलिंग बिछाइ दिये पौंढाइ❀मैया जेंवति सबनि जिमाइ ।
राति जगावन बधू बुलाई❀ते सब घोरी गावति आई ५२
कृष्ण ब्याह की सब मन लाग❀राति जगावति भरि अनुराग ।
महरि रोहिनी सब मन लै कैं❀बधुनि जिमावत आदर दै कैं ।।
रचि रचि बीरी सब कौं दीनी❀अधिक प्रीति बनितनि सौं कीनी
पुनि सुन्दर सुर गावन लागीं❀ब्रज गोपी अति हीं बड़भागी५४
चढ़ि[3]मेरे अति लड आई घोरी❀भान पठाई छबि नहिं थोरी ।
जीन[4] जरयाऊ सोभित महा❀कलँगी की छबि बरनौं कहा ५५
मुहुरी बनी जटित मणि लाल❀तिहि चढि निकसौ मदनगुपाल ।
चित्र विचित्र जु सब तन करी❀नख सिख सुभ लच्छन सौं भरी ।।
बरसांने के भूप पठाई❀घोरी किधौं मोहनी आई ।
ब्रजपति अतिलड चढि जु नचावौ❀नन्दीस्वर बीथिनु छबि पावौ ।।
अस घोरी न लोक इहिं माहीं❀देखन आवैं ते कहि जाहीं ।
देषि जु रीझ्यौ अतिलड तात❀घोरी के अति कमनी गात ५८
चलनि मुरनि छबि सुन्दर कौंन❀उतपति भई यह गढ मुलतांन[5] ।
इहिविधि अतिलडकौं दुलरावैं❀राति जगावैं भांमिन गावैं ।।५९
प्रात कृत्य उठि सबहिनु कीनी❀विप्रनि आइ आसिका दीनी ।

१—फँसी, २—मिला दी गई, ३—जो कुछ गाया उसका अब वर्णन है, ४—घोरी की छबि का वर्णन है, ५—दोहा:—लेखक हौं मुलतान कौ सुनिये स्याँम सुजान । निज हित घोरी कीजियौ चढ़ौ ब्याह बरदांन ।।

गोकुल पति कीनी परनाम❀बैठे लिये गोद सुत स्याम ।।६०
महाराज हम मन सुख सरस्यौ❀एक[1] धांतु दूजौ रंग दरस्यौ ।
गूढ़ पहेरी है इहि ग्राँम❀अर्थ न मिलतु परम अभिराम।।
समझि समझि मुस्कांने नन्द❀पढे भांन पुर तुम अस छन्द[2] ।
नेगी उठि पांवन सर गये❀ब्रजपति सुत कौं बूझत भये ६२
लाल तुम्हारे नेगी आये❀बरसांने ते टीकौ लाये ।
बाबा कहत मोहि समुझावौ❀कहा बिदा दै हौ सु बतावौ[3] ।।
काजर जाये सोई लैं हौं❀बाबा हौं द्वै खैला[4] दै हौं ।
अधिक प्रसन्न घोष पति भये❀मोहनु हिय लपटाइ जु लये ६४
देहु शिंगारनि सहित तुरंग❀कर टोडर बागे नव रंग ।
खेलनि नाम लेहु जिनि लाल❀करैं तुम्हारी हांसी ग्वाल ।।६५।।
ये नेगी भूखे आदर के❀बडे नृपति वृषभान नगर के।
इनकौं मन वांछित जौ दै हौ❀तब आदर सुसरारि जु पै हौ६६
ऐसे बचन नन्द जब कहे❀लाल सकुचि गर लगि चुप रहे
नित उठि आदर नेगिनु दीजे❀मन रुचती महिमानी कीजे ।
चलिबे कौं नेगी अकुलाये❀बिदा हौंन ब्रजपति पै आये ।
दिये तुरंग अमोल जु बागे❀टोडर दिये जिनमें नग लागे ६८
मोती और दुशाला दिये❀पुनि दै दर्वि बिदा सब किये ।
लाइक सज्जन रावलि राइ❀इक रसना जस कह्यौ न जाइ ।।
बहु परनांम हमारी कहियौ❀कृपा करत तुम ह्वाँ ते रहियौ ।
रावलि पति जब हमैं बुलावैं❀सजि बरात ताही दिन आवैं७०

---

[1] अर्थात माता पिता नन्द यसोदा गोरी धातु यह काली धातु भिन्न दूसरी ही तो है [2] पहेरी कहने वाले बरसांने के ब्राह्मण जो टीका लाये जब यों बोले तो नन्द जी ने हँस कर कहा कि बस यही विद्या पढ़े हो, [3] बाबा पूछते हैं बेटा नेगियों को क्या बिदा देगा जरा तो बता संकोच न कर, [4] कोमल २ दो बछड़े तुम से काजर गाय के लेकर उनको दे दूँगा ।

हमहिं ओप सब विधि सौं दीनीं❀मानि सनेह सगाई कीनीं।
ऐसे कहत जु नौ हूं नन्द❀भींजत हिये परम आनन्द ॥७१
घोष राइ मुख अमृत झरे❀नेगिनु के उर शीतल करे।
प्रोहित कौं मन भायौ दै कैं❀करी प्रनांम चरन में नै कैं[1] ॥७२
ब्रजपति के गुन सिन्धु समांन❀मारग चलत जु करत बखांन।
रावलिपति बन्धुनि जुत जहाँ❀करी प्रनाम आइ कै तहाँ ॥७३॥
प्रोहित दीनी गहकी असीश❀श्री वृषभान नवायौ सीश।
गोकुलपति की कही प्रनाम❀मन दै लई तात श्री दांम ॥७४
सजियन लगे ब्याह के साज❀तन मन फूले-गोप समाज।
पुनि प्रोहित गयौ कीरति पास❀कह्यौ नन्द पुर कौ जु हुलास ७५
रांनी जू मन दैं कैं बूझी❀सजन हेत की रीति जु सूझी।
कहौ नन्द सुत के गुन कैसें❀तुम दृग देखे बरनौ तैसे ॥७६॥
चलन बोलिबौ कैसो रीति❀कैसी तात मात सौं प्रीति।
कौंन भांति सौं पालत गाइ❀कहाँ लग स्याम चरावन जाइ७७
बलिदाऊ सौं कैसी समिता[2]❀कैसो पुर बासिनु सौं ममिता[3]।
आरज[4]आदर किहिं विधि देत❀बड़ी[5] माइ सौं कैसो हेत ॥७८॥
घर आये देइँ आदर केतौ❀तुम कहौ समझि बुद्धि बल तेतौ।
कैसौ सील सुभाव जु रूप❀अतिं हीं लाड पले ब्रज भूप ७६
कैसौ बरनत पुर के लोग❀कैसौ जनम पत्र परचौ जोग।
ब्रजपति[6] सुत सुभ लच्छन मूल❀बिधि न रच्यौ कोऊ तिहि समतूल
बड़े बड़ यह कारज करि हैं❀ब्रजपति कुल कौं जस विस्तार हैं
नन्द सदन सेवैं संपदा❀स्याम नवे तुम पौरी सदा ॥८१
यह सुनि सुखित जु रांनी भई❀बिप्रहि बांछित दछिना दई।

१—नमस्कार करके, २—मेल जोड़, ३—ममत्व, ४—बड़ों को या पिता को, ५—रोहिनी, ६—पुरोहित का उत्तर।

जनम पत्र दुहुँनि कौं मिलायौ❀परचौ सुभ जोग जातु नहिं गायौ
नई नित बिर्द्धि जु सुख की होई❀कहौं बिद्या बल जानौं सोई ।
ससि ते बदन सत गुनी कला❀अस सुन्दर ब्रजपति कौ लला८३
गाइनु पाल होहि ब्रज एक❀हौं जु कहतु यह धरि दृढ़ टेक।
सजननि कौं आदर बहु करि हैं❀तात मात अज्ञा सिर धरि हैं८४
जब राधा संग फेरे परि हैं❀भाग सतगुने तब जु उघरि हैं[1] ।
मेरे बचन परिच्छा लीजै❀बेगि व्याहु करौ बिलम्ब न कीजै ।।

दोहा–रांनी अमृत सौं पियौ, सुनें बिप्र मुख बैंन ।
ब्याहु बेगि चाह्यौ करन, यह सुख देखन नैंन ।।८६।।
तिलक लयौ ब्रजपति सुवन, सब कोऊ करत प्रशंश।
गौर स्यांम जोरी बनी, सर्वसु श्री हरिवंश ।।८७।।
समधी सम इत उत बने, रावलि गोकुल भूप ।
सुख वारिधि बढि है जु अब, वृन्दाबन हित रूप।।८८।।

,, इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण तिलक उत्साह वरनन लीला छत्तीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ।।

।। अथ सैंतीसवीं लहरी प्रारम्भ ।।

दोहा–कीरति जू ऐसे कह्यौ, सुनौ अति लडि तात ।
लगन पठावौ नन्द घर, अब न गहर की बात ।।१।।
निर्मल साहौ सोधियै, बोलिये बडे मुनीश ।
नन्द यसोमति हिय बढी, चाह अब बिसवेबीश ।।२।।
मोहू मन उत्साह यह, सुनि लिहु रावलि भूप ।
सुता सुलच्छन राधिका, रचियै व्याह अनूप ।।३।।
तुम लाइक लाइक जु वे, बर कन्या समतूल ।

---

[1] १—शत सहस्र गुणा भाग्य खुल जांएगे ।

यह मंगल रचि लेहु जस, विधना है अनुकूल ॥४॥

॥ चौपाई ॥

बड़े मुनीशनि सोध्यौ साहौ❀सब मन देखन ब्याह उमाहौ।
देस देस ब्योपारी गये❀बस्तु अपूरब लावत भये ॥५॥
सजियन लगे भवँन भण्डार❀फिरत बिसाहत[1] नृप परचार।
हय गय बड़ी जात के आवैं❀तिनके साज शिंगार करावैं ॥६॥
परषि परषि पारखू[2] जु लेंहीं❀रीझि रीझि कैं दर्बि सु देंहीं।
जब यह भाँन मनोरथ करयौ❀मंगल महा लोक बिस्तरयौ ॥७॥
ब्याह कुँवरि कौ कीजै ऐसो❀भयौ न होहि लोक में जैसो।
जब रावलि पति यह मन धरी❀निधि सिधि आइ भवन सब भरी ॥
वस्तु अपूरब आवति चली❀मंत्री राज सचत[3] विधि भली।
उर उत्साह नयौ नित बढ़ै❀पानिप बदन नई नित चढ़ै ॥६॥
पुर जन सबहीं इकमना भये❀जहाँ जे पठये तहां ते गये।
जिहि घर श्री राधासी लली❀काहे न आवै वसुधा चली ॥१०
नित नव मंगल जिहिं घर रहैं❀तहां की प्रभुता कहा कोउ कहैं।
अतिलडि खेलति सखियनि मांझ❀कीरति मारग हेरति सांझ११
पुनि पठई लैबे कों कोई❀हँसति अंक भरि लाई सोई।
हँसि पुचकारि गोद में लई❀मैया सिच्छा करति जु भई ॥१२
लली खेल तू मगन जु महा❀भूली भूख और कहौं कहा।
अब यह ब्याह रच्यौ है तेरौ❀बहुत न खेलि बचन सुनि मेरौ ॥
सुनति बात अतिलडि हँसि परी❀रोंम रोंम जननी सुख भरी।
हँसनि मांहिं दसनावलि दमकी❀शीतल दांमिनि मानौ चमकी ॥

१—काम का सब वस्तु नृप अर्थात राजाओं के लायक खरीदी जा रही हैं, २—परीक्षक या कुशल जांच करने वाले, ३—इकट्ठा या संचय कर रहे हैं।

मन ही मन जु सिहांनी रांनी❀संकति डीठि वारि पियौ पांनी।
कहि मेरी राधा मो सौं बात❀हौं प्यारी के प्यारो तात ॥१५॥
आंखि मींचि रहीं दोऊ हाथ❀कियौ[1] अबोलौ जननीं साथ।
कुन्दन की सी पुतरी लसैं❀मुख नहिं बोलैं मन मन हँसैं १६
खेलन कौं बरजी क्यौं मोहि❀अब हौं उत्तर देहुँ न तोहि।
यह जु बात बाबा सौं कहि हौं❀तो सौं रूठी हौं अब रहि हौं १७
बाबा प्यार करत अति मोसौं❀सुनि कै गुसा होहिंगे तोसौं।
कीरति संग बैठी ही जेती❀एकै बार हँसीं सुनि तेती ॥१८॥
अति अरबीली तू गौरंग❀घर खेलैं न सखी लै संग।
शुक सारौ मैंनानि पढ़ावौ❀अजिर बैठि कै वीर मल्हावौ॥१६
सिख की बात हियें धरि लीजै❀बेटी एती गुसौं न कीजै।
ज्यौं ज्यौं राधा स्यांनी भई❀त्यौं कछु गुसां अधिक बढि गई॥
अरि अतिलडी आंखिनु खोलि❀मोसौं हँसि कै तू अब बोलि।
जौ भैया की दृष्टि जु परि है❀तो वह तेरी कूट्यौ करि है[2] २१
यह जु बात सांची सी मानी❀हँसि मैया कैं गर लपटानी।
बेटी खेलौ अजिर मझार❀बाहिर जाउ न सांझी बार ॥२२
श्री वृषभान भवँन में आये❀अग्रज अनुज सबै बुलवाये।
किहि विधि लगन दाइजौ दीजै❀या कौ मिलि विचार अब कीजै
जिहिं विधि हम वे उपमा पावैं[3]❀लगन साजि तैसी जु पठावैं।
इतहि विदित सूरज कुल जानौ❀शशि कुल विदित नन्दीश्वर रांनौ
आरज विप्र बतावैं जैसें❀मन दै कारज कीजै तैसें।
लगन पुनीत वार तिथि लीजै❀बोलि मुनीशनि निरनौ कीजै ॥

१—रूठी सी मौन हो रहीं, २—मैया कह रही है यदि यह तेरी रूठने की पता भाई श्री दामा को लग गई तो वह तुझे चिरावेगा, ३—हम और नन्द जी दोनों का यस हो केवल अपना स्वार्थ नहीं हो।

धेनु अश्व करहा शिंगारौ❀औरौ देहु साज सब भारौ।
यह कारज कीजै उठि प्रात❀नौ भ्रातनि मिलि कीनी बात॥
कहिबे[1] कौं नौ पै इक मनैं❀श्री वृषभाँन प्रान सम गनैं।
एक कहैं सो सब हीं करैं❀महा शील सोभा को धरैं॥२७
गवनें अपनें अपनें धाम❀रजनीं जांनि कियौ बिश्राम।
सब उठि भोर अथाई[2] आये❀नित्य नेंम करि बिप्र बुलाये २८
तिननि सुदिन ताही दिन काढ्यौ❀सुनि सब के उर आनन्द बाढ्यौ।
रावर[3] दीनी खबरि पठाइ❀कीरति फूली हिय न समाइ२९
अजिर लीपि कै चित्रित कीयौ❀सब के घरनि बुलावौ दीयौ।
सब पुर बाढ्यौ मंगल महा❀बनितनि आवनि बरनौ कहा॥
सजि शिंगारि सबइहिबिधिनिकसीं,पुरछबिसरमनुकुमुदनि बिकसीं
गाँव गाँव ते टोलनि आवैं❀सब हीं उच्च स्वर लाडी गावैं३१
सोभा सलिता उमगी जानौ❀मिलति भान पुर सागर मानौ।
सब के हिय कौ प्रेर्यौ प्रेम❀आवैं ग्रह तजि कारज नेंम॥३२
राधा लगन लिखत सब सुनी❀पौरी आये गावत गुनी।
दिशनि प्रकास देखियतु नयौ❀अतिसय निर्मल गगन जु भयौ॥
मन्द सुगन्ध शीत बह्यौ बाउ❀अवनीं हू उर लखियतु चाउ।
गिरि कन्दरनि बढ़ी छबि और❀पसु पंछी जु मुदित सब ठौर ३४
राधा लगन लिखत हैं जहाँ❀मंगल निकर बिराजत तहाँ।
कुँवरि अखिल मंगल कौ मूल❀नव ग्रह सब ही भये अनुकूल३५
राजत गोप मुनीश समूह❀पंच नाद तहाँ अति कौतूह।
चौक पूरि कै पटा धरायौ❀अतिलडि कौं तापै बैठायौ॥३६
कलश बिनाइक पूजा करी❀लिखि कै लगन जु गोदी धरी।

---

[1] कहने मात्र नौ भाई हैं परन्तु मन तो एक समान है, [2] कचहरी, [3] महल में सूचना भेजी कि तिथि निर्णय हो गई।

मंगल बिधि जु उचित है जैसें❀कीनी सकल मुनीशनि तैसें ३७
रजित रुक्म भरि धरै जु थार❀नाना रंग बसन बहु हार।
नव रतननि सौं जटित जु कर्यौ❀लै सिर पैंच अमोलक धर्यौ॥
गहनें धरे स्याम वर लायक❀साज अनेक धरे सुख दायक।
गोधन करहा पुनि गज बाज❀तिन पर सजे अमोलक साज३६
आंनि पौरि पै ठाडे करे❀कौतिक हार देखि मुद भरे।
बिधि सब करी वेद धुनि भई❀कुँवरि अरघ दै मन्दिर लई॥४०
ससि सत वदनीं कंचन तनीं❀मन की फूलनि परत न भनीं।
सब बनितनि कौं लागति प्रीय❀दौरि दौरि सब भरति जु हीय॥४१
अतिलडि देखि कहा देखनौं❀अचरज रूप अवनि पेखनौं।
जिहि देखत उर आनन्द सरसै❀अंग अंग अतुलित छबि दरसै॥
साथिनि सबहिं आइ संग मिलीं❀मनु ससि देखि कुमोदिनि खिलीं
कुँवरि ओर सबहिनु की दृष्टि❀मानौ होति अमी की वृष्टि ४३
जननी कें मन आनन्द इतौ❀बरनि न सकै सारदा तितौ।
बार बार जल वारि जु पियौ❀न्योछावरि करि बहु धन दियौ॥
लेति वारनें चाची ताई❀मुदित भई मन मूँठि उठाई।
कुशमनि लसतु सेहरौ सीश❀आरज गोपी देत असीश॥४५॥
भान भवँन कौ भूषन लली❀ताकी लगन नन्द पुर चली।
कीरति अंक लसति छबि जुता❀नहिं त्रिभुवन राधा सी सुता ४६
मंगल लगन नगर जगमग्यौ❀मन्दिर अतिशय सोंहन लग्यौ।
मंत्री राज संग बहु दये❀कुल नेगी जु लार तिन भये ४७
दिये संग सजि साज अपार❀अज्ञा दई भाँन तिहिं बार।
पुर तें निकसि जु जिहिं छिन चले❀सगुन दाहिंने आये भले॥४८

दोहा—लगन लै चलै नन्द घर, लखि अस साज समाज।

नर नारिनु की कहा चली, चकृत भयौ सुर राज ॥४९॥
जाइ सबै एकत भये, पीरी पोखर तीर ।
पुर बासी देखन चले, लगि रही सोभा भीर ॥५०॥
भूले कौतिक देखि कैं, नर नारिनु के वृन्द ।
लगन साज सम्हरावनैं, आये गोप नरिंद[1] ॥५१॥
राधा जनक उदार अति, कहत विप्र सौं बात ।
तुम प्रसन्न करि आइयौ, मुरलीधर के तात ॥५२॥
कहियौ मो परनाम बहु, घोष राइ सौं जाइ ।
आदर सहित जु लीजिये, श्रीफल दियौ पठाइ ॥५३॥
तारैं लै कैं गोप गन, इहाँ धारियै पाइ ।
तुम हौ भूषन सोमकुल[2], सोभा दीजै आइ ॥५४॥
सज्जनता की रासि तुम, सब गोपनि सिरमौर ।
जनम सुधाकर[3] वंश में, को उपमां देउँ और ॥५५॥
सिद्धि[4] श्री छिति[5] पाल ब्रज, गोद्विज कुल प्रतिपाल ।
आनन्द की मूरति मनौं, सब विधि कुशल कृपाल ॥५६
मान अमानिनु दैंन तुम, निधि सिधि संतति धाँम ।
निर्मल जसु जग जगमगै, सकल गुननि कौ ग्राँम ॥५७
सब विधि कारज सुधरि हैं, करि हौ आपु सुदृष्टि ।
चात्रक यह सब गोप जन, चहत कृपा की वृष्टि ॥५८॥
सुदिन मुहूरत जो लिख्यौ, बडे मुनीशनि आइ ।
ताहि दिन ताहि जु छिन, इहाँ धारिये पाइ ॥५९॥
कोऊ गुपत कोऊ प्रगट, तुम में गुन जु अनेक ।
लिखौं कहां लगि घोषपति, लाइक तुम जग एक ॥६०
प्रेम पत्रिका बांचि कैं, सुखित होंहिंगे गात ।

१—नरेन्द्र, २—चन्द्र कुल, ३—चन्द्र वंश, ४—पत्र में लिखा लगन के साथ है ।

शशि कुल महिमा सिन्धु सम, सुनहु स्याम के तात ६१
सोभा दै हौ नगर इहि, वह छिन धन्य जु होइ ।
अंगीकृत कीयें बनैं, भांनोखरि[1] को तोइ ॥६२॥
अच्छर[2] थोरे अर्थ बहु, लिखी भांननि जु हाथ ।
राज पुरोहित जाइ तुम, दीजौ कर ब्रजनाथ ॥६३॥
कहत कहत मुख बचन पुनि, उमह्यौ हिये सनेह ।
रावलि पति गोकुल जु पति, एक प्रान द्वै देह ॥६४॥
लगन राधिका कुँवरि की, पठई रावलि भूप ।
वृन्दाबन हित रूप तहाँ, दरस्यौ समय अनूप ॥६५॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री राधा लगन मंगल बरनन सैंतीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ अड़तीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–पुर जन अरु नौं भान सब, पठै लगन कौ साज ।
आये अपने ग्रेह पुनि, लै संग सकल समाज ॥१॥
दिसनि हरष अवँनी हरष, थिर चर हरष अपार ।
मंगल बिपुल उदै भये, लगन चली जिहिं बार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

चले जु मारग सोभा देत❀विरमें कमनी बट संकेत ।
बाट रैंनु उडि गगन जु चली❀सो देखी ग्वालनि विधि भली ॥
दूरि चरावत हे बन गाइ❀सब हीं चढि गये विटपनि धाइ
भैया बरसांने की ओर❀दृष्टि परतु हैं कौतिक जोर ॥४॥
मुख ते कहत बनति नहिं बात❀मनहुँ जाति यह मदन बरात ।
हय गय गोधन करहा घनें❀साज सुनहरी सब तन बने ॥५॥

---

[1] —भान सरोवर को जल, [2]—हस्ताक्षर में नौ भान भैया का संकेत किया है।

काहू बडे भूप की सैंना❀अस छबि देत सु कहत बनैंना।
मोहन लगन जु आवन हार❀कै पठये वृषभान उदार ॥६॥
सुनि भैया ब्रजपति के ढोटा❀तेरौ भाग्य लष्यौ हम मोटा।
कबहू द्वार बन्धी नहीं तुरी[1]❀अब गज बाजनि सैंना जुरी ॥७
आवै कोऊ बुलावन तोहि❀तो लै चलिये संग जु मोहि।
जो डहँकाइ जाइगौ मोकौं❀तो हौं कालिह समझि हौं तोकौं[2]॥
हम[3] में घटि बाबा कौ कोहि❀जाहि छाडि लै जै है तोहि।
ये दरसत राजनि के ठाट❀सोभा बरषति जाति सुबाट ॥९
लाडू च है लगन के खायौ❀बदन[4] लार तेरौ बहि आयौ।
अरे मनसुखा तू अन्याइ❀काटन लाग्यौ बात पराई ॥१०
तेरी जीभ की पैंनी[5] छुरी❀निन्दा की रहै उर कुर कुरी।
नीठ नीठ हम यह दिन पायौ❀तामें तै सन्देह उठायौ ॥११॥
हम लाडू लै हैं भरि झोरी❀तू देखतु रहि है मुख ओरी।
स्याम कहत भैया चुप रहो❀क्यौं झगरै की बातैं कहौ ॥१२
लगन हाथ हौं धरि हौं जबै❀लाडू दैं हूं गोद भरि सबै।
कोउ नाचन कोउ गावँन लगे❀खबरि लैंन कोउ आगे भगे ॥१३
आये बूझि स्याम पै फेरि❀भुजा उठाइ कहत यौं टेरि।
पुनि पुनि लेत ग्वाल चकफेरी❀भैया लगन जु आइ तेरी ॥१४॥
मारग चलत मिलै जो कोई❀लगन देखि चकृत होइ सोई।
देव दुरे बदरनि में देखैं❀अवनी मंगल भूर विशेखैं ॥१५
गोपुर चढे नन्द पुर जनाँ❀मैया देखौ कौतिक घनाँ।
अस अचरज दरसतु इहिं वाट❀कबहूं न देष्यौ ऐसो ठाट ॥१६॥

१—घोडी की बछेडी २—सखाओं को झांसा देकर गया तो समझ लेंगे. ३—अर्थात नन्द बाबा तो हम को तुम्हारे समान समझता है तो हमारे बिना वह जा नहीं सकते हैं, ४—मुख में पानी भर आया है, ५—तेज।

किधौं सुरराज अवनि पर आयौ❀सो ऐसी सैंना सजि लायौ।
कनक बसन मणि भूषन चमकैं❀मनु छबि घटनि दामिनी दमकैं ॥
बार बार नर नारि जु कहैं❀ऊँचे चढि चढि सब हीं चहैं।
जानो लगन जु नन्द सुवन की❀कहा कहौं सुख बाढनि पुरजनकी
लगनाइत[१] पहुँचे पुर पौंरि❀कौतिक हार जु आये दौरि।
देषि भये सब हिय जिय हरे❀सुख के गहर मींन मन परे ॥१६
ब्रजपति बैठे सभा मझार❀नेगिनु ने नैं[२] कियौ जुहार।
महाराज यह लगन जु आई❀बरसाने के भूप पठाई ॥२०॥
ब्रजपति हरषे नख शिख गात❀अमृत सनीं सुनी यह बात।
सखी दौरि इक रावर[३] गई❀ब्रजरांनी कौं खबरि जु दई २१
लाडू भरि दिये ताकी गोद❀यसुमति भरि गई अति मनमोद
पौंरी बजे गहकि नीसांन❀आई लगन सुनी सब कॉंन।
रावलि पति के मंत्री बिप्र❀ब्रजपति ते जु बुलाये छिप्र।
मंत्रिनु जाइ नवन पद कियौ❀आदर नन्द बहुत विधि दियौ ॥
बिप्रनि पुनि पुनि दई असीश❀ब्रज के ईश नवायौ सीश।
दियौ विश्राम भवँन जहां कमनां❀मृदुल बिछौंना बिछे जु अवँनी॥
भाँन पत्रिका बाँची नन्द❀अतिसैं उर भींजे आनन्द।
अच्छर अर्थ बिचारे नीके❀भरे सनेह जु अमित अमीं के२५
रावलि पति की करत प्रशंस❀राजा आदि धन्य रवि वंश।
हय गय करहा गोधन जहाँ❀लगि रहि नगर जात[४] सी तहाँ
गरग बुलाये ताही बार❀लगन लैंन को कियौ बिचारि।
तिथि पुनीत पुनि बार पुनीत❀लीजैं लगन गवावौ गीत ॥२७॥
गाँव गाँव नेगी दौराये❀गोपी गोप जु सब ही बुलाये।

१—लगन लाने वाले बरसाने के नेगी, २—प्रणाम या नमन करके, ३—राज महल, ४—यात्रा सी या मेला सा आने जाने वालों का।

नर नारी सब बनि ठनि आवैं❀पुर चहु ओर बाट छबि पावैं २८
घोरी गावैं ऊँची टेर❀सुनत मदन मन परयौ कुफेर।
कनक बसन घूँघट जगमगैं❀लसति तडित सी सुन्दर लगैं २९
अति उमाह भींजी डग भरैं❀मानौ छाप मदन सिर धरैं।
दुलरावति यसुमति कें जाये❀रचि रचि नाँना छन्द बधाये ३०
सब हीं तरुन बाल मृग नैंनी❀मानौ कनक लतन की सैंनी।
आरज गोपी आवत पाछें❀बरनैं[1] मल्हकि मल्हावैं आछें ३१
लई[2] रोहिनी मान जु दै कें❀बैठी सब ही महरि पद नें कें।
यसुमति चाइनु अजिर लिपायौ❀बिप्र बधू रचि चौक पुरायौ ३२
बन में दौरे जाहु जो कोऊ❀राम कृष्ण सुत लावौ दोऊ।
जब आवैगो मेरौ छैया❀उबटि न्हवाऊँ बलि कौ भैया ३३
दौरि लगाइत बन में आये❀ग्वालनि संग खेलत हरि पाये।
मोहन लगन तिहारी आई❀बेगि चलौ घर दोऊ भाई ॥३४॥
फूले ग्वाल मनो रन जीते❀भैया भये सबनि चित चीते।
कहतु मनसुखा मैं कही दई❀सोई बात जु सांची भई ॥३५॥
मोहन कहि दै अब निरधार❀काहि काहि लै चलि है लार।
सब हिं कहत हम चलि हैं संग❀भैया तब हीं रहि है रंग ॥३६॥
बन में गाइ कहूं किन जाहु❀हमैं लगन देखन जु उमाहु।
ठाढे बिहँसत नन्द कुँवार❀ऐसे बचन कहत सब ग्वार ३७
गायें फेरि गाँव दिशि लाये❀मोहन संग ग्वार सब आये।
और[3] गलिनु ह्वै दुरि घर गये❀मैया हरषि अंक भरि लये ॥३८
करि उबटन लिये तुरत न्हवाइ❀कियौ शिंगार तात नैं आइ।

१—दुलह की मङ्गल कामना से गा रही हैं, २—गाने वालियों की सत्कार से रोहिनी ने अगवानी करी, ३—श्याम उस रास्ते न गये जिधर बरसाने के लगन वाले देख सकें कि बन की रज से धूलि धूसर हो रहे थे।

या दिन कौं बांछित हे सबै❀कहैं पुर बधू चलौ मिलि अबै ॥
करि शिंगार घर घर तें निकसीं❀प्राँन सुधन सौं पाइ जु बिकसीं।
हियें ललक सों घोरी गावैं❀मधुरितु[1] कोकिल कण्ठ लज्यावैं
सींची गली सुगंधि जु नीर❀तहाँ आवति बनितनि की भीर।
नाँनाँ रंग बितानैं तनें❀मोतिनु झूमक तिन में बनें ४१
राज दुवार करी अस रचनां❀बरनति बनति न मो मुख बचनां
मन्दिर ऐसी भांति जु लसैं❀मनु बिधि की रचनाँ कौं हँसैं४२
तहाँ छबीले गोप बिराजैं❀जिनहिं निरषि सुर सभा जु लाजैं।
नगर बगर गह मह ह्वै रही❀एक बदन छबि परत न कही४३
सब कौं दै दै मान बुलावैं❀अति अनुराग भरे सो आवैं।
महा सनेह भरी ब्रज गोपी❀कृष्ण लगन अति ही सुख ओपी॥
नन्द नन्दन कौं यौं दुलरावैं❀रीति बिलच्छन घोरी गावैं।
दै दै मान रोहिनी लेंहिं❀सब कौं सुविधि बैठना देंहिं ४५
मोहन के जु सखा बनि आये❀बलि दाऊ अपु ढिंग बैठाये।
लटपटे चीरा सिर पर राजै❀सुन्दर झगुला सब तन साजै ॥४६
कटि सौं बन्धी पिछौरी सोहन❀सब मुसिकात देखि तन मोहन।
अग्रज[3]अनुज सहित ब्रजरानौं❀बैठे फूलनि कहा बखानौं ॥४७॥
गरग कही अब विलम्ब न कीजै❀भई सुबेला लगन जु लीजै।
लाये लगन बुलावौ जिनकौं❀दै सनमान भली विधि तिनकौं॥
नेगी सब ऐसे बनि आये❀सभा सहित दिखि नन्द सिहाये
मंगल मूरति मनु इन लार❀देखन आये नन्द कुँवार ॥४६
साज अनेक अजिर भरि धरे❀देषि गोप हिय जिय भये हरे।
हय गय गोधन करहा घनें❀ठाढे पौंरि परत नहिं गनें ॥५०

१—बसन्त रितु, २—ग्रन्थ कर्ता कह रहे है मैं एक मुख से क्या कहूँ, ३—बड़े व छोटे भाइयों के साथ नन्द जी बैठे हैं।

राज द्वार बाढी छबि जोति❀जहां तहां भान प्रसंशा होति ।
चौक रच्यौ तहाँ पटा बिछायौ❀मोहन कौं तापर बैठायौ ॥५१
चरन प्रछाले नाई आइ❀बनिता गावति मंगल चाइ ।
कलश गणेश जु पूजा करी❀नव ग्रह थापि भेंट पुनि धरी ५२
सबहिंनु के कर अच्छित धरे❀बिप्रनि सु बिधि वेद उच्चरे ।
रोरी अच्छित तिलक जु करचौ❀श्री फल लगन गोद लै धरचौ॥
रजित रुकम बहु थार जु भरे❀लै बरनां कें आगें धरे ।
गहनों सब अंगनि पहिरायौ❀रतन पेंच माथे जु बन्धायौ ५४
गरग साजि आरतौ जु कियौ❀नन्द दांन उठि बिप्रन दियौ ।
गोपनि माथे कीने टीके❀अच्छित सहित विराजत नीके५५
लाडू बांटे पुनि तम्बोर❀ग्वालनि लीने भरि भरि झोर ।
लगन गोद लै मोहन चले❀सिर सेहरौ लगत अति भले ५६
भूवा आगे अरघ जु दीनौं❀जननी लाल अंक भरि लीनौं ।
काकी ताई मूठि उठावैं❀जूथनि बनिता मंगल गावैं ५७
कोऊ आभरन वारि कै देहिं❀नाइनि बारिनि ढाढिनि लेहिं ।
कोउ अँगुरिनु बरषावैं फूल❀रीजि रीजि कोऊ देहिं दुकूल५८
कोऊ त्रिन तोरि बलैया लेति❀कोऊ कोरचा[1] कोधन देति ।
कोऊ ठाढी करजनि चटकावैं❀राई लोंन वारि सचु पावैं ॥५९
जननौं वारि वारि जल पीयौ❀श्रीपति सुबिधि सिरायौ हीयौ।
लीक आरते की लै लई❀भूवा अति मन मुदित जु भई ॥
दछिना लै लै भिछुक गाजैं❀पौंरि पौंरि पै नौबत बाजैं ।
बधू बिदा ह्वै गावति चलीं❀मेवनि गोद भरीं बिधि भली ॥
मैया सुत हीं जिमावति हरषी❀अष्टसिधि नवनिधि जा घर बरषी

---

[1] —स्त्रियों का निजी धन जो घर वालों से छिपा कर रखती हैं ।

यसुमति निरवधि आनन्द झिली❀मन वांछित वैभव जिहिं मिली
सुनौ रोहिनी मो मन कथा❀गिरि करी कृपा कहौं हौं जथा।
मैं जु मनोरथ गरुवे करे❀गिरि प्रताप ते पूरे परे ॥६३॥
सुघरीं मेरौ मोहन भयौ❀ब्रज बाढतु आनन्द नित नयौ।
सुनौ महरि अब मेरी बाँनी❀सुख में दहलि रहीं तुम रांनी६४
नेगी लगन जु लै कैं आये❀अब लग ते तुम नहीं जिमाये।
ब्रजपति सौं कहि तिनहिं बुलावौ❀सुबिधि जिमावौ गारी गावौ ॥
समझि महरि ने ठोडी गही❀अहो बड़ी तुम नीके कही।
ब्रजपति अग्रज अनुज बुलाये❀पुनि परिवार नगर के आये ६६
जेंवन की त्यारी करि बेगी❀समध्यांने[1] के बोले नेगी।
पद प्रछालि के बैठे सबै❀पनवारे जु बिछाये[2] तबै ॥६७॥
अजिर भवँन भरि बैठे पांति❀सुघर परोसति नीकी भांति।
जेंवत रुचि सौं सब छबि पावैं❀बधू झरोखनि गारी गावैं ॥६८॥
स्वाद पाइ जेंवत सुख सरसैं❀आदर दै नेही जन परसैं।
लै लै ग्रास सबै मुद भरैं❀पाकनि अधिक प्रशंसा करैं ६९
चतुर सम्भार करैं सब ठौर❀कहैं परोसौ इहाँ जु और।
भौंन नगर के कूच्यौ करैं❀सुनि सकुचैं मोहन हँसि परैं ७०
भांमिनि गांवन लागीं ऐसें❀मंत्री भौंन सुखित होइ जैमैं।
भली करी जु इहां तुम आये❀घरननि क्यों न नन्द पुर लाये७१
समुझि समुझि सबहीं मुसिकाये❀बनतनि ऐसे बचन सुनाये।
ठाढे पाकनि भाजनि भरैं❀सबहिनु की मनुहारि जु करैं ७२
आडौ[3] हाथ सबनि तब कियौ❀पूरन ह्वै जल अँचवन लियौ।
मुख सुबास कौं बीरी दये❀सब अप अपने ठौर जु गये ७३

---

[1]—सम्बन्धियों (बरसाने वाले), [2]—पत्तल दौने आदि, [3]—सब खाने वाले रज कर मना करने लगे।

दोहा—पुनि गोकुल पति गये, नेगी श्री वृषभान ।
वस्तु गनाइ दई सबै, अरु हँसि जारे पाँन[1] ।
पलिंग बिछौंना गेंदुवा[2], दीने नन्द मँगाइ ।
आदरु बहु विधि सौं दियौ सोये सब सचुपाइ ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

जेंवति और जिमावति मैया[3]❀राम कृष्ण बैठे दोऊ भैया ।
फैंनी मिश्री पय सौं सँनीं❀मोहन कौं रुचि दायक घँनीं ७६
आलस सौं दृग झपि झपि जात❀अति सुकुँवार श्रमित कछु गात
मैया ग्रास देत बरजोर❀सोभित दृगनि अधखुली कोर७७
सिता सहित पय पांन करायौ❀शीतल जल अचवन करवायौ ।
भये सचेत हाथ मुख धोइ❀बिछ्यौ पलँग तापै गये सोइ७८
जेंइँ उठ्यौ जु सकल परिवार❀दासी दास सबै तिन लार ।
राति जगावँन आई भाँम❀बैठीं सब भरि पूरि सुधाँम॥७६॥
लाल बनौं की घोरी गावैं❀लै लै आरज नाम मल्हावैं ।
मुरलीधर बरनां जु छबीलौ❀नन्द दुलारौ परम रँगीलौ ॥८०
घोरी सकल गुननि अभिराम❀जापै चढि है सुन्दर स्याम ।
बडे सजन हित मान पठाई❀लगन दाइजै सुघरी आई ॥८१
घोरी के गुन कहा बखाँनौ❀मूरति वन्त मोहनी मांनौ ।
पुर जन सब ही देखि सिहाये❀चढि मेरे रांनी के जाये ॥८२॥
ब्रजपति हू परषत जिहिं अंग❀कहत अलौकिक यह जु तुरंग ।
महदी राचे जाके चरना❀रीझ्यौ राज दुलारौ बरना ॥८३
इहि विधि बनतनि रात जगाई❀तब[3] लगि पह पियरी ह्वै आई

---

[1] —हाथ जोरे, [2] —सिरहाने तकिया, [3] —रोहिनी जिमा रही यशोदा तथा दोनों भैया खा रहे हैं, [4] —प्रभात काल का अरुणोदय [पीला रंग] दिखा ।

महरि भाग की महिमा माँनी❀कीनी बिदा अधिक सनमाँनी८४
दोहा—मंत्री श्री वृषभान के, आये ब्रजपति पास।
महाराज कीजै विदा, बोले सहित हुलास ॥८५॥
यह[१] वह जानौ एक घर, विदा नाम जिनि लेहु ।
अनुचर रावलि राइ के, रहि हम कौं सुख देहु ॥८६॥

॥ चौपाई ॥

महाराज अब कृपा जु किजै❀हम कौं समझि विदाई दीजै ।
यौं कहि दियौ तात श्री दाँम❀एक राति कीजौ विश्राम ॥८७॥
यह सुनि के ब्रजपति मुसिकाये❀कछू हाँस के बचन सुनाये ।
दीये मोती करे तुरंग❀यह अमोल पामरी सुरंग ॥८८
रजित रुकम मन वांछित दीयौ❀बचनन वहु सनमान जु कीयौ ।
पत्र लिखत मुरलीधर तात❀सुख सनेह सौं भींजी बात ॥८९॥
सिद्धि श्री शर्वोपरि धाँम❀भुव तल मध्य परम अभिराँम ।
गिरि अति कमनी तापर लसैं❀सुधर्म रति जहाँ परजा बसैं॥९०
तहाँ विराजत रविकुल भूप❀कहा लग बरनौं गुन जु अनूप।
बरसानौं तुम करि छवि पावै❀देवनि मन अचरज उपजावै॥९१
देस भयाने रच्छिक आपु❀तुम जसु सदा कीजियतु जापु ।
गऊ विप्र प्रति पालत सदा❀मन्दिर अचल बसति सम्पदा ९२
मान अमांनिनु कौं बहु दायक❀मही भान कुल सब विधि लायक
पत्री लिखी जोग्य वृषभाँन❀नन्द कृष्ण के जनक सुजाँन ९३
अति सज्जन जु तात श्रीदाँम❀बार बार बांचियौ जु प्रनाम ।
तुम सुदृष्टि मंगल ह्याँ नित्त❀गुन रावरे न बिसरत चित्त ९४
तुम मंगल नित्त वांछित रहैं❀उर उत्कण्ठा मिलन जु चहैं ।

१—नन्द जी कह रहे हैं यह घर भी आपका ही है ।

तुम्हरो पत्र बांचि सचुपायो❀भांति भांति हम को अपनायो९५
ए जू बल्लब कुल सिरताज❀तुम चित चीत्यो ह्वै है काज ।
लिखि पत्री प्रोहित कर दई❀औरो मुख प्रसंश निर्मई ॥९६॥
बहु परनाम भान सों कहियो❀अति सज्जन सुधि करत जु रहियो
पुरजन गुरजन नन्द संजूत❀सब उर दरस्यो प्रेम अकूत[1]॥९७
मंत्रिनु नेगिनु कियो जुहार❀भूप करी सब की मनुहार ।
बिप्रनि की जु आसिका लै कै❀नन्द कियो पद बन्दन नै कै ९८
इहिं बिधि बिदा ह्वै जु सब चले❀अश्व नचावत लागत भले ।
बरसांने ओरी पग धरैं❀ब्रजपति को सनेह सुधि करैं ९९
धन्य नन्द पुर सज्जन जनों❀सबहिनु पै बरषे गुन घनों ।
घोष ईश मूरति जु सनेह❀निधि सिधि न्याइ जु संतत ग्रेह॥
ऐसें कहत परस्पर सबै❀गाँव गोइँरे आये जबै ।
चले गये जहाँ बल्लब[2] राज❀बैठे जहाँ सब गोप समाज १०१
रावलि पति कों माथो नायो❀समाचार सब कहि समझायो ।
नन्द पत्रिका बाँचन लगे❀अर्थ बिचार प्रेम उर पगे ॥१०२
अक्षर अक्षर आनन्द भरयो❀हिय हू कों हिय प्रफुलित करयो।
अति लाइकी समुझि ब्रजपति की❀करत प्रसंशा सजन सुमति की
कीरति सुनि मान्यो उत्साह❀सजियन लागी सामाँ ब्याह ।
पुनि पुनि सुखित भये ब्रजबासी❀मंगल भान रच्यो सुख रासी ॥

दोहा—जा दिन ते जु लगन गई, घोष नृपति कें ग्रेह ।
तादिन ते वृषभान घर, मंगल बसे सदेह ॥१०५॥
बरसांने मंगल महा, अति मंगल सब देस ।
गरुवो मंगल नन्द घर, लखि चक्रित जु सुरेस[3]॥१०६॥

१—अमर्याद, २—श्री वृषभानु जी ३—इन्द्र ।

इहिं घर राधा सी सुता, मुरलीधर सुत नन्द।
वृन्दाबन हित रूप नित, बरषत परमानन्द ॥१०७॥
दुहुँ घर सुख जु सनेह की, करि हैं रसिक प्रसंश।
दूलह दुलहिनि हिय हिलग, मरमी श्री हरिवंश ॥१०८

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण मंगल लगन बरनन अड़तीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवश श्रीराधे ॥

॥ अथ उन्तीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—भयौ न है पुनि होहिगो, अस बिबाह उत्साह।
नन्द और वृषभान घर, बिनु मित बढ्यौ उमाह ॥१॥
घर घर बिपुल बधावनौं, भाँन नृपति के ग्राम।
थिर चरहूं हरषित सबै, अस मंगल अभिराम ॥२॥

॥ चौपाई ॥

बस्तु अपूरब आवति चली❀भवँन भण्डार[1] सचत बिधि भली
बनिता वृन्दनि जुरि जुरि आवैं❀तात मल्हावैं लाडी गावैं ॥३॥
दिन दिन सोभा बढै जु पुर में❀दिन दिन प्रीति बढै सब उर में।
दिन दिन कीरति हिये बढै आरति[2]❀सजन आगमन बाटनिहारति
पुर पुर ते भांमिनि उठि धावैं❀राधा ब्याह बधाये गावैं।
नाँनाँ विधि के पाकनि रचैं❀सुगर सुबिधि भण्डारनि सचैं॥५
ठौर अनेकनि चढे कराह❀सब जन फिरैं भरैं उत्साह।
कोऊ धरैं कोऊ करन जु लगे❀कोऊ फिरैं टहल उमा हैं भगे ॥६
अनुरागी सब पुर के लोग❀पाक रचैं बहु सजननि जोग।
ठौर ठौर कीनें भण्डार❀श्री राधा के तात उदार ॥७॥
गज करहा तुरंग बहु आवैं❀तिनकौं साजि शिगार बनावैं।

१—संचय कर रखी, २—दूलह दरसन की उत्कण्ठा तथा पुत्री वियोग की सम्भावना

यह न्यारोई छयौ बजार❀तिन सब कें न्यारे परचार ॥८॥
बहुत छयी सु जिनकी हाट❀तिनकौं न्यारोई सब ठाट।
ब्यौंतत[१] बसन बूझि सुभ घरी❀पाटम्बर अमोल सुनहरी ॥९॥
सोनींनु[२] की हाट बिस्तार❀गहनो गढियतु राज दुवार।
जड़िया पुनि जौहरीनु बजार❀सुधर पारखुनि[३] कौ जु बिचार ॥
छीपा बहु रँगरेज दुकाँन❀छापैं रगैं बिबिध बिधि थाँन।
एक कसीदनि बूँटीं सचैं❀एक पाट की डोरी रचैं ॥११॥
इक बजार में पटवा सोहैं❀नाना बिधि के गहनें पोहैं।
इक काढैं सोनें के तार❀एक बुनैं इक करैं बिचार ॥१२
एक रचैं कांठीं अम्बारी❀एकनि रथ पालिकी सँवारी।
रचैं पलिंग सुन्दर सुति धार❀गज दंतनि के पाये चार ॥१३॥
बुनियै तेज पाट मखतूल❀तिनमें रचैं चौक पुनि फूल।
इक मंजूश[४] पिटार बनावैं❀इक रचि चौकी कनक जडावैं १४
एक रचैं जु कनात बितानैं❀मुक्ता[५] झालरि कोरनि बानैं।
कोऊ सकलात जरी पट सोहै❀कोऊ पट चित्रित सब मन मोहै
तम्बू रचे बिबिध बिस्तार❀चोवैं मढीं कनक नग लार।
कहौं बिछौंननि की छबि कहा❀गिलम[६] गेंदुवा कोमल महा॥१६
कीमखाप अरु कसब दुशाला❀नाना रँग पुनि बसन बिशाला।
अधिक प्रीति सौं सचि सचि धरैं❀साज अनेक सजन हित करैं ॥
मणि पिंजरा पंछिनु के हेत❀धरैं बनाइ अधिक छबि देत।
शुक सारो राधा सुख दायक❀ये कीनें तिन बैठक लायक[७] १८
दोहा—हय गय करहा पालिकी, रथ पुनि गऊनि शिंगार।

१—बुनाई करते हैं, २—सुनार, ३—परखैया जो जौहर को पहिचानें. ४—छोटी २ डब्बी बुना हुई मींज की या बेंत की, ५—किनारों पर मोती की लरियों की झालरें सजा रहे हैं, ६—गद्दे तकिये. ७—अर्थात ऐसे हिले मिले हैं कि पास बैठे रहते हैं उड़ते नहीं हैं।

झूलैं परदा आभरन, रचियत तिन अनुसार ॥१९॥
श्री राधा के ब्याह कौं, मंगल अवनि प्रचार ।
सजियत साज अनंत बिधि, कहि न सकौं विस्तार ॥२०
भाजन आठौं धातु के, चित्र विचित्र जु कीन ।
अति सुन्दर छोटे बड़े, गढे परम परवीन ॥२१॥
दिन थोरे रहे ब्याह के, राँनी करति विचार ।
चल्यौ चहति हैं तात घर, बनितनि लैं कैं लार ॥२२॥

॥ चौपाई ॥

कीरति उर बाढी सुख साखा❀भात नौतिबे की अभिलाषा[1] ।
हिय जिय अतिहीं आनन्द ओपी❀संग चलीं बनि अगनित गोपी
कोऊ सकटनि कोऊ रथमें चढीं❀गावति चलीं सबै मन बढीं ।
नेगिनि नेगी संग लगि चले❀गोपिनु वृन्द विराजत भले ॥२४
कुँवरि ब्याह की लाडी गावैं❀गिरि गोवर्धन सन्मुख आवैं ।
राधा कुँवरि माइ ढिग राजैं❀मनु सोभा कौ पुंज विराजैं ॥२५
पसु पंछिनु तन देखि जु रहैं❀पुनि मैया की ठोडी गहैं ।
इनकौं मोकौं नाम बताइ❀अरी भली मेरी कीरति माइ २६
जाइ मानसी गंगा न्हांई❀कीरति हिय जिय अधिक सिहांई
फूल चढाई प्रनाम जु करी❀गिरि कें भोग सु मेवा धरी॥२७
माइ मिलन उत्कण्ठा बढी❀गिरि बन्दन करि रथ पै चढी।
तात मात पुनि वीर मल्हावैं❀उच्च टेर सौं मंगल गावैं ॥२८॥
मुखरा[2] रांनी जब सुधि पाइ❀भात न्यौतनें कीरति आई ।
मानति भई धन्य दिन आज❀सजि ठाढी भई मंगल साज ॥२९
रथ तें उतरि माइ सौं मिली❀हिय आनन्द निकर मनु झिली।

---

[1]—राधा के नन्हसाल में न्यौता देने की उमग, [2]—श्री राधा की नानी का नाम है मुखरा ।

तात भ्रात सब मिलैं जु आइ❀भाभी मिलि पुनि लागी पाइ३०
राधा कण्ठ लगाइ जु लई❀नानी प्रेम भीजि उर गई।
बार बार ऐसें उर लाई❀मनहुं रंक ने नव निधि पाई३१
कबहूं बदन चूम्बि सचु पावैं❀लै बलाइ करजनि चटकावैं।
कबहूं चिबुक लाड जुत गहैं❀कबहूं ताकि बदन दिशि रहैं३२
कबहूं राखति हैं कर सीश❀कबहूं हरषित देति असीश।
नाना इन्दुसेन पुनि आइ❀श्री राधा लई कण्ठ लगाइ ॥३३
लोकनि मध्य महा मणि लली❀निरषि प्रेम उर उमगे बली।
मांमां मांमी हरषैं ऐसें❀पावें निधन[1] सुमेरहिं जैसें ॥३४
मुखरा भवँन जु खेलैं प्रेम❀सबै भूलि गये नित कृत नेम।
निगम दुराधि कहत है जाकौं❀गोप सुविधि दुलरावत ताकौं३५
दोहा—मिले जु पुर परिवार जन, लागि लागि सब गात।
बूझि परम कुशरात[2] पुनि, न्यौतौ दीनौं भात ॥३६॥
करी जु मंगल रीति सब, पुनि भोजन करवाइ।
नानीं राधे अंक लै, प्यावति दूध सिराइ[3] ॥३७॥

॥ चौपाई ॥

कीरति तात भ्रात लै नाम❀गावति भात बधाये भाम।
सब जुरि आईं पुर की बनिता❀बोली हरषि हिता[4] की जनिता
मंगल मान्यौ राति जगाई❀सादर सब की गोद भराई।
कीरति चलन चलन घर कहै❀बिदा करन नहिं मुखरा चहै ३९
सनय सनय[5] मैयें समुझायौ❀निपटहिं निकट ब्याह दिन आयौ
तास ओढनी कुवँरि उढाई❀नीकी बिधि कीरति पहराई ॥४०

---

[1]—कंगाल या दरिद्री, [2]—कुशल क्षेम, [3]—ठंडा करके, [4]—राधा की माता ने सब को निमन्त्रण दिया, [5]—कीरति ने मैया को समझा कर विदा मांगी।

बूझि ब्याह बिदा जु कीनीं❀जननी सुता अंक भरि लीनीं।
सबके प्रान जीवनि श्री राधा❀देखन ब्याह बढी मन साधा॥४१
मंगल पूरि सबै पुर रह्यौ❀बीर भात लै आवन कह्यौ।
पुरजन संग लगे सब आवैं❀बिरमि[1] बिरमि कीरति अहुरावैं४२
बन्धु बिदा ह्वै अहुटे सबै❀रथ अरु सकट चले बढि तबै।
रांनी भवन आइ मुद भरी❀हरद हाथ मंगल बिधि करी ४३
एकत भई नौ भाननि रांनी❀लोक वेद विधि करति सयांनी।
कुल देवनि पूजा करवावैं❀नव ग्रह गनपति गवरी मनावैं॥
बन देवी संकेत सु जहां❀बनतनि जाइ पुजाइ तहां।
विहँसति[2] कुँवरि आपु मन महियाँ❀समभि सखीतबगहलई बहियाँ
बरनी तात भवँन पग दियौ❀अरघ बढाइ माइ नें लियौ।
माइ लली कौ सुहथ जिमावै❀दै मुख ग्रास आपु सुख पावै ४६
चढि[3] है तेल सीख सुनि लैहौं❀अब बाहिर खेलन नहिं जैहौ।
माइ वचन सुनि बोली ऐसें❀खेल बिना हौं रहि हौं कैसे ॥४७
लली भली मेरी प्रान पियारी❀अजिर बैठि खेलौ सुकुँवारी।
ह्यां बुलाइ तो साथिनि लैहौं❀खेलन कौं जु खिलौंना दैहौं ४८
कहत कहत दृग निद्रा आई❀कुँवरि जाइ पालकी पौढ़ाई।
कीजै काज सबेरो सजनी❀मंगल प्रथम आजु की रजनी४९
सब के मन उत्कण्ठा भारी❀घर घर उमहि रही ब्रजनारी।
रांनी आदर दै जु बुलाईं❀ग्रह कारज करि हुलसी आईं ५०
जूथनि मिलि कै गाँन जु करैं❀गलिनु गलिनु में दीपक बरैं।

---

[1]—रुक रुक कर उन्हें लौट जाने को कह रहा हैं, [2]—(पीछे जिसका वर्णन आ चुका है) श्री राधा को स्याम के उनके गो प्रथम चारन के दिन वाले प्रथम दर्शन का स्मरण हो आया सो हँसी कुछ प्रेम विभोर हुईं तो सखी ने सम्भाल लिया यह भाव है, [3]—मैया कह रही है अब सीख माननी होगी।

गावति आवति सब मन बढी❀ऊँची पौंरि भांन की चढी ॥५१॥
आदर दै कैं सब कौं लीजै❀अति हित मानि बैठना दीजै ।
इक आई इक आवति चली❀सोभा देति आजु पुर गली ॥५२
दोहा—आरज गोपी बैठि कै, करति मंगली रीति ।
बिन्नाइक बाजे सहित, पूज्यौ करि उर प्रीति ॥५३॥
बनिता पुर परिवार की, सिमटीं भान निकेत ।
लाडी राधा व्याह की, गाँवन सब हिय हेत ॥५४॥
या दिन की अभिलाष ही, सब के हिय जिय माहिं ।
सो सुभ दिन भयौ आजु कौ, इहि सुख की मित नाहिं ॥
इष्ट देव आराधतीं, सब इहि मंगल काज ।
बरनी भान सुता भई, बरु भयौ सुत ब्रजराज ॥५६॥
बिनती सबहिनु की सुनी, बिधना नें दै कांन ।
दोऊनि की जोरी रची, रीझि आपनें पांन[1] ॥५७॥
काल्हि तेल चढि है सखी, इत उत दोऊ ओर ।
भाँवरि परि है बेगि अब, दिन जु रहे कछु थोर ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

राति जगावैं मंगल गावैं❀पाकनि की रचना करवावैं ।
धनि गौरंगी राधा बरनी❀तात भवँन मंगल बिस्तरनी ५९
सजन बुलावनि कीरति जाई❀यातें हम सब उपमा पाई ।
राधा मेरी चम्पक बरनीं❀घर अँगनां सब सोभित करनीं ॥
बरु पायौ ब्रजराज दुलारौ❀तात मात नैंननि कौ तारौ ।
सजि बरात जब इहिं पुर ऐहैं❀सब के दृग अति आनन्द दैहैं ॥
तात भयानें भूप बनीं कौं❀मेरी राधा कनक तनी कौं ।

---

[1] —हाथ ,

सजन नन्दीस्वर भूप कहावैं❀सो मो अति लडि ब्याहन आवैं॥
बडडे गज तुरंग सजि लावैं❀इहिं पुर खेत आइ छबि पावैं।
गज अँबारी राजै बरनाँ❀त्रिभुवन मोहन कौतिक करनाँ॥
ऐसे सजन बुलावनि राधा❀राज दुलारी रूप अगाधा।
रतन अलौकिक यसुमति उरकौ❀होहि पाहुनौ सो या पुर कौ६४
धनि सुहाग मणि बरनी मेरी❀कहाँ लग करैं प्रशंसा तेरी।
भांन वंश कौ उपमा दैंनी❀तन कमनी सावक मृग नैंनी ६५
इहिं पुर सोभा तो तें पाई❀विधना सचि अंग धरी निकाई[1]
तात ब्याह तुव रच्यौ जु ऐसौ❀भुव तल सुन्यौं न देष्यौ जैसौ॥
आइ सजन के तम्बू तनि हैं❀सुर देखत अति अचिरज गनिहैं
ऐसो तात दाइजो दै हैं❀ब्रजपति कौ जु भवन भरि जै हैं
धनि रावलिपति निर्मल करनीं❀जिहिं कुल प्रगटी तौ सी बरनी
गोद पसारि नन्दीस्वर रांनें❀लई सगाई सब जग जानें॥६८॥
समधी सम लाइक हैं इत उत❀बनो सुलच्छनि बनाँ नन्द सुत।
समधिनि यसुमति कीरति रांनी❀भाग बली सब हीं जग जांनी॥
बरना अग्रज हलधर नाम❀बरनी को अग्रज श्री दांम।
इतहिं भांन नौ सब सुख दायक❀उत नौ नन्द सजन सब लायक॥
तिन घरनीं समधिनि जु हमारी❀तिनकौं दै हैं गनि गनि गारी।
बरनी कौं इहिं विधि दुलरायौ❀बीती निसा भोर ह्वै आयौ ७१
कीरति बहु मनुहारि जु कीनी❀सबनि गोद भरि मेवा दीनीं।
बेगि आइ कैं पुनि सुख दीजै❀तेल चढावन की विधि कीजै ७२
दोहा—हरद हाथ मंगल महा, भयौ भान के ग्रेह।
रजनी गत बासर भयौ, सब मन बढ्यौ सनेह ॥७३॥
राधा ब्याह की मोहनी, लीने चित्त चुराइ।

---

[1] १—सुन्दरता।

लाडी रुचैं जु गाइबौ, देखैं बिनु न सुहाइ ॥७४॥
बरनीं हरनी सबनि मन, वृन्दाबन हित रूप ।
जस गाइक त्रिभुवँन बधू, कहा कहौं कथा अनूप ॥७५॥
लोक लोक घर घर जु प्रति, मंगल भयौ प्रचार ।
हरि अहिलादिनि कौ कहौं, कहाँ लगि सुख बिस्तार७६

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीराधा हरद हाथ मंगल बरनन उन्तालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ चालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–भुव मंगल मंगल जु नभ, मँगल दिशनि उदोत ।
अति मंगल वृषभांन पुर, नृप ग्रह जगमग होत ॥१॥
सुर बांछित बांछित जु मुनि, नर बांछित हे एह ।
सो मंगल भयौ प्रगट भुव, काहे न बढैं सनेह ॥२॥
मुनिनु सोधि कही सुभ घरी, तेल चढावन काज ।
सजनी ता छिन कीजियौ, जोरि धरौ सब साज ॥३॥
श्री कीरति ऐसें कहति, आनन्द दहली गात ।
आधी आधी कढत हैं, सुख भींजी मुख बात ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तेल चढावन बासर भयौ❁सब मन बाढ्यौ आनन्द नयौ ।
अति मन मुदित लली की माइ❁कह्यौ सखी सौं यौं समुझाइ ॥५
तेल सबेरौ चढि है आजु❁मन दैं कीजे मंगल काज ।
गई नयनियां तिहि छिन दौरि❁फिरति बुलावति सब की पौंरि॥
राधा तेल चढन की बार❁बेगि चलौ तन करौ शिंगार ।
बैठीं भवँन भान नौ घरनीं❁महा भाग मंगल विधि करनीं ७
तिननि बुलावन मोहि पठाई❁हौं आतुर गति तुम पै आई ।

बेगि चलौ गहरु कत कीजै❀मंगल साज करनि सजि लीजै८
सुनि कैं सबहिं चौंप चित बढी❀तन अति ओपीं घर ते कढीं।
इक सुनि कै हिय भरी हुलास❀चाहैं चल्यौ जु कीरति पास ॥९
इक आवति इक भरी उमाहैं❀एक मांन अधिकौ सो चाहैं।
इक एकनि कौ मारग हेरैं❀इक ठाडीं एकगि कौ टेरैं ॥१०॥
इक मंजन अंजन दृग करहीं❀इक पट भूषन अँगनि धरहीं।
इक पौरिनु पैं ऊँभी[1] सोहैं❀एक बुलावन कौं मग जोहैं ११
इक एकनि कौ जाइ निहोरैं❀एक जूथ अपनें संग जोरैं।
एक बचन मुख भाषति ऐसे❀पहिल चलौ छबि पावौ जैसे १२
एक कहैं हम चलि हैं तब हीं❀मन्दरा बजैं भौंन घर जब हीं।
एक टोल सजि चलीं जु आछैं❀एक चलीं लगि तिन के पाछैं १३
इक जोरति हैं पार परोसिनि❀एक[2]कहति मो बिनु चलियौ जिनि
इक भई मगन तेल मंगल सुनि❀एक शिंगारि करति तन पुनि पुनि
एक भई जु मन्द गज गवनीं❀आई एक करति पद नवनीं।
इक ग्रह छांडि न कबहू निकसीं❀ते उठि धाईं तन मन बिकसीं १५
इक मारग देखति हीं कब कीं❀सुनत बुलावौ आवति रवकीं[3]।
एक तेल दिन सुनि कैं फूलीं❀मनु आनन्द हिंडोरें झूलीं ॥१६

दोहा—ग्रह ग्रह ते शिंगार करि, सजि टीके कौ साज।
जूथनि मिलि चलीं राज घर, तेल चढावन काज ॥१७॥
गावति आवति छबि भरी, कर लियें कंचन थार।
मनु[4] मयंक कमलनि चढे, आये कौतिक हार ॥१८॥
बिछुवा नूपुर किंकनी, कंकन अस झनकार।

---

[1]—प्रतीक्षा में, [2]—अर्थात मेरे को साथ लिये बिना मत जाना, [3]—उमग कर कूदती हुई, [4]—हाथ कमल हैं थाल उन पर चन्द्रमा यह उपमा है।

मनहुँ मुनैयां[1] छबि भरीं, पढत मदन चटसार ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

ब्याह बधाये ऐसें गावैं❀काम कामिनि कौं जु लज्यावैं ।
आवति हैं तन मन सुख ओपी❀त्रिभुवँन त्रियनि तिलक ब्रजगोपी
जबहिं भौंन मणि मन्दिर धसीं❀मनु छबि निकर एक संग लसीं।
बहु सनमाँन दियौ पुनि लीयौ❀कुँवरि हिं निरषि सिरायौ हीयौ॥
तेल चढ़ावन दिन श्री राधा❀देखन बढ़ी सबन मन साधा।
भाग्य भरी ब्रज गोपी आईं❀अरु सब घर बैठी पछिताईं ॥२२
तेल चढ़ावन बरियां जांनी❀हरषि उठीं रावलिपति रांनी।
बोलि सुहागिनि अजिर लिपायौ❀रचि रचि मोतिनु चौक पुरायौ॥
कलश गणेश जु थाप्यौ जहां❀पट्टा आनि बिछायौ तहां।
इष्ट देव सब विधि आराधैं❀लगुना सगुना सब ही साधैं २४
पट्टा बैठी कंचन तनीं❀भौंन वंश मंगल ओपनीं।
कर कंकन विधि कर जु बन्धावैं❀बनिता हरषी मंगल गावैं ॥२५
तेल चढ़त तन चम्पक बरनीं❀जो मंगल को मंगल करनीं।
लोक रीति सब करैं जु बनिता❀चाची ताई राधा जनिता ॥२६॥
हरदी तेल सुहागिनि लै कैं❀अंग लगावति रहति चितै कैं।
दरपन से सब अंग जगमगैं❀निरखत दृग पल सों न पल लगैं॥
ज्यौं ज्यौं भामिनि अंगनि परसैं❀त्यौं त्यौं सोभा बिनु मित दरसैं।
सागर बाढ़ति लहरी मानौं❀किहि विधि अतिलडि रूप बखानौं
लखि बनिता रहि जाति अबोलि[2]❀डीठि लगन डर कोऊ न बोली
कीरति सुकृत सुधनु यह पायौ❀इक रसना करि जातु न गायौ॥
राजत दोऊ हाथ हथ्यौंनाँ❀कमलनि चढैं मनौं शशि छौंना

१—लाल चिड़िया, २—मौंन ।

मूठि उठावैं चाचक लेंहिं❀शशि बदनीहि आसिका देंहिं ३०
सबनि सुबिधि न्यौंछावरि कीनीं❀मेवा भरि भरि गोदी लीनीं।
भूवा आनि आरतौ कीयौ❀अंचल वारि माइ ग्रह लीयौ ३१
छबि पर वारि वारि पियौ पानी❀कुँवरि जिमाइ अपु कर रानी।
बँटतु बाइनौं[1] बगर बगर[2] में❀मंगल महा वृषभांन नगर में ३२
प्रथम तेल दिन बरन्यौं ऐसें❀लोक वेद विधि चहियै जैसें।
देस देस कौं न्यौंतौं गयौ❀मंडफ ब्याह सुदिन लिखि दयौ॥
अज्ञा लै जु चले प्रतिहार❀ह्वै रह्यौ गह गड राज द्वार।
भांन भवँन भई रचना ऐसी❀सुर नर नाग लोक नहिं जैसी ३४
जगमगाइ रहीं रतननि जारी❀चीती नाँनाँ रंग किवारी।
फटिक मणिनु के खंभ विराजैं❀नील मणिनु के छज्जे भ्राजैं ३५
विद्रुम मणि की देहरि बनीं❀फैलि रही तहाँ सोभा घनीं।
हाटक भीति जटित नग पांति❀फाटिक रतन जटे बहु भांति ३६
भवँन सतखनें गिरि पै सौहैं❀जिनकौं देखि अमर गन मोहैं।
तिन पै जरी वितान झलमलैं❀मनसिज हू कौ मान दलमलैं ३७
मोतिनुकी झालरि चहु कोरनि❀अरुण मणिनु के झूँमिक तोरनि।
पँच रँगपाट डोरि गुहि कीनी❀नाँनाँ रंग परदनि छबि दीनी ३८
साइबांन सुनहरी लसे हैं❀मनहुँ मोद भरि भवँन हँसे हैं।
नव रतननि की बन्दन माला❀द्वार द्वार राजति जु विशाला ३९
जहाँ तहाँ बिछै बिछौंना कमनीं❀राज भवँन अस बानिक बनी।
धुज पताक फरहरति जु ऐसें❀सोभा उलही गोभा[3] जैसे ॥४०
मन्दिर शिखिर कलश छवि देंहि❀दृष्टि परत मन कौ हरि लेंहि।
अस रचना घर नौ हूं भाँन❀वारौं जिन पर विधि जु बिमांन॥

१—भेंट, २—सब जगह, घरों, मार्गों, गलियों में, ३—जो हृदय में अपने आप धँस जाए।

पौंरि पौंरि अस चित्र रचे हैं❀सोभा मनहु समूह सचे हैं।
भवँन अनेक भांन पुर माहीं❀छवि बरनौं अस मो मित नाहीं ॥
कोसनि लग बजार जहाँ छाये❀सौंमा बहु भंडार भराये।
अवँनि सँवारे सजननि काज❀ज्यों सुख पावैं गोप समाज ४३

दोहा–अस पुर मंगल ब्याह कौं, रच्यौ जु श्री वृषभाँन।
प्रथम हिं उत्सव तेल कौ, कीनौं बिधि[1] जु विधांन ॥४४॥
दूजौ दिन न्यौतौ भयौ, महा भाँन घर बाँन[2]।
तेल चढायौ कुँवरि तन, सब कौं दै सनमाँन ॥४५॥

॥ चौपाई ॥

पुर परिवार सबै जन आये❀बहु आदर दै कै जु बलाये।
श्री राधा सखियनि कें साथ❀जेंवति है ताई के हाथ ॥४६॥
नौ भ्राता जेंवत इक लार❀मधि राजत वृषभाँन उदार।
मंगल गावैं पुर की भाँम❀अति छवि महाभाँन के धांम४७
उज्जल बनें सबै पकवाँन❀स्वाद पाइ सब करैं बखाँन।
भोजन करि सब पूरन भये❀अति रुचि मांनि आचवँन लये
कुल जाँचक भिक्षुक सनमानैं❀सुखित भये सब सुजस बखानैं।
राधा कौं लै बैठीं गोद❀ताई भरी महा मन मोद ॥४८
करि करि न्यौछावरि धनु देहिं❀चटकै करज[3] वारनैं लेहिं।
सब गावति निज मन्दिर आई❀श्री राधाहिं संग करि लाई ॥५०
न्यौतौ होहि बाँन कौ घर घर❀जेवैं बरनीं सहित नारी नर।
तेल चढै नित ताही रीति❀नित नव मंगल गरुवी प्रीति५१
काकी ताई मिलि दुलरावैं❀न्यौतें बांन सुतेल चढावैं।

---

[1]—शास्त्र विधि के अनुसार, [2]—भोजन का निमन्त्रण बनी को, [3]—अँगुलिया से चुटकी बजा कर।

श्री राधा उर आनन्द भरनीं❀सब कें घर मंगल बिस्तरनीं॥५२
लाडी गावन सबनि उमाह❀दृग देखन जु ब्याह की चाह।
तेल चढत दिन सात जु बीते❀अब ह्वै हैं सब के चित चीते॥
मिली परस्पर बातें करैं❀मुख तें अमीं बीज से झरैं।
जननी मन अति आनन्द भरीं❀काल्हि जाइगी चौंरी धरी ॥५४
खेलति कुँवरि निकट जब आई❀हँसि कै कीरति अंक लगाई।
बेटी जबहिं सजन घर जै है❀मेरे प्राँन पोष को दै है[1] ॥५५॥
तेरी लागौ मोहि बलैया❀कैसें धीरज धरि है मैया।
तू मेरे मन्दिर को गहनौं❀दृग देखन को तू ही लहनौं[2] ॥५६
बिपुल लाड कौ तू ही भाजन❀सखिनुवृन्दमिलिअतिसुख साजन
द्वै दिन लेहुँ बदन तो हेरि❀बाट पाहुनीं ह्वै है फेरि ॥५७॥
मन हीं मन बतरानी रांनी❀हिय कौ प्रेम सु उझल्यौ बांनी।
दृग[4] उझल्यौ दृग हीं पी गई❀अतिलडि कौं न जनावति भई॥
आवौ री सजनी मिलि आवौ❀कुँवरि व्याह की लाडीं गावौ।
साँझ मल्हावौ दीपक बार❀जाहु बुलावन नगर मझार ॥५८
बैठीं होइँगी भरी उमाहैं❀बाट बुलावन की सब चाहैं।
गाँवन कौं सब हिय अनुराग❀बर बरनीं दुलरावैं भाग ॥६०॥
लावौ बोलि लली के तात❀मन दै सुनैं जु मेरी बात।
भौंन अथाई ते उठि आये❀रांनी ऐसे बचन सुनाये ॥६१॥
तुम हो भूप भयानें देस❀ब्याहन आवैं घोष नरेस।
नीकी भांति पाक बहु रचौ❀नांनां बिधि की सांमा सचौ ॥६२
परचारनि कौं अज्ञा करौ❀साज सम्हारि सम्हारि जु धरौ।

१—मेरे प्रानों को कौन पोषण करेगी, २—नेत्रों का लाभ तेरे दर्शन ही हैं. ३—फिर तो महिमांन की तरह प्रतीक्षा होगी, ४—असगुन की आशंका से प्रेम के अश्रु नैनों में पी गई।

ब्रजपति संग भूप बहु आवैं❀तुम तें सब सनमान जु पावैं ६३
भूषन बसन रतन गज बाज❀तिन लायक बहु साजौ साज।
श्री राधा तुम प्रांन समांन❀ताकौ ब्याह सुनौ दै कांन।।६४।।
बन्धुनि मिलि बिचार यह कीजै❀जसु लीजै बहु संपति दीजै।
दुहुँ दिस रस तुम राष्यौ रहि है❀लोक सुजस की सलिता बहि है।।
गोप[1] सभा अब बैठो थोरौ❀यह मानौ मेरौ जु निहोरौ।
पाक भवँन भंडार जु हेरौ❀अब हीं जाइ कोजिये फेरौ ६६
यह सुनि बिहँसे रावलिधनी❀रांनी बहुत तात घर भँनी।
तुम यह कही नीति की कथा❀हौं करि हौं सब ही बिधि जथा।।
उठि नृप राज सभा में गये❀बन्धुनि मिलि जु बिचारत भये।
जहां तहां दौरे परचार[2]❀कीजै अधिक पाक बिस्तार।।६८
परषि परषि बहु साजनि धरैं❀पुर जन बन्धु प्रशंस जु करैं।
रजित रुकम नग जटित सु भूषन❀अति अमोल सब ही निरदूषन।।

दोहा—हय गय करहा पालिकी, रथ गोधन के टोल।
तिनकौं साजि शिंगार बहु, बने जु अति निरमोल।।७०।।

।। चौपाई ।।

झूलैं जरी पाट सकलात❀जैसी सोहैं जाकें गात।
ते न्यारे भंडारनि भरी❀गहनेंनु में बहु रचना करी।।७१
पुर जु अलंकृत इहिं विधि दरशै❀देखन कौं देवनि मन तरशैं।
मैं उपमा उर खोजी घनी❀या रचनां सम एक न बनी।।७२
श्री सदेह बिहरत है जहां❀तिहि सम लोक बताऊँ कहां।
अष्ट सिधि नव निधि बांछित एह❀हम बासौ पावैं इहिं ग्रेह।।७३

१—श्री कीरति एक विज्ञ रानी थी कैसी समय अनुरूप प्रार्थना पति से कर रही है शिक्षास्पद वर्णन है, २—सेवक।

धनि बल्लबकुल जननी राधा❀प्रभुता मधुर जु सिन्धु अगाधा।
दृग देखैं कहि सकत न बैंन❀समुझैं चतुर गूँगे की सैंन ॥७४
नन्द गांव हैं दूत पठाये❀ते सब समाचार लै आये।
महाराज[1] गोपनि के डेरे❀कोसनि लगि छाये हम हेरे ॥७५
सुनि नरिन्द दूतनि की बांनी❀हिय जिय फूल अधिक ही मांनी
मुनिनु आइ ऐसे मुख बरनी❀मंडफ रचना प्रात जु करनी ७६
दोहा–तेल बान मंगल महा, भयौ भांन के भौंन।
नित सुख वाढत सतगुनौं, बरनन समरथ कौंन ॥७७॥
अमित चरित अहिलादिनी, दरसें ग्रह वृषभान।
वृन्दाबन हित रूप बलि, बरनें बुद्धि प्रमान ॥७८॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदास जी कृत श्रीराधा तेल तथा बांन मंगल बरनन लीला चालीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ इकतालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–मंडफ रचिये प्रात उठि, कहत विप्र अस बैंन।
महाराज रावलि धनी, अब कीजै सुख सैंन ॥१॥
सुभ बासर पुनि बार सुभ, सुभ नक्षत्र सुभ जोग।
थम्भ रुपावौ सुभ घरी, बोलि कुटम्ब के लोग ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कीयौ असन सैंन पुनि करी❀बीति गई रजनी सुख भरी।
नित कृत कियौ सबनि उठि प्रात❀किये अलंकृत कमनी गात ॥३
फूलत सबै लगाइत आये❀रावलि पति कौं सीस नवाये।
कहे नरनाथ जु ऐसें बैंन❀पुर पुर जाहु गोप गन लैंन ॥४
लाइ सबनि कौं एकत करौ❀सुभ बेला रचि मंडफ धरौ।

---

[1] १—वृषभांन के गुप्तचर बरात का भेद लाकर कह रहे हैं।

सिमिटे आइ छबीले गोप❀भान भवँन भई अतिसै ओप ॥
कीरति सबहि बुलाई गोपी❀सुनि कैं आई तन मन ओपी।
अब सजनो मंडफ छिन आयौ❀दई कियौ सब कौ मन भायौ॥६
बहु बाजे नीकी विधि बाजैं❀अजिर गोप गोपी गन राजैं।
मंडफ रचना इहिं विधि करी❀मानौ सोभा मूरति धरी ॥७॥
दारु पलास खंभ रुपवाये❀अति हीं चित्र बिचित्र कराये।
हरे हरे बांसनि मंडफ छायौ❀ऊपर जरी बितान तनायौ ॥८॥
मोतिनु झालरि अस छबि जानौं❀अजिर[1] भाग जगि हँसे जु मानौं
चौरी[2] धरी जु चीति सँवारी❀निगम रिचा बिप्रनि उच्चारी॥९
अम्बर सोहे पीत छबीलौ❀सब के चित चोरत चटकीलौ।
महामुनिनु जिहिं बिधि जु बताई❀ताही बिधि रचना करवाई १०
मंडल रीति जु चौक पुरायौ❀कमलाकृति दल सुहथ बनायौ।
पटा बिछाइ बनीं बैठारी❀सुभ बेला जब मुनिनु बिचारी११
ग्रह पूजा करि जंत्र पुजावैं❀बांधि थंभ पुनि तिलक करावैं।
बधू सुलच्छन मंगल गावैं❀बरनीं कें तन तेल चढावैं ॥१२॥
मणि पट्टा पर बैठी सोहैं❀रावलिपति की कुल मणि जो हैं।
मरुवटि[3] बदन सेहरौ साजैं❀अंग अंग छबि उमगति आजैं १३
वारि आभरन बधू वगेरैं❀छबि छकि जाति कुँवरि तन हेरैं।
अब होइ कुँवरि नन्द घर गहँनौं❀धनि बडभागनिजिनदृगलहनौं
पुनि धीरज दै मन को राखैं❀बेगि आइ हैं यौं मुख भाखैं।
कालिह सुभ घरी फेरे परि हैं❀प्रांन वारनैं तब हीं करि हैं १५
बनीं बनाँ होइ आगें पाछें❀यह छबि हम निरषैंगी आछें।
ऐसें करैं मनोरथ नारी❀जे राधा दुलरावन हारी ॥१६॥

---

[1] —मानो आंगन के भाग्य जाग उठे वह हँसने लग पड़ा हो। [2] —वेदी, [3] —मुख को कुछ कुछ ढक देने वाला।

तेल चढावैं छबि लषि धूजैं[1]❀मनु दामिमि दामिनि कौं पूजैं।
कुशम सेहरौ यौं मुख भ्राजै❀मांनौ शशि बदरी में राजै ।।१७
भूवा आइ आरतौ कीयौ❀माइ लली कौं मन्दिर लीयौ।
भोजन करि लै अति लडि मेरी❀मोहि बलैया लागौ तेरी ।।१८।।
दै इक ग्रास लाड उर सरसै❀औरैं और बदन छबि दरसै।
मन मन यौं जु बिचारै रांनी❀यह कौतिक कहि सकौं न बांनी।।
कै[2] काहू जु देव को बरु है❀किधौं छबि कियौ कुँवरि तन धरु है
बूझि न सकौं दीठि तें डरौं❀यह सन्देह सिन्धु क्यौं तरौं ।।२०
लहरें उठै लाड निधि मांहीं❀सुता रूप मित होति जु नांहीं।
इहिं बिचार लेइ बुद्धि बहु झोंका❀तहाँ[3] डीठि डरु ही होइ नोका
लली[4] कहैं नहिं मोहि जिमावै❀मैया कहा नींद तुहि आवै।
तब चित चेति कौर देइ आँनन❀सुबिधि सँवारि आपने पांनन[5]।
त्रिपिति कराइ नीर अँचवायौ❀बदन पौंछि जननी सुख पायौ।
न्यौंतौ लै जु भूप गन आये❀कनक रतन रथ हय गय लाये।।
भूपनि कौं न्यौंतौ रुचि लीजै❀भवँन अनेकनि बासौ दीजै।
पुर परिवार गोप सब आये❀न्यौंतौ लै सादर बैठाये ।।२४।।
श्री राधा मंगल विवाह सुनि❀आये लोक जिते जु महामुनि।
जाइ जाइ तिनके पद बन्दे❀श्री वृषभाँन निरखि आनन्दे २५
परम अनुग्रह मोपै कीयौ❀करुनाँ कुशल दरस तुम दीयौ।
सब आरधि जु भवँन बुलाये❀चरन धोइ आसन बैठाये ।।२६।।
भोजन की बीनती पुनि कीनी❀परम कृपाल मांनि मुनि लीनीं।

१—चलायमान जैसे ध्वजा होती है आप! भूलने लगीं, २—रानी क्षण क्षण में नई नई छबि को देख मन में कह रही हैं, ३—अपनो नजर लगने के भय से (ही) हृदय(नौका) नाव की तरह डगमगा जाता है ४—चौपाई १६ ऊपर एक ग्रास देकर मैया विभोर हो गयी थी सो श्री जी चकित हैं मुझे मैया एक ग्रास देकर क्या सोने लग पड़ी है, ५—हाथों से।

पात पलास बिछे पनवारे✽कुल प्रोहित भये परसन हारे।
उज्जल सब पकवांन जु परसे✽जेंवत मुनि जु स्वाद सुख सरसे।
कर जोरें नरनाथ जु ठाडे✽ग्रास लेत मुनि अति रुचि बाढे॥
राधा खेलति लखि सचुपावैं✽मन करिकै मुनिवर सिर नावैं।
दृगनि धरे कौ फल सब लैंहीं✽मन हीं करि जु आसिका दैंहीं२९
पूरन भये भोजन करि जबहीं✽अँचमन लेत महा मुनि सबहीं।
बीरी दछिना बांछित दीनीं✽हरषि असीश सबनि की लीनीं॥
थल कमनी लखि हरषे हीये✽गहवर बन में आसन कीये।
जिहि विधि सुखित भये मुनिवृन्द✽त्यौं सनमांने भान नरिंद ३१
पुनि जेंवन सब भूप बुलाये✽पुर परिवार गोप मिलि आये।
पंकति करि बैठारे नींके✽परसे पाक जु स्वाद अमीं के ३२
बधू झरोखनि बैठी गावैं✽सजन सनेहिनु गारि लगावैं।
जौं[1] कैं पुनि जिनि दुरियौ मोरीं✽न्यौतौ लीजैगौ बरजोरीं ॥३३
बनितनि ऐसें बचन उँघारे✽हर हर हँसे जु जेंवन हारे।
आनन्द अस वृषभाँन भवँन हैं✽धन्य लोक भये यौं ब्रजजन है॥
मंगल गावैं बनिता हरषैं✽मनो सुधा की धारा बरषैं।
भोजन स्वाद कहा जु बखानौं✽सुविधि जिमावत रावल रानौं३५
आडौ हाथ सबनि जब दीयौ✽अज्ञा लै पुनि अँचवन कीयौ।
बीरी देत जु आदर करि कैं✽डेरनि गये सबै सुख भरि कैं ३६

दोहा—हय गय रथ अरु पालिकी, करहा रतन अनेक।
बिनु मित जहां न्यौतौ पर्यौ, कहा कहौं रसना एक ३७
न्यौतौ लै भोजन जु करि, बैठे गोप समाज।
मारग हेरत भातइनु[2], आवन कौ दिन आज ॥३८॥

---

[1] १—गारी दे रहीं हैं कि खा पीकर कहीं मौरों में छिप न बैठना इत्यादि। [2] २—अर्थात भातृगन, पीहर वाले विवाह का भात साज लाने वाले हैं।

कीरति बूझति सखिनु सौं, कित बिरम्यौ मो वीर।
पहिरन भात उमाह मन, छिन छिन होत अधीर ॥३९॥

॥ चौपाई ॥

अरी[१] भटू मेरौ वीर न आयौ❀माइ सभागिनि क्यौं न पठायौ।
भावज हूं गुनवंती मेरी❀कारन कौंन समझि कहि ए री॥
पिता उदार विदित है मेरौ❀याते मन सन्देह घनेरौ[२]।
आउ बटोही मा के जाये❀यौं कहि रांनी सगुन मनाये ४१
उडि मगरी के वाइस[३] ए रे❀जो आवै अब सोदर मेरे।
दौरि सन्देसो कोऊ लावौ❀वीरनु आयौ श्रवन सुनावौ॥४२
मंगल बचन कहै यह कोई❀जो मांगै पुनि दै हौं सोई।
यह विवाह मंगल श्री राधा❀भात पहिरने मो मन साधा ४३
तीनि वीर मो जननी जाये❀मैं न्यौतौ दै कैं जु बुलाये।
जब हिय में अति हीं अकुलानीं❀महल चढी रावलिपति रांनीं४४
बार बार लेंइ सगुन परिच्छा❀कबहूं करैं सखिनु कौं सिच्छा।
बूझि[४] जोतिसिनु जाइ नगर में❀सोदर[५] आवतु जौरु डगर में ४५
रवि रथ पच्छिम दिस कौं नयौ❀सोदर आवन अब हूं न भयौ।
मारग ओर दृष्टि दौरावैं❀बन्धु आगमन अति मन भावैं॥
गज तुरंग खुर रैंनु बढी हैं❀दिषिपति ऊँचैं गगन चढी हैं।
कीरति देखि मुदित भई भारी❀सजनी[६] हूं मन दै जु निहारी ४७
रांनी वे आवत भातई❀मैं नीकें यह परषि जु लई।
यह जु बात मन निश्चय धरौ❀सब सन्देह दूर परहरौ ॥४८॥

१—श्री कीरति जी चिन्तातुर सखी से पूछ रही हैं, २—सच्चे सनेह में अनिष्ट आशंका का स्वरूप दिखा रहे हैं, ३—कौवे की उडान में सगुन की परीक्षा ले रही यदि दाहिने उड़ा तो अनुकूल होता है, ४—सखी से कहा नगर में ज्यौतिष से पता लगाओ कि क्यों नहीं आये, ५—क्या भाई रास्ते में हैं, ६—साथ की सखी ने भी देखा।

हय गय गोधन करहनि टोल❀सकटनि भरे बसन निरमोल।
सुनि मेरी बरनीं अति सुखदांनी❀डोला चढी जु तेरी नांनी ॥४९
वे दिषि[1] छबि सौं अस्व नचावैं❀ये तेरे मामा बनि आवैं।
रथ में चढ्यौ कुँवरि तो नाँना❀यौं राजतु मनो अमर बिमांना॥
सकटनि बैठीं बनिता गावैं❀राधा बरनीं कौं दुलरावैं।
मांमी भली लली हित करनीं❀आई बहु मंगल बिस्तरनीं ॥५२
आये सबहिं नगर के नेरैं❀अति आनन्द देत दृग मेरे।
रोंम रोंम हरषित हैं रांनी❀गदगद निसरति मुख ते बांनी॥
जब सुधि पाई रावलि रानैं❀गहकि मिले सब बिधि सनमानैं।
सुन्दर भवँन बैठना दीयौ❀सरबत बहु कलशनि भरि कीयौ॥
फिर्यौ बुलावौ सबै नगर में❀बधू शिंगारी बगर बगर में।
सब आवति मन भरी उमा हैं❀गलिनु भीर सोभा कित ना हैं५४
मंगल महा बिस्तर्यौ पुर में❀पुनि सतगुनौं जु कीरति उर में।
अजिर लिपायौ चौक पुरायौ❀सब कोउ सिमिटि राजघर आयौ
वीर नाम लै गावति बाला❀पौंरिनु ठाढी मनु छबि माला।
राज दुवारैं घुरैं निसांनां❀बिरद पढतु भिच्छुक बिधि नाँनाँ
तिलक सँजोइ[2] भान भये ठाढे❀इत उत उर आनन्द जु बाढे।
दुहुँ दिसि बनिता मंगल गावैं❀भात सँजोइ भातई लावैं ॥५७
कौतिक सिमिटे[3] पुर नर नारी❀बीथिनु होत कुलाहल भारी।
रोरी अच्छित माथे धरि कैं❀बहिनि बीर लिये आदर करिकैं॥
छोटे बडे जु सब हीं मिले❀रस बातनि कहि अति सुखभिले[4]
आरज बिप्र मानि[5] सब बोले❀बसन अमोलक बकुचा[6] खोले५९
बिधि सौं सादर ते पहिराये❀भ्रातनि सहित भान पुनि आये।

१—वह देख ले, २—सजा कर के, ३—इकट्ठे हुए देखें कि राधा की नानी क्या देती हैं, ४—सुख में डूब गये, ५—आदर करके, ६—सिंदूक।

पटुका कंचुक पाग दुशाला❀रतन पेंच कुंडल मणि माला६०
मही भान कुल यौं सनमानैं❀लाइक इन्दुसेन जग जानैं।
कीरति सहित भान नौं रांनो❀बहिनि समान सबै सनमांनी६१
पट भूषन नख सिख पहिराई❀मिलि बन्धुनि सौं अधिक सिहाई
पौंन छतीस नगर में जेते❀जथा जोग सनमांने तेते ॥६२॥
बांछित दियौ लगाइत जनकौं❀कियौ प्रसन्न सबनि के मन कौं।
कीरति तात भात अस दीयौ❀निर्मल जस सब जग में कीयौ६३
मुखरा हिय जिय मोद जु भरो❀राधा कुँवरि गोद लै धरी।
पुनि पुनि बदन निहारति ऐसें❀दृग पल सौं पल लगैं न जैसें६४
भूर भाग जिन अपनौं मांन्यौं❀नर नारिनु जिन सुजस बखांन्यौ
जेंवन कौं भातई बुलाये❀पाइ ध्वाइ सादर बैठाये ॥६५॥
भांति भांति की परसत साँमाँ❀भातईनु दुलरावति भाँमाँ।
सादर श्री वृषभाँन जिमावैं❀ग्रास लेत सब अति सचु पावैं६६
लेहु लेहु यह ह्वै रही बाँनीं❀पाकनि रचना परै न बखाँनी।
कौर लेत हैं सब हीं रहि रहि❀ग्रींव डुलावत स्वादहिं कहि कहि॥
परसन हार जहाँ तहाँ डोलैं❀पूरन भये सबै यौं बोलैं।
जल अँचवन करि बीरी लीनी❀पुनि मिलि कैं रस बातैं कींनी६८
इक जेंये इक जेंवन आवैं❀जहाँ तहाँ तें न्योतो लावैं।
श्रीनिवास[1] कीयौं बहु बिधि हैं❀संतति[2] अष्टसिद्धि नवनिधि हैं ६९
सेवति श्री राधा पद तल हैं❀मूरति वन्त विराजति भल हैं।
पुर मंगल दिपियतु घर घर हैं❀हिय अनुराग नारि पुनि नर हैं॥
माँमी मगन होति दिपि दिपि मुख❀श्रीराधा दायक अतुलित सुख
अंग अंग सोभा की सींवाँ❀भुज भरि भरि जु लगावति ग्रीवाँ॥

१—लक्ष्मी ने स्वयं डेरा डाला है कि श्रीराधा की सेवा मिले, २—निरन्तर उपस्थित।

चाहैं सुन्यौं अमृत मय बाँनी❀कहवावैं सुन्दर जु कहाँनी।
माँमी लाड करतिबहुभतियाँ[1]❀त्यौं त्यौं लली कहति सुख बतियाँ
मैया सुनति ओट में रहि कैं❀अतिलडि हँसति कहाँनी कहि कैं
जननी दृष्टि परि गई जब हीं❀सकुचि कुँवरि चुपु रहि गईतबहीं
मो चित को बित[2] राज दुलारी❀रांनो अंक भरी सुकुँवारी।
बेटी जबहिं सासु घर जै है❀मुहि घर आँगन क्यौं जु सुहै है
भोजन करि मेरी प्राँननि प्यारी❀मैं न भीर में तोहि सम्भारी।
मैया मेरी नाँनी आई❀बहुत खिलौना मो कौं लाई ७५
अपनें हाथ जिमावति मैया❀आइ गयौ श्री दाँमा भैया।
दूजें अंक ताहि बैठारयौ❀मुख देबे कौं कौर सँवारयौ ७६
गहि रहे हाथ मात के दोऊ❀समझाये समझत नहिं कोऊ।
बहिन बीर ने अरबी ठाँनी❀भागिनु कौ फल मानति राँनी॥
भाँन राइ ताहीं छिन आये❀कौतिक देखि प्रेम निधि न्हाये।
बेटी दौरि आउ मिलि मोकौं❀हौं जिमाइ हौं नीकैं तो कौं ७८
तात अंक बैठी छवि पावैं❀भैया कौं दूरि ते चिरावैं।
हौं जेंवति हौं बाबा हाथ❀तू अब रहि मैया के साथ ॥७९॥
राधा मैं जु समझि अब लई❀तू मो सौं डरि कैं भजि गई।
हौं मैया कौं अति ही प्यारौ❀मोहि कबहुँ करि सकै न न्यारौ॥
बाबा भैया झगरौ करैं❀देखौ तुम हूं तें नहिं डरैं।
कर गहि कैं तब रावलि राइ❀बीर बहिन दोउ दिये मिलाइ ८१
जूथ जूथ मिलि आंई नारीं❀मंडफ राति जगावन हारीं।
नवल बनीं कौ नवल ही बरनां❀सुख दायक ब्रज जन मन हरनां॥
शशिके निकर लज्यावन हारौ❀गोकुल पति प्राँननि कौ प्यारौ।

---

[1]—बहुत प्रकार, [2]—धन।

मुरली निपुन बजावन जो है❀यसुमति लाड लडायौ सो है ८३
गोधन पाल लाल नवरंगी❀सो ब्याहै जु कुँवरि गौरंगी।
गोपनि सुत कौ मुकट मनी है❀सुन्दरता की सींव[1] बनी है ८४
नाम मदन मोहन है जाकौं❀साँवल बरन बिलच्छन ताकौं।
भाग बलो राँनी कौ जायौ❀सो राधा दूलह जु कहायौ ॥८५
रूप अवधि है बनी हमारी❀सब गुन मन्दिर राज दुलारी।
सजन घोष राँनौं जु कहावैं❀काल्हि कुँवरि कौ ब्याहन आवैं॥
सजि बरात ऐसी लावैंगौ❀देवनि अचरज उपजावैंगौ।
इहिं पुर खेत आइ छवि दै हैं❀अति सनमाँन भौंन ते पै हैं ॥८७
तम्बू आइ चहूं दिशि तनि हैं❀बैठे तहाँ गोप बनि ठनि हैं।
तिन मधि लसैं घोष को राँनौं❀भयौ उदोत प्रात रवि मानौं ८८
ऐसे सजन बुलावनि बरनीं❀तात सुजस लोकनि बिस्तरनीं।
महर महरि कौ अज्ञा कारी❀जाहि लगैगी गारी प्यारी ॥८९
पुत्र विवाह हरष होइ मन कौं❀इहि पुर खेत खरचि हैं धन कौं।
मौरु सेहरो सुत सिर धरि हैं❀तब रतननि बौछारि जु परि हैं॥
लाल बना को ताऊ प्यारौ❀धन खरचैगौ जोरयौ[2] न्यारौ।
बना संग बलिदाऊ आवैं❀हम गुलचा दै उन्हैं रिझावैं ९१
सजन आगमन कौं मिलि गावैं❀इहि बिधि बनिता राति जगावैं
सोदर अस्व नचावत जै हैं❀सजननि की आग्यौंनी[3] लै हैं॥
कुँजर[4] टोल झुके बहु आवैं❀अँबारीनु[5] सजन छवि पावैं।
तिन मधि बरनौं राज दुलारौ❀मनसिज निकर लज्यावन हारौ॥
गान करत निशि जात न जांनीं❀पुनि सब बोले मधुरी बाँनीं।

---

[1] —दुलिहिनि श्री जी बन्नी अथवा श्रीलाल जी सुन्दरता की सीवा है उससे परे सुन्दरता है ही नहीं, [2] —अर्थात संचय इसी काम के निमित्त करते रहे, [3] —अगवानी स्वागत. [4] —हाथी झुँड के झुँड, [5] —हाथी पर हौदे जिसमें सवार बैठते हैं।

भयौ ब्याह दिन मंगल कारी❀फूले सब पुर के नर नारी ॥९४
दोहा—नीकी बिधि मंडफ रच्यौ, सचे बिबिध भण्डार।
अब मारग हेरत सबै, सजन जु आवन हार ॥९५॥
देस भयानें कौ धनी, बल्लब कुल सिरताज।
तम्बू दिये तनाइ कैं सजननि सुख कें काज ॥९६॥
अतिसै चित्र विचित्र सब, जिनकें बहु बिस्तार।
देषि देषि रीझयौ तिन्हैं, मदन जु कौतिक हार ॥९७॥
बरसानें रस बरषि हैं, गोकुल रावलि राइ।
धन्य घरी अब होहिगी, निरषैं नैंन अघाइ ॥९८॥
सोरनि फूलनि बरषि हैं, आजु घोष कौ नाथ।
जब राधा नन्दलाल के, फेरे परि है साथ ॥९९॥
मुनि बांछित बांछित अमर, नर बांछित सब कोइ।
गौर स्याम भांवरि फिरैं, धन्य घरी कब होइ ॥१००॥
जसु रसु लोकनि बिस्तरैं, करैं रसज्ञ प्रसंश।
वृन्दाबन हित रूप यह, सुधन श्री हित हरिवंश ॥१०१

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदास जी कृत श्रीराधा मंगल तथा भात मंगल बरनन लीला इकतालीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ ब्यालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—अब बरनौं ब्रज राज घर, मंगल बहु बिस्तार।
बरना लोकनि मुकट मणि, नागर नन्द कुँवार ॥१॥
दिन दूलह सो सहज हीं, पुनि चहैं दूलह हौंन।
जा दिन दूलह होइगो, उपमा दैं हौं कौंन ॥२॥
जा दिन ते आई लगन, आँनन्द की मित नांहिं।
ज्यौं बासर पछि लौं बढै, ऊँचे गिरि की छांहिं ॥३॥

न्यौंतन अपनें भातइनु, चली लाल की माइ ।
ब्रज गोपी ओपी जु तन, संग लई समुदाय ॥४॥
इष्टदेव पद वन्दि कैं, मन अस बाढी फूल ।
कहैं धनि बासर आजु कौ, मुहि भयौ बिधि अनुकूल ।
मेरे अतिलड मोहना, कियौ बीधि दिन तें जु ।
सफल जनम या शृष्टि में, अति सैं मान्यौं मैं जु ॥६॥
तात मात न्यौतौ जु पुनि, सोद्र भावज आज ।
मंडफ तर पहिराइ हैं, मुहि इहि मंगल काज ॥७॥

॥ चौपाई ॥

भात बधाये गावति भाँमा❀एक तें एक परम अभिरामां ।
कोउ रथ कोउ सकटनि पै चढीं❀मन उत्साह अधिक सब बढीं॥८
यसुमति संग कृष्ण बलराँम❀बूझत हैं गांवनि के नाँम ।
हाथ पसारि बतावति मैया❀सुनि सुनि मुदित होत दोऊ भैया
जसधर जसा और जसवन्त❀यसुमति के सोदर गुणवन्त ।
लै लै सुन्दर नाम मल्हावैं❀प्रेम ललक सौं बनिता गावैं १०
सुमुख पिता पुनि पटुला मैया❀काँमा महरानें जु रहैया ।
यसुमति सुता तीनि सुत जिहि घर❀सुमुख उदार विदित पालक नर
इनके जस को बरनति माला❀परम मुदित आवति ब्रजबाला ।
वधुन्नि संग लै पटुला निकसीं❀सुता आगमन तन मन बिकसीं॥
रथ सकटनि तें उतरीं बनिता❀भुज भरी मिली महरि की जनिता
एक मिलीं इक मिलन जु धावैं❀सब हिनु कौं सब कण्ठ लगावैं १३
आदर दै लै ग्रह कौं गवनीं❀दैति बैठनां करि करि नवँनी ।
पिता मिल्यौ पुनि मिले सहोदर❀सब के उर बर भयौ प्रेम भर १४
आइ आइ सब मिले जु पुरजन❀देखि सुखित भई यसुमति तनमन

सबनि भात कौं न्यौतौ दीनौं❀मंडध ब्याह बूझि दिन लीनौं१५
पुर घर घर जु बधावौ मान्यौं❀कृष्ण व्याह मंगल दिन जान्यौं।
पटुला राम कृष्ण मुख हेरैं❀लेति वारनें सिर कर फेरैं ॥१६॥
रचि बहु पाक जिमावन लागी❀यसुमति जननी अति अनुरागी।
मांगो बिदा कछुक दिन रहिकैं❀थोरे दिवस व्याह के कहि कैं २७
तात मात यसुमति पहिराई❀आवन कहि हरषे जु महाई।
राम कृष्ण भये सब दृग गहनौं❀कहैं ह्यां कोऊ दिन औरौ रहनौं॥
पट भूषन दोउनि पहिराये❀नांनी अंक लाइ दुलराये।
तात ग्रेह छाड्यौ नहिं चाहैं❀पुत्र व्याह घर मनहिं उमाहैं १९
दुहुँ बिधि मन कौ प्रेम भुलावैं❀जब समझैं तब चलिवौ भावैं।
कुल[1] सनेह यह बिधि कृत बेरी❀यसुमति ताकी कहती पहेरी॥२०
यौं कहि बिदा भई जब घर कौं❀प्रेम हलायौ नारी नर कौं।
राम कृष्ण अति हीं तन कमनीं❀दृग[2] ओकनि छबि करी अचवनीं
सब के मन जु भेंट लैं आये❀धन्य रोंहिनो यसुमति जाये।
रथ सकटनि पै चढि सब चलीं❀बन कौतिक देखति बिधि भलीं॥
राम कृष्ण मैया हि जतावैं❀गाइ चरन की ठौर बतावैं।
आंईं भवँन हियौ सुख सॉंन्यौ❀हरद हाथ को मंगल मान्यौ॥२३
यसुमति सब नेगिनु जु बुलांईं❀सुनत सबै आतुर गति आईं।
जाइ बुलावौ सब घर दीजै❀हरद हाथ कौ मंगल कीजै ॥२४
अब बरनौं नाइनि ब्रजपति कौ❀पग मॉंजन हारी यसुमति की।
दैंन बुलावौ चली नगर में❀नाँनां कौतिक करति डगर में २५
सुघर नइनियां बधुनि बुलावैं❀भरी गुमान चोज उपजावैं।
अतलस अतरौटा थिरकावैं❀सारीं घूँघट बदन दुरावैं ॥२६॥

---

[1] —परिजन का सनेह ब्रह्मा द्वारा रची एक अनोखी फांस है छूटना महा कठिन है,

[2] —नेत्रों के चुल्लू बना का अचा कर पिया।

चोली मांहि उरोज छिपावैं❀मदन मंत्र से मनहुँ पढावैं।
बात कहन में नथ जु हलावैं❀अंजन जुत नैननि मटकावैं २७
केशरि तिलक लिलाट दिषावैं❀श्रवन तरौंननि[1] कौं झमकावैं।
बन्दनी[2] बैंना कर सुरझावैं❀सीस फूल बैंदी चमकावैं ॥२८॥
पुनि पुनि बेशरि करनि बनावैं❀पुंजा पोति हार ढरकावैं।
खयें खयेला देखि सिहावैं❀कंकन बरा चुरीं झनकावैं ॥२९
मोरि आरसी मुष दिखलावैं❀कर रचे महँदी तिनहि नचावैं।
छला मूँदरीनु नग दमकावैं❀धरि कपोल अँगुरी बतरावैं ३०
धाइ चलनि किंकिनी बजावैं❀कटि डोरी झबियांनि झुलावैं।
पग पाइल बिछुवनि टुनकावैं❀आपु छकी छबि सबहिं छकावैं॥
काहू कौं न दृष्टि तर लावैं❀नाइनि ठकुराइनि जु कहावैं।
नर नारिनु कें अति मन भावैं❀ऐंड सहित माथो जु नवावैं ॥३२
आपु खेलैं सब मन जु खिलावैं❀ब्याह बधायें नीकें गावैं।
मुसकनि मनौ फूल बरषावैं❀दृष्टि अगमनीं हीं जु चलावैं३३
रूप मद भरी ऐसें आवैं❀मनमथ हूँ कौ मन बौरावैं।
गली गली रस रंग मचावैं❀बेगि चलौ यौं कहि समझावैं ३४
तन अँगुराइ करज चटकावैं❀रति रम्भा उरवसी लज्यावैं।
ब्रजपति घर करि टहल रिझावैं❀तन ऊजरि गुननि दरसावैं ३५
यसुमति पग जावक सु रचावैं❀दतु[3] लहि फूली अंग न मावैं
हित रूपी दूलह दुलरावैं❀दुलहिनि आगम हिय हुलसावैं
इत उत दुहु कुल उदौ मनावैं❀नेग लेंन बहु मन दौरावैं।

१—झूमका कानका या ताटक आदि, २—गले में लम्बी माला (बन्दनी) हाथ में बांस के सुन्दर (बैंना) छोटा पंखा है सो उलझ गया उसे सुलझाती है, ३—दत्त से दतु बना अर्थात दांन न्यौछावर लेकर प्रफुलित मन है।

वृन्दाबन[1] हित चित उरझावै❀दंपति दासि गोद भरि पावै ॥
दोहा–राति जगावन कारने, फिरत जु गोपनि भौंन ।
नाइँनि को धौं मोहनी, उपमा दीजै कौंन ॥३८॥
बींधि नन्द रनिवास में, भई बडी हिय लाग ।
पुर पुर घर घर घोष सब, पूरि रह्यौ अनुराग ॥३९॥
छोटी बडी तरुन सबै, आवति भरी उमाह ।
कहति धन्य ब्रजपति भवँन, भयौ पुत्र दिन ब्याह ॥४०
बहुत दिननि हम बाइनैं[2], दिये यसोमति गोद ।
झगरि झगरि अब लेंहिंगीं, कहति भरीं मन मोद ॥४१

॥ चौपाई ॥

घर घर तें आवैं सब झमकीं❀पुर घन मनहुँ दांमिनि दमकीं ।
शीतल तेज प्रेम रँग बोरीं❀नन्द सुवँन कीं गावति घोरीं४२
मीठे सुर इहि बिधि उच्चारैं❀मनमथ हियें बांन से मारैं ।
उपमा[3] सब पाइनु सौं पेलीं❀आवति गोपी रूप गहेलीं ॥४३
बड भागिनि ब्रजपति की रांनी❀दिये बैठना सब सनमांनी ।
जगमगाति रतननि की जारीं❀चित्रित नाँनाँ रँग किवारीं॥४४
गिरि की सिखिर भवँन अति कमनीं❀हरिपुर[4]हू कौं मनौ सिरोमनीं
रतन कलश उद्दोत महा है❀सोभा बरनी जात कहा है ॥४५
छज्जे मणिनु जटित जहां राजैं❀फटिक मणिनु के खम्भ बिराजैं।
कनक भीत नाँनाँ नग पांती❀जोति प्रकासित है बहु भांती४६
बिद्रुम देहरि जहाँ तहाँ सोहैं❀नर नारिनु के मन कौं मोहैं ।
रचनां करी घोष के रांनें❀कनक तार पट तनें बितानें॥४७

---

[1]—ग्रन्थ कर्ता अपने लिये दासी भाव मांग रहे हैं, [2]—यसोदा के घर संतान न हुई सो कभी कुछ दिया नहीं लेती ही लेती रही अब हम सब लेंगी, [3]—पांव के नीचे लताड़ दी या रौंद दी, [4]—वैकुण्ठ ।

कहूं नीलमणि जटित जु सैंनी[1]❀कहूं अरुन मणि अति छबि दैंनी
मोतिन की झालर अस झमकैं❀पोत जलद मनु उडगन दमकैं ॥
कहूं पन्ननि की अवलि[2] खची हैं❀कहूं हीरनि की कोर रची हैं।
जैसी बिधि जहाँ सोभा पाई❀तैसी बिस्कर्मानि[3] बनाइ ॥४९॥
गोपुर नाँनाँ चित्र जु बांनैं❀धुज पताक तिन पैं फहरानैं।
मन्दिर रचनां सबै नवेली❀विधि रचना जिन पाइनु पेली ॥
भवँन भवँन के द्वार बिशाला❀सोभित मणि गन बन्दन माला।
चिक परदा रंग बिबिध जगमगे❀जरी तार कोरनि जु नग लगे॥
हाटक अवनि खची नग चूनी❀तन प्रतिबिंब होति छबि दूनी।
ब्रजपति भवँन अलंकृत ऐसें❀इक रसना करि बरनौं कैसें ॥५२
किये नव रंग बिछौंना अवनीं❀तहाँ आंईं भांमिन गज गवनीं।
इक आंईं इक चलीं जु घर तें❀इक आवति बहु नगर नगर तें॥
नौं नन्दनि कीं बैठी रांनी❀बिप्र बूझि बिधि करति सयांनीं।
प्रथमहिं गणपति गवरि मनायौ❀रमां[4]रवँन कौ माथौ नायौ ॥५४
देव पितर कुल के जु मनाये❀पुनि बिधि सौं बाजे पुजवाये।
लोकरीति बिधि करि तिहिंकाला❀राति जगावन लागीं बाला ॥
भांमिनि जुरी भवँन नहिं थोरीं❀गावति नन्द नन्दन की घोरी।
मोहन ब्याह उमाह भरो हैं❀सुघर एक तें एक खरी हैं ॥५६
काकी ताई सबै मिली हैं❀गावति अति सुख सिन्धु झिली हैं
घोरी ऐसी भुवतल नाहीं❀सब गुन दरशत जाके माहीं ५७
उतपति भई देस धनि सो हैं❀गुन बरनन कौं समरथ को हैं।
किनि यह घोरी रीझि मँगाई❀प्रथम कौंन से नगर जु आई ५८
कौंन सुघर जिनि सुविधि सधाई❀अस नित्त नि सब के मन भाई।

१—कतार, पक्ती, २—समूह ३—सृष्टि का कलाकार ४—नारायण।

यह लाहौर नगर ते आई❀रावलिपति नें रीझि मँगाई ५९
नित्त करन रतिभांन सिखाई❀बनाँ हेत वृषभाँन पठाई ।
घोरी नगर पेखनौं मांनौं❀देषि सिहानौं गोकुल रांनौं ॥६०
मृग की सी चौकरीं जु धरनीं❀लाल बनां मन आनन्द भरनीं ।
चढि जु नचावै मोहन बरनौं❀सकल चोष जनकौ मन हरनौं६१
नवल बनीं कौ बरनौं रूरौ❀धनि रजवंशी सब गुन पूरौ ।
सब ब्रज जन कौ मन आनंदन❀गोधन पाल निपुन नन्द नन्दन॥
दुलहिनि ब्याहि भुवँन जब लावै❀ब्रजरानी सर्वसु जु लुटावै ।
बनां दाइजौ एतौ लै हैं❀ब्रजपति के नहिं भवन समै है६३
व्याह चाह ने नीद भगाई❀बरनौं फूलनि हिय न समाई ।
माइ गोद जगि बैठे मोहन❀लागे बचन कहन मुख सोंहन ६४
मैया व्याह कालिह हीं करि री❀मेरौ बचन चित्त यह धरि री ।
दुलहिनि ब्याहि भोर हौं लाऊँ❀अब काहे कौं गहरु लगाऊँ ६५
ग्वालनि कौं जु बराती करि हौं❀लाइ दाइजौ आगें धरि हौं ।
ऐसे करि जु भली मेरी मैया❀गाइनु लै जै है बलि भैया ६६
तू नित ही नित गीत गवावैं❀दुलहिनि घर में कबहुँ न आवै ।
आइ जुरैं यह गाँवन हारी❀घर बैठी पटकावैं तारी ॥६७॥
मेवनि सौं नित गोद भरावैं❀मुहि दुलहिनि कबहूं न दिखावैं
हर हर हँसी सुनत ब्रजबाला❀अरी चतुर जसुमति कौ लाला॥
ब्रजपति बहु धन खरचैं जबही❀दुलहिनि दृग देखौगे तब ही।
ऐसी तात बरात सजैगौ❀जाहि देषि सुरराज लजैगौ ॥६९
मैया बाबा चरननि नैं हैं❀तब यह गोप बरातहिं जै हैं ।
आगें बलि बनि चलि है आछें❀तुम तब चलि हौ उनि कें पाछें॥
भाँवरि करन सजन घर जै हौ❀तब या मुख पै गुलचा खै हौ।

तुम तन भरैं चहुँटियाँ नारी❀दै हैं नाना बिधि की गारी ७१
और घेरनीचार[1] जु करि हैं❀लला न रंचक तुम ते डरि हैं।
तुमहिं घेरि चहुँ दिशि ते लै हैं❀दुलिहिनि की जोरी[2] जु पुजै हैं॥
मैया मोहि चिरावति सगरी❀ढीठ एक तें एक जु अगरी।
गनि गनि कूट करति हैं मेरी❀रंचक संक करति नहिं तेरी॥७२
बेटा तोहि नींद नहि आवै❀बैठ्यौ अपनी कूट करावै।
मुख ते भोरी बातनि भाषै❀काहू की तू कांनि न राषै॥७४॥
मेरी सीख न कबहूं मानैं❀ब्याह खिलौंना सौं तू जानैं।
काहू की न बात मन लावै❀तोहि चातुरी कौंन सिखावै॥७५
ऐसी बात सजन घर कहि हैं❀तौ न बडाई रंचक रहि है।
बडी माइ ते सिच्छा लीजै❀जो वे कहैं सोई तू कीजै॥७६॥
सजन धाम तब सोभा पावौ❀उहां जाइ जिनि बधुनि हँसावौ
मैया तुहीं सीखै दै मो कौं❀वे सब नाम धरैंगी तो कौं॥७७
कहत कहत दृग निद्रा आई❀पलिंग पौंढि गये कुँवर कन्हाई
लाल बचन सुनि बधू सिहाँनी❀महरि भाग की महिमा माँनी ७८
देवमीढ[3] नृप की धनि करनी❀कुल कीरति जग निर्मल वरनी।
तिन कुल नृप परजन्य उजागर❀जिन कै नौ नन्दन गुन आगर॥
तिनमें नन्द नन्दीश्वर रांनौ❀महा भाग्य लोकनि जस जानौं।
पुत्र ब्याह मंगल जिन ग्रेहा❀नर नारिनु मन बढ्यौ सनेहा ८०
ब्रजपति कौ कुल मंडन बरनौं❀सब ब्रज जन हिय आनन्द भरनौं
इहि विधि सौं दुलरावति बनिता❀सुनि सुनि प्रमुदित मोहन जनिता
बनां सोहनौ सुन्दर बरनी❀भावन हारी सुख विस्तरनी।
अतिसे धन्य आजु की रजनी❀सब उर आनन्द भिजवनि सजनी

---

[1]—एक रीति जो स्त्रियां दुलह को घेर कर करती हैं, [2]—खडाऊँ या जूता छिपा कर देव बताना, [3]—नन्द जी के दादा का नाम है।

बीती निसा भोर ह्वै आयौ❀मंगल दरशन लग्यौ सवायौ ।
बन उपबन खग बोलन लागे❀मनु मंगल गावत अनुरागे॥८३
दोहा-प्रात भयौ बीती निसा, ग्रह गवनीं ब्रजबाल ।
पुनि आवन उत्साह मन, तेल चढावन लाल ॥८४॥
रजनीं जनित जु सुख भयौ, तासौं भीनीं चित्त ।
वृन्दाबन हित रूप कौ, मंगल दुगनौं नित्त ॥८५॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदास जी कृत श्रीकृष्ण हरद तथा हाथ मंगल बरनन लीला ब्यालीसवीं लहरी को जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ तेतालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा-बरनौं मंगल तेल अब, सुर उर संभ्रम दैन ।
शिव बिधि सेश दुराधि जो, ब्रज जन निरषत नैंन ॥१॥
अस मंगल नहिं दूसरौ, भयौ जु त्रिभुवन माँहिं ।
नन्द और वृषभान घर, ताकौ उपमा नाहिं ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नित कृत कियौ प्रात ब्रजरानी❀तब बोली[1] सब घोर जिठानी ।
मन्दिर में कौतूहल भारी❀बहु पकवान रचत नर नारी ॥३
मणि चौकी बैठी हरि जनिता❀बोली सबै लगाइत बनिता ।
नाइनि ठकुराइनि सुनि लै री❀घर घर जाइ बुलावौ दै री ॥४
आंनि चढावौ तेल सवेरौ❀ज्यौं अकुलाइ[2] न अतिलड मेरौ
भूख लगै अकुलै है भारी❀मानि बीनती चलौ सवारी[3] ॥५
घर के काज करति ते बरजौ❀धूप न चढै देषि मन लरजौ[4] ।
धूप लगै बरना अरबरि है❀यह जु ऊँधमी ऊधम करि है॥६

१—बुलवाया, २—भूखा न रहे इसलिये, ३—सवेरे ही शीघ्रता पूर्वक, ४—भय मानो या लाल पर दया करो ।

अधिक भूष कौ काचौ अतिलड❀तुम आवौ हौं गुन मानौं बड।
घर घर जाइ कहौ तुम ऐसें❀उनहि दया उपजै उर जैसें ॥७॥
मो घर बीधि दई यह कीनी❀तुम हूं कौ उपमा अति दीनी।
यह सुनि तुरत नइनियां दौरी❀फिरत सबनि की पौरी पौरी ॥८
रमकी झमकी बीथिनु डोलै❀दै दै मान बधुनि कौं बोलै।
सजि सिंगार लै चलौ जु टीकौ❀कियौ दई ने यह दिन नीकौ ॥६
जसुमति उर निधि कौ जु रतन है❀मोहत नर नारिनु के मन है।
न्याइ आजु सो बनै जु बरना❀मदन गुमानी कौ मन हरना १०
झगर बाइनौ लिहु सब कोई❀बांछित ही बिधि कीनौ सोई।
परै न बचन काहू कौ ऊनौ❀दै है ब्रज महतौन जु दूनौ ॥११
बीधि भई आजु ब्रजपति ग्रेहा❀मान बढावन कौ दिन एहा।
रानी हिये फूल है जेती❀इक रसना हौं बरनौं केती ॥१२॥
यह दिन नांहिं गहरु करिबे कौ❀भयौ आनन्द हियै भरिबे कौ।
घर के काज पिछौडे डारौ❀सजि सिंगार बेगि पग धारौ१३
नाइनि बचन सुनत सब ठाढी❀चलिबे मन उत्कण्ठा बाढी।
प्रेम छकी वह करति जु रचना❀श्रवत वदन ते मीठे बचना ॥१४
बसतु[१] चातुरी तेरे उर में❀आजु प्रगट कीनी सब पुर में।
तेल बुलावौ दैन जु आई❀षोलि दई गठरी चतुराई ॥१५॥
कोउ कहै लाऊ जिठाँनी मेरी❀तब हौं बात मानि हौं तेरी।
कोउ कहि रहि धीरो जु सयांनी❀मेरी ननद गई है पांनी ॥१६॥
कोउ कहै बोलि परौसनि अबहीं❀तेरे संग चलौं हौं तब हीं।
कोउ पुनि पुनि सिंगारत तनकौं❀कोऊ मुख देखत लै दर्पन कौं ॥
कोउ कहैं वैन्दी भाल धरति हौं❀कोउ कहैं अंजन दृगनि करति हौं

---

[१] —नाइन से गोपी कह रही हैं मानो उत्साह में विनोद कर रही हैं।

इक अगिवारैं ठाढी राजैं❀इक पट भूषनि अंगनि साजैं १८
इक एकनि कौ मारग हेरैं❀इक ठाढी एकनि कौ टेरैं ।
इक कहै आउ आउ चौरांनी❀गीत गाइबे कौं तू स्यांनी ॥१९
एक कहै भटू विरमियौ तौ लौं❀माषन काढि लेउ हौं तौ लौं ।
चलन उमाह भरी घर घर में❀मची प्रेम की हई नगर में ॥२०॥
विधि रचना ते गोपी न्यारी❀नन्द सुवन दुलरावन हारी ।
ग्रह ग्रह ते ब्रजबाला गवनीं❀हाथनि थार विराजत कमनीं॥२१
अप अपनै मिली टोल चली हैं❀सोभित करी पुर नन्द गली हैं।
किंकिनि बिछुवनि की धुनि सो है❀मनमथ हू के मन को मोहै॥
गान रचन अस कौन जु दूजी❀मधुरितु[1] मनहुँ कोकिला कूजी ।
गोकुल पति के भवन धसी हैं❀सीतल दामिनि मनहु लसी हैं॥
ब्याह बधाये ऐसे गावैं❀मदन हिये जु मदन उपजावैं ।
आदर दै रोहिनी लई हैं❀सुन्दरि सब ही मुदित भई हैं॥
अजिर मध्य ठाडे नन्द लाला❀देषि हँसी सब ही ब्रजबाला ।
पर घर[2] आजु बन्यौ नहिं जैबौ❀माषन कहौ कौंन विधि खैबौ२५
नांहिन दियौ कलेऊ मैया❀कैसें आज बनैंगो दैया ।
भटू[3] भूष भागी अब मन की❀बढी फूल दुलहिनि आवन की॥
ठाडे कहा सोचत मन माहैं❀छींकौ तोरन कौ दिन नाहैं ।
सुनि के मोहन प्रमुदित भये❀चढ़ि ऊँचे चौबारे गये ॥२७॥
पाछें लगी गईं द्वै चारि❀हँसति हँसति लाई जु उतारि ।
आजु लाल मन गाढौ कियौ❀हँसि चुपि रहै न उत्तरु दियौ २८
लला गुनीले अब कछु बोलौ❀कपट कोथरी उर ते षोलौ ।
अब अस दुलहिनि ब्याही ऐहै❀सो तुम कौ बहु नाच नचैहै २९

---

[1] —बसन्त में जैसे कोइल मधुर बोल रही हो, [2] —ताना दे रही है कि आज चोरी करने नहीं जा सका, [3] —श्याम का उत्तर है या एक सखी दूसरी से कह रही है ।

ब्रज रांनी जब आवत जांनी❀चुपकी ह्वै रही सबहि सयानी ।
सब कौ पालागन जु लियौ है❀सबहिनु कौ सनमान दियौ है ३०

दोहा—महरि कहति सब ही सुनौ, अधिक चढति अब धूप ।
तेल चढावन की करौ, मंगल बिधि जु अनूप ॥३१॥
मंगल बाजे बाजहि, मंगल घुरत निसाँन ।
मंगल दर्वि धरैं सबै, मंलल कीजत गाँन ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

अजिर लिपायौ चौक पुरायौ❀सोधि सुभ घरी पटा बिछायौ ।
नन्द सुवन तापै बैठायौ❀गणपति नवग्रह कलस पुजायौ ॥
गरग महा मुनि बेद उचारैं❀लगुना सगुना सब ही विचारैं ।
सात सुहागिनि तेल चढावैं❀भाग्य भरी सब मंगल गावैं॥३४
हरदी तेल लगावति कर सौं❀कूट करति कछु स्याँम सुन्दरसौं
अब जिनि चौरी जाहु नगर में❀लला डोरना बान्ध्यौ कर में ३५
कोउ कहति कांनि लगि ऐसें❀दूजो सुनैं और नहि जैसें ।
दर्पन से मृदु अंग निहारैं❀रीझि रीझि कै सर्वसु वारैं ॥३६॥
सुन्दर हाथ हथ्यौंना[1] राजै❀मुख मरुवटि जु सेहरौ साजै ।
काकी ताई मूठि उठावैं❀वांछित सबै लगाइत पावैं ॥३७
भूवा आइ आरतौ कीयौ❀अरघ बढाइ भवन में लीयौ ।
होत मुदित सब ही नारी नर❀बटत सुहार नगर में घर घर ३८
मेवनि गोदी भरि भरि बिकसी❀घोरी गावत सब ही निकसी ।
भीर भई मन्दिर न समाई❀न्यौछावरि सब काहू पाई ॥३९॥
रतन मूठि ब्रजरांनी वरषी❀सुतहि जिमावति अपु कर हरषी
गाइनु पै ते ग्वाल जु आये❀मैया तैं ने हम न जिमाये ॥४०

---

[1] सोने का भूषन विशेष जो कँगना के साथ संस्कारों में बांधते है ।

टेरि मनसुखा ऐसे कह्यौ❀भैया स्याम कहां दुरि रह्यौ ।
हँसत हँसत मुरलीधर आये❀सैननि मांहि ग्वाल समझाये ४१
[1]तो कौ मीठौ बोलि न आवै❀क्रूर बचन कै कलह सुहावै ।
समझि बचन सब कोऊ भाषै❀तू काहू की कानि न राषै ॥४२
गहि रहि मौन दिना दस भैया❀सुनि कै बुरौ मानि है मैया ।
मेरौ ब्याह बोलि सुभ बाँनी❀भोजन करि सामा मन माँनो ४३
बैठारे जु ग्वाल करि सैनी[2]❀परसत दूध मिलाइ जु फैनी ।
नाना विधि पकवांन जु परसै❀जेंवत ग्वाल सबै सुख सरसै ४४
बलि जुत जेंवत हैं सब ग्वार❀महरि अजिर सोभित बिस्तार।
मोहन अधिक जनावत नेहु❀भैया भावै मांगि सु लेहु ॥४५॥
तब हँसि के मनसुखा कह्यौ❀लाउ स्यांम अब गाढौ दह्यौ ।
झूठी करत षुसामधि स्याम❀हमैं जिमावतु है बलिराम ॥४६
आछौ नीकौं तैं घर खायौ❀हमैं क्यौं न तिहि बार बुलायौ।
मैया यह मनसुखा लबार❀मोहि चिरावतु बारम्बार ॥४७॥
बेटा[3]जब लगि ब्याहि न आवै❀तब लगि तू जिनि याहि चिरावै
दिन दस याकौं माँगै देहु❀अब तुम यासौं करौ सनेहु ॥४८
हँसैं लसैं सब भोजन करैं❀सब चुप रहैं महर ते डरैं ।
त्रिपित भये जल अचवन कियौ❀मोहन कौं प्रसन्न करि लियौ॥४९
इहि विधि सौं जु तेल नित चढै❀नित नित दूनौ आनन्द बढै ।
बधू[4] मुनीश बतावैं ज्यौं ज्यौं❀जसुमति नित प्रति करैं सु त्यौं त्यौं
काका ताऊ न्यौंतें बाँन❀कीजत सब ही विधि जु बिधाँन
नित जेवैं मिलि पुर पखवार❀मंगल विद्धि नन्द दरबार ॥५१॥
देस देस के नृप मिलि आवैं❀तिनकौं भवन भण्डार बतावैं ।

---

[1]—मनसुखा से श्याम कहने लगे, [2]—श्रेणी, पंगत, [3]—मैया मनसुखा से कह रही है, [4]—गर्ग मुनी की पत्नि ।

पुर चहुँ दिसि बहु तम्बू तनैं❀नव नव साज ब्याह के बनैं ॥५२
जहाँ तहाँ सौंनी गहनैं गढैं❀कनक रतन अम्बारी मढैं।
करहा अस्व बिविध सिंगारैं❀जीन पलान विचित्र सँवारैं ॥५३
रथ पालिकी विविध चौडोला[1]❀तिनकौ सजियति साज अमोला
जरी सूत पट पुनि पाटम्बर❀जहाँ तहाँ सींवत जु सुघर नर५४
बागे ब्यौतावत[2] हैं ग्वार❀अपनी अपनी रुचि अनुसार।
कोउ कहैं जरी तार कौ लै हौं❀भैया तब बरात हौं जँ हौं ॥५५
कोउ कहै लै हौं छापै दार❀कोउ कहै हौं लै हौं चौतार।
कोऊ लैंन कसूँभी कहैं❀कोउ षासा महमूदी चहैं ॥५६॥
कोउ चहैं पाट बसन नव रंग❀कोउ कहै लैउ पाग सुरंग।
कोउ कहै लेउँ मुकेसी चीरा❀कोउ चहै कलंगी जटित जु हीरा॥
कोउ कहै लेउँ मोतिनु की माला❀कोउ कहै लेउगो लाल दुशाला
कोउ दरयाई चहै इजार❀कोउ चहै पटुका छोर जु दार ५८
कोउ कहै लेउँ खासे कौ तनिया❀देहु लगाइ फना में मनिया।
कोउ कहै लेउँ जरदोजी जोरा❀कोउ कहै लेउँ कंचन कौ तोरा॥
कोउ कहै लेउँगो घोरी ऐसो❀तो चढिवे कौं आई जैसो।
जीन जरयाउ वैस वह लुहुरी[3]❀कलँगी सीस जटित नग मुहरी[4]।
चलौं नचावत संग जु तेरे❀यह अभिलाष मित्र मन मेरे।
सुनी सषन की नाँनाँ बाँनी❀सोई विधि कीनी ब्रजरांनी ॥६१
सबहिनु कौ रुष राषत मोहन❀मित्र फिरत सब लागैं गोहन।
हाथ तीर मणि गरे हमेल❀अंग अलंकृत हरदी तेल ॥६२
मुख पर मरुवटि ऐसे लसैं❀पूजा पाइ मनो ससि हँसैं।
बैठे राज अथाइ तात❀बूझत नवल बनाँ सौं बात ॥६३

१—जिसे चार मनुष्य उठावे वह डोला, २—सीने वालों को माप दे रहे हैं ३—घोरी छोटी आयु की हो, ४—मुख की रास।

कह्यौ रंग[1] अब कैसे रहै❀दाऊ चलन बरात न कहै ।
चरननि लगि कै तिनहि मनावौ❀करि प्रसन्न मो पै लै आवौ॥६४॥
काम पर्‍यौ जु ब्याह कौ तेरौ❀कहि अब हौं दाऊ कौ चेरौ ।
बैठे लाल नन्द के नेरै❀कन अँखियनि जु तात तन हेरैं ॥
अधरनि में मुसकनि रमि रही❀सकुचत बात जात नहिं कही ।
लाल लियौ उपनन्द बुलाई❀कहि कान लगि यौं समझाई ६६
हौं अपने बाबा कौ चेरौ❀बडौ बन्धु बलिदाऊ मेरौ ।
यौं कहि लोटि गोद में गये❀सब ही गोप आनन्दित भये॥६७

दोहा-तेल बाँन मंगल महा, भयौ नौ नन्दनि ग्रेह ।
जेयैं[2] पुर परिवार जन, सब उरसने सनेह ॥६८॥
पुर रचना ऐसी करी, लोकनि उपमा नांहि ।
बरनी सकत नहिं सारदा, लषि सकुचत मन मांहि ॥६९
दिन दूलह इहि लोक में, एकै सुत ब्रज भूप ।
दिन दुलहिनि वृषभानु जा, वृन्दाबन हित रूप ॥७०॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री कृष्ण तेल बरनन तेतालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ चवालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा-सोधि सुभ घरी गरग जू, नृप गृह बैठे आइ ।
मंडफ धरिये प्रात ही, गोपनि लेहु बुलाइ ॥१॥
सबहि लगाइत थिरत है, गोप बुलाये छिप्र ।
अपनो नितकृत[3] सब कियौ, जूथनि आये विप्र ॥२॥
तन सुचि ह्वै मन अति बढे, सजि पट भूषन गोप ।

---

[1] —बाबा बिनोद करते कह रहे हैं कि दाऊ तो रूठा हुआ है, [2] —भोजन किये. [3] —अपना नित्यकर्म लोप नहीं करना होता यह शिक्षा है ।

नन्द भवन कौं आवहीं, मंडफ देवै ओप ॥३॥
बिछै बिछौंना राज घर, नाँनाँ चित्र सँजूत ।
रतन अमोलक जगमगैं, जटित जु मधि कलधूत ॥४॥
अम्बर अतर गुलाब जल, सींचे उठत सुवास ।
तहाँ राजत मुनि गोप गन, सब मन भरे हुलास ॥५॥

॥ चौपाई ॥

मँडफ कौ समयौ सुभ आयौ❀पंच नाद पुर घर घर छायौ ।
महरि बुलाइ सब पुर नारी❀नन्द नन्दन दुलरावन हारी॥६॥
तिलक साजि सिंगारति तनकौं❀चलन उमाहौ जिन के मन कौ
कोऊ कहै बेगी चलौ जिठाँनी❀कोऊ कहै बोलि लेहु द्यौरानी ॥
कोऊ कहै मेरी ननदहि लावौ❀कोऊ कहै बडी सासु बुलवायौ ।
निकसि निकसि भई पौरिनु ठाडी❀मन उमाह चलिबौ अति बाढी
कोऊ बैठी जु करति तन मंजन❀कोऊ अति सुघर रचति दृग अंजन
कोऊ बकुचनि ते बसन जु षालैं❀कोऊ पारोसिनि कौं हँसि बोलैं ॥९
कोऊ लिये ककही केश सँवारैं❀कोऊ लिये दर्पन बदन निहारैं ।
कोऊ रुचि बेंदी भाल बनावैं❀कोऊ पय पाँन सुतहि करवावैं ॥
कोऊकहै बेगि चलौ री सजनी❀हौं सोई न उमाहैं रजनी[1] ।
कोऊकहै गाइन[2] सुघर बुलावौ❀घोरी आजु उच्च सुर गावौ ११
कोऊ कहै संग मोहि लै चलौ❀बिधना कियौ आजु दिन भलौ
कोऊ कहै हौं सिंगार सजि आई❀गहरु न करौ चलौ री माई १२
कोउ अधिकौ सौ मान जु चाहै❀एक बुलायै चलै सु काहै[3] ।
नाइनि रँवकि तब हीं आई❀जसुमति की वीनती सुनाई[4] १३

१—मुझे उत्साह में रात भर नींद ही नहीं लगी जागती रही कि कब दिन हो नन्द घर जाऊँ, २—गाने वाली चतुर साथ लो, ३—एक को बुलाया तो उसने पूछा कहां चलना है. ४—जो मान चाहती थी उसे नाइन ने प्रार्थना की कि जसोदा ने विनय कर बुलाया है ।

बार बार ओटी है ओली❀अधिक मान दै तुम कौ बोली।
मो घर भयौ अपूरब काजु❀तुम कौ रूठे बनैं न आजु ॥१४
सुनि यह बचन छांडि हठ दियौ❀सादर सबनि संग करि लियौ ।
बीथि बधाये गावति चली❀सोभित करी नन्द पुर गली॥१५
कनक थार कर वर छबि पावै❀आँनन दुति ससि वृन्द लज्यावै ।
पुर पुर ग्रह ग्रह ते गज गवनी❀आवति करति अलंकृत अवनी॥
सोभा निकर सबै ब्रजबाला❀हार हमेल रुरति उर माला ।
कृष्ण विवाह हिये सुख ओपी❀बनितनि की चूडामणि गोपी१७
भीर रुकी अकुलात जु ऐसे❀उर उमाह कहौं तिनकौं कैसे ।
गली अलंकृत सौरभ छिरकी❀मणि जारिनु जुत सोभित षिरकी
धुज पताक पट कनक बने हैं❀जहाँ तहाँ सुरंग बितान तने हैं।
चीती पौरि सकल पुर घर घर❀चौंधित मदन देषि बानिक वर१९
अस बीथिनु में गावति नवला❀सब उर भयौ प्रेम अति सबला।
अति सै मंगल भुव तल दरसै❀देवनि मन आवन कौं तरसै २०
बरना देषन सबनि उमाहौ❀सो जु लेत ब्रजजन सुष लाहौ।
अतिसै धन्य घोष की नारी❀लाल बनैं दुलरावन हारी ॥२१
मन्दिर नन्द प्रवेश कियौ है❀दै आदर रोहिनी लियौ है ।
सकल मुनीस नन्द घर आये❀नृप कौ आसिक बचन सुनाये ॥
महाराज अब मंडफ धरियै❀यह सुभ बेला गहरु न करियै।
सुनि विप्रनि की मंगल बांनी❀हिये हरष ब्रज पति बहु मानी२३
पुर जन गुरजन बन्धु जहां हैं❀बैठ्यौ ब्रज रानौं जु तहाँ हैं ।
करत वेद धुनि गरग महा मुनि❀होत प्रसन्न गोप सब सुनि सुनि॥
मंडफ बिधि ज्यौं निगम चिताई❀गरग महा मुनि त्यौं करवाई ।
गो गोबर सौं अँगन लिपायौ❀चौक मंडलाकार पुरायौ ॥२५॥

कमलाकार जु मंडल करिकै❀पुनि पूजा करि थंभ सु धरि कै।
प्रथमहिं कलश गणेश पुजायौ❀पंच नाद भये मंगल गायौ ॥२६
नव ग्रह कुल देवनि आराध्यौ❀जंत्र पुजाइ षंभ सौं बान्ध्यौ।
पट्टा पर बरनां बैठायौ❀रीति भांति करि तेल चढायौ २७
हाथ हथ्यौना अति छबि पावै❀मनहुँ चन्द लिये कमल षिलावै।
मरुवटि लसति छबीले मुख पर❀बनिता चौतति हँसि हँसि कर वर
सिर सेहरौ अधिक जगमगै❀जननी संकित दृष्टि न लगै।
लाल चपल मोरतु है ग्रींवां❀सोभा सिन्धु बढतु तजि सींवां ॥
नौबति घुरै बधू जन गावैं❀बन्दी कुल के विरद सुनावैं।
सब जुवती जन मूठि उठावैं❀महरि चून फल वारि बगावैं ३०
बैठ्यौ चौक अति लाडौ मेरौ❀करौ आरतौ भुबा सवेरौ।
करि आरतौ भवन जब लीयौ❀मैया बडी अरघ तब दीयौ ३१
गान कुलाहल करति जु बनिता❀वरनै सुहथ जिमावति जनिता।
भट्ट अधिक बासर चढि आयौ❀मेरे लाल कछू नहिं पायौ ॥३२
कोमल अँग वैस लघु जाकी❀कहा कहौं निपट साधुता याकी।
भोर हो उठत कलेऊ करतौ❀तब बन कौ लाठी जु पकरतौ३३
रहै मौन धरि मेरौ बारौ❀अति सुसील यह राज दुलारौ।
अधिक प्रीति करि लाल जिमायौ❀तुष्टि भयौ तब जल अँचवायौ
हरदी मंडित बनें जु बागैं❀मोहन आजु भले अति लागैं।
बटत हथ्यौंना भांमिनि गन में❀पुर परिवार लगाइत जन में ३५
रचियत हैं पकवाँन घनेरैं❀नन्द सँचिव[1] बैठे तिन नेरैं।
ठौर अनेक कराह चढे हैं❀फिरत अनुग[2] चित चाइ बढे हैं॥
सचि सचि कै भंडार भरत हैं❀उज्जल सामा सुविधि करत हैं।

१—वजीर, २—नौकर चाकर।

चाउ चौगुनौ सब उर सरसै❀कौतिक जहाँ नयौ नयौ दरसै ३७
बडडे जहाँ मुनीस जु आये❀आदर दै ब्रजराज बुलाये।
मो ग्रह करौ पवित्र गुसांई❀तुम प्रसाद मंगल इहि ठांई ॥३८
पद प्रछालि कै आसन दीनै❀चरनौदिक लै उर सुख भीनै!
मंडफ तरै सुबिधि बैठाये❀सुन्दर पनवारे जु बिछाये ॥३९॥
बैठे बिप्र जु पंकति करि कै❀तन मन सब अति आनंद भरिकै
उज्जल पाक परोसन लागे❀जैंवत सब ही अति अनुरागे॥४०
मुनि जु सुसील तपोधन भारी❀जैंवत करत प्रसंशा भारी।
परसत सब ही मन रुचि लै कै❀सीतल बचननि आदर दै कै ४१
घोष राइ कर जोरे ठाढे❀परम प्रीति लषि मुनि सुख बाढे
बिंजन बनै जु स्वाद अमी कै❀हरै हरै जैंवत सब नीकै ॥४२॥
राम कृष्ण तहां खेलत आये❀देखत सबै मुनीस सिहाये।
रसना बिंजन स्वाद लसी हैं❀नैंननि हरि मूरति जो बसी हैं ॥
दोऊनि[1] परयौ परस्पर झगरौ❀लोचन पायौ लाभ जु अगरौ।
मुष पर मरुवटि अधिक जगमगै❀निरषत मुनि पल सौं न पल लगै
नैंननि काजर चिबुक ढिठौनां❀चित्तवत सलज चलत दृग कौनां
कुण्डल हलनि कपोलनि झांई❀मनु[2] रवि भोर कलिंदी न्हांई ॥
अलकावलि जु हरति है ऐसे❀कमल[3] समीप मत्त अलि जैसे।
हरदो मंडित साँवल तन पै❀पीत रंग कियौ मनु नव घन पै
चरन महावर रंग करयौ है❀अम्बुज मनु अनुराग भरयौ है।
कर गहै तीर भोर तन सोभा❀देषि मुनीसनि कौ मन लोभा४७
पहुँची चूरा पुनि डोरना❀ज्ञांनिनु हूं कौ चित चोरना।

---

[1]—जिह्वा और नेत्रों में झगड़ा हो गया जीत नेत्रों की हुई उन्हें दर्शन का लाभ हुआ, [2]—कुण्डल की झलक सूर्य की उपमा और श्याम कपोल मानो यमुना जल है यह उपमा दी है, [3]—मुख कमल अलकैं भौंरे।

पियरे बसन हँसुलिया गर में❀रमि रही मृदु मुसिकानि अधर में

दोहा—जप तप ब्रत पुनि ग्यान फल, जोग जज्ञ श्रुति सार।
मुनि दृग देषि चकृत रहैं, लाल मनोहर ग्वाल ॥४६॥
विरमि विरमि भोजन करैं, निरषैं अचिरज रूप।
नेत नेत कह्यौ निगम सो, अंक लसैं ब्रज भूप।
जे बूडे हे ब्रह्म नद, ते काढे बरजोर।
ऐसो बरना सोहनौं, नागर नन्द किशोर ॥५१॥

॥ चौपाई ॥

भोजन करि कैं अँचवन लीये❀स्याम ही निरषि सिराये हीये।
सनय सनय धोवत हैं कर पद❀नन्द सुवन छबि लषी जु बेहद॥
ब्रजपति दछिना दैं आनन्दे❀प्रीति सहित सब के पद बन्दे।
जे जे नृप न्यौतौ लैं आये❀पुनि भोजन कौं ते जु बलाये ५३
पुरजन और सकल परिवारा❀सिमिटे सबहि नन्द दरबारा।
नृप बैठारे करि जु बिचार❀अगनित फिरत जहाँ परचार ५४
न्यारे न्यारे भवन जु जहां❀पंकति करि बैठाये तहाँ।
पात पलास बिछे पनवारे❀विप्र अनेक परोसन हारे ॥५५॥
ठौर ठौर खोले भण्डार❀परसत लाड्डू सरस सुहार।
सुभग जलेबी षुरमा भले❀परसत आवत छबि सौं चले ५६
भाजन भरि भरि सब हीं दौरैं❀लेहु देहु बांनी सब ठौरैं।
जेंवत भूप गोपगन जेते❀स्वाद पाइ आनंदित तेते ॥५७
नाँना बिधि की परसत साँमाँ❀एक ते एक परम अभिराँमाँ।
जिहि जो रुचै परोसैं सोई❀जेंवन हार मुदित सब कोई॥५८
बैठे जन पुर पौरि जहाँ लग❀नगर बगर वीथीनू के मग।
सावधान सब हीं जन परसैं❀रसना स्वाद सबैं लै सरसैं॥५९

करत सम्हार फिरत ब्रजरानौं❀कृष्ण तात करुना वपु मानौं।
पाकनि भाजन भरैं जु डोलैं❀लेहु लेहु ऐसैं सब बोलैं ।।६०।।
नगर मांहि कौतूहल भारी❀सजननि देत वधू जन गारी।
राम कृष्ण मन मुदित महाई❀फिरत तात संग अति छबि पाई
जो ब्रह्मादि निगम नहि परस्यौ❀सो खेलत जु गोप ग्रह दरस्यौ।
इहि विधि सुषित सबनि कौ कीयौ❀भोजन करि पुनि अचवन लीयौ
भयौ सबनि कैं चित कौ चीत्यौ❀पांति दै जु गोकुल पति जीत्यौ
ढोलिनु गहरे ढोल बजाये❀बनितनि रंग बधाये गाये ।।६३
न्यौतो लै जु भूप सब आये❀रथ पालकी अस्व गज लाये।
रजित रुकम रतननि मित नांही❀न्यौतौ दै दै भूप सिहांही ।।६४
पौंनि छतीस नगर में जेते❀ब्रजपति नें सनमानैं तेते।
नीकी भांति असन करवायौ❀जस कौ घोष बितान तनायौ ६५

दोहा–बाट भातइनु की चहत, फूलत गोपी गोप।
मातुल मोहन लाल के, मंडफ दै हैं ओप ।।६६।।
जसुमति सोदर आगमन, बैठी भरी हुलास।
सगुन परीक्षा लेति हैं, बनिता राजति पास ५६७।।
अजहुँ न आये भातई, निकट तात कौ ग्राम।
अरबरात हिय रहि गयौ, वासर पछिलौ जाम ।।६८।
नाइनि नाई कौ पठै, वेगि दौरि वह जाइ।
कितक दूरि है भातई, मोहि षवरि देइ लाइ ।।६९।।
रांनी की बांनी सुनत, नापति चल्यौ जु धाइ।
मिले बाट में भातई, षबरि दई तिहि आइ ।।७०।।

।। चौपाई ।।

समाचार तिन आई सुनाये❀ग्राँम निकट तुम सोदर आये।

ताकौ बचन लग्यौ अति प्रीय❀मंगल गाइ उठी ब्रज त्रीय ॥७१
अस्व नचावत सोदर आवैं❀रथ पालकी सकट छबि पावैं।
डोला चढी लाल की नानी❀भाग बली पटुला जु बखानी७२
नाना सुमुष पालकी राजै❀जाकी निर्मल कीरति भ्राजै।
मामी आवति है रथ चढी❀भात दैंन अभिलाषा बढी ॥७३
पावन सर पै विरमे आइ❀तब दिये सरबत कलस पठाइ।
रहसी अँगन लिपावति रानी❀पूरित चौक सषी जु सयानी ॥७४
आइ वधू सब एकत भई❀गावत भात लैंन कौ गई।
पाटम्बर सकटनि जु धरे हैं❀गहने बहुत पिटार भरे हैं ॥७५
हय गय नाँनाँ बिधि जु सिंगारे❀पुनि गाइनु के टोल जु न्यारे।
आइ पौरि पै ठाढे कीये❀ब्रजपति बहु आदर दै लीये ७६
भुज भरि भरि सबही जु मिलत हैं❀इत उत बहु आनन्द झिलत हैं
बिधि विधान करि सब पहिराये❀अधिक मान दै दै जु बुलाये७७
गोप गोपिका तन मन फूले❀सब तन नौतन बने दुकूले।
जसुमति पहिरि वीर सौं भेंटी❀तन मन अति आनन्द लपेटी७८
मोहन मातुल अति मन सरस्यौ❀रजित रुकम पट घन ज्यौं वरस्यौ
पौंन छतीसौं पहिरी पुर की❀अभिलाषा पूजी सब उर की ७९
पुर घर घर जस चली कहांनी❀धन्य सुमुष धनि पटुला रांनी।
नानी गोद बना कौ लीयौ❀न्यौछावरि तब बहु धनु कीयौ८०
भोजन हित भातई बुलाये❀नीकी विधि बैठारि जिमाये।
अति हित मानि सुघर जन परसैं❀जेंवन हार स्वाद सुख सरसैं ॥
ब्रजपति सब मन चौंप बढावैं❀पाक अपूरब ते परसावैं।
करैं प्रसंशा मुख में धरि धरि❀धरे अचार कटोरा भरि भरि ८२
कबहूं बातनि के रस ढरहीं❀कबहू हँसि हँसि भोजन करहीं।

राम कृष्ण दोऊ षेलत डोलैं❀माँमाँ नाँमनि लै लै बोलैं ॥८३॥
वे बैठारि जु बूझत बातैं❀ये कछु कहै लाड़ सरसातैं।
पुनि पुनि परसैं आदर दै कैं❀तुष्टि होहि सब ग्रासनि लै कै ८४
पूरन ह्वै जल अँचवन लये❀बीरी लैं पुनि डेरनि गये।
सन्ध्या भई मल्हावैं भाँम❀दीप प्रकासे सब ही धाम ॥८५॥
पौरिनु पौरिनु नौबति बाजैं❀मनहु मधुर भादौं घन गाजैं।
गह मह ह्वै रही घर घर पुर में❀षेलै प्रेम सबनि के उर में ॥८६॥
नन्द भँवन मंगल है ऐसौ❀सुर नर नाग लोक नहिं जैसौ।
फिरैं जहां गोपनि की ललना❀बरनाँ देषैं बिनु दृग कलना[1] ८७
पुर चहुँ ओर गोप गन छाये❀मनहुँ उमडि पावस घन आये।
बधुनि बोलि ज्यौंनार रची है❀साँमाँ बहु भण्डार बची है ॥८८
चाइनु परसति ब्रजपति घरनी❀जननी कृष्ण भाग बड बरनी।
कोऊ जेवैं कोऊ थार भरावैं❀कोऊ लै जाहि लैन कोऊ आवैं ॥
कोऊगनि गनि पातरि धरिवावैं❀कोऊ रँवकी झगरन कौं आवैं
कोऊ छोटे अरु बडे गनावैं❀कोऊ फेरि फेरि कै लावैं ॥९०
महरि भाग आपनौं मनावैं❀हँसि हँसि कै सब कौ समझावैं।
जो चहिये भट्ट तुम लेहु❀मो अति लडहि असीसैं देहु ॥
तुम बांछित यह काज भयौ है❀विधि सुदृष्टि मो तन चितयौ है।
सब की घरनि[2] परौसा दैं हीं❀सब की सुविधि असीसनि लैं हीं
तुम कहि कहि जु जाति ही जैसे❀मेरे भयौ काज यह ऐसे।
होति अधीन सबनि सौं रानी❀सब सौं कहति मधुर मुख बानी ॥
सब कौं आदर सहित जिमावैं❀नारायन की कृपा मनावैं।
जो प्रसन्न जैसी विधि होई❀महरि रोहिनी करैं जु सोई ॥९४

---

[1] इकटक, [2] घरों में।

दोहा—फिरति नगर बिन्नाइकी,[१] घोरी चढौ जु लाल ।
मह्हरि रोहिनी संग सब, सिमिटी पुर की बाल ॥९५॥
नन्द संग सब गोप गन, आये कारि सिंगार ।
बजैं विविध बाजे जहाँ, गावैं मंगल चार ॥९६॥
रच्यौ लाल सिर सेहरौ, जामें कंचन तार ।
वदन कलाधर लसत है, उहि ससि निंदन हार ॥९७॥
अरबरात[२] लोचन ललित, अधिक रूप रिझवार ।
मनु कंचन के पींजरा, खंजन करत विहार ॥९८॥

॥ चौपाई ॥

घोरी कौतिक रूप बनी है❀नचति चलति चंचल जु घनी है
मुहरी मध्य लगे नग लाल❀सुन्दर कलँगी राजति भाल॥९९
मन्द मन्द सुन्दर धप धरनी❀नवल बनाँ उर आनन्द भरनी।
झ्यौं[३] चंपा छूटैं हथ फूल[४]❀अति सै सोभा नृग अनुकूल१००
वढि वढि कै छूटैं जु हवाई❀महताबनि की जोति सवाई ।
कोटिनु बरैं मसाल जहां हैं❀झार दुशाखनि[५] की मित ना हैं॥
आतस बाजी छूटत ऐसे❀कंचन फूल लगै झर जैसे ।
विरम विरमि चलै ब्रज कौ रानौं❀फूलनि वदन सु कहा बखानौं ॥
सब हीं गोप अतिलड आगै❀तन मन मुदित अति भले लागै
रतन मूठि ब्रजराज उठावैं❀भिक्षुक और लगाइत पावैं१०३
नौ हू नन्द वदन अस सोभा❀वरषत आजु अलौकिक सोभा ।
आवत नगर दाहिनौ दीयैं❀सजन बन्धु सब हीं संग लीयैं ॥
बरना अस्व पीठि पर राजैं❀मदन वरात देखि छवि लाजैं।

---

[१]—विनय करने वाला नाइन आदि, [२]—सेहरा से मैन कुछ ढके हैं सो व्याकुल हैं, [३]—एक प्रकार की आतश बाजी, [४]—हाथ में छोडने का फवारा, [५]—दो शाखा वाले झार ।

निरषि गोप गन सब मन हरषैं❁रजत रुकम रतननि झर बरषैं ॥
जब फिरि नन्द पौरि पै आये❁गह गहे बाजे सबनि बजाये ।
अरघ पूरि बरना घर लीनौं❁न्यौंछावरि करि बहु धन दीनौं ॥
बड भागिनि ब्रजपति की रांनी❁पौंन छतीसौं सब सनमांनी ।
जुरि आई बनिता अनुरागी❁राति जगावन सब ही लागी ॥
रानी जायौ घोरी चढि है❁उर आनन्द सतगुनौ बढि है ।
महरि कूँषि कौ रतन जु बरनां❁अति अहिलाद तात हिय भरनां ।
मुष ससि ते बरषत जु पियूषन❁धनि मेरो बनां नन्द कुल भूषन
त्रिभुवन मोहन न्याइ कहत हैं❁षग मृग हूं दिषि थकित रहत हैं॥
सजन षेत दै है सुष ऐसौ❁सुन्यौ न देष्यौ त्रिभुवन जैसौ ।
बरनी कहियति याते अगरी❁श्रृष्टि वारनैं कीजै सगरी ॥११०
आइ महरि उर आनन्द भरि हैं❁जिहि छिन इहि पौरी पग धरि हैं ।
बना बनी दुहुं कुल जस धर हैं❁जिनहि प्रसंशत नारी नर हैं ॥
दोऊनि धन्य गोप कुल कीयौ❁गाय बधाये हम सुष लीयौ ।
रांनी रजनी रहि गई थोरी❁प्रात ही लाल चढैगो घोरी ॥

दोहा—बधू सबै घर कौ गईं, मेवनि गोद भराइ ।
जल मज्जन करि तन सजी, पुनि आवन के चाइ ॥११३
पुर बासी जानत नहीं, कित बीतत निसि भोर ।
वृन्दावन हित रूप कौ, ब्याह उमाह न थोर ॥११४॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण मंडफ दिन को मङ्गल बरनन च्वालीसवीं लहरी को जैजै श्रीहित हरिवश श्रीराधे ॥

॥ अथ पैंतालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—यह मंगल दिन व्याह कौ, भयौ धन्य ते धन्य ।
कै सुकृत्त ब्रजराज कौ, फल्यौ गोप परजन्य ॥१॥

महरि महा मति भोर हि, नाइनि दई पठाई ।
लाउ सबनि कौ बोलि कै, तेल चढावैं आइ ॥२॥
बाट बुलावन की चहत, सब मन भरी उमाह ।
झमकी गई जु नइनियां, दैन बुलावौ व्याह ॥३॥

॥ चौपाई ॥

कृष्ण व्याह उत्कण्ठा भारी❀सुविधि सिंगारे पुर नर नारी ।
किहि विधि कहौं आजु की आवनि❀वधू उच्च स्वर घोरी गावनि
नव नव अम्बर सब तन बने❀भूषन रतन जगमगैं घने ।
दूलह देषन सब चित चौंप❀ज्यौं बसन्त बढै बेलिनु कौंप[1] ५
पहिले पहुँच्यौ सब हीं चहैं❀चलौ बेगि यौं मुख ते कहैं ।
आतुर गति पग धरति नवेली❀विलुलित[2] मनौ कनक छबि वेली
विपुल उमाहौ जिन के मन में❀कनक थार ओऐ जु करन में ।
मल्ली कुशम कच्चन[3] ते झरहीं❀रीझि रीझि मानौ पग पर हीं ७
नन्द भवँन रतनाकर मांनौ❀मिलन चली छबि सलिता जानौ
आई भवँन सबै रंग मगी❀कोउ दृग घूँमति रजनी जगी ८
हुलसी गावति हिय अति हेज❀सीतल दामिनि कौ सौ तेज ।
मुरलीधर बरनैं दुलरावैं❀तिलक भेंट लिये भांमिनि आवैं
तिनहिं भली बिधि आदर दीजै❀आगे ह्वै जु भवँन में लीजै ।
महा भाग फल करि अनुकूली❀हरि मुष लषि कुमुदनि ज्यौं फूली
भवँन अलंकृत बहु विधि करहीं❀अजिर लिपाइ चौक पुनि धरहीं
गरग आइ पट्टा धरवायौ❀तापर लै बरनां बैठायौ ॥११॥
प्रथम सुहागिनि तेल चढावैं❀हाथ हथ्यौंना अति छबि पावैं ।
पुनि उबटति तन सुन्दर नाइनि❀नगर कहावै जु ठकुराइनि ॥१२

---

[1]—अंकुर नवीन सिरे पर, [2]—जैसे स्वर्ण लता झूम रही हो, [3]—जूड़े से ।

वदन निहारि परम सुख पावै❀नाइनि अपनौ भाग मनावै।
काकी ताई जुरी जहाँ हैं❀होत परम कौतूह तहाँ हैं ॥१३
उबटि न्हवायौ मोहन बरनां❀तन लावन्य विश्व मन हरना।
गणपति ग्रह कुलदेव मनावैं❀विधि जैसे भुव[1] देव बतावैं १४
अच्छत रोरी चरचत मोहन❀सुन्दर सबहि लगति मुष जोहन
सबै कहैं जिनि गहरु लगावौ❀लाल जिमाइ बसन पहिरावौ१५
विधि विधान सब हीं करवायौ❀पुनि जननी अपु हाथ जिमायौ।
मारग भूख लगै जिनि तोकौं❀यह करुना उपजत अति मोकौं॥
करि करि लाड ग्रास मुष देई❀बारम्बार वारनें लेई।
त्रिपित भयौ कहि अचवन लीयौ❀भूवा रचि बीरा मुष दीयौ १७
नव दूलह सिंगार करावैं❀जिहि विधि आरज बिप्र बतावैं।
मणि चौकी पर अतिलड मोहै❀अस को यह छबि देख न मोहै॥
सुन्दर मुख पर मरुवटि काढी❀आँनन ओप सतगुनी बाढी।
अंजन रच्यौ सलज दृग कौरैं❀कोउ करैं कूटि सुनत मुष मोरैं॥
अलक फुलेल सग बगो कीनी❀मँहदी करनि अधिक छबि दीनी
चरन महावर नाइनि दीयौ❀मन बांछित जु नेग सब लीयौ॥
भूवा आइ बसन पहिराये❀विप्रनि पै जु वेद पढवाये।
जरी तार सिर रच्यौ जु चीरा❀कलँगी धरी जटित नग हीरा२१
पीत इजार[2] रही अति लसि कै❀कंचुक[3] बन्यौ सहानौ गसि[4] कै।
पटुका छोर छबीलै सोहै❀कनक उपरना सब मन मोहै २२
मणि कुंडल श्रवननि जु उदित हैं❀सोभा लखि नर नारि मुदित हैं
बेशरि लसतु नासिका मोती❀मनु शशि अंक लिये भृगु[5] गोती

१—ब्राह्मण, २—सूथन, ३—अचकन या जामा, ४—चिपका हुआ, ५—शिव जी की गोद में मानो चन्द्र है।

अधरनि पाक बिंब छबि छीनी❀दसन पांति दाडिम रद कीनी।
चिबुक चारु पुनि त्रिवली ग्रीवां❀मनौ रची छबि आंनन सींवां२४
कंठी कंठ धुकधुकी चौकी❀छबि रद कीनी जिनि ग्रह नौ की
भुज अँगद नग षचित विराजें❀चूरा रतन जटित कर राजें ॥२५
पहुँची कर मुँदरी छबि दैंनी❀नषनि कांति मानौ ससि सैंनी।
उर मणि मोतिनु माल जगमगैं❀निरषत दृग पल सौं न पल लगैं॥
कटि षीनी[1] किंकनी बनी है❀चरननि चूरा पदिक मनी है।
कुशम दाम बैजन्ती गर में❀पट कसूँभ रंग लरुवा[2] कर में॥
मौरु सेहरो सीस धर्यौ है❀नन्द आइ गोदान कर्यौ है।
सब मुख बोलैं जै जै बांनी❀जननी वारि वारि पियौ पांनी॥
मंगल दर्बि गोद में दियौ❀भूवा साजि आरतौ कियौ।
निगमनि धुनि जु मुनीश करतहैं❀बन्दी विरद पौरि उचरत हैं २६
भाट कवित छन्दनि जस गानैं❀ढाढी कुल कीरति जु बखानैं।
पाटम्बर भूषन नग दै हीं❀सब की हरषि असीस जु लै हीं॥
घोरी[3] चढनि जु देष्यौ चाहैं❀सब हीं आवति भरि जु उमाहैं।
नव दूलह तन अस भई ओभा❀त्यौं देखन भई उर नव गोभा३१
दोहा—भूप वृन्द अरु गोप गन, ठाढे राज दुवार।
ब्रज चौरासी कोस जन, सिमिटे कौतिक हार ॥३२॥
गोप ओप अति देत हैं, बनि ठनि चले वरात।
कृष्ण विवाह जु देखिवैं, सुर मन मन पछितात ॥३३॥

॥ चौपाई ॥

वरनैं अधिक उमाहौ मन में❀ठाडौ विहँसतु वनितनि गन में।
कहि कहि जात कॉन में ग्वाल❀घोरी चढि बेगौ गोपाल ॥३४॥

१—पतली तागा, २—रूमाल, ३—कैस धोरी पर लाल जो पग धारेंगे सो चातुरी देखा चाहती है पहिले तो कभी चढ़े नहीं हैं ग्वाल ठहरे घोड़ी चढ़ना नहीं जानते हैं।

सुनि मित्रनि कै मीठे बैंना❀लाल अरबरे कहत बनै नां।
मैया तुम सब नेरैं रहियौ❀यहै बात मैया सौं कहियौ ॥३५
वनिता बरनैं सुविधि लडावैं❀अपने अपने टोलनि गावैं।
आइ आइ कैं ताई काकी❀नग न्यौछावरि करति बनाँ की॥
इतनी मूठि उठी इक बारी❀ढाढिन नाइनि लेत जु हारी।
सोधि सुभ घरी मुनिनु बताई❀घोरी अजिर ता घरी आई ३७
अरग दियौ जैं बानी भई❀घोरी अचिरज रूप जु नई।
माइ ढापि अंचल उर लायौ❀पान स्तन सुत कौं करवायौ॥३८
सौंनैं सूत जु निर्मित करी❀ते पद[1] पीठि आनि कै धरी।
पहिरी चरन कछुक मुसिकाये❀मधुमंगल रचि पान षवाये ॥३९
अस्व पुजावति गावति बाला❀विहँसतु वदन कौतिकी लाला।
जीन पाइरैं[2] पाउ जु दीयौ❀बिन मित धन न्यौंछावर कीयौ ॥
नव दूलहु घोरी जु चढायौ❀तात मात बहु दर्बि लुटायौ।
भूवा आइ बाग गहि लीनी❀ब्रजपति हँसि मनुहारि जु कीनी॥
मन वांछित जु लीक तिहि पाई❀हिय जिय हरषि असीश सुनाई।
काकी ताई अति अनुरागी❀गावति मंगल वधू सभागी ॥४२
सब नर नारि होत हैं मगना❀देव दुँदुभी बाजति गगना[3]।
निर्मल दिसा होति जै बानी❀मंगल महा लोक सुष दानी ॥४३
थिर चर फूल न वरनौ जाई❀अवनी बाढ्यौ हरष महाई।
वीथिनु आवन जावन[4] छेहा❀रजत रुकम जहां वरषत मेहा ४४
सौंनैं सींक सवासिनि वारैं❀वनिता वृन्दनि गावति लारैं।
अटा अटारिनु चढि भई ठाढी❀देषन बनां भूख दृग बाढी ॥४५
कुशम ब्रृष्टि चहुँ दिश ते होई❀अंग सम्हारि सकत नहिं कोई।

---

[1]—जूती, [2]—रकाब में, [3]—आकाश में, [4]—भीड़ से भरी है।

इक उझकत जु झरोषनि जारी❀इक निरषति लगि लगि जु किवारी
अरबराति इक देखन ऐसैं❀जल ते बिछुरि मीन गति जैसैं
गाँव गोइरैं नौबति बाजैं❀जहाँ तहाँ जु बराती साजैं ॥४७
सुबल सुबाहुँ चँवर सिर ढोरैं❀औरौ साज लियैं चहुँ ओरैं।
मधुमंगल सिर छत्र फिरावैं❀रचि बीरी मनसुखा खवावैं ॥४८
नौ हूं नन्द पालिकिनु माहीं❀नृप दल बनै गिनत मित नाहीं।
नाँनाँ सुमुख पीठि गज सोहै❀मन आनन्द करन मित को है ४९
मामा अस्व नचावत आगैं❀कियें सिंगार अति भले लागैं।
जबहिं नगर की पौरी आये❀बहुरि नन्द गोदान कराये ॥५०
आई माइ बनाँ कें नेरी❀रतननि सौं भरि झोरि बगेरी।
बेटा तू अति नीके रहियौ❀सब सौं बचन जु मीठे कहियौ५१
कपट के देव पुजै हैं बाला❀तू जिनि पूजै मेरे लाला।
सजन बधुनि गारी सुनि लीजौ❀काहू कौ उतरू जिनि दीजौ॥५२
करज चटकि वारनें जु लै कै❀आई भवन असीसै दै कै।
हरि हलधर गजराज चढाये❀सब हीं सिमिटि बराती आये५३
गज सैंना न्यारी बनि चली❀अस्वनि सैंन बिराजति भली।
पुनि बढि चली रथनि की सैंनी❀नर वाहनी अधिक छबि दैंनी॥
वरहिनु[1] को गति करहा नचै❀सकटनि में बहु सांमां सचै।
धरे कमोरिनु वागे काढैं❀पहिरि गोप सोभा सुख बाढैं ५५
एक परदनी[2] कटि अरसेटी❀दूजी लै कैं पाग लपेटी।
लम्बे चौरे तिलक जु कीये❀बांसनि लडा करांन में लीयें॥५६
इक चले पहिरि बसन पाटम्बर❀एकनि कांधैं सुन्दर कम्बर।
एकनि जोते बडडे गाडे❀एक लादि मारग भये आडे ५७

१—मोर की तरह ऊँट नाचत हैं, २—बधाई का सरोपा।

एक कनात तम्बू जु लदावैं❀इक पग प्यादे बिहँसत आवैं ।
इक हाथनि सौं मूछ मरोरैं❀पार परोसी सब संग जोरैं ॥५८
एक भोर ही के उठि गये❀साते जाइ जु एकत भये ।
कोऊ सखा तुरंग नचावैं❀कोऊ सकटनि पै छबि पावैं ॥५९
कोऊ हाथी के हौदनि लसैं❀कोऊ करहनि पै चढै जु हँसैं ।
कोऊ छोटे घोरनि असवार❀कोऊ चले पायनि तिनके लार ॥
चित्रित रंग चलैं चौडोल❀न्यारे न्यारे भूपनि टोल ।
इहि विधि चले बरात जु साजें❀टोल टोल बहु नौबति बाजें॥६१
छत्र फिरैं सिर चँवर जु ढरैं❀बन्दी विरद बखान जु करैं ।
कनक तार सेहरौ लस्यौ है❀देखि बरातहि लाल हँस्यौ है६२
अद्भुत सोभा कहा बखानौं❀ससि बैठ्यौ चिक डारैं मानौं ।
जरकसी मोर लस्यौ सिर ऐसे❀किरिनि मयंक चली बढी जैसे ॥
रोहिनी महरि महल चढि देखैं❀अपु मुख अपनौ भाग्य विशेखैं ।
चढी सतषनैं सब पुर वनिता❀तिन मधि राम कृष्ण की जनिता
दरसति दृगनि बरात जु सोभा❀उर उलही आनन्द की गोभा ।
बानिक कहा जनेति बखानौं❀छबि सागर बढि चल्यौ जु मानौं
मुहि गिरि पूजन आजु फल्यौ है❀मौरु बांधि मेरौ लाल चल्यौ है ।
धन्य धन्य संकेत निवासनि❀हिय के हिय आनन्द प्रकासनि ॥
गो पूजन भयौ मुहि वरदायक❀सजन मिल्यौ सबहीं बिधि लायक
आरज[1] पुन्नि फल्यौ यह मोकौं❀कहा मन फूल सुनाऊ तोकौं ६७
जिहि दिस चरन धरतु सुत मेरौ❀तित वरषत सुख आजु घनेरौ ।
सबहिं[2] मुहुचहा हरि हलधर के❀अति सुखदायक सुन्दर वर के॥
इहि दिन सम जु यही दिन भयौ❀अलभि[3] लाभ मुहि बिधनां दयौ

---

[1]—बडों का पुण्य, [2]—मुख दर्शन के इच्छुक, [3]—अलभ्य लाभ ।

धनि भुवि मध्य भाँन बरसानौं❀आजु अधिक सोभा सरसानौं६९
धन्व सजन कुल भूषन बरनी❀मेरे सकल मनोरथ भरनी।
ब्याहन चल्यौ अतिलडौ मेरौ❀धन खरचै ब्रजराज घनेरौ ॥७०
वह गोपनि दल मध्य निहारौ❀गज अँवारी राज दुलारौ।
सांवल बरन अति लडौ दरसै❀छत्र फिरतु जहां अति छवि वरसै
चँवर ढुरत जाके दुहुँ ओरी❀उडै मनु राज हँस इक जोरी।
ताकी ढिग बैठ्यौ बलि भैया❀मोहि दुहुँन की लगौ बलैया ७२
ब्रजपति छिनक बिसारत नांहीं❀विरमि विरमि चलै मारग मांहीं
ब्रज रज उडि जु गगन कौ चली❀मोहि लगत यह सोभा भली ७३
देखि चकृत ह्वै हैं सुर नारी❀यह सुख मन करि वांछन हारी।
यह नीसांन घुरत हैं अवनी❀पूरित भई व्योम धुनि कमनी ७४
भूप बराती मुरलीधर के❀जिनहिं देखि लजैं अमर[1] नगर के
आगे लै मेरे सुन्दर वर कौ❀सब बढि चलै सजन के घर कौ॥
बाजे चल्यौ वजाइ [2]अगौनौं❀कौतिक आजु भांनपुर हौनौं।
जे जे मिलत जु मारग माहीं❀लखि तिनके हिय नैंन सिराहीं॥
ये दल बादल उमडे जानौं❀इक रसनां कहा छबिहि बखानौं
छबि अम्बुद दरस्यौ सुख रासी❀हुलसे हिये भान पुर बासी ॥७७

दोहा—यौं वनि चली वरात जव, जसुमति निरषी नैंन।
उर बाढ्यौ आनन्द जो, वरन्यौं मधुरे बैंन ॥७८॥
दिहु असीस मो अति लडे, करि करि अँचल छोर।
सजन सजन मिलि रसु रहै, सुख वरषै दुहु ओर ॥७९
सवहि असीसति पुर वधू, अंचल छोर उँचाइ।
दुलहिनि लावौ व्याहि अबु, अति लड श्री ब्रजराइ ८०

१—इन्द्रपुरी या स्वर्ग, २—सब से आगे।

सील अवधि गुन की अवधि, बेटी रावलि भूप ।
जोरी विधि एकै रची, वृन्दावन हित रूप ॥८१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण विवाह दिन
• मङ्गल बरात की निकासी पैंतालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ छयालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—अब बरनौं वृषभान पुर, आई निकट बरात ।
इहि विधि सौं बाजे बजत, सुनि हुलसत सब गात ॥१॥
कोर बराबरि गज चलैं, अस्वनि सैन अपार ।
बहिल वाहिनी रथ चलैं, घंटनि की झनकार ॥२॥
करहा सकट अनेक तहां, चौडोलन की भीर ।
पैदलि की गिनती नहीं, सब तन नव रंग चीर ॥३॥
सैन चली चतुरंगनी, कहौं कितौ बिस्तार ।
इहि विधि की रचना निरषि, सुर भये कौतिकहार ॥४॥
सब आप अपने मन बढैं, चलत अगमनैं धाइ ।
यह सोभा देषैं बनैं बैंननि कही न जाइ ॥५॥

॥ चौपाई ॥

गोप भूप मुनि भीर जहां हैं❀राजत रावलि राइ तहां हैं ।
आइ दूत नें खबरि जु दीनी❀माथौ नाइ करी आधीनी ॥६॥
सजि बरात नन्दीस्वर रांनौ❀आयौ निकट बात मो मांनौ ।
महाराज आग्यौनी लीजै❀श्री दामा कौ बिदा जु कीजै ॥७
सजन आगमन तन मन विकसे❀राज कुँवर बनि बनि सब निकसे
बडी रासि के अस्व पलानै❀अग्या दीनी रावलि रानै ॥८॥
सब भूपनि सनमान जु दीजौ❀ब्रजपति कौ सिर नवनी कीजौ ।
यह सुनि राज कुँवर वढि चलै❀अस्व नचावत लागत भले ॥९॥

ये पुर ते वे दल ते कढैं❀नवल छैल इत उत मन बढैं।
थिरकत हैं पट भूषनि अंगनि❀षुरी[१] करावत चपल तुरंगनि १०
दै दै एड अस्व यौं पेलैं❀मनहु सुघर नट कला जु खेलैं।
ऐराषी[२] तुरकी पुनि ताजी❀सैंधी कच्छ जाति बहु बाजी ११
छुटैं अलोलनि कौतिक करैं❀सब भूपनि के मन कौ हरैं।
हलैं बादले छोर दुशाला❀उर रुरकत मोतिनि की माला॥
घुरहि निसांन बजैं सैनाई❀धौंसनि की धधकार सुहाई।
तुरही पुनि रण सींघा बाजैं❀मदन भोरि गहरे सुर गाजैं॥१३
कुँवरनि के मन बहस जु परी❀आजु धन्य यह मंगल घरी।
अस्व सधाये मुरत जु ऐसें❀फिरैं कुलाल चक्र गति जैसे १४
मिलि ब्रजपति के सन्मुख गये❀करि जुहार सिर नावत भये।
कर पसारि कै आदर दियौ❀वचननि बहु सनमान जु कियौ १५
हग हग मिले कृष्ण बलिराम❀इत उत सबनि करी परनाम।
सब भूपनि कौ नवनी करि कै❀कहे मुख बचन अमी से झरि कै
एक संग सब बाजे बाजैं❀मनहु गहरु भादौं घन गाजैं।
हींसैं हय पुनि गज चिंघारैं❀रथ दौरैं इक इक लगि लारैं॥१७
कोर बराबर सब ही आवैं❀सजननि कौं सोभा दरसावैं।
कोटि कोटि मनमथ कौ मनमथ❀सब आवत लागे दुलह पथ १८

दोहा—गोकुल रांने के तने, तम्बू नाना रंग।
नर मोहैं ते न्याइ ही, चौंधैं निकर अनंग॥१९॥
उतरे नृप अरु गोप गन, कहा कहौं विस्तारु।
तम्बू रचे अनेक विधि, कियैं बिछौंना चारु॥२०॥

---

[१]—घोरे के टाप के चिन्ह नचा कर दिखाना, [२]—घोरों की जातियों का वर्णन है।

॥ चौपाई ॥

दुग्ध फैंन सम बिछै बिछौंना❀तहाँ बैठ्यौ दिन दूलह लौंना।
अग्रज अनुज सहित ब्रजरांनौं❀राजतु सुर सिरताज जु मानौं२१
नवल बनाँ सोहै तिन आगैं❀सिर पर मौरु सहांनै बागैं।
पुर बासी सब आतुर धाये❀लाल बना कौ देखन आये॥२२
निगमनि जु दुर्ल्लच्च बतायौ❀सो बरनाँ बनि कै यह आयौ।
द्दगनि धरै कौ फल सब पावैं❀देषि देषि कै ग्रींव डुलावैं॥२३॥
सब के नैंननि ढोरी[1] लागी❀जाहि बहुरि आवैं अनुरागी।
दूलह रूप हई जु परी है❀मूरति स्याम हियेनु अरी है २४
अगनित सरवत कलस जु आये❀ब्रजपति सब डेरानि पठाये।
भान सचिव प्रोहित संग ह्वै कै❀आये खेत दाइजौ लै कै॥२५॥
मिलिकै बहु वचननि रस राष्यौ❀कारज उचित सुमुख ते भाष्यौ।
उत प्रजपति बोलैं सब कोई❀उचित रुचित कीनी बिधि सोई॥
चौकी पै दूलह बैठायौ❀गणपति ग्रह पूजन करवायौ।
सबहि मुनीस वेद उच्चरैं❀बन्दी भाट प्रसंशा करैं॥२७॥
बसन पूजि बरनाँ पहिरायौ❀रोरी अच्छत तिलक करायौ।
मणि कुंडल दीनैं बहु अभरन❀पाई लीक लगाइत सब जन॥
रजत रुक्म दीये वह भाजन❀गनती नहीं हय गय करहा गन।
कनक रतन गोधन बहु दीने❀सजन प्रसन्न जु यहि विधि कीने।
अज्ञा लै घर आये जब ही❀वैवरौंनियां[2] लाये तब ही।
वाजे विविध बजावत आये❀पुर की रचना देखि सिहाये। ३०
नव ग्रह विधि सौं पूजन कीयौ❀दूलह मानि नेग लै लीयौ।
मंडफ नीकी भांति जगायौ❀सजन मानि तिन थापौ[3] खायौ॥

---

[1]—लगन, लौ, रट, [2]—स्वागत करके पुर प्रवेश कराने वाले, [3]—हाथ के छापे के चिन्ह लगाये।

देवरौंनिया[1] डेरनि गये❀दूलह कौ सिंगारत भये ।
मौरु सेहरौ सिर पर साजै❀एक संग सब बाजे बाजैं ।।३२।।
नख षिख अस सिंगार बनायौ❀जिहि लखि मदन तांवरौ[2] आयौ
बनां बडे गजराज चढायौ❀सब कोऊ देखन कौ धायौ ।।३३
छत्र फिरैं सिर चँवर जु ढरैं❀आगें गुनी विरद उच्चरैं ।
सजी बाग वारी इहि भांति❀जिहि लषि विधि रचना जु लज्याति
दोहा—गोप सजे भुव पति सजे, सजे जु गोप कुँमार ।
नौ हूं नन्द जु अस सजे, सुरनि लज्यावन हार ।।३५।।
नटी सजी बाजे सजे, सजे दुशाख मसाल[3] ।
आतस वाजी सजि चले, दिन दूलह नन्द लाल ।।३६।।
एक संग बाजे बजैं, एक संग कियौ गवँन ।
सारद[4] मति भई घावरी[5], और वरनि है कवँन ।।३७।।

।। चौपाई ।।

आतस बाजी छुटत जु चली❀जहाँ तहाँ दरसत सोभा भली ।
विविध मसाल दुशाषा वरैं❀मारग वीथिनु के तम हरैं ।।३८
यों दरसै जु नगर बरसानों❀हरि पुर हूं ते छवि सरसांनों ।
चहूं ओर वन उपवन सोहैं❀फल फूलनि सौरभ मन मोहैं ३९
कनक नगनि बहु रौंस[6] रची है❀बैठक नांनां भांति रची है ।
कुंड अनेक जहाँ तरु पांती❀कनक सिढी लगे नग बहु भांती
तिन में निर्मल तोइ भर्यौ है❀जिहि करि पान सुधा विसर्यौ है
निर्भय जहाँ विचरैं पसु पंछी❀तीर रम्य जल खेलैं मंछी[7] ।।४१
कंचन कोटि कँगूरा कमनी❀चौक चौतरा सुन्दर अवनी ।

१—शिंगार करने में चतुर, २—ताप हुआ कि हाय हाय मैं व्यर्थ का काम देव हूँ, ३—मशाल, ४—सरस्वती, ५—बावरी या चकृत ६—बाग के वीच का मारग, ७—मछली ।

गोपुर चार चहूं दिसि लसै❀मणिमय फाटक मनु मुखहंसै ॥
पुर को राजत अति विस्तारा❀चौपर चारु जु हाट बजारा ।
हाटक भवँन अनेक जहां है❀बहु विधि रचना रची तहां है।४३
जग मग होत झरोखा जारी❀अरुन मणिनु सों जटित किवारी।
धुजा पताका कलश विराजै❀पौरिनु मुख मणि माला राजै ।४४
छज्जे खंभ जटित नग जोति❀निरखि सबनि चकचौंधि होति ।
छतरी गुरज बंगला अटा❀अस राजत मानों छवि छटा ।४५
जरी चंदोवा ठाँ ठाँ तनैं❀दामिनि ज्यौं दमकत हैं घनैं ।
भान भँवन कौं उपमा ना है❀हौं जु विचारि रह्यौ मन माँ है।४६
महा रमा खेलत जिहि ठौर❀ताकौ उपमा कहाँ जग और ।
सौरभ जल सौं सीची गली❀तहाँ उठति सौरभ विधि भली।४७
व्याहन आयौ ब्रज कौ रानौं❀देखि पुरी छवि हिये सिहानौं ।
गोप भूप दल सजे जु आवैं❀इहि पुर आज अधिक छवि पावैं ॥
जरे दुशाखा छुटैं हवाई❀[1]दुपहरियनि की जोति सवाई ।
[2]भैंचंपा हथफूल जु छुटैं❀छुटैं कुरंग[3] परस्पर गुटैं ॥४९॥
[4]मेष विशेष उजेरो करै❀उछरि उछरि कै सन्मुख लरैं ॥
हय हाथी उछरैं इहि भांति❀बाढी जोति गगन कौं जाति।५०
चरखो छुटैं सब्द बहु करैं❀रहि रहि छूटैं ऊँचैं जरैं ।
उडैं मोर पावक कन झरैं❀देखौ तिमिर गगन कौ हरैं ।५१
छुटति चछूँधरि दारू भरी❀खिलवारिनि जु हँसावति खरी ।
छूटैं लिप्पा अरु तूम्बरी❀छुटैं अनारनि दारू भरी ॥५२॥
विविध भांति दारूनि खिलौंना❀देखि मुदित होई गोपनि छौंना।
इहि विधि आवत गोकुल चंद❀बरसानैं बरसत आनन्द ॥५३॥

१, २, ३—सब आतिशबाजी के नाम हैं । ४—आतिशबाजी का एक प्रकार ।

निर्तति नटी मननि कौ हरैं❀तखतनि चढी जु कौतिक करैं।
एक एक तें अति ही सुथरी❀मानौं अमर नगर ते उतरीं।५४
हाव भाव लावन्य जु नागरि❀पर मन हरन गान गुन आगरि।
दूलह ओर जु मुरि मुरि चहै❀मृदु मुसिकाय वचन कछु कहै॥
जिनकी चितवनमें कछु टौंना❀सबहिं बराती किये खिलौंना।
गावैं लाल बनैं दुलरावैं❀ब्रजपति पुनि पुनि मूठि उठावैं॥
बना तात की अति ही प्यारी❀यौं कहि अबला गावत गारी।
सजन भलैं तुम इन कौ लाये❀भान नगर के देखि सिहाये।५७
देखन दूलह मदन गुपाला❀ऊँचे अटन चढीं ब्रज बाला।
अंजुरिनु भरि २ कुसुम बगेरैं❀लाल कौतिकी तिन दिस हेरैं॥
सोभा घटा गगन ते जानौं❀वरषत बडडी बून्दनि मानौं।
नौं हूं नन्द रतन झर बरषैं❀देखि देखि पुर बासी हरषैं॥५६॥
हटकि २ चलैं गलियन माँहीं❀सोभा सिन्धु आजु मिति नांहीं।
बाजे बाजत हैं जहाँ केते❀बुद्धि प्रमान कहौं हौं जेते॥६०
गहरे घाव निसाननि परैं❀गज सौं गज हय सौं हय अरैं।
मदन भेरि सहनाइनु टेरैं❀मनसिज मन डारति अरभेरैं॥
तुरहीं नरसिंघा घरहरैं❀धौंसनि धधकारैं मन हरैं।
ढोलनि ढोल झाँझि डफ बाजैं❀तबला पुनि मृदंग सुर साजैं॥
बीन तम्बूरा और सारंगी❀मुरली महुवरि मुरज उपंगी।
नाँनाँ बाजे बहु विस्तारा❀सुघर निकर कठतार सितारा॥
सुरमंडल रबाब्र किन्नरी❀जिनकी ध्वनि सब चितवित हरी।
गोमुख और झालरी बाजैं❀हय हींसनि मिलि अतिसुख साजैं॥
बरनौं आगैं गावत ढाढी❀लाड लडावत हिलगन[1] गाढी।

---

[1] —हृदय की प्रीति

वन्दी भाट कवित जस वरनैं❀ब्रजपति कै उर आनन्द भरनैं ॥
विरमि विरमि रथ बाहन चलैं❀नर वाहनी देत छवि भलैं ।
पैदलि संघट गलियन माँही❀नीठ नीठ कोऊ आवैं जाँहीं ।६६।
नौ हूं नन्द अति लडे पाछैं❀महा भाग्य छवि पावत आछैं ।
नाँनाँ माँमाँ भूप बराती❀सोभित अस्व गजन की पाँती ॥
गली बजारनि रचना ऐसी❀अमर पुरी हूं नाहिन जैसी ।
अस्वनि कुँवर नचावत ऐसें❀निर्त्तत मुदित सिषंडी[1] जैसें ।६८
नवल बनाँ के सब ही आगैं❀सब ही बनैं सहाने बागैं ।
कलँगी तुररा ऐसे झमकैं❀मनहुँ दाँमनी तनय जु दमकैं ॥
सौंनचिरी जु मैंन की जानौं❀छवि के बाग रमति हैं मानौं ।
सोभा छके छके सुख ब्याह❀आनन पर सतगुनौं उमाह ।७०।
अपनी छवि औरनि जु दिखावैं❀औरनि की छवि लखि सुख पावैं ।
भँवन भँवन पर भामिनि चढी❀गावति गारी आनन्द बढी ।७१।
नन्द सुवन कौं यह विधि देखैं❀नैंननि की लागत न निमेखैं[2] ।
कोऊ देखन कौं अति अरबरैं❀कुशम वृष्टि चहुँ दिस ते करैं ॥
अरी भटू बरनौं अनुरागी❀छवि अँचवन दृग प्यास जु लागी ।
सूधौ सौ लागत ब्रजराँनौ❀परम साधुता मूरति जाँनौं ।७३।
यह चंचल जसुमति कौ जायौ❀चितवनि ही में हमें लखि पायौ ।
सुनि मोहन मुसक्यानैं ऐसे❀कमल कली विकसत है जैसे ॥
गलिन माँहिं सोभा कौ संघट❀आवतु री दूलह नागर नट ।
इतहि भूप गोपनि के गन हैं❀पौरी ठाढे हरषित मन् हैं ॥७५॥
तिन के मधि रावलि कौ राँनौं❀सीतल किरनि उदय रवि मानौं ।
महा मुनिनु कौं आगें कीये❀ठाढे साज तिलक कौ लाये ॥७६

---

[1]—मोर । [2]—पलकें ।

प्रथम बाग वारी तहाँ आई❀छुटी महताब अनेक हवाई ।
आतस बाजी छूटी ऐसे❀रजनी में बासर होइ जैसे ॥७७
गज बाजनु की सैंनी झुकीं❀आवन जान बाट कछु रुकीं ।
आरज गोप भूप गन आये❀दूलहु कौ आगे करि लाये ॥७८
एक सँग बाजेनु धुनि भई❀सब ही विस्व भई सुख मई ।
जहँ तहँ अगनित बरें मसाल❀मंगल सब्द भये तिहि काल ॥
हरि तोरनि परस्यौ जिहि बार❀भुव नभ ह्वै रह्यौ जै जै कार ।
पुनि दूलहु गज ते जु उतार्यौ❀चौक पूरि पट्टा बैठायौ ॥८०॥
इत-उत जुरी गोप रजधानी❀सब मुख सुनियत मंगल बाँनी ।
कलस गणेश जु पूजन करिकै❀मंगल दर्वि गोद वर धरि कै ॥
वेद पढ़त मुनि हरषित होयौ❀विधि सौं तिलक बनाँ कै कीयौ ।
पट भूषण अमोल पहिराये❀झारी कलश पात्र बहु आये ॥
कछ्छी पुनि ऐराषी ताजी❀दिये सिंगार जु अगनित बाजी ।
करहनि झूल परी पट परी❀मुहरी मणि अमोल जडि करी ॥
रथ पालकी बहुत गज गाई❀दीनैं साज सिंगार बनाइ ।
औरौं दात घनेरी दीनीं❀बहुन भांति मनुहार जु कीनीं ॥
उडत गुलाल पोटरी भारी❀गारी गावत हैं ब्रज नारी ।
कौन भूप यह मंडफ छायौ❀कौंन नगर कौ व्याहन आयौ ॥
भूप भयानै ब्याहु रचायौ❀ब्रजपति नट वेडिया कहायौ ।
लायक सजन देंहि क्यौं गारी❀अति लायक समधिन जु हमारी ॥
ब्रजपति घर् वरस्यौ रस रंगा❀जिन जायौ ढोटा जु दुरंगा ।
विलगु न मानौ सुनि सुखपावौ❀अपनौ सुत कौ वरन मिलावौ ॥
औलिनु भरि बन्दन जु बगेलैं❀सबल मदन सैंना मनु पेलैं ।
सुनि सुनि गारी गोप सिहाने❀ऊँचे चितयौ गोकुल राने ॥८८

विप्रनि तब आडौ पट कीयौ❀नव दूलह को भीतर लीयौ ।
रतन जटित चौकी बैठारे❀अरघ दियौ मणि भूषण वारे ॥
निरखि सुखित भये दृग पुनि हीयौ❀रतन थार भरि तिलक जु कीयौ
लेति वारनें पुनि पुनि रानी❀करि आरतौ वार पियौ पाँनी ॥
छाप छबीली पुनि पहिराई❀न्यौछावरि करि दर्बि लुटाई ।
अहा महा मनि कीरत मैया❀लेति बनाँ की भूरि बलैया ।६१
जाकी लोक अलौकिक करनी❀राधा जननी जसु विस्तरनी ।
बार बार चटकति है कर जनु❀वार वार बारति है बहु धनु ॥
बार बार असिक उचरति है❀आनन्द के वारिध जु तरति है ।
पूरब सुकृति करति सुधि राँनी❀लली ललित वर देखि सिहानी ॥
वारौठी सुख वरस्यौ एतौ❀हौं लघु मति कहि सकौं जु केतौ ।
जनवासौ जु बतायौ तहाँ❀उपवन भँवन बँगला जहाँ ॥६४

दोहा—भूप गोप गन संग लै, गँवने तहाँ ब्रजराज ।
जन वासौ वृषभान जू, पठये नाँ नाँ साज ॥६५॥
सुखित किये जहाँ तहाँ सबै, बहु विधि दै सनमान ।
वृन्दाबन हित रूप अस, लाइक श्री वृषभांन ॥६६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत खेत दाइजौ तथा वारोठी मङ्गल विवाह वरनन छयालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ सैंतालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—त्यारी करी ज्योंनार की, दीने विप्र पठाइ ।
भोजन हित पग धारिये, अहो नन्दीस्वर राइ ॥१॥
बैठे जहाँ गोकुल धनी, अंक कमल दल नैंन ।
विप्र आसिका दै कहैं, सादर मधुरे बैंन ॥२॥

मंडप सोभा देहु चलि, लेहु गोपगन लार ।
यह विनती वृषभान जु, कीनी बारम्बार ॥३॥

॥ चौपाई ॥

कृष्ण जनक सुनि प्रमुदित भये❀तब ढिंग बोल लगाइत लये ।
सब भूपन सुधि दीजै जाइ❀भोजन हित अब धारौ पाइ ॥
प्रथमहि घाव निसाननि परै❀सुनतहि सबै उमाहे भरै ।
नेगी जहाँ तहाँ फिरत [1]दरेरनि❀खबरि करी सबहिनु के डेरनि ॥
दूजै भयौ नगारो जब ही❀त्यारी करन लगे हैं सब ही ।
आवौ चलौ चलत यौं कहैं❀इक ठाढे एकनि कर गहैं ॥६॥
प्रथम सिंगारे नौ हूं नन्द❀बन्दी बरनत जस के छन्द ।
एक भये चलि आगे ठाढे❀इक उमाह चलिवै मन बाढे ॥७
एक कहैं जु गहरु न करौ❀भूषन बसन बेगि अंग धरौ ।
एक कहैं बाबा हि बुलावौ❀एक कहैं काका कौ लावौ ॥८॥
एक कहैं काहे अकुलाये❀बडडे भूप न अजहूं आये ।
एक कहैं आवौ जू खकै❀ढूंढत फिरत तुम्हें हम कब कै ॥
इक कहैं बेगि भातइनु टेरौ❀वह ऊँचौ सो उनकौ डेरौ ।
इक एकनि की बहियाँ गहैं❀चलौ नन्द ढिंग ऐसे कहैं ॥१०
इक एकनि सोवत जु जगावैं❀नहि जागैं तब जल छिरकावैं ।
तीजै घाव निसाननि परै❀ब्रजपति तब आगे पग धरै ॥
चलै भूप गोपनि जु समूह❀मारग मांहिं होत कौतूह ।
इत उत राजै सकल समाज❀ब्रजपति चलत मत्त गजराज ॥
दिखयतु हिये वदन उत्साह❀तन छवि बाढ़ी पुत्र विवाह ।

---

[1] —घूम फिर कर बुलावा देते थे । [2] —शीघ्रता पूर्वक, उत्साह भरे ।

गोपनि आनन सुख अनुकूलै❀मनहु सरद रितु अम्बज फूलै ।।
झार दुशाख मसालैं बरैं❀मानौ तिमिर गगन कौ हरैं ।
गुनी गवैया सब हीं लारैं❀अपने अपने गुन विस्तारैं ।।१४
करषा कवित भाट उच्चरहीं❀गोपनि के उर आनन्द भरहीं ।
बन्दी आदि सौम[1] जस वरनैं❀ऐल[2] जजादि चरित मन हरनैं ।।
आगे ढाढी पठत पवारे❀गोपनि कुल के गुन अति भारे ।
धौंसनि की धधकारैं राजैं❀तुरही पुनि रनसिंघा बाजैं ।।१६
सहनाइनु की टेरैं भलीं❀राग रागनी तिन में रलीं ।
दुपहरिया जु छुटैं जगमगैं❀कौतिक हार संग बहु लगैं ।।१७
तन दमकैं भूषण जु दुकूल❀छुटैं हवाई पुनि हथ फूल ।
भौंन नगर की रचना देखैं❀हरि पुर हूं ते गरुवौ लेखैं ।।१८
गोप राज पौरी जब आये❀नव दुकूल पाँवरे बिछाये ।
विरमि २ तिन पै पग राखैं❀मंगल बचन नारि नर भाखैं ।।
हरषित है अँवनी कौ हीयौ❀अस मंगल वृषभान जु कीयौ ।
सजन मांडये[3] जिहिछिन आये❀ब्रज बनितनि मिलि मंगल गाये।।
पंच नाद ताही छिन भये❀बसन बिचित्र बिछाइ जु दये ।
राधा जनक चरन जब धोये❀सबहिनु के हिय प्रेम समोये ।।
मंडपतर जु ओप अति दीनी❀नीकी बिधि सौं पंकति कीनी ।
न्यारे भवन विप्र बैठाये❀इच्छया भोजन तिनहिं कराये ।।
चरन वन्दि पुनि आज्ञा लीनीं❀तब परसन विधि गोपनि कीनीं ।
भानौंखर कौ निर्मल वारि❀भाजन भरि दिये सबनि सम्हारि।।

दोहा–भवन अनेक भंडार बहु, बैठे लग पुर पौरि ।
परसन चले अनंत जन, जहां तहां कौ दौरि ।।२४।।

१—चन्द वंश । २—चन्द्र वंश के राजा ऐल तथा ययाति । ३—मंडप में ।

पुर घर घर वीथीनु वर, बैठारे दै मान ।
पनवारे दै प्रथम ही, पुनि परसत पकवाँन ।।२५।।
सीतल जल झारी धरी, जहँ तहँ करत सम्हार ।
लेहु लेहु बानी यही, खुले विविध भंडार ।।२५।।
पवन वेग गवने सबै, परस जांहिं छिन मांहिं ।
भीजे हिये सनेह सौं, हित हीनौं कोऊ नांहिं ।।२७।।

।। चौपाई ।।

घेवर बावर खजला खरे❁लाडू अति ही रस सौं भरे ।
सुभरा जलेबी और सुहार❁खुरमा और अमिरिती चार ।।
मठरी बनी जु उज्जल रीति❁हिय जिय सबनि बढ़ावति प्रीति ।
फैंनी औरु अन्दरसे परसै❁चन्द्रकला देखत मन सरसै ।।२९
लाडू मगद दूध फल खरैं❁मधि इलइचो दाने परैं ।
बूंदीनु दानै सेब सिंघारे❁अधिक मौंन कै सक्कर पारे ।।
दही बरा बूरे के पागे❁जैंवत स्वाद बरातिनु लागे ।
मोदक बने स्वाद के नीके❁जेंवत सजन भांवते जी के ।।३१
गूझा बनै गुली के उज्जल❁रसना रुचि उपजावत अति भल ।
बनी कचौरी मौंवन डारी❁बहुत मसाले दै जु सँवारी ।।३२
उज्जल अति ही पतरी पूरी❁बेसन मिश्रित बनी जु रूरी ।
बरा परोसे सुभग सलौनें❁रचे सुतेंवन[1] स्वाद त्रिकोनें ।।३३
अमृत गुटिका गुना रसीले❁बेसन के जु साज चटकीले ।
किसमिस दाख राइतौ कीयौ❁सुन्दर दौनानि भरि भरि दीयौ ।।
पुनि बथुआ जु घिया कौ न्यारौ❁जेंवत लग्यौ सबनि कौ प्यारौ ।

---

[1] —तरके लगे हुए तेंवन साग भाजी ।

छोटी बून्दी दधि जु मिलाई❀स्वाद सलौनी सब मन भाई ॥
विविध भाँति पकवाँन बनाये❀अधिक स्वाद सौं गोपनि पाये।
जो जो रुचि होइ परसैं सोई❀मांगि मांगि लैहिं सब कोई ॥३६
सुन्दर पापर घृत तलि काढै❀भोजन करत स्वाद सुख बाढै ।
पाकनि भाजन हाथनि धरै❀सबहिनु की मनुहार जु करै ॥३७
इक कहैं जाइ परोसौ उत में❀इक कहैं भैया आवौ इतमें ।
सामाँ विविध भरे भंडार❀लै लै धावैं बहु परचार ॥३८॥
निधि सिधि संतत हैं जिहि ग्रेह❀तहाँ कौन विधि कौ सन्देह ।
गोप रंगीले बतरस परै❀जेंवत महा स्वाद सुख भरै ॥३९
मंत्री राज फिरैं सब ठौर❀कर सम्हार परसावैं और ।
राज भँवन में ऊँचे अटा❀राजति बधू मनौ छबि छटा ॥
बैठि झरोखनि गारी गावैं❀सजननि के अति ही मन भावैं ।
गोकुल रानौं सब गुन पूरौ❀जा घर मच्यौ रहै [१]धमतूरौ ॥
परम माधु समधिन जु हमारी❀किहि विधि ताहि दीजिये गारी।
जहाँ तहाँ जिनकी विदित बडाई❀सुत दुरंग जनि[२] सोभा पाई ॥
लाइक बडी जु मोहन जनिता❀ऐसी कौ त्रिभुवन में वनिता ।
अति उदारता जिनके उर में❀होति प्रसंशा ब्रज पुर पुर में ॥
जायौ सांवल सुन्दर ढोटा❀कहन सुनन कौ रही न ओटा।
धनि गोकुल पतिकी रजधाँनी❀[३]रावल रीति अनोखी जानी ॥
जिन के गरग जोतिसी भारी❀नाम धर्यौ कि दिवाई गारी ।
रहौ भट्ट ऐसे जिनि भाखौ❀राज भँवन कौ परदा राखौ ॥४५
महा भाग ब्रजपति की राँनी❀जिन सुत जायौ रूप गुमानी ।
मन दै सुनौ हमारी बानी❀यह निर्मल कीरत जु बखानी ॥

१—धूमधाम । २—पैदा कर के । ३—राज घराने की ।

समधी आये नगर हमारे❀समधिन काहे न लाये लारे ।
आदर सबहिं भाँन पुर देते❀उनकी भूर बलैया लेते ॥४७॥
सुमुख गोप की पटुला घरनीं❀पर कारज जु विचच्छन वरनीं ।
मोहन की मामी गुन अगरी❀पर दुख दूरि करन वे सगरी ॥
नौ नन्दन की नौ हूं भाँमा❀सबहिनु सुख दायक अभिराँमा ।
लाइक सबहिं बराती दरसैं❀जिनकी नारी गुपति सुख बरसैं ॥
हम जस गावत सजन तिहारौ❀तुम जिनि मानौ बिलग हमारौ ।
रहि रहि जेंवौ धीरज धरौ❀बडे बडे न ग्रास मुख भरौ ॥५०
बनितनि कथा मोहनी बानी❀भरी चातुरी अति सुख सानी ।
सुनत गोप हर हर हँसि परैं❀नींचे बदन सु ऊँचे करैं ॥५१॥
बसति चातुरी इहि जु नगर है❀यह रावलि नरेस कौ घर है ।
यह रस रीति कहो को जानै❀नित सुख बरसै इहि बरसाने ॥
परसन हारे जहँ तहँ डोलैं❀लेहु लेहु ऐसे मुख बोलैं ।
बींधी स्वाद सबनि की रसना❀मचलि परी काहू की बस ना ॥
साँमा सब ही रसीली महा❀सुमतिनु रची बरनिये कहा ।
कृष्ण जनक जेंवत रुचि मानी❀करत प्रसंश आपु मुख बानी ॥
सनय सनय यों भोजन कीयौ❀त्रिपित भये पुनि अँचवन लीयौ ।
नौबति बाजैं ढाढी गावैं❀ढोली गहरे ढोल बजावैं ॥५५॥
ब्याह पाँति दै अधिक सिहानौं❀जीत्यौ जु रावलि कौ रानौं ।
पुनि बचननि बहु आदरु दीयौ❀नन्द गवन जनवासे कीयौ ॥५६
विविध भांति साँमाँ पठवाई❀जेंवत राम कृष्ण दोऊ भाई ।
ब्रजपति ग्रास देत अपु करको❀लेत बलैया सुन्दर वर की ॥५७
अधिक लाड करि २ जु जिमाये❀जल अँचवाइ बहुरि पौढाये ।
भये नींद बस लोचन लोने❀आलस भार झुकत हैं कौने ॥

मैया आनि जु दूध पिवावौ❀हौं पौढौं पलिका जु बिछावौ ।
अपने कर में पंखा गहौ❀नेरे बैठि कहानी कहौ ॥५९॥
कर गहि कै ब्रजराज जगायौ❀बेटा तू कैसे बररायौ ।
संका मानि अंक भरि लयौ❀जल पिवाइ पौढाइ जु दयौ ॥
पंखा लानौ अपने हाथ❀राम कृष्ण लै पौढे साथ ।
लाड सहित करि विजन[1] ढुरावैं❀बार बार सुत को उर लावैं ॥
अति उदार बरसाने धनी❀सब की करत सम्हार जु घनी ।
डेरनि रहे रखवारे जहाँ❀सामाँ बहुत पठाई तहाँ ॥६२॥
गोप भूप नामी हैं जेते❀पलिंग बिछौना पठये तेते ।
सनमानें सब भांति बरेती❀भान जिमाये पुनि जु घरेती ॥
दोहा—हय गय करहा वृषभ पुनि, सुखित किये सब भांति ।
राधा जनक उदार अति, इहि विधि दीनी पांति ॥६४॥
न्यौंते आये भूप गन, और गोप समुदाइ ।
सादर पुर परिवार जन, सबहिं दिये जिमाइ ॥६५॥
मंत्री गोप मुनीस मिलि, नृप अस करत विचार ।
वृन्दाबन हित रूप अब, आवति भांवरि वारि ॥६६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री लाडिली लालजू के विवाह दिन ज्यौंनार बरनन सैंतालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ अड़तालीसवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—भाँवरि बिरियाँ ते पहिल, विप्र कहत समझाइ ।
महाराज त्यारी करौ, सजननि लेहु बुलाइ ॥१॥
विप्रन की बानी सुनत, विहँसे रावलि राई ।
लै आवौ ब्रजराज कौ, मंत्री दिये पठाइ ॥२॥

---

[1] —पंखा ।

॥ चौपाई ॥

मंत्रिनु जाइ बीनती करी❀लाल जगायौ ताही घरी ।
नीकी भांति सिंगार जु कर्यौ❀मौरु सेहरौ माथैं धर्यौ ॥३॥
सुन्दरता तन उमगो परै❀बरनन कौ मो मति अरबरै ।
चले भान घर गोप छबीले❀आगे लै कै लाल रंगीलै ॥४॥
पट अमोल की चादर करी❀[1]पादत्रान विविध नग जरी ।
[2]पैडा छरा पहिल लै गये❀नन्द चलन कौ त्यार जु भये ॥५
विरद पढत बन्दो जन आवैं❀बाजे नाना भांति बजावैं ।
मंडफ तर नव दूलहु आयौ❀चौक पूरि कै पटा बिछायौ ॥६॥
नाना रंगहि चित्रित करी❀[3]चौरी चारु सुभ घरी धरी ।
दूहहू पट्टा पर बैठायो❀बिधि विधान सब ही करवायो ॥
कलस गणेश प्रथम पुजवायौ❀नव ग्रह पूजि परम सुख पायौ ।
इत उत की बैठी रजधानी❀मागद सूत पढ़त जस बाँनी ॥
विप्रनि आग्या लै मुद भरे❀तात मात जल मज्जन करे ।
बसन पवित्र पहिर सुचि भये❀मन कर इष्ट देव पद नये ॥९॥
इत उत आडे पट जु कराये❀गाँठि जोरि मंडफ तर आये ।
लोक रीति विधि विप्र करावैं❀मंगल दर्वि मगाइ धरावैं ॥१०॥
[4]पंच भू सहसकार करि रीति❀पद जु प्रछालैं गाढी प्रीति ।
वर कौं सुविधि कुशासन दीयौ❀अंगन्यास भली विधि कीयौ ॥
अष्टांग अरघा जु दिवायौ❀मौरु पूजि मधु पर्क करायौ ।
विधिवत अचवन दियौ विचारी❀दच्छिन अङ्ग बनीं बैठारी ॥१२

१—जूती या खराऊं । २—सीढी रस्सी आदि ऊंचे स्थान पर चढने की व्यवस्था पहले की गई, क्योंकि लाल जी अभी छोटे ही तो हैं । ३—छोटी वेदी । ४—वैदिक पंच देव सहस्र शीर्षा पुरुष आदि रीति ।

कई सहस गोदान जु कीयौ❀साखोचार सुनिनि चित दीयौ।
गरग महामुनि बरनन करी❀सोम वंश साखा उच्चरी ॥१३॥
(श्री)नारायन जल सैंन जु लयौ❀नाभि कमल ते ब्रह्मा भयौ।
तिन के अत्रि ऋषीस्वर जानौ❀तिन कुल सोम उदीत बखानौ॥
तिनके सुमति बुद्ध भयौ नन्दन❀नृप पूरूरवा तिन आनन्दन।
तिन कुल भयौ जु आयु उदोत❀नहुख जन्म लियौ ताके गोत॥
तिनके कुल जजादि भुवपाला❀तिनकुल जदु अति सुमति विशाला
तिन को सुवन क्रोष्टा जानौ❀व्रजनवान सुत ताकौ गानौ॥
स्वाहि सुपुत्र तासु के वंश❀तिन कुल करौं रुसेक प्रसंश।
तिन ते जनम चित्ररथ लयौ❀तिनके सुत ससि वृन्द जु भयौ॥
पृथुश्रवा जु आतमज जाकौ❀धर्म प्रगट सुत जानौं ताकौ।
ता कुल उस्ना नृप जु उजागर❀ताकें रुचीक सुत गुन आगर॥
तिनके ज्यामघ सुत अति सुन्दर❀विदर्भ तिनकौ सुत गुन मन्दिर।
तिनके क्रथ्र भयौ जु महाबल❀तिन सुत कुन्ति विदित भयौ भुवतल
तिन सुत विस्मि सकल गुन आलय।
तिन सुत भयौ निर्वर्त जग पालय।
ताके भयौ सारह कुल मनी❀ता कुल व्योम जु अवनी धनी॥
भयौ जीमूत तासु सुत कमनी❀ताके विकृत:विदित जस अवनी।
तिनके सुवन भीमरथ कह्यौ❀तिन सुत नवरथ सुकृत जु लह्यौ॥
तिन सुत दशरथ भयौ वंशधर❀तिन कुल सकुनि सकल गुन आकर
ताके पुत्र करंभी नाँमाँ❀देवरात तिहि कुल अभिराँमाँ॥
देवछत्र ताके कुल रूरौ❀ताकें मधु सुत सब गुन पूरौ।
कुरवस सुत तिन घरनी जायौ❀ता सुत अनु परसिद्ध कहायौ॥
ताके सुत पुरहोत्र जु वीरा❀तिनके पुत्र आपु रन धीरा।

तिनकुल सात्वत परम धर्म रति❀तिनके अन्धक सुवन महामति ॥
ताके सुत भज मान अनूप❀ताके सिनि सुत अवनी भूप ।
सुत स्वयंभ तिन कुल गुन सरस्यौ❀नृप हृदीक तिनके सुत दरस्यौ ॥
देवमीठ तिन वंश उजागर❀तिन कुल श्री प्रजन्य गुन आगर
तिनकुल नन्द सुकृत अस कीयौ❀देखि सिरायौ सब कौ हीयौ ॥
तिनकुल यह मुरलीधर बरनाँ❀बैठ्यौ त्रिभुवन जन मन हरना ।
देवमीढ पर पौत्र बखानौ❀श्री प्रजन्य कौ पोतौ जानौ ॥
नन्द विवाहि पुत्र जग जीत्यौ❀कियौ विधाता सब कौ चीत्यौ ।
मथुरा मंडल की रजधाँनी❀जदु कुल कीरति विस्व बखाँनी ॥
देवमीढ घर द्वै पटराँनी❀एक वैस्य कुल इक छत्रानी ।
सूरसैंन छत्रानी जायौ❀वैस्य सुता के वैस्य कहायौ ॥२९
तीन पुत्र जाये जग धन्य❀श्रीप्रजन्य राजन्य अरजन्य ।
गोकुल और महाबन बास❀नन्दीस्वर गोधन जु निवास ॥
श्री प्रजन्य के ये नौ नन्दन❀तिन में कृष्ण जनक जगवन्दन ।
मो जजमाँन घोष सिरताज❀यह सुनि हरषे गोप समाज॥३१
इहि मंडल निकास पुनि बास❀मैं कह्यौ ब्यौरो सहित हुलास ।
चिरजीवौ यह ब्रजपति नन्दन❀कुल भूषण सब उर आनन्दन ॥
वृन्दाबन हित रूपी जस है❀सोमवंश नामावलि अस है ।
यह सुनि नन्द दान बहु दीयौ❀साखोच्चार गरग अस कीयौ ॥

दोहा–सोम वंश के नृपति की, वरनी आदि मुनीस ।
गौतम वरनत वंश रवि, सुनौ अब रावलि ईश ॥३४॥

सुनन भान मन भई अभिलाषा❀गौतम वरनत रवि कुल साखा ।
दिन मणि वंश भये नृप एते❀कहौं संक्षेप सुनौ तुम ते ते॥३५

(श्री)नारायन जल सैंन जु कीयौ❀श्रिष्टि उपाजन पुनि मन दीयौ।
तिनकी नाभि कमल तब भयौ❀ताते जनम जु ब्रह्मा लयौ ॥३६
भये मरीचि तिन सुत हितकारा❀तिन सुत कश्यप मंगलकारी।
तिन कुल रवि उद्दोत जु भयौ❀वैवस्वत तिन कुल निर्मयौ ॥
तिन कुल भयौ इच्वाकु महाबल❀तिनके सुवन ससादि विदित थल
तिन कुल ककुस्थ नृप जु बखानौ❀तिनकें सुवन अनैंना जानौ ॥
प्रथ्व सुवन भयौ गुन निधि जिनकें❀विस्व रंधि कुल थंभन तिनकै।
चन्द्र चन्द्र सम तिन सुत जानैं❀तिनकैं सुत जु वनास्व बखानैं ॥
तिनके साव सुवन जस धरता❀सुत वृहदस्व जगत दुख हरता।
तिनके सुत सावस्ति सुधीरा❀तिन सुत कुलयाश्व गुन वीरा ॥
भये दृढाश्व जु तिनके नन्दन❀तिन सुत हरि जस जग आनन्दन
[1]जस्य निकुंभ सुबन भुव पालक❀[2]तस्य कृशाश्व दुष्ट घर घालक
तिन के सिनिजित कुल जु प्रकास❀तिन कुल नृपति भये जुवनास।
जिन सुत मान्धाता जग गायौ❀तिन सुत पौरु कुतस्त कहायौ॥४२
सुत अनरन्य तासु प्रिय जायौ❀तिन सुत हरि जस सब मन भामौ।
तासु अरुन सुखनि विस्तरनौं❀ताके पुत्र त्रसंख जु बरनौं ॥४३
तिनके सुत हरिचन्द उजागर❀तस्य सुवन रुहितासु सु नागर।
तिन सुत हरित नाम बड भागी❀तिहि सुत चंप विजय अनुरागी ॥
तिन सुत भयौ भरुक जिहि नामाँ❀तिहि सुत वृक सुकृत कौ धाँमाँ
तिन सुत बाहुक सुख विस्तरता❀तिन सुत सौरभ मंगल करता ॥
तिहिं कुल सगर भयौ जु बलीशा❀तिन सुत असमंजस जोगीसा।
तिन अंशुमान चित हरषन❀तिन सुत नृप दिलीप सुख बरषन ॥
तिन सुत नृप भागीरथ गाये❀जे सुर[3] धुनी जुत पकर जु लाये।

---

[1]—जिसका। [2]—इसका। [3]—श्रीगंगा जी।

तिन कुल नाभ भयौ आनन्दन❀सिंधु दीप तिन कौ नन्दन ॥४७॥
सुत अयुतायु जानि तिन ग्रेहा❀सुत रतिपर्ण भयौ सुनि जेहा ।
सर्व काम तिनकै कुल मंडन❀तिनके सुत सुदास दुख खंडन ॥
तिन सुत अस्मक तिनकै मूलक❀भये जस वर्धन सुख अनुकूलक ।
तिन सुत दशरथ मन अभिरामा❀तिन सुत विदित ऐडविड नामा
तिनके सुवन विस्व सह नागर❀तिन सुत षटु दिलीप गुन आगर
तिनकै लघु सुत धर्म जु भयौ❀गोपालक व्रत जाने लयौ ॥५०
वैष्यवंश भई ख्याति जु इनकी❀पर्म धर्म रति निश्चल तिन की ।
तिनकै भयौ अजित सुत सुन्दर❀तिन सुत देवगंध गुन मन्दर ॥
तिनकै भवहर सुत अति कमनी❀अभय करन तिनकै जु कुलमनी
भरत सत्रुघन मथुरा आये❀अभय करन कौं संग जु लाये ॥५२
लवनासुर कौ जब वध कीयौ❀इनहि राज मथुरा कौ दीयौ ।
मेरज सुत प्रगट्यौ तिनकै घर❀महि मोहन तिनके जु वंश धर ॥
धर्माकर सुत कहियै जाकै❀सुत जु धराधू जन्म्यौ ताकै ।
नैमाधर तिन कै कुल थंभन❀जल्पाजय तिन सुख अभलंभन ॥
सुत विरंज तिनकै अति लायक❀तिन कुल रतनाकर सुख दायक
रतनाकर कैं नौ सुत जानौ❀तिन में मुख्य रषंग बखानौ ॥५५॥

दोहा—त्रेता भरि रहे मधुपुरी, द्वापर भयौ प्रकास ।
गोधन सहित रषंग जू, कियौ बरसानैं बास ॥५६॥
सुन्दर सुत जु रषंग कै, भयौ प्रभाकर नाम ।
तिन सुत अमितावलि भयौ, सकल गुननि कौ ग्राम ॥५७
परमाजित तिन सुत भयौ, उदयामित सुत जास ।
सुत प्रताप तिन कै भयौ, सुत प्रकास मुद तास ॥५८
तिन कै सुत अनन वज जू, आसापति तिन नंद ।

अजमंगल तिन के सुवन, सुभ मंगल कुल चन्द ॥

॥ चौपाई ॥

तिनके नन्दन भये सुभंकर[1]❁तिनके सुवन महारुषि सुख भर ।
तिन सुत भाववीर जू भये❁तस्य जवावर सुत निर्मये ॥६०॥
तिनके सुवन रूपनिधि महा❁तिन सुत आकर्षन छवि अहा ।
अछयाव्रत तिन सुत कुल टीकौ❁सुवन मगन माधौ तिन नीकौ ॥
धन्य किलोल मगन सुत जाकौ❁सुवन जैंतजय अति प्रिय ताकौ
तिनके प्रगट्यौ सुवन जसालय❁तिन सुत उदय उदार कृपालय ॥
अचलमेध तिन घरनी जायौ❁तिन कौ सुत तब्रेस कहायौ ।
तिन के सुत भूमेश जु वरनौ❁तिनके भुवमंगल जस धरनौ ॥
तिनके सुवन अचल भुव पाला❁प्राँन पाल तिन सुवन दयाला ।
जिनके सुवन सत्यबल नाँमाँ❁मोद महा शिव सुत तिन धाँमाँ॥
तिन सुत भग्रोजै कुल मंडन❁तिन सुत लच्छिससव दुख खंडन ।
तिनके सुत अरुणादुति भाष्यौ❁तम नाशिक तिन कुल जस राख्यौ
तिनके सुवन भयौ दैत्याउत❁भूँमेसुर गुन निधि तिन के सुत ।
तिन सुत रवनभवन नित मंगल❁
तिनके सुत हिमकर भयौ अति बल ॥६६॥
तिन कौ सुत गुननिधि सुखकारी❁तिन सुत भ्रत्य धर्म रति भारी ।
तिन सुत जोहनराव बखानैं❁तिन सुत सुखसुन्दर जग जानैं ॥६७
भोगभवन तिन सुत सुन्दर मुख❁तिनके सुत कौ नाम जु सुभसुख
तिन के सुवन भये भुवभूषन❁तस्य मोघमति सुत निरदूषन ॥
तिन के सुत भगवानसनेही❁तिन सुत दीप उदय गुन ग्रेही ।
तिन कौ सुवन देवदल रूरौ❁तिन कुल देवमाल गुन पूरौ ॥६८

---

[1] —शुभकारी ।

तिन सुत राव अनंग अमानैं❀तिन कुल सरनाध्वज जग जानैं ।
तिन सुत राव नाम विख्याता❀तिन के रावध्वज बड ग्याता ॥
तिन सुत राव ललित लोचन सुनि❀
तस्य भाव मन दुख मोचन पुनि ।
तिन के पुत्र भयौ जो माँधर❀तासु मदनमोहन जु वंश धर ॥
तिन कुल स्याम सनेही दरस्यौ❀तिन सुत पुरुषोत्तम सुख सरस्यौ ।
तिन के राव कुवेश सुवन भल❀तिन सुत गोपिय सेवन गुन कल ॥
जिनके सुवन नाम तिन धनपति❀पुत्र धनंजय तासु महामति ।
तिनके सुवन धनंजित सबला❀तिनके सुत धन पाल अति भला ॥
प्रेम पंख सौं नन्दन तिन कैं❀प्रेमाधर सुत भयौ सु जिन कैं ।
प्रेम होष् तिन सुत मति निर्मल❀प्रेम पोष्टि तिन सुवन विदित थल ॥
प्रेमालय जु पुत्र तिन पायौ❀रस्माकर तिहि सुवन कहायौ ।
राव विवेकावलि सुत इन कैं❀सुवन भक्तिबल प्रगट्यौ तिन कै ॥
तिन कैं पुत्र भयौ भगवत रति❀भक्तराव तिन अवनि पति ।
तिन के रावतेजवल कह्यौ❀तेजाकर तानें सुत लह्यौ ॥७६॥
सुवन प्रकासभुवन जू ताकैं❀रूपभुवन सुन्दर सुत जाकैं ।
तिन जातक भये भान भुवनजू❀भान सर्व सुख तस्य सुवन जू ॥
नाम भाँन तिन के सु जानिये❀भक्तिभाँन तिनकैं बखानिये ।
तिन सुत राव भाँन कल कीरति❀तिन के सुत रति भान सुखद अति
श्रीसुभांन तिन सुत सुभ करनी❀सुमति कविनु नीकी विधि वरनी ।
उदैभान दूजौ रवि मानौ❀दरसत तिमिर दरिद्र बिलानौ[1]॥
अरिष्टभाँन सुन्दर ब्रत धरनें❀परम उदार जगत जस करनें ।
कंज भाँन सबही विधि लायक❀विप्र गउ सन्तनि सुख दायक ॥

---

[1] —विलीन हो गये ।

महीभाँन सुकृत जु घनेरौ❀बरनत बुधि बल चलै न मेरौ ।
श्री वृषभाँन तात श्री दाँमा❀मंगल महा रच्यौ यह धाँमा ॥
प्रथम निकास[1] अवधि पुर गायौ❀बहुरि मधुपुरी बरनी सुनायौ ।
द्वापर मध्य बसे बरसानैं❀नृप रषंग सब के मन मानैं ॥८२
गोधन पाल धर्म रति जिनकैं❀सूरज वंश वंश ये तिन कैं ।
मही भान नन्दन नौ कमनौ❀राज करत ये ब्रज की अवनी ॥
रावलि वरहानौं बरसानौं❀तीन ठौर रजधाँनी जानौं ।
देस भयाने नृपति बखानैं❀सदा धर्मरति सब कोऊ जानैं ॥
कंज भाँन पर पोती बरनी❀मही भांन पोती धनि करनी ।
श्रीवृषभांन विवाहि सु कन्या❀तात मात भये जग में धन्या ॥
वृन्दावनहित रूप सुजस सुनि❀बल्लब राज दान दीयौ मुनि ।
दुहुँ वंश कौ सुजस सुनायौ❀सुनि मुनि नर भूपन सचु पायौ॥

दोहा—साखोच्चार मुनीनु कियौ, सबनि सुन्यौ दै काँन ।
उत हरषैं ब्रजराज जू, इत हरषैं वृषभाँन ॥८७॥
बिधि सौं कन्यादान अब, करवावत रिषिराज ।
बरनीं पियरे हाथ करि, धरे जु मंगल साज ॥८८॥
हाथनि हथलेवा दिये, पुनि कीयौ गोदान ।
विप्रन की कहनी करी, महाराज वृषभाँन ॥८९॥
मंत्रनि अग्नि जगाइ पुनि, पूजा विधि जु कराइ ।
कर पहिरी कुश मुद्रिका, बरसाने के राइ ॥९०॥
कनक रतन गोधन नगर, कर जल लै कै साथ ।
कन्या जुत संकल्प करि, दियौ मोहन वर हाथ ॥९१॥

१—वंश का प्रथम प्रकास अयोध्या में फिर मधुपुरी (मथुरा) में ।

भुव नभ जै जै धुनि भई, पंच नाद दुहुँ ओर ।
बंधु विप्र देहिं आसिका, अविचल रहौ यह जोर ।।९८।।

।। चौपाई ।।

दच्छिन भाग बनी बैठाई❀दुहुँ पट प्रोहित गांठि जुराई ।
मुख पर [१]सिरी सत गुन बाढी❀बना बनी हिय हिलगन गाढी ।।
उभझ्यौ रूप जुगल अंग अंगा❀उर भयौ उदय अनादि प्रसंगा ।
रसमय वपु कानन जु बिहारी❀अंश कला सब कौं अवतारी ।।
सो वपु गोपनि ग्रेह दुरायौ❀मौरु बांधि पुनि ब्याहन आयौ ।
यह जोरी अनादि इक रस है❀प्रगटी भुव विस्तारन जस है ।।
समझत हैं मुनि रस विज्ञानी❀प्रगटि बखान सकत नहिं बानी ।
तिनकौ ब्याह गोप ग्रह माँहीं❀देखन त्रिभुवन जन अकुलाँहीं ।।
शिव विधि रूप बदल कै आये❀[२]वेदी वेदनि वपु जु दुराये ।
[३]सुमृति पुरान उपनिसद जेते❀जामल तन्त्र मंत्र पुनि तेते ।।९७
[४]षट रितु हूं मूरति धरि राजैं❀[५]द्वादस मास दुरे तन साजैं ।
लसति संहिता मूरति वंता❀जिनकौं प्रिय बहु चरित अनंता ।।
नछत्र जोग अरु परवी पर्वत❀पुनि नद नदी जु तीरथ सर्वत[६] ।
तन कौं पलटि औषधी धाई❀रूप दुराइ सक्ति सब आई ।।
श्री जुत उमा सारदा आई❀सावित्री अरु सची सुहाई ।
मंगल मूरति धरैं जु ठाढे❀ब्याह दरस उत्कण्ठा बाढे ।।१००
[७]उनंचास हूं अग्नि जु आये❀हौम कुण्ड में वपु जु दुराये ।
तेंतीस कोटि देव सब आये❀सुन्दर गगन विमान जु छायें ।।

---

[१]—श्री । [२]—विवाह की वेदी में वेदों का तत्व छिपा बैठा है । [३]—स्मृति । [४]—छै रितुएँ । [५]—बारह महीने सब सदेह होकर शामिल हैं । [६]—सर्वत्र अर्थात सब देशों के तीर्थ । [७]—४९ प्रकार की अग्नि ।

नवग्रह चारयौ जुग तिथि बासर❀धर्म कर्म आये छिपि इहि घर ।
लगन मुहूरत जंत्र सु जेते❀राग रागिनी बरनौं केते ॥१०२
चौंसठि कला जहां कर जोरैं❀ठाढी बर बरनीं की ओरैं ।
गोपी गोपनि लखि नहिं परैं❀इहि विधि यह सब सेवन करैं ॥
नारद आदि मुनीस समूह❀वेदनि पढत करत कौतूह ।
सेवत सब अप अपनें भाइ[1]❀मंगल महा न बरन्यौ जाइ ॥
गरग गऊतम अज्ञा दई❀फेरे परन घरी सुभ भई ।
चारयौ जुग मुनि रीति कहाई❀ध्रव तारो रुँधति दिखाई॥१०५
सात बचन दुलहिनि नें लये❀पांच बचन दूलह कौं दये ।
वाँम अंग बरनीं जब आई❀सोभा अधिक बनाँ तब पाई ॥
सबहिं महा मुनि वेद उचारैं❀अग्नि कुंड में आहुति डारैं ।
देव व्योम दुन्दुभि बजावैं❀जुवती जन मिलि मंगल गावैं ॥
जब लागै भाँवरि विधि साजन❀घर घर बजे धातु के भाजन ।
थिर चर सब तिहि छिन अनुरागे❀[2]गहिल गुंग हूं गावन लागे ॥
अवनी हूं हिय हरष जु बढयौ❀सब चित चाह अलौकिक चढयौ ।
गहरैं घाव निसाननि परैं❀अतुलित आनंद सब उर भरैं ॥
जहाँ तहाँ मुनि वेदनि उचरैं❀राधा हरि की भाँवरि परैं ।
देव विमाननि बैठे हरषैं❀तिन की वधू कुसम गन वरषैं ॥
पाछैं बरनाँ आगें बरनीं❀प्रथमहि भाँवरि इहि विधि करनी
पहिल बीज आनन्द रस बयौ❀दूजी भाँवरि अँकुर भयौ ॥१११
तीजी भाँवरि गोभा[3] सरस्यौ❀चौथी भाँवरि विरवा[4] दरस्यौ ।
लगे फूल जब पाँचई दई❀भाँवरि छटी लगी रस जई।११२
सातई भाँवरि फल भल भयौ❀आनन्द प्रेम अधिक बढि गयौ ।

१—भाव । २—पगले । ३—खुलकर फूल उठा । ४—पौदा बन गया ।

दुहुं उर मरमी हरषी सखी❁बर बरनीं उर लाग जु लखी ॥
मुनिवर अज्ञा जिहि विधि दीनी❁सातौं भाँवरि तिहि विधि कीनी ।
मानि आइ आरतौ उतार्यौ❁न्यौंछावरि करि बहु धन बार्यौ॥
जै जै धुनि त्रिभुवन में भई❁सखी दुहुँनि भीतर लै गई ।
अरघ बढाइ भवन में लये❁पंच नाद पुनि ता छिन भये ॥
कपट के देव पुजावत बाला❁चतुर समझि मुसके नन्दलाला ।
बचन हाँसि के भामिनि कहैं❁लाल सकुचि मौंगे ह्वै रहैं ॥११९
कीरति विविध वारनैं लीये❁न्यौंछावरि करि रतन जु दीये ।
बहुरि लाल मुख छन्द पढाये❁बनी बनाँ बनितनि दुलराये ॥
अति कोविद[१] परखे नन्दनन्द❁सबहिनु मन बाढ्यौ आनन्द ।
छन्द पढाई में नन्द लाल❁पाई गज मोतिनु की माल ॥
पुनि आदर दै मान बुलायौ❁ताके कर वर मौरु खुलायौ ।
[२]रजित रुकग अस वरषा भई❁नेगिनु मन की भूख[३] जु गई ॥
जनवासै जब बरनी चली❁दछिना भूर जु बाँटी भली ।
गोप छबीले रतन लुटावैं❁बनी वनाँ जनवासैं आवैं ॥१२०
दोऊनि लै जु नन्द पै गये❁बहु विधि दर्बि लुटावत भये ।
पुनि ब्रजपति लै बैठे गोद❁निरवधि बढ्यौ हिये में मोद ॥
रजित रुक्म पुनि रतन जु साथ❁थैली खोलि दई ब्रजनाथ ।
श्री राधा पै मूठि भराई❁कुल के मानि जु तिन्हें दिवाई ॥
पुनि बरनीं की गोद जु भरी❁विविध भांति न्यौछावरि करी ।
वधू लगाइत मंगल गावैं❁ते सब हीं मन वांछित पावैं ॥
देखि देखि फूलत ब्रजराज❁विधिना कियौ धन्य दिन आज ।
प्रेम भीजि नर देव मुनीस❁बर बरनीं कौं देत असीस ॥१२५

१—समझदार । २—चान्दी । ३—बधाई में अनगनित धन पाया ।

कियौ सुकृत परजन्य सु फल्यौ❀सुख कौ सागर उमगि जु चल्यौ!
रहसि बधायैं मंगल महा❀लघु मति वरनि सकौं हौं कहा॥

दोहा–बनीं बनाँ छबि पाव ही, नन्द राइ कें अंक।
कंचन गिरि में दरसई, मानौं उभय मयंक ॥१२७॥
देखन तिन कौ अरबरत, ब्रज जन चारु चकोर।
मुख मयूष बरषत सुधा, चित चोरत बरजोर ॥१२५॥
गौर स्याम सोभा अवधि, सब कोउ करत प्रशंस।
हियो सिरावन रस वरषि, ये दोउ श्रीहरिवंश ॥१२८॥
बरनी आई तात घर, होत पंच विधि नाद।
वृन्दाबनहितरूप बढ्यौ, थिर चर उर अहिलाद ॥१२६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री लाडिली लालजू की भांवरि मंगल बरनन अड़तालीसवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवश श्रीराधे ॥

॥ अथ उंचासवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–जननी सुहथ जिमाइ कें, भूरि बलैया लेति।
रजनी मंगल आजु की, प्रान वारनें देति[1] ॥१॥
पौढी अपने अंक लै, रजनी रह गई थोर।
सुख में दहले अंग सब, तब लगि ह्वै गयो भोर ॥२॥

॥ चौपाई ॥

बीती निसा भोर ह्वै आयौ❀दूलह कौ रनिवास बुलायौ।
भूषन बसन लाल तन साजैं❀देखत निकर अनंग[2] जु लाजैं॥३
चढे पालकी मोहन आये❀निरखि सबै नर नारि सिहाये।

---

[1]—प्रान न्यौछावर देता है। [2]—कामदेव।

हसति लसति रावर की नारी❀कोउ पुचकारति कोउ दै गारी ४
बैठारे जु लाल भुज गहिकै❀कीरत मधुर बचन मुख कहिकै ।
पुनि आडौ अम्बर तनवायौ❀इत उत बनीं बनाँ बैठायौ ॥५॥
दुलहिन कौ उबटन करवावैं❀सो लै पुनि तन स्याम लगावैं ।
हँसि हँसि बधू लालहि गुलचावैं[1]❀दुरि दुरि कै जु उबटनौं लावैं॥
कोउ बरजैं कोउ ऊधम करैं❀कोउ गारी मुख तें उच्चरैं ।
सुन्दरि सबहि फिरैं अनुरागी❀पुनि दोऊनि न्हवावन लागी ॥
कुँवरि प्रसादी जल लै आवैं❀सो मोहन के सिर ते नावैं ।
दामिनि की छबि भांमिनि पावैं❀मनु घन कौं अभिषेक करावैं ॥८
दूलह के मन फूलनि महा❀इक रसना सो वरनौं कहा ।
लौनें अंगनि शोभा बढी❀पानिप वदन सतगुनी चढी ॥६
दूलह छल बल बहुत उपावैं❀परदा के पट कौं जु उचावैं ।
बरजैं बधू मोरि मुख हँसैं❀छबि फुलवारी सी सब लसैं ॥
अंग अंगोछत इत उत भाँमा❀पहिरावति जु बसन अभिरामा ।
भूषण विविध अंग अंग धरैं❀नख सिख दुहुँनि सिंगार जु करैं ॥
बरु बरनीं जु संग बैंठारे❀लखि पट भूषण बनितनि वारे ।
होत गौरनीचार[2] जु जहाँ❀पूजा विधि करवावत तहाँ ॥१२
रोरी अच्छित हरषि चढावैं❀धूप दीप करि भोग धरावैं ।
करि विधि रीति गौरिकौ पूजैं❀गावैं तिय मनु कोकिल कूजैं ॥
जोरे वैठे हाथ जु दोऊ❀विनति करत सुविधि सब कोऊ ।
कहति वधू मोहन सिर नावौ❀अपने कुल देवनि जु मनावौ ॥१४
तात मात अति गोरे लला❀तुम जु दिखाई औरै कला ।
यह स्यामता कहाँ तुम पाई❀मैया की चोरी दरसाई ॥१५॥

---

[1] —प्रेम से गालों पर मुक्का मारना । [2] —गौरी पूजन का एक प्रकार ।

लला कहत हम कांनि जु राखैं❀चंचल चाहै सो मुख भाषैं[1] ।
हर हर सबहिं बाम हँसि परीं❀कीरति सुनि उर आनन्द भरी ॥
विविध भांति पूजा विस्तरी❀अधिक प्रसन्न गौरि यौं करी ।
[2]बांनी भई भरी अनुराग❀राधा अविचल होहु सुहाग ॥१७
सुनि यह बचन सबै आनन्दैं❀नाचैं गावैं पुनि पुनि वन्दैं ।
थार परसि ब्रज बाला लावैं❀दूधा भाति दुहुँनि करावैं ॥१८॥
अदलि बदलि मुख कौर दिवावैं❀कबहूं दूलह कौ डहकावैं ।
यह मेरी रांनी की जाई❀कौर लेत अति हीं सकुचाई ॥
यह जु महरि चंचल कौ जायौ❀ग्रास लेति नैंकु न सकुचायौ ।
अधिक ढीठ यह काहु न नयौ[3]❀मुख जो कौर गप गप लै गयौ॥
बनीं हमारी मिठ बोलनी❀बरना सील ग्रंथ खोलनी ।
चट चट बोलै लंगर जायौ❀हम लच्छन नीकैं लखि पायौ ॥
बरनीं अधिक लाज की भारी❀सींव सील छबि राज दुलारी ।
याकै लाज देखियति थोरी❀ब्रजरांनीं कहु खेली होरी[4]॥२२
रहि री रहि ऐसे जिनि कहौ❀सकुचत मोहन मौंगी रहौ ।
लला सकुच की बात न एहा❀कहौ कहा कियौ महरि सनेहा ॥
हम काहू सौं प्रगट न करि हैं❀गुपत बात मन ही में धरि हैं ।
यह ससि वंश आदि चलिआई❀याही में जु बडाई पाई[5] ॥२४॥
हँसै लसैं कोलाहल करैं❀एक कैं एक अंक धुकि परैं ।
जल अचवायौ सहित सनेह❀अति सुख बरष्यौ कीरति ग्रेह ॥
इहि विधि बधुनि पुजाई गौर❀अब बरनौं कछु लीला और ।
[6]कुँवर कलेऊ कौ जु बुलाये❀गोपनि सुत सब ही बनि आये॥

१—ताना दिया कि तुम चंचल हो। २—आकाश बाणी। ३—नमस्कार नहीं की। ४—गाली दे रही हैं, कि यशोदा ने गड़बड़ की है। ५—ताना दिया चन्द्र, बुद्ध के कलंक को कथा संकेत की। ६—श्याम ने सखा भी कलेऊ को बुलाये।

करि पंकति सादर बैठाये❀सुन्दर पनवारे जु बिछाये।
नाना विधि की साँमाँ परसैं❀भोजन करत सबै मन सरसैं॥
चन्द्र कला लखि चकृत महा❀भैया इन कौ नाम जु कहा।
देखि देखि नाना पकवान❀सब ग्वालन के जागे कान॥२८
त्रिभुवन की इहि पुर चतुराई❀भैया हम पै कही न जाई।
भाग बली मोहन रे भाई❀जिन ऐसी ससुरारि जु पाई॥
ससि सम मधि बलिराँम बिराजैं❀ढिग ढिग मनु तारागन राजैं।
लटपटी पाग सिरनि पै लसैं❀लै लै ग्रास परस्पर हसैं॥३०॥
पाटम्बर राजत रंग रंग❀श्रवननि कुँडल भूषण अंग।
भौँन अजिर यह कौतिक भारी❀मनहु रूप फूली फुलवारी॥३१
एक तैं एक बनैं तन लौंना❀बनितनि करि पाये जु खिलौंना।
एकनि कें पट चित्रित करैं❀एकनि अंग चुहुँटिया भरैं॥३२
सुबल सुबाहुँ कान गहि लीयौ❀मुख के ऊपर गुलचा दीयौ।
अर्जुन भोज किये नकबाँनी[1]❀छाडे तब जब हारि जु माँनी॥
रैता पैता पुनि गहि लीनैं❀तिन कै मुख पै चित्र जु कीनैं।
मना मनसुखा भाजे डोलैं❀हमें छुडाइ स्याँम कौं बोलैं[2]॥
मधुमंगलको दधि मुख माँड्यौ❀भांति भांति करि बनितनि भाँड्यौ
भाज्यौ जात तोष गहि लीयौ❀जावक बिन्दु कपोलहि दीयौ॥
बलिदाऊ कौ कर गहि लैकै❀छांडि दियें दृगु अंजन दै कै।
उभकत स्याम कुलाहल सुनिकैं❀उर आनन्दित हैं पुनि पुनि कै॥
भौंन भवन में अति सुख बरषैं❀नातो समझि जु इत उत हरषैं।
अँचवन करि पुनि बीरी लैंहीं❀नैंन चैन सबहिनु कै दैंहीं॥३७
रथ पालकी अस्त्र चढि चले❀दूलह संग लागत अति भले।

१—नाक में दम, २—स्याम का पुकारा कि हमें वचा दे।

मित्र बनी तुम सोभा भली❀बनितनि आगे बुद्धि न चली ॥
जिहिं जिहिं सौं बीती है जैसें❀मो सौं कहि दिहु ब्यौरो तैसें ।
वह वाकी वह वाकी कहैं❀हँसि हँसि सब मुख मोहन चहैं॥
सब अंग बसन चित्र अवलोकैं❀लाल ठठोरा सब कौं टोकैं ।
समध्याने की गारी हाँसी❀भैया यह सब सुख की रासी ॥
ये बातैं न संग[1] में कहियौ❀जौ बूझैं तौ चुप ह्वै रहियौ ।
हँसत लसत ब्रजपति पै आये❀बाजे सबही गहकि बजवाये ॥
तात निरखि मन भरे जु मोद❀लै बैठारे अपनी गोद ।
जे गहनें कीरति पहिराये❀ते ब्रजपति कौं आनि दिखाये ॥

दोहा—बन्धुनि जुत गोकुल धनी, बैठे सभा मझार ।
बलि जुत पुनि मुरली धरन, संग मंडली ग्वार ॥४३॥
नाना विधि साँमाँ जु सजि, बोलैं रावलि राइ ।
ब्रजपति सों विनती करौ, सबहि सुमति जन जाइ ॥४४
जे जे कारज उचित हैं, करि हौ आपु विचार ।
न्यौतौ दै बडहार[2] कौ, करि आवौ मनुहारि ॥४५॥
आरज गोप मुनीश मिलि, आये ब्रजपति पास ।
न्यौतौ दै बडहार कौ, करत हांसि परिहांस ॥४६॥
वचननि बहु रचना करत, जिन में नाना चोज[3] ।
इत उत सब मुसिकात हैं, समझि बात कौ खोज ॥४७
न्यौतौ करि आये उलटि, भीजे हिये सनेह ।
समधी पूरे दुहूं दिस एक प्रान द्वै देह ॥४८॥
वल्लभ राज समाज मिलि, बैठे करत विचार ।

---

[1] १—संग में अर्थात् सब के बीच में। [2] २—विवाह के बाद(बड-आहार) बरातियों को खिलाना। [3] ३—बिनोद की या हँसान की बातें।

नानविधि विंजन रचौ, आज द्यौस बडहार ।।४९।।
[1]आवंतन समयो समझि, दीनै विप्र पठाइ ।
सजन मिलावौ करन हित, सजे गोप समुदाइ ।।५०।।

।। चौपाई ।।

सजन मिलाये की रस रीति❀करन बढी सब के मन प्रीति ।
नौतन बागे सब तन साजे❀सभा रची नृप गोप विराजे ।।
ब्रजपति केसरि कलस भराये❀मलयागिरि चन्दन घिसवाये ।
अगर अरगजासौं भरि भाजन❀बहु विधि लगे सुगंधिनु साजन।।
थैलनि भरि जु गुलाल धरायौ❀अम्बर औरु अबीर मँगायौ ।
सुन्दर अवनि बिछौंना करे❀सजन आगमन आनन्द भरे ।।
इत ते श्री वृषभाँन चले हैं❀नृप गन गोप सजे जु भले हैं ।
अग्रज अनुज लार सब लये❀गुरजन विप्रनि लै तहाँ गये ।।५४
घोष राइ बैठे हैं जहाँ❀गोप समूह जुरे हैं तहाँ ।
इत उत की शोभित रजधाँनी❀आदर भरी सबनि मुख बाँनी ।।
श्री वृषभाँन बीनती करैं❀दोउ कर जोरि बचन उच्चरैं ।
ब्रजपति तुम गोपनि सिर मनो❀हम कौं उपमा दीनी घनी ।।५६
जे नृपवंश उजागर भये❀जग कीरत विस्तारि जु गये ।
ऐसी विदित बडाई सुनी❀ज्यौं पावन जु वारि[2] सुर धुनी ।
वंश सुधाकर[3] अचरज कहा❀तुम हरि जनक उदार जु महा ।
बुद्ध ऐलि प्रभु जज्ञनि जजे[4]❀नहुष इन्द्र के आमन गजे ।।५८
नृप जयादि ब्रह्मन्नि जु बली❀जदु कीरत मारुत ज्यौं चली ।
देवमीढ परजा सुख दाइक❀तिनकें सूरसैंन सब लाइक ।।५९

---

[1]—आने का समय ! [2]—जैसे गङ्गा जल पवित्र है । [3]—चन्द्र वंश । [4]—यज्ञों द्वारा यज्ञ पुरुष श्री हरि का यजन किया ।

वैस्य सुता तें भये परजन्य❀तिन के ब्रजपति तुम जग धन्य।
करौं हरि जनक बडाई कहा❀तुम से तुम उदार मति महा ६०
ससि कलंक रवि सबहिं तपावैं❀सागर षारी क्यों सम पावैं ।
कनक सुमेर अंग जड़ सच्यौ❀कमल कीच में विधना रच्यौ ६१
कलप वृच्छ चातुरी जु हीनौं❀कामधेनु कौं पसु तन दीनौं ।
चिन्तामणि पाहन जु कहावैं❀ताको उपमां क्यों मन आवैं॥६२
नद अरु नदी न हेत विचारैं❀छुभित हौंहि तरु तीर विदारैं ।
ये उपमां क्यों तुम कौं दीजैं❀तुम गुन निर्मल सुमिरन कीजैं६३
विप्रनि के जु मनोरथ भरनैं❀दृढ ब्रत गोपालक मन धरनैं ।
समरथ सुमति गोप जन रच्छिक❀आरज मॉनद[1]प्रनितनि सिच्छिक॥
इक रसना बरनौं कहा बांनी❀इहि मंडल सोभित रजधांनी ।
बडडे भूप चरन रज जांचैं❀सबहि रावरे सुष में राचैं ॥६५॥
रसना एक चरित तुम घनैं❀याते बरनत नांहिन वनैं ।
वृन्दावन हित रूप महा मति❀तुम सम तुम ही इहि जग ब्रजपति
कृष्ण जनक अब करत प्रसंश❀धनि रावाल पति दिनमणि वंश ।
तुम सज्जन लाइक जग मांही❀सम जु रावरी दूजौ नांही ॥६७॥
लच्छन महत[2] आपु के तन में❀लषि अहिलाद होत अति मनमें
नख सिख ते मूरति मोहनी❀अधर रमी मुसकनि सोहनी॥६८
सूरज कुल छिति पाल जु भये❀उग्र तेज विधनां निर्मये ।
ककुस्थ अरु जुवनाश्व बलीशा❀मांद्धाता जु सकल छिति ईशा ॥
सगर वंश भागीरथ गाये❀जे सुर धुनि अवनी पर लाये ।
षटु दिलीप रघु को प्रभुताई❀हरि कीरति[3] सौं मिलि मुनिगाई
तिन कुल उदै सील वपु धरता❀कीरति अमल अवनि विस्तरता
मही भांन कुल तुम जु उजागर❀श्री वृषभांन सकल गुन आगर॥

---

[1]—मान देने वाले, [2]—महान, [3]—की रति पाठांन्तर ।

गोपनि सभा मुकट मनि दिपैं❀जाकौ मुख देखत दुष छिपैं।
देस भयानैं सुख बढ़नैं❀विप्र गऊनि पालक भल गनैं ७२
सदा धर्म रति गुन अभिरांम❀मंगल निकर बसत तुम धाँम।
ब्रजपति बरनत बारम्बार❀तुम सम को इहि लोक उदार ७३
बरसानौ कमनौ भुव माँहीं❀जा उपमा कौ हरि पुर नाँहीं।
नित्त उत्साह देषियै जहां❀दूजै ठौर अवनि अस कहां ॥७४
प्रनितनि सकल मनोरथ भरनैं❀निर्मल जस लोकनि विस्तरनैं।
विधि निर्मित वपु परहित कीयौ❀तुम सम कौ सज्जन जग बीयौ॥
करुनां कुशल उग्र परताप❀तुम जस कौ हम करत अलाप।
हृदौ गंभीर जु सिन्धु समांन❀धन्य जनम कुल मणि महि भांन
सेंवत पौरि पदारथ चारि❀सुर मुनि रहैं अचर्ज निहारि।
कहत सारदा मति अरबरी❀इहि मुष जाति न अस्तुति करी॥
तुम सम तुम रावलि के धनी❀उपमा देत न कोऊ बनी।
श्री सदेह संतत तुम धाँम❀सब गुन निकर तात श्री दाँम ७८
वृन्दाबन हित रूपी बाँनी❀कृष्ण जनक अपु बदन बषांनी।
दुहूं भूपनि अस कियौ अलाप❀रवि ससि कुल कौ विपुल प्रताप॥
नौ हूं नन्द भांन नौ मिले❀दै दै भेंट प्रेम रस झिले।
छोटे बडे मिले सब ऐसैं❀मुनि जन जुक्ति बतावत जैसैं ८०
पहिले मुख में बीरा दैं हीं❀पुनि हँसि कै आँकौं भरि लैंहीं।
उर सनेह की उझलनि भई❀सुरभि न सकत प्रीति बढ गई॥
मिलत सबै नाते अनुसार❀समझि समझि कुल कौ ब्यौहार
भेटैं लेत देत सब हित सौं❀तन सौं मिलत मिलत पुनि चित सौं
केसरि सौं तन रँगे दुकूल❀सब के तन मन बाढो फूल।
अतर फुलेल जु चरचे अंग❀माडे वदन गुलाल सुरंग ॥८३॥

सब हिय नई नेह की लाग❁सब ही भरे परम अनुराग ।
रीझि रीझि न्यौंछावरि देंहिं❁जाँचक विरद पढें ते लैंहीं ॥८४
सब कोऊ जस करहिं जु गाँन❁इत उत समधी बुद्धि समाँन ।
सजन मिलाये अति रस रह्यौ❁आदर दै विनु मित सुष लह्यौ ॥

दोहा–इत उत बहु विधि बीनती, कीनी बारम्बार ।
अज्ञा लै आये भवँन, राधा जनक उदार ॥८६॥
सजन मिलायें रस रह्यौ, हरषैं दोऊ भूप ।
वर वरनी भागिनु बली, वृन्दावन हित रूप ॥८७॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत दूलह दुलहिनि गौरनी वार तथा कुँवर कलेऊ तथा सजन आवन वरनन उन्चासवीं लहरीकी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे

॥ अथ पचासवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–देस देस के गुनी सब, आये कृष्ण विवाह ।
प्रगट करत विद्या सबै, भरे जु हियनि उमाह ॥१॥

॥ चौपाई ॥

गोप सभा मिलि बैठे जहां❁आये गुनी गवैया तहां ।
नै नै सबनि जुहार जु कीयौ❁ब्रजपति आदर सब कौं दीयौ॥२
राग रागिनि गावत सुथरे❁मनु गंधर्व लोक ते उतरे ।
ग्रींव डुलावतु ब्रजपति लला❁समझतु सबहि गुननि की कला॥
मान पाइ गुन गुनी जु सरसै❁तान अपूरब जिनकी दरसै ।
काननि लगि लगि कहत जु ग्वाल❁समझ लीजियै मोहनलाल॥४
मुरली में ऐसी ही लीजे❁भैया हमैं सुनाइ जु दीजे ।
सुनि मित्रनि मुष ऐसी बाँनी❁मन मन हँसैं जु गुनंनि गुमानी॥
बारी बदि बदि सब ही आवैं❁नांनां विधि के जंत्र बजावैं ।

गोप सभा को नटी रिझावैं❀नव नव गति संगीत दिखावैं ॥६
रंभा[1] किधौं किधौं उरवसी[2]❀किधौं करति उन हूं की हँसी ।
गुनवंती सब के मन भावैं❀भूषन दर्बि दुशाला पावैं ॥७॥
पहपट[3] मंगल मुखी मचावैं❀न्यौंछावरि लेई मंगल गावैं ।
ढोलक सुगति मंजीरा बाजैं❀नैंन नचावत नेक न लाजैं ॥८॥
गोपनि सुत हर हर हँसि परैं❀त्यौं त्यौं वे अति कौतिक करैं ।
भाँड नकल सब की जु बनावैं❀बाँके मुष करि करि जु हँसावैं॥९
बनिया हैं जजमाँन हमारे❀दैंहि न दांन जु दई सँवारे ।
देखत ही पाछें कौ भजैं❀भाँड देवतन कब हुँ न जजैं॥१०
महाराज यह न्याव जु कीजै❀गर लगि हमहिं मिलाइ जु दीजै।
वीधि वधायै उदौ मनावैं❀दान दच्छिना इन तें पावैं ॥११॥
दैंन दैंन यह नित ही कहैं❀हमैं देषि घर में दुरि रहैं ।
कहाँ लगि इनकी करैं प्रसंश❀हाट सरोवरि के ये हंश ॥१२॥
बनियनि की यह गाई गीता❀ये सब ही जु नटिनु के मीता ।
हँसि हँसि कैं सब ही पहिरावैं❀नई नई जु कूट करवावैं ॥१३॥
नवल बनां कौ कौतिक भावैं❀तिनकौं दै दै सैंन नचावैं ।
सब जातिन की नकलैं रचैं❀आनन मोरि पटकि कर नचैं १४
जाति हीजरा[4] निलजे महा❀पुरुष न वनिता कहिये कहा ।
यौं कहि सबहिनु करतल पटकैं❀मंगल मुषी गैल गहि सटकैं १५
महाराज यह कहिये नटी❀पुरुष रिझावत कबहुँ न हटी ।
सब कौं लगति अधिक ये प्यारी❀इनहि नचावौ हम दैंहि तारी ॥
भंड कूटयौं[5] करि नाचे जब ही❀लाज पाइ वे दुरि गई तब ही।
मोहन हँसे अधिक सुष पायौ❀बाबा सौं कहि दान दिवायौ १७

१–२—स्वर्ग की मुख्य अप्सराओं के नाम, ३—एक प्रकार का कोलाहल युत गीत जो ब्रज में गाती हैं, ४—नपुंसक, ५—चिढ़ा कर या ताना देकर ।

चारन भाट जु बन्दी जना❀ससि कुल चरित पढत है घना ।
नाना विधि छन्दनि उच्चरैं❀नाम लैंहि कर ऊँचे करैं ॥१८॥
देवमीढ परजन्य नरेस❀प्रजा पाल भये ये ब्रज देस ।
तिन कुल ये नौ नन्द उजागर❀तिनमें कृष्ण जनक गुन आगर॥
तिनकें मुरलीधर कुल भूषन❀मुख मयंक ते श्रवत पियूषन ।
दिन[१] दूलहु दूलहु अब न्याइ❀ताकी हम कौ लगौ बलाइ॥२०
भाँन भवन सो व्याहन आयौ❀बिनु मित दर्बि जु नन्द लुटायौ।
अस कियौ ब्याह जु रावलि रांनैं❀जाकी कीरति विस्व बखानैं ॥
यौं कहि मंगित मगन जु भये❀वांछित दान घोष पति दये ।
कंध रबाब बजावन हारे❀ढाढी गावत गोप पँवांरे ॥२२॥
कृष्ण विवाह हरष हिय बढ्यौ❀आनन रंग चौगुनौ चढ्यौ ।
सुनि जजमान घोष सिरताज❀मो चीत्यौ दिन भयौ जु आज ॥
बडे गोप ग्रह ब्याह जु भयौ❀लोकनि आनन्द बाढ्यौ नयौ ।
दुहुँ घर को मैं उदौ मनायौ❀तिहि विधि विधना मुहि दिखायौ ॥
हौं आयौ कुल ढाढी तेरौ❀कर जजमान मनोरथ मेरौ ।
जो जो मांग्यौ सो सौ पायौ❀स्यौ गहनौं बागौ पहिरायौ ॥२५
पुनि बागनि के माली आये❀नाना फल भरि डाली[२] लाये ।
फल लै डालिनु दर्बि भरावैं❀पट नव रंग तिन्है पहिरावैं ॥२६
वस्तु अपूरब सब ही लावैं❀अति सनमान नन्द ते पावैं ।
नैंन कमल दल कमनी गात❀लगि रही लाल बनौं की जात[२]॥
भान लगाइत आये सबै❀भोजन की त्यारी भई जबै ।
कांनी तब धौंसनि धधकार❀आये सिमिटि सबैं तिहि बार ॥
करि करि सब ही सुभग सिंगार❀आये नव दूलह कें लार ।

१—नित्य अनादि दूलह, २—टोकरा या डलिया, २—यात्रा आने जाने वालों की ।

सिंगारे जु कृष्ण बलिराम❀सब मिलि चले भांन के धाम ।।
गोप कुँवर संग सव सौंहनै❀रति पति हूं के मनमोहनै ।
ब्रजपति गोप सजे सव ऐसैं❀छबि धारा धर उमडे जैसैं ।।३०
इत उत भूप बराती आवैं❀तिन कैं आगे ढाढ़ी गावैं ।
गोप कुँवर बनि चले जु आगैं❀सोभित सबै केशरी बागैं ।।३१।।
नव दूलहु पालकी विराजै❀मनु सोभा कौ धुरवा राजै ।
सब के मध्य घोष कौ रांनौं❀मल्हकतु छलतु मत्त गज मानौं ३२
षिरकिनु[1]रचित पाग सिर सोहै❀श्रवन जलज मणि उपमा को है।
रतन पेंच कलँगी सिर लसैं❀मनौ भाग ब्रजपति कौ हँसैं ३३
केशरिया कंचुक जु छबीलौ❀गुजराती पटुका चटकीलौ ।
कंठी कंठ धुकधुकी बनी❀चौकी की दुति उर पर घनी ३४
तुलसी और जलज मणिमाल❀रुरकति उर छबि देति विशाल ।
कनक मृणाल भुजनि छबि छीनो❀बाजूबन्द ओप नग दीनो।।३५
अँगुरिनु छाप मणिनु के टोडर❀पुष्टि थौंदि[2] मनु नाभि सुधासर।
धोती पीत उपरना राजै❀घोष राइ इहि भांति विराजै ३६
कृष्णहि लाड लडावन जानौं❀कृा आनि वपु धार्यौ मांनौ ।
मन्द मन्द गति गवन करत हैं❀ललित रीति पग अवनि धरत हैं
अवलोकत जु भांन पुर सोभा❀उर उपजत आनन्द की गोभा ।
हाटक[3]भीत्यैं मणि नग खचो❀जारी अरुण मणिनु की रची।।३८
चित्र विचित्र बनी जु किवारी❀तिन में बैठी गोप दुलारी ।
गहकी गहकी मीठे सुर गावैं❀सजननि कौ गारी जु लगावैं ३९
जहाँ तहाँ ते कुसमनि वरषैं❀नव दूलह देखत मन हरषैं ।
एक एक के कर कौं गहैं❀कानि लागि कै ऐसै कहैं ।।४०।।

---

[1]—तहदार बन्धी हुई पाग, [2]—उठा हुआ पेट, [3]—दोवारें ।

मैं याकी छबि नीके लखी❀यह राधा कौं दुलह सखी ।
बैठ्यौ जूातु पालकी मांहि❀इहि सम बरु त्रिभुवन में नांहि४१
बिधि जु रच्यौ सुन्दरता सार❀दृष्टि गई लगि जाके लार ।
मात्री नगर रूप की हई[1]❀हौं लखि भटू वारनैं गई ॥४२॥
इहि विधि वनिता वरनति मिलिकैं❀परमानन्द रही उर झिलि कैं ।
आतस बाजी छूटति ऐसैं❀कंचन कुशम लगैं झर जैसैं ४३
हय गय पसु पंछी आकारा❀छुटैं तूँबरी और हजारा ।
दुपहरिया हथ फूल हवाई❀बढि बढि जोति गगन चढि जाई
विविध मशाल दुशाषा जहाँ❀ह्वै रह्यौ महा चान्दनौं तहाँ ।
बाजेनु की धुनि मिलि सौं राजै❀मनहु मधुर पावस घन गाजै ४५
महल सतखनैं रचना घनी❀तिनकौं देत न उपमा बनी ।
रावलि रांनैं कौं रनिवास❀रतननि कौं जहाँ विपुल प्रकास ॥
ऊँचै नेक देखि गोपाल❀ऐसैं कहत मनसुखा ग्वाल ।
अटा घटनि सौं बातैं करैं❀देवन हूं के मन कौं हरैं ॥४७॥
स्वर्ग तुल्य कहैं ससुर जु ग्रेह❀तैं ही पायौ निर सन्देह ।
सुनि दूलह मन बढ़त हुलास❀वरनत मित्र मंडली पास ॥४८॥
इहि विधि भौंन पौरि जब आये❀ढ़ोलनि गहरे ढ़ोल बजाये ।
आदर दै जु धरै तिनु लयै❀सजन सबै हिय हरषित भये ४६
जलझारी लै चरन धुवाये❀मंडफ तर जु गोप बैठाये ।
भवन भवन बैठे विधि भली❀प्रथम ही फेरी पत्रावली ॥५०॥
दिये कटोरा कंचन थार❀झारी दीनी तिनके लार ।
नगमणि जटित जगमगे जोति❀जहँ तहँ भान प्रसंशा होति ५१
सखरे निखरे परसे साज❀देखि मुदित नृप गोप समाज ।

१—चमत्कारिता या विस्मय करने वाली छवि ।

पातरि बाँधति गावन हारी❀महा प्रवीन भाँन पुर नारी ॥५२
वेद मंत्र से मुख ते भनैं❀चोज चाइ सुनि उपजत घनैं।
पढैं बराती गुन अभिरामा❀भूषन बांधि छुडाई साँमाँ ॥५३॥
निरबन्धन सब पाक जु भये❀हँसि हँसि ग्रास सबनि मुख लये।
परसन हार अनेक जु फिरैं❀मुख ते वचन अमी से झरैं ५४
विंजन लैंहिं रुचै जिहि जोई❀सादर जेंवत हैं सब कोई।
भोजन करत सबै जु बरैती❀परसत फिरत अनेक घरैती ५५
कहत परस्पर सब ही जनैं❀अमी स्वाद सम पाक जु बनैं।
अबला मुख ते गारी भाषैं❀ब्रजपति कौ कछु आदर राषैं ५६
हम जु करति तुम गुननि अलाप❀सुनियौ जू दूलह के बाप।
ब्रज रानैं तुम परम प्रवीन❀ब्रज रांनी के रहत अधीन ॥५७
हमरी समधिनि जस की धुजा❀बहुत निवाजै अपु बल भुजा।
महिमा महा घोष की रांनी❀जनिता कृष्ण सबनि सुखदांनी ॥
साँवल सुत जायौ जु दुरंगा❀नन्द घरनि जस निर्मल गंगा।
अधिक दया है जिन उर मांहीं❀जाँचक कोऊ जु निरास न जांहीं॥
ऐ पै सांचु चाहिये वोल्यौ❀ढोटा नें कछु भर्म जु खोल्यौ।
हम सन्देह जु बूझयौ चाहैं❀वरन[1] पलट यह भयौ सु काहैं ६०
को लाइक जग में अस बनिता❀महा विचच्छन मोहन जनिता।
तुम लै बैठत सुत जब नेरैं❀बार बार सब कोऊ हेरैं ॥६१॥
गोरे कारे अन्तरु एतौ❀राति द्यौस गनियत है जेतौ।
धनि धनि सोम वंश प्रभुताई❀लीला मुनिनु पुराननि गाई॥६२
बिलग न मानौं गोकुल रांनैं❀चरित रावरे हम जु बखानैं।
तुम सूधे यह बांके भारी❀या ते भरम धरत नर नारी। ६३
तुम जु साधु यह चंचल लाला❀नन्दीस्वर जु नचाई बाला।

सुत में जो न तात गुन होई❀नाम धरयौ चाहै सब कोई ॥६४
सब ही बराती लच्चन परषौ❀मुख नहिं बोलौ हिय अति हरषौ।
गारी दै दै हँसि हँसि परैं❀सब के बदन फूल से झरैं ॥६५॥
सबै मिलनियाँ हौं जुरि आये❀अपु सम ब्रजपति न्यौति बुलाये।
ऊँची ग्रीवा करि करि चहैं❀सब हीं ग्रास हाथ लै रहैं ॥६६॥
भैया सकल विस्व चतुराई❀भाँन भवन मूरति धरि आई ।
रहि रहि जेवैं सुनैं जु गारी❀समध्यानैं की लागति प्यारी ॥६७
भाँन ग्रास ब्रजपति मुख दीयौ❀ब्रजपति करतैं भान जु लीयौ ।
उझलि सनेह दुहूं दिस आयौ❀हीये[1] कौ नैंननि दरसायौ ॥६८॥
इत उत लाइक समधी दोऊ❀सुनि रस वचन मुदित सब कोऊ।
ब्रज के भूप अनूप जु करनी❀लोकनि विदित मुनीसनि बरनी॥
समधी सम[2] धी सब हा बषानैं❀पै समधी सम ये जग जानैं।
हँसै लसैं बातनि रस बरषैं❀सुनि सुनि हिये जनेती हरषैं॥७०
इहि विधि सौं भोजन करवायौ❀रोंम रोंम सजननि सुष पायौ ।
ये परसैं वे ग्रींवा ढोरैं[3]❀पूरन भये सबै कर जोरैं ॥७१॥
ब्रजपति थार जूठि[4] नग डारैं❀लै भये सुखित उठावन हारैं ।
अँचवन करि करि बीरी लैंहीं❀हिय दृग आनन्द सजननि दैंहिं॥
सब हीं बाजे गहकि बजाये❀ब्रजपति तब जनवासे आये ।
करत प्रसंशा सबहि बराती❀मान पाइ सीतल भई छाती ॥७३
जो जिहि मांग्यौ सो तिहि दियौ❀गज बाजिन हूं सुखित जु कियौ।
निधि सिधि संतति निसिदिन जहां❀कौंन बात की घटती तहां ७४
दोहा–विप्रनि कही विचारि कैं, सिर गूँदी को वार ।
सांमां थारिनु में धरति, करि करि सबहि सम्हार ॥७५॥

१—हृदय का प्रेम नेत्रों से प्रगट हो रहा है. २—समान बुद्धि वाले, ३—मना करैं गरदन हिला कर ४—नदजी ने झूँठे थालमें रतन डाल दिये जो थाल उठाने वालों ने लिये

॥ चौपाई ॥

भरि फुलेल नग जटित कटोरी❀पुनि परात भरि धरि जु रोरी।
गज दंतनि ककही छवि भरी❀अधिक राचनी मँहिदी धरी॥७६
डालिनु भरि भरि धरे कलाये[1]❀बहु भाजन मेवानि भराये।
तीयरि चादर देखत बनैं❀रसना[2] विनु दृग कहा छवि भनै॥
नख सिख भूषन रतन जडाये❀गनि गनि कंचन थार धराये।
रजित रुकम नग जटित षिलौंना❀जडियनि जडे न अस पुनि हौंना
सजि सजि धरी बनिगरनि टोली❀वन्दन माल जु रतन अमोली।
नील मणिनु की चूरी कमनी❀तिनकौं उपमा नहि इहि अँवनी७९
पुनि पद पीठि लगे नग ऐसैं❀नहिं विधि श्रिष्टि विलौके जैसैं।
कजरौटी रु महावर दानी❀देखत सब की बुद्धि भुलानी ८०
षांड गिदौरनि[3] भरि बहु भाजन❀और गनाऊँ केते साजन।
देखत सब ही साज अनूप❀करत प्रसंश गोप मुनि भूप॥८१
अगनित जन जब लै कै चलै❀अगनित बाजे बाजत भले।
सब पुर जन भये कौतिकहार❀देखन वरी[4] पुरी विस्तार॥८२॥
पहुँचे नृप अन्तह पुर जहां❀धरे साज मंडफ तर तहाँ।
नौ हूं भान गोप नृप जेते❀देखत साज मुदित भये तेते ८३
पुनि मंगल विधि उचित सु कीनी❀रावर सौंज पठै सब दीनी।
वनिता आईं भरी हुलास❀बैठी सब कीरति मिलि पास॥८४
देखत साज कहत अस बाँनी❀धनि लाइक ब्रजपति की राँनी।
एक वदन कहा करैं बडाई❀वस्तु अपूरब सबहिं पठाई॥८५॥
राखन जोग्य सु भीतर लई❀और देखि पुनि फेरि जु दई।
लावन हार प्रसन्न जु करे❀हिय जिय भये सबै जन हरे॥८६

---

[1]—लाल पीले सूत के धागे, [2]—जिह्वा का नैन नहीं है कि छवि उस चादर की वरनन कर सके, [3]-रोटी के आकार की जमी हुई पक्की खांड, [4]—विवाहोत्सव।

दोहा–मोहन जनक उदार अति, कहत सबै नर नारि ।
जिनौं लागत परम प्रिय, बरसानें की गारि ॥८७॥
दिन दिन सुख बढ़ै सतगुनौं, आंनन नित नव ओप ।
सब कौं जस हरुवौ कियौ, गरुवौ कियौ कुल गोप ॥८८
परम धन्य रावलि धनी, धन्य कियौ ब्रज लोक ।
जा सुख आगे लगत हैं, फीके सुख सब लोक ॥८९॥
दूलह दुलहिनि कौ कहा, बरनौं गरुवौ भाग ।
वृन्दावन हित नित नयौ, वरषत ब्रज अनुराग ॥९०॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्रीकृष्ण मंगलविवाह बड़हार ज्यौंनार तथा वर पुरा बरनन पचासवीं लहरीकी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ इक्यावनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–रावलि पति बन्धुनि सहित, बैठे करत विचार ।
साजु दाइजे के सजो, कीजै पालिक चार[1] ॥१॥
सुभ वासर पुनि लगन सुभ, पुनि जु सोधि सुभ जोग ।
अतिलाडि कौं कीजे विदा, कहत सयाने लोग ॥२॥
विप्र पठाये लैंन कौं, सिमिट सकल परिवार ।
लै आवौ ब्रजराज कौं, करन जु पालिक चार ॥३॥

॥ चौपाई ॥

अजिर लिपायौ चौक पुरायौ❀पुनि सुन्दर पलिका जु बिछायौ।
पालिक बन्यौ अलौकिक महा❀ताकी सोभा बरनौं कहा ॥४॥
मूँगनि पाटी बनी सुढार❀गज दंतनि के पाये चार ।
बने सुनहरी तिन पर फूल❀बुन्यौ पाटसा[2] है अनुकूल ॥५॥
कारीगरी विविध विधि रची❀मांनौं लै सब सोभा सची ।

१—पलंग पर दाइजा देना, २—पलँग में रेशम की पटार बुनी है ।

तापर पाटम्बर जु बिछाये❀अति कोमल गेंदुवा सुहाये ॥६॥
दुग्ध फैंन सम निर्मल महा❀अधिकी उपमाँ वरनौं कहा।
झबिया[1] कनक जु रतन जडाई❀पाट डोर तिन सौं जु लगाई ॥७॥
पायेनु बांधी ते जगमगैं❀पुनि जु उसीसनि[2] सुन्दर लगैं।
लगि रहि ताकी जगमग ज्योति❀लषि उर मदन कलमलो होति॥
बिछे बिछौंना सुन्दर अवनी❀जिनमें चित्र बने अति कमनी।
सुन्दर अगिर बिताने तने❀तिनकी कोरनि मुक्ता बने ॥८॥
तातर मंडफ सोभा मूल❀लगे रतन पुनि कंचन फूल।
किधौं अवनि भागिनु की मूरति❀अस दरसति मंडफ की सूरति १०
रचना बहु रावलि पति ग्रेह❀[3]महारमा जहाँ बसति सदेह।
सब अवतारनि कौ अवतारी❀बनौं नन्द सुत गोप बिहारी ११
पालिक बैठि आजु सुख दै है❀लषि जोरी छबि कौन अघै है।
राधा जुनक बुलायौ जाकौ❀हम देखि हैं नैंन भरि ताकौ१२
पालिक चार बैठि हैं दोऊ❀अलभि लाभ पै है सब कोऊ।
भान अनुग लैवें कौं गये❀वे आवन कौं त्यार जु भये ॥१३
गोप भूप ब्रजपति संग सजे❀एक संग सब बाजे बजे।
बनौं नालिकी में असवार❀सब बनि चले जु तिनके लार १४
आवनि आजु और ही रीति❀त्रिभुवन छबि मनु लाये जीति।
आनन पर छबि दरसति और❀दूलहु बन्यौं लोक सिरमौर ॥१५
अंगनि बानिक परत न कही❀अधरनि मैं मुसकनि रमि रही।
सचल नैंन चितवनि विधि भली❀उर अनुराग जु उझलतु वली १६
भाँन पौरि आये ब्रजराज❀देत जुहारी गोप समाज।
जहाँ तहाँ परदा ह्वै गये❀सादर सजन भवन में लये ॥१७॥

१—छोटा फुन्दना, २—सिराहने की तरफ, ३—श्री राधा जी।

सुन्दर वर के चरन धुवाये❀चौक पूरि पट्टा बैठाये।
रीति भांति विधि सौं करवावैं❀गणपति पुनि नवग्रह जु पुजावैं॥
पुनि पालिक बैठार्यौ बरनौं❀मनसिज निकरनि को मद हरना।
मैंन नारि सी नाइन डोलै❀आदर दै मधुरी कछु बोलै॥१९
गरग गऊतम अग्या लै कै❀भीतर गई चरन वह नै कै।
नख सिख सुन्दर बनी सिंगारी❀लै आई भरि कै अँकवारी॥२०
तब मुनि निगम रिचा उच्चारी❀वाँम भाग बैठी सुकुँवारी।
वर वरनी कै तिलक जु कीयौ❀लरज्यौ नेह सबनि कौ हीयौ २१
जीती वदन चन्द सत कला❀देषि मुदित भये ब्रजपति लला।
जुरे जहाँ बनितानि समूह❀गावति मंगल अति कौतूह॥२२
धरी साजि तीयरि जु अनेक❀अति निरमोल एक ते एक।
तिन सौं सोभित कनक किनारी❀लावनि मोती पल्ले भारी॥२३
अतलस के अतरौटा जिनमें❀दच्छिन चीर अमोलिक तिनमें।
सूत पाट पट जाति अनंत❀गनि गनि कैं जु धरत गुनवंत२४
जरकसी पट अरु छापे दार❀नाना रंग चित्र विस्तार।
लहँगा कसव[1] चूँनरी संग❀कोऊ कसीदनि की नव रंग॥२५
कोऊ अपूरब बूटे दार❀कीमषाप मश्रू कोऊ चार।
देस दिसन्तर उतपति भये❀दिषियति वरन विलच्छन नये २६
भाजन भर धरे बहु पकवाँन❀अति उज्जल अति सोभावान।
बडे बडे मठ्ठे रचि धरे❀गूभा बडे गुलों के करे।२७॥
घेवर बावर रचना करी❀लाडू बहु विधि पंकति धरी।
खजुला फैंनी अस [2]उजराई❀सरद चान्दिनी छबि जु चुराई२८
धरी जलेबी घेरि घिरारी❀बूरे पगी रसीली भारी।

---

[1]—कस कर पहिनने वाला, [2]—चान्दनी के सफेद प्रकाशमान।

धरी अमिरती झालिनु[1] भरि२❀मठरी मधुर मौंनकी करि करि२६
सुभग सुहारनि की रचि पांति❀गुना धरे सचि नीकी भांति।
लाडू सेंव जु दीरघ महा❀कहौं दमीदनि की छबि कहा ३०
निकुतीं नीकी रस सौं पगी❀डलनि धरी भरि सुन्दर लगी।
धरे अन्दरसे सोभा देत❀फल आकार रचे बहु हेत ॥३१॥
पापरि वरी अन्न बहु भांति❀भरि भरि धरी डलनि की पांति।
बडडे धरे टोकनाँ धात[2]❀तिनके संग जु बडी परात ॥३२
विविध भांति के थारी थार*अजिर मांहि कीयौ विस्तार।
कलशा झारी विविध तवेला❀गडुवा गडई सुन्दर बेला ॥३३॥
कुंडी कुँडा अगनित दोहनीं❀बडे डबे डबिया सोहनीं।
बडे कराह करैहियाँ छोटी❀लघु करछी पुनि तिनते मोटी३४
हांडी हँडा जु सुन्दर पारी❀धातुनि की बहु भांति सँवारी।
रजित रुकम के भाजन न्यारे❀सौंनी[3] सुघरनि सुविधि सँवारे३५
धातु चालनी सुन्दर सूप❀पान डवा नग जटित अनूप।
आँगनि लगि रही सोभा जाति❀देखि देखि सब हिये सिहात ३६
करहा अस्व गयन्द अमोल❀रथ पालकी गऊ वहु टोल।
दासी दास सिंगारे घनैं*सबहिं तरुन सुन्दर अंग बनें३७
भौंन पौरि ठाढे किये आइ❀यह छबि कैसे बरनी जाइ।
इत उत की बैठी रजधाँनी❀वन्दी भाट पढत जस वांनी ॥३८
पद प्रछालि पुनि तिलक करायौ❀पट भूषन दै वरु पहिरायौ।
चौक पूरि पुनि पटा बिछायौ❀तापर समधी कौ बैठायौ ॥३६॥
वेद महा मुनि मुष उच्चरैं❀रोरी अच्छित मस्तक धरैं।
पट अमोल व्रजपति पहिराये❀पुनि सुन्दर थिरमा जु उढाये ४०

१—बड़े बड़े डले, २—धातु के टोकरे या झावे ३—चतुर सुनार।

पुनि उपनन्द पटा बैठायौ❀नीकी विधि तिनकौं पहिरायौ।
धरानन्द नींके पहिराये❀पुनि ध्रुवनन्द पटा बैठाये ॥४१॥
अब पहिरनि अभिनन्द जु आये❀पुनि पहिरन सुठीनन्द बुलाये।
पट्टा बैटे निर्मल नन्द❀पहिर भरे अतिसै आनन्द ॥४२
करमाँ धरमाँ पहिरन लगे❀पट अमोल तिन तन जगमगे।
बोल बोलि पहिराये गोप❀मंडफ तर बाढी अति ओप ४३
आरज विप्र मानि पहिराये❀भूप भातई सबहि बुलाये।
पहरि पहरि सब ही मुद भरे❀सब के माथे तिलक जु करे ॥४४
इक पहिरे इक पहिरन आवैं❀दै दै मान सबै जु बुलावैं।
बलिदाऊ पहिराये ऐसे❀पट भूषन जु षुले तन जैसे ॥४५
बहुरि कृष्ण के मित्र बुलाये❀भूषन बसन तिन्है पहिराये।
हाथनि पै धरि २ पट परषैं❀वदन हँसैं पुनि हिय जिय हरषैं४६
कोउ कहैं भैया सुन्दर तेरौ❀कोऊ कहै नीकौं वन्यौ जु मेरौ।
भैया ये पट उपजत कहाँ❀हमैं बतावौ ठौर जु तहाँ ॥४७॥
कोउ कहैं ये जु दूरि ते आये❀बरसानैं के भूप मँगाये।
कोउ कहै भैया मो ते सुने❀ये पट कहू देवतनि बुने ॥४८॥
कोउ कहै सेत[1] सेत यह कहा❀कानन में चमकत है महा।
यौं बतरात परस्पर ग्वार❀सुनि सुनि मुसकत नन्द कुँवार॥
जे आये बरात इहि मांहि❀सब पहिराये रह्यौ कोउ नांहि।
भेंटै दै पुनि जोरे पाँन[2]❀अति लाइक जु भूप वृषभाँन ॥५०
रजित रुकम लै थार जु भरे❀रतन अमोलिक ता में धरै।
इतौ दाइजौ भान जु दीयौ❀संक्यौ देखि कुबेर जु हीयौ ॥५१
ब्रजपति ने तब रंग मँगायौ❀सो लै समधिन पै छिरकायौ।

१—श्वेत, सफेद, २—पांनि—हाथ।

रॉनी ने समधी मुख मांड्यौ❀पुनि गारी दै बनितनि भॉंड्यौ५२
कृष्ण जनक तुम अति गुनवंता❀गुनवंती भांमिनि कै कंता।
लाइक समधी सब विधि पूरौ❀समधिन कौ राजत जस रूरौ५३
नगर नंदीस्वर कौतिक रहै❀सुख कौ सिन्धु जहाँ नित बहै।
सुनि मुसिकांनौं ब्रज कौं रांनौं❀अम्बुज[1] कनक षिल्यौ मुष मानौं।।
वाढ्यौ मन उत्साह जु नयौ❀हृदौ कमल अति प्रफुलित भयौ।
श्रीफल धनियाँ कर वर लीयौ❀समधिनि की जु गोद भरि दीयौ।।
विविध रतन न्यौंछावरि दीनैं❀पुनि समधिनि नग भेंट जु कीनैं
समधी बदलत हैं मुख पाँन❀अति लाइक जु नन्द वृषभाँन५६
न्यौछावरि जु परस्पर कीनी❀दै असीस सब नेगिनि लीनी।
लोक वेद विधि कर अनुरागी❀पुनि चलिबे कौं विदा जु मांगी।।
मिलतु महा सुख हीयैं सरस्यौ❀उर को नेह वदन पर दरस्यौ।
पंच नाद ताही छिन भये❀गोप भूप उठि डेरनि गये।।५८।।
बनिता सब मिलि तिलक जु करैं❀नव दूलह कैं भेंट जु धरैं।
ठाढी नौ हूं भांनन रॉनी❀वारि वारि पीवत हैं पॉनी।।५९
कनक रतन नग थार जु भरैं❀लाल भाल पैं तिलक जु करैं।
रतननि मूँठि उठावति घनी❀दुलरावति बरना पुनि बनी।।६०
घर घर ते जु जुवति सब आवैं❀तिलक भेंट करि मूठि उठावैं।
इक आवत इक आवत सजैं❀पाइल बिछुवा वीथिनु बजैं ६१
इक छबि मांहि रही छकि ऐसे❀चित्र लिखी होइ पुतरी जैसे।
इक रहि गई दोऊ कर जोरैं❀एक रीझि छबि पै त्रिन तोरैं ६२
इक मणि छाप ललहि[3] पहिरावैं❀इक करि तिलक करज चटकावैं।
इक रचि रचि मुष देति जु वीरी❀इक ठाढी दुलहिनि की नीरी ६३

१—माने का कमल, २—कीर्ति रानी, ३—दूलहा लाल जी।

इक कहैं चतुर महरि कौं छौंना❀री यह पढ्यौ अधिक कछु टौंना ।
जिनके बल करि माषन चोरयौ❀पर घर जाइ जु खिरका तोरयौ६४
इक कहै लला अधिक नचकैया❀लच्छन भलौ सिखायौ मैया ।
इक कहै पर घर छींकै तोरै❀इक कहैं मांट दही के फोरैं ॥६५
इक कहैं रौर मचाई पुर में❀बहुत भरे गुन याके उर में ।
इक कहैं लला साधु सो दीषै❀चोरी लच्छन का पै सीषै ॥६६॥
इक कहैं मैया ही जु सिखावै❀पर घर जाइ वस्तु लै आवै ।
नाम नन्दनी भूवा याकी❀मोहन सिष्या लीनी ताकी ॥६७
पुनि सानिन्दा भूवा दूजी❀जानें छटी लाल की पूजी ।
गोद खिलावत फूके कांन❀उनिहि सिखयौ पर घर जाँन ६८
पटुला नानी अति टुनि हाई❀तिन ही ऐसी सीख सिखाई ।
मामी तीनि जु परम विचच्छन❀तिनही पै सीखै यह लच्छन ॥६६
इक कहैं याकी चतुर जु ताई❀तिन बारैं[1] ते बुद्धि सिखाई ।
इक कहैं याकी कोविद काकी❀निपट मिलिनियां सो जु ललाकी ॥
इक कहैं यह जु पढ्यौ मोहनो❀सिखयौ है मैया रोहिनी ।
इक कहै उहि पुर यह पेषनौं[2]❀सब काहू भावै देखनौ[3] ॥७१॥
इक कहैं उहि पुर चंचल नारी❀इहि मुख सुनै सुनावैं गारी ।
इक कहैं देखौ वरन अनूप❀पिता पुत्र दरसत द्वै रूप ॥७२॥
एक कहैं री मौंगी[4] रहौं❀सकुचत लला न ऐसे कहौं ।
जसुमति रानी साधु जु महा❀तामें यह लच्छन हैं कहा ॥७३॥
लला पिता को नहिं उनहरयौ❀ताते सब मन धोखौ परयौ ।
एक कहैं सुनि री सिष मेरी❀बात बड़ी हौं करौं जु तेरी ॥७४
ब्रजरानी कौं दोष न दीजै❀ब्यौरौ एक और सुनि लीजै ।

---

[1]—बालापन से, [2]—परीक्षा, [3]—अर्थात ताड बाज हैं, [4]—मौन या चुप ।

बडी सुलछनि पटुला रांनी❀तिन सब क्रिया करी मन मांनी७५
सुमुष[1] महर बहु नाच नचायौ❀ताकौ करतबु इनि दरसायौ[2] ।
समुख साँवरे वरन जु देखौ❀गोरी महरि जनी को लेखौ ७६
ऐसेई तीन्यौ जसुमति भैया❀यह ननसार बडपन दैया ।
बात भीतरी मैं जु बखाँनी❀बिगरी इन की पटुला नाँनी ७७
यह सुनि कै जु और उठि बोली❀बात मरम की तैं हूं न खोली ।
बकी पूतनाँ धाइ लला की❀तिन में घटती कौन कला की७८
सूधी निपट घोष की रांनी❀निर्मल ज्यौं गंगा कौ पाँनी ।
अति ही साधु घोष को रांनौं❀परम कृपा की मूरति मांनौं ।।७९
तिनकौ दोष लगावौ काहे❀उनि के गुन इन में कछु नांहे।
कीरति सुनि के बरजी सबै❀भट्ट अधिक जिनि भाषौ अबै ८०
ये बातें कहि जिनि सकुचावौ❀और हांसि की बात चलावौ ।
बारौ भोरौ ब्रजपति छैया❀कहा[3] जानै कहा कीनौ मैया ८१
भेदी भाँम और इक आई[4]❀तिन परिखन की बात चलाई ।
सोम वंश कौं लगै न गारी❀इनि के है सब बात उघारी।।८२
खारी जल ससि उतपति भयौ❀तिन जु सुधा वरषन व्रत लयौ।
गुरु पतिनीं तें बुद्ध उपायौ❀सो नव ग्रह के मांहि पुजायौ ८३
नर ते नारी नृप सुत भयौ❀ऐलि जनम पुनि तातैं लयौ ।
सो जु भयौ जग्यनि अधिकारी❀जातिपांति कहौ किनि जु विचारी।।
तिनकै इक नृत्तकारिनि[5] धाम❀पाँच पुत्र जाये अभिराम ।
नहुष बडो परतापी भयौ❀तिन जु इन्द्र कौ आसन लयौ८५
यह जु रजाइसि सब कौं सूझी❀काहू नृप नें बात न बूझी ।

१—नाना का नाम, २—नाना नाचता था सो दोहता भी नाना के पांव पर गया। ३—बात बात में कीरति सासु भी ठोंका श्याम को दे ही गई सासु का प्यार न रुक सका, ४—यह भेदी भांम श्री वृन्दाबनदास जी स्वयं भाव जगत में है चौपाई ६१ में वह श्रीजी की दासी पदवी पाये, ५—अपसरा नाचने वाली।

तिन सुत नृप जजादि यह करनी❀रिषि जु बडे की बेटी परनी[1] ८६
तिन सुत जदु की भगनी वारी❀पाँच पुत्र जनि रहि गई क्वांरी।
देवमीढ जदु कुल जस धरनै❀वैस्य सुता के पति सौं वरनै ८७
सुत परजन्य अहीर कहाये❀नौ सुत ब्रज कुल दीपक जाये।
गोरे नन्द स्याम कुल ढोटा❀को वरनै इन कुल जस मोटा ८८
अंध धुंध यह कुल प्रभुताई❀तुम जिनि सकुचौ कुँवर कन्हाई।
ऊँची ग्रींव समझि अब कीजै❀वंश पढाई मुहि कछु दीजै ८९
मेरौ[2] गुन तब मानत रहियौ❀ये बातें मैया सौं कहियौ।
समझि सकुचि मुसिकानै लाला❀मंगल गाइ उठी सब बाला ९०
यह सुनि रीझी कीरति रांनीं❀सौम वंश की सुजस कहांनीं।
अपने[3] निकट बोलि सो लई❀सुता दासि लिषि लीक जु दई ९१
नाम धर्यौ हित वृन्दावनी❀अलि हित रूप जूथ की गनी।
पुनि विधि रीति विप्र करवावैं❀बाजे बाजैं मंगल गावैं ॥९२॥
आवैं जांहि जूथ ब्रज नारी❀भेंटैं देंहिं सुनावैं गारी।
कोऊ ललाहि छाप पहिरावैं❀कोउ नग जटित अँगूठा लावैं ९३
कोउ जोरा लखी वारैं भूषन❀चपरा[4] बिना गढे निरदूषन।
कोउ वारे जु लौंन पुनि राई❀इनकौं दृष्टि लगौ जिनि माई ९४
गठि जोरौ कियौ कीरति भौंन❀पलिका चहूं दिस बवै[5] जु धौंन।
विधि विधान करि मन्दिर लियौ❀भूवा आनि आरतौ कियौ ९५
कीरति लै बैठी दुहु साथ❀मुदित जिमावति अपने हाथ।
दै दै ग्रास बदन तन चहैं❀पुनि पुचकारि वचन मृदु कहैं ९६
तुम लघु वैस जु नन्द दुलारे❀प्रात कलेऊ जेंवन हारे।

१—विवाही, २—ग्रन्थ कर्ता किंकरी भाव श्याम को अपना ऋणी बना रहे हैं कि सुसराल में उनके पक्ष का सुरक्षित किया, ३—मैया कीरति जी ने ग्रन्थकर्ता को श्रीजी की दासी बना दिया, ४—खरे सोने की चपरी बिना भूषन गढी, ५—अंकुरित।

आजु बीति गयौ दिन इक जाँम❀मैं परषे जु चतुर घनस्यांम॥९७
अब नीकी विधि भोजन कीजे❀मेरे नैंन प्राँन सुख दीजे।
चितवत सकुचि अमीं सौं बरसैं❀कीरति लाड चाइ हिय सरसैं९८
पुचकारैं पुनि आंकों भरैं❀अपनी दीठि भार तें डरैं।
लालति चिबुक देंइ मुख कौर❀रांनीं जाये लैं कछु और ॥९९
मन लै कै पुनि पुनि जु निहोरैं❀देत ग्रास मुख थोरैं थोरैं।
मधुर वचन मुख ते जु कहावैं❀सुनि सुनि कै कीरति सुख पावैं॥
त्रिपित भये तब ग्रींवा ढोरैं❀ग्रास देंइ तब आनन मोरैं।
हाथ धवाइ कै जल अचवायौ❀रचि बीरा पुनि सुहथ खवायौ १०१
जो सुख [1]इहि छिन कीरति लह्यौ❀विधि सारद मुख जाइ न कह्यौ।
कुँवरि कुँवर जनवासे गये❀ब्रजपति दर्बि लुटावत भये १०२
वनीं गोद भरी आनन्द भरे❀विविध रतन न्यौछावर करे।
रीति भांति सब विधि जु कराई❀वरनी बहुरि तात घर आई १०३

दोहा—परम अलौकिक लोक वत, वरन्यौं पालिक चार।
रावर श्री वृषभाँन कै, वरष्यौ रंग अपार ॥१०४॥
भुव तल अस मंगल भयौ, देष्यौ सुन्यौ न काँन।
वृन्दाबन हित रूप कौ, कहां लगि करौं बषाँन ॥१०५॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दाबनदासजी कृत श्री राधिकाबल्लभ पालिकचार मंगल बरनन इक्यावनवीं लहरी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ बावनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—इक रसना क्यों कहि सकौं, फूलनि मन ब्रजराज।
जो फूलनि सुत जन्म भई, ताते अधिकी आज ॥१॥

---

[1] १—वात्सल्य रस के मिस से दाम्पत्य मधुरता का सुख।

आनन ओप जु सतगुनी, कहि समझाऊँ काहि ।
परम धन्य मान्यौ जनम, पुत्र अति लडे व्याहि ॥२॥

॥ चौपाई ॥

विदा हौंन ब्रजपति अरबरे❀रावलि पति सब त्यारी करे ।
षेत[1] दैंन मन नन्द उमाह❀सब सिर साकौ करन जु चाह॥३
श्री वृषभाँन बुलाये जबै❀इत उत के जुरि बैठे तबै ।
गोप नृपति कौ जुर्यौ समाज❀अस राजत मनु सुर सिरताज॥४
बकुचा खोले गोकुल रांनैं❀किया कोट लषि सबहि सिहानैं।
गहने कनक रतन मनि षचे❀अति विचित्र सोनिनु जे रचे ॥५
तिनके खोले डबा अनेक❀बने अमोल एक तें एक ।
कहत नन्द गोपनि सौं ऐसे❀दीजै चहिये जाकौं जैसे ॥६॥
भान लगाइत सबै बुलाये❀मान सहित ब्रजपति पहिराये ।
मोती करे तुरी गज दीये❀रजित रुकम दै राजी कीये ॥७॥
रतन समूह घोष पति दये❀ते प्रसन्न ह्वै चरननि नये ।
विप्रनि दच्छिना एती लही❀इक रसना सो परत न कही ॥८॥
दुहुँ भूपनि कौ देत असीस❀चले विदा ह्वै सकल मुनीस ।
दोऊ भूप देत हैं दान❀सब कोऊ पाइ चले सनमान ॥९॥
ये उन के वे इनि के तोषैं❀बांछित देहि वचन सुख पोषैं ।
वन्दी जन समूह जुरि आये❀पट भूषन गज वाजि दिवाये॥१०
देस देस के भाटनि टोल❀दिये पट भूषन दर्बि अतोल ।
कोउ रथ कोउ गज अस्व चढाये❀रवि ससि कुल के विरद पढाये११
ढाढिन कौं मन बांछित दीयौ❀पुत्र विवाह जु साकौ[2] कीयौ ।
दान पाइ सब सोभित भले❀भिच्छुक भूपति से बनि चले॥१२

---

[1]—एक रीति जिसमें दूलह का पिता अपनी बहु के लगाइत को भेटें देता है, [2]—आदर्श ।

कृष्ण विवाह नन्द मन हरषे❁सब पर दान इन्द्र सम वरषे।
आये भिक्षुक धनिक जु भये❁पढत आसिका घर कौं गये॥१३
जो जैसी आसा करि आयौ❁तैसेई तिन दान जु पायौ।
पट भूषन दै कीनैं सुखी❁देत आसिका मंगल मुखी॥१४
भाँडनि दिये पट भूषन घोरा❁और गरे कौ कंचन तोरा।
जगा चले जु बहुत दत पाइ❁रजित रुकम की षेप भराइ॥१५
नटिनु रिझाये गोप ललारे❁पट भूषन लै किये इक ठौरे।
करहा सकट भराये घनै❁चली लदाइ परत नहिं गनै॥१६
जैसी जाके मन काँमना❁सिद्धि करी ताकी भाँवना।
इक निहकाम[1] परम अनुरागी❁जुगल[2] रूप रस तिन मति पागी॥

दोहा—गोकुल पति रावलि जु पति, ठाढे जोरे हाथ।
करत परस्पर बीनती, लिये गोप गन साथ॥१८॥
सुकृत सिन्धु दुहुँ नृपनि कौ, सिव विधि लहत न थाह।
तिनके कुल की दासि को, भरे निहकाम उमाह॥१९॥
वचन अमो से श्रवत हैं, मुख मयंक समतूल।
कै कमनी गिरि कनक कै, वरषत अद्भुत फूल॥२०॥
सब लाइक गोकुल धनी, कहाँ लगि करौं प्रसंस।
हमैं दई उपमा अधिक, धन्य सुमति ससि वंस॥२१॥
श्रीफल[3] तुम आगें धर्यौ, भानोपरि कौ तोइ।
ताहू पै राष्यौ जु रस, अस कृपाल जग कोइ॥२२॥
प्रभुता नृप परजन्य की, तुम दीनी दरसाइ।
इक रसना क्यौं बरनियै, हम लीनै अपनाइ॥२३॥

१—निष्काम, २—मधुर उपासना ग्रन्थ कर्ता की निष्ठा, ३—वृषभान जी कहते हैं फल तथा जल से तुच्छ सत्कार किया गया है।

गुननि बडे कुल करि बडे, लोक बडाई पाइ ।
हमैं बडाई दै चलै, धनि नन्दीस्वर राइ ॥२४॥
तब बोलै ब्रजराज जू, सुनौ भयाने भूप ।
करि हैं बारम्बार सुधि, तुम गुन गन जु अनूप ॥२५॥
तुम ते पायौ मान बहु, हम जु भये धनि धन्य ।
क्यौं न होहि अस लाइकी, दिन मणि कुल उत्पन्य॥२६॥
करुना कृपा उदारता, दई सची[1] तुम अंग ।
किनि किनि नहिं पायौ जु सुख सज्जन जन के संग ॥२७
मिलै बहुरि आँकौं जु भरि, उफल्यौ हिये सनेह ।
एक प्रान की मनु रची, विधना ने द्वै देह ॥२८॥
गोपालक पालक जु ब्रज, सुख बरषै इहि काल ।
जिन कुल निगम दुराधि जो, प्रगटे राधा लाल ॥२९॥

॥ चौपाई ॥

विनती करि जु भानपुर आये❀साज दाइजे सबहि पठाये ।
पुनि अपने निज मन्दिर गये❀त्यारी सबै करावत भये ॥३०॥
पठयो तब डोला ब्रजनाथ❀मंत्री जन आये तिहि साथ ।
तिननि भाँन सौं विनती करी❀विदा करन की आई शुभघरी३१
बहु डोला पालिकी सुहाई❀रथ बुरबहिली अनेक जु आई ।
सिमिटि सबहि नगर की बाला❀विदा होंन आये नन्दलाला॥३२
जोर हाथ ठाढे भये मोहन❀सजल नैंन लागत अति सोहन ।
[2]कीरति जू सौं विनती करैं❀रांनी हरषि लगाये गरैं ॥३३॥
तजि नहि सकति प्रेम बढि गयौ❀ज्यौं रोकैं त्यौं बाढैं नयौ ।
देहि आसिका मुख तन हेरै❀लैंहिं वारनै सिर कर फेरैं ॥३४

---

[1]—भरपूर कर दी, [2]—कीर्ति जी के प्रेम का वर्णन है ।

चिरंजीव होहु जसुमति जायौ❀मैं लाडी वरु भागिनु पायौ ।
निधनैं की सी पाई थाती❀तजि नहिं सकत लाइ रही छाती॥
आरज वधुनि सुविधि समझायौ❀रतन थार भरि तिलक करायौ।
लाल हियौ हूं भरि भरि आवै❀समझि सकुचि हिय प्रेम दुरावै॥३६
बारम्बार नवावत सीस❀बार बार दैंई सासु असीस।
मिली बहुरि सब भांननि घरनी❀चंपा आदि भाग बड बरनी ३७
[1]मुखरा बहुरि लाल उर भर्यौ❀बहुत दवि न्यौंछावरि कर्यौ ।
पुर बनिता मिलि मंगल गावैं❀पुनि पुनि सबहि असीस सुनावैं ॥
विदा ह्वै जु मुरलीधर चले❀मिलि श्रीदाम कंठ लगि भले ।
बैठे गोप और मुनि वृन्द❀तिन मधि बरसानैं जु नरिन्द३९
गरग परोहित तहाँ लै गये❀सादर भान अंक भरि लये ।
रतन पेंच लै बान्ध्यौ सीस❀मन क्रम वचन जु देत असीस ४०
ब्रजपति कौं बहु विधि सुख दीजौ❀गोपालन नीकी विधि कीजौ।
नमित ग्रींव पुनि जोरे पान❀सिच्छा लाल सुनी दै कॉन ४१
तौ हम गनैं चतुर घनस्याम❀भूवा कौ जु बतावौ नाम ।
सुनि यह बात सकुचि हँसि परे❀जूही फूल से मुख ते झरे ॥४२
पुनि मंडफ बुलवाई तनी[2]❀दई लाल कौं गायैं घनी ।
मचले तबहि बताये ग्रांम❀पुनि इक दीनौं गिरि पै धांम४३
अधिक प्रीति कीनी नर पाल❀चलन विदा मांगी नन्द लाल ।
मूरति कृपा तात श्री दाम❀बिसरि सकत नहिं सुन्दर स्याम॥
ब्रजपति अनुग अनेक पठाये❀लाल लैंन कौ धाये आये ।
रावलि पति सौं विदा जु ह्वै कै❀चले जुहार कियौ पुनि [3]नैंकै॥४५
लाल नालिकी ह्वै असवार❀गये तात पै ताही बार ।

---

[1] —मुखरा श्री राधा जी की नानी ने श्याम को हृदय से लगाया, [2] —विवाह विसर्जन की एक रीति, [3] —प्रणाम नमस्कार करके ।

कीरति भान प्रीति सुधि करै❀नहीं जनावैं हिय सुख भरै ॥४६

दोहा—पुर पौरी अभिराम जहाँ, ठाढे वल्लव राज ।
महा भाँन ऐसैं कह्यौ, गहरु करत किहि काज ॥४७॥
जो कछु कारज उचित है, किये बनैं अब सोइ ।
खवरि करौ रनिवास में गहरु कौंन विधि होइ ॥४८॥

॥ चौपाई ॥

करत लगाइत विनती घनी❀मन दै सुनौ भयानै धनी ।
मुनि कहै सुभ बेला सुनि लीजै❀अतिलडि कौ अब विदा जु कीजै॥
पौरिनु बजन लगे निसान❀वन्दी विरदनि करत बखान ।
मंगल गावति चहुँ दिसि बनिता❀कुँवरिहि लाइ रही उर जनिता॥
अरी मेरी बच्छ लाड सुष पली❀अब जु विदेसनि ह्वै कै चली ।
वार बार ऐसे मुख भाषै❀उमग्यौ प्रेम थांभि क्यौं राषै ॥५१
उर लगाइ पुनि पुनि भुज भरै❀वदन चूंबि माथै कर धरै ।
जिहि तिहि बिधि बनितनि सुरझाई❀पुनि उर लगीं काकी ताई५२
सास ससुर अज्ञा में रहियौ❀मीठे बचन वदन ते कहियौ ।
दुहुँ कुल की लज्या तू धरनी❀हम सिच्छा सुनि सुख विस्तरनी५३
बूढी बडीनु मान बहु दीजौ❀उन कुल रीति समझि सुनि लीजौ
कंठ लगाइ रही पुनि नानी❀हिये गहवरी मुषरा रानी ५४
मौंना मौंना षष्टी माँइ❀ते मिलि प्रेम सिन्धु में न्हाँइ ।
भाभी भूवा सकल सहेली❀लपटी सिये प्रेम मनु बेली ॥५५॥
पुर बनिता भुज भरि २ मिली❀ते गरुवे आनन्द सु झिली ।
धाइ धाइ उर भरैं जु एक❀पुनि मिलिवें ठाढी जु अनेक ५६
रावलि पति उर करुना भरिकै❀कुँवरिहिं लियौ अंक में धरि कै ।

प्रेम विवस पुचकारत जात❀गदगद कंठ न निसरति बात ५७
जिनि उदास होइ अतिलडि मेरी❀धाइ संग मैं दीनी तेरी ।
दासी दास दिये हैं घनैं❀तो मन लिये रहै सब जनैं ॥५८
पठऊ लैंन वेगि तो वीर❀वछ्छ हूजियौ तू न अधीर ।
काका ताऊ सब उर लेत❀धरि मन धीर असीसैं देत ॥५९
पुनि सोदर जु मिली भरि बांहीं❀प्रेम विवस हिय सुधि बुधि नांहीं ।
माइ वीर पुनि उचरति लली❀सब उर प्रेम बढ्यौ अति बली६०
करुना वस भयो सब रनिवास❀चकित थकित सब ठाढे पास ।
माइ खकि पुनि उर भरि लई❀तन सुधि बिसरी विवस अति भई६१
कुँवरि चलति कै प्राननि थाती❀लिखत न बनति प्रेम की पाती ।
ज्यों ज्यों चलन त्यारी करैं❀त्यौं त्यौं अतिलडि लपटति गरैं६२
नाइनि गोदी भरि कै लाई❀डोला मांहि कुँवरि बैठाई ।
छोटे बडे अधीरज सबै❀कुँवरि चलन त्यारी भई जबै ६३
विहवल होत नारि नर महा❀उमगनि नेह सु बरनौं कहा ।
सब मुष करुना ही की बांनी❀कहाँ बछ्छ कहै कीरति रांनी ६४
ललितादिक सखी व्याकुल सबहीं❀मानौं प्राँन तजैंगी अब हीं ।
जल बिनु मीन न जैसैं रहै❀ऐसी दसा कहा कोउ कहै ६५
चन्द चकोरिनि जैसैं नैंम❀अस राधा सौं इन कौ प्रेम ।
ससि की किरनि रहै ससि माहीं❀पलहू तासौं अन्तर नाहीं ॥६६
तन छाया तन लारैं जैसे❀अष्ट सखी राधा संग ऐसे ।
आगम वरती मुनि यौं कहैं❀कुँवरि बिना न प्राँन इनि रहैं ६७
ताते इनहि संग करि देहु❀प्राँन बचैं ज्यौं यह जस लेहु ।
ये राधा विनु छिनु नहिं रहि हैं❀राधा इनि विछोह नहि सहि हैं ६८
एक जोति की किरिनि अपार❀सदा रहैं ताही के लार ।

संग चलन कौ धर्म सुभाइ❀सह्यौ विछोहौ कहि विधि जाइ ६९
दई रच्यौ पूरब संजोग❀कहत विचारि सयानैं लोग।
मात पिता विचार तब करचौ❀यह दुख कापै जै है भरचौ ॥७०
यह बात सब के मन भाई❀त्यारी ताही रीति कराई।
पट भूषन अंग अंग सिंगारी❀डोलनि में सब ही बैठारी ॥७१
मेवा पाक कोथरिनु भरे❀अतिलडि के डोला में धरे।
कोउ रथ कोउ घुरबहिल जु मांहि❀कोउ डोलनि में चली जु जांहि७२
कुँवरि चढनि कौ डोला जो है❀ताकी उपमां को सम को है।
सुरपति विधि विमान लै वारौ❀इहि सम हरिपुर हू न निहारौ७३
किन विस्वकर्मा निर्मित कीयौ❀सब दुति धरनि तेज हरि लीयौ।
नग निर्मोल जटो बहु पांति❀तिनकी छुटी मनोहर कांति॥७४
तामें राजति सर्वेश्वरी❀महिमा जाकी निगमनि दुरी।
डोला निकसि गोइँरे आयौं❀वहु विधि धन व्रजराज लुटायौ ७५
भुव नभ में जै जै धुनि छाइ❀सब कोउ नन्दहि देत बधाई।
लै लै धनु बहु जाचक गाजै❀देव दुंदभि गहरी बाजै ॥७६॥
घुरति जनेतिनु के सहदानैं❀वन्दी ससि कुल विरद बखानैं।
दछिना नन्द देत मित नाहीं❀वरसानैं के खेत जु माहीं ॥७७॥
नन्द हिये आनन्द जु एतौ❀वरनि न सकै सारदा जेतौ।
मुनि नर देव चक्रित जहाँ तहाँ❀या सुष सागर कौ मित कहाँ७८

दोहा—सोभा कौ सागर मनौ, आजु वढ्यौ तजि सींव।
अहिलादिन संग साज लषि, सब कोऊ ढोरति ग्रीव ७९
अहा महा मुख ते कहैं, दृग विसरे पल मैंड।
वृन्दाबन हित रूप की, आवति परति उलैंड ॥८०॥
फूलनि घोष नरिंद्र की, किहि विधि करौं प्रसंश।

जब डोला आवत लखी, स्वामिनि श्री हरिवंश ॥८१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्री राधिकावल्लभ विवाह मंगल बिदायगी वरनन वामनवीं लहरो की जै जै श्रीहित हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ त्रेपनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा कुँवरि विदा करि दाइजौ, पठयौ वल्लभ राज ।
न्यारे न्यारे टोल सजि, लाये अनुग समाज ॥१॥
सब जन भये जु कौतिकी, देखि दाइजो साज ।
दृष्टि न ठहरत देखि कै, अस चीतैं गज बाज ॥२॥
दृग देखैं रसना कहै, कैसे होइ निरधार ।
जो देखैं सोई कहै, तब कछु बनै विचार ॥३॥
तद्दिप वरनौं जथा मति, व्यास सुवन परसाद ।
ज्यौं गूँगे को सैंन लखि, चतुरनि बढै अहिलाद ॥४॥
ऐसो दीनौ दाइजौ भान, भीज अनुराग ।
अद्‌भुत फूल्यौ पगनि चलि, आवतु मनु छबि बाग ॥५

॥ चौपाई ॥

देखत सुखित होत ब्रजराज❀सम्हरि न सकत दाइजे साज ।
अंवारीनु[1] सजे गज टोल❀जिनमें लागे रतन अमोल ॥६॥
तन सकलाती झूलैं परी❀लागी झालरि मोतिनु लरी ।
चित्र लिखे से अश्व विराजैं❀तिन पर जीन सुनहरी राजैं ॥७॥
मुहरिनु माही जटे नग चूँनी❀मिलि रवि किरनि जोति भई दूनीं।
गरहमेल पन्ननि की परीं❀जगमगति सिर कलँगीं धरीं ॥८
अस साजी अस्वनि की सैंना❀दियें दाइजे गनत बनै ना ।
रथनि मांहि बहु रचना कीनी❀देव विमांननि की छबि छीनी॥९

---

[1] —हौदे हाथी पर बैठने के ।

तिन सौं चंचल जुरे तुरंगा❀परषत बनें न तिन के अंगा ।
तिनकी गनती करी न जाई❀मैं अपनी बल बुद्धि उपाई ॥१०
डोलनि पै रचना अस कीनी❀निरषत सब चख चौंधी दीनी ।
तिनकी सजि सजि पँकति धरी❀देखि बरातिनु मति अरवरी ११
करहा नचत अनेक जु आये❀तिन तन साज विचित्र बनाये ।
मनहु मदन वारी के मोर❀सबहि सुजाति लसत चितचोर१२
पहिल ब्यात की गाइ सिंगारी❀फूली मनु रति पति की वारी ।
गल घंटा पैंजनी झनकार❀अगनित ग्वाल दौंहिनी लार १३
मणि पिंजरनि सुक सारो पढै❀बचन अमी से जिन मुख कढै ।
जाति अनेक जु पंछी लसैं❀नाना रंग पींजरनि बसैं ॥१४॥
साज जरयाइनु सौं पालिकी❀उपमा रहित बनी नालकी[1] ।
बसन लदाये केऊ भार❀रतन जटित मंजूस पिटार ॥१५
भाजन कनक सकट बहु भरे❀अरु धातुनि के अगनित धरे ।
जे चीते हैं सुघर चितेरे❀आइ आइ सब ग्वाल जु हेरे॥१६
चौकी कंचन रतन जडाई❀वर वरनो बैठन हित आई ।
पलिंग बिछौंना कमनी महा❀कहौं दुलीचनि की छबि कहा १७
गिलम[2] गेंदुवा कोमल भारी❀तिन पर विविध भांति चित्रकारी
विविध वितान तार सुनहरी❀तिनमें चहुँ दिस मोतिनु लरी१८
दिये बिछौंना बहु विस्तार❀जिनमें चित्र रचे सुति[3] धार ।
सकट अनेकनि अन्न अनेक❀तिनकी सजि चली पंकति एक१९
छाक[4] छबीलिनु गाडा भरे❀बडडे डलानि सचि सचि धरे ।
सब कौं जो ब्यौरो करि कहौं❀बाढै कथा पार नहिं लहौं ॥२०
जेते साज भान जु दये❀करत सम्हार दहलि जन गये ।

---

[1]—शिविका या एक विशेष पालकी, [2]—गद्दा व तकिया, [3]—कसीदा करने वाला या बुनने वाला, [4]—रास्ते में खाने की वस्तुएँ ।

विधि सारद कहि पार न लहै❀मो मति अलप कहाँ लगि कहै२१
दासी दास जु अगनित दये❀कुँवरि संग सब सोभित भये।
भूषन अम्बर रतन अमोल❀सब तन लसत चले सजि टोल २२
कोऊ कर लीये सूरज मुखी❀तिन्हैं देषि होइ अतिलडि सुखी।
एकनि कर वर चँवर विराजें❀दुहुँ दिसि ढोरत छबि सौं राजें२३
इक जल झारी लीयें साथ❀इक सुक सारा पिंजरा हाथ।
इक लगि चलीं जु डोला नीरी❀रचि रचि करनि खवावति बीरी २४
इक लै चली सुगंधिनु सीसी❀सुर पुर हूं ऐसी नहिं दीसी।
मेवनि डबा लिये कर एक❀कुशमनि वृष्टि करैं जु अनेक २५
कोउ लिये भूषन रतन पिटार❀काहू कर रूमाल सुचार[1] ।
कोउ लिये बटुवा कोउ पिकदानी❀कोउ चली संग जु कहत कहांनी
गाइन सुघर दई जे लार❀तिन संग बाजे बहु विस्तार।
सक्ति[2] अनन्त पलटि तन चली❀वांछित दासि ते जु विधि भली२७
निधि सिधि प्रभुता तजिकैं आछैं❀फिरति निरादरि[3] लागी पाछैं।
ब्रज माधुर्ज अलौकिक दरसै❀इस्वरता दुरि कै पद परसै ॥२८
कहुँ कहुं अपनौ इनि बल कर्यौ❀गोपनि रंचक नहिं लखि पर्यौ।
गिरि नाराइन कृपा सु जानैं❀याकौ कृत्य न रंचक मानैं ॥२९
जद्दिप सिमिटी विभो[4] घनेरी❀एती कमला पुर नहिं हेरी।
वरु वरनी जु गनैं बड भागो❀ईस्वरता की पवन न लागी॥३०
संपति सबहि अलौकिक ओप❀गनत लोक वत ताकौं गोप।
यौं मुनि कहैं परस्पर बचना❀यह सब सर्वेस्वर की रचना ॥३१
मारग मांहि लगी छबि जात❀देषि देषि सब गोप सिहात।

१—सुचारु या सुन्दर, २—शरीर बदले गुप्त रूप से अनंत मधुर शक्तियां साथ हैं, ३—निरादर इसलिये कि यहां ऐश्वर्य लीला नहीं है ऊपर मधुर शक्तियां साथ हैं यह बता दिया, ४—वैभव ।

इक कहैं संपति दुलहिनि लाई❀इक कहैं दूलह भागिनु आई ३२
एक कहैं धनि बल्लभ राज❀तिन साजि दीनैं साज समाज ।
इक कहैं बात और नांह वनै❀हम धनि भाग नन्द कौ गनै ३३
इक कहैं रचि कुल की प्रभुताई❀अति उदारता जहँ चलि आई ।
खेत जोति बाजैं नौसाँन❀वरषत फूलनि अमर विमान ३४
नित्त त मगन भई अपछरा❀खसि खसि परैं जु कुशमनि हरा[1]।
हरषित भई देषियति अवनी❀दिसनि प्रकास लगै अति कमनी ३५
दूलह श्री सतगुनी जु सरसी❀ताही बिधि दुलहिनि तन दरसी।
जब आये जु नन्द के नेरे❀भरि भरि मुठी रतन बगेरे ॥३६
प्रभु दत्त कृपा जु मानी और❀हरषित हिये गोप सिरमौर ।
सुता सजन की ब्याहि जु लाये❀हमहूं जग में धन्य कहाये ॥३७॥
भयौ सपुत्र दई अस लरज्यौ❀सुकृत्त सिन्धु कैं जु बढि गरज्यौ।
अपु मुख महिमा भाग्य बषांनीं❀नाराइन की कृपा सु जांनीं ३८
और भई नन्द तन ओभा❀वरषन लागी मुख ते सोभा ।
नौबति बजैं महा धुनि होई❀चलौ चलौ जु कहै सब कोई॥३९
सचिव दैंहि भूपनि कौं मान❀ऐ जू घोरनि सज्यौ पलान ।
करहनि चढे फिरत हैं दौरे❀भैया घर कौं वेगि चलौ रे॥४०॥
अज्ञा दई घोष कैं नाथ❀सब कोउ मिलि कै चलौ जु साथ ।
ता छिन घाव निसानन परै❀चलिबे कौं सब ही अरबरे ॥४१
रथ धुरबहिल जुताये गाडे❀जे ह्वै रहै बाट में आडे ।
नव दूलह नालिकी सोहै❀अमर अनंगनि के मन मोहै ॥४२
दुलहिनि कौं आगैं चौडोला❀विहँसत बनाँ परम मिठ बोला ।
बलिदाऊ राजत हैं लार❀भये सुनहरी रथ असवार ॥४३॥

---

[1]—हार सिर के बालों में ।

ग्वाल नचावत चले तुरंगा❀जे आये जु दाइजे संगा ।
सुनि भैया ढोटा ब्रज नाथ❀हम तुम फिरैं जु गाइनु साथ ४४
यह तौ भाग्य कहाँ ते कढ्यौ❀आजु नालिकी मांहि जु चढ्यौ ।
ऐसौ ससुर उदार जु पायौ❀हमहि भलौ पकवान खवायौ ४५
बागे सुन्दर दिये दुशाला❀औरु दई यह मोतिनु माला ।
तेरौ ब्याह हमें भयौ लहनौं❀पहिरे अम्बर सुन्दर गहनौं ॥४६
तबहि बोलि मोहन ढिग लये❀कांन लागि समझाइ जु दये ।
हम संग बहु बरसानैं बासी❀सुनि करिहैं जु हमारी हांसी ४७
भैया ताते चुपके रहौ❀वचन जंगलौ जिनि मुख कहौ ।
ब्रजपति साज सम्हारि जु लये❀जे वृषभाँन दाइजे दये ॥४८॥
सैंना सजि ठाढी भई संग❀छैल नचावत चपल तुरंग ।
दासी दास कुँवरि के पास❀ते जु हौंन नहिं देत उदास ॥४९
ब्रजपति षबरि लेत छिन २ में❀कृपा सदेह विराजत जिन में ।
बनाँ बनीं के सुख कौं चहैं❀धीरे चलैं विरमि पुनि रहैं ॥५०
तंत्र उपनिषद जामिल जिते❀पाछैं लागे आवत तिते ।
गुन विद्या जु कला चातुरी❀राधा पद सेवन सब जुरी ॥५१॥
पद रज परसन भरे उमाहै❀नियरैं आवन पावत ना है ।
निधि सिधि जाकैं लागी पाइ❀सवेस्वरी जु कहावैं न्याइ ॥५२॥
रचित तीनि गुन नाहिंन जहाँ❀सबहि अमायिक परिकर तहाँ ।
मन मिल सषी पास ही रहैं❀मीठी मीठी बतियां कहैं ॥५३॥
मन लीयैं रहैं सर्बहि सयानी❀असन कराइ पिवावैं पानी ।
माइ बिछोह लहर जब आवै❀धाइ माइ सम सो समझावैं ५४
जब माधुर्ज आपु बल करै❀ईस्वरता पाछैं पग धरै ।
माइ माइ कहि औचक परै❀तबहि धाइ लै आंकौ भरै ॥५५॥

समझैं बहुत जु राज दुलारी❀चुप ह्वै रहे समझि सुकुँवारी।
मोहन अति ही चतुर सुजान❀भोरे अषिल कलानि निधांन ५६
भैया कब पहुँचे नन्द ग्रांम❀कह्यौ सखा सौं सुन्दर स्याम।
बाबा पै जु सखा कोउ जाउ❀वेगि चलनि कौं करौ उपाउ॥५७
रवि रथु आवतु बढ्यौ जु एह❀श्रमित होंहिगी सब की देह।
सुनि कैं हँस्यौ मनसुखा भारी❀कूट करन कौं बडौ खिलारी॥५८
लला बहुत भये सुखिया गात❀भूलि गये वरहे[1] की बात।
दिना चारि महिमानी खाई❀झलकन लागी तन उजराई॥५९
धूप लगन ते अति ही डरे❀सिकदारी[2] जु सखनि पै करे।
मधुमंगल तू नेरौ आइ❀कूर मनसुखा कौ समझाइ॥६०
बिना बुलाये ही यह बोलै❀गुन नहिं मानै औगुन खोलै।
ब्याह जानि राखतु हौं कांनि❀याही परी हाँसी की बांनि॥६१॥
नैंक जीभ दांतनि तर दै रे❀कूट्यौ करि न मानि सिख लै रे।
भैया स्याम कहत हौं तो कौं❀हाँसी विनु न परै कल मोकौं६२
प्रभुता पाइ ब्याह मझार❀बहुरि फिरैगौ गाइनु लार।
कोऊ मित्र बडाई राखै❀कोऊ बचन हांसि के भाखै॥६३
अस्व नचावत सुबल जु गयौ❀बाबा सौं यौं विनवतु भयौ।
चलिबे कौं मोहन अकुलात❀हौं आयौ यह कहन जु बात॥६४
यह सुनि हँस्यौ घोष कौ रांनौं❀मनहुँ प्रात वारिज[4] विकसानौं।
अग्रज अनुज सहित ब्रजराज❀सैंना साजि चले गज बाजि ६५
वहु बाजेनु भई घनघोर❀हींसैं तुरी करैं जन सोर।
सब मन बढे भये असवार❀कोसनि लग बरात विस्तार॥६६

१—गोचारन बन भूमि का प्रथम श्रीजी से भेंट की बात का ताना दिया है जब प्रथम दर्शन से श्याम बे सुध होगये थे २२ लहरी में वरनन आचुका है, २—दूसरा ताना बन की छाक के सन्मुख सुसराल की महिमानी का दिया है, ३—हकूमत, ४—कमल।

विरमैं कछु संकेत जु माहीं❀जहाँ तुंग तरु सीतल छांहीं ।
गये लगाइत आगें दौरि❀कीनी खबरि नन्द की पौरि॥६७
मन वांछित जु बधाई पाई❀पुनि लडवनि सौं गोद भराई।
गोपुर गहरी नौंवति बाजी❀बधू बरातहि देखन भाजी ॥६८
महरि रोंहिनी ऊँची चढी❀डोला देखति आनन्द बढी ।
जा डोला पै फूल जु वरषैं❀वह सुत वधु महरि कहि हरषैं६६
औरे जोति नालिकी सरसै❀ता मैं मेरौ कुल मणि दरसै ।
जिनकैं दुहुँ दिस चौंर ढुरत है❀सव कोऊ नैं जु जुहार करत है७०
वे ब्रजपति जहाँ गोप बने हैं❀झूमत कुंजर[1] टोल घनें हैं ।
यह मेरो हलधर रथ चढि आवै❀सखा मंडली संग छबि पावैं ७१
अहो महरि डोला तन हेरौ❀मनहु प्रात रवि कियौ उजेरौ ।
जा डोला सौं वाहन ऐसै❀मदन कुँवार लसत हैं जैसे ॥७२
किधौं अलौकिक अमर विमाँन❀जिन हरि लियौ तेज रवि भाँन।
ज्यौं ज्यौं आवैं नगर जु नेरौ❀त्यौं आनन्द बढतु हिय मेरो७३
कीरति उदर महा मणि जो है❀या डोला में राजति सो है ।
बहुत करी मैं गिरि का सेवा❀या कारन जु मनाये देवा ॥७४॥
रमा रमन पुनि पुनि सिरनायौ❀यह दिन मुहि तिन कृपा दिखायौ
आजु जगत में को मो सरवर❀लोक[2] महा मणि लायौ सुत वर ॥
मो उर आनन्द निरवधि भरि है❀दुलहिनि पाउ पौरि जब धरि है।
मो हिय सब हि बराती भावैं❀रन जीते से मानौ आवैं ।
राज कुँवार उदित ससि मानौं❀गोप भूप तारा गन जानौ ।
बाजे बाजत दहलत अवनी❀उडि षुर रैंनु गगन कौं गवनी७७
धन्य धन्य रावलि के रानैं❀ये दल बादल जोरैं जानैं ।

१—हाथी, २—बेटा ऐसो महा मणि ब्याह कर लाया है ।

धन्य उदार सजन कौ हीयौ❀सब कौं सब विधि आदर दीयौ७८
सब के प्रफुलित आनन्द दरसैं❀अस्व नचावत मन सुख सरसैं ।
गज पालिकी रथनि की सैंनी❀आवति बढी महा छबि दैंनी ७९
सूरज मुखी झुकी है ऐसे❀धूप लगै न अतिलडै जैसे ।
पीत वरन फहरात निसान❀ससि कुल विरद गुनी करैं गाँन८०
विप्र वधू जु लैंन कौं निकसी❀मंगल कलश धरैं सिर विकसी ।
सबहि सुहागिन सोभित भली❀रहसि बधाये गावति चली ॥८१
ऐसे कहति घोष महतौनि❀निकसो लैंन छतीसौं पौंनि ।
विप्र चले कर श्रीफल धरैं❀निगम रिचा आसिक उच्चरैं ८२
घर घर रचनावैं रषवांनैं❀पौरिनु हरषि धरे सहदानैं ।
भाग वली वरननि हरि जनिता❀सुनि सुनि मगन होति सब बनिता
पुत्र सुभ घरी मैं जग जायौ❀सोम वंश जिन विरद बुलायौ ।
कुल परजन्य सु धन्य कहायौ❀रावलिपति तैं मान जु पायौ ८४
सजन खेत ऐसो जस कीयौ❀मैं सुनि कैं अमृत सौ पीयौ ।
अपनौं भाग विचारत मोटा❀लियौ आनन्द हिंडोरैं झोटा ८५
सखी बांह गहि मंदिर लाई❀आइ आइ सब देति बधाई ।
अस्व छांडि सब ग्वाल जु धाये❀फूलत ब्रजरांनी पै आये ॥८६॥
मैया हम लै हैं मन भायौ❀यह दिन विधनां तोहि दिखायौ ।
बडे सजन की बेटी लाये❀खेत जोति निसाँन बजाये ॥८७
सुनि सुनि मगन होति नन्दराँनी❀सब बोलत अप अपनी बांनी ।
लायौ इतौ दाइजौ भैया❀कैंहूं घर जु भरैंगे मैया ॥८८॥
रूप आगरी दुलहिनि आई❀संपति संग बहुत है आई ।
फूलत पेट जु करत कलोलैं❀एक संग सबहि मिलि बोलैं ॥८९

१—जो जो मंगल रचना रखाई जाती हैं वह रखी जा रही हैं ।

लाइ गोद भरति ब्रज रांनी❀लेति वारनैं हिये सिहानी।
जब पुर पौरि घोषपति आये❀गहरे तब नीसान बजाये ॥६०॥
डोला देखि देखि पुर बासी❀सब मुख लागै श्रवत सुधा सी।
इहि पुर मंगल विद्धि जु सदा❀अब सतगुनी बढै संपदा ॥६१॥
यह सुलच्छिनि दुलहिनि आई❀जनम समय जो गरग सुनाई।
आज नन्द घर सुख मित कहा❀सुर नर मुनि जु भये मुँह चहा॥

दोहा–ठाढौ राँनौ घोष कौ, गांव गोइरैं आइ।
वरषत कंचन रतन सब, देत बधाई धाइ ॥६३॥
निगमनि जो दरसे नहीं, लच्छन दिये लखाइ।
तिन कौं डोला पालिकी, लाये नन्द चढाइ ॥६४॥
पुर प्रवेश चाहत कियौ, सुघरी नन्द सुधाइ।
बहु विधि दरसति संपदा, कहा सुनाऊँ गाइ ॥६५॥
पुर के भाग सु जगमगे, वरनौं कहा विशेषि।
वृन्दाबन हित रूप की, बढनि सतगुनी देषि ॥६६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत नव दुलहिनि दूलह श्री नन्दपुर आगम बरनन त्रेपनवीं लहरी की जै जै श्रीहित हरिवंश श्री राधे ॥

॥ अथ चौवनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–पुर प्रवेश बरनन करन, बाढ्यौ उर अहिलाद।
अनुभव[1] जनित गिरा फुरै, श्री हरिवंश प्रसाद ॥१॥

॥ चौपाई ॥

डोला आइ पौरि पुर धर्यौ❀मन्दिर लैंन विचार जु कर्यौ।
गरग कही सुभ बेला एह❀नव दुलहिनि कौं लीजे ग्रेह॥२

---

[1] —ग्रन्थ कर्ता अनुभव लिख रहे है।

तिथि पुनीत पुनि वार पुनीत❀लगन पुनीत गाइयै गीत ।
रांनो नगर बुलावौ दीजै❀ब्रज बनितनि कौं एकत कीजैं॥३
नाइन रमकी झमकी डोलैं❀दै दै मान सबनि कौं बोलैं ।
बड भागिनि तन करौ सिंगार❀हाथनि लेहु तिलक के थार॥४॥
यह सुनि सब घर घर ते चली❀करी अलंकृत पुर की गली ।
रहसि बधाये गावति आवैं❀दुलहिनि को सौभाग्य मल्हावैं ५
वीथिनु मांहि सुगंधि जु घमडी[1]❀तिनमें आवति भांमिनि रमडी[2]।
चीते पोते सब घर द्वार❀तिन पर तने चन्दोवा चार ॥६॥
नव दल कुशम बनी मणि माला❀सजि धरे मंगल साज रसाला ।
भवन भवन की पौरी लसै❀महा मोद भरि मनु ये हसैं ॥७
नन्द भवन रचना जु विशेषि❀चकृत होत सब कोऊ देषि ।
दुलहिनि आगम हरषी पुरी❀महा भाग की महिमा फुरी ॥८
हाट बजार जरी पट छाये❀धुजा कलस सब धाँम धराये ।
मारग फूल बिछौना कीयौ❀मनु अवनी कौ फूल्यौ हीयौ ॥९

दोहा भवन लेन सुत नव वधू, सजे जु मंगल साज ।
सोभा मनु सदेह ह्वै, दरसत पुर ब्रज राज ॥१०॥
नव दुलहिनि कौं देखिवे, आवत सजि ब्रजबाल ।
पाइल बिछुवनि धुनि जु अस, मनु सुत पढत मराल ११
डोला आनि तहाँ धरयौ, पौरि भूप रनिवास ।
पंच नाद ताछिन भये, जै धुनि होत अकास ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

नन्द द्वार सिमिटीं नागरी❀राधा दरस उमाहै भरी ।
कोउ सिर मंगल कलस जु धरे❀कोउ असीस मुख ते उच्चरे॥१३

१—फैला हुई, २—भ्रात प्रात ।

जब डोला ते दुलहिनि कढी❀सोभा पौंरि सतगुनी बढी ।
वधू विप्र जन गांठि जुरावैं❀सकुचतु लाल बधू गहि लावैं१४
नांनां रंग पावडे बिछाये❀झूँमत घूँमत अतिलड आये ।
अति लजवंती दुलहिनि माई❀घूँघट सुकर सँवारति जाई १५
परषत वधू हँसति सब जुरि जुरि❀दूलहु ढीठ निहारतु मुरि मुरि ।
रांनी कहत लाल मेरौ बारौ❀सजनी यह कौतिक जु निहारौ१६
इत उत नहीं तनिक रुष जोरैं❀चपल चलति उत ही दृग कोरैं ।
आगे वरु पाछैं मेरी वरनी❀ब्रज वीथिनु मंगल विस्तरनी १७
भामिनि जुरी समूहनि जहां❀दुलहिनि भवन लीजियति तहां ।
राज कुँवर रानी कौं जायौ❀ऐसी ब्याहि दुलहिनि लायौ १८
यह रस रतन भई कुल जाकैं❀पुनि पुनि जाउँ वारनैं ताकैं ।
धरति मन्द पग पौरी सौं ही❀मंगल निकर उदै त्यौं हौं ही १९
सब पुर श्री चढी है मानौं❀नन्द भवन छबि कहा बखानौं ।
मंगल महा मदिरला बाजैं❀कहै सब धन्य भयौ दिन आजैं २०
अवनी पर धनि द्वै जग जानौं❀एक माइ इक सासु बखानौं ।
माइ जाइ बहु भांति लडायौ❀सासु सबै घर बास करायौ ॥२१
धनि मेरौ बरना सब गुन अगरौ❀ब्याहि लोक सनमान्यौ सगरौ ।
चौकि पूरि कै पट्टा धर्यौ❀विधि विधान सब विप्रनि कर्यौ२२
गरग आदि निगमनि उच्चरैं❀वन्दी कुल कीरति विस्तरैं ।
ढाढो भाट जगा जस गावैं❀बहुत दर्बि ब्रजराज लुटावैं ॥२३
बनौं बनीं बनिता दुलरावैं❀पट्टा पै अति ही छबि पावैं ।
रोरी अच्छित तिलक जु कीयौ❀सब कौ निरषि सिरायौ हीयौ२४
भूवा आइ आरतौ कर्यौ❀रतननि थार जसोमति भर्यौ ।
विप्र दान दै पूरन करैं❀आसिक बचन तिननि उच्चरैं२५

दोहा द्वार रोकि ठाढी भईं, सब ही वंश सवासि ।
जो माग्यौ सोई दियौ, पूजी मन की आसि ॥२६॥
लिये ग्रह अरघ बढाइ कै, वधू वारनैं लेति ।
जननी जल पियौ वारि कै, पुनि धनु वारि जु देति ॥२७

॥ चौपाई ॥

बडी माइ गोदी बैठाये❀पुनि काकी ताइनु दुलराये ।
दुलहिनि गोद लई ब्रज रानी❀नाचति संग मिलि द्यौर[1] जिठानी
वारि वारि पट भूषन देहीं❀नाइनि वारनि ढाढ़नि लेहीं ।
खोलि घूँघटी कीरति जाई❀देति भेंट सब मुख दिखराई ॥२८
दियौ रोहिनी मोतिनु हरा❀जसुमति ने दीनौ सतलरा ।
कोउ चौकी दुलरी पहिरावैं❀कोउ धुक धुकी अमोलक लावैं ३०
कोउ देंहिं बैंना कोउ वन्दनी❀कोउ अलकनि कौ जलज जु मनी
कोउ ल्यावैं जु जरयाऊ टीकौ❀कुँवरि भाल पर लगत सु नीकौ॥
कोऊ सीसफूल लै आई❀काहू बैंदी भाल बनाई ।
कोऊ लै दर्पन जु दिखावैं❀दुलहिनि कौ घूँघट खुलवावैं ३२
कोउ लाई सुन्दर नक फुली❀नव दूलहिनि पहिरत छबि फुली ।
कोउ नग जटित चुटीला लाई❀कोउ पन्नानि हमेल सुहाई ॥३३
कोउ आरसी अँगूठी दैहीं❀कोउ लखि भूरि वारनैं लैंहीं ।
छला मूँदरी इतनी आईं❀जसुमति बडे पिटार भराई ॥३४
पटुला[2] मणि कठुला पहिरायौ❀न्यौछावरि करि दर्ब लुटायौ ।
वदन निहारैं कौतिक करैं❀गहरे सुख के सागर तरैं ॥३५॥
किंकिनि दई लला की मामी❀सुमुष[3] गोप सुत वधू जु नामी ।
पाइल भुवा नन्दनी दीनी❀हिये परम आनन्द सु भीनी॥३६

---

[1] —द्योरानी, [2] —लालजी की नानी का नाम, [3] —लालजी के नाना का नाम ।

सानन्दा[1] दई पग गूजरी❀रतन जटित अति ही ऊजरी।
नील मणिनु की पहुँची दै कै❀कोउ मुख ओर रही जु चितैकै३७
कोउ दै सुन्दर मोहन माला❀भीजी प्रेम चतुर ब्रज बाला।
बाजू बन्ध जटित नग लाई❀सो दुलहिन के रूप बिकाई॥३८
सब की दृष्टि दुलहिनी ओरी❀भई वदन विधु की जु चकोरी।
सोभा निरखत सुख अनकूली❀घर कौ जैबौ सब ही भूली॥३९
लगी जात सी ब्रजपति धाम❀कोलाहल जु करैं ब्रज भांम।
एक कहै वह अवनी कैसी❀जहाँ प्रगट भई सुन्दर ऐसी॥४०
गडी जाति छबि हिय दृग माँही❀बचननि हूं कहि आवति नाँही।
दुलहिनि त्रिभुवन सौभग सींवाँ❀सब हीं निरषि डुलावति ग्रींवाँ४१
मुख देखन कों आई जे हैं❀अहा अहा मुख भाखत ते हैं।
कुल की रीति भेंट करवांई❀आरज बधुनि असीस सुनांई ४२
भीतर भवन दहुनि लै गई❀पूजा विधि करवावति भई।
थार परोसि जिमावति मैया❀वदन विलोकति लेति बलैया ४३
नवला अवला खेल षिलावैं❀अदलि बदलि मुख ग्रास दिवावैं।
बिच्च बिंच कौर आपु कर देई❀भागिनि कौ फल मैया लेई॥४४
जब कछु सकुचि दुलहिनी रहै❀मीठी बतियाँ जसुमति कहै।
जेंइ मेरी उर आनन्द भरनीं❀मोसौं सकुच कौंन विधि करनीं४५
भाँन अतिलडि नीकैं रहि री❀मन की बातैं मो सौं कहि री।
यह परिवार जु संपति तेरी❀प्राँननि प्राँन भांवती मेरी॥४६
घूँघट खोलि महरि तन चह्यौ❀महत भाग फल रांनीं लह्यौ।
मो हिय जिय आनन्द उलहिनी❀राजु दुलारी गौर दुलहिनी॥४७
अपनो भाग प्रसंशति पुनि पुनि❀भीजति प्रेम वधू सब सुनिसुनि।

---

[1] १—लाल जा का दूसरी भूवा का नाम।

वचन विचार और[1] यौं बोली❀ऊँची करि विधना तन ओली४८
स्याम लखी कै उन ही जांनीं❀ऐसैं होठनि में बतरांनीं ।
विधना जोरी भली मिलाई❀लाल महा मणि दुलहिनि पाई४९
ब्रजपति महरि सुकृत कौ कहनौ❀दूलह छबि कौ दुलहिनि गहनौं।
मोहन श्रवन बात यह परी❀सैननि वाकी कूट जु करी ॥५०
उनि पुनि ताही रीति जनाई❀जिनि[2] कहवावौ अधिक कन्हाई।
छीके ओरी भुजा उचाई❀लाल निरषि तब दृष्टि दुराई ५१
समझि सकुचि मौंगे ह्वै रहै❀पुनि जु और ही ओरी चहै।
यह चतुराई दूजी परषी❀स्याम प्रसन्न करन हिय हरषी ॥५२
कूट्यौ करति भटू तू कौ हैं❀मोहन ते सुन्दर जग नौं हैं।
बचननि की रचना बहु करैं❀लाल हिये आनन्द अति भरैं ५३
सांवल गौर बनी अस जोरी❀दीठि भार डारति त्रिन तोरी।
जल अचवाइ महरि दई वीरी❀दुलहिनि लई रोहिनी नीरी॥५४
घूँघट खोलि वदन अवलोक्यौ❀उमग्यौ प्रेम वरवस रोक्यौ ।
थैली खोलि मूठि भरवाई❀बोलि सवासिनि कौं जु दिवाई ५५
तीन मूठि दलहिनि भर दई❀लै सवासि आनन्दित भई।
बोलि बोलि नेगिनि पहराई❀नाचति मनु रति रंभा आई ५६
पुर की वधू विदा सब कीनी❀ओलिनु भरि भरि मेवा दीनी ।
बाँटी बहुरि व्याह की छाक❀जा में नाँनाँ विधि के पाक॥५७॥
कोउ कहै राँनी समझि जु देहु❀जैसे तुम हम पै तें लेहु ।
यह सुनि उर अति आनन्द भर्यौ,धनि विधि यह दिन मो घर कर्यौ
नन्द विदा सब किये बरैती❀व्याह लीक दै पुनि जु घरैती[3] ।

१—यह और वधू श्री ग्रन्थ कर्ता का निज उपासक भाव माधुर्य किंकरी लच्च से उपस्थित हैं सो कह रहे हैं, २—श्याम ने उसक इशारे से कूट की परन्तु वह प्रत्यच्च करने लगी कि बहु के सन्मुख अपने गुन मुख से प्रगट न करावौ माधुर्य वृद्धि का स्वरूप ग्रन्थकर्ता अपने भाव से बता रहे हैं, ३—अपने घर के जाती बिरादरी के लोग ।

भूपनि कौं जु अस्व गज दीनैं❀जिनके विविध सिंगार जु कीनैं५९
रथ पालकी वसन निर्मोल❀विप्रनि दिये गऊनि के टोल ।
कुल के मानि सुविधि सनमानें❀जो मन भायौ सो लियौ जानें६०
देस देस के मंगिता आये❀पट भूषन दै ते पहिराये ।
हय गय रथ जु कीये वकसीस❀ते सब निकसे देत असीस ॥६१
मारग मांहि लगत सो भले❀मनो कहूं के भूपति चले ।
ब्याह समय जे मांगन आये❀तिनके नन्द दरिद्र बहाये ॥६२॥
राति जगावन बनिता आईं❀दै दै मांन जु महरि बुलाईं ।
भवन अजिर भरि बैठी नारी❀दुषनैं तिषनैं लगि मणि जारी६३

दोहा–भवन हँसै सब पुर हँसै, हँसै सरवरी आज ।
दूलह दुलहिनि जहँ लसैं, विहँसैं जुवति समाज ॥६४॥
राति न्याइ ह्यां जागि हैं, सुनि सजनी चितलाइ ।
ससि सत वदनी दुलहिनी, जहाँ विराजी आइ ॥६५॥
बाजत मदरा गह गहौ, सब मंगल कौ मूल ।
जाके हीये भरि गई, नन्द सुवन को फूल ॥६६॥
जादिन जनम्यौ नन्द सुत, तब ते यह जु उमाह ।
आजु दई पूरन करी, जसुमति हिय की चाह ॥६७॥
दुलहिनि आयें सुख जितौ, इक मुख कह्यौ न जाइ ।
रसना होंइ अनन्त जौ, तौ कछु कहौं जु गाइ ॥६८॥

॥ चौपाई ॥

ब्रजपति कुल मंडन जु कहायौ❀सो यह दुलहिनि ब्याहि जु लायौ।
मुरलीधर सब ते छबि अगरौ❀जाके रंग रँग्यौ ब्रज सगरौ ६९
श्री राधा दुलहिनि जिन पाई❀दूलह भाग बलौ री माई ।
बनि बनि चले गोप सुत नाइक,वरु पायौ दुलहिनि अतिलाइक७०

बलि को अनुज पीत पट धरना❀राधा बरनी को यह बरना।
नन्द भवन कौ भूषन जो है❀बरनी मौंन बढावन सो है ॥७१
ससि तें वदन सतगुनौं दरस्यौ❀सुधा समूह मान पुर वरस्यौ।
राधा पानि ग्रहन जब कीयौ❀गोपी गोप दृगनि सुख दीयौ ७२
घन लौं धन जु तात वरषायौ❀खेत जीति मेरौ बरना आयौ।
सोम वंश कौ यह जस दैनौ❀राधा संग भाँवरे लैंनौ ॥७३॥
कोविद यह ब्रजराज दुलारौ❀दुलहिनि धन कौं जाकैं गारौ[1]।
बन्यौं रहै दिन दूलहु ए री❀जाकै है छवि ऐंड घनेरी ॥७४
यह दिन दुलहिनि सोभा हद है❀तिन कीनी सब उपमा रद है।
बनाँ चतुर बरनी गुन पूरी❀विधना सम जु मिलाई जूरी[3]॥७५
ब्रज में सुख विस्तारन हारौ❀सो दुलहिनि कौ दूलह प्यारौ।
जसुमति लाड पल्यौ जो छिन२❀दुलहिनि रुष लैं चलै सु दिन२॥
परम रसिक दूलहु जु कहावै❀अधिक मान दूलहिनि ते पावै।
दूलहिनि बनी रूप फुलवारी❀बना भँवर[4] गुंजतु रहै भारी ७७
भाग बली नैंननि भरि देखौ❀ब्रजपति सुकृत सिन्धु सम लेखौ।
लाल बहुरिया सब गुन भरी❀मनु सोभा के सांचे ढरी ॥७८॥
यह जस कीरति रांनी लीयौ❀दूलह कौ घर वास जु दीयौ।
बनाँ हमारो ऐसौ सोहन❀पायौ नाम मदन कौ मोहन ७९
अरी बनी बनितनि ठकुराइनि❀बनाँ पलोटै जाके पाइनि।
बनी धाइ तू करि जिनि हांसी❀हमरौ बरनाँ सोभा रासी ॥८०॥
इत उत कौ रंग वरषौ सजनी❀कहा[5] वासर कहाँ कारी रजनी।
यह सुनि हँसी सबहि पुर नारी❀अरी चतुर बरसानैं वारी ॥८१॥
परम सुसील बनाँ जु हमारौ❀मुरली मधुर बजावन वारौ।

१—गर्व, गुमांन या तकवा, २—नित्य दुलहिनि, ३—जोरी, ४—भौंरा, ५—श्रीजी गोरी दिन श्याम काला रजनी।

को है लोक गुनीलौ ऐसौ❀गोपालक ब्रजपति सुत जैसौ ८२
सुर नर नाग लोक में जेती❀बनी चरन नख वारौं तेती ।
किये बहु जतन महरि ने माई❀सुत दूलहिनि तब ऐसी पाई ८३
स्याम सुघर गिरिराज पुजारी❀वरु लहि ब्याही भाँन दुलारी ।
हाँ जू हाँ जानी हम जानी❀तुम नीकैं वरनति जु कहानीं॥८४
लोक ऊजरी है श्री राधा❀जिन जसुमति की पुजई साधा ।
बना सुलच्छन लोकनि मांहीं❀उपमां जाकी छुवत न [1]छांहीं ८५
बनीं वधूनि में राजति ऐसैं❀तारा मंडल में ससि जैसैं ।
छवि परषन जु लाल अनुरागी❀जा उर रहति चटपटी लागी ८६
इतहि[2] धाई उत पुर की भांमां❀रजनी कौतिक किये अभिरामा ।
वर वरनी की करी प्रसंश❀दोउ सुख दाइक श्री हरिवंश ८७
घटि गई रजनी भयौ जु भोर❀जहाँ तहाँ खगनि[3] मचायौ सोर ।
वधू विदा ह्वै घर कौं चली❀मेवनि गोद भराई भली ॥८८॥

दोहा—राति सुहाग जगाइ कै, कहति सुहागिनि एह ।
ऐसौ मंगल नित रहौ, ब्रजपति जू के ग्रेह ॥८९॥
अविचल दूलह दुलहिनि, बाढ्यौ विपुल सुहाग ।
श्री हरिवंश प्रसंश हित, बढ्यौ जुगल अनुराग ॥९०॥
राज तेज नित नित बढौ, रावलि पति जु ब्रजेस ।
दहूँ घर के आनन्द सौं, सुखित भयौ सब देस ॥९१॥
दूलह दुलहिनि गाइ जस, भई धन्य ब्रज भौंम ।
वृन्दाबन हित रूप कौ, लाभ पाइ चली धौंम ॥९२॥
दुलहिनि महरि जगाइ कै, लै बैठी अपु अंक !

---

[1] —छाया को भी स्पर्श नहीं कर सकती है, [2] —श्री जी की धाई तथा नन्दपुर की नारी रात्री जाग्रण कर उत्तर प्रत्युतर में गीत गाती रही जो पीछे की चौपाइयों में सरस ग्रन्थ कर्ता ने बखान किये हैं, [3] —पक्षियों ने ।

दाँतनि सुविधि करावहीं, जगमगै वदन मयंक ॥६३॥
बडभागिनि नन्द घरनि कौं, कहा वरनौं हिय हेज।
निरषति दुलहिनि वदन तन, ससि समूह सम तेज ॥६४॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्रीदूलह दुलहिनि नन्दग्रह प्रवेस पुनि सुहाग राति जगावन वरनन चौवनवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

मूल ग्रंथ के महत प्रभाव से प्रतिलिपि कर्त्ता को स्फुरित प्रसादी पद

नोट—धनि धनि भाग नन्द वृषभान।
इत रस निधि उत रासि मधुरता प्रगट भये जहां आन ॥ १ ॥
इत यसुमति उत कीरति रांनी कीनै पुण्य महान।
इत बहु कल कौतुक गोदी में उत नित लाड प्रधान ॥ २ ॥
इत माखन पै दृष्टि सदा रहै उत गाढौ दधि खान।
इत नित टेव सखनि सौं अरबी उत सखियनि को मान ॥ ३ ॥
इत हठ ब्याह हेत मैया सौं उत सुनि सकुचि सुजान।
नित दूलह दिन दुलहिनि रसिकनि के हित भजन विधान ॥ ४ ॥
इत उत लौकिक वत लीला सव जाको तोल न मान।
अखिल जीव सव वरत रहै मो भाव सतत सुख खान ॥ ५ ॥
युग युग युगल यही यश यामिनि याम कहौं सुनुँ कान।
केवल कृपा कोर निज हित रसिकन हरिवंश प्रमान ॥ ६ ॥ धर्मचन्द

॥ अथ पचपनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—मंगल समयौ सुनि सखी, पुनि मंगल इहि धाँम।
सव मंगल कौ मूल जहाँ, राजत स्यांमा स्याम ॥१॥
मिस[1] करि रहे जु ढांपि मुख, लाल रसिक[2] गौंगीर।
चौकी बैठी दुलहिनि, निरखि लुनत सुख सीर ॥२॥
बडडे लोचन छबि भरे, मुदित उनींदी कोर।
छिपि निरखत हैं स्याम घन नव दुलहिनि की ओर ॥३॥
लाल वदन अति जगमगै, झीने पट के मांहि।

---

[1]—श्याम जग तो गये परन्तु मचले वने मुख ढक कर परे रहे और प्रिया की छवि दांतन आदि करते देख रहे हैं, [2]—लालची अधीर।

नैंननि भरि भरि देखियै, उपमा कौ कछु नांहि ॥४॥
करहु कलेऊ लाल उठि, माइ जगाये जाइ।
परम रसिक मुरली धरन, बात कहत तुतराइ ॥५॥

॥ चौपाई ॥

लै भारी दाँतनि करवाई❀माखन मिश्री पुनि लै आई।
जैं कै लाल खरिक में गये❀नीकैं गाइ दुहावत भये ॥६॥
ब्रज रांनी नित कृत्य जु कीयौ❀पुनि घर घर जु बुलावौ दीयौ।
कंकन छोरन कौ जु विचार❀दुलहिनि कौ कीजतु सिंगार ॥७
अतलस अतरौटा छबि भारी❀सूही सारी कनक किनारी।
सुरँग दरयाई कंचुकी बनी❀तासौं लागी सुन्दर तनी ॥८॥
लै ककही जु सँवारे केश❀मोतिनु सौं भरि मांग सुदेस।
कबरी गूथी मल्ली फूल❀चोटी रतन भरी मखतूल ॥९॥
वैंना[1] जलज रतन बंदनी❀सीस फूल चन्द्रका जु बनी।
मणि ताटंक तेज अति नीकौ❀मृग[2]मद तिलक जराऊ टीकौ१०
सुन्दर माँग रची विधि भली❀मन हुँ धार अनुराग[3] जु चली।
केशर मंडित सुन्दर भाल❀मकर पत्रिका बनी विशाल॥११
लोचन ललित विराजत अंजन❀इहि छबि वारौं कोटिक खंजन।
नथ बेसरि सुठि नासा सोहै❀चिबुक स्याम बिन्दु उपमा को है१२
गोल कपोल स्याम तिल लौंना❀कनक कमल बस्यौ मनु अलि छौंना
इहि विधि राजति त्रिवली ग्रींवा❀मनहु रची सोभा की सींवा ॥१३
दुलरी तिलरी अरु सतलरा❀रतन धुकधुकी मोतिन हरा।
मणि चौकी पन्नानि हमेल❀करै[4] शुक कनक सैल मनु खेल१४

१—बिन्दला, जो भूषन मांग के सिंगार में केसों से माथे पर लटकता है, २—कस्तूरी का तिलक तथा जडतू माथे का गोल टीका, ३—अनुराग का लाल रंग प्रेम शास्त्र में माना गया है,४-उपमा में चौकी भूषन शुक है और पन्नों की हमेल मानो सोनेका सैल है

चम्पकली पुनि हीरावली❀सुन्दर उर पर सोभित भली ।
पुनि सुहागमणि राजति पोति❀बाजू बन्ध जटित नग जोति १५
नील मणिनु की चुरी बिराजै❀पहुँची कंकन कर वर राजै ।
महिदी रचे जु सुन्दर हाथ❀मणि मूँदरी जगमगै साथ ॥१६
रतननि जटित आरसी बनी❀नष सिष पंकति जोति जु घनी ।
नाभि अमृत की सरसी मानौं❀त्रिवली उदर गहर छवि जानौं१७
कटि पर वारौं कोटिक केहरि❀बनो किंकनी को तिहि सरवरि[1]।
रतन जटित झबिया सम को री❀सुन्दर पाट गुहाई डोरी ॥१८॥
पाइल पर सुन्दर गूजरी❀जटित अमोल नगनि ऊजरी ।
रच्यौ महावर नाइनि चाइनु[2]❀चित्र विचित्र विराजत पाइनु॥१९
नख सिख यौं दुलहिनि जु सिंगारी❀मनु फूली सोभा फुलवारी ।
तरवनि[3] लसति ललाई महा❀ता सम उपमा देऊँ सु कहा २०
पुनि सिंगारी सजनी सबै❀छवि जु अलौकिक दरसी तबै ।
नव दुलहिनि राजति तिन माँझ❀फूली मनहुँ अलौकिक सांझ२१

दोहा–मिस करि जसुमति रोहिनी, सनमुख आई धाइ ।
यह बानिक अवलोकि कै, आनन्द उर न समाइ ॥२३॥
डाठि लगौ जिनि हे दई, कहत जु गोद उचाइ ।
को विधना जिन यह रची, बेटी रावलि राइ ॥२३॥
सुहथ जिमांवति दुलहिनि, भींजी हिये सनेह ।
मेवा पाक मँगावहि, जे सचि राषै ग्रेह ॥२४॥
जैंवती कीरति नन्दनो, सासु देति मुख ग्रास ।
घूँघट ते खोल्यौ वदन, ह्वै रह्यौ भवन प्रकास ॥२५॥

---

[1] बराबर या समान, [2] बहुत चाव से या ध्यान पूर्वक कौशल से, [3] तलवों में सहज लाली ।

नख सिख मूरति मोहनी, कुल मणि श्री वृषभांन।
लाज भींजी बातैं कहति, सुनति महरि दै कांन ॥२६॥
भोजन करति सखी सबै, लसति दुलहिनि कोद।
जननी मुरली धरन की, लखि मन मांनति मोद ॥२७॥
कौर कौर मनुहारी अति, करति घरनि ब्रजराज।
सुख सोभा की मित नहीं, बनि अस बानिक आज॥२८
त्रिपित भई आचवन लैं, आनन रचे तँबोल।
गावति आई ढाढिनी, सुविधि बजावति ढोल ॥२९॥
छोरन दुहुँ कर डोरना, जुरी सकल ब्रजबाल।
नख सिख कियौ सिंगार रचि, मोहन मदन गुपाल॥३०

॥ चौपाई ॥

एकत भई नौ नन्दनि घरनी❀दुलरावन वरना पुनि वरनी।
नवल दुलहिनि अति अभिराम❀सोभित कियौ महरि कौ धाम ३१
हरषि हरषि सब ही लैइ अंक❀अवलोकत हैं वदन मयंक।
रीझि रीझि करजनि चटकावैं❀कीरति की कुल कीरति गावैं ३२
राधा जननी कूषि जु कमनी❀जहाँ प्रगट भई यह सुख अवनी।
पुनि पुनि वारैं राई लौंन❀जिन यह रची चतुर विधि कौन ३३
बधू नगर की देखन आवैं❀करैं लाड घूँघट खुलवावैं।
रंचक जबहि वदन तन चहैं❀चकित थकित सी सब ह्वै रहैं॥३४
मन्दिर आइ जुरी ब्रजबाला❀जसुमति तबहि बुलाये लाला।
पूजा करी वेद कुल रीति❀जननी हिये घनेरी प्रीति ॥३५॥
वरु वरुनी जु चौक बैठाये❀बनितनि बहु विधि खेल कराये।
आगें रतन कुंडी लै धरी❀डारि मूँदरी जल सौं भरी ॥३६
हँसी हँसी कहति सबै ब्रजबाला❀कंकन खोलौ मोहन लाला।

वरनी कर पसार जब दयौ❀अम्बुज मानौ प्रफुलित भयौ ३७
महँदी रची सखी हिय लाग❀उदय भयौ मानौ अनुराग ।
कर दरसत हिय दहलन लगे❀घूँघट दृग मनु रजनी जगे।।३८
कांनि[1]लागि तब ललिता कह्यौ❀लाल जात क्यों धीरज बह्यौ ।
दरसत ही भई मन गति ऐसी❀परसत बनि है बानिक कैसी ३९
सखी वचन चेटक मनु लाग्यौ❀सोवत सौं जु लाल तब जाग्यौ।
मन धीरज धरि कर गहि लीयौ❀कंकन खोलन जतन जु कीयौ ४०
कबहूं होत कम्प से गात❀कबहूं कहत तोतली बात ।
गाल बजावत हे अति लला❀आजु भूलि गये सबहि कला ४१
ह्वै रहे बली आपु मन मांहीं❀छूटति डोरनां गांठि जु नांहीं ।
जावल करि तुम छीके तोरे❀ऊषल धरि कै भाँडे फोरे ।।४२।।
सद माखन जु स्वाद सौं खायौ❀सो बल मोहन कहाँ गमायौ ।
सोचत[2] कहा ब्रजरांनी बोलौ❀जुगति बतावै तिहि विधि खोलौ।।
बडी माइ रोहिनी तिहारी❀नीकी सीख सिखावन हारी ।
चरननि लगि उनिकौं जु निहोरौ❀तिनसौं मिलिकै कंकन छोरौ ४४
सानन्दा सुनन्दनी नाँमा❀भुवा तुम्हारी अति अभिरामा ।
श्रवनि लागि वे सिखवैं जैसैं❀खोलौ लाल डोरना तैसैं ।।४५।।
पटुला नाँनी हूं संग लीजे❀कंकन खोलन की विधि कीजे ।
परम विचच्छन मामी लला❀वे सिखवैं खोलन की कला।।४६
काकी ताई सबनि बुलावौ❀तुम हारे उनि हाथ खुलावौ ।
सुबल सुबाहु बोलि बैठारौ❀मना मनसुखा कौं जु पुकारौ ४७
अर्जुन भोज सखा तुम प्यारे❀रैंता पैंता मित्र तिहारे ।
उच्च टेर दै तोषहि बोलौ❀वे सिखवैं तैसैं ही खोलौ ।।४८।।

१—ललिता ने नित्य संयोग की याद कराई, २—ताना दे रही हैं कि मैया को बुला लो सहायता करें ।

जु तुम हारे कुँवर कन्हैया❀तौ टेरौ बलिदाऊ भैया ।
आवौ बूझि नन्द कौ अबहूं❀उननि गांठि षोलि ही कबहूं ४९
काका ताऊ सिषवैं जुरि कै❀त्यौं षोलौ रहि गांठि जु घुरिकै ।
गरग पुरोहित कौ बुलवावौ❀तिन पै पत्रा स्यांम षुलावौ ॥५०
दैहिं महूरत तुम कौं जैसे❀गांठि डोरना षोलौ तैसे ।
कदम्ब न हौंहि तहाँ चढि जैहौ❀ग्वालन को जहां खेल खिलैहौ५१
यह रस रीति सबनि ते न्यारी❀सिखई न धाइ खिलावन हारी ।
इहि पुर बसति विचक्षन नारी❀ते सब करिहैं ओर तिहारी॥५२
उक्ति जुक्ति उन की सुनि लीजै❀कंकन खोलि माइ जस दीजै ।
अस कौतूहल बनिता करैं❀सुख आनन्द उलैंडै परैं ॥५३॥
लाल बात सबकी मन धरी❀गांठि डोरना दृष्टि जु करी ।
छिनक मांहि वह खोलि जु लई❀मानो जीत फूल मन भई ॥५४॥
हँसि हँसि कहत विचक्षन भाँम❀अब खोलौ अनुजा श्रीदांम ।
कहति धाई मेरी राँनी जाई❀बहुत दिननि तें मैं जु सिखाई५५
गांठि डोरना की तकि लीजै❀षोलत रंचक गहरु न कीजै ।
सकुच सहित पिय कौ कर गह्यौ❀आडौ घूँघट करि कछु चह्यौ५६
गांठि डोरना की जब छोरैं❀चतुर बनाँ तब कर झकझोरैं ।
कहति सखी तब ऐसैं बैंना❀लाल चातुरी कियै बनैं ना ॥५७
यह वृषभान भूप अतिलडि❀तुम तें या में विद्या बडी ।
जब जब कंकन छोवैं पान❀बनां रचैं तब अधिक सयान ५८
देषि होति पुर वधू जू मँगना❀अति सैं भीर महरि कैं अँगना ।
घूँघट षोलि कंकना षोलैं❀यहै बात सब के मन डोलैं ५९
घूँघट की जु आड नहिं छूटै❀विनु दरसै क्यौं कंकन खूटै ।
ललिता जुक्ति बताई जु दई❀कुँवरि सचेत अधिक तब भई ६०

मुष तें तनिक घूँघटी मोरी❀कंकन ग्रंथि छिनक में छोरी।
गांठि डोरना इत उत छुटी❀नेह ग्रंथि हिय गाढी[1] घुटी॥६१॥
जीती मेरी रांनी जाई❀कंकन खोलति हिये सिहाई।
बहुरि कुंडि कौ खेल जु करैं❀मुँदरी लै जल भीतर धरैं॥६२
दोऊ हाथ एक संग डारैं❀लेइ मुँदरी सो जीति विचारैं।
कबहूं ये कबहूं वे लैंहिं❀जुवतिनु कैं मन आनन्द दैंहिं ६३
विविध भांति कौतिक जु करावैं❀फूलीं बनिता मंगल गावैं।
पाक अनेक थार भरि लावैं❀दूलहा दुलहिनि कौं जु जिमावैं॥
वरनी लैंहिं ग्रास मुख एक❀तब लगि वरना लेहि अनेक।
कोउ उतकी कोउ इत की भई❀गावति गीत वहस परि गई ६५
रहि[2] रहि जैंवै कुँवरि हमारी❀करै उतावल दिहु तिहि गारी।
बडे ग्रास कीरति जू लैंनी❀या ते कुँवरि जनी मृग नैंनी ६६
जसुमति जायौ ऐसौ लला❀भरतु बडे मेवनि के गला।
यह मेरी सूधी राज दुलारी❀जसुमति जायौ धूत महा री ६७
दुहुँनि जिमावैं पुनि दुलरावैं❀दूधा भाती सुविधि करावैं।
कनक तनी दुति मर्कत मनि❀जोरी ब्रज जन भागिनु बनी ६८
त्रिपित मानि जल अचवन कीयौ❀रचि वीरा दोऊनि मुख दीयौ।
कियौ वारनैं वहु धन रांनी❀दुहुँनि पै जु वारि पियौ पानी॥
वधू विदा सब घर कौं कीनी❀ओलिनु भरि भरि मेवा दीनीं।
गौर स्याम दोऊ जुग गुग जीयौ❀भांति भांति आनन्द जु दीयौ॥
काकी ताई न्यौति बुलावैं❀दूलह दलहिनि जैंवन आवैं।
स्यौं[3] परिवार जु भोजन करैं❀नित नव मंगल पुर विस्तरैं॥७१
घर घर ह्वै रहै अति कौतूह❀गोपी गोप जुरे जु समूह।

१—उरझ गई, २—आराम से, ३—परिवार समेत या साथ मिल कर।

जैंवन देषन सब कोउ आवै❁यह कौतिक ब्रज जन मन भावै७२
रचैं अस मंगल पुर के माहीं❁देखन कौ सुर हूं पछिताहीं ।
देषौ कौतिक ब्रज में गरुवौ❁स्वर्ग हमारौ लागतु हरुवौ ॥७३
हम मन यह सन्देह जु परचौ❁कौन सुकृत इनि गोपनि करचौ ।
ब्रज आनन्द अलौकिक वृष्टि❁सुनी न देषी अस विधि शृष्टि७४
नन्द सुवन जनम्यो है जब तें❁घोष बढ्यौ अति आनन्द तब तें।
यौं सुर सभा विचार जु करैं❁किहि विधि ब्रजमें हम तन धरैं७५
विधि जु बनावै बानिक ऐसौ❁हम चाहत हैं मन में जैसौ ।
ब्रज लीला विधि हूं कौ दर्ल्लभ❁गोपनि कौ गुपाल करि सुर्ल्लभ७६
जो सुख गोपनि मिलि हरि पायौ❁अति प्यारौ सब ते जु दुरायौ ।
कमला पुर गोलोक जु नांही❁ब्रज कौ सुख ब्रज ही के मांही७७
दुलहिनि सौं गठि जोरौ करैं❁दूलह मन अति आनन्द भरैं ।
माइ लडावै नव नव रीति❁कौंन लोक कहौं ऐसी प्रीति॥७८॥
ब्रज जन रीति प्रीति अनियास❁समझत रसिक अनन्य जु दास ।
यह वरनी सेवकनि जु मरमी❁श्रीहरिवंश चरन रति धरमो॥७९
कहा वरनौं गरुवौ उत्साह❁यसुमति लाड लडावन चाह ।
नारायन मन्दिर लै गई❁पूजा सुविधि करावत भई ॥८०
वर वरनी जु भराई गोद❁मैया भरी परम मन मोद ।
देवी पूजी बट संकेत❁अधिक जनायौ हिय कौ हेत८१
पय भाजन भरि बटहि न्हवायौ❁प्रेम सहित मंगल जु गवायौ ।
मेरी इच्छा पूरन भई❁यौं कहि कै विह्वल ह्वै गई ॥८२
पुनि पूज्यौ जु नूत तरु मूल❁जननी उर अनहोती फूल ।
जहां[१] बद्यौ बोल्यौ हो जैसै❁पूजन तहां करायौ तैसैं ॥८३॥

---

[१] —जां जो मन्नतें मानी हुई थीं मैया ने वह सब पूरी करीं ।

सनमुख ह्वै कै गिरिहि मनायौ❀वर बरनी कर भोग धरायौ।
गठि जोरौ कियौ मारग आवैं❀बनिता नाना खेल खिलावैं॥८४
विविध भांति के बाजे बाजैं❀अगनित बनिता वृन्द विराजैं।
पावन सर जु तीर लै गई❀छरी दुहुँनि कैं कर वर दई॥८५
बरनी कौं जु सिखावैं बाला❀सुनि सुनि हँसत नन्द कौ लाला।
ज्यौं ज्यौं छरी स्याम तन परसै❀त्यौं त्यौं आनन्द हिय अति सरसै॥
अति छबि देत फूल कर छरी❀हिय तें मनो फूल कढि परी।
बनितनि मधि भाँवरि सी भरैं❀मानौ छरी लगन ते डरैं॥८७॥
अरी सम्हारि मेरी राँनी जाई❀अहुटि सकुचि न छरी चलाई।
ठुमकि चरन धरि आगैं गई❀मनु छबि बेलि पवँन सौं नई ८८
बना तकतु गौं अपनी डोलै❀घूँघटरौ नहिं बरनी खोलै।
कुशम छरी दोउनि कर चलै❀तरुनी कहैं लगावौ भलै॥८९॥
सब कौं बरजत है ब्रजरांनी❀ऐसी बात न कहौ सयांनी।
आजु न प्रभुता चलै तुम्हारी❀छरी खिलावन बार हमारी॥९०
हँसत रोहिनी जसुमति दोऊ❀बात न मानत बनिता कोऊ।
मिहीं घूँघटी मोरति जब हीं❀दूलहु विवस होतु लषि तबहीं९१
छरी खिलाइ बहुरि घर आईं❀सुख संपदा हिये भरि लाईं।
राई लौंन उतारि सिहाँनी❀जसुमति वारि वारि पियौ पाँनी ९२
चौकी बैठे दोऊ लसैं❀देखि देखि सब तरुनी हँसैं।
लाल सकुचि कै दृष्टि दुरावैं❀त्यौं त्यौं बनिता अधिक चिरावैं॥
घर कौं गईं विदा ह्वै बनिता❀दुहुँनि जिमावति मोहन जनिता।
इत उत ग्रास देति मुद भरी❀महा भाग अतिलाड जु ढरी॥९४
कौर कौर प्रति महरि निहोरैं❀सकुचि दुलहिनि घूँघट मोरैं।
बैठी आइ रोहिनी नीरैं❀सकुचि निवारति धीरैं धीरैं॥९५

तू सुमुषी रॉनी की जाई❀जेंवत में काहे सकुचाई।
अपनें हाथ जिमांऊँ तो कौं❀जो चहियै सो कहि दै मोकौं९६
यौं मन लै दोउ सासु जिमावैं❀त्रिपिति जानि अचवन करवावैं।
महरि दई नेगिनु बकसीस❀सब ही निकसे देत असीस॥९७॥
दोहा–विदा मांगि घर कौ गई, यद्यपि सब पुर भाम।
चित उरझे ह्याँ ही रहे, विसरे ग्रह के काम ॥९८॥
मिस करि फिरि फिरि आवहीं, दैंई उराहनैं एह।
रॉनी काहे न वाइनौं, दियौ हमारे ग्रेह[1] ॥९९॥
महा विचच्छन नागरीं, निरखत सॉंवल गौर।
सकुचावति हैं महरि कौं, मन आसा कछु और ॥१००॥
छिन छिन लागत दुहुँनि के, आँनन औरैं रीति।
तिन सौं बढै न कौंन की, सजनी गरुवी[2] प्रीति॥१०१॥
जब निकसे पुर गलिनु में, गठि जोरौ करि लाल।
अवनी भाग सदेह ह्वै, दरस पर्यौ तिहि काल ॥१०२॥
ग्रह प्रवेस कियौ दुलहिनी, ठुमकि धरे जब पाइ।
मनौ बिछौंना अवनि पर, दिये अनुराग बिछाइ ॥१०३
मुख दिखराई जिन दई, दुलहिनि वदन विलोकि।
रूप बली नैं सबनि कीं, लई चित वृति तब रोकि १०४
जब खोल्यौ कर डोरना, दरस्यौ अतुलित[3] रूप।
कर कंपत भये लाल तब, कहा कहौं कथा अनूप॥१०५॥
देव पुजावन लै गई, जहाँ जहाँ जसुमति माइ।
तहाँ तहाँ छबि बढी और विधि, वरु जु अलौकिक माइ॥
ताई तुंगो पिंगरी, कुविला अतुला नाँम।

---

[1]—झूँठ मूँठ उराहना बना लेती है कि विवाह की नियत वस्तु हमारे घर क्यों नहीं भेजी मन में लोभ दरशनों का है, [2]—प्रगाढ या हार्दिक, [3]—अपार सुन्दर।

न्यौति जिमावन लै गई, छबि बरषी तिन धाँम ॥१०७
छरी खिलावन लै गई, पावन सर जब तीर ।
सोभा दरसी कोटि विधि, सांवल गौर सरीर ॥१०८॥
बनी बदन पर घूँघटी, हली कनक पट कोर ।
मनु ससि प्रथम प्रकास लखि, पिय दृग नचे चकोर १०९
सुन्दर फूलनि की छरी, जब लई दोऊनि पाँन ।
देखत दहल्यौ दूर ते, तजे रति नाइक बाँन ॥११०॥
लाइ महरि दिखाइ कैं, जितै सरोवर कुंड ।
गावत दुलरावति जु संग, ब्रज बनितनि के झुंड १११
आवौ री देखौ भटू, सुन्दरता हद एह ।
छरी खेलि आये जु अब, दूलह दुलहिनि ग्रेह ॥११२॥
नहिं अस दूलह दुलहिनि, इहि विधना की शृष्टि ।
वृन्दाबन हित रूप की, ब्रज पति घर नित वृष्टि॥ ११३

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्र दूलह दुलहिनि कंकन छोरन तथा छरी खेल बरनन पचपनवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ छप्पनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा-लाड लडावति महरि नित, बधू अलौकिक पाइ ।
बाढतु आनन्द नित नयौ, काके हिये समाइ ॥१॥
हिता सुता कौं रोहिनी, करौं कौंन विधि लाड ।
कनक तनी सकुचति अधिक, तजति न घूँघट आड ॥२
कीरति उर कौ रस रतन, दई दिखायौ मोहि ।
जतन किये मैं कोटि विधि, यह जानत सब कोइ ॥३॥
भाग खुले मो भवन के, बैठति घूँघट मोरि ।
चिरंजीव रहौ वर वधू, प्रभु वन्दति कर जोरि ॥४॥

गौरंगी कल भाषनी, सीतल करनी हीय ।
लेहु महरि परचाइ मन, बडे सजन की धीय ॥५॥
बलि जननी ऐसे कहति, वधू सीस कर राख ।
श्री दाँमा अनुजा कछु, बचन अमी मुख भाखि ॥६॥
हँसि चितई मृग लोचनी, समझि रोहिनी प्रीति ।
घूँघट ते मुख यों कढ्यौ, लई कला ससि जीति ॥७॥
दई रोहिनी आरसी, जसुमति नौसर हार ।
खिरकी ह्वै दुरि देखि कै, दहले नन्द कुँवार ॥८॥

॥ चौपाई ॥

जसुमति लाड बधू कौं करैं❁विविध खिलौंना आगें धरैं ।
मन मिलाइ कै बूझैं बात❁कछु कछु बचन कहैं सकुचात ॥९
कब पठवौगी मुहि घर माइ❁यह सुनि कै रॉनी हँसि जाइ ।
बेगि पठै हौं अतिलडि तोहि❁कोउ दिन रहि सुख दीजै मोहि॥
सत्य बचन सुनि दुलहिनि मेरौ❁यह धन धाँम सबै है तेरौ ।
उत घर माइ सासु घर इतही❁तेरौ लाड विना मित नित ही११
नये नये गहने महरि गढावै❁नाना विधि के पाट पुहावै ।
भरि भरि डबा धरति है आगैं❁मीठी बतियाँ बूझन लागैं ॥१२
जब बतराति सास सौं नवला❁भोरी बात हँसैं सुनि अबला ।
ललितादिक बैठैं सब पास❁महरि हिये लषि बढै हुलास १३
बूझति बहुरि लली की धाइ❁सुनियौ मुरलीधर की माइ ।
तुम सूधी सूधौ ब्रजरांनौं❁ये बातैं हौं नीकी जानौं ॥१४॥
ढोटा चंचल औरैं रंग❁औरैं लच्छन दरसैं अंग ।
अजू[1] भान की तुम उपघरनी❁भली कहांनीं मन दै बरनीं ॥१५

---

[1] —श्रीयशोदाजी ने भी धाई को ताना विनोदमें उत्तर दिया है कि कीर्ति की सौकर ।

ब्रजराँनी के मुख की बांनी❀समझि समझि बनिता मुसकानी ।
ऐसे बचन परस्पर कहैं❀कुँवरि लाड सुख भीजी रहैं १६
ललितैं बूझति अतिलडि भलैं❀कहि बरसांनैं किहि दिन चलैं ।
समझि बात तब ललिता कही❀राधा क्यौं उदास है रही ।।१७
हाँडी डला पठै है मैया❀आवैगौ श्री दामा भैया ।
जब ही नाम माइ कौ लीयौ❀अतिलडि कौ भरि आयौ हीयौ१८
ललिता लीनी कण्ठ लगाई❀टेरन लगी कहाँ मेरी माई ।
सुनि कै दौरा आई धाइ❀श्री राधा लई उर लपटाइ ।।१९
पुचकारैं मुख पै कर फेरैं❀माइ माइ कहि कुँवरि जु टेरैं ।
प्रेम विवस भई भान दुलारी❀समझावत जु धाइ हूं हारी ।।२०।।
सुनति कुँवरि की कोमल बांनी❀धाई आई ब्रजपति रांनी ।
खकि आपने भुज भरि लई❀करुनाँ वस जु आपु हू भई ।।२१
अतिलडि अब जिनि होइ अधीर❀बेगि आइ है तेरौ बीर ।
जब ही नाँम बीर कौ लयौ❀प्रेम सिन्धु अति ही बढि गयौ २२
आइ रोहिनी ने समझाई❀एक बात हौं अब सुनि आई ।
भैया बेगि आइ है तेरौ❀होहु प्रसन्न बचन सुनि मेरौ ।।२३
कछु धीरज सौं मन में धर्‍यौ❀बेगि चलैं यौं जान्यौं पर्‍यौ ।
परम चतुर हलधर की माई❀सनय सनय लीनो परचाई ।।२४।।
जोगी बोल्यौ पौंरी आइ❀भिच्छा दैं री जसुमति माइ ।
सींगी नाद मोहनी कर्‍यौ❀सुनि सब हिय अहिलाद जु भर्‍यौ
मेरौ नाथ अनुग्रह करै❀संपति बहुत राज घर भरै ।
जिहि कर सुत गर गंडा बँधायौ❀सो जोगी तुहि जाचन आयौ२६
मेरौ बचन फल्यौ यह तोहि❀सादर भिच्छा दीजै मोहि ।
जसुमति ने पहिचान्यौ नाथ❀बहु आदर दै जोरे हाथ ।।२७।।

मोपैं बहुत अनुग्रह कीयौ❀रावल आजु दरस तुम दीयौ।
हौं बैठ्यौ जु विकट गिरि जहाँ❀अग्या भई नाथ की तहाँ ॥२८॥
मेरे श्रवन परी यह बाँनी❀सुत कौ ब्याह कियौ ब्रजराँनी।
तोसौं करि गयौ बचन जु माई❀ब्याह समैं दै हौं जु दिखाई ॥२९
वर वरनी कौं आगें लावौ❀उनि कर मुहि भिच्छा जु दिवावौ।
जोगी[1] पास घनैं होंइ टौंनैं❀मोहि लेहि जिनि मेरे छौंनैं ॥३०
सुन्दरता लखि रीझ्यौ नाथ❀लै जै है लगाइ यह साथ।
अस विचार मन ही मन करै❀इहि जु बात जिय राँनी डरै ३१
कनक थार भिच्छा भरि लाई❀लिहु रावल यह व्याह बधाई।
रांनी जिहि गिरि मेरौ बास❀अस मणि परी रहैं मो पास ३२
सो दै कै मो कौं वहरावै❀वरु वरनी ह्यां लगि नहिं लावै।
वे बालक जिय माहि डराहीं❀तुम से जोगी देखै नांही ॥३३॥
यह अरबी मन में नहिं धरियै❀मो पै नाथ कृपा ही करियै।
प्रथम जंत्र मैं ऐसौ कर्‌यौ❀तेरौ सुत कबहूं नहिं डर्‌यौ ॥३४
राज कुँवरि जो ब्याही आई❀ताहू कौं जन्त्र कियौ मैं माई।
मेरौ बचन फल्यौ दुहुँ ओरी❀नाथ कृपा तें यह बनी जोरी ३५
मैं दोऊ घर उदौ मनायौ❀वारी फली सु देखन आयौ।
मो सौ अन्तर कैसौ रांनी❀करति चातुरी मैं यह जानी ॥३६
जोगी की जु सफल करि फेरी❀माई मानि लेहु सिख मेरी।
हौं असीस अब ऐसी दै हौं❀अजर अमर दोउनि करि जैहौं ३७
अटल राज या ब्रज को करि हैं❀तेरौ जस अवनी विस्तरि हैं।
यह सुनि कै हिय हरषित भई❀डीठि डरन संका मिटि गई ॥३८
भुज गहि कै वर वरनी लाई❀मन वांछित निधि रावल पाई।

---

[1] —मैया मन में उत्तर दे रही है और इनकार करने से सकुचाती भी है।

अब इनि कर खप्पर भरवावौ❀आदि नाथ की धुजा चढावौ ३९
मेवा अरु पकवान मंगायौ❀दुहुँनि हाथ खप्पर भरवायौ ।
पाटंबर नाना विधि आंनैं❀ते न नाथ के मन में मांनैं ॥४०
वर वरनी उपरैंना दै री❀अब असीस मेरी सुनि लै री ।
जुगल उपरनां लै जु उढायै❀रावल प्रेम गहर निधि न्हायै४१
अब सुनि हौं जु कहौं समझाई❀बडौ जन्त्र इक मो तन माई ।
मो सिर दुहुँनि चरन धरवाई❀अजर अमर काया ह्वै जाई ४२
बडौ जन्त्र गुरु मो कौ दीयौ❀सो मैं राखि सीस मधि लीयौ ।
जाकौ दुख दारिद्र सब हरौं❀ताही कौं यह जंत्र जु करौं ॥४३
रावल तुम जोगिनि के राइ❀कैसैं तुम सिर धरियै पाइ ।
हम ऐही पुनि गोप कहावैं❀सादर जोगिनु कौं सिर नावैं ॥४४
समझि जंत्र कछु औरैं करौ❀ऐसौ हठ जिनि जिय में धरौ ।
रांनी तो मन सांची प्रीति❀पै जोगिनु की ऐमी रीति ॥४५॥
हम यह लह्यौ जु गुरु मुख भेद❀तू सुनि मन जिनि पावै खेद ।
मेरौ परचौ जब जब लहि है❀तब तब मोहि सम्हारति रहि है॥
ऐसैं बचन कहै जोगीस❀गौर स्याम पद धरे जु सीस ।
नाचन लग्यौ अजिर कै मांहीं❀रावल कौं तन की सुधि नांहीं४७
वदन निहारैं झूमक लै ही❀वार वार चुटकी कर दै ही ।
नाना कौतिक जोगी करैं❀आनन्द वारि दृगनि ते ढरैं॥४८
जुगल रूप सुख भीजैं महा❀ताकौ आनन्द वरनौं कहा ।
झूमैं घूमैं वेपथ गात❀मुख ते निसरैं नांहिन बात ॥४९
देखन जुगल भूख दृग वढी❀नाथ वदन अति पानिप चढी ।
पलक विसारि निहारत ऐसैं❀चन्दा और चकोर सु जैसैं ॥५०॥
हरैं हरैं उचरैं कछु बाँनी❀जुगल प्रेम की आदि कहांनी ।

हिये प्रेम उमग्योई आवै❀मरम भीतरे कौं को पावै ॥५१॥
इनि उनि की जु दृष्टि मिलि रही❀कथा अलौकिक जाति न कही।
नन्द भवन माच्यौ कौतूह❀गोपिनि के जहाँ जुरे समूह ॥५२
नाचत रावल अजिर मझार❀गगन देव भये कौतिक हार।
महरि कहै समझावौ कोऊ❀जिहि,विधि रावल विदा जु होऊ॥
दूलह दुलहिनि भीतर गये❀समझि सचेत नाथ तब भये।
रावल प्रेम सिन्धु मित ना है❀गौर स्याम समझत मन माहै५४
अपनौ प्रेम दुराइ[1] जु राष्यौ❀इहि विचार मुष बचन न भाष्यौ।
राँनी भवन दुरे हैं तेरे❀येई हैं सर्वस धन मेरे ॥५५॥
नाथ और कछु अज्ञा कीजै❀जो जो चहिये सो सो लीजै।
माई हौं चाहतु हौं जैसे❀तैं बड भागिनि दीनौं तैसे ॥५६
मगन भये सींगी जु बजाई❀नन्द भवन ते भिच्छा पाई।
सुवस बसौ यह नगरी तेरी❀माता बहुरि करौंगौं फेरी ॥५७॥
यौं कहि नाथ बिदा तब भये❀पौरी जाइ लोटि पुनि गये।
गोपी कहैं अरी ए बावरौ❀या जोगी ते सब कोऊ डरौ ॥५८
लरिका संग बहुत उठि धाये❀नगर[2] दाहिनौ दै फिरि आये।
तन कर नाथ अगमनौ जाई❀मन पाछेंई झोंका खाई ॥५९॥

दोहा—नव दूलह नव दुलहिनी, निरखैं नैंन अघाइ।
रावल आसन कौं चले, सुख जु अपूरब पाइ ॥६०॥

॥ चौपाई ॥

कौतिक रहै नन्द गृह ऐसौ❀विधि कौं दुर्ल्लभ अरु कहौं कैसौ।

---

[1] छिपाये रहे क्योंकि युगल तो लोक वत पौगड अवस्था के आचरण का प्रागट्य कर रहे थे, [2] नगर की भी परिक्रमा करनी थी इसलिये दाहिनौ देकर चल दिये।

शिव से त्यागी जाचक जाकैं❀[1]मुक्ति अचाह आस लगै ताकैं६१
अति प्रिय लागत लीला एह❀देखन बाढ्यौ सबनि सनेह ।
जोग ध्यान तजि २ उठ धावैं❀नानाविधि के भेष बनावैं ॥६२॥
धन्य गोप ग्रह भुवतल माँहीं❀जहाँ आवन जु देव ललचाहीं ।
ईस्वरता जब धाम न दरसै❀ब्रज रस लीला छींटन परसै ६३
या मोहन में अस रस लटकौ❀रसिकनि मन जु लगायौ चटकौ
[2]गवरी कन्त किये अनुरागी❀निसदिन रहै चरन लौं लागी ॥
मोहन मन मोहनी सुभाँमाँ❀अखिल लोक एकैं अभिराँमाँ।
सबही अंग सुथरता हद है❀जा आगे विधि वानिक रद है६५
झनक झनक ग्रह अँगना डोलैं❀अति आदर दै मधुरैं बोलैं ।
सुत अरु वधू नन्द ग्रह गहनौ❀विनमित छवि ब्रजजन सुख लहनौ
[3]विधि बांनिक की सींव नषी है❀कहैं जिन दुलहिन नैंन लखी है।
यह अभूत भूतल पर जोरी❀मर्कत मणि कंचन दुति गोरी६७
महरि लाड के भाजन दोऊ❀सुकृत सिन्धु फल कहा कहै कोऊ
रूप वन्त गुन वन्त जु नारी❀तेऊ करत प्रसंशा हारी ॥६८॥
महरि दुहुँनि लै बैठति आगैं❀निरखत पलक कौंन कैं लागैं ।
सुकृत बेल ब्रजरांनी मानौ❀ये दोउ लगे महाफल जानौ ६९
पौंरी आयौ गोकुल रांनौं❀बढ्यौ लखि आनंद कितौ बखानौं
लकुट टेकि ठाडे रहि गये❀मन करि भाग प्रसंशत भये॥७०
धरि नहिं सकत अगमने[4]पाइ❀मन जु प्रेम के सागर न्हाइ ।
कहा कहौं अकथ कहांनी प्रेम❀रहन देहि नहिं प्रभुता नेम ॥७१
महरि सुनति मधुरी मुख बतियाँ❀दोउनि हरषि लगावति छतियाँ

---

[1]—शिव जी को मुक्ति की तो चाहना तक नहीं परन्तु आशा मांगने की नन्द द्वार पर आये पीछे वर्णन आ चुका है। [2]—गौरीपति। [3]—ब्रह्मा की बनाई सृष्टि में यह छवि नहीं मिल सकती उसकी हद के पार है, [4]—आगे की तरफ।

[1]सलज वचन दोउनि मुख कढै❀सुनि सुनि महरि हिये सुख बढै ॥
देखौ मन्दिर जुवति समाज❀[2]अहुटि अथाई गये ब्रजराज ।
निसिदिन सुख कौ सागर बहै❀[3]कौंन सुमति लहरिनु गनि कहै॥
फल डाली लै मालिन आई❀जसुमति ताकौ निकट बुलाई ।
रांनी कै पद वन्दन करि कै❀फल डाली दई आगैं धरि कै ॥
अहो रोहिनी आगैं आवौ❀लेहु मिष्टफल दुहुँनि जिमावौ ।
बलि की माइ रीझि कै लये❀डाली मांहिं रतन भरि दये ॥७५
दूलह दुलहिन कौं जु जिमावैं❀महरि रोहिनी लखि सचुपावैं ।
सनय सनय जैंवैं सुकुँवारी❀लाल उतावल करै जु भारी ७६
मुसिकत देखि लली की धाइ❀कूट करति सैंननि समझाइ ।
ताकी बात रोहिनी परखी❀समझि २ अति हिय जिय हरषी
सुविधि जिमाइ पिवायौ नीर❀वदन तंबोल रच्यौ बलि वीर ।
ललितादिक जु महरि ढिग बोली❀फल दीनै सब की भरि ओली
पुनि दुलहिन निज मंदिर चली❀लै सब संग आपनी अली ।
जहाँ पढैं सुक सारौ मैना❀अति अहलाद कुँवरि हिय दैंना
पंछी परम कुलाहल करैं❀राधा मोहन मुख उच्चरैं ।
मणि पिंजरानि अलंकृत धाँम❀वरन वरन खग सब गुन ग्राँम८०
जिनकी प्रीति कुँवरि सौं घनी❀मणिनु पैंजनी चरननि बनी ।
सुन्दर नामनि लैं लै टेरैं❀हँसि पुचकारैं सिर कर फेरैं ॥८१
पंछिनु कौ जु लाड मन भावैं❀अपनै कर बैठारि चुगावैं ।
महरि रोहनी आई जहाँ❀मैंना बहु आदर दियौ तहाँ॥८२
[4]आवौ जू ब्रजपति की रांनीं❀मो मुख तें इक सुनौ कहाँनी ।

१—लज्जा सहित । २—नन्द जी स्त्रियों का समूह देख लौट गये । ३—सागर की लहरें कौन गिन सका है अर्थात नहीं गिनी जाती । ४—सीखी हुई मैंना कह रही है ।

तुम ठकुराइनि इहि जु नगरकी❀हम महिमान तुम्हारे घर की ८३
तुमते को लाइक ब्रज बनिता❀परम उदार स्याम की जनिता ।
सब काहू तुम आदर दीयौ❀यह जस सुनत सिरायौ हीयौ ॥
सुनि मैंना मुख ऐसी बानी❀समझि हंसी ब्रजपति की रानी ।
जिहि पुर पंछिनु अस चतुराई❀नर नारिनु कहा करौं बडाई ८५

दोहा–रांनी सुनि लिहु श्रवन दै, यह जु न्याय की बात ।
तुम दरसत कंचन तनी, सुत कौ सांवल गात ॥८६॥
कहति लली की धाइ यौं, हँसति लाल की माइ ।
धन्य घरी मॉंनति महरि, अधिक कहा कहौं गाइ ॥८७॥
सुत लोकनि सौभग मनी, वधू त्रियनि सिर मौर ।
वृन्दावनहित रूप अस, जोरी नहिं जग और ॥८८॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्रीसदाशिव जू कौ आइबौ दूलह दुलहिन कौ लाड अधिक बरनन छप्पनवीं लहरी की जैजै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ सत्तावनवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–तात मात करुना बढी, कुँवरि बुलावन हेत ।
जब ते गवनी सासुरे, सूनौ लगतु निकेत ॥१॥
लली पधारी सासुरे, ललितादिक लै पास ।
श्रीराधा के नाम कियौ, कीरति रसना बास ॥२॥
ताही की लागी रहै, रसना आठौं जाम ।
असन घट्यौ निद्रा घटी, विसर्यौ ग्रह कौ काम ॥३॥
भोजन विरियाँ आवईं, मन्दिर रावलि राइ ।
राधा राधा टेर हीं, सकत न कौर उठाइ ॥४॥
वेगि आउ कंचन तनी, मेरे प्राँननि प्राँन ।

दधि ओदन[१] कौ ग्रास लै, यौं भाषत वृषभान ॥५॥
राधा बेटी सासुरे, कह्यौ कीरति समझाइ ।
जुग सम बीतत राति दिन, लीजै बेगि बुलाइ ॥६॥
पुर वीथिनु में खेलती, सखिन वृन्द लै लार ।
ते सूनी सी लगत हैं, कहँ मेरी प्रान अधार ॥७॥
करुना कौ सागर बढ्यौ, हिय अकुलात निराट ।
कब गौरंगी देखि हौं, आवत इहि पुर वाट ॥८॥
जाहु कुँवर नन्द गावरैं, लै दसई[२] कौ साज ।
लेहु लगाइत बोलि कैं, करौ पयानौ[३] आज ॥९॥

॥ चौपाई ॥

राजकुँवर सुनि विह्वल भयौ❀मैया रंवकि गोद में लयौ ।
तज्यौ कलेऊ करन जु बीर❀बहिन संग बिन होई अधीर १०
राज भवन के दासी दास❀राधा बिनु सब हीं जु उदास ।
पिंजरनि पंछी व्याकुल महा❀कहौं दसा पुर वासिनु कहा ११
मैया वदन रह्यौ मुरझाइ❀कहाँ मेरी राधा लेहु बुलाइ ।
हूंकि हूँकि उठै मदनी गाइ❀कँवरि देखिबै कौं अकुलाइ ॥१२
काकी ताई सब मिलि आवैं❀कीरति कौ ऐसै समझावैं ।
मन धीरज अब धरौ सयाँनी❀सोदर कुँवरि लाइ है राँनी १३
सुत सौं कहत भयानै रानौं❀नन्द ग्राम कौं करौ पयानौं ।
जाहु कुँवर मेरे मिठ बोला❀लै जा बहन चढावन डोला ॥१४
करि न विलम्ब वचन सुनि मेरौ❀मारग देखत होइगी तेरौ ।
काल्हि कोउ ऐसे कहि गई❀राधा हू ह्वाँ व्याकुल भई ॥१५॥
कहत कहत भयौ तात अधीर❀आयौ झलक दृगन में नीर ।

---

[१]—भात या रँधे अन्न का ग्रास । [२]—ब्रज की एक रीति । [३]—प्रस्थान ।

भवन सजे बहु विधि पकवांन❁हाँडो डला भरे लैं जाँन ॥१६॥
ऐसे नृपति जो अज्ञा करी❁विप्र बोली सोधी सुभ घरी ।
माइ बुलायौ राज कुँवार❁आयौ लियै विप्रनि लार ॥१७॥
बेटा कहि तू जैहै कबै❁मेरे प्रान जु ब्याकुल अबै ।
कब आवैगी मिठ बोलनी❁झनक झनक आँगन डोलनी १८
वह ब्याकुल है मो विन महा❁वा बिन हौं ह्यां देखौं कहा ।
मात बात सुनि हिय थरहर्यौ❁को कहै बात प्रेम गर[1] भर्यौ॥१९
नौ हू भौँन भवन तब आये❁सबहि लगाइत टेरि बुलाये ।
हाँडी डला सँजोये घनैं❁करि सिगार आये सब जनैं ॥२०
सजि सब साज अजिर में धरैं❁हय रथ पौरी ठाडे करैं ।
बेटा लै लै सब कौ नाम❁ब्रजपति सौं कहियौ परनांम ॥२१
तुहू जाइ पद नवनी कीजौ❁जो वे कहैं मानि सो लीजौ ।
हरि हलधर सौं कीजौ प्रीति❁कहियौ वचन आपु कुल रीति२२
पुर वासिनु सनमान जु दीजौ❁मधुर वचन कहि सब मन लीजौ ।
उहाँ बहुत जिनि गहरु[2] लगैयौ❁बहिनिहि लै जु वेगि ह्यां ऐयौ२३
लै अज्ञा जब रथ पर चढे❁नन्द गांव चलिबै मन बढे ।
कहैं सन्देसे सब पुर वासी❁जिनकैं कुँवरि प्राँन धन रासी २४
राज कुँवर सब के मन धरैं❁हाँ हाँ करैं नैंन जल भरैं ।
सबहि लोग उठि लागे लार❁प्रेम कथा को पावै पार ॥२५॥
रथ कौ हांकि चले बढि आगैं❁विविध साज सब नीके लागैं ।
मगन होत नर नारी उर में❁राधा काल्हि आइ है पुर में ॥२६
कुँवरि वीर की हेरति बाट❁कब आवै अकुलाति निराट ।
महरि रोहिनी मिलि समझावैं❁खेलन कौं जु खिलौंना लावैं २७

---

[1]—गला, कण्ठ भर गया । [2]—रुकना नहीं ।

वस्तु अपूरब दैंहिं मँगाई❀काहि रुचै चित बसी जु माई ।
गोपी भेष सारदा कीयौ❀आइ कुँवरि मन धीरज दीयौ २८
राति बसी ही पुर वृषभांन❀ऐसी बात सुनी मैं कांन ।
बहिन लैंन जै है श्रीदाम❀सुभ वासर जु प्रात नन्द ग्राम २९
यह सुनि कुँवरि हिये भई हरी❀बनिता गोदी मेवा भरी ।
ऊँचै चढि पुनि. बोल्यौ काग❀राधा सुनत भरी अनुराग ॥३०
अब ही उडि रे वाइस राज❀मो सोदर जो आवै आज ।
कागा उड्यौ हरष हिय भयौ❀बाढ्यौ मोद कुँवरि मन नयौ ३१
सखिनु सहित ऊँचै चढि गई❀वरसानैं दिस देखति भई ।
अतिलडि दृष्टि बडी दौराई❀दरसी गगन रेंनु खुर छाई ॥३२
राधा नें धुज रथ की परषी❀आयौ वीर जानि हिय हरषी ।
रतन कलस जा पै उद्दोत❀जुरे अस्व तिनकौं बड गोत[1] ३३
पँवन वेग सम आवनि जिनकी❀सुन्दरता कहा वरनौं तिन की ।
ललिता देखि आइ मो तीर[2]❀वह दरसत श्री दांमा वीर ॥३४
उर आनन्द बढतु है नयौ❀वासर धन्य आजु कौ भयौ ।
सबहि लग.इत विहँसत आवैं❀रथ के पथ अति सोभा पावैं ३५
हांडी डलनि लखी बहु सैंनी[3]❀सत्य सत्य मानी मृग नैंनी ।
आयौ बडी पौंरि जहँ पुर की❀निरखि भई सीतलता उर की ३६
पहिलैं खबरि बधू[4] जो लाई❀मोतिनु माल ताहि पहिराई ।
पुनि दिये पाटम्बर जु रसाला❀तैं कह्यौ वचन सत्य री बाला ३७
मो सोदर आयौ यौं दिपै❀आंनन छबि लखि उडपति छिपै
किधौं मैंन हूं की छबि छीनी❀आइ नन्द पद नवनी कीनी ३८
भरि लियौ अंक घोष के रांनैं❀प्रांन समान तासु कौं मानैं ।

---

[1]—घोड़ा की जाति बडी उत्तम थी । [2]—निकट । [3]—पांति या श्रेनी । [4]-शारदा ।

करि सन्मान बैठना दीयौ❀लखि श्रीदाम सिरायौ हीयौ ॥३९
इत उत पुनि बूझी कुशरात❀कुँवर प्रनाम सुनाई तात ।
रावलि पति की बिनती सुनिकैं❀ब्रजपति मुदित भये पुनिपुनिकैं ४०
हरि हलधर दोउ बिहँसत आये❀हँसि श्री दांमा अंक लगाये ।
विविध भांति सनमांन जु कीयो❀सुन्दर मन्दिर बासौ दीयौ ॥४१
हाँडी डला राज घर लये❀धरैं अजिर मधि सोभित भये ।
लली माइ जे पठये साज❀देखि प्रसंशति वधू समाज ॥४२
बहु विधि पकवांननि की रचना❀देखति महरि कहति अस रचना ।
धन्य धन्य रावलि पति रांनी❀लाइकता नहिं जाति बखानी४३
जाह बेगि री कीरति जाई❀कंठ लागि आयौ तो भाई ।
राज कुँवर कौं मन्दिर लीजे❀सब विधि करि कैं आदर दीजे ॥
न्यारैं भवन कुँवरि जू गँवनी❀किये बिछौंना सुन्दर अवँनी ।
मिलिबे कौं सादर जु बुलायौ❀सजल नैंन आतुर उठि धायौ ४५
आइ कण्ठ जब सोदर लग्यौ❀बलो प्रेम तब हिय ते जग्यौ ।
इत उत विसरि देह सुधि गये❀वीर बहिनि अति विहवल भये ॥
रही सखी गहि इत उत बांहीं❀सुरझायैं हूं सुरझत नांहीं ।
माइ माइ मुख भाषत लली❀सुनि हिय दहली सब हीं अली॥
सनय सनय मन धीरज धर्यौ❀मन उछाह चलिबेकौं भर्यौ ।
मिली वीर सौं पुनि सब सखी❀प्रेम विवस अति हिय जिय लखी ॥
बूझति तात मात कुशरात❀अरु अपनैं लै चलन जु बात ।
काल्हि लै चलौ ऐसैं कही❀बहिनि वीर की ठोडी गही ॥४९
समाचार बूझति अति लडी❀जा उर उभिली करुना बडी ।
सोदर कहतु बहिनि सौं बात❀तात मात नीके हैं गात[1] ॥५०

---

[1] —श्रीदाँमा ने कहा माता पिता आदि सब स्वस्थ हैं ।

तेरी लाड कहांनी कहैं❀प्रेम दबावै तब चुपु रहैं।
मैया कौं निसि नींद न आवै❀राधा राधा रसना गावै ॥५१॥
तो वियोग करि भूख जु भागी❀अलप अहार लैंन कछु लागी।
जो कोउ गोप सुता ग्रह आवैं❀ताहि दौरि कै कंठ लगावैं ॥५२
नैंननि ते बहि आवै वारि❀कहाँ मेरी राधा कहै पुकारि।
काकी ताई धाई आवैं❀धीरज दै कै ते समझावैं ॥५३॥
तेरौ नाम सुनै जब तात❀तब ह्वै जाइ जु वेपथ गात।
धीरज बांधि प्रेम अहुरावै❀तदिप नैंन जल भरि ही आवै ५४
मदनी गाइ जु हूंकति रहै❀पुनि पुनि पौंरी ओर जु चहै।
खग पिंजरानि ध्यान रहैं धरैं❀तो विनु धापि अहार न करैं ॥५५
राधा तेरी काको ताई❀देखे बिनु अति हिय अकुलाई।
यह चरचा बरसांनै ग्राम❀कब आवै राधा इहि धाम ॥५६
जादिन तैं डोला पग दीयौ❀पुर सब जीति प्रेम नें लीयौ।
अधिक बात अब बूझि न मोहि❀कछु इक कथा सुनाइ तोहि ५७
रहि प्रसन्न लै चलि हौं प्रात❀मिलि हैं काल्हि तात पुनि मात।
भैया बहिनि मोद अति भरे❀राज कुँवर तब भोजन करे॥५८
परसत सुहथ बहिनि श्री राधा❀जैंवत सुख बाढ्यौ जु अगाथा।
ज्यौं ज्यौं वीर ग्रास मुख धरैं❀त्यौं आनन्द बहिनि उर भरैं ५६
महरि रोहिनी दुरि कै देखैं❀बहिनि वार की प्रीति विशेषैं।
ललिता सामा लै लै आवैं❀विजना कर लै धाइ ढुरावैं ॥६०

दोहा—मैं जानी विधि शृष्टि में, ऐसौ मंगल नांहि।
जैसौ सोदर तोहि लखि, मैं मल्यौ मन मांहि ॥६१॥
धन्य घरी धनि वार तिथि, धन्य आगमन वीर।
सरवर बिछुरी ज्यौं मिलैं, मीन आइ कै नीर ॥६२॥

ऐसे सोदर तोहि मिलि, सुखित भई हौं जीय ।
कालिह मिलौं यौं माइ सौं, गाढि भुजन भरि हीय ॥६३
[1]हरि हलधर की माइ दुरि, देखति कौतुक एह ।
कहति नहीं विधि सृष्टि अस, वीरन बहिन सनेह ॥६४॥
अचवन करि बीरी जु लै, साथी सबहि जिमाइ ।
हरि हलधर राजत जहाँ, बैठे पालिक[2] जाइ ॥६५॥

॥ चौपाई ॥

हिलि मिलि कै अस बातैं करैं❀हँसि हँसि कै कर पै कर धरैं ।
उर अन्तर अति गाढी प्रीति❀कूट करैं नातैं को रीति ॥६६॥
राजति जहाँ ग्वाल मंडली❀फूली छबि फुलवारी भली ।
बढि बढि वचन कहत बलिराम❀ऊतर दै रिझवत श्रीदाम ॥६७
दीपक तर हैं लला अंधेरौ❀नीकै बचन समझि लिहु मेरौ ।
स्याम सकुचि मुख धरि रहे मौंन❀आनन्द वरण्यौ वरनै कौन ६८
हरि बलिराम और श्री दाम❀बचननि प्रीति बढी अभिराम ।
पुनि जु भान सुत गवन्यौ जहाँ❀बैठे हैं ब्रजरानौ तहाँ ॥६९॥
विनती करिकै अग्या लई❀भोर चलन की त्यारी भई ।
जसुमति अंक दुलहिन लै कै❀आनन्दित मुख ओर चितै कै ॥
चतुर दुलहिनि मुरलीधर की❀मेरे अतिलड सुन्दर वर की ।
तात भवन कौं जब पग धरि है❀देखै बिनु क्यौं मुहि कल परि है ॥
अति सकुचीली चम्पक वरनी❀मो घर आँगन मंगल करनी ।
अतिहि ओप गोप कुल दैंनी❀कीरति लाड पली पिक बैंनी ॥
अहो रोहिनी आगैं आवौ❀दुलहिनि पै कछु बात कहावौ ।
लै बैठी जु रोहिनी पास❀बूझन कौ मन अधिक हुलास ॥७३

१—यशोदा व रोहिनी । २—पलंग पर ।

कहा कहि भेज्यौ तेरी माई❀हमहूं कौं सो वचन सुनाई ।
वीर आइ मो सौं कहि दीयौ❀तुम कौं बहु पालागन कीयौ ७४
यौं कहि कछु सकुची अति लडी❀हँसी सास दोउ छोटी बड़ी ।
अतिहि चतुर भूप की जाइ❀बुद्धि तोल हम सौं बतराइ ॥७५
कहि दुलहिनि कछु औरौ बात❀तात भवन कौं जै है प्रात ।
रजनी भरि हम संग बसेरौ❀पुनि करि है बहु दिन में फेरौ ॥
बूझैगी जब तेरी माइ❀ह्याँ कौ सुख कहा कहि है जाइ ।
यह सुनिकै जु कुँवरि हँसि परी❀ब्रजराँनी आँकौ लै धरी ॥७७॥
लहुरि बहुरिया अतिलडि मेरी❀इहि घर बरषी सुख की ढेरी ।
धनि राँनी कीरति सुभ लच्छन❀जिन जाई यह कुँवरि विचच्छन॥
मेरे हूँ जो भाग मित नाँही❀धनि धनि भई लोक इहि माँही ।
चोखे कुन्दन की सी पुतरी❀लायौ व्याह धन्य मो सुत री ॥
महरि प्रसंश कुँवरि की कीनी❀राज सुता जु लाज सुनि भीनी ।
सुखित भई मृदु बतियाँ सुनि २❀राँनी लाड़ लड़ावति पुनि पुनि॥
सुहथ जिमावति ब्रजपति घरनी❀भोजन करत बना सँग बरनी ।
दोऊ प्रान सुधन गनि अपनौ❀गिरि की कृपा जाप नित जपनौ
कै करि कृपा रमा के ईस❀कै काहू की फली असीस ।
कै विधि लरज्यौ मेरी ओरी❀साँवल गोर बनी यह जोरी ॥८२
जसुमति मन मन सुमिरन करै❀दै मुख ग्रास हिये सुख भरै ।
दूलह दुलहिनि कौं जु जिमायौ❀त्रिपित भये तब जल अचवायौ
दूध अधौटा सिता मिलाइ❀प्यावत राँनी सुहथ सिराइ ।
वदन पौंछि वीरी जु खवाई❀कुँवरि दई सज्या पौढाई ॥८४
लाल गये श्री दाँमा पास❀करैं रस बतियाँ भरे हुलास ।
बासर भयौ बीतिगई रजनी❀प्रमुदित कुँवरि सहित सब सजनी८५

आइ जुर्यौ पुर वधुनि समाज❀सजियन लगे चलन के साज ।
महरि शृङ्गार कुँवरि कौ कीयौ❀छिन छिन द्रवित प्रेम सुख हीयौ
पुनि लै बैठी अपनी गोद❀सुहथ जिमावति है भरि मोद ।
सजि सजि हाँडी डला धरे हैं❀जिन में बहु पकवाँन भरे हैं ८७
नाइनि दैंन महावर आई❀रचना चित्र विचित्र बनाई ।
निरखत इकटक रह गये नैंना❀रूप छकी पल पलक लगैं ना ॥
तरवनि ते जु ललाई दौरी❀चतुर नइनियाँ लखि भई बौरी ।
अंजन रेख संवारी ऐसे❀खंजन डोरि बांधि दिये जैसे ८९
धनि नरिन्द्र रविवंश उजागर❀ताकी सुता जु सोभा आगर ।
मणि चौकी पर बैठी राजैं❀ससि समूह जिहि मुख लखि लाजैं ॥
मुरलीधर की नवल दुलहिया❀अंग अंग सोभा कौ पउलहिया[1]।
मधुर तेज मनु पुंज लसी है❀प्रीतम के दृग मांहि बसी है ९१
दूलह परम भाग कौ लहनौ❀किधौं इहि नन्दभवनकौ गहनौं ।
किधौं भान कुल सुकृत मनी❀किधौं सार सोभा तन बनी ॥९२
वधू देखिवे हुलसी आवैं❀सोभा सिन्धु पार नहिं पावैं ।
धनि वह दई रची छवि सींवा❀देख डुलावैं सब ही ग्रींवा ॥९३
चिबुक आँगुरी धरि धरि रहैं❀अहा अहा सब मुख ते कहैं ।
सखा फिरैं सब भरी उमाहैं❀पिता भवन कौ चल्यौ जु चाहै ॥
डोला धर्यौ पौरि पै आई❀ऐसे कहति लली की धाइ ।
राँनी अब मिलि विदा जु दीजै❀कुँवर[2] प्रनाम कही सुनि लीजै ॥
विनती बहुत करी है नै कै❀चहत चल्यौ तुम अज्ञा लै कै ।
जसुमति बहुत आसिका दई❀कहति चलन अब त्यारी भई ॥
राज कुँवर सौं यौं कहि दीजौ❀मेरे वरैं वारने लीजौ[3] ।

---

[1] नित्य नवीनतामय उछलने वाली । [2] श्रीदाम जी । [3] धाइ तू मेरे बदले वारने लेना ।

प्रेम विवस मुरलीधर माइ❀रही कुँवरि कौ कण्ठ लगाइ ९७
सिन्धु समान जासु हिय नेह❀ताकौ मिलत न काहू छेह[1] ।
जिहि तिहि विधि बनितनि सुरझाई❀बहुरि रोहिनी कण्ठ लगाई॥
राज सुता तू नीकै रहियौ❀कीरति सौं पालागन कहियौ ।
बहुरि मिलीं नौ नन्दनि घरनी❀जिनकी प्रीति जाति नहिं बरनी॥
पुर की वधू सबौ पुनि मिली❀गरुवौ प्रेम हिये सुख झिली ।
कोऊ चरननि लागि सिहानी❀कोऊ बचननि ही सनमानी १००
इहि उहि पुर जु अलौकिक मोह❀छिन हूं नहिं सहि सकै बिछोह।
मिलि मिलि कै राधा मुख हेरैं❀प्रान सुधन सौं अंक सकेरैं १०१
अनुरागिनि नौ नन्दनि राँनी❀प्रेम रोकि लई सब की बाँनी ।
रोंम रोंम रसना दैंइ दई[2]❀जौ वरनौं लीला रस मई॥१०२
नेह अपूरब इहि पुर दरस्यौ❀सब के हिये अधिक ही सरस्यौ।
हित हीनौं कोऊ इहि पुर नांहि❀महा रमापति रमै जिहि मांहि॥
राधा स्याम नन्द के ग्रेह❀क्यौं न बसै तहाँ प्रेम सदेह ।
महरि विदा करि अग्या दई❀कुँवरि चलन की त्यारी भई॥
जूथनि वनिता मंगल गावैं❀श्री राधा सुहाग दुलरावैं ।
डोला बैठारन लै चली❀चहुँ दिसि राजत राधा अली[3] ॥१०५
आरज गोपनि कौ करि नँवनो❀कुँवरि तात के गृह कौं गवनी ।
भाग्य भरीं डोला पग धारैं❀सबहिनु मंगल बचन उचारैं ॥१०७
बहु मेवा पकवान मिठाई❀लाड कोथरी महरि पठाई ।
नर नारीं जै धुनि उच्चरैं❀पुनि कुशमनि कीं वरषा करैं ॥
विप्र लगाइत भिच्छिक जेते❀भाँन सुवन सममानैं तेते ।
अज्ञा लैन नन्द पै गये❀करि जुहार[4] हिय हरषत भये ॥१०८

---

[1] —न्यूनता या कमी। [2] —ब्रह्माने। [3] —सखियाँ। [4] —कंठ लगा कर।

मन क्रम बचन आसिका दीनी❀भाँन प्रसंश नन्द मुख कीनी ।
विविध प्रनाम हमारी कहियौ❀रावलिपति सुधि करत जु रहियौ।।
सज्जन परम भाँमते मन कै❀रावलि धनी धीर दृढ़ पन कै ।
ऐसे नन्द बीनती कीनी❀श्रीदामा कौं अग्या दीनी ।।११०
हरि हलधर सौं मिलि सुख बढे❀बहुरि आइ कै रथ पै चढे ।
ग्राँम गोइँरैं ठाडे भये❀रथ डोला सब ही संग लये ।।१११

दोहा–तन उलही नव तरुनता, अति लड रावलि भूप ।
सोदर राधा कुँवरि कौ, कहा वरनौं तिहि रूप ।।११२।।
कुन्दन विद्युत दुति हरी, ऐसी अंगनि जोति ।
वदन इन्दु लखि भाँन सुत, सब दृग चौंधी होत ।।११३
रथ की सोभा कहा कहौं, मानौं अमर विमान ।
तामैं बैठ्यौ राजहीं, नन्दन श्री वृषभाँन ।।११४।।
नन्द गाँम के गोइँरैं, रथ डोलनि की भीर ।
श्री राधा कौं तात घर, चल्यौ लिवाइ जु वीर ।।११५।।
स्वामिनि श्री हरिवंश की, अखिल लोक सिरमौर ।
माइ मिलन सौं अरबरति, समझि होत मति बौर ११६
ईस्वरता पाछें दुरी, बढि गयौ बली सनेह ।
वृन्दावनहित रूपनी, रुचै तात कौ ग्रेह ।।१०७।।

।। इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्री कीरति वृषभाँन प्रेमाधिक्य श्रीदामा जी कौ नन्दग्राम आइबौ तथा श्री जसोदा जी कौ श्री वृषभाँन नन्दिनी प्रति लाड सनेह आधिक्य विदाइगी वरनन सत्तावनवीं लहरीकी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे ।।

।। अथ अट्ठावनवीं लहरी प्रारम्भ ।।

दोहा–कोउ डोला कोउ पालकी, कोउ भई रथ असवार ।

सखी वृन्द अगनित चली, श्रीराधा के लार ।।१।।
बरसानैं सनमुख भई मिलन उमाहौ माइ ।
चलौ चलौ राधा कहै, वेगि भेटिये जाइ ।।२।।
महा रूप के पुंज की, किरननु मित नांहि ।
सबनि मध्य सर्वेस्वरी, जगमगैं डोलनि मांहि ।।३।।
यह परिकर अहिलादनी, रहतु लार वन ग्रेह ।
छिन हूं पास तजै नहीं, जैसे छाया देह ।।४।।

।। चौपाई ।।

कंचन पट डोलनि पर लसैं❀मानौ रवि किरननु कौ हँसैं ।
रतन कलस तिन पर उद्दोत❀निरखत सकुचत दुति धर गोत[1]।।
चँवर ढुरत इहि विधि फहरात❀मानौ हँस बसेरैं जात ।
अंतर सुवास उठैं उदगार❀अलि[2] गुंजरत चले तिन लार।।६
सबहिनु मन उत्साह जु ऐसौ❀नवनिधि मिलै रंक कौ जैसौ ।
सब कहैं धनि बासर भयौ आज❀मिलि हैं हम परिवार समाज ७
अति आतुर गति गवँन जु कीयौ❀वट संकेत विरमि कछु लीयौ ।
तरु कदमनि की सैंनी जहाँ❀ललित लता प्रफुलित हैं तहाँ ८
नाँनाँ विधि खग करहि जु नाद❀सुनि सब उर उपजतु अहिलाद ।
सरवर मध्य जु निर्मल नीर❀प्रफुलित वारिज षट पद भीर ९
दिखियति जहँ अवँनी मोहनी❀सबहि रितु लागति सोहनी ।
डोलनि ते उतरी सब ऐसैं❀घन तजि दामिनि कौंधैं जैसैं १०
बहिन वीर मिलि सखिनु समाज❀भोज कियौ मानि रुचि आजु ।
पुनि चलिबैं आगैं मन भयौ❀बाढन लाग्यौ मोद उर नयौ।।११
प्रेम रीति अति ही अटपटी❀पुर देखन की हिय चटपटी ।

१—चन्द्रमा या सूर्य । २—भँवरे समूह ।

चित भई चौंप कुँवरि कौ ऐसैं❀साँवन सलिता उमगै जैसैं ॥१२
लखे प्रेम सर के तरु जब हीं❀सजल नैंन ह्वै आये तब हीं ।
डोला ते जु उतर कै लली❀तिन सौं मिली मांनि रंग रली ॥
अरी राधा तू बौरी भई❀बाट चलत व्याकुल ह्वै गई ।
सोदर ने इहि विधि समझाई❀पुनि डोला में लई चढ़ाई ॥१४
नगर सींव के तरु यह वीर❀देखि लही सब सुख की सीर ।
भैया तैं जु दिखाये मोहि❀पुनि पुनि देंहु असीसैं तोहि ॥
बरसानैं दिस ज्यौं ज्यौं चली❀विह्वल प्रेम होति त्यौं लली ।
तात बाग की लखि तरु सैंनी❀हिय जिय हरी भई मृगनैंनी ॥१६
कुँवरि खेल कौ ठौर सु जहाँ❀क्यौं न होहि आनन्दित तहाँ ।
आँई पीरी पोखरि कूल❀हिय जिय बढ़ी सतगुनी फूल ॥
डोला दृष्टि कुँवरि कौ आयौ❀प्रान पोष पुरवासिनु पायौ ।
कोऊ नाचन लागी मुरि मुरि❀कोऊ देखन धाई जुरि जुरि ॥१८
कोऊ आइ पौरि भई ठाढ़ी❀गावति मंगल आनन्द बाढ़ी ।
रावलि पति बैठे हैं जहाँ❀दीनी खबरि विप्र ने तहाँ ॥१९॥
पीरी पोखरि आई लली❀सुनत ही बढ्यौ प्रेम उर बली ।
सुनि सब गोप मुदित भये महा❀कहौं भाँन मन फूलनि कहा २०
बूझन लागे रावलि धनी❀कितिक दूरि है कंचन तनी ।
पुर नियरैं आई अति लड़ी❀मांनी भांन बधाई बड़ी ॥२१॥
पौंरि पौंरि नीसान जु बजे❀लैंन आगमनैं सब ही भजे ।
कुँवरि आगमन हिय जिय विकसी❀वधू प्रेम की प्रेरी निकसी ॥२२
राधा के सब सनमुख आवैं❀लैं वारनैं करजु चटकावैं ।
उदित होत जैसैं ससि ओरी❀आतुर धावैं त्रिषित चकोरी ॥२३
सुनि सुनि उमगे सब पुर वासी❀आई कुँवरि प्रान धन रासी ।

मुख ते कुँवरि अमी सी झरै❀सबहिनु कौ सनमान जु करैं ॥२४
श्री दामा माइ पैं आयौ❀कुँवरि आगमन कहि समझायौ।
माइ चरन सौं सीस नवायौ❀रांनी आसिक बचन सुनायौ॥२५
बेटा की ठोड़ी गहि लई❀आनन्द सिन्धु मगन ह्वै गई।
जब लगि कुँवरि पौरि पै आई❀भई भीर रावर न समाई॥२६॥
कीरति मगन भई मन महियां❀
उठि न सकति सखि गहि रहि बहियां।
सावधांन करि पौरी लाई❀आइ आइ सब देत बधाई॥२७
अरघ बढाइ आरती कीनी❀सादर कुँवरि भवन में लीनी।
लली माइ सौं इहि बिधि भेंटी❀मनु आनन्द के निकर लपेटी॥२८
सनय सनय निरवारति बनिता❀भई बस प्रेम लली की जनिता।
रांनी कहति कहां मेरी राधा❀अस भूलनि बढ्यौ प्रेम अगाधा॥
हियकी उरझन कहा बखानौं❀नैंन झरत धारा[1] धर मानौं।
प्रेम गहर ते मन जब निकरयौ❀तब रांनी कौ सब दुख बिसरयौ॥
मिलीं लागि उर काकी ताई❀रंभा आदि सबै भौजाई[2]।
साथिनि मिलीं जु पुनि पुर नारी❀भांति भांति सब भई सुखारी ३१
कुँवरि प्रांन से सब मिलि पावैं❀बार बार सबहिनु उर लावैं।
उठे अथाई ते अकुलाइ❀मंदिर आये रावलि राइ॥३२॥
जद्दिप हियौ महा गंभीर❀प्रेम करतु तद्दिप जु अधीर।
अति आतुरगति चरन जु धरैं❀कुँवरि लगायौ चहैं गरैं॥३३॥
तातहि निरखि उठी श्रीराधा❀सरस्यौ प्रेम हिये जु अगाधा।
[3]रँवकि जनकने भुज भरि लई❀अतिलड़िदौरि गरैं लगि गई३४

---

[1]—बादल की तरह। [2]—श्रीदामा की बहू रंभा तथा और ८ भांन के भाइयों के पुत्रों की वधुएँ भौजाई सब कह रहे हैं। [3]—वृषभान जी ने लपक कर गले से लगाया।

दोहा–करुना उझिली तात उर, कुँवरि बिलौकी नैंन ।
बिछुरे मिले जु प्रान मनु, अरु कहा वरनौं बैंन ॥३५॥
निर्झर[१] ज्यौं लोचन झिरत, कर वर धरि रहे सीस ।
अतिलडि बेटी राधिका, पुनि पुनि देत असीस ॥३६॥
हिय करुना लोचन सजल, वदन बचन सुर भंग ।
कह कहौं प्रभुता प्रेम की, जनम्यौ राधा संग ॥३७॥
गोप मिले गोपी मिलीं, भीजे परम सनेह ।
बरसानैं मंगल महा, ह्वै रह्यौ सब के ग्रेह ॥३८॥
भोजन करि कुल मंडनी, आज सहित परिवार ।
बैठो नेरैं तात कैं, माइ परोस्यौ थार ॥३९॥
[२]अपनी मदना गाइ कौ, आऊँ पहिल जिमाइ ।
तब हौं कौर उठाइ हौं, सुनि लै कीरति माइ ॥४०॥
बहुत दिना हूंकति रही, मो देखन के काज ।
नित्तति परम सुलच्छनी, आनंदित है आज ॥४१॥
बहुत हँसे रावलि धनी, सुनत सुता के बैंन ।
मदनी आगे थार धरि, लगी ग्रास मुख दैंन ॥४२॥
पूरन करि जल प्याइ पुनि, पंछिनु सुहथ चुगाइ ।
पोष्यौ सबनि सुदृष्टि सौं, कर वर पीठि फिराइ ॥४३॥
आपुन भोजन करति पुनि, कुँवरि सहित परिवार ।
मात ग्रास मुख देति सुख, बूझति बारंबार ॥४४॥
कहति लली सुख सासु कौं, माइ सुनत दै कान ।
अति आनंदित होत सुनि, तन मन श्री वृषभाँन ॥४५॥
जसुमति दियौ अहिलाद जो, सो कहा बरनौं माइ ।

१—चश्मा या स्रोत, २—शिक्षा है कि भोजन से पहले गौ ग्रास अवश्य दें ।

तो तें अधिक जु क्यों कहौं, कहन हियौ अकुलाइ ।।४६
प्राँन समान जु रोहिनी, राँनी राख्यौ मोहि ।
पुर बनितनि की प्रीति अति, किती सुनाऊँ तोहि ।।४७

।। चौपाई ।।

इक लेंइ कौर एक कहैं बात❀सुनि सुनि सुखित होत सब गात।
हँसति लसति जेंवति सुकुँवारी❀मृदु बतियनि सुख बरषति भारी।।
सुनि २ त्रिपति होत नहिं राँनी❀पूरन होहि न प्रेम कहाँनी ।
बेटि बहुरि बूझि हौं तो सौं❀भोजन करि पुनि कहियौ मोसौं४८
अति रुचि, मानि जु भोजन कीयौ❀सबहिनु उठि कै अचवन लीयौ ।
कहि कछु बात और री राधा❀मो मन अधिक सुनन की साधा ।।
छोटे बडे सुनत हैं अबै❀बेटी कहि अपनो सुख सबै ।
मैया उहि घर सुख जु घनेरौ❀ऐ पै लाड न विसरचौ तेरौ ।।५१
तात मात की जब सुधि आवै❀खान पान तब मोहि न भावै ।
वीर आगमन जब सुधि करौं❀तब कछु मन में धीरज धरौं ५२
पुनि हिय जिय अकुलाउँ निराट❀तब हेरौं बरसानैं बाट ।
जब मुहि वहाँ सात दिन भये❀मानौ बीति सात जुग गये ।।५३
जानी निठुर माइ मो भई❀अजहूँ सुधि मेरी नहिं लई ।
मन की बात न कबहूं कहौं❀सगुन मनावति निसदिन रहौं ५४
एक अपूरब गई कोउ बाला❀तिन कहे मो सों बचन रसाला ।
हौं बैठी मधि सखिन समाज❀उनि कहि वीर आइ है आज ५५
वाकौ वचन सिद्ध ही भयौ❀बीर अतिलडो तब ही गयौ ।
मो मन मंगल भयौ जु एतौ❀मैया वरनि सुनाऊँ केतौ ।।५६।।
मुहिं वह बासर भयौ अनुकूल❀मनु बरषे सौंने कै फूल ।

ब्रजपति[1] लाड वरनि री प्यारी❀हौं सुनि सुखित होउँ जिय भारी।।
उन मन हुती अधिक अभिलाषा❀सुकृत बेलि की फली जु साषा ।
सुत विवाह खरच्यौ धन घनौ❀धन्य जनम मान्यौं आपनौं ।।५८
सजन सजन ऐसौ रस रह्यौ❀देव मुनिनु जिनकौ जस कह्यौ ।
तिनकौ लाड वरनि ससि मुखी❀हौं सुनि होउँ अधिक ही सुखी।।
बोली कुँवरि जु चंपक वरनी❀भान वंश के जस की धरनी ।
मनौ कृपा ब्रजपति वपु धरैं❀मेरौ लाड बहुत विधि करैं ।।६०
गोप सभा जब बैठे जाइ❀सब सौं ऐसैं कहैं समझाइ ।
अति लाइक जु भयानैं भूप❀रहनी कहनी परम अनूप ।।६१।।
उनि मैं गुन देखिये अनेक❀कहा बरनिये रसना एक ।
ब्याह मांहि ऐसौ रस वरषे❀मुनि नर देव देखि सुनि हरषे ६२
पुनि जु सभा ते उठि घर आवैं❀सबहिनि कौ ऐसैं समझावैं ।
सुता सजन की ब्याही आई❀हम विधि कृपा मनाइ जु पाइ ६३
याकौ मन लीयैं सब रहियौ❀जो कछु चहै सु मो सौं कहियौ।
याहि उदास हौंन जिनि दीजौ❀यह मो सिद्या सब सुनि लीजौ।।
मो हित मधुरे फल जु मगावैं❀पट अमोल गहनैं जु गढावैं ।
करैं मो तात प्रसंश सदाई❀ब्रजपति की कहा करौं बडाई ६५
मुख ते बचन अमी से झरैं❀इहि विधि मेरौ आदर करैं ।
मन्दिर आवैं बारम्बार❀छिन छिन मेरी करैं सम्हार ।।६६
लाइक बडे घोष के ईस❀पुनि पुनि मुहि दें जांहि असीस ।
महरि लाड ऐसी विधि कीयौ❀घर कौ कारज सब तजि दीयौ ६७
बैठी रही [2]बलि माइ जु पास❀हौन न दीनी मोंहि उदास ।
पुर बनिता मन लीये रहती❀मीठी मीठी बातें कहती ।।६८।।

---

[1]—मैया पूछती हैं श्री नन्द जी का प्यार सुना, [2]—रोहिनी जो ।

चलती बार नगर की भांम❀आई सिमिटि महरि के धांम ।
अति सनेह झलक्यौ सब उरमें❀परम सुसील वधू उहि पुर में ६९
मिलीं सभी करि गाढी प्रीति❀कहा वरनौं तिन की रस रीति ।
वार वार मैं तो सौं कहौं❀महरि प्रेम कौ अन्त न लहौं ७०
ललतादिक मो रुचि अनुकूल❀उर बर रहीं बढावति फूल ।
धाइ रही नित मो मन लिये❀तेरौ सौ हित जाकै हिये ॥७१॥
सब समाज सुखदायक रांनी❀तो विनु तदपि न मैं रुचिमानी ।
मैं जब ही डोला पग दीयौ❀आकुल भयौ महरि कौ हीयौ ७२
यौं मुख श्रवी जु बचन पियूषन❀वेगि आइयौ मो ग्रह भूषन ।
आरति देखि महरि मन महा❀हौं भई व्याकुल वरनौं कहा ॥७३
तैं बूझो तैसैं मैं कही❀इहि विधि हौं जु सासु घर रही।
मैया तेरौ नाम जु लै कै❀सबनि कह्यौ पालागन नैं कै ७४
श्री राधा मुख सुनि यह बानी❀कीरति कुँवरि सयानी जानी ।
बातनि ही जु बुद्धि बल तोली❀माइ लली की तब हँसि बोली७५
दई दयाल जु मो पर भयौ❀मैं पहिचानि सुलच्छन लयौ ।
सुघरी जनमी मेरी लली❀राधा तू भागिनु की बलीं ॥७६॥
सब कोउ लाड करत हैं तेरौ❀पूरब सुकृत फल्यौ यह मेरौ ।
तब हँसि बोली चम्पा ताई❀छोटी नैंन देखि तू आई ॥७७॥
गोरी सास जसोमति तेरो❀सुखित करी जिन अति लडीमेरी।
श्री दामा जु चिरावतु रहतौ❀तेरी सासु सांवरो कहतौ ॥७८॥
तू सुनि रोस महा मन भरती❀माइ निहोरे बहु विधि करती ।
अब प्रतीति तेरे मन भई❀नैंननि सासु देखि तैं लई ॥७९
सुनि मुसकानी सकुची लली❀ताई मुख जु बात सुनि भली ।
मैया मोहि खिजावति ताई❀पुनि जु हँसति रंभा भौजाई ८०

बेटी बचन मानि तू मेरो❀ये सब लाड करत हैं तेरो ।
गौरंगी पै हौं बलि गई❀चिरे न कुँवरि अब स्यांनी भई॥
हँसि बतराति कुँवरि भरि लाड❀परति कपोलनि सुन्दर गाड ।
राधा मिली प्राँन संपदा❀तन करि मन करि लाडैं सदा॥
पल पुतरी रच्छा करैं जैसे❀तात मात नित राखत ऐसैं ।
गौर स्याम इहि विधि सौं पलैं❀लीला ललित विस्तरैं भलैं॥८३
दिन दूलह ब्रजपति सुत सोहै❀श्री राधा सम दुलहिनि को है ।
रूप कलप तरु इत उत दोऊ❀देखि अचर्ज मानत सब कोऊ८४
जो न वेद आगम लषि परी❀गोपनि ग्रेह अस लीला करी ।
अति कमनीय गोप जस रूरौ❀वरनौं मंगल महा गरूरौ ॥८५॥
जननी जनक सिन्धु सुख तरैं❀बाल चरित सब के मन हरैं ।
लीला मधुर मोहिनी अति है❀सब की प्रेम भिजाइ मति है ८६
कोटि ब्रह्मांडनि की ठकुराइ❀बाल केलि करि सो जदुराई ।
लोक रीति सब खेल जु रचैं❀तिन में परम अलौकिक सचैं ८७
प्रेम मई प्रभुता विस्तरी❀गोपनि तनक न जानी पडी ।
कहुँ कहुँ प्रबल पराक्रम जान्यौ❀सो गोपनि जु देव वरु मान्यौ ८८
सुरपति[1] और विरंचि न बूझि❀कहौ परै सो काकौ सूझी ।
नेमी होहि सु खोजैं मर्म❀प्रेमिनु कौ भूलनि ही धर्म ॥८९॥
ब्रज जन सब ही प्रेम रँग रँगे❀ग्रह बन डोलैं पाछैं लगे ।
[2]मुरली मंत्र जु चेटक भर्यौ❀तिन सब विस्व आपु वस कर्यौ॥
अधिरनि लगि मुरली बल भरी❀चित जु चुरावत काहु न डरी।
मन आकर्षन विद्या साजी❀हरि अधरनि लगि अतिही गाजी
अति सुकुँवार लाल छबि सींवां❀मुरली भार नमित भई ग्रीवां ।

१—इन दो पंक्तियां में ब्रज की मधुर उपासना तथा प्रेम का स्वरूप संकेत में कह दिया गया है तथा नेम प्रेम का स्वरूप भी है, २—मुरली मंत्र प्रिये राधे प्रिये श्याम है ।

मोहन मूरत किहि निर्मई❀महा रूप की माची हई[1] ॥९२॥
जब दृग लखी सुता वृषभांन❀भूलें अपनौ रूप गुमान।
पटा बिछाइ जबहि बैठाई❀वाम भाग गौरंगी आई ॥९३॥
अंचल ग्रंथि जुरत सुख सरस्यौ❀औरौ रूप लाल कौ दरस्यौ।
जिनि उर हो सनेह कौ कनिका❀समझि परी तिनकौ यह [2]बनिका
मरमी सखिनु वारि पियौ पांनी❀दुहुँ हिय की जु लाग पहिचांनी।
रूप[3] बदल सौ इत उत रहैं❀छिन छिन बढै कहा कोउ कहैं ९५

दोहा—वरन्यौं मंगल व्याह कौ, रस मय चरित अनंत।
यह सागर उत्साह कौ, किहि विधि लहौं जु अन्त ॥९६॥
हरि लीला जु विलास यह, तन्त्र[4] मध्य कह्यौ व्याह।
सो भाषा विस्तार करि, कियौ मन सफल उमाह ॥९७॥
बन्दौ श्री हरिवंश विभु, सुमति प्रकाशनि हीय।
दरसायौ सागर रतन, रसिकनि लगै जु प्रीय ॥९८॥
मंगल व्याह की मोहनी, रसिकनि के हित काज।
कहत सुनत सुख भीजी हैं, भुवतल सुमति समाज॥९९॥
रस पद्धति के जे धनी, तिनके परम प्रसाद।
वृन्दाबन हित रूप यह, कथ्यौ जुगल अहिलाद ॥१००
[5]ब्रज भाषा ब्रज जननि प्रिय, उक्ति जुक्ति बहु नांहि।
लीजो रसिक विचारि कै, जो संपति या मांहि ॥१०१॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री लाडिली जू बरसानें आगमन बरनन विवाह मंगल अट्टावनवीं लहरोकी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे ॥

१—आश्चर्य या गाढ, २—बानिक या योग, ३- विवाह के पीछे छद्म लीला कर परस्पर मिलते रहे जब श्रीजी बरसानें चली गईं, ४—प्रमाण शास्त्रीय दे रहे हैं जहां विवाह का बरनन है, ५—ब्रज भाषा की महिमा मुख्यतया कह रहे हैं।

॥ अथ उनसठवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा–मो सिर धनी रसिक मनी, श्री हरिवंश कृपाल ।
देहु सुमति मंगल रचौं, गौनौं राधा लाल ॥१॥
श्री हित रूप प्रनम्य पद, सिद्ध होहि सब काज ।
चरित भानुजा नन्द सुत, बरनौं सहित समाज ॥२॥
प्रेरिक मेरी सुमति कौ, समरथ परम दयाल ।
को को किये न रस धनिक, कर वर धरि तिन भाल॥३॥
मंगल ब्याह भयौ जबहि, बीते ग्यारह मास ।
गौनौं करन बढ्यौ अधिक, ब्रजपति हिये हुलास ॥४॥
सुभ तिथि वार विचारि कै, प्रोहित दियौ पठाइ ।
गौनै की विधि कीजिये, ए जू रावलि राइ ॥५॥
पत्र लिख्यौ ब्रज राज जू, अच्छर भरे सनेह ।
हम गुन सुमिरत आपु कै, जानौं निरसन्देह ॥६॥
कृपा द्रवित उर वर रहै, अमी श्रवनि रहै बैंन ।
आपु समान जु आपु ही, प्रनतनि आनन्द दैंन ॥७॥
लिखत ललित कर पत्रिका, नन्दीस्वर कौ ईस ।
मेरौ चित तुम पास है, जानौ बिस्वे[1] बीस ॥८॥
[2]श्री खेलत तुम धाम नित, दैंन अमानिनु मान ।
मंगल बसत सदेह जहाँ, कमनी पुर ब्रषभाँन ॥९॥
वदन देखि सब दुख छिपै, रच्यौ विधि उच्च ललाट ।
अस प्रभुता प्रभु ने दई, सुकृत्त खुले कपाट[3] ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

सिधि श्री सर्वोपरि धाम❀रावलि पुनि बरसानौं ग्राम ।

---

[1]—निश्वास पूर्वक, [2]—श्री राधा जी, [3]—प्रभुता घर द्वार में बसी है ।

देस भयाने अधिपति एक❀जिनकौ उपमा बनति अनेक ११
परजा पालत न्याइ जु-नीति❀सब प्रांनिनु सौं सहज समीति।
सरवर कौंन आपकी करै❀सज्जनता उर उभली परै ॥१२॥
सदा धर्म रति कुल चलि आई❀इक रसना कहा करौं बडाई।
मही भाँन कुल के जु मयंक❀प्रभुता देखि होति सुर रंक ॥१३
विप्र गऊ प्राते पालत सदा❀सेवति पौंरि अचल संपदा।
सब लाइक जु तात श्री दाम❀रवि कुल तिलक सकल गुन ग्राम॥
अस करनी जु लोक इहि मांहीं❀इक रसना कहि परत जु नांहीं।
निर्मल जैसे गंगा तोइ❀तुम सरवर जु कौंन ते होइ १५
बडडे[1] सुमति करत परसंश❀धनि तुम जनक उच्च रबि वंश।
तुम मिलि हम पाई अति ओप❀आसन उच्च दिपत कुल गोप ॥
नौ भ्राता मिलि राजत ऐसैं❀उडगन जुत उडराज[2] सु जैसैं।
करुना कुशल दीन दुख हरनैं❀उर अभिलाष सबनि के भरनैं १७
ह्यां नित कुशल आपु परताप❀तुम जस कौ नित करत अलाप।
कुशल आपुकी नित प्रति चहैं❀घरि घरि पल छिन बांछित रहैं॥
पत्री जोग्य जु रावलि धनी❀लीजौ मानि बीनती घनी।
बहु परनाम बारहू बार❀बाचौगे नर नाथ उदार ॥१६॥
बहुरि लिष्यौ नृप लैं कै नाम❀कियौ जुहार कृष्ण बलराम।
समाचार अब लिष्यौ जु और❀सुनियौ तुम गोपनि सिरमौर २०
कियौ ज्योतिसिनु यह जु विचार❀करौ वर्ष मधि गौनौं चार।
सुभ नक्त्र सुभ दिन सुभ मास❀हम लिखाइ भेज्यौ तुम पास २१
अरु मुख वचन विप्र के सुनिकैं❀लीजौ आपु महा मति गुनिकैं[3]।
अधिक मगन ह्वै गोकुल ईस❀श्री दांमा कौं लिखी असीस २२

---

[1]—बडे बडे बुद्धिमान, [2]—चन्द्र, [3]—विवेकवंतो बुद्धि से निर्णय करें।

दई पत्रिका लिखि कर विप्र❀कियौ गवन बरसानैं छिप्र ।
रावलि पति की जहाँ अथाई❀सुन्दर सुर तरु तहाँ परछाई २३
पुर जु अलौकिक रचना ऐसी❀लोकनि उपमा दीजै कैसी ।
कंचन मणि मय आंलय कमनी❀बिछै बिछौंना सुन्दर अवनी २४
राज सभा तहँ बैठे गोप❀कोटिगुनी सुर पुर ते ओप ।
तिन मधि राजत रावलि ईस❀आइ विप्र तहाँ दई असीस ॥२५
सीस नाइ पुनि आदरु दियौ❀अति सनमान विप्र कौ कियौ ।
बूझत ब्रजपात कुल कुशलात❀अति लाइक श्री राधा तात २६
पत्री बांचि अधिक मुद भरे❀समाचार सब जाने परे ।
नौ भ्रातनि मिलि कियौ विचार❀विप्र बुलाये ताही बार ॥२७॥
निर्मल सुदिन सुधायौ भूप❀सांमां सजियन लागी अनूप ।
रावलि पति रांनिवास जु गये❀समाचार सब बरनत भये ॥२८॥
कीरति कहति सुनौ नर नाथ❀आवैं गोप अति लडे साथ ।
जैसो विधि कीनी दिन ब्याह❀ऐसोइ अब कीजै उत्साह ॥२९॥
राधा सी बेटी जग नांहि❀बात विदित यह लोकनिं मांहि ।
मुरली धर समान वरु को है❀लाड करत सब ही विधि सो है३०
तिन कौ अब जु बुलावौ ऐसौ❀विदित होइ जग में जस जैसौ ।
बंधुनि सहित घोष पति आवैं❀संग सखा मुरली धर लावैं ॥३१
ऐसोई तुम मंगल रचौ❀सब ही विधि की सामा सचौ ।
ज्यौं जस भयौ ब्याह की बार❀तैसोई अब करौ विचार ॥३२॥
भये मुदित सुनि रावलि धना❀जनक उदार जु कंचन तनां ।
असन कराइ विप्र सनमान्यौ❀बचन सजन कौ सादर मान्यौ३३
नित उठि आदर कीयौ नयौ❀अधिक सुषित भुव देव जु भयौ
बन्धु जोरि मंत्रिनु लै साथ❀पत्री भांन लिखतु अपु हाथ॥३४

सिद्धि श्री सर्वोपरि लाइक❀गोप मुकुट मणि प्रणित[1] सहाइक
गुन आलय नन्दीस्वर ईस❀को करि सकै तिहारी रीस[2] ॥३५
कृष्ण जनक जग विदित बडाई❀बडे बडे जु मुनीसनु गाई ।
कुल परजन्य दई अति ओप❀तुम ते उपमा पावत गोप ॥३६
गोपालक तुम सम को वियौ❀प्रभु रचि पचि जु आपु कौ कियौ।
परम दयाल विदित जग मांही❀पूरब सुकृत सिन्धु मित नांही३७
सदा धर्म रति विपुल प्रताप❀अमी श्रवित मुख मधुर अलाप।
करनी निर्मल गंगा नीर❀हृदौ देखियै अति गंभीर ॥३८॥
सत्य प्रतिज्ञ साधुता अंग❀अलभि लाभ पै यै तुम संग ।
सज्जनता की मूरति मनौ❀लच्छन महत किते तन गनौ॥ ३६
आपु रजधानी लागति नीकी❀अमर पुरी जा आगे फीकी ।
प्रफुलित रहै सदा मुख वारिज❀अचल विराजत आसन आरज[3]
कृष्ण जनक तुम राजत जहाँ❀मंगल अमित बसत नित तहाँ ।
भांति भांति आनन्द जु दाइक❀विधि सिरजे तुम एकै लाइक ४१
कृपा रावरी कहा बखाँनौं❀प्रीति अपूरब तुम करि जांनौ ।
तुम जस हरै जगत अघ ऐसैं❀जल की पंक[4] सरद सांस जैसैं४२
बहुत भांति आधीनी करी❀पत्री लिखी सनेह जु भरी ।
ब्रजपति जोग्य पत्रिका एह❀बाचौगै अति मानि सनेह ॥४३
बहु परनाम अँगाकृत कीजौ❀समाचार मन दैं सुनि लीजौ।
कुशल सरूप आपु ब्रज राज❀तुम गुन सुमिरत सहित समाज॥
ह्याँ नित मंगल तुम जु सुदृष्टि❀भांति भांत रहैं आनन्द वृष्टि ।
राम कृष्ण कौ आसिक कहियौ❀चिरंजीव नित नित प्रति रहियौ॥
पत्र सनेह भर्यौ जु पठायौ❀परमानन्द बाचि करि पायौ ।

१—आश्रितों के, २—अनुकरण या समता, ३—आर्य्य चन्द्र वंश, ४—कीचड ।

जो कछु लिखी आपु रस रीति❀हम मानी जु सतगुनी प्रीति ४६
मंगल काज विचार्यौ जो है❀सादर हम कौ करनौ सो है ।
गोप वृन्द लैं अपने साथ❀इहि पुर पग धारौ ब्रज नाथ ४७
राम कृष्ण के जेते ग्वार❀सब हीं आवैं तिन कै लार ।
हमहिं आइ कै उपमा दीजै❀तुम सब जोग्य विचारि सु लीजै।।
असन कराइ दर्ब बहु दीयौ❀विप्र विदा जु पत्र दै कीयौ ।
ब्रजपति सौं द्विज वर कहि दीजौ❀पत्र वीनती मानि जु लीजौ ४९
नन्द अथाई बैठे जहाँ❀विप्र पत्रिका दीनी तहाँ ।
पत्री वाचत गोकुल रांनौ❀तन मन फूलनि कहा बखानौं५०
प्रीति सजन की जानी परी❀चलिबे कौ सोधी सुभ घरी ।
अच्छर अर्थ विचार जु करैं❀त्यौं त्यौं उर अति आनन्द भरैं५१
समाचार जसुमति सुनि २ कै❀तन मन मुदित होति पुनि २ कै ।
बोली सब ही पुर की भाँम❀मंगल हरषि गवावति धाँम ।।५२
गाइनु लै मुरली घर आये❀समाचार गौनें के पाये ।
ग्वाल कहत सुनि रे सुनि भैया❀गौंनौ कर्यौ चहति तो मैया ५३
तू बरसानैं चलि है जबै❀ग्वाल चलैंगे तो संग सबै ।
दिन भये बहुत खात वन छाक❀तौ ससुरारि बनै बहु पाक ।।५४
इच्छा भोजन करि हैं तहाँ❀ऐसौं बानिक बान है कहाँ ।
देषे नहिं सुनै नहि कान❀जे पकवाँन होत घर भाँन ।।५५
देखि देखि हम चकित भये❀ब्याह समय जेंये नित नये ।
घेर घिरारौ अति अभिराम❀चन्द्र कला है जिनकौ नाम ५६
तिनकौ स्वाद परतु नहिं कह्यौ❀रसना पुनि मन में रमि रह्यौ ।
नाँनाँ विधि पकवाँन जु परसे❀घेवर बावर और अँदरसे ।।५७।।
कहाँ लगि कहिये पाकनि नाँम❀यह चतुराई वाही ग्राम ।

पुनि ग्वालनि कैं जुरे समूह❀लागे करन परम कौतूह ॥५८॥
मोहन भाग बली रे भाई❀जिन ऐसी ससुरारि जु पाई।
जब जब तू ससुरारि जु जैहै❀नये नये पकवाँन सु खैहै ॥५९
दई नवाइ दियौ तरु डारौ❀अमृत फलनि फल्यौ जो भारौ।
पीलू पैंचू बन में खाये❀विधना यह पकवान दिखाये ६०
चतुराई की अवधि निहारी❀भैया उहि पुर श्रिष्टि जु न्यारी।
ह्वाँ गयें तो आदर बहु बढै❀अँग अँग रूप सतगुनौ चढै ६१
काहे न फूलै तेरी छाती❀दिन द्वै के भूलत न बराती।
ठोडी गहि जु कहत हम टेरि❀मोहन अब कैं लै चलि फेरि ६२
आवैं देखि जु वह रजधाँनी❀भाँन भँवन जैंवैं महिमानी।
बनिता बैठी करैंगी गाँन❀तेरौ जस हम सुनि हैं काँन ६३
अरे मनसुखा धूत जु महा❀कूटक[1] रचन लग्यौ तू कहा।
हांसी बहुत रुचत है तोहि❀बारम्बार चिरावैं मोहि ॥६४॥
बात एक जो कहूं सुनि पावै❀ताहि सतगुनी कर जु दिखावै।
औगुन अधिक बसे जा अंग❀ताकौ को लै चलि है संग॥६५
घर लगि मोहि जान नहिं दियौ❀मारग ही में आडो भयौ।
करन लग्यौ अधिकी गलबाज[2]❀तेरेई घर आयौ राज ॥६६॥
वक्ता ह्वै बाचत जु पुरान❀ग्वाल सुनत सब दै दैं कान।
हँसत लाल भीतर कौं गये❀माइ आरतौ करि घर लये ॥६७
बनिता गावति मंगल जहाँ❀मोहन कौं दुलरावति तहाँ।
मैया बात कहौ मो सौं भल❀आजु कहा यह गावति मंगल६८
बेटा मैं गौनौं सुधवायौ❀विप्र सन्देसौ लैं कैं आयौ।
जैसैं ब्याह दुलहिनि लाये❀तैसे ही सब गोप बुलाये ॥६९॥

---

[1] —धोखा बाजी या कपट से ताना मारना, [2] —व्यर्थ की बकवाद।

लै संग तात सजन घर जैयौ❀गौनौ करि दुलहिनि घर लैयौ।
सकुचि कछू मुख मोरि जु लयौ❀उर आनन्द सतगुनौ भयौ ॥७०
ताही छिन ब्रजपति घर आये❀समाचार सब कहि समझाये।
महरि कहति अब विलम्ब न लावौ❀इत उत कौं वागैं न्यौंतावौ७१
अति अमोल इहि साहे लाइक❀समझि लेहु गोपनि के नाइक।
पट भूषन ग्वालनि कौं देहु❀जे मोहन सौं करैं सनेहु ॥७२॥
दिन द्वै रहै गहरु नहिं कीजै❀सजन सनेहिनु बोलि जु लीजै।
सब गोपनि कौं एकत करौ❀चलिबे कौं विचार मन धरौ॥७३
जिहि विधि सौं जसुमति उच्चरी❀ब्रजपति नें सोइ विधि करी।
पत्र लिखाइ पठाइ जु दये❀जहाँ तहाँ नेगी लै गये।
आये सिमिटि जु गोपनि वृन्द❀त्यारी कीनी घोष नरिन्द।
रथ पुनि सकट बहिल वाहनी❀हय गय पैदरि सैंना घनी ॥७५॥
चलिबे कौं सुभ दिन जब आयौ❀सबहिनु रचि सिंगार बनायौ।
माइ जिमाइ सिंगारे मोहन❀कोटि मदन हूं ते जन सोहन ७६
ग्वालनि कौं पट भूषन दये❀ते बनि ठनि जु स्याम संग भये।
पुनि सजि निकसे नौ हूं नन्द❀पुर वरषत अतिसय आनन्द॥७७
हलधर लगत सखनि मधि भलै❀अनुज संग यह हूं बनि चलै।
गोपुर उच्च दुंदुभी घुरैं❀गाँव गोइरैं सब ही जुरैं ॥७८॥
जूथनि बनिता आवैं जांहिं❀पंच नाद धुनि मन्दिर मांहिं।
चित्रकार सिमटे जु समाज❀जहँ तहँ चित्रित मंदिर राज ७९
मागद चारण बन्दी सूत❀फिरत लगाइत घरनि[१] संजूत।
उचित साज पठवति ब्रजरानी❀बैठी सिमिटि जु द्यौर जिठांनी ८०
पुनि मोहन कौं माइ बुलायौ❀सिच्छा बचन जु कहि समझायौ।

१—सजावट करने वाले, २—पत्नियों समेत, ३—यसोदा जी लाल जी को सुसराल की शिक्षा देती हैं।

बेटा जात सजन के ग्रेह❁सबहिनु सौं कीजौ जु सनेह ॥८१
लाल बोलियौ मीठी बांनी❁मेरे अतिलड गर्व गुमानी ।
ग्वालनि सँग बोलत ज्यौं बचना❁ह्यां जिनि कीजौ ऐसी रचना ८२
सदा रहौ बन ग्वालनि मांहीं❁राज सभा में बैठे नांहीं ।
मैं के बरियां लइ परिच्छा❁सीखे नहीं तात की सिच्छा ॥८३
याते मोहि सन्देह जु आवै❁तोहि अधिक कौतिक ही भावै ।
उहि पुर है रजधानी नीति❁समझि बोलियौ करि अति प्रीति॥
वै दैं हैं नाते सौं गारी❁तुम गनियौ आदर ते प्यारी ।
मैया हौं समझत सब ऐसौ❁दाऊ हू नहिं समझै तैसौ ॥८५॥
सब हँसि परी जु काकी ताई❁जबहि स्याम यह बात सुनाई ।
चलौ चलौ सब ही यौं कहैं❁ब्रजपति बाट तुम्हारी चहैं ॥८६
चलिबे की त्यारी जब भई❁जननी हरषि आसिका दई ।
सब बनिता न्यौछावरि दैं हीं❁करवर ओट लगाइत दैं हीं ॥८७
आये ग्वाल कहत चलि भैया❁बातनि बहुत लगायौ मैया ।
चलौ क्यौं न ब्रजराज बुलावैं❁तोहि बहुत बातैं कहि आवैं॥८८
ग्वाल[1] कूर तुम बोलि न जानौ❁मैया हू की कानि न मानौ ।
ग्वाल[2] फेंकरी जहँ तहँ देहु❁क्यौं कीजै तुम सौं जु सनेहु॥८९
गौने के उमाह अति भर्यौ❁बात कहत ही तू चिर पर्यौ[3] ।
टौंडिक बन्यौं पहिरि पट चीरा❁माथै पै दमकावत हीरा ॥९०॥
आछी बात कही हम आई❁तू बोलतु सब सौं सतराई ।
गौनौं लै जा दिन घर आवै❁तब कोउ तो पै बोल न पावै[4]९१
सासु हाथ महिमानी खै है❁तब छकि[5] तोहि अधिक बढि जैहै

१—श्याम कह रहे चलौ तुम से बोलना नहीं आता गौने के घमंड में मानौ धमकाते हैं २—बे समझा की बात करना माना रोरा पत्थर फैंक दिया, ३ – सखा उत्तर दे रहा है, ४—सखा ताना देता है कि बहू घर लावेगा तो किसी से बोलना भी अच्छा न लगेगा यह माधुर्य रहस्य का संकेत किया, ५—मस्ती ।

यह सुनि कै मोहन हँसि दयौ❀सादर सखा अंक भरि लयौ ॥६२
महा धूत नकली रे भैया❀तुम तें डरपतु होइगौ दैया[1] ।
इक कोउ वधू ललौरी[2] आई❀कानि लागि तिन यों समझाई ॥
लला करन तुम जात जु गौनौं❀जिन कोउ मोहि लेहि कर टौंनौं।
बलिदाऊ के जोटा रहियौ❀समझि बूझि कै बात जु कहियौ ६४
उहि पुर की भूमी जु सोहनी❀मूरति वन्त बसत मोहनी ।
ऐंडी बैंडी बात न कहि हौ❀टगर टगर[3] मुख देखत रहि हौ॥
हँसि हँसि सब ही कूंटि सी करैं❀सब की बात लाल मन धरैं ।
निकसि लाल पौरी जब आये❀विप्रनि आसिक बचन सुनाये ६६
भये पालिकी में असवार❀लागि चले अगनित जन लार ।
ब्रजपति संग गोप गनं जहाँ❀आइ मिलै मुरली धर तहाँ ॥६७
बाजे बाजैं आनन्द भरे❀वरसानें ओरी पग धरे ।
बनि ठनि चले जु गोपनि टोल❀जहँ तहँ बजत दुंदुभि ढोल ६८
मारग सोभा देत जु भले❀ढाढी विरद बखानत चले ।
बन्दी अधिक प्रसंसा करैं❀दुहुँ दिस चँवर लाल सिर ढुरैं ६६
कुशमित जहँ तहँ भयौ वनराज❀गुंजतु तिन पर अलिनु समाज ।
पंछी करत मोहनी नाद❀सुनि सब उर बाढतु अहिलाद ॥
हरि हलधर इक संग बैठाये❀रथ धुर बहिलनि सखा चढाये ।
कोउ बैठारे सकट मझार❀कोउ भये अस्वनि पै असवार १०१
वागैं मोरि मोरि दौरावैं❀मोहन कौं चातुरी दिखावैं ।
ज्यौं ज्यौं आवतु है पुर[4]नीरौं❀त्यौं त्यौं होत लला उर सीरौं[5] ॥
औरै लसति अंग की ओभा❀मुख पर बढी सतगुनी सोभा ।
नीकैं निरष्यौ वट संकेत❀विरमि प्रेम सर कौ सुख लेत १०३

१—विधि या दैव, २—खुशामद या लल्लो चप्पो करने वाली, ३—क्रीडा कौतुक सम, ४—निकट, ५—प्रफुल्लित ।

अस बने गोप ऊजरे गात❀वारौं कोटिक मदन बरात ।
पीरी पोखरि आये जबै❀गहरे बाजे बाजैं तबैं ॥१०४॥

दोहा—आगे आयौ लैंन कौं, राजु कुँवर श्री दाम ।
किऔ जुहार ब्रज राज कौं, मिले कृष्ण बलिराम॥१०५॥
तंबू तने जु गोइरें, पीरी पोखरि तीर ।
सैंना छई चतुरंगनी, जहाँ तहाँ सोभा भीर ॥१०६॥
पुर प्रवेस कियौ घोष पति, लिये गोप गन संग ।
हलधर मुरली धर सहित, चले मन बढी उमंग ॥१०७॥
राज सभा वृषभांन की, कमनी बहु विस्तार ।
कनक भीत रतननि खचित, बिछै बिछौंना चारु[1] ॥१०८
सजननि कौं सादर दियौ, तहाँ बैठना जाइ ।
कृष्ण जनक बैठे जहाँ, नापित[2] धोवत पाइ ॥१०९॥
सरबत के आये कलस, पठये श्री वृषभाँन ।
गोप सभा[3] कै सुर सभा, करत अमी ज्यौं पान ॥११०॥
चित्रनि की रचना निरखि, मुदित कृष्ण बलराम ।
बाँहां छोरी फिरत हैं, तिन आगे श्री दाम ॥१११॥
ऊँचे आसन गोप पति, बैठे सभा बनाइ ।
बंधुनि जुत आये मिलन, तहां जु रावलि राइ ॥११२॥
सादर भेंटे अंक भरि, गोकुल रावलि भूप ।
पुनि सब मिलत जु भेंट दै, वृन्दाबन[4] हित रूप ॥११३

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री कृष्ण ब्रजराज गोपनि सहित श्रीवृषभान पुर आगमन उनसठवीं लहरीकी जैजै श्रीहितहरिवंश श्रीराधे ॥

---

[1] —सुन्दर, [2] —नाई, [3] —मानौ देवता अमृत पी रहे हैं, [4] —श्याम सुन्दर संकेत में दूसरा अर्थ है ।

॥ अथ साठवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—को सुख बरनौं भान पुर, गौनौ राधा लाल ।
कहौं सुमति जौ देहु तुम, श्री हरिवंश कृपाल ॥१॥
महा चोज रस सों सनी, दुहुँ भूपनि की बात ।
समझि हँसत हैं परस्पर, हिय वारिज विकसात ॥२॥

॥ चौपाई ॥

बैठे दोउ घोष के रांनैं❀गूढ पहेरी सी जु बखानैं ।
कहा वरनियैं गरुवी प्रीति❀दरसत लोक अलौकिक रीति॥३
गोपनि सभा देखिबे लाइक❀जिन आगैं जु रंक नभ नाइक[1]।
आसन एक भूप दोउ राजैं❀देखत उपमा सब ह्वां लाजैं ॥४॥
नन्द निकट बैठे श्री दाम❀रावलि पति ढिग सुन्दरस्याम ।
वे सकुचैं यह लाड जु करैं❀ग्वाल देखि हर हर हँसि परैं ॥५
दोऊ भूप जु बूझत ऐसैं❀समभयौ परै सयानप जैसे ।
तुम दोऊ ग्वालनि सिर मौर❀खरिक छये कहौ किहि किहि ठौर६
पुनि जो कहौ गांवनि के नाम❀चतुर सुनैं मोहन श्री दांम ।
देहु गनाइ किते तुम ग्वार❀गाइनु को न पाइ हौ पार ॥७॥
सकुचि लाल भुवपति दिस चह्यौ❀मुख तें बचन मधुर कछु कह्यौ ।
हम बालक खेलन रुचि घनी❀गनिवौ समझैं अवँनी धनी ॥८॥
पुनि श्रीदांम कह्यौ सुनि लेहु❀हमैं मगाइ खिलौंना देहु ।
लाड पलैं बालक लघु गात❀गाइ चरावन बन लैं जात ॥९॥
कबहि पढे हम मंत्रिनु साथ❀लेखौ बूझत हौ ब्रज नाथ ।
खेल अनेक सखनि संग खेलैं❀ऊँचौ नीची गेंद बगेलैं ॥१०॥

---

[1] १—आकाश का नाइक सूर्य चन्द्र यह दोनों भूप भी सूर्य चन्द्र वंश के हैं ।

छाक जाइ ग्वालनि मिलि पावैं❀गाइ चराइ खरिक लै आवैं ।
दै दै सैंन स्याम कहवावैं❀सुनि सुनि गोपनि मन अति भावैं ॥
यह समझत हैं मंत्री राज❀हमैं कहा बूझत महाराज ।
करि करि प्रीति गोप सब बोलैं❀लरकनि की जु बुद्धि कौ तोलैं १२
रचियत पाक चढे जु कराह❀पुर होइ रह्यौ महा उत्साह ।
रचे पकवाँन जु रीति अनेक❀उज्जल महा एक ते एक ॥१३॥
भोजन की त्यारी जब भई❀प्रोहित आइ खबरि तब दई ।
उठे भूप दोऊ भुज गहैं❀रस बतियनि सुख लाहौ लहैं १४
राम कृष्ण कौं आगैं लै कैं❀तन मन अति आनन्दित ह्वै कैं।
ठठुकि ठठुकि पग अवनी धरैं❀पुर सोभा अवलोकन करैं ॥१५॥
चौक चौतरा सब घर द्वार❀हाटक रतननि जटित किवार ।
सोभित ऊँचे अटा अटारी❀बन्दनि माल मणिनु की जारी १६
छज्जे फटिक छबीले जिन में❀नाना चित्र विराजत तिन में ।
विद्रुम देहरि अति सै लसैं❀हीरनि[1] पांति रदन मनु हँसैं १७
तने चन्दोवा सोभा घनो❀जलज मणिनु की झालरि बनी।
नव दल कुशम अलंकृत माल❀अस गोपनि के सदन विशाल १८
चौक चौतरनि बिछे बिछौंना❀अगर धूप मंडित सब भौंना ।
जहाँ तहाँ विप्रनि चटसार❀बालक पढत पौंर अगिवार[2] १९
नीर गुलाब जु सींचो गली❀तिन में उठति सुगंध जु भली ।
अस रचना जहाँ अगनित धाँम❀चौपरि[3] के बजार अभिराम २०
सदन सदन प्रति रचना नई❀विधि की शृष्टि न यह निर्मई[4]।
तोरन रतन झूमिका झमकैं❀उच्च लिलाट भवँन मनु दमकैं ॥

१—विद्रुम देहरी मानो हँस रही हैं देहरियों में हीरे ऐस जड़े हैं मानो दांत हैं और हँसने पर दीख रहे हैं, २—आगे आगे या पौंरि पाठशालाओं की सुगन्धि द्रव्यों के धूपों से महक रही है, ३—बडे बडे चौक बाजार हैं, ४—बनाई हुई ।

सुधर्म रति जहाँ परजा बसैं❀गावत रावलि पति के जसैं[1]।
अज्ञा लिये चलैं सब राज❀आनन्दित नर नारि समाज।।२२
राधा मोहन पंछी उचरैं❀पगन पैंजनी जहाँ तहाँ विचरैं।
चारचौ वरन वसैं जहाँ ऐसैं❀माइ गर्भ में बालक जैसैं ।।२३।।
नौ सुत मही भांन कुल दीप❀तिन में श्री वृषभाँन महीप।
देस भयानैं के यह धनी❀त्रिभुवन भूपनि के सिरमनी।।२४
राधा जनक विदित जग मांहीं❀सुरनि ईस नख पटतर नांहीं[2]।
आवत कृष्ण जनक तिन साथ❀विहँसत गहै हाथ सौं हाथ ।।२५
कहौं नन्द मन फूलनि कहा❀पुर कौतिक छबि छकि गये महा।।
जित तित होइ कुशमनि की वृष्टि❀तहाँ तहाँ फिरत कृष्णकी दृष्टि।।
गारी गावति पुर की अबला❀सुनि सुख बढतु सजन उर सबला।
कंचन की चिक द्वारनि परी❀गावति भामिनि आनन्द भरी२७
उझकति तरुनी मोहन ओरी❀अखियां भई विधु वदन चकोरी।
यह राधा कौ दूलहु सखी❀त्रिभुवन सोभा सींवा नखी ।।२८
किन विधना यह जोरी रची❀नख सिख रासि रूप की सची।
रहि री रहि मो पे सुनि लेह❀वह साँवल यह कंचन देह ।।२९
गोरौ निपट नन्दोस्वर रांनौं❀यह काकी उनहार[3] बखानौं।
यह उपजत मन में सन्देह❀देवनि कौ सौ चरित जु एह ३०
गोकुल पति मन अधिक सनेह❀सब गोपनि के बूझत ग्रेह।
पुर वासिनु सुख देत जु भलैं❀विरमि विरमि कैं मारग चलैं ३१
सब ही मन अभिलाष जु बाढै❀आइ आइ पौरिनु भये ठाढे।
भेंटैं देंहि जुहार जु करैं❀ब्रजपति सब कौ आंकौ भरैं ।।३२
मुरलीधर पर वरषें फूल❀न्यौंछावरि करि रतन दुकूल।

---

[1]—सुयश का, [2]—चरन के नाखुन को बराबरी नहीं कर सकते, [3]—अनुसार।

सोभित लाल सहाने बागैं❀लटकत चलत तात के आगैं ३३
कुंडल परति कपोलनि झांई❀रविजा जल मनु जुग रवि न्हांई[1]।
अम्बुज नील वदन छबि छीनी❀अलकनि अलि सैना रद कीनी॥
केसरि तिलक भाल पर सोहै❀भौंह गोल उपमा सम को है।
नासा पर वारौं छबि शुक की❀त्रिवली ग्रींव सींव छबि मुखकी॥
भुज आजानु[2] चलत यौं मुरैं❀तिनकौं देखि भुवंगम भुरैं।
उर पर सोभा भीर जु महा❀ह्रदनी नाभि कहौं छबि कहा॥३६
कटि कोटिक मृग राज लजावैं❀कदलि जंघ सम क्यौं कहि आवैं।
फूले अम्बुज पद लखि लाजैं❀नख दुति मनु ससि अवलि[3] विराजैं
अंग अंग पट भूषन धरैं❀मनु छबि छलकि उलँडैं परैं।
कोटि कोटि मनमथ कौ मनमथ❀चित्त वित्त हरैं परत ही दृग पथ॥
मानिक चौक घोष पति आये❀पट अमोल पांवरे बिछाये।
अब वरनौं हरि जनक सरूप❀कनक[4] कूट दुति तन ब्रज भूप३८
खिरकिनु रचित पाग सिर बनी❀रतन पेंच ताकी छबि घनी।
श्रवन जलज मणि वने अमोल❀उच्च लिलाट भौंह सुठि गोल ४०
मृग मद तिलक भाल पर लसैं❀कृपा सदेह दृगनि में बसैं।
उच्च नासिका सोभा सरसत❀रदन बतीसी हँसनि जु दरसत॥
त्रिवली ग्रींव बनी अस जांनौ❀मुख सोभा सर सींढी मानौं।
मोतिनु माल तुलसिका माल❀उर वर पर राजति जु विशाल४२
ह्रदना नाभि बनी मनु कमनी❀दिखियति कनक अलौकिक अवनी
बाजू बन्ध जटित नग जोति❀उर मणि चौकी जगमग होति४३
कर चूरा कुंदन मणि खचे❀अति ही सुघर सुनारिनु रचे।
थौंदि पुष्टि गोपनि सिरमौर❀कृष्ण जनक सम को जग और॥

१—जैसे यमुना में दो सूर्य नहा रहे हों, २—गुठनों तक लम्बी, ३—समूह, ४—सोने की पहाडी की चोटी।

दरस पाइ सब कोउ आनंदैं❀बडे बडे भूप चरन रज वंदैं ।
भौंन पौरि ठाडे यौं दिपैं❀मुख देखत सब ही दुख छिपैं४५
अखिल अंड को जो है स्वामी❀निगम कहत जिहि अन्तरजामी
सो इन कौ जु आत्मज भयौ❀नित पय पल्यौ लाड नित नयौ।।
गाइ चरावन बन्यौ जु ग्वार❀रस लीला कीनी विस्तार ।
हरि अर्धंगी सर्वेश्वरि❀महिमा महत निगम हू दुरी ४७
सो औतरी भांन ग्रेह आइ❀अतर्कि रचना कही न जाइ ।
ब्याह कियौ अब रच्यौ जु गौनौं❀अस मंगल भूतल नहिं हौनौं।।४८
ऐसे बरनत जोगी एक❀प्रेम छक्यौ जन सुनत अनेक ।
गोपनि कौ संघट जहाँ भारी❀ब्रज नारी गावति तहां गारी ४९
पंच नाद मिलि इत उत भये❀आदर दै जु सजन घर लये ।
भीतर भवन बिछे जु दुकूल❀तिन पर बिछी पाखुरी[1] फूल ५०
हरि हरि जनक धरत पग जहाँ❀मंगल कोटि उदै होइ तहां ।
अति विस्तीरन मन्दिर कमनी❀तहँ नव रंग बिछौंना अवनी५१

दोहा—पाइ ध्वाइ पौंछे जु पुनि, बैठे गोप समाज ।
नौ भ्रातनि के मध्य में, सोभित हैं ब्रजराज ।।५२।।
इक वायें इक दाहिने, राम कृष्ण जिन पास ।
कहा वरनौ ब्रजराज कै, जेतौ हियै हुलास ।।५३।।

।। चौपाई ।।

आदर दै दै सबहि बुलाये❀पंकति करि जहां तहां बैठाये ।
नगर पौंरि लग बैठे सब ही[2]❀फेरे पुनि पनवारे[3] तब ही।।५४।।
परसन कौं जु सुघर जन चले❀भाजन करनि[4] विराजत भले ।

---

[1]—फूलों की पंखरी बिना डंडी की, [2]—पंकति का विस्तार शहर के प्रवेश द्वार तक कहा है, [3]—पत्तलें खाने की परसने को रखी गईं, [4]—हाथों में ।

सोभित गोप गननि की पांति❀सामा परसत नाँनाँ भांति ॥५५
मुखिया गोप वृन्द के लार❀तिन आगैं धरैं कंचन थार।
बिछे चन्द से नीकैं लगे❀रतन जटित अति हीं जगमगे५६
चहूं दिसि कनक कटोरा धरे❀तिन में नाना विंजन भरे।
मानौ बैठी उडगन सभा❀मध्य[1] विराजति ससि की प्रभा ५७
बैठे गोप भरे अनुराग❀मनु फूल्यौ हाटक तरु बाग।
अस बानिक उपमां कहां दैंनी❀मनहुँ रची सोभा की सैंनी ॥५८
फिरत अनेक परोसन हार❀लेहु देहु बांनी विस्तार।
लाडू खुरमा खाजा परसे❀जेंवत सजन स्वाद सुख सरसें ५९
घेवर बाबर मधुर महाई❀कहा कहौं फेनिनु उजराई।
सहित मसाले मौन कचौरी❀सरस पनौरा और फुलौरी ॥६०
मोवन पूरी और सुहार❀बनी जलेबी रुचि अनुसार।
बनी अमिरती अधिक सवाद❀जैंवति देति हिये अहिलाद ॥६१
पेरा बरफी उज्जल महा❀दही बडा छबि वरनौं कहा।
घृत मेवा पर तले सलौनै❀अति रुचिदायक बनै त्रिकौनै॥६२
मोदक मधुर स्वाद देंहिं घनै❀गूंजा सरस गुली के बनैं।
देखि अन्दरसे चकत ग्वार❀परषत पुनि पुनि करत विचार६३
जबहिं परौसी चन्द्र जु कला❀चौंके देखि नन्द के लला।
श्रीदामा जु देखि मुसिकायौ❀जाइ कान लगि नाम सुनायौ६४
बनै राइतै खाटे मीठे❀जैंवत काहू नांहि उबीठे।
भाजी तरकारि जु अनेक❀नीकी बनी एक तें एक ॥६५॥
विविध भांति परसे जु अथानैं❀स्वादी गोपनि के मन मानैं।
सांमां भाजन भरैं जु डोलैं❀लेहु लेहु सब ऐसैं बोलैं ॥६६॥

१—कनक कटोरे तारागण बीच में कनक थार मानो चन्द्र है यह सोभा है, २-तृप्ति।

टैंटी कचरी घृत में तली❀रस में स्वाद देत विधि भली।
दुध लपसी सजननि कैं परसी❀जैंवत रसना अति सुख सरसी६७
मधुर मुरब्बा दौंननि भरे❀जैंवन हार अधिक सुख ढरे।
मधुर सलौंने मेवा पगे❀लै लै ग्रास सराहन लगे॥६८॥
छानी मिष्ट दधि सिता मिलाई❀पान करत सुधि अमी बिहाइ।
परसे नीबू अदरक बान्यौं❀सादर लियौ सबनि मन मान्यौ६६
अटा अटारिनु बैठी भांमिनि❀कौंधत मनौं घटनि में दांमिनि।
कनक तार चिक निर्मित करी❀ते भवननि के द्वारनि परी॥७०
तहँ राजति गुनवन्ती बाला❀नव वैंशधी[1] रूप रसाला।
ते मीठे सुर गारी गावैं❀मधुरितु कोकिल कंठ लज्यावैं ७१
ब्रजपति आये नगर हमारैं❀ब्रज रांनी किनि लाये लारैं।
सजननि कौं आनन्द जु देती❀बहुत भांति सुख वे हूं लेती ७२
नौ नन्दनि की कोविद[2] नारी❀अति उदार समधिनि जु हमारी।
जस की धुजा जसोमत्ति रांनी❀गुन गरुवे कहि सकैं न बांनी ७३
गोरी आपु स्याम सुत जायौ❀ब्रज पति कुल कौ कलस चढायौ।
तुम जिनि सकुचौ नन्द दुलारे❀हम समधिन्नि के पढत पवारे॥७४
गरग तुमारौ नाम धरचौ है❀गुन औगुन ता मांहि भरचौ है।
कही परोहित सोई जानौ❀बिलगु हमारो तुम जिनि मान्यौ॥
कहा करैं मुख एक बडाई❀ब्रज[3] महतौन सबनि सुखदाई।
सुमुख गोप सांवरौ महाई❀पटुला घरनि गुनीली पाई॥७६
तिनकी सुता नंद की घरनी❀गोरे अंग जसोमति बरनी।
गोरौ तात गौर तुम मैया❀तुम काकी उनिहारि कन्हैया ७७
राज कुँवर यह ऊत्तर दीजै❀ब्रजपति बूझि न्याव तब कीजै।

१—नई किशोर अवस्था, २—सयांनो, ३—यशोदा माता या राज माता।

ब्रजपति मुदित होत पुनि पुनि कै❀गूढ़ बचन बनितनि कै सुनि कै।
इहि बरसानैं अस चतुराई❀विधि हूं की विधिता जु भुलाई।
इहि पुर सबै विचत्तन नारी❀खोजत बात सुनावति गारी ७९
समझि गोप सब ग्रींव डुलावैं❀ऐसी गारी बनिता गावैं।
विरमि विरमि सब भोजन करैं❀गारी सुनि उर आनन्द भरैं ८०
दोऊ विधि करि पूरन भये❀हँसि हँसि सबनि आचवन लये।
जूठनि मांहि नन्द नग डारे❀पुनि हँसि डेरनि कौं पग धारे ८१
सब के बदन ओप अति बाढी❀आगें गावति चले जु ढाढी।
ऊँचै सजि ठाढी भई बाला❀नीकी विधि निरखन नन्द लाला॥
स्याम संग ग्वालनि जु समूह❀लटकत चलत करत कौतूह।
मोहन सौं सब को अनुराग❀फूले मनु बसन्त छवि बाग ॥८३
कोउ कर कुशम वगेलि जु दैंही❀कोउ कर चटकि वारनैं लैं ही।
मत्त दुरद[1] गति मोहन चलैं❀सब दृग आनन्द देत जु भलैं८४
गोपनि ते आगे बढि गये❀नांनां कौतिक करत जु भये।
इत उत दृष्टि चलत है ऐसैं❀चकरी[2] फिरै सुघर कर जैसैं॥८५
इहि पुर सबहि मोहनी साज❀देखत छके सुवन ब्रक राज।
वरसानौं छबि सागर जानौं❀मोहन नैंन मीन भये मानौं ॥८६
ग्रीवाँ ढोरि मित्र सों कहैं❀भैया इहि पुर कोउ दिन रहैं।
अब घर जाइ बहुरि कै आवैं❀काहू विधि कौ मिस जु बनावैं८७
बेली विटप कुंड अति कमनो❀चितहिं चुरावत इहि पुर अवनी।
मिठ बोलने लोग हैं जहाँ❀बसि कै सुख जु लीजिये तहाँ ८८
मित्र उपाइ बताइ जु कोई❀जिहि विधि इहि पुर रहिबो होई।
जौं न पठावैं बाबा मैया❀रहिबौ होइ कौन विधि भैया॥८९

---

[1] —द्रुत, तेज गति से बढ़ गये कि गोपियों का बड़ों से निसंकोच अपनी मधुरता पान करावें, [2] —चतुर चकरी का खिलाड़ी ।

कै सादर बोलैं वृषभान❀तौ इहि पुर रहिये महिमान।
मुरली धर नें बूझी जैसें❀उतर दियौ सखा नें तैसें ॥९०॥
ऐसैं करत मनोरथ स्याम❀गये तहाँ जहाँ कमनी धाम।
बात मनसुखा कान जु परी❀अधिक कूट मोहन की करी॥ ९१
तेरे मन की आसै[1] पाई❀तू रहि है इहि पुर जु जमाई।
गोपनि सहित घोषपति आये❀पलिंग गैंदुवा[2] भौंन पठाये ॥९२
अतरदान दै मंत्रिनु हाथ❀सादर पठये रावलि नाथ।
पूँगी फल इलाइची पान❀छावनि भरि भेजे वृषभाँन॥९३॥
अगनित कलस भरे जल लाये❀चरन पलोटन नापित आये।
गोप करत परसंशा घनी❀अति लाइक धनि रावलि धनी९४
तब मोहन रनिवास बुलाये❀करि सिंगार ब्रजराज पठाये।
बैठि जु चले पालकी मांहीं❀उर फूलत[3] मुख सकुचत जांहीं९५
टोलनि सखा चलै लगि लारैं❀आगें बंदी विरद उचारैं।
सब नव वैस मदन मनु सैंना❀मुरलीधर छबि कहत बनैं ना९६
जिहि घर की उतकंठा भारी❀तिहि घर गवनै गोप विहारी।
नगर रूप की हई परी है❀अंग निकाई सचि जु धरी है९७
एक एक कौं टेरे बुलावैं❀वह दिषि राधा दूलहु आवैं।
एक कहैं सुनि भटू सयानी❀आवतु मोहन रूप गुमानी ॥९८
इक कहै सुनि री आवौ दौरी❀ठाढी होहु आपनी पौरी।
एक कहैं सब काम तजौ घर❀वेगि चलौ देखौ मुरलीधर॥९९॥
इक कहैं इहि भूतल नाहिं ऐसौ❀मैं देष्यौ जु नन्द सुत जैसौ।
इक दौरी जु उमाहे भरि कैं❀दूध दोहनौ आँगन धरि कैं॥१००
इक गहि रही एक कै पाइ❀नंद लाल दृग मोहि दिखाइ।

---

[1]—आशय प्रयोजन या मतलब, [2]—गद्दे तकिये, [3]—नित्य विहार स्मृति मे।

इक खिरकिनु में बैठि निहारैं❀इक चढि गई ऊँचैं चौबारैं ॥१०१
इक देखन चटपटी जु हीयैं❀आवति मिहीं घूँघटी कीयैं ।
इक आँगुरी पसारि बतावैं❀वह दिषि कंत कुँवार कौ आवैं ॥
इक कहैं विधना कौ है बीयौ❀जिन यह रचि पचि एकै कीयौ ।
इक कहैं कांन सुन्यौं यह जैसौ❀देष्यौ आजु नैंन भरि तैसौ ॥१०३
इक कहै अचरज औरौ सुनौ❀आजु[1] काल्हि हूं ते सतगुनौ ।
इक कहै री या में कछु टौंना❀बदलतु रूप जु नन्द ढुटौंना १०४
इहि विधि परम कुलाहल करैं❀देखन कौं बनिता अरबरैं ।
ठठुकि ठठुकि मारग में रहैं❀सोभा लाभ लाल द्दग लहैं१०५
आये मानिक चौक जहाँ है❀विविध भांति रचना तिहि ठाँ है ।
अरघ बढाइ भवन में लये❀पंच नाद ताही छिन भये ॥१०६
कीरति लये अंक भरि ऐसैं❀देह आदरैं प्रांननि जैसैं ।
चटकैं कर जब वारनैं लैंहीं❀विविध रतन न्यौछावरि दैंहीं१०७
अति उत्साह बढ्यौ रनिवास❀फूले फिरैं जु दासी दास ।
बनिता बचन हांसि के कहैं❀लाल निरखि तिन मुख दिसि रहैं८
जुरी तहाँ नौ भांननि रांनी❀बोलत अपनी अपनी बाँनी ।
लाल कहौ मैया की बतियां❀कहा करैं द्यौस कहा करैं रतियां[2] ॥
महरि महर में प्यार जु कैसौ❀चतुर स्याम तुम वरनौ तैसौ ।
हम सौं तनिक न राषौ ओलौ❀सकुच छांडि कै सांची वोलौ११०
लला न काहू सौं रुख जोरैं❀सकुचि २ कै आनन मोरैं[3] ।
कीरति मनैं सबनि कौं करैं❀विविध भांति लाडनि विस्तरैं १११
सुख की उलभन बरनौं कहा❀मन्दिर में कौतूहल महा ।

---

[1] —यह कह रही मैं ने कल जो रूप देखा आज सौ गुना अधिक मोहक है अर्थात क्षण क्षण में वर्धमान रूप है, [2] —रात्री को, [3] —आंख से आंख किसी से नहीं मिलाते शरमा रहे हैं यह भाव है।

नव नीरद[1] तन ब्रजपति लाला❀तरुनि लसति तडित मनु माला ॥
घुँमडनि जहां सनेह चौबाई[2]❀सरसनि[3] वरसा रूप सवाई ।
अद्‌भुत रस चौमासो एहा❀आनंद वारि भान भरयौ ग्रेहा ॥
बूझति कीरति चिबुक जु गहिकैं❀लाल सुनावौ ब्योरौ कहि कैं ।
केते खरिक छये नन्दीश्वर❀केते खरिक घोष जहाँ तहँ पुर ११४
कुँवर बुद्धि लागो टकटोहन❀हँसि बहरावन लागे मोहन ।
समझि सकुचि यह उत्तर दीयौ❀कीरति सुनि शीतल भयौ हीयौ ॥
ग्वालनि हो की गिनती नांहीं❀खरिक गनैं कहौ कापै जांही ।
एक खरिक की हौं जु चराऊँ❀तिनहि गनत हौं पार न पाऊँ ११६
किते वरन गाइनु के टोला❀देहु बताइ लला मिठ बोला ।
सकुच छांडि बोले नन्दनन्दन❀वरषत मनहुँ अतुल आनन्दन ॥
धौर गऊ निकसैं इहि भांति❀मनु उज्जल हंसनि की पांति ।
स्याम गऊनिकी लसैं जु सैंनी[4]❀पावस घटा मनो छबि दैंनी ११८
पीयर गाइ टोल लसै ऐसैं❀फूलैं रितु बसन्त बन जैसैं ।
खरकनि तें चलैं तीतर वरनी❀करैं अलंकृत बन की धरनी ११९
चलैं रातुली लहडिनु जानौं❀फूला गहरी सांझ जु मानौं ।
गाइ धूमरी लसैं जु टैंनी❀काजर टोल अधिक छबि दैंनी ॥
बरनई गुरू हिरन मिगारी[5]❀जमुना वरनीं मुहि अति प्यारी ।
[6]गाँग गंग ते निर्मल महा❀तिनकी सोभा बरनौं कहा १२१
नाम अनेक अनेक जु गाइ❀कहाँ लगि वरनौं हौं समझाइ ।
रानी सुनत भरी मन मोद❀दइ असीस करि विधि तन गोद ॥
बचननि बुद्धि लाल की परषी❀राधा जननी हिय जिय हरषी ।
प्रथमहि जाम जामिनी गयौ❀ब्यारू करन जु समयौ भयौ १२३

---

[1]—बादल, [2]—चार ओर से वायु, [3]—रूप की सरस सवाई वर्षा लगी है, [4]—श्रेणी, [5]—हिरन के से सींगो वाली, [6]—गंगा जैसी निर्मल श्वेत ।

सादर सब ही सखा बुलाये❀चरन धवाइ मंदिर बैठाये ।
भांति २ के पाक जु परसे❀जिनहिं देखि सब हिय सुख सरसै
निरषैं परषैं बातैं करैं❀नाम न समझैं हिय अरबरैं ।
यह पकवाँन कहा इहिं नाँम❀कोउ कहै बूझि लेहु श्रीदाम१२५
सुबल जु वरजतु सैंननि मांहि❀सखा ऊधमौ मानत नांहि ।
कहैं मधुमंगल तुम बन बासी❀समधमांनें न करावौ हांसी ॥१२६
तब बोल्यौ जु मनसुखा ढीठ❀तोको किन है कियौ वसीठ[1] ।
बडौ चतुर तौ तुहि बताइ❀बात कहत काहे सतराइ ॥१२७॥
गोल गोल बुरे में सानी❀मुख में धरत जु तुरत बिलानी[2] ।
देखी सुनी न रसना परसी❀भैया ये जु आज ही दरसी॥१२८
अस कब तोहि जिमावै मैया❀मो सौं कहि मधुमंगल भैया ।
गुर डारे जु गुलगुला खाये❀ये पकवाँन कहाँ तैं पाये ॥१२९
जेंवत सब अस कौतिक करैं❀सुनि सुनि कैं बनिता हँसि परैं ।
इक रसना कहा बानिक भनौं❀फूली छबि फुलवारी मनौं॥१३०
नंद सुवन बैठे रनिवास❀बडभागिनु जु जिमावतु सास ।
अपने करनि देति मुख कौर❀कहै पुचकारि लाल लिहु और ॥
बार बार मनुहारि जु करि कै❀पाकनि ग्रास देति मुख धरिकै।
कबहूं मधुरे पाक जिमावैं❀कबहूं सखरे साज मँगावैं ॥१३२
रूप मोहनी कुँवर कन्हाई❀लाड करत रांनी न अघाई ।
भोजन करत भरे जु हुलास❀बिच बिच बतियाँ बिच बिच ग्रास॥
कोउ सखी सैंननि मांहि चिरावैं❀कीरति जू की दृष्टि बचावैं ।
[3]तिनकी ओर नचावत भौंहन❀आछौ नीकौ लागत मोहन॥१३४
मुरली चोरन उद्दिम करैं❀लाल सम्हारि गोद में धरैं ।

---

[1]—दूत या सन्देस पूछने वाला, [2]—घुल गई, [3]—मधुर रस के संकेत है ।

धूत सिरोमणि ब्रजपति लला❀जानत सब चोरी की कला १३५
त्रिपित भये जल अचवन लै कै❀कर ध्वाये पुनि बीरी दै कै।
कीरति लाड सुखित भये भलै❀अज्ञा लै जु तात पै चलै ।।१३६
छबि सौं निकसे नंद कुँवार❀पुनि आये जेंवत जहँ ग्वार।
कोउ अधरन ही में हँसि परैं❀कोउ सैंनन में कूट्यौ करैं १३७
पाक अपूरब भीतर खाये❀वदन पौंछि अब हम पै आये।
जल अचवन करि पौंछे हाथ❀लै बीरी जु चले हरि साथ १३८
जैसे कौतिक आवत कीयै❀तैसेइ चलत सबनि सुख दीयै।
हँसत लसत ब्रजपति पै गये❀कीनी सैन सुखित सब भये १३९

दोहा–ब्रजपति पाये प्राँन से, निरखे साँवल गात।
हँसि हँसि बूझत लाल सौं, सासु लाड की बात ।।१४०।।
कह्यौ चहत नहिं कहि सकत, रहत सकुच गहि मौन।
अति कोविद मुरली धरन, तिहि गुन बरनौं कौंन १४१
सखा कहानी कहत हैं, परम रसीले बैंन।
लाल हूंकरा भरत पुनि, झपत नींद बस नैंन ।।१४२।।
रजनी सोये सुखित ह्वै, अतिलड श्री ब्रज भूप।
अति सुख वरष्यौ भान पुर, वृन्दाबन हित रूप ।।१४३

।। इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदासजी कृत श्रीराधाकृष्ण गौनौ प्रसंग सजन हाँस विनोद तथा ज्यौंनार वरनन साठवीं लहरीकी जैजै श्री हितहरिवश श्रीराधे ।।

।। अथ इकसठवीं लहरी प्रारम्भ ।।

दोहा–भोरहिं जगि नित कृत कियौ, भाँन सरोवर न्हाइ।
पट आभूषन तन सजे, माथे तिलक बनाइ ।।१।।
राम कृष्ण मित्रनि सहित, गोपनि जुत ब्रजराज।
छबि अवलोकत भानपुर, आवत सहित समाज ।।२।।

अंचल ग्रंथि जुरावनैं, जो सोधी सुभ वार ।
डेरनि बैंठे हरि जनक, ताकौ करत विचार ॥३॥
ताही छिन रावलि धनी, दीनें विप्र पठाइ ।
मंगल कारज करहु अब, आइ घोष के राइ ॥४॥
पट भूषन जु अमोल अति, जो जो साज सुहाग ।
पठये प्रोहित साथ करि, ब्रजपति भरि अनुराग ॥५॥

॥ चौपाई ॥

बनि चले गोप पहिरि पट भूषन❀ओपे मुख ससि श्रवत पियूषन ।
रहसे फूलैं भुज गहि डोलैं❀दै दै मान सबनि कौं बोलैं ॥६॥
नौ भ्रातनि जुत ब्रज को रांनौं❀तिनकी सोभा कहा बखानौं ।
खिरकिनु[1] रचित पाग सिर सो है❀सम दीजै सु पुरन्दर[2] को है॥
रतन पेंच माथे अस चमकैं❀मनु गिरि कनक षांनि नग दमकैं
श्रवत जलज मणि ऐसें लसैं❀मनु विधु सभा जु उडुगन हँसैं ॥८
इहि विधि चितवत सब की ओर❀वरषत कृपा दृगनि की कोर ।
गोप गननि में आवत रले❀मनु सुर सुधा पांन कौं चले ॥९
पुर वीथिनु आनन्द यौं वरषैं❀गोपी गोप देखि हिय हरषैं ।
भांन भवन पांवडे बिछाये❀ब्रजपति चरन धरत तहाँ आये॥
अम्बर बिछे अजिर के मांहीं❀दुग्ध फैंन सम उपमा नांहीं ।
बैंठे गोप देत छबि महा❀अद्भुत वानिक बरनौं कहा ११
अजिर लिपायौ चौक पुराये❀तहँ विवि सुन्दर पटा बिछायौ।
गौर स्याम तिन पर बैठाये❀प्रोहित अंचल ग्रन्थि जुराये ॥१२
विधि सौं कलस गणेस पुजाये❀रोरी अछित तिलक बनाये ।
नव ग्रह पूजि वेद धुनि करी❀मंगल दर्बि गोद लै भरी ॥१३

---

[1] —उतार चढाव तह दार बन्धी हुई पगरी, [2] —इन्द्र ।

पट्टा फेरि कियौ ता पाछैं❀मांनि आरतौ कीयौ आछैं ।
बाजे बाजैं मंगल गावैं❀जै धुनि होति कुशम वरषावैं १४
अरघ बढाइ लिये ग्रह मांहीं❀कीरति उर आनन्द मित नांहीं।
रतन मूठि बनिता जु उठावैं❀नंद नाँम लै गारी गावैं ॥१५॥
इक गुलचैं इक चिबुक उचावैं❀हँसि हँसि कैं कीरति जु बचावैं ।
एक कूट की बातैं कहैं❀इक मुरली कौ चोर्यौ चहैं ॥१६
हिय फूलैं मुख सकुचैं स्याम❀करैं कुलाहल त्यौं त्यौं भाँम ।
अरी चतुर जसुमति कौ जायौ❀मैया नीकी भांति पढायौ ॥१७॥
हाँ हूं करै न उत्तर देहि❀सब की बात हिये धरि लेहि ।
दधि माखन सब पुर को चोर्यौ❀घर हूँ कौ विलोवनौ फोर्यौ १८
मैया हूं की संक न मानी❀पुर वनिता कीनी नक वाँनी[१] ।
अब तुम लाल साधुता गही❀हम बूझति इक बात न कही १९
पाक परोसि जु लाइ बनिता❀हरि हिं जिमावति राधा जनिता।
तरुनिनु ऐसे बचन सुनाये❀जैंवौ जू जसुमति के जाये ॥२०
बडे ग्रास लिहु सुधरै [२]गरौ❀हम जु सिखावैं त्यौं तुम करौ ।
बन में बिछुर जांइ जब ग्वार❀बडे गरे सौं करौ पुकार ॥२१॥
और कहति तू सिखवति कहा❀इन बातनि ये कोविद महा ।
बलिदाऊ की होड जु करैं❀उन ते दुगन कौर मुख धरैं ॥२२
वे सूधे ये अति ही बांके❀हैं जु गुनीले स्याम सदा के ।
बचन सुनत प्रमुदित ब्रजचन्द❀जैंवत देत दृगनि आनन्द॥२३॥
कोऊ विजन दुरावत कर वर❀स्वाद पाइ जैंवत मुरलीधर ।
कीरति दैंहि लाड जुत कौर❀कहे पुचकार लाल लिहु और२४

१—नाक में दम कर दिया ऐसा तंग किया २—गला बडा होगा तो बोल सकोगे अभी तक चुप रहे मानो गला ही छोटा है शब्द नहीं निकल पाता यह ताना दिया है ।

जसुमति तैं दूनौ हित दरसैं❀न्याइ[1] लाइ मोहन मन सरसैं।
जल अचवन करि बीरी लई❀तात पास चलनें मन भई ॥२५॥
करि प्रनाम लाल सिर नै कैं❀गवनैं कीरति अज्ञा लै कैं।
बैठे जाइ तात के अंक❀मनहुँ कनक गिरि उदित मयंक॥
गोपनि सभा अजिर मधि बनी❀उत ब्रजपति इत रावलि धनी।
साज दाइजे के सजि धरे❀विप्र तिलक गोपनि सिर करे२७
नौ हूं नन्द प्रथम पहिराये❀बोलि बोलि पट्टा बैठाये।
पट अमोल सुन्दर जु दुशाला❀मूँगा मोती रतननि माला ॥२८
रतन पैंच मुहरनि भरि थार❀दिये भेंट वृषभांन उदार।
पुनि सब ही पहिराये गोप❀भांन भवन बढी अतिसै ओप २६
रथ पालिकी अस्व बहु दये❀साज सुनहरी सब पै नये।
करत बीनती नौ हूं भाँन❀इत उत कीजतु बहु सनमांन ३०
उठि उठि मिले जु भेटैं दै दै❀बीरी बदलत मन कर नैं नैं[2]।
सबहि लगाइत टेरि बुलाये❀रावलि भूप सुविधि पहिराये॥३१
मन हूं की जांचकता हरी❀ऐसी अति उदारता करी।
दान पाइ सब करहिं प्रसंश❀धनि नरिंद्र लाइक रवि वंश ३२
पट भूषन पहिराये ग्वार❀जे आये मुरली धर लार।
फूले फिरत जु अजिर मँझार❀अस सोभित मनु मदन कुँमार॥
तिनमें बने मुकट मनि हलधर❀बैठारे श्रीदाम जु गहि कर।
करत कलेऊ फूले तन मन❀परसन लागे पाक सुघर जन ३४
भैया खेलनि अमल[3] जु पर्यौ❀इनि भोजन कौ उद्दिम कर्यौ।
ताते प्रथम खेल ठहरावौ❀पाछैं सब मिलि भोजन पावौ३५
हम कौं भोजन तबहि पचि है❀जौ कोउ खेल अपूरब रचि है।

---

[1] —अर्थात शोभा भी तथा उचित भी है जिससे मोहन माता का सनेह भी भूल कर सनेह में डूब गये, [2] —नमस्कार पूर्वक, [3] —स्वभाव या टेव।

अरे मनसुखा दई सँवारे❀तू ऐसेंई पढत पँवारे ॥३६॥
कहै बलिराम मौन गहि रहि रे❀क्रूर बचन जिन मुख ते कहि रे।
बैठे बडे भूप कैं धांम❀तू जँगली विगारन कांम ॥३७॥
हा हा बलि हौं तेरौ चेरौ❀एक बचन यह मानि जु मेरौ।
और खेल बनि सकै न कोई❀हौं जो कहौं करौ तुम सोई ॥३८
जाकौ है जासौं जु सनेहु❀पातरि बदलि परस्पर लेहु।
तेरी पातरि कौ हौं लै हौं❀भैया तब ही जेंवन दै हौं ॥३९॥
तब हँसि कैं हलधर यौं कह्यौ❀तू कुबुद्धि नित बन में रह्यौ।
भूखौ चढि जु डहारयौ ढाँक❀चोरि चोरि कैं खाई छाक ॥४०
तो में औगुन भरे अकूत❀तकै पराई पातरि धूत।
जो सामां मो पातरि करी❀सोई तेरे आगे धरी ॥४१॥
सुबल कही दैं कैं जु उदासी[1]❀ममध्यानैं न करावौ हांसी।
हरैं हरैं यह वाते करैं❀कोउ वरजैं कोउ हँसि हँसि परैं ४२
इहि विधि ग्वाल करैं गल बाज❀मित्र मंडली सुत ब्रजराज।
कोउ काहू की कानि न राखै❀मन आवैं सोई मुख भाखै ॥४३
मधुमंगल तब कही विचारि❀मित्र हमारे की ससुरारि।
हाँसी कूट करन परहरौ❀भैया सब मिलि भोजन करौ॥४४
मोहन सुनैं न कछु कहि सकैं❀मन मन हँसैं सखन दिस तकैं।
गूझा तोरि ग्वार मुख धर्यौ❀ताके मन सन्देह जु पर्यौ ॥४५॥
मीठौ भर्यौ कहां ह्वै या में❀रंचक छिद्र न दरसतु जा में।
विधि हूं ते अधिकी चतुराई❀कोऊ देहु मोहि समझाई ॥४६॥
स्वाद सराहैं भोजन करैं❀भोरे ह्वै बूझैं हँसि परैं।
कूट्यौ करत परोसन हारे❀सकुचतु[2] समजि नन्दपुर वारे४७

---

[1]—खिन्न चित्त से धीरे धीरे कहना, [2]—श्री नन्द जी के साथी इनके विनोदों से सकुचे।

सँगी स्याम क्यौं न होहु ऐसैं❀नन्दीश्वर पुर गुन पुनि तैसैं ।
सुबल समझि कैं उत्तर दीयौ❀ग्वाल गौगदौ सबहिनु कीयौ॥४८
नन्दग्राम सब जगत विदित है❀जहाँ कृष्ण राकेश उदित है ।
हांसी करत किधौं सत भाइ❀ब्रज सिरमौर जु गोकुल राइ ४९
हम मानैं राकेश जु ठीक❀बाहू में कलंक की लीक ।
पिता पुत्र कौ वरन मिलावौ❀तब इन बातनि सोभा पावैं ॥५०
बोलौ न्याय पक्ष तजि देहु❀बलि कौ बूझि कांन लागि लेहु ।
हँसैं भान पुर वासी कहि कैं❀हरि ब्रजपति की ओरी चहि कै॥
कहैं परस्पर ऐसे बचना❀सजन रीति की जिनमें रचना ।
ग्वालनि के जु बसन हरि लियै❀बनितनि बहु विधि चित्रित कियै॥
लै आचवन उठे सब ग्वार❀करन लगे अम्बरनि सम्हार ।
अधिक कुलाहल क्षित में माच्यौ❀फेरि लये मधुमंगल नाच्यौ ५३
एक एक तुम नाचौ सबैं❀बनिता कहैं बसन देंहि तबैं ।
दे गल बांही नाचैं हँसैं❀मुदित झरोखनि बनिता लसैं ५४
सब की चित्रित करी पिछौरी❀डारि दई करि कैं इक ठौरी ।
एक संग सब धाये लैंन❀पलटि मनहु मदन की सैंन ॥५५
करनि पलैंडैं लेत न बनैं❀करहि कौतिकी कौतिक घनैं ।
हँसत हँसत तहँ हलधर आये❀सब कौ सब के बसन दिलाये ५६
भैया बेगे करौ पयान❀पकरि लैंहि तौ ऐंचै कान ।
वरसानैं की कोविद नारी❀बैठि झरोखनि गावति गारी॥५७
मुरि देखत जु नन्द उपनन्द❀चपल कोर दृग गोकुल चन्द ।
बलि आये बावा के पास❀तन मन अतिहि भरैं हुलास ५८
मुदित बधू जन गारी गावैं❀ब्रजपति कौ इहि भांति सुनावैं ।
ब्रजरांनी जु विदित जगजानी❀निर्मल ज्यौं गंगा कौ पानी ॥५९

गौरी महरि गौर ब्रज रांनौ❀सुत जु सांवरौ किहि विधि जानौ।
तुम जिनि सकुचौ गोपनि नाइक❀सोम वंस सब उपमा लाइक ६०
आदि कथा ग्रंथनि जु बखानी❀समधिनि कै इहि विधि मनमानी।
समधिनि धन्य नटी अरु सूरा❀सब सौं करैं सनेह जु पूरा ॥६१॥
तुंगी[1] और पिंगरी नवला❀गोप गननि रिझवत अति सबला।
ब्रजपति भूवा सुजनां नांमा❀सब ब्रज जननि सुधारे कामा ६२
बहिनि नंदिनी अरु सानंदा❀सब कौं देंहि परम आनंदा।
समधी समधिन के गुन भारे❀मुनि ग्रंथनि गावत जु पँवारे॥६३
ऊँचें चितै दुरावत ग्रीवां❀धनि बनिता चतुराई सीवां।
अति उदार रावलि के रांनैं❀बहु विधि करि ब्रजपति सनमानैं॥
विदा मांगि डेरनि कौं चले❀विरद पढत बन्दी जन भले।
वन उपवन जु तडागनि जांहीं❀निरखत सोभा दृग न अघाहीं६५
नौं भांतनि के घर ज्योंनार❀रचियत नांनां पाक अपार।
नित जेंवैं नित आदर सरसैं❀नित नव प्रीति परस्पर दरसैं॥६६
नित उठि ब्रजपति चलिबे कहैं❀नितहि भांन राखैं कर गहैं।
मुरलीधर कौ लाड जु घर घर❀प्रांन समान गनैं नारी नर ॥६७
कीरति लाड कहै कहा कोऊ❀रसना[2] एक आंधरी सोऊ।
जोरा विधि समान इक कीनीं❀उपमा अधिक दुहुँ कुल दीनी ६८
गौर स्याम नैंननि भरि देखैं❀महा भाग अपनो करि लेखैं।
चलिबे की कोउ बात चलावैं❀तबहीं दृगनि नीर भरि आवैं ६९
कीरति उर अस बढ्यौ सनेह❀राख्यौ चहै दुहुंनि कौं ग्रेह।
लोक रीति मरजादा राखैं❀यह मन समझैं मुख नहि भाखैं७०
नन्द चलन की आज्ञा मांगी❀कहि नहिं सकत भांन अनुरागी।

---

[1] —ऊँची लम्बी तथा पिंगल रंग की, [2] —रसना के आंख नहीं बिना देखे कैसे बखाने।

तुम अति लाइक रावलि रांनैं❀इक रसना जस कितौ बखानैं७१
बार बार कहा करौं प्रसंश❀अति उदार मति दिनमनि वंश।
अब मो मानि बीनती लीजै❀भये बहुत दिन विदा जु कीजै७२
सज्जनता को मिलतु न छेह❀नित नव बढतु तिहारौ नेह।
तब पुनि कह्यौ गरग समझाइ❀आजु दिवस सुभ रावलि राइ ७३
भूप सुनी रिषि की मुख[1] बांनी❀ब्रजपति कही सत्य सो माँनी।
विदा करन सुभ वेला आई❀भवन आइ त्यारी जु कराई॥७४
घर घर नगर बुलावौ दीयौ❀सुविधि शिंगार कुँवरि कौ कीयौ।
जूथ जूथ मिलि जुवती आवैं❀बाजे बाजैं मंगल गावैं॥७५॥
मन्दिर ब्रजपति लला बुलाये❀सजि शिगार रथ पर चढि आये।
अरघ वढाइ भवन में लीयौ❀चौकी रतन बैठना दीयौ॥७६
[2]चहुँदिसि चलति दृगनिकी कोरैं❀मोहन मदन सबनि चित चोरैं।
दरशतु रूप और छिन छिन में❀कला अनंत विराजत जिनमें ७७
कीरति असन करायौ हित सौं❀देति असीस माहिले चित सौं।
इत उत बढी प्रेम उर गोभा❀गौर स्याम अँग वरषति सोभा७८
सजनीं हौं देखति हौं कब की❀मन गति चोरि लई है सब की।
अतर्कि कौतिक कहा बखानौं❀अंग मोहिनी बसति है मानौं ७९
सत्य कहति संजनी मैं जाँनीं❀अब मन द सुनि मेरी बाँनीं।
मैं लच्छन पहिचानैं ऐसैं❀तो कौं बरनि सुनाऊँ तैसैं॥८०
बढि कै बचन न कबहूं कहि हैं❀दुलहिनि कें अधीन नित रहि हैं।
दरसतु है सनेह की सींवाँ❀कुँवर रूप लषि नवि है ग्रींवाँ ८१
भाँन नगर तरुनी जु विचच्छन❀वरनन करति लाल के लच्छन।
कछू भनक मोहन सुनि पाई❀मन मन मानन लगे बधाई॥८२

---

[1]—मुख्य या महत्व की बात, [2]—श्याम अनादि मधुर सम्बन्ध व्यक्त कर रहे हैं।

मुसिकनि भरे सलज दृग बांके❀आँनन मोरि भौंम दिस झाँके ।
चलिबे कौं अरबरत जु जबहीं❀साजे साज चलन के तब हीं ८३
इत उत अवलोकति जब रांनी❀रोकतु प्रेम कंठ की बांनी ।
बहुत भांति दाइजो जु दीयौ❀रतन थार भरि तिलक सु कीयौ८४
पलक हांनि नहिं लोचन सहैं❀विदा करन तिहिं अतिलडी चहैं ।
मन धीरज रांनी जु धरति हैं❀विदा करन त्यारी जु करति हैं८५
तिलक करन पुर बनिता आवैं❀रोरी अच्छत सीश चढावैं ।
तीयरि[1] रतन भेंट सब धर ही❀प्राँन सुधन न्यौछावरि कर ही८६
मूरति दया भाँन नौ घरनी❀प्रीति अपूरब जाति न बरनी ।
भूषन बसन दर्बि बहु देंहीं❀करजनि चटकि वारनें लैंहीं ॥८७
मुरलीधर तुम नीकें रहियौ❀पालागन मैया सौं कहियौ ।
पंच नाद होंइँ कीरति अँगना❀राधा प्रेम भाव सब मगना ॥८८॥
मन क्रम बच लै लई परिच्छा❀कीरति करी लाल कौं शिच्छा ।
[2]बचन सासु के हिरदय धरहीं❀सकुचत अधिक हूंकरा भर हीं८९
लोक रीति समझाये बचनां❀जिनमें परम अलौकिक रचनां ।
प्रेम सिन्धु सम उमगतु हीयें❀रोकति समझि बुद्धि बल कीये ॥
तदपि न रुकत झलक ही आवैं❀समयौ समझि समझि अहुरावैं ।
लखि रांनी की प्रीति घनेरी❀उर लगै लैंन लाल चकफेरी ९१
करबर जोरि कुँवरि अनुरागी❀करि जुहार पुनि विदा जु मागी ।
कण्ठ लगाइ विदा किये रांनी❀वचन आसिका उचरी बांनी ॥९२
कहा लगि लिखौं प्रेम की पतियां❀राधा कौ लगाइ लियौ छतियां
पुनि पुनि मिलैं सीस कर राखैं❀राधा राधा मुख ते भाखैं ॥९३॥
काको ताई पुनि पुनि मिली❀सबही परम प्रेम सौं झिली ।

---

[1]—तीन वस्त्र स्त्रियों के, [2]—सासु की शिक्षा को लाल जी हुँकारा दे स्वीकार कर रहे हैं ।

साथिनि मिलीं मिली भौजाई❀पुर बनिता सब कंठ लगाई ॥९४
डोला श्री ब्रजराज पठायौ❀जो हाटक बहु रतन जडायौ।
आयौ पौंरि भीतरी जब हीं❀मंगल सगुन भये बहु तब हीं९५
रूप जोति सी उर वर लोलैं[1]❀माइ माइ यौं अतिलडि बोलैं।
भये रनिवास प्रेम के चहले[2]❀सब के हिय जिय तामें दहले[3]९६
पुर ग्रह कौ सोभाग्य जु लली❀पुनि नित माइ लाड की पली।
क्यौं सहि परैं बिछोह जु ताकौ❀प्रेम बिहून हियौ अस काकौ ॥९७
आरज बधुनि माइ समझाई❀ज्यौं त्यौं करि उर ते सुरझाई।
मिली तात सौं कंचन तनी❀अति विह्वल भये रावलि धनी॥
कोटि प्राँन ते प्यारी मो कौं❀अतिलडि बेगि बुलावौं तो कौं।
राधा रंचक धीर न धरै❀नैंन वारि निरझर ज्यौं झरै ॥९८
पुनि पुचकारि भांन यौं कहैं❀श्री दाँमा की ओर जु चहैं।
बेटा वेगि जाइ सुधि लीजौ❀बहिनि बहुत ह्वाँ रहन न दीजौ॥
ऐसैं कहि धीरज धरवायौ❀राधा प्रांन पोष सौं पायौ।
वीरहि भेटति पुनि अति लडी❀करुना बाढी तिहि उर बडी१०१
काका ताऊ सब उर लेत❀प्रेम करत सब कौं जु अचेत।
नाइनि कुँवरि अंक भरि लीनी❀डोला में चढाइ पुनि दीनी १०२
मेवा पकवाननि कोथरि❀लै अतिलडि डोला में धरी।
करुना कुशल भयाने नाथ❀दीनी धाइ कुँवरि कैं साथ १०३
सखी चढी रथ डोलनि मांहीं❀दासी दासिनि गिनती नांहीं।
हय रथ पुनि पालकि संजूत❀साज सजे जु रतन कलधूत[4]१०४
भूषन अम्बर भाजन भार❀भरि दिये सकट कुँवरि के लार।
निकसि गोइरें ठाढे भये❀ब्रजपति आपु तहां चलि गये१०५

---

[1]—चमत्कारे मार रहा है, [2]—चहल पहल या भीर, [3]—अधीर विह्वल, [4]—स्वच्छ।

समधी आइ मिले तहां दोऊ❀गरुवी प्रीति कहै कहा कोऊ।
लगि लगि अंक मिलैं सब गोप❀भेंटैं देत देत पुनि ओप ॥१०६

दोहा—बरसानैं के गोइरें, सुख सोभा मित नांहिं।
कृष्ण विराजत पालकी, राधा डोला मांहिं ॥१०७॥
दम्पति गौनैं चार जस, कहँ लगि करौं प्रसंश।
श्री सेवत बहु रूप धरि, स्वामिनि श्री हरिवंश ॥१०८॥
निधि सिधि मंगल निकर पुनि, राधा चरन निवास।
गौर स्याम हित रूप पै, बाल वृन्दाबन दास ॥१०६॥

॥ इति श्री ब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदासजी कृत श्री राधाकृष्ण गौंनौ प्रसंग बिदायगो वरनन इकसठवीं लहरी कौ जै जै श्री हित हरिवंश श्रीराधे ॥

॥ अथ बासठवीं लहरी प्रारम्भ ॥

दोहा—बन्दौं हित दम्पति हियैं, रहतु दृढ़ डरौं नित्त।
ताके कौतिक खेल ब्रज, अब वरनौं दै चित्त ॥१॥
राधा नन्द कुँवार कौ, गौनौं मंगल चार।
ताके चरित जु मोहनी, करौं सुविधि विस्तार ॥२॥
सजि ठाढे भये गोप सब, पीरी पोखरि तीर।
मिलति झिलति आनन्द उर, इत उत की बहु भीर ॥३॥
कर जोरे विनती करत, इत उत दोऊ भूप।
कहनी रहनी एक सम, दिखियत परम अनूप ॥४॥

॥ चौपाई ॥

निर्मल प्रीति परस्पर दरसै❀चलन कहैं त्यौं त्यौं उर सरसै।
हिये सनेह मधुर मुख बचना❀चोज चाइ सौं करत जु रचना॥५
कोउ सकुचैं कोउ हँसि २ परहीं❀कोउ अधिकी आधीनी करही।

कोउ दैंइ ढँकी नेह सौं गारी✽कोऊ नै नै करत जुहारी ॥६॥
रस बतियनि सौं ज्यौं त्यौं सुरझै✽चित कोमल जु प्रेम फंद उरझै।
आगे चलैं ठठुकि पुनि रहैं✽मुरि मुरि सजन सजन दिस चहैं॥
द्विज भिक्षिक आसिक दै हरषैं✽ब्रजपति धन घन लौं झुरि बरषैं।
जितौ दाइजौ आयौ लार✽कृष्ण जनक तिहि करत सम्हार८
देस भयानें पालक जो है✽भैया ता सम लाइक को है।
एतौ दियौ दाइजो साज✽मो पै सम्हरतु नाँहिन आज॥९॥
मारग चलत कहत ब्रजराज✽सुनि परसंसत गोप समाज।
भाग्य बली जस को अस बोयौ✽आदर सजननि यौं नित दीयौ॥
एकत भये ग्वाल बाजारी[1]✽कहैं स्याम सुनि बात हमारी।
पकवाँननि सौं भरे जु गाडे✽ते लै चलौ बाट तें आडे ॥११
हम कौ झोरी भरि भरि देहु✽मित्र हमारी सिख सुनि लेहु।
तू भरि पेट सासु घर आयौ✽हमहि न क्यौं तिहि बार बुलायौ॥
हम कौं भूख लगी है भारी✽कपटी लेतु न खबर हमारी।
यह सीतल जु छाँह तरु ढाँक✽तहाँ बैठारि जिमावौ छांक ॥१३
गौनौं कियौ कि पायौ राज✽भूलि गयौ सुधि मित्र समाज।
हमैं जिमाइ देहिगौ जब हीं✽आगै पाउ धरैंगे तब हीं ॥१४॥
लायौ जोरि सबनि कौ साथ✽कबहुँ न परस्यौ अपने हाथ।
बैठि पालकी फूलत मन में✽काल्हि काम परै हम सौं बनमें१५
स्याम सुनी मित्रनि की बांनी✽अति रुचि दाइक भूख कहांनी।
भैया[2] यह मनसुखा लबार✽सबनि सिखावतु बनि सिरदार१६
मेरी रंचक कानि न राखै✽मुख आवैं सोई सो भाखै।
घर चलि कै भरि दैं हौं झोरी✽मारग माहि मचाइ न होरी १७

१—अशिष्ट या लबार, २—श्याम सखाओं को समझा रहे हैं।

भैया यह पकवाँन जु नीकौ❀हम कौं लागत स्वाद अमीकौ।
बरसानैं कौ सौ पकवाँन❀हम देष्यौ न सुन्यौ कहूं काँन १८
या में ते दिवाइ दै मोकौं❀सांचौ मित्र गनौं तब तोकौं।
अरे मनसुखा लोभी महा❀तेरे औगुन बरनौं कहा ॥१९॥
कबहूं बचन कहत है रूखौ❀कबहूं कहै दीन ह्वै भूखौ।
सकट खोलि मारग में लयौ❀ओलिनु भरि पकवांन जु दयौ२०
भैया अब गुन मानौं तेरौ❀आजु कह्यौ तैं कर्यौ जु मेरौ।
हँसैं हँसावैं संकैं नांहि❀कूदि कूदि मारग में खांहि ॥२१
मोहन गौनौं लहनौं भयौ❀खायौ नित पकवांन जु नयौ।
भैया विधना की गति न्यारी❀काहू पंडित हूं न बिचारी ॥२२॥
हमहूं तौ गोपनि के जाये❀मोहन भाग्य बली जु बनाये।
गौनौ व्याह दाइजो पायौ❀देखत ईंद्र[1] कुवेर लजायौ ॥२३
सब औगुन दबि गये जु भाई❀बडे भूप घर भई सगाई।
यह तौ भागिनु ही कौ लेखौ❀कौंन कौंन को करैं परेखौ ॥२४
औरु सखा उठि बोल्यौ ऐसैं❀हौं कहौं बात मानि लिहु तैसैं।
दिन दस आछौ नीकौ खायौ❀तातैं स्याम बडौ ठहरायौ ॥२५॥
कांन खोलि सब सुनि लिहु आछैं❀काल्हि फिरैगौ गाइनु पाछैं।
ईष बीज सौं उपज्यौ जो है❀रस सौं भर्यौ देखियात सो है॥
छोटौ बडौ कहौ किन कोई❀ताकी जाति न न्यारी होई।
यह ब्रजपति कौ है अतिलडौ❀तुम हूं जौ मानौगे बडौ ॥२७॥
तौ यह काहू बदि है नांहीं❀भैया समझि लेहु मन मांहीं।
सुनि मुसिकाति सखनि की बांनी❀मोहन कहत भलैं हम जांनी२८
जौ हौं नंद बबा कौ पूत❀रिझऊँ तोहि मनसुखा धूत।

---

[1] १—इन्द्र को ईंद्र गँवारी भाषा विनोदी बालक कह रहे हैं। कुबेर को कुवेर कहा।

सकट खोलि मैं दई मिठाई❀पेट भरैं यह बात बनाई ॥२६॥
सुबल कहैं तुम बडे अरैला❀लरत मनौ विनु जोते पैला[1] ।
जैसे टाडो[2] बन जु नगर में❀ऐसेई खेल जु रचत डगर में ॥३०
हँसत लसत संकेत जु आये❀बन सोभा लखि हिये सिहाये ।
सीतल छांह सघन द्रुम सैंनी❀पथिकनि कौ जु परम सुख दैंनी३१
त्रिविध समीर अंग कौ परसै❀कुशमित बन बसन्त मनु दरसै।
रोचिक महा खगनि की बांनी❀पढत मनौ[3] रतिराज कहांनी ३२
वारिज खिले कुंड गम्भीर❀बैठे गोप तासु कें तार ।
अस कौतूहल बन के मांहीं❀ब्रजपति देखि प्रसंश करांहीं ३३
दुलहिनि कौं भोजन करवायौ❀पुनि सीतल जल पान करायौ ।
चले ग्वाल बढि पुरकी ओरी❀बहिल वाहनी सब हिनु जोरी३४
बाजेनु धुनि सुनि पुर जन विकसे❀मंगल साज लैंन कौं निकसे ।
दुलहिनि आगें दूलहु पाछैं❀रथ डौला मधि राजत आछैं ३५
सजे गोप संग आवत जांनौ❀फूल्यौ मदन बगीचा मानौ ।
मंगल गावति विप्रनि बाला❀निकसी लैंन नन्द के लाला॥३६
महरि रोहिनी अजिर लिपायौ❀बोलि सुहागिनि चौक पुरायौ ।
जरकसि पटनि बजार छवायौ❀नीर सुगंध गलिनु छिरकायौ३७
सदन सदन अस रचना राजै❀सुर पुर हू जिहि देखत लाजै ।
श्री राधा आगम सुख सरस्यौ❀पुर कौ भाग प्रगट मनु दरस्यौ॥
विप्र भेद धुनि करत जु आवैं❀ससि कुल विरदन बन्दी गावैं ।
नेगी दैंन बधाई धाये❀पुत्र वधू लै ब्रजपति आये ॥३८
जसुमति बांछित सब कौं दीयौ❀मंदिर राज अलंकृत कीयौ ।
चित्र चितेरिनु चीतै ऐसे❀विधि की शृष्टि न दरसै जैसे ४०

---

[1]—छोटे युवा बछड़े । [2]—पशु जिस पर बोझ लदा हो । [3]—कामदेव ।

गरग सोधि सुभ वचन सुनाये❁पुर की पौंरी तिहि छिन आये।
कुशम वृष्टि चहुं दिसि होइ ऐसे❁भादौ वरषै मेहा जैसे ॥४१॥
मंगल पँच नाद सुठि कीये❁अंचल जोरि दुहुँ के दीये।
पौंरि चौक रचि पटा बिछाये❁तहाँ ठाढे करि तिलक कराये ४२
उर उलही आनँद की गोभा❁गौर स्याम तन वरषत सोभा।
पौंरि रोकि भई भूवा ठाढी❁नीक लैंन अभिलाषा बाढी ॥४३
बांछित देत घोष की रांनौं❁अति उदारता कहा बखाँनौं।
वेदनि धुनि भुव देव करत हैं❁कुल जांचक विरदनि उचरत हैं॥
पट अमोल पांवरे बिछाये❁गौर स्याम पग धरत जु आये।
अरघ बढाइ महरि घर लीयौ❁भूवा साजि आरतौ कीयौ ॥४५॥
रमडी घमडी वाला डोलैं❁घूँघट भांन सुता कौ खोलैं।
वदन निहारि डुलावैं ग्रींवां❁कहैं धन्य दुलहिनि छबि सींवां॥
धन्य गुनीले नन्द दुलारे❁भाग्य बली दरसै जु तुमारे।
लगि लगि काँन कहैं कोउ नारी❁आई पांइ दबावन हारी ॥४७॥
चलि हौ चालि न ऐंडी बैंडी❁कबहूं न कहि हौ बातनि मैंडी[1]।
रूप बली अब बस करि लैहै❁आतलड कांनि भूलि सब जैहै॥
हँसि चुप रहत सखिनु के गनमें❁मैया ढिग सकुचत हरि मन में।
गावति तरुनि वधाये नीकैं❁घर घर ते आवत हैं टीकैं॥४९
संपति अधिक भरी घर अँगना❁दिषि दिषि होत महरि मन मगना
जांचति ही विधनां पै जैसैं❁बानिक बन्यौं भाग्य बल तैंसै॥
दई रचो जग और जु नांही❁अस दुलहिनि आई ग्रह मांहीं।
[3]जागति कछु सपनौं सौ देषैं❁कुँवर वदन लषि भाग्य विशेषैं॥
इन्दु इन्दिरा को सम दीजै❁इहि दुलहिनि मुष देष्यो कीजै।

१—हठ युक्त या झगडे की, २—सखी समूह में, ३—जागते में माना स्वप्न दर्शन है।

ढाढिनि निर्त्तति है रनिवास❀अपनी पुत्र वधू लिये पास ॥५२
गोपी देत मूँदरी छला❀निर्त्त भेद दरसावति कला ।
अपनौ हूं परसंशति भाग❀दुलरावत दुलहिनि जु सुहाग५३
अति सुथरी मनु कुन्दन पुतरी❀किधौं कि देव लोक तें उतरी ।
भवन पूरि रहि जिहि तन प्रभा❀सुविधि रिझावति गोपन सभा५४
थेई थेई उचरति मुख ते बांनी❀देंइ न्योछावरि ब्रजपति रांनीं ।
अलग लाग गति लेति जु घनीं❀चलती चपल लोचन की अनीं॥
देंहि सनमान जु कोविद बनिता❀पट भूषन दिये मोहन जनिता ।
मन वांछित सब नेगिनु पायौ❀मेवा बनितनि गोद भरायौ ५६
गौर स्याम मन्दिर लैं गई❀यसुमति सुहथ जिमावति भई ।
नाना पाक रोहिनी परसैं❀दंपति ग्रास लेत सुख सरसैं ॥५७
हँसि पुचकारि कौर मुख देंहिं❀भागिनु कौ फल यसुमति लेंहिं ।
मुष पर ललित घूँघटी लोलैं❀नव दुलहिनि सकुचाति नहिं बोलैं
सनय सनय भोजन करवायौ❀त्रिपित जांनि तब जल अँचवायौ।
कछू बोलि कीरति अतिलडी❀मोहि सुनन अभिलाषा बडी ५९
यौं कहि महरि अँक भरि लई❀रचि बीरी दुलहिनि मुख दई ।
जे अतिलडि के संग जु आये❀पुनि भोजन कौं सबहिं बुलाये६०
ऊँचे महलनि चढि गई भांमिनि❀मनहु घटनि में ओपीं दांमिनि ।
जूथनि जूथनि सब हीं गावैं❀नव दुलहिनि जु सुहाग लडावैं६१
पुनि मन्दिर में ब्रजपति आये❀पाइ ध्याइ सब हीं बैठाये ।
अति प्रिय लगैं भौंन पुर बासी❀देंहिं सनमान करैं पुनि हांसी६२
पाक अपूरब परसे घनें❀उज्जल एक एक ते बनें ।
भवन अजिर भरि बैठे सबहीं❀जेंवन की अज्ञा करि तब हीं ६३
परसन हारे आदर देहीं❀त्यौं त्यौं ग्रास प्रीति सौं लेंहीं ।

गावति गारी नागरि नारी❀भोजन करत बढत रुचि भारी६४
लेहु लेहु बोलत सब कोई❀परसत जाहि रुचतु है जोई।
पाक बनैं सब स्वाद सुधा कैं❀उपमा और देउँ सम का कैं ॥६५॥
त्रिपित भये जल अंचवन लै कैं❀पुनि सनमानैं बीरी दै कैं।
बासौ दै जु सुखित किये ऐसे❀आनंद विपुल बखानौं कैसें ॥६६
बनिता जुरी बधाये गावैं❀राधा नन्द सुवन दुलरावैं।
आज सुहाग भरी यह रजनीं❀सबहि मल्हावैं सुख जु उपजनी६७
घर मण्डन[1] जु दुलहिनी आई❀ताकी इहिं घर बजति बधाई।
गौर स्याम मन बहस बढावैं❀हँसि हँसि कै नवला समुझावैं६८
लै गई न्यारे भवन जु भांमा❀उपजावैं कौतिक अभिरांमा।
मन मिल गईं सहेलीं नेरी❀दुहुँनि पढावति मदन पहेरी ६९
प्रथम मिलन दिन दूलह दुलहिनि❀दहुँ उर चौंप कौंप[2] भई उलहिंनि
सुरत सदन अब वरनौ सोभा❀नहि समनिकरनि रवि शशि ओभा॥
धवल महल ब्रजपति निर्मये❀सुर हूं देखत चकृत्त भये।
हाटक भीति जटे नग पांति❀जिनमें चित्र रचे बहु भांति ॥७१
रतन मणिनु की तिनमें जारी❀लाल अलौकिक जटित किवारी।
दरशति है जहाँ छबि अनहोती❀गौक[3] कँगूरनि जगमग जोती७२
जहँ तहँ सुन्दर छज्जे छाजैं❀मणि उद्दौत कलश अस राजैं।
परम जोति मय जहां चित्रसारी❀दंपति पौढन हेत सँवारी ।७३॥
जिन रचनाँ जु रची या माहीं❀सो विस्वकर्मा लोक जु नाहीं।
चित्र विचित्रित बिछे बिछौंना❀मनसिज हू के मन को टौंना॥७४॥
कुशम दलान करि सेज सँवारी❀दुग्ध फेंन सम कोमल भारी।
चौमुख दिवला[4] झमकैं जा में❀मणिनु प्रकास सत गुनौ ता में॥

१—घर की शोभ। २—अंकुरित। ३—फाटक के प्रवेश पर बैठक। ४—दीपक।

रतन डबा बीरीनु भरे हैं❀मणि चौकीनु बिछाइ धरे हैं !
अतर फुलेल कटोरी भरि कैं❀निज सजनी आई तहँ धरि कैं ॥
फूलन हार धरे रचि जहाँ❀बिछे कुशमदल रंग रंग तहां ।
अगर धूप करि प्रमुदित सजनीं❀गौर स्याम के सुख[1]की भजनीं ७७
रस बतियनि दुलहिनि परचाई❀सेज महल कोविद अलि लाई ।
कमनी सज्या पर बैठाई❀पुनि समझाइ लाल कौं लाई ७८
मादिक रस कौ पाँन करायौ❀बदन पौंछि तम्बोल खवायौ ।
ढारि कनक चिक फिरीं जु पाछें❀रस संग्राम विलोकति आछें ७६
रस लोभिनि जु रहीं लगि जारी❀कौतिक जुगल जु बिलसनहारी ।
नव संगम झिझकति नव बाला❀होत अधीन रसिक नव लाला ॥
कबहूं कर बर चिबुक प्रलोवैं❀कबहूं कंचुकी कुच टकटोवैं ।
विद्या कोक कुशल नन्द नन्दनु❀करत उपाय रचत बहु छन्दनु[2] ॥
सनय सनय दुलहिनि परचाई❀पिय रस लोभी निपुन महाई ।
नव संगम सुख कहा बखानौं❀लूटे कोट मदन के मानौं ॥८२॥
रस की लवधि लाल लई घनीं❀भई सनकूल[3] जु कंचन तनीं ।
सफल फली अभिलाषा बारी❀हिलि मिलि खेलत जुगल खिलारी
घात अनेक जु प्रीतम ताकैं❀पिवत अधर मधु अतिरस छाकैं
गौर स्याम अम्बुद धुरि वरषैं❀सखि चातक पीवति दृग हरषैं ८४
महा मदन आवेश भरे हैं❀सुरत जुद्ध रस सुभट लरे हैं ।
किलकि २ आंकौं भरि लेंहीं❀नैंन चैंन निजु सजनिनु देंहीं ॥८५
बाढत हिये मनोरथ ऐसे❀लहरि उठैं सागर में जैसे ।
बैसंधिनु[4] की उठति अलोलैं❀आधे आधे बचन जु बोलैं ॥८६
केशनि तें यौं कुशम किरत हैं❀मनहु स्याम घन बूँद झिरत हैं ।

---

[1]—तत्सुख सुखी, [2]—युक्तियां, [3]—सानुकूल, [4]—सुगंधियों की लपटें उठ रही हैं ।

श्रमकन बदन बिराजत जानौं❀शशि ते अमीं श्रवति है मानौं॥
स्याम कपोलनि रुरकति अलकैं❀कमल गंधि कौं मनु अलि ललकैं।
बाजत कंकन किंकिनि नूपुर❀सुभटनि चाव बढ़त सबू पर[1]॥८८
प्रेम खेल की श्रिष्टि जु न्यारी❀लषि लजि भाज्यौं मदन विकारी।
नेह बेलि सींचत हैं छिन छिन❀हम अस कौतिक देषैं दिन दिन८९
ये उनि के वे इनि के भजनी❀सुख की लवधि लहत मिलि रजनी।
इत उत त्रिपित न मॉनत कोऊ❀कुशल खिलार देखियत दोऊ॥९०
तलप[2] तीर सेवौं मन दै कै❀चटकौ करज वारनैं लैं कै।
चित की विर्ति मनौ कल हँसी❀यौं परसंशत श्रीहरि वंशी॥९१॥
तत्तसुख सुखी जु जुगल टहल में❀लाड चाइ भरी फिरैं महल में।
मधुर जंत्र रुचि लै जु बजावैं❀रचि रचि मदन पहेरी गावैं॥९२॥
भाग्य भरी इहि सुख अनुकूली❀कनक बेलि सी चहु दिस फूली।
अति आनन्द छको दुलरावैं❀[3]प्रेम पोष दम्पति ते पावैं॥९३॥
क्रीड़ा करत जु व्रीडा[4] परहरि❀अति ही रस स्वादी राधा हरि।
जुगल सुहाग जु अम्बुद दरस्यौ❀अन[5]भतियाँनु आजुरस बरस्यौ९४
हिय जिय मिलनि अभूत भट्ट री❀गौरस्यॉंम ह्वै रहे लट्टू[6]री।
अति सुकुँवार कछुक अरसाये❀निद्रा बस जु झपकि पल आये९५
प्रथम मिलन मंगल भयो एहा❀उघरि पर्यौ पूरब जु सनेहा[7]।
नींद नहीं रस छकनि भई है❀हिय दरसति ललकन जु नई है९६
हित की विर्ति सहेली जो है❀पुनि मधु पानि करावति सो है।
हित सौं चरन पलौटनि लागी❀निद्रा बस जु भये अनुरागी॥९७॥

१—सर्वोपरि। २—मधुर उपासना की पद्धति ग्रंथ कर्त्ता कह रहे हैं। ३—सिद्धान्त कहा कि युगल बिलास का हेतु उपासक आश्रितों के प्रेम पोषण के लिये है इसलिये सर्वथा सेवनीय है जीव अल्प शक्ति साधन से परा भक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। ४—लज्जा-शंका लज्जा। ५—अद्भुत भांति का। ६—विवश। ७—नित्य संम्बन्ध दाम्पत्य।

गौर स्याम मिलि तन दुति बढी❀वदन मयंक मयूषैं कढी ।
भुज सौं भुज मिलि रही जु ऐसैं❀कनक लता सिंगार तरु जैसैं ६८
सोवत हूं सनेह सरसतु है❀मनसिज तेज वदन दरसतु है ।
सूर नन्द सुत रस रन जीत्यौ❀कियौ गिरि राज सबै चित चीत्यौ॥
यह सरवरी प्रसंशन लाइक❀भांति भांति दम्पति सुख दाइक।
जुगल रहसि रसिकनि की थाती❀श्रवन पठन हौंइ मुदित सजाती ॥
गुरु समरथ प्रेरी मो बाँनी❀कहवाई रस रूप कहानी ।
सुकृत्ती सुनि हैं श्रवनानि दै कै❀तिन पद बन्दौं माथौ नै कै १०१
व्याह कलपतरु फल लग्यौ गौंनौ❀ललितादिक शुक रसजु अचौंनौं
वर विहार रस रसिकनि लहनौ❀श्रीहरि वंश हिये सोइ गहनौ ॥
जुगल रहसि सागर विनु पार ही❀सब हिनु वरन्यौं मत अनुसारहि ।
मैं अपनी मति अँजुरी भरि कै❀वरन्यौं कछु संक्षेप सु करि कै ॥
नन्द भाँन कुल जस विस्तरता❀गौर स्याम करता के करता ।
सोभा निकर [१]निकर सब रस कौ❀षोल्यौ षास प्रेम पारस कौ ॥
रसिकनि ओर कृपा अति ढरे❀नीरस वदन [३]जु फीके करे ।
नीरस ग्यानी सुपन न परसैं❀नही ईस्वजं[२] उपासी दरसैं॥१०५
कियौ प्रगट कलि श्रीहरिवंश❀सबकौ हिय जु मिटाई संश ।
सुकृतिनु यह रस सुन्यौं रु गायौ❀रीझि जुगल परिकर जु मिलायौ
दोहा—ब्रज वृन्दाबन के चरित, जे नित करत अलाप ।
निहचै तिहि अपनाई है, कर गहि दम्पति आप ॥१०७
नन्द सुवन वृषभानु जा, वरन्यौं गौनौं चार ।
वृन्दाबन हित रूप पुनि, कह्यौ रस सार विहार ॥१०८॥

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दाबनदासजी कृत श्रीकृष्ण गौनौं प्रसंग श्रीनन्द मंदिर प्रवेस तथा प्रथम समागम वरनन बासठीवींलहरी को जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

१—कारण या उद्गम । २—कथन या साधन । ३—द्वारका मथुरा लीलाएँ ।

❀ अथ तिरेसठ वीं लहरी ❀

दोहा–रस लोभी जागे जु निस, सोये पिछले जाम ।
निद्रा में दहले जु अति, उर लगि स्यामाँ स्याम ॥१॥
रजनी गई सुमेर दिसि, रवि भयौ पूरब ओर ।
पंछी चुहुके तरु लतनि, भयौ जनावत भोर ॥२॥
चौंकि उठीं सब सहचरी, सजि पट भूषण अंग ।
भैरो राग अलापि कैं, गावति भरी उमंग ॥३॥
जंत्र मिलाये एक सुर, मन मिलाइ इक संग ।
दम्पति कौं दुलरावहीं, लेंइ नव तान तरंग ॥४॥

॥ चौपाई ॥

रवि नाइक प्रसन्न जनु भयौ[1]❀प्राची दिशि सुहाग मनु दयौ ।
निपुन नाइका कियौ शिंगार❀ग्रह आयौ नाइक भरतार ॥५॥
अरुन उदय दरस्यौ है ऐसें❀कुमकुम मण्डित आंनन जैसें ।
इहिविधि सोभित प्राची दिशा❀बासर आगम बीती निशा ॥६॥
ऐसी मंगल बरियाँ लखी❀जुगल जगायौ चाहत सखी ।
कोऊ प्रवीन बीना सुर साधें❀कोऊ धरैं तँबूरा कांधें ॥७॥
कोऊ मधुर मृदंग बजावैं❀कोऊ सुघर झांझि झनकावैं ।
कोउ चट चट जु देहिं कठतार❀कोउ सारंगी लियें सितार ॥८॥
कोउ सुरमंडल में गति लेंहीं❀कोउ रीझैं सनमान जु देंहीं ।
कोउ मुरचंग लियें खंजरी❀मन्दिर गई रूप मंजरी ॥९॥
चरन पलोटि जगावति भई❀करजनि चटकि बलैया लई ।
आलस भरे जुगल अंगरात[2]❀नहीं सुहात जगन की बात[3]॥१०

१–सूर्य्य नाइक या पति तथा प्राची दिशा उसकी पत्नी नाइका उपमा दी है । २–अँगराई ले रहे हैं । ३–नित्य विहार में वियोग असह्य है यह सिद्धान्त कहा गया है ।

बाजेनु की धुनि श्रवननि परी❀उठि बैठन मन[1] इच्छा करी ।
बिरमौ प्रिया लाल यौं कहैं❀सकुचीली उठि बैठ्यौ चहैं ॥११
तन सौं तन मन सौं मन उरभयौ❀लोभी लाल न चाहत सुरभयौ ।
शीतल पवन भोर तन परसै❀नींद सुहागिन त्यौं त्यौं सरसैं ॥१२
जद्दिप नाद रसिक नन्दलाला❀तदपि न तजत नींद नव बाला ।
अमृत वेला भयौ अति भोर❀समुभि उठे तब नन्दकिशोर ॥१३
पट भूषण तन सजति सहेली❀भींजत लाज बधू जु नवेली ।
गान जंत्र धुनि गहमह ऐसैं❀मदन के सदन बधावौ जैसैं ॥१४
दै दै जाति बधाई सजनीं❀नव संगम सुख विलस्यौ रजनीं ।
जावक रेख लिलाट लसी है❀देखि लाल दिसि सखी हँसी है ॥
कहुं मषि[2] कहूं पीक की रेखैं❀दियैं अनकनी चतुरा देखैं ।
सखी चितावति सैंननि माँही❀वदन मोरि मोहन मुसिकाँही ॥१६
इहि विधि राजत राधा लाल❀[3]सज्या सर मनु उभै मराल ।
नैंन उनींदे भपकत ऐसैं❀खंजन दुरै पींजरनि जैसैं ॥१७
[4]रसन वसन के कसन जु ढीले❀मन विहँसत कछु तन सकुचीले ।
मन मिल सबहि सहेली पास❀करति लाल सौं ते परिहास ॥१८
सखिनु काँन राखत जु रंगीलौ❀दृष्टि न जोरि सकतु सरमीलौ ।
रति रन चिन्ह जगमगत आँनन❀सखी आइ दियौ दर्पन पाँनन ॥
निरखि २ मिमटत हैं गात❀[5]वदन प्रछालन कौं अकुलात ।
कुशमासन चौकी जु बिछाई❀दाँतनि तहँ बैठारि कराई ॥२०
कर वर वदन अँगोछै सुन्दर❀हिय हरषित भये रसिक पुरन्दर ।

---

[1]—सखियों के सुख के लिये कि वह बाजे बजा रही हैं हम सुन कर उन्हें सुखी करें। [2]—काजर की काली रेखायें । [3]—शैय्या रूपी तालाब पर दो हंस हों, यह उपमा दी है। [4]—बोलना ढीला है तथा वस्त्रों के बन्धन ढीले हैं। [5]—मुख धोने को व्याकुल हैं कि मुख से काजर की कालौंछ तथा पान की पीक धोवैं ।

मंगल भोग थार सजि लाई❀माखन मिश्री सहित मलाई ॥२१
मिष्ट दही घैया मथि लयौ❀भरि कटोर आगैं धरि दयौ ।
ललिता ग्रास देति है इत उत❀जैंवत भाँन सुता ब्रजपति सुत ॥
मिहीं घूँघटी दुलहिनि करैं❀हरैं हरैं कौर वदन विधु धरैं ।
सजनी सबहिं जिंवावति हितसौं❀दुलरावति जु माहिले चित्त सौं ॥
इहि विधि तुष्टि पुष्टि करवायौ❀कर वर ध्वाइ नीर अँचवायौ ।
वीरी दै आरति सजोई❀जग मग जोति भँवन मधि होई ॥२४
गावति निर्त्तति बदि बदि बारी❀दम्पति लाड लडावन हारी ।
गौर स्याँम की छवि अवलोकैं❀नैंननि पलक धरति गति रोकैं ॥
अति गुनवंती प्रेम नवेली❀झूँमक दै नाचत जु सहेली ।
कोउ भरि भरि पुहपाँजुलि वारैं❀कोउ कर लिये चँवर सिर ढारैं २६
कोउ सन्मुख ठाढी कर जोरैं❀कोउ डर डीठि रीझि त्रिन तोरैं ।
कोउ रचि देति नवल मुख बीरी❀कोऊ हँसावति ठाढी नीरी ।२७
कोउ लियैं खरी हाथ पिकदाँनी❀कोउ मुख उच्चरत जै जै बाँनी ।
सजनी सबहि प्रेम सुख भीनी❀इहि विधि प्रात आरती कीनी ॥
मुकर महल चौकी जु बिछाई❀भुज गहि सखी दुहुँनि लै आई ।
हँसि २ आडौ अम्बर दीयौ❀गौर स्याम तन उबटन कीयौ ।२८
टहल करन उत्कण्ठा बाढी❀केश मलति हैं इत उत ठाढो ।
परसति अंग उबटनौं लै कैं❀छवि लखि रही ग्रीवँ सब नै कैं ।३०
अंग सुघरता कहा बखानौं❀सोभा सिंधु सींव तजि मानौं ।
भूषन बसन उतारे जब हीं❀तन दुति लहरि चली बढि तब हीं ॥
मुकर महल छवि बाढी और❀प्रतिबिंबित तन साँवल गौर ।
सजनिनु के चखचौंधत ऐसैं❀कौंधत सबल दामिनी जैसैं ॥३२
अंगनि ते निकसी बहु गोभा❀काके दृगनि समाति जु सोभा ।

करनि उबटनौं लियें रहि गई❀कौतिकी चकृत सजनी भई ॥३३
सम्हरि २ सब उद्दिम करैं❀सोभा भीर न धीरज धरैं ।
फटिक मणिनु चौकी लसै भांमिनि❀बैठी ससि बिछाइ मनु दांमिनि
उष्न नीर झारी भरि ढारति❀तडित सुविधि मनु अंग पखारति
छुटे केश आनन यौं दिप्यौ❀मनु ससि स्याम बदरियाँ छिप्यौ ॥
छिपैं तरौंना[1] चिकुरनि[2] माँहीं❀रवि पै मनहुँ राहु परछाँहीं ।
तिनकौं मलति जु सुहथ सहेली❀कनक बेलि जनु लपटति बेली ॥
झारी ते जल इहिविधि परै❀कनक सैल मनु झिरना झरै ।
केश अगौंछि समेटति जाँनौं❀अरुण उदै तम लघु भयौ माँनौं ॥
अँच अँगौछि पहिरि पट स्याँमाँ❀कुशमासन बैठी नव भाँमा ।
अब उबटति जु स्याम के तन कौं❀अति आनंद बढावति मन कौं॥
अलकनि में फुलेल कियौ मंडित❀महकति भँवन सुगन्धि अखंडित
अंग उबटनौ इहि विधि कीयौ❀रोम रोम प्रीतम सुख दीयौ ॥३९॥
जल भाजन भरि सजनी लावैं❀मनु घन कौं अभिषेक करावैं ।
[3]दांमिनि मंगल मान्यौ आज❀पावस रितु दै है मनु राज ॥४०
कोऊ चहुँटिया भरि तन आवै❀कोऊ हाँसी के बचन सुनावै ।
दूलह कौं इहि विधि दुलरावैं❀अंग अंगोछि बसन पहिरावैं ॥
नव दुलहिन कौं प्रथम सिंगारैं❀कच फुलेल दै पाटी पारैं ।
मोतिन मांग भरी छबि ऐसैं❀कारी निसि छिपैं उडगन जैसैं ॥
रचि पचि पुनि सिन्दूर भरी है❀सरस्वति धारा मनु निकरी है ।
सीस फूल राजतु है ऐसैं❀छत्र सुहाग दियें सिर जैसैं ॥४३
मणि वंदनि जरयाऊ टीकौ❀मृग मद तिलक भाल पुनि नीकौ ।

---

[1]—कान के भूषण [कांटे] [2]—बालों में छिप गये मानों सूर्य्य पर राहू की परछाहीं पड़ गई। [3]—उपमा यों दी गई है कि वहां सखी दामिनी हैं श्याम बादल हैं स्नान का जल वर्षा है।

श्रवननि दिपत तरौंना जाँनौं❀जुग रवि उदित प्रात के मानौं ॥४४
गोल गरूर भौंह अस राजैं❀मनु मुख ससि कर धनुष विराजैं ।
इहि विधि नथ कौ लाल लस्यौ है❀मंगल मनु ससि अंक बस्यौ है
दृग विशाल अंजन जुत लौंने❀भींजत कछु लाज जुत कौंने ।
पत्रका मकर कपोल बनाई❀चिबुक बिन्दु कहा कहौं लुनाई ॥
ऐसैं राजति त्रिवली ग्रींवा❀मुख रचि विधि मनु काढी सींवा ।
भुज मृनाल की छवि हरि लीनी❀द्योज चन्द्र बाजुन[1] छवि छीनी॥
नील मणिनु की चूरी राजैं❀कंकन रतननि जटित विराजैं ।
अँगुरिनु मुँदरी अतिसै लसैं❀नख पंकति मनु ससि लखि हँसैं ॥
महदी रचे जु कर वर एहा❀दरसतु मनु अनुराग सदेहा ।
कंठ पदिक नग जटित सु चौकी❀जिन छबि जीति लई ग्रह[2] नौकी ॥
दुलरी तिलरी मोतिनु माला❀स्याम[3] पोति उर छबि जु विशाला
पन्नाँ हरित हमेल विराजैं❀मनु गिरि कनक पांति शुक राजैं॥
रूरत सतलरा उर वर सोहै❀दैवे कौं उपमा सम को है ।
हृदनी नाभि उदर पर त्रिवली❀मानौं कनक सिढीनु की अवली[4]॥
कहा कहौं सोभा कटि खीनी❀उपमा केहरि की रद कीनी ।
रतन जटित किंकनी बनी है❀ह्वै रहि जगमग जोति धनी है ५२
कनक कदलि छबि जंघ विशेषी❀पिंडि सुटौन अनूपम देखी ।
पाइल गूजरी रतन जडाये❀अनवट बिछुवा कनक भराये ॥५३
गोल गुलफ मणि चूरा कमनी❀पद अरुनाई सोभित अवनी ।
नखनि कांति ससि पांति लज्यावैं❀
नव दुलहिनि इहि विधि छवि पावैं ॥५४॥
नख सिख कियौ सिंगार सहेली❀कुशम दाम रचि ग्रीवाँ मेली ।

---

[1] बाजू बन्द । [2] नव ग्रह की । [3] श्याम डोरों से पिरोई गई हैं । [4] समूह ।

सारी तास बदन यौं राजै❀मनु शशि कनक रावटी[1] भ्राजै ॥५५
लजवंती न घूंघटी खोलै❀[2]बाजी से दृग करत कलोलै ।
पुनि रचि चरन महावर दीयौ❀लखि त्रिन तोरि वारि जल पीयौ ॥
पट भूषन सजि तन छवि बढी❀आँनन पानिप अतिसै चढी ।
निजु अलि बिहँसति आई नीरी❀अपु कर रचि मुख दीनी वीरी ॥
पुनि शिंगारती मुरली धर कौं❀नट नागर श्री राधा बर कौं ।
मेलि फुलेल जु अलक सँवारी❀गंडनि पर रुरकति घुंघरारी ॥५८
सीश मुकेशी चीरा रचि कैं❀रतन पेंच ता ऊपर मचि कैं ।
कंचुक पर काछनि बनाई❀चटकीली इजार[3] पहिराई ॥५९
कटि पटुका सु जरकसी छोर❀उपरैना मन मथ चित चोर ।
श्रवननि कुंडल जगमगै ऐसे❀रविजा जल रवि झांई जैसे ॥६०
केशरि तिलक भाल पर राजै❀सुन्दर चन्दन खौरि विराजै ।
कंठी कंठ पदिक दुति महा❀बरनौं ताको सोभा कहा ॥६१॥
लसति धुकधुकी चौकी हीये❀बनत न ताकौ उपमा दीये ।
उर पर रुरकति मोतिनु माला❀देखि देखि बिहँसत नन्दलाला ॥
[4]बाजू बन्द भुजानि गसे हैं❀मनु शशि द्योज मृनाल बसे हैं ।
चूरा कनक ललित नग लगे❀स्याम सुभग पहुँचिनु जगमगे ॥
छाप छबीली अँगुरिनु बनीं❀नख मणि जोति उदोत जु घनीं।
कटि किंकनी बनीं अति सोंहन❀चूरा चारु पदिक जग मोंहन ६४
यह सिगार यथा मति कह्यौ❀तन छवि बरनन पुनि मन चह्यौ
अंग अलौकिक सुत ब्रज भूप❀देख्यौ सुन्यौ न ऐसौ रूप ॥६५
कहत सुनत मन त्रिपत न होई❀अस चेटक है पार न कोई ।

१—बारहदरी या छौलदारी। २—पत्ती की तरह। ३—सूथन। ४—भुजाओं में बाजू बन्द चिपके हुए पहने हैं मानो कि दूज के चन्द्र कमल नाल में बसे हुए हैं।

देखि २ कै पुनि पुनि गाऊँ❀राधा दूलह कौं दुलराऊँ ॥६६
आनन शशि के निकर लज्यावैं❀नासा की सम शुक क्यों पावैं।
नैंन बांन खरसाँन जु धरे❀मदन बली से घायल करे ॥६७
गोल कपोलनि निर्मलताई❀कुंडल की दुति तिन मधि छाई
अरुन अधर की अद्भुत ओभा❀पाक बिंब की हरि लई सोभा ६८
बेसरि मोती राजतु ऐसैं❀रमैं श्याम गिरि भृगु सुत जैसैं।
कंबु कंठ उपमा सम नाहीं❀भुज देखत भुवंग लज्याहीं ॥६९
[1]पीन अंस उर सोभा सरसैं❀भृगु रेखा कौस्तुभ मणि दरसैं।
उदर सुचारु नाभि अति गहरी❀जहाँ उठति सोभा की लहरी।७०
लंक देखि कै केहरि झुर[2]हीं❀मुख न दिखावैं बन बन दुरहीं।
जघन सघन छबि पिंडुरी गोल❀पद तल लोटत मनसिज टोल ।
सीश मुकट बैंजन्ती माला❀अस छबि सींवाँ ब्रजपति लाला।
सैंननि विनय सखी सौं करहीं❀परम रसिक मन धीर न धरहीं॥
निरखत अन्तर पट कैं ओलैं❀सखी न खोलैं धीरज तोलैं।
निजु अलि कौ आधीन जु भये❀मन रुचि लै प्यारी ढिंग गये ७३
कुशमासन बैठारे दोऊ❀चरचति अतर सखी तन कोऊ।
लै दरपन दीने दुँहु पांननु❀अवलोकत अप अपनौ आँनन॥७४
कबहुँ परस्पर मिलि अवलोकैं❀रूप सवादी[3] पलकनि रोकैं।
अगर धूप करि हरषित बाला❀तोरति त्रिन छवि निरखि विशाला
महरि विविध पकवाँन पठाये❀[4]रस भोगिनु के भोग धराये।
सद माखन मिश्री जु मिलाई❀खोवा मिष्ट मलाई आई ॥७६॥

१—मोटा मांस से भरा कन्धा। २—संकुचित या खिन्न। ३—लोलुप या लालची।
४—सिद्धान्त कहा कि भोग की वस्तु में से इष्ट रस को ले कर तुष्ट होकर वस्तु वैसी की वैसी ही रही आती है जिसे भक्त लोग प्रसादी कहते हैं।

गाढौ दही कटोरनि भर्यौ❀आनि दुहुँनि कैं आगैं धर्यौ ।
नव दुलहिनि की सकुच निवारैं❀ग्रास देति सजनीं रहि लारैं ॥७७
लाल सखिनु सौं बातनि ढरे❀जेंवत हैं दोऊ रंग भरे ।
बदलैं कौर सखी सुख पावैं❀दुहुँन के मन सौं मन जु मिलावैं ॥७८
ग्रास स्वाद कहि ज्यौं २ लेंहीं❀सखिनु के नैंन प्रांन सुख देंहीं ।
कनक तार घूँघट मुख लोलैं❀मनु शशि ऊपर तड़ित कलोलैं ॥
ग्रास लेत ऐसें छबि पावैं❀मनु [1]मयंक को कमल मनावैं ।
सलज मुरति नैंननि की कोरैं❀खंजन उडि हैं मनु सहजोरैं ॥८०
त्रिपित भये सजनिनु दिश चहैं❀हरैं हरैं नाहिं नाहिं मुख कहैं।
जल अचवावैं कर वर ध्वावैं❀बीरी रचि सजनी जु खवावैं ८१
सैंन जताइ सखी सौं कहैं❀बीरो बदलन प्रीतम चहैं ।
श्रवन लागि सखि कहत छबीलो❀मानति नांहि कुँवरि सकुचीली ॥
चिबुक प्रलोवति ठाढी सखी❀मानवती सी भांमिनि लखी ।
कौतिक प्रान बढायौ चहै❀अलभि लाभ सौ प्रीतम लहैं ॥८३
भृकुटि चढनि लख्यौ चहैं नैंना❀श्रवन सुन्यौ चहै गर्वित बैंना ।
अनखि २ मुख मोरति बाला❀सुख की बढ़नि चहत नन्दलाला ॥
सखि समुझाइ प्रसन्न जु कींनी*तब हँसि बीरी दुलहिनि दींनी ।
लाल आपने कर बर लई❀घूँघट खोलि प्रिया मुख दई ॥
बदन बिलोकति रहि गये ऐसें❀मादिक पी घूमें कोऊ जैसें ।
कौन रंग में मन रंगि गयौ❀चेतौ लाल सबेरौ भयौ ॥८६॥
ऐसें सखी हांसि जब कीयौ❀ह्वै सचेत मौंहन हँसि दीयौ ।
मंगल रूपी बाजे बाजैं❀सखी सिंगार आरती साजैं ॥८७
ललित विशाषा चँवर ढुरावैं❀रंग देवी रु सुदेवी गावैं ।

१—हाथ कमल मुख चन्द्रमा है ग्रास देना मनाना है यह सरस उपमा दी है ।

तुँगविद्या मृदंग टंकारैं❀इन्दु लेखा जु झाँझ झनकारैं ।।८८
चित्रा चतुर बीन सुर सांधैं❀चंपकलता तँबूरा कांधैं ।
हित अलि पुहुप अँजुली वारैं❀रूप मँजरी तिन के लारैं ।।८९
अरु बहु सखी कुसुम बरषावैं❀वृन्दादिक सजि नित्त दिखावैं ।
कोऊ जै जै बाँनी उच्चरैं❀त्रिन तोरैं जु दीठि ते डरैं ।।९०
न्यारे भँवन करैं अस केली❀छिन २ बढै प्रेम नव बेली ।
निजु अलि कौं दुलहिनि गहि हाथ❀चली सासु ढिंग सजनिनु साथ
पाइल बिछुवनि की झनकारैं❀नन्द अजिर मंगल विस्तारैं ।
ब्रज रांनी सुनि हिये सिहानी❀आवति पास दुलहिनि जानी ।।
फूली अजिर रूप फुलवारी❀हरि जननी भई देख सुखारी ।
उझकि उझकि मन्दिर ते देखै❀विन मित भाग आपनौ लेखै ।।९३
अति उतकंठा बढि रही मनमें❀राधा रँवकि भरी अंकनि में ।
नवनी करी सासु तन ऐसे❀झुकैं छवि बेलि पवन बस जैसे।।
धरि कर सीस असीस जु दीनी❀अपने ढिंग बैठारि जु लीनी ।
अचल सुहाग वधू होहु तेरौ❀सातल हियौ कियौ तैं मेरौ ।।९५
होहु सुख विलसन हारा सदा❀[१]पीहर रहौ अचल संपदा ।
इहि विधि दुलहिनि हियौ सिहायौ❀अधिक माँन जसुमति ते पायौ।।
नव दुलहिनि समाज है जहाँ❀आई हँसति रोहिनी तहाँ ।
पा लागन जु सुहागिनि कीयौ❀बलि जननी सन्माँन जु दीयौ ।।
[२]अचल राज रहौ बाबा मैया❀चिरु जीवौ श्रीदामा भैया ।
सुख बाढौ रावलि बरसानैं❀गोधन बढ़ौ जु देस भयानैं ।।९८
दिन दिन बढ़ौ सुहाग गरूरौ❀जुग जुग अविचल रहौ कर चूरौ
हलधर मुरलीधर सुख सरसौ❀नित आनन्द घोष में बरसौ ।।९९

१-२-वधू को क्या मुख्य आशीश दी जाए सासुओं को शिक्षा मिलती है ।

सुनि असीस दुलहिनि सुख साँनो❀भरि लई अंक रोहिनी राँनी।
सुन री रावलि पति अति लडी❀तेरी समझि देखियत बडी ॥१००
अनबोली सी काहैं रहे❀मन की बात न कब हूं कहै।
हिय जिय हरषति बात कहि मोकौं❀जो चहियै सु मँगाऊँ तो कौं ॥
अधरनि में मुसिकानी सुनि कै❀कहति कुँवरि जू बातैं पुनि कै।
दिहु बुलाइ श्री दाँमाँ भैया❀लैंन पठावै मेरी मैया ॥१०२॥
मानि बहुरिया बचन जु मेरौ❀हौं बहु लाड करौं अब तेरौ।
बरसानौ सोई नन्द ग्राँम❀यह वह जान एक ही धाँम ॥१०३
जैसौ लाड जु कीरति करै❀ताते अधिक महरि आदरै।
यह घर माडन[1] तू नृप सुता❀नित्त प्रसन्न रहि सखियनि जुता॥
वह घर माइ सासु घर एह❀दुँहुँ घर सुन्दरि राख सनेह।
दुलहिनि उर वर अधिक सयाँनी❀बात कहत भोरी सी जाँनी॥१०५
यह सुनि हँसि जु वारिज मुखी❀भई रोहिनी तन मन सुखी।
तू रहि तन मन मुदित बहुरिया❀मेवा पाक गोद लै भरिया ॥१०६
इहिविधि दुलहिनि कौ दुलरावैं❀महरि रोहिनी अति सचु पावैं।
वसन अपूरब नित पहिरावैं❀नये नये गहने जु गढावैं ॥१०७॥
नित सुख वृष्टि नन्द ग्रह रहै❀को कबि कोविद जो कथि कहै।
निगम अगोचर लाडति थाती❀महरि भाग कहा बरनौं पानी ॥
श्रीहरि वंश सु धन है एहा❀करौ रसिक जन तहाँ सनेहा।
यह सुख संपति बिलसत जो हैं❀रसिक अनन्य कहावत सो हैं ॥
तिन पदरज मो शिर अवतंश❀देहु कृपा करि श्रीहरिवंश।
ग्रह बन बिलसत गोप कुँवार❀ब्रज वृन्दावन नित्य बिहार ॥
दिन दिन कौ जो व्यौरौ कहौं❀वय बुधि बल लघु पार न लहौं।

---

[1] घर मण्डन अर्थात् सुशोभित करने वाली।

मति अनुसार जु सबहिनु कह्यौ❀ताकौ शेष कछू मैं लह्यौ ।।१११

दोहा–प्रथम समागम जुगल कौ, वरन्यौं नव अनुराग ।
सर्वोपरि त्रिभुवँन विदित, राधा विपुल सुहाग ।।११२।।
कृपा दृष्टि सर्वेश्वरी, जाकी ओरी होइ ।
श्रवन कथन उपजै सुरुचि, असबिरलौ नर कोइ ।।११३।।
वाही परिकर माहिलौ[1], जगत चितावन हार ।
अनुभव जनित जु विस्तरै, यह रस निगमनि सार ।।
पुनि पुनि वन्दौं चरन रज, पुनि पुनि करौं प्रसंश ।
वृन्दाबन हित रूप अस, कोविद श्री हरिवंश ।।११५।।

।। इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्री लाडिली जी को मङ्गल शिंगार लाड वरनन तिरेसठवीं लहरी को जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ।।

❀ अथ चौंसठ वीं लहरी ❀

दोहा–सुख जु अपूरब घोष में, दई कियौ उतपन्य ।
गोप गोपिका देखि कैं, भाग्य वदत धनि धन्य ।।१।।
पावन सर के तट लसैं, कमनी महल उतंग ।
तहाँ क्रीडत हरि राधिका, अगनित सजनी संग ।।२।।
पुत्र वधू के हित रचे, गोप राइ शिरमौर ।
षट रितु सब बिलसैं तहाँ, अतिलड सांवल गौर ।।३।।
कुंड अनेक जु पुर निकट, जहँ तहँ कमनी धाँम ।
तहाँ जाइ कौतिक करत हिलि मिलि स्यामा स्याँम ।।
नित नित रस लीला बढै, नित बाढै नव नेह ।
नित जस बाढैं गोप कुल, ताकौ मिलत न छेह[2] ।।५।।

---

[1] १—नित्य निकुंज उपासना । [2] २—भेद रहस्य नहीं मिलता, कारण केवल अपरोक्ष अनुभव गम्य है ।

॥ चौपाई ॥

कहा कवी सुबुद्धि दौरावै❀क्यों पर घर के भेदहि पावै ।
घर हूं लोक रीति कौं नाँहीं❀निगम दुरी संपति ता माँहीं ॥६
ब्रह्मादिकनि अगम्य जु महा❀ता के चरित कहै कोउ कहा ।
ते जु लोकवत लीला करै❀इहि अचरज सब की मति हरै ॥७
तन मोहनो वचन मोहनी❀जोरी बनी लोक सोहनी ।
देखन हारिनु के मन ठगैं❀ते उठि उठि सब पाछे लगैं ॥८
तात मात लाडत अनुराग❀गोप गोपिकनि नातैं लाग।
थिर चर मोहे मुरली नाद❀प्रेमा जन फसे रूप सवाद ॥९॥
तात भवन लानन्द जु दै हीं❀कबहूं कुंजनि बसि सुख लै हीं।
गाइ चरावन वन में जाहीं❀कौतुक करैं सखन के माहीं ॥१०
आवन बाट जु पुर जन चहैं❀कौतिक चरित परस्पर रहैं ।
लीला मित नहिं रूप जु एक❀इहि सन्देह जु भरे अनेक ॥११॥
ब्रजपति सुत की अतरकी कथा❀सब कोउ कहत बुद्धि है जथा ।
[1]भाव गम्य दरसत सब ठौर❀प्रभुता मधुर जु साँवल गौर ॥१२
जहाँ सरोवर कुँजैं कमनी❀सहज मोहनो ब्रज की अवनी ।
प्रिया सहित ब्रजपति अति लदौ❀जहाँ जाइ कौतिक रचै बडौ ॥
राज कुँवर इच्छया अनुसार❀कुँज निबसिबौ रुचै बिहार ।
सुत के सुख में सुखी जु तात❀चहै लडावन साँवल गात ॥१४
बडी वयस सुत पायौ एह❀तातैं बाढै अधिक सनेह ।
बहुरि राज घर व्याह्यौ गयौ❀तातैं हेत बढै नित नयौ ॥३५॥

दोहा—द्वै भूपनि कौ लाडिलौ, खेल रचैं ब्रजमांहि ।

१—भगवत् साक्षात्कार का मूल स्तंभ भाव है यह कह रहे हैं। २—अनादि नित्य विहार में सहज रुचि विवाह के बाद जाग्रत होने से कुंजों में विहरते रहते हैं।

सुखित होंहि ब्रज जन सबै, कोऊ बरजै नांहि ॥१६॥
इक सुन्दर पुनि लाडिलौ, बहुरि सुवन ब्रजनाथ ।
पुनि मिठ बोला कौतिकी, को न चलै लगि साथ ॥१७
रितु[1] पति आगम जानि कै, सज्यौ खेल कौ साज ।
बढ्यौ उमाह जु सत गुनौ, डफ आनक सुनि बाज ॥१८
[2]मदन मीत रितु राज मिलि, आये घोष सदेह ।
सब उर आनन्द संचर्‍यौ, बन पुर गोपनि ग्रेह ॥१९॥
बाँनी बदली खगनि[3] कुल, द्रुमनि बढी नव गोभ ।
[4]वारिज विकसे सरनि में, षट् पद बढ्यौ मधु लोभ ॥२०
रवि उत्तर दिसि कौ फिर्‍यौ, अवनी बदल्यौ रूप ।
नूतनि दरसी मंजरी, कोकिल कुहक अनूप ॥२१॥
दुलहिन कौ परचावही, सजनी सब गुन वन्त ।
मन खुल खेल विचच्छनी, आयौ रितु जु बसंत ॥२२॥
रचि है खेल अनेक विधि, प्रीतम भर्‍यौ गुमान ।
ताहि आपु बस कीजियै, सुनि अतिलाडि वृषभाँन ॥२३
अधरनि कछु मुसकानि भई, मोरी भौंह सुभाइ ।
बिनु ऊतर ऊतर दियौ, सजनी बन्दे पाइ ॥२४॥
भयौ अंकुर अनुराग उर, फागु खेलिबे काज ।
कला फुरी रस दाइकी, बरनत सखिनु समाज ॥२५॥

॥ चौपाई ॥

अति सनमान सहेलिनु दियौ ❀ वारिज ज्यौं विकसित भयौ हियौ
पूरब खेल हिये में फुर्‍यौ ❀ मन संकोच दूरि कहूं दुर्‍यौ ॥२६

१—बसन्त । २—बसन्त ऋतु का मित्र कामदेव । ३—पक्षी समूह । ४—कमल ।

रूप आगरी हू मन ऐंड❀राखैं चलति जु आरज मैंड[१] ।
हिये भरे ईस्वर्ज अनेक❀प्रगट सीलता दरसत एक ॥२७
घूँघट मोरि वचन कहै 'हरैं❀दुहु कुल की लज्या कौ धरैं ।
भाँन वंश सुकृत को मनी❀उर धीरज तन लज्या घनी ॥२८
फागुन सुख बढवार विचारैं❀मन उमंग पै मुख न उचारैं ।
सुत दुलहिनि जसुमति ढिंग बोली❀उर अभिलाष आपनी खोली॥
उबटि न्हवाइ कियौ सिंगार❀भोजन करवायौ तिहि बार ।
अहो रोहिनी नेरें आवौ❀नवल दुलहिनी कौ समझावौ ॥३०
आजु पंचमी अवसर भलौ❀नाराइन मन्दिर लैं चलौ ।
बनितनि बोलि बधाये गावौ❀दूलह दुलहिनि कौ जु खिलावौ ॥
विविध सुगंधिनु भाजन भरे❀अबिर गुलाल ढेर सचि धरे ।
जूथ २ मिलि जुवती आवैं❀मोहन सीस बसन्त बधावैं ॥३२
मधुरितु बढ्यौ परम अनुराग❀मिलि गावैं हिंडोल जु राग ।
अप अपनी गति बाजे बाजैं❀उद्धव मदन बधावौ साजैं ॥३३॥
भाँन नन्दिनी ब्रजपति लाला❀झूँमक अजिर खिलावैं बाला।
अत्तर अरगजा चरचैं अंग❀अम्बर छिरकैं केशरि रंग ॥३४
अबीर गुलाल मुठीनु बगेलैं❀सलज नैंन राधा हरि खेलैं ।
प्रथमहि भई फागु[३] बोहनी❀ठाढ़ी हँसै तरुनि सोहनी ॥३५॥
वंदनि मूँठिनु भरि भरि धावैं❀औसर ताकि वदन लपटावैं ।
मुख ते खुलति घूँघटी जबहीं❀चकित होत मुरली धर तब हीं ॥
ललिता कहति कूट के वचनाँ❀जिन में मद विडम्ब जु रचनाँ ।
त्यौं त्यौं चौंप चौगुनी सरसै❀मंगल महा नन्द घर दरसै ॥३७
मदन महोत्सव जग उद्दोत❀तैसोई अनुकरन जु होत ।

१—मर्यादा । २—धीरे २ । ३—विवाह के बाद प्रथम होली का खेल ।

राधा हरि संतत हैं जहाँ❀आयौ दैन जुहारी तहाँ ।।३८।।
रूप देखि भई हिय कल मली❀वन्दन करन लग्यौ पग तली ।
अपनौं उद्दिम बहु विधि कर्यौ❀न चल्यौ बल तब पाछैं टर्यौ ।।
प्रेम मई लीला ब्रज माँही❀मदन पराक्रम चलै जु नाँही ।
धन्य अलौकिक ब्रज की मही❀जहँ रस सुख की सलिता बही ।।
अस बसन्त कौतिक बिस्तार❀विहरत राधा नन्द कुँवार ।
बन्दन मूँठि दुलहिनीं साँध्यौ❀प्रीतम मन कौं बरवस बान्ध्यौ ।।
लोचन उरझे खेल जु ओर❀रहि गये ठाढे वाही ठौर ।
[1]बदन मांडि दुलहिनि फिरि गई❀सजनी जीति मनावति भई ।।४२
अँजुरिनु अबिर बगेलत ऐसें❀कमल पराग उडावैं जैसें ।
दाइ उपाइ लाल बहु करैं❀बदलौ लैंन भाँवरे भरैं ।।४३।।
नहि लागतु वह अवसर हाथ❀सखो विचच्छन दुलहिनि साथ ।
हार जीति मानौं जिनि कोऊ❀सब कहैं रहैं बराबरि दोऊ।।४४।।
कोऊ रीझि वारनें लैंहीं❀कोऊ वारि पट भूषन देहीं ।
इहि विधि प्रथम बसन्त पुजायौ❀महरि दई वहु भाँति लुटायौ ।।
अरघ बढ़ाइ भँवन में लीयौ❀जोरी पै जल वारि जु पीयौ ।
भोजन करि गवनें निजु भौंन❀तहाँ के कौतिक वरनौं कौंन[2] ।।४६
यौं दिन दिन खेलैं जु बसन्त❀रूप वन्त दोऊ अति गुन वन्त ।
सुख भींजे रहैं पुर नर नारी❀देहिं असीशैं गोद पसारी ।।४७।।
होरी ऊधम अधिक मचावैं❀बदन माडि सखी स्याम नचावैं ।
नन्द पौरि मिलि चाँचरि खेलैं❀कर गहिं बूका बन्दन मेलैं ।।४८।।
इहिं विधि झूँमिक भरे जु बाला❀चकृत होंहिं लखि ब्रजपति लाला
झूमैं घूँमैं हो हो बोलैं❀मोर पखा कर लीये डोलैं ।।४९।।

---

[1] —मुख रङ्ग आदि से लेर दिया । [2]—निज महल में रहस्य कौतुक कौन जाने ।

नानां विधि के बाजे बाजैं❀सुख जु अपूरब मोहन साजैं ।
लेत रसीली ऐसी ताननि❀मदन मरम बेधत मनु बाननि ।।
मुकट लटक ग्रीवाँ की मोरनि❀पिचक छबीलीकर सौं छोरनि ।
अस चतुराई रचत बिहारी❀करति प्रसंशा कोविद नारी।।५१।।
नव घन करतु अवनि मनु केली❀सींचतु नवल रूप की बेली ।
छल बल सौं सजनी गहि लावैं❀दुलहिनि के कर मुख मडवावैं ।।
आतुर बाजतु ढोलक ढोला❀होरी बोलैं करैं कलोला ।
दाव लैंन कौं तकत हैं घातनि❀ललिता कौं जु लगावत बातनि।।
अंजुली भरि जु अतर लै धाये❀प्यारी बदन लपेटी सु आये ।
दुलहिनि भरि रँग कनक कमोरीं❀प्रीतम के जु सीस ते ढेरी ।।५४
ऐसें गई स्याम दिशि झमकी❀मनहुँ दामिनि घन में चमकी ।
बड़े खिलार मदन के मोंहँन❀रहे छकि रूप नचावत भौंहनु ।।
रूप जोति सी बिलुलित नवला❀अबला कियौ पराक्रम सबला ।
घूँघट दीये मुसिकति ठाढी❀जीती खेल हरष हिय बाढी ।।५६।।
हुलसि रंग लै जैसें धावनि❀प्रीतम दृगनि बसी यह आवनि।
भोरी भोरी बतियाँ कहैं❀ऐसे आवनि बहुरयौ चहैं ।।५७।।
कर तें डफ ललिता लै आई❀मुरली चंपक लता चुराई ।
परयौ फेंट ते निकर गुलाल❀बिक गये रूप कौतिकी लाल ।।५८
चौंप बढावति ठाढी सखी❀खेल निपुनता हम यह लखी ।
श्रमित भये कि घुँमेरी[1] आई❀कै कहूं रुठि गई चतुराई[2] ।।५९
लला मनाइ बेगि दै लावौ❀जो खिलार तौ सन्मुख आवौ।
सुनि सचेत भये लाल बिहारी❀कटि उरसी[3] बाँसुरी संभारी ।।६०

१—चक्कर। २—चतुर खिलाड़ श्रम न मानते सो चतुराई भी यहां की चिन्मय मूर्त्ति रूप है सो मानों रूठ गई तो यह खेल में थक गये। ३—बगल घुसेड़ कर रखी हुई।

ललिता मुहि डफ मुरली दीजै❀जो चहिये सो फगुवा लीजै ।
डफ मुरली प्रीतम कर दीयौ❀फगुवा में पीताम्बर लीयौ ॥६१॥
यौं संतत दम्पति दिन रजनीं❀संग लियें ललितादि सजनीं ।
पावन सर तट कमनीं बाग❀फागुन मास नवल अनुराग॥६२
जोरी नवल नवल ही खेल❀नवल हि भयौ परस्पर मेल ।
यौं सुख बिलसे फागुन मास❀पून्यौं पूरन बढ्यौ हुलास ॥६३॥
जननी जनक लाड बहु करैं❀नित आनन्द जुगल विस्तरैं ।
आयौ दिन होरी जु मगारैं[1]❀डफ आँनक बाजैं सब द्वारैं ॥६४
गरग आदिक आये जु मुनीस❀गोपनि सहित घोष कौ ईश ।
सखन सहित मुरलीधर आये❀पूजा की सामा सजि लाये॥६५॥
वेद उचारैं पूजा करैं❀घृत श्री फल जु अगनि मुख धरैं
विप्रनि अगिनि प्रचाइ[2] जु दई❀बाजे बाजत जै धुनि भई ॥६६॥
आरज गोप समाजन[3] गावैं❀होरी पूजैं कुसल मनावैं ।
रोरी अच्छित सुविधि चढ़ावैं❀माल गूलरी करनि बगावैं॥६७॥
पूरी सुहारी गूझा डारैं❀हो होरी कहि कहि किलकारैं ।
करि परिक्रमा माथौ नावैं❀सबकौ सबहि जुहार सुनावैं ॥६८
अगनि सिखा सुभ दिस कौं चली*सबहिनु लखि मानी रंग रली ।
होरी कौ रज वन्दन कीनी❀द्विज असीस सुनि दछिना दीनी ॥
पुनि घर चले दाहिनी दै कैं❀राम कृष्ण कौं आगे लै कैं ।
नन्द पौरि पै वनिता गावैं*दुलहिनि कौ सुहाग दुलरावैं ॥
आये नन्द भीतरी पौरी❀अरघ दैंन कौं गोपी दौरी ।
जसुमति साज आरतौ कर्यौ❀राम कृष्ण कौं आँकौ भर्यौ[4] ॥७१

---

[1] —निश्शंक होकर खेलें। [2] —प्रज्वलित कर दो। [3] —सम्मिलित होकर। [4] —कंठ लगायो।

सुतनि सहित बैठ्यौ ब्रज राँनौ❀सत मष कौ सिर मौर जु माँनौ ।
विप्र असीस वेद उच्चरैं❀जाँचक गुनी गाँन मिलि करैं ७२
सुनि सुनि हिय आनन्द जु भरे❀दै पट[१] दर्वि विदा सब करे ।
सब घर चले भूप पद नै कै❀राम कृष्ण कौ आसिक दै कै ॥
लाये भेंट छतीसौं पौंनि❀[५]पहिरावत महते महतौंनि ।
सब कौं फगुवा बांछित दीयौ❀फागु सफल इहि विधि सौं कीयौ॥
कहा वरनौं जु महरि अनुराग❀खेल्यौ सुत दुलहिनि संग फाग ।
बहु पकवान परोसे थार❀भोजन करत सहित परिवार ॥७५
जसुमति और रोहिनी परसैं❀राम कृष्ण जेंवत सुख सरसैं ।
महरि मनावति धनि सुभ घरी❀जगमगाति पून्यौ सरवरी ॥७६॥
जे पकवान लाल मन भावैं❀ते मैया पै फेर मगावैं ।
बाबा गूझा लागत नीकें❀घेवर बनें जु स्वाद अमी के॥७७॥
तात लाड़ भरि देत ज्ञु कौर❀पुनि पुनि मोहन माँगत और ।
सैंननि में बलि कौ जु चिरावैं❀जानि बूझि हलधर बहरावैं॥७८॥
बलि जु कांनि बाबा की करैं❀स्यामु अतिलडे तनक न डरैं ।
ब्रज पति दोउनि कौ रुष राषैं❀हँसि हँसि कै ऐसें मुख भाषैं ॥७९॥
मोहन भयौ सयानौं ज्यौं ज्यौं❀दिन दिन ढीठ होतु तू त्यौं त्यौं ।
बड़े बन्धु सौं चलैं न नै कै❀बातैं करै ढिठाई दै कै ॥८०॥
कछु सकुचैं जु समझि मुसिकानैं❀दाऊ कौं बहु विधि सनमानैं ।
अचवन लै धोये कर पाइ❀चौकी पै बैठे ब्रज राइ ॥८१॥
पाँन दाँन ते बीरी लई❀बोलि बोलि कै सब कौं दई ।
सुत सौं हँसि बतरात जु जात❀अतर फुलेलन चरचे गात॥८२॥
भूषन वसन ग्वाल पहिराये❀सब गोदनि पकवान भराये ।

१—कपड़े तथा द्रव्य । ५—अर्थात् अहलकार जो भेंट लाये उन्हें सरोपा पहनाये ।

नाचैं गावैं करैं कुतूह❀मनहु अलोकिक मदन समूह ॥८३
करहि प्रसंशा नन्द कुँवार❀धनि धनि यह होरी त्यौहार।
महरि वाइनौ सब घर दीनौ❀पुनि सादर सब हिनि कौ लीनौ ॥
हिता[1] सुता होरी रंग वरषी❀आज देषि हौं अति हिय हरषी
निपुन बहुरिया मुरलीधर की❀भूषन मेरे नगर बगर की ॥८५॥
दै असीस सिर धरयौ जु हाथ❀जैंवन कौ लै बैठी साथ।
सादर रानी कौर लिवावै❀वदन चन्द लषि अति सचुपावै ॥
दै अनाकनी[2] मुख तन चहै❀मन मन रानी ऐसै कहै।
कौंन विधाता जिनि निर्मई❀कौंन सुकृत मुहि प्रापति भई ॥८७
छिन छिन रूप और ही सरसै❀छिन छिन मुहि अचरज सौ दरसै
मो उर आनन्द गोभ उलहिनी❀मुरली धर की नवल दुलहिनी ॥
कीरति जाई सौभग सीवाँ❀निरखि वधू सब ढोरति ग्रीवाँ।
रहै निसवासर लाज लपेटी❀लाइक बड़े सजन की बेटी ॥८९
मोहू सो सकुच न परहरै❀हरै हरै मुख ग्रास जु धरै।
कीरति जू सिख गाढो दीनी❀परम चतुर मम में धर लीनी ॥
वेई वचन हिये नित गुनै❀अरु काहू की बात न सुनै।
भान वंश की प्रभुता बडी❀तहां उतपति भई यह अति लडी ॥
अब कै फागुन अति रंग राख्यौ❀धन्य धन्य सबहिनु मुख भाख्यौ।
फगुवा में ऐसी विधि कीजै❀गहनौ नयौ गढ़ाय जु दीजै ॥९२
यौं जसुमति हिय में जु विचारैं❀पुनि कछु मुख हू ते जु उचारैं।
करि पय पान सुधा सम एहा❀सकुचि छांडि कर मो सौं नेहा ॥
यौं रानी भोजन करवायौ❀पय प्यायौ आचवन दिवायौ।
पुनि अज्ञा लीनी मृग नैंनी❀मन्दिर सौंन चली गज गैंनी[3] ॥

---

[1] —श्रीराधा जो। [2] —ओट दे कर या ओहले से। [3] —गज गति वाली।

सोभा बिछति चली मनु अँवनी❀बिछुवन की झनकार जु कमनी ।
प्रीतम श्रवन नाद अस परयौ❀रोंम रोंम आनन्द अति भर्यौ ॥
आवत लिये सहेली लारे❀मंगल हिय मंगल विस्तारे ।
नव दुलहिनि आवत रंग भीनी❀प्रीतम दृष्टि पांवडे कीनी ॥९६
मन वांछित अम्बुद ऊनयौ❀पिय[1] मन मोर मुदित अति भयौ
घुरि बरसन कौ समभयौ हेत❀भरि हैं आजु मनोरथ खेत ॥९७
अस आतुर जु कमल दल नैंन❀लाग्यौ मन चकफेरी लैंन ।
अँग २ हर्ष बढ्यौ कहौं कहा❀रस रन उर उत्साह जु महा ॥९८
आइ तलप भामिनि पगु दीयौ❀प्रीतम नेह भिजायौ हीयौ ।
राका की सरवरी पुनीत❀पिय मन गावतु मंगल गीत ॥९९
अतर दान लाई हित सजनी❀चरचत अंगनि दोउ सुख भजनी
पाँन डबा लिये ठाढ़ी नीरी❀बदलत नवल परस्पर बीरी १००
कंचन चिक द्वारनि ढरकाई❀समझि चतुर अलि बाहर आई ।
प्रेम खेल की हौं बलिहारी❀सखी विलोकति रंध्रनि जारी ॥
हित पुनि सुरति सनेह सहेली❀दुहु रुचि लिये रहत नित भेली ।
यह दम्पति तत्सुख[2] जु पराइन❀दुरी केलि रस कीये गायन ।१०२
या सुख की मरमिनि माहिली❀दम्पति के रस में रहैं झिली ।
ब्रज वृन्दाबन रस संपदा❀ये सुख स्वाद जु विलसत सदा ॥
रजनी सजनी अति बड भागी❀दम्पति केलि प्रशंसन लागी ।
नव अनुराग जुगल मन बढ्यौ❀मूरति धरि मनु उर ते कढ्यौ ॥
तिन विहार बिस्तार जु कीयौ[3]❀हित बिनु कथन औरु कौ बीयौ ।
गौर स्याम सजनीनु खिलौंना❀हिता सुता अरु जसुमति छौंना ॥

---

[1] —अर्थात् प्यारे का मन मोर प्रिया रूपी बादल को देख नाच उठा। [2] —भजन सेवा का तत्सुख सिद्धान्त कह दिया है। [3] —चौपाई ८० से १०२ तक श्री हरिवंश द्वारा गाई गई युगल रस [illegible] मना श्रीवृन्दावन धाम की [illegible] गई है

पूरब वृन्दारण्य जु जैसैं❀रस के कोस[१] खोल दिये तैसैं ।
विलसतु बाँटतु अलिनु मझार❀[२]ह्यां ह्यां संतत परिकर लार॥१०६
रस की छकनि जु ऐसे भई❀तिहि छिन निद्रा आइ सु गई ।
सोये कै ये रस में भोये❀दरसत द्रगनि अधखुले कोये ॥
सखी सखी सौं ऐसे कह्यौ❀अलप सेश अब रजनी रह्यौ ।
आजु झुलायौ चहौं हिंडोर❀जुगल जगावौ भयौ जु भोर ॥१०८
सबहि सुघर मिलि जंत्र बजावौ❀सुविधि अलापौ भैरौ गावौ ।
रस भोगिनु लखि परि है प्रात❀नाद सुनत उठि हैं अरसात ॥
जंत्र बजावन लगि सहेली❀कुन्दन की सी फूली बेली ।
राग अलाप्यौ ऐसी रीति❀जगे जुगल सुनि बाढी प्रीति ॥११०
पट भूषन कछु बदलन लागे❀अति छबि देत मरगजे वागे ।
आँनन पै जु मनोभव[३] झलकनि❀गंडनि रद छत हिय रस ललकनि
चौकी पै कुसुमासन कीयौ❀बैठे आइ जुगल सुख दीयौ ।
रतन कुँडी लै आगैं धरी❀अलि जल झारी लीयैं खरी ॥
कर धुवाइ दातनि करवाई❀मंगल भोग थार सजि लाई ।
माखन सिता मिलाइ मलाई❀जसुमति मोठी दही पठाई ॥
भर्यौ कटोर तुरत कौ घैया[४]❀अधिक हेत सौं पठयौ मैया ।
जैंवत भोर लड़ैती मोहन❀गौर स्याम लागत अति सोहन ॥
रूप सवादी लोचन जैसे❀षट रस स्वादी रसना ऐसैं ।
त्रिपित भये जल अचवन लैं कै❀मुदित भई सखि बीरी दै कै ॥११५
बाजे बाजैं आरति करैं❀नित्त करत जै धुनि उच्चरैं ।
उबटन करि जल उष्न न्हवावैं❀अंग अंगौछि वसन पहिरावैं ।११६

१—खजाने । २—नित्य निकुंज तथा प्रकट प्रकाश अवतार काल लीला यह भाव है । ३—कामदेव । ४ - अधमथा मट्ठा जिस पर माखन तैर आया ।

नख सिख सुन्दर भूषन सचैं❀भाल तिलक दृग अंजन रचैं ।
आपु अलंकृत सजनी भई❀जसुमति पास दुहुँनि लै गई ॥
सनमुख विहँसत दुलहिनि आई❀हँसि ब्रजरानी अँक लगाई ।
परम सुसील करति अस नवनी❀बेली रूप झुकी मनु अवनी ॥
नित सुख बढ्यौ तात घर पूरौ❀अविचल रहौ बधू तो चूरौ ।
दुलहिनि भीतर मन्दिर गई❀पुनि जु आसिका सुत कौं दई ॥
होरी कौ पकवाँन जु लाई❀असन करावति ढिग बैठाई ।
वधू रोहनी ने सनमानी❀वदन ग्रास दै दै जु सिहाँनी ॥१२०
होरी विदा भई खुलि नची❀घर घर धूम खेल की मची ।
कोऊ काहू ते नहिं डरैं❀धूर लपेट कुरूप जु करैं ॥१२१
भरैं पोटरी धूर बगेलैं❀[1]माल गूलरी गर में मेलैं ।
राम कृष्ण चढि गये चौबारे❀दुरे झरोषनि उझकनि हारे ॥१२२
स्वाँगी स्वाँग जु लावैं घनैं❀कोऊ वानर जु रीछ से बनैं ।
कोऊ बने परम अवधूत❀बोलत बचन विकार संजूत[2] ॥
जहं तहँ पौरिनु भिरे किवार❀राम कृष्ण कौ ढूँढत ग्वार ।
भीतर मन्दिर पैठि न सकैं❀मुख आवै सोई पुनि बकैं ॥१२४
भलैं भलैं रे ब्रजपति पूत❀हम ते दुरि बैठ्यौ अब धूत ।
दौरे फिरत गली साँकरी❀दुरि दुरि हरि फैंकत काँकरी ॥
ऐसे खेल मगन सब भये❀नर नारी जु विलज ह्वै गये ।
बासर बीति गयौ द्वै जाँम❀फिरी नीत की डौंडी ग्राँम[3] ॥१२६
मदन उडाई इहि विधि धूरि❀कियौ विडंबन ब्रज ते दूरि ।
पावन सर जु जाइ सब न्हाये❀नौतन बसन पहिरि घर आये ॥

---

[1]—गले में एक प्रकार की विनोद प्रद माला उचक कर पहना देना जो होली में करते हैं। [2]—ऊट पटांग मस्ती की बातें। [3]—अब होरी धूम धक्कड़ बन्द भई।

लालहि झूलन डोल उमंग❀लै गये दुलहिनि परिकर संग ।
अति कमनी तरु कदमनि पांती❀डोल रच्यौ तहाँ नीको भांती ॥
झूलत फूलत थल एकन्त❀गावत छन्द सखी गुनवन्त ।
लाल चातुरी बहुविधि खरचैं❀विविध सुगंध प्रिया तन चरचैं ॥
बाजे बाजैं नाम अनेक❀सुख भोगी तन द्वै मन एक ।
झोंटा दै सजनी मन फूलैं❀परिवा परव मनाइ जु झूलैं ॥१३०
बड झोंटनि मन भांमिनि डरैं❀लाल रसिक भुज ग्रींवा धरैं ।
धनि बड भागी रितु जु बसंत❀यों सुख विलसत भांमिनि कंत ॥
ग्रह वन बहै उदधि आनन्द❀क्रीडत भाँन सुता नन्द नन्द ।
चकित होति ललितादिक सखी❀वन में सोभा औरै लखी ॥२३२
मिलि गावैं जु परस्पर ऐसैं❀चर होंइ थिर थिर चर होंइ जैसैं ।
सखी असीशैं करहिं प्रसंश❀देहु सदा सुख श्रीहरिवंश ॥१३३
बीरी माल सबनि कौं दै कै❀घर आये बासर जु बितै कै ।
दीयौ अरघ आरतौ कीयौ❀कुशल मनाइ भवन में लीयौ ॥
रोंम रोंम यसुमति सुख भरी❀रतन मूँठि न्यौछावरि करीं ।
पुत्र वधू के लाड जु माहीं❀निशि बासर गत जानैं नाहीं ॥
दोहा–दुलहिनि परम सुलच्छनीं, जब पग धारयौ ग्रेह ।
नन्द भवन आनंद कौ, छिन हूं परत न छेह ॥१३६॥
को बपुरा कवि बरनि है, दम्पति लाड सुहाग ।
सुख जु विस्तरयौ लोक सब, इहि विधि खेलैं फाग ॥
ब्रजरांनी ब्रजराज कौ, इहि विधि भाग अकूत ।
देख्यौ सुन्यौ न शृष्टि विधि, अस दुलहिनि अस पूत ॥
होरी हूं रस मय करी, हो नीरस त्यौहार ।
को रसमय नहिं होइगो, दंपति गाइ विहार ॥१३९॥

बंदौं श्री हित रूप गुरू, जिनकें परम प्रसाद ।
मो रसना उर वर फुर्‌यौ, ब्रज गरुवौ अहिलाद ॥१४०॥
वृन्दावन हित रूप अस, समरथ श्री हरिवंश ।
यह रस श्री वपु धरि कह्यौ, करत रसिक परसंश ॥१४१

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री वृषभांन नांदनी नन्द नन्दन बसंत होरी खेल विहार बरनन चौसठवीं लहरी को जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

❀ अथ पैंसठवीं लहरो ❀

दोहा–सखी गई वृषभाँन पुर, दीनी कुँवरि पठाइ ।
कीरति हरषी देखि कैं, प्राँन सुधन सौं पाइ ॥१॥
मो सौं कहि बड भागिनी, राधा मुख की बात ।
प्राँन पोष सुनि पाइ हैं, होंहि डहडहे गात ॥२॥
राँनी राधा लाड की, मित करि सकै न कोइ ।
ब्रजराँनी सम सासु जग, विधि की शृष्टि न होइ ॥३॥
ब्रज राँने की इहि वदन, करौं बड़ाई कौंन ।
भाँन सुता मन लियें रहौ, नित कहि जाँइँ जु भौंन ॥४
जननी श्री बलिराम की, लिये रहत मन हाथ ।
श्री राधा मधु बोलनीं, सुखित होति उनि साथ ॥५॥

॥ चौपाई ॥

नित नव पट भूषन पहिरावैं❀प्रात कलेऊ सुहथ करावैं ।
बधू नगर की बैठी रहैं❀राधा बदन मयंक जु चहैं ॥६॥
श्री राधा पुर कौतिक भई❀जिन देखी सुरूप छकि गई ।
कहैं धनि कूँखि प्रगट भई जहां❀अस सुन्दरता त्रिभुवन कहां ॥
तुम्हरी होति प्रसंशा पुर में❀सुनि २ फूलति अतिलडि उर में ।

अब गौरंग सन्देसौ सुनौ❁पूरब सुकृत अपनौ लुनौ ॥८॥
कुँवरि कह्यौ हौं सब विधि सुखी❁ऐ पै मैया बिनु रहौं दुखी ।
मुहि दिन बीतत जुग जु समान❁आयौ बीर सुनौं नहिं कान ॥९
माइ मिलन की जब सुधि आवै❁तब मोकौं भोजन नहिं भावै ।
जद्दपि इहिं घर सुख जु घनेरौ❁मन नित करै भाँन पुर फेरौ ॥१०
जननी जनक लाड हद मेरे❁सुधि न लई दिन गये बहुतेरे ।
अब अतिलडि अकुलात निराट❁बीर आवने हेरति बाट ॥११
सखी संदेसौ इहि विधि कह्यौ❁सुनि कीरति नैंननि जल बह्यौ ।
माइ मिलन अतिलडि अकुलानी❁सुनि व्याकुल भई कीरति राँनी॥
यह रट लगी कुँवरि कौं लावौ❁मो कौं अबहीं आनि मिलावौ ।
जो कोऊ उहि पुर ते आवैं❁नित उठि यही संदेसौ लावैं ॥१३
रावलि पति सौं कहति जु राँनी❁गद गद कंठ न निसरत बाँनी ।
सखी बचन मन दै सुनि लीजे❁कुँवरि बुलावौ गहरु न कीजे ॥
रावलि पति मन करुनाँ भई❁श्री दाँमा कौं अज्ञा दई ।
सुनौ अतिलडे मन दै बात❁तुम उठि जाउ नन्दपुर प्रात ॥१५
हाँडी डला भरावौ पाक❁सजि लै जाउ सजन घर छाक ।
मैया सुत ठोड़ी गहि रही❁बार बार पुनि ऐसें कही ॥१७॥
बेटा जाइ बहिनि लै आवौ❁मो उर दृग आनन्द बढावौ ।
मेरे प्राँन बसत वा माँहीं❁मो बिनु परै वाहि कल नाँहीं ॥

दोहा—सुधि करि कै राँनी दृगनि, बही जु आनंद वारि ।
ऐसौ प्रेम हिये बढ्यौ, तन सुधि दई बिसारि ॥१८॥
श्री दाँमा पुनि पुनि कहत, मैया होहु सचेत ।
काल्हि नंद पुर जाँउँगौ, बहिनि लाइबे हेत ॥१९॥

॥ चौपाई ॥

सबनि सुनी पुनि सबहिनु जाँनी❀श्री दाँमा के मुख की बाँनी।
जै हैं प्रात कुँवर श्री दाँम❀राधा लैंन नन्द के ग्राँम ॥२०
कृष्ण मिलन हूं की मन साधा❀बहुरि प्राँन सम बहिनि जु राधा।
अतिलडि लावन की सुधि पाई❀दौरी आई काकी ताई ॥२१॥
साथिनि सुनत हिये भई हरी❀आइ भौंन के मन्दिर भरी।
भैया बहुत बीनती कीजौ❀ब्रजपति मन परचाइ जु लीजौ ॥२२
तेरौ मानि राखि है भारी❀अग्या दै हैं ताही वारी।
सज्जनता जु भरी उर माँहीं❀वे कब हूं नहि करि हैं नाँही ॥
सुनि कीरति मन भरी हुलास❀बैठी श्री दाँमाँ के पास।
बेटा एक राति ह्वाँ रहियौ❀जसुमति सौं पालागन कहियौ ॥२४
वार वार विनती यौं करियौ❀मेरे वचननि चित्त में धरियौ।
मो सौं हित राखति हौ जैसे❀कुँवरि पठाइ दीजियौ तैसे ॥२५
दोहा—प्रातहि राजकुँवर चल्यौ, रथ चढि सहित समाज।
हिये अधिक बढी चटपटी, बहिन मिलन के काज ॥२६

॥ चौपाई ॥

श्री ब्रजराज विराजत जहाँ❀आइ प्रनाँम कुँवर करि तहां।
मुरलीधर सुधि पाइ जु आये❀श्री दांमा हँसि कंठ लगाये ॥२७
हलधर मिले मिले पुरवासी❀इत उत अधरन रमी जु हांसी।
ब्रजपति बहु सनमान जु कीयौ❀अपने निकट बैंठना दीयौ ॥२८॥
विप्रनि आइ असीस सुनाई❀सादर नृप लै सीस चढाई।
नेगिनु कियो जुहार जु नै कै❀नृप बैठारे आदर दै कै ॥२९॥
श्री दांमा सौं बूझत बात❀रावलि पति हैं नीके[1] गात।

---

[1]—शरीर स्वस्थ है।

बूझी कुशल जु पुर परिवार❀लाइक कृष्ण जनक रिझवार ॥३०
नृप सुत कहतु विविध परनाम❀तात सहित लै सब के नाम ।
भांन प्रनाम लई कर प्रीति❀समाचार बूझै इहि रीति ॥३१॥
कुँवर तात के वचन सुनाये❀[1]ब्रजपति नैंन सजल ह्वै आये ।
विप्र बुलाइ सुदिन सुधवायौ❀बहिनि लै चलन आयसु पायौ ॥
सजन मान राख्यौई चहैं❀नांहीं मुख ते कैसे कहैं ।
त्रिपिति न होत सुनत मृदु बचनां❀जिन में अति सनेह की रचनां

दोहा—ब्रजपति भींजे प्रीति उर, सुनत सजन रस रीति ।
बारंबार प्रसंश हीं, रावलि पति की प्रीति ॥३४॥
लाल हियौ सुनि गहबर्यौ, राख्यौ सबल जु रोकि ।
कांन करत कछु तात की, अँवनी रहत विलोकि ॥३५॥
भाजन बहु पकवाँन कें, भीतर दिये पठाइ ।
श्री दांमा न्यारे भँवन, मिल्यौ बहिन सौं आइ ॥३६॥
भुजा पसारि गरें लगो, प्रीति अधिक दुहुँ ओर ।
सुरझाये सुरझत नहीं, प्रेम बढ्यौ सह जोर ॥३७॥
अति प्यारौ सोदर सखी, मिल्यौ जु अवसर पाइ ।
प्यारी मन करुना बढीं, कहति माइ पुनि माइ ॥३८॥

॥ चौपाई ॥

सनय सनय मुरझाइ सु लीयौ❀मणि चौकी जु बैठना दीयौ ।
तात मात की बूझति कथा❀बन्धु कहतु समझाइ सु जथा ॥३९
लै लै नाम सबनि कौ बूझ्यौ❀सब कौ हेत सिंधु सम सूझ्यौ ।
उष्न नीर सौं चरन धुवाये❀भोजन हित सादर बैठाये ॥४०॥

---

[1] श्री राधा जी के वियोग होने से श्री नन्द जी का मन भर आया ।

सखरे निखरे परसे साज❀राज कुँवर बैठ्यौ जु समाज ।
लै लै ग्रास स्वाद सौं पावैं❀राधा मन आनन्द बढावैं ॥४१॥
नांनां विधि के विंजन परसैं❀स्वाद पाइ कैं अति मन सरसैं ।
करैं निहोरैं प्रति प्रति कौर❀राधा कहै बीर लिहु और ॥४२
जाहि सराहि जु सोदर पावै❀ताहि कुँवरि पुनि २ लै आवै ।
बिच बिच माइ सन्देसौ कहि २❀प्यारौ बीरनु जेंवतु रहि रहि ॥
भोजन करि सब पूरन भये❀पुनि शीतल जल अचवँन लये ।
एला सहित जु बीरी बांनि❀सादर दई सबनि कौं आंनि ॥
मातु लाड की बातनि सुनि २❀श्री राधा आनन्द भरीं पुनि २ ।
सुख में बीति गई सब रजनीं❀चलौ महरि पै कहति जु सजनीं ॥
आइ सासु पद नवनीं कीनीं❀दै असीश पुनि भुज भरि लीनीं ।
उबटन करि जल उष्न न्हवाइ❀वसन अमोल सजे तन लाइ ॥४६
सुहथ रोहिनी आपु शिगारैं❀रचि रचि कै शिर पाटी पारैं ।
नव पट भूषन सजे अंग अंग❀तन दुति मिलि छवि बढी अभंग॥
पाक अपूरब मधुर सलौंनें❀चन्द्र कला घेवर जु त्रिकोंनें ।
फल मेवा मन रुचते लावैं❀अपने कर रोहिनी जिमावैं ॥४८
हँसि पुचकारि देति मुख कौर❀कहतिं लेहु प्यारी कछु और ।
भरि कटोर दधि मिष्ट पिवायौ❀तुष्टि जानि पुनि जल अचवायौ॥

दोहा—मुख सुन्दरि बीरी दई, यसुमति सुहथ बनाइ ।
दृग अंजन दीयौ जु, पुनि कजरौटी खुलवाइ ॥५०॥
चरननि जावक भरति हैं, सुघर नइनियां आइ ।
तरवनि की लाली निरखि, रीझी लेत बलाइ ॥५१॥
नौ नन्दनि की घरनि जहां, बैठी सब पुर भांम ।
वरनति जननी कृष्ण की, श्री राधा गुन ग्रांम ॥५२॥

पीहर चलि दुलहिनी, मो दृग पुतरी एह ।
यह रस रतन सुलच्छनी, बढ़ि गयौ अधिक सनेह ॥५३॥
फेरि पारि जु दुलहिनी, लाये घर ब्रजनाथ ।
सुत हू ते गरुवी जु मो, प्रीति बढ़ी या साथ ॥५४॥
कीरति विह्वल न्याइ हिय, हौं सहि सकौं न बिछोह ।
बिधि नहि समुझयौ जिहि घरी, रच्यौ बली यह मोह ॥
हिय के हिय कौं बेध हीं, प्रगट न परतु लखाइ ।
ऐसे बैरी सबल सौं, काहू की न बसाइ ॥५६॥

॥ चौपाई ॥

सबहिं सुनौ पुनि आदर देहु❀मो मन गति असि समझि जु लेहु
हौं अब कहौं और ते कथा[१]❀तरुनी विद्ध बाल सुनौ जथा ॥
नारायन पूजे चित्त लाई❀बन देवी संकेत मनाई ।
विधि तन ओटी ओली पुनि२❀वह लरज्यौ मो बिनती सुनि २ ॥
पुनि ब्रजपति पूरब पुन्याई❀गिरि प्रसाद यह भई सगाई ।
ब्याह भये सब ब्रज जन हरषे❀सुर विमाँन चढ़ि कुशमनि वरषे॥
मुनि असीश मन क्रम बच दई❀मो अभिलाषा पूरन भई ।
जब ते राधा ब्याही आई❀ब्रज सुख संपति बढ़ी सवाई ॥६०
कहै कमला नारायन ग्रेह❀मुहि ब्रज बिचरति लगति सदेह ।
घर घर घोष संपदा बढ़ी❀यह मन अचिरज कहां ते कढ़ी ॥
जब राधा पुर पौंरी दरसी❀नगर जोति कछु औरै सरसी ।
गाइ बजाइ भवँन जब लई❀हौं मुख देखि मगन ह्वै गई ॥६२
सोभा निकर सदन मो भरी❀मंगल रीति रोहिनी करी ।

१—अर्थात घर वालों का हाल कहा अब औरों का हाल भी सुनो श्री यसुमति कह रही है ।

रूप देखि ऐसी बौराँनी[१]❀अहा अहा मुख निसरै बांनी ॥६३॥
जुरि जुरि बनिता जूथनि आवैं❀गलिनु गलिनु में मंगल गावैं।
मुख दिखराई भेंटैं लावैं❀लै बलाइ करजनि चटकावैं ॥६४
कोउ छवि पै त्रिन तोरि जु डारैं❀कोउ लै राई लौंन उतारैं।
कहैं धन्य कीरति की जाई❀तो सम विधना तुही बनाई ॥६५
हौं सुख लाड मगन नित रहौं❀मन की बतियां मन सों कहौं।
राधा बदन ओर जब चहौं❀बहु विधि सुख जु अपूरब लहौं ॥
हिय जिय डीठि लगन ते डरौं❀तब विधना सौं बिनती करौं।
मेरे प्रान सुधन सुन बाला❀रक्ष्या कीजौ दई[२] दयाला ॥६७
झँनक झँनक मन्दिर में डोलैं❀बहुत मान दै मो सौं बोलैं।
हौं सुनि अपु हिय शीतल करौं❀दै असीश पुनि अंकनि भरौं ॥
मेरौ मन लै बातें करै❀सुख जु अपूरब मो मन भरै।
बदन कनक अम्बुज मनु कली❀मो घर नित राखति रंग रली ॥
ऐसे नित मो कौं सुख दीयौ❀रहै प्रेम सौं भींज्यौ हीयौ।
गोकुल पति आवैं जब धांम❀बोलैं भानु सुता लै नांम ॥७०॥
चंपक बरनी नीकैं रहियौ❀मन की बात सासु सौं कहियौ।
सुनि नृप सुता सकुच जिनि कीजौ❀जो चहिये मँगाइ सो लीजौ ॥

दोहा—बार बार समझाइ मुहि, कहि जु जात ब्रजनाथ।
बेटी गरुवे सजन की, मन लिये रहियौ हाथ ॥७२॥
हौं तैसें ही मन लियें, रहौ सांझ पुनि भोर।
राधा मूरति मोहनी, मो मन गह्यौ बर जोर ॥७३॥
रूप परावधि दुलहिनी, मन परच्यौ ता पास।
और जु सुख हरुवे लगे, इहिं गरुवे[३] सुख आस ॥७४॥

---

[१] —बावरी हो गई। [२] —इष्ट रक्षा करने वाले। [३] —अतुलनीय अनुपमेय।

श्री राधा मिठ बोलनीं, हौं लाडौं बहु भांति ।
मोहि नहीं जानी परै, कित बीतत दिन राति ॥७५॥
बदन अनूपम चन्द्रमा, देखिये विपुल प्रकास ।
मो घर नित पून्यौ रहै, अमी श्रवैं मृदु हाँस ॥७६॥
राधा सुख भींजी रहैं, पुर बनितानि समाज ।
लाड बचन सुनिबो करैं, घर के तजि तजि काज ॥७७

॥ चौपाई ॥

एक जाँइँ इक धांई आवैं❀मधुर बचन कहि कहि दुलरावैं ।
नाम पर्‌यौ जु चन्द[1]सत मुखी❀सब कोउ कहै होंहुँ सुनि सुखी ॥
गहमह ह्वै रहैं मेरे अँगना❀देखि देखि हौं मन होउँ मगना ।
धन्य जनम मान्यौ मैं भुव तल❀दई दिखायौ मोहि अगह फल ॥
ऐसे सुख में भींजो रहौं❀भाग बली हौं अपु कौं कहौं[2] ।
रहौं सम्हारत दिन पुनि राती❀निधनें की सी मिली जु थाती ॥
जोरि २ कर गिरि सौं कहौं❀ऐसे हीं नित देखति रहौं ।
कौंन सुकृत कौ फल सुकुँवारी❀मनु सोभा के सांचें ढारी ॥८१॥
राधा सुख सोभा की रासी❀आइ आइ कहैं सब पुरबासी ।
होइ पद परसि अलंकृत धरनीं❀इहिं पुर राधा मंगल करनीं ॥८२
अब पीहर चलिबें मन धरी❀मोहिं प्रेम ने व्याकुल करी ।
तात भँवन कौं जब पग धरि हैं❀मोहि राति दिन कल क्यों परि हैं॥
दोहा—भाँन सुता ब्रजपति सुवँन, गहनौं मेरे भौंन ।
मोहि दई दियौ अगह[3] फल, अस बड भागिनि कौंन ॥
राधा लोक महामणी, सब कोउ कहैं बिचारि ।
लाड परावधि दुहूं घर, पीहर पुनि ससुरारि ॥८५॥

---

[1]—अनंत चन्द्रमाओं सा । [2]—संचित धन । [3]—अगाध अकथनीय ।

॥ चौपाई ॥

कीरत भई कलप तरु भू पर❀तहाँ लग्यौ यह फल सबू पर ।
मैं जाच्यौ बड भागनि दीयौ❀सफल मनोरथ मेरौ कीयौ ॥८६
इहि सम नहीं और त्रिभुवन में❀देख्यौ मैं विचार करि मन में ।
निरखि २ हिय जिय सुख भरौं❀देउँ त्रिन तोरि डीठि डर डरौं ॥८७
तब बोली उपनन्द जु घरनी❀महरि सत्य तुम मुख ते वरनी ।
कीरति तुम सौं हेत निबाह्यौ❀भांति भांति कियौ चित कौ चाह्यौ॥
यह नृपसुता भवन हम गहनौ❀सुकृत अवधि कौ लह्यौ जु लहनौ।
कीरति की कीरति जु सदेह❀रवि कुल दरसी भयौ धनि एह ॥
रावलि पति हित में चित दीजै❀विदा करत अब गहरु न कीजै ।
यौं बोली जसुमति जु जिठांनी❀सब मन रुची सुधा सम बाँनी ॥
चलिवे की त्यारी जु करावैं❀सिमिटी बनिता मंगल गावैं ।
हाँडी डला अनेक भराये❀लै नेगिनु कै सीम धराये ॥९१॥
डोला नन्द पौरि जब आन्यौं❀राज कुँवर तब अस्व पलान्यौं ।
हलधर गिरधर ब्रजपति मिलैं❀सब ही अधिक प्रेम रस झिलैं ॥
बहुत प्रनाम भाँन सों कहियौ❀हमें सदा सुधि करत जु रहियौ।
रोरी अच्छित सुविधि मँगाइ❀कीयौ तिलक घोष के राइ ॥९३
कहति महरि हौं विह्वल महा❀चित्त की विर्त्ति सुनाऊँ कहा ।
देखि २ राधा मुख चन्द❀उर उमग्यौ सागर आनन्द ॥९४
रँवकि भरी भुज भांन दुलारी❀कोटि प्राँन हू ते मुहि प्यारी ।
गहि गहि भुज रोहिनी निबेरे❀धीरज मन आवै नहिं नेरे ॥९५

दोहा—हौं तजि सकौं न एक छिन, अब जु चली घर माइ ।
क्यौं दिन राति जु बीतति है, काहि कहौं समझाइ ॥९६॥

सोभा निधि आनंद निधि, बहुरि लाड कौ ऐंन ।
औरै और लगै जु नित, जब जब देखौं नैंन ॥९७॥

॥ चौपाई ॥

सखी निरवारि लेहिं पुनि भेटैं❀मनु आनन्द के कोट समेटैं ।
पुनी रोहिनी लई भरि अंक❀अपल निहारति वदन मयंक ॥
पुर बनिता सब हीं उर लावैं❀अति मन मुदित असीश सुनावैं ।
बरनत बनै न कौतिक नयौ❀सब पुर राज प्रेम कौ भयौ ॥९९॥
कुँवरि सखी फिरैं भरी हुलास❀मंगल मह नन्द रनिवास ।
पुनि पुनि महरि असीशैं देति❀करजनि चटकि वारनैं लेति ॥
पट अमोल बकुचा बहु भरे❀गहनें डबा सकट लै धरे ।
साज अनेक संभारि भरावैं❀सबहिं भांति त्यारी जु करावैं ॥
री अतिलडि तू नीकें रहियौ❀कीरति सौं पालागन कहियौ ।
सुधि कीजौ मेरी ह्वाँ जाइ❀बेगि दीजियौ ह्यां सुख आइ ॥१०२
मैं कीरति कौ कह्यौ जु कीयौ❀तब तो ह्वाँ पठै सु दीयौ ।
जब बूझैं रानी करि प्रीति❀कह्यौ सब ह्यां की रस रीति ॥
जितौ लाड है तेरौ तहाँ❀इतौ बनि सक्यौ मोतें कहाँ ।
हौं अब हेरति रहि हौं बाट❀कब देखौं यह गौर लिलाट ॥
अचल सुहाग जहाँ विधि भरयौ❀सब सुख लै लिलाट यह धरयौ ।
भांति भांति मुहि सुखित जु कीयौ❀अब करि सुखित माइ कौ हीयौ

दोहा–श्रीराधा मृदु बोलना, अमी कंठ जिहि बास ।
रूप गुन भरी नागरी, छिनु न तजै ते पास ॥१०६॥
भाँन वंश बेली फली, दई नवाई डार ।
सो फल मुहि प्रापति भयौ, गिरि जु कृपा निरधार ॥१०७

रोरी मँहदी राचनौ, लाड कोथरी लाइ ।
परम प्रीति करि रोहिनी, दई डोल धरवाइ ॥१०८॥

चौपाई

सुभ वेला आई जब जानी❀कहन लगी तब सबहि सयाँनी।
अतिलडि अब डोला पग धरौ❀पिता भवन कौं गवन जु करौ ॥
सब मन परे प्रेम झकझोर❀चितवति प्यारी मुख की ओर।
सबहि माँन दै डोला चढी❀माइ मिलन मन आनन्द बढी ॥
मोहन श्रीदामा मिलि संग❀चले नचावत तरल तुरंग ।
नन्द ग्राँम की सींव जु आये❀तबहि स्याँम पाछे अहुटाये[1] ॥
उतरि अस्व ते ठाढे भये❀प्रेम भार सौं तन मन नये[2] ।
भुज भरि रहे न सुरझ्यौ चहैं❀गद गद कंठ बचन मृदु कहैं ॥
बड़ी वार तन सुरझनि भई❀नेह ग्रन्थि हिय जिय घुरि गई ।
स्याँमनन्द पुर कौ फिरि गये❀ये वरसाने सनमुख भये ॥११३
मुरि मुरि देखत हैं दुहुँ ओरी❀मन रहै उरझि प्रेम की डोरी।
इनि मन लै गये नंद कुँवार❀उन मन रह्यौ जु इनकें लार ॥११४

दोहा—नाते की उरझनि अधिक, अधिक परस्पर नेह ।
नंद सुवन श्रीदाँम मनु, एक प्राँन द्वै देह ॥११५॥
अन्तर कैसें सहि सकें, पै लौकिक व्यौहार ।
विधिवत सोभा पावहीं, प्रथनि कियौ विचार ॥११६॥
श्री राधा गुन रूप कौ, महरि कह्यौ उत्कर्ष ।
यह जु पराक्रम प्रेम कौ, जिन करवायौ पर्ष[3] ॥११७॥
चतुर भुराइ की अवधि, ब्रज परिकर के लोग ।

---

[1]—बरजोरी उन्हें वापिस किया । [2]—नमन किया । [3]—वर्णन या परख ।

दरसै अवसर पाइकै, जैसौ लखै संयोग ।
जो स्वरूप सर्वेस्वरी, झलक्यौ जसुमति हीय ।
प्रेरि कहायौ सारदा, वनितनि लाग्यौ प्रीय ॥११६॥
वृन्दावन हित रूप अस, सब मन रुचै प्रसंश ।
नमो कृष्ण अह्लादिनी, स्वामिनि श्री हरिवंश ॥
गौर स्याँम जोरी जु ब्रज, दरस्यौ बेहद रूप ।
कहत परस्पर नारि नर, तिन के चरित अनूप ॥
सुकृति इहि सुख ढुरि लगे, पगे गरुवौ रस पाइ ।
गुरु हित रूप प्रसाद लहि, वृन्दावन हित गाइ ॥१२२॥

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री राधा लाड गुन रूप उत्कर्ष महार मुख श्री भांनपुर गमन बरनन पैंसठवीं लहरी को
जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

❀ अथ छियासठवीं लहरी ❀

दोहा—नमो नमो सर्वेस्वरी, अवधि प्रेम ग्रह तात ।
किहि छिन भेटौं जाइ कै, भुज भरि कीरति मात ॥१॥
कहति अतिलडे वीर सौं चलौ अस्व दौराइ ।
यह दरसतु वृषभाँन पुर, वेगहि भेटौं माइ ॥२॥
बहिन अधीरज होइ जिन, कहतु कुँवर श्री दाँम ।
सनय सनय मारग चलौ, नियरौ आयौ धाँम ॥३॥
भैया आयौ कालिह तू, मुहि भये जुग जु समाँन ।
तात मात जब दृग लखौं, तब सीतल होइँ प्रान ॥४॥
तब हँसि कै सोदर कही, तू भोरी गौरंग ।
तैंसियै भोरी रहति नित, सजनी तेरे संग ॥५॥
चलत चलत व्याकुल अधिक, होति जु हिय जिय माँहिं ।

इहाँ विरमि भोजन करौ, वट संकेत जु छांहिं ॥६॥

॥ चौपाई ॥

सुनि संकेत नाम मुद भरी❀खेलन की जु ठौर सुधि करी ।
देखि सघन कदंब तरु पांति❀जहँ पंछी बोलत बहु भांति ॥७
उतरि भई डोला ते ठाढी❀लखि बट कुंड फूल मन बाढी ।
निरखी कुंज परम सोहनी❀धरा अलौकिक जहाँ मोहनी ॥८
पारजाति से फूले तरवर❀अमृत तोइ भर्यौ ढिग सरवर ।
सोभा लखि उर आनन्द भर्यौ❀कुँवरि बैठि तहाँ भोजन कर्यौ ॥
चुनि २ सखी मिष्ट फल लाई❀श्री राधा पै विहसति आई ।
गौरांगी लखि मुदित जु भई❀सबनि गोद मेवा भरि दई ॥१०
बन्धु सहित सब सखिनु जिमाइ❀डोला चढी कुँवरि तब आइ ।
तात भँवन कौ राधा गवनी❀प्राँन पोष पावत लखि अवनी ॥
दृष्टि प्रेम[1] सर तरवर परे❀दिव्य कलपतरु फूले फरे ।
वरनौं कितौ जितौ सुख पायौ❀हिये प्रेम अति झलक जु आयौ॥

दोहा—गिरि उतंग कंचन महल, जारी रतन प्रकास ।
हरि[2] पुर हूं ते देखियै, जिहि पुर गरुवौ बास ॥१३॥
वरसाँनौ वृषभाँन कौ, सब लोकनि सिरमौर ।
देख्यौ अतिलडि नैंन भरि, मन गति भई जु और ॥१४
घर घर अचल जु संपदा, घर घर नव नव ओप ।
सुर सुरत्रियनि लज्यावहीं जिहि पुर गोपी गोप ॥१५॥
प्रेम बसत जहँ प्रेम सर, ऐसौ थल अभिराम ।
प्रेम विवस राधा भई, पर्यौ प्रेम सर नाम ॥१६॥

---

[1]—प्रेम सरोवर के वृक्ष नजर पड़े । [2]—अर्थात् वैकुंठ से बढ़ चढ़ कर ।

॥ चौपाई ॥

उपवन लसै जु पुर के पास❀सुर तरवनि करत उपहास ।
वारौं अमर पुरी के बाग❀इनके सम कहा तिन के भाग ॥
भाँन सुता सुदृष्टि कर सींचे❀फूलति फलति ह्वै रहै नींचे ।
मणि मय सिढीं जु तरवर तीर❀जिन में भर्यौ अमी सम नीर ॥
विधिनाँहूं की विधि ते न्यारी❀रचना कारीगरनि सँवारी ।
पंछी विचरत निर्भय जहाँ❀तिन कौ उपमा खोजौं कहाँ ॥१८
श्री राधा सुदृष्टि करि पले❀तरु डारिन पर सोभित भले ।
तिनहि निरखि फूली हिय गात❀कहन लगी कछु तिन सौं बात ॥
भैया तुम जु सुखित सब अंग❀ऐसें कहति कुँवरि गौरंग ।
खग भये सुखित अतिलडि देखि❀कहा वरनौं तिन भाग्य विशेषि ॥
अप अपनी बांनी जु सुनावैं❀मानैं मुदित बधाये गावैं ।
तरु बेली हूं अतिसै लसैं❀मानौ मानि बधाई हँसैं ॥२२॥
सरवर तीर जु डोला धर्यौ❀लै जल पान अमी ज्यौं कर्यौ ।
जोरैं कुँवरि दोउ कर कमनीं❀गिरि की ओर करी सिर नवनीं ॥
पीरी पोखरि में की मीन❀देखत कुँवरि प्रेम भई लींन ।
अरी भटू तुम नीकें सबै❀मो सौं गाथा कहौ जु अबै ॥२४
भाग्य भरी तुम इहि सर रहौ❀अपनौ सुख सब मोसौं कहौ ।
हौं अब आई समयौ पाइ❀करुना करि जु बुलाइ माइ ॥२५
दोहा—जदपि निकट मो सासु घर, घोष नृपति को ग्रांम ।
तद्दपि मोहि विदेस भयौ, तात मात कौं धाम ॥२६॥

चौपाई

तुम जु सदा संतति इहिं नीर❀जुनति आपने सुकृत सीर ।

अति अभिराँम कुंड इहिं मांहिं❀तात प्रताप कछुक भय नांहिं ॥
कहा कहौं कुँवरि प्रेम की सींवाँ❀तरु बेलीनु नवावति ग्रींवाँ ।
रोम रोम अहिलाद जु बढ्यौ❀देखि तात पुर बल करि कढ्यौ ॥
डोला लख्यौ जु सरवर तीर❀नर नारिनु की तहँ भई भीर ।
तजि तजि धाम काम सब आवैं❀ज्यौं ज्यौं सुधि पुर बासी पावैं ॥
राधा आईं सुनि अरबरे❀गहरे घाव निसाँननि परे ।
बाजन लगे धातु के भाजन❀लगे सबै पुर मंगल साजन ॥३०
पौरी पोखरि राधा आई❀ऐसी सुधि कीरति जु पाई ।
बैठी ही मणि चौकी राँनी❀प्रेम रोकि लई ता छिन बाँनी ॥३१
बडी बेर में चेती ऐसैं❀बिछुरे प्राँन मिलत है जैसैं ।
कहाँ कहाँ री मेरी माई❀को तू जो ऐसी सुधि लाई ॥३२
मोहि छिन बीते कलप समाँन❀ऐसी सुधि कीरति जु पाई ।
अरी सत्य कै सपनौ एह❀मो मन अजहूं है सन्देह ॥३३॥
राँनी सत्य सत्य ही जानौं❀कहौं त्रिन छिये सत्य ही मानौं ।
प्रेम गहलता मन ते तजौ❀बधुनि बुलाइ आरतौ सजौ ॥३४
पौंरी मंगल कलश धरावौ❀तोरन बन्दन माल बन्धावौ ।
और सखी सुधि लाई दौरि❀श्री दाँमा आयौ पुर पौंरि ॥३५
अतिलडि बैठी सरवर पारि❀मिलीं जाइ पुर की सब नारि ।
प्रेम भींज सबहिनु उर लावैं❀आवन कौं जु छेह नांह पावैं ॥३६

दोहा—काँन लागि सजनी कह्यौ, चलौ तात के धाम ।
कीरति ठाढी पौरि अब, नहिं बिरमन को काम ॥३७॥
डोला चढि अति लडि चली, मिलन चटपटी जीय ।
शशि के निकट कला मनौं, यौं सोभित संग त्रीय ॥३८

आवै रूप सदेह मनु, वरषावतु आनन्द ।
मानौं कनक लतनि चढै, तिहिं संग अगनित चंद ॥३९
माइ दरस कौं अरबरत, बडडे नैंन सलोल ।
पल पिंजरनि के बोच मनु, खंजन करत कलोल ॥४०॥
आनन्द भरे जु छबि भरे, करुना भरे जु भूरि ।
उडन काज अकुलात मनु, चलि हैं पिंजरनि चूरि ॥४१
पौंरि पौंरि ठाढी बधू, अतिलडि आगम चाइ ।
तहँ तहँ कीजतु आरतौ, रह्यौ पुर मंगल छाइ ॥४२॥
बिरमि बिरमि राधा चलति, सबहिं देति सन्माँन ।
भाग्य जागि उमग्यौ मनौ, कमनी पुर वृषभाँन ॥४३॥
डोला ते उतरी कुँवरि, होत परम कौतूह ।
भान भँवन आई मनौं, सोभा उमगी समूह ॥४४॥
साभा उर सोभा भरन, आनन्द आनन्द दैंन ।
कीरति प्रेम पली भली, लली निहारी नैंन ॥४५॥
कीरति साजैं आरतौ, ठाढी भरी सनेह ।
उपमा नहिं दूजी बनैं, करुना मनौ सदेह ॥४६॥
लली निहारी दूर ते, दृगनि लाभ फल लेति ।
आये प्रांन समूह मनु, मन करि आदर देति ॥४७॥

॥ चौपाई ॥

नौबति बाजैं राज दुवार❀गुनी गुननि कौं करैं विस्तार ।
पुहुपांजुलि वारैं नव बाला❀कोउ रचिलाई कुममनि माला ॥४८
कुशम पांखुरी बाट बिछावैं❀कोउ छबि पै त्रिन तोरि बगावै ।
कोउ कर चटकि वारनें लेहीं❀कोउ पट भूषन वारि जु देहीं ॥४९
कोउ जै जै बांनी उच्चरैं❀मंगल कलश कोऊ शिर धरैं ।

जूथनि मिलि अलि मंगल गावैं❀नीर गुलाब कोऊ छिरकावैं ॥
निरखी दृग प्रांननि की थाती❀मैया की सीतल भई छाती ।
कृपा धरैं यह मूरति मानौं❀कुँवरिहिं भेंट न आई जानौं ॥५१
मंगल मूरति वन्त जु दरसैं❀निधि सिधि आइ कुँवरि पद परसैं
नख सिख छबि उमगी तिहिं बार❀कला अनन्त फिरत हैं लार ॥
कोउ नित्त ति जु प्रेम उर भरीं❀मनु संगीत देह बहु धरीं ।
कोउ राधा नामनि दुलरावैं❀कीरति जू कौं सुविधि रिझावैं ॥५३
कोउ तन प्रेम भार सौं कंपति❀कोउ वारति हैं प्राननि संपति ।
काहू कौं कीरति उर लावैं❀कोउ सनभान कुँवरि ते पावैं ॥५४
कोउ रहीं निरखि कुँवरि मुख ओरी❀
अखियां भईं विधु वदन चकोरी ।
कोउ सीतल जल झारी भरैं❀कोउ कर पान डबनि कौं धरैं ॥
शुक सारौ पिंजरा लियैं पाछैं❀सावधान सब चलत जु आछैं ।
काहूं कैं कर चँवर विराजै❀सूरज मुखी लिये कोउ राजै ॥५६॥
कोउ संग नंद गांव की आई❀ते कौतक देखत बौराई ।
लाड अपूरब निरखत भई❀वेहू सुख समूह छकि गई ॥५७॥
दोहा–हिय आरति राधा मिलन, पुनि आरति सजै थार ।
पंच नाद गहमह अधिक, बहु विधि मंगलचार ॥५८॥
थार आरतौ कर गहे, मिलिवैं ललकतु अंग ।
नख सिख रूप निहारनैं, लोचन बढी उमंग ॥५९॥
प्रेम सरसि आयौ जु उर, धीरज राख्यौ रोकि ।
पाछैं सबनि पलैंडि[1] कैं, दृग रहे मुख अवलोकि ॥६०॥
भीर रुकी अहिलादिनी,[2] माइ मिलन अकुलाइ ।

---

[1] –ढकेल कर। [2] –अहिलादिनी नाम कहने से भाव अब मैया को अह्लादित करना है।

प्राँन जु भेंटे पहिल इहि, धीरज पग ठहराइ ॥६१॥
निकट कुँवरि आई जबहिं, चंप तनीं मृदु हेम ।
जननी वारति आरतौ, करनि कंपावतु प्रेम ॥६२॥
कर उचाइ रहि थार कौ, मुख निरसत नहि बैंन ।
अपनैं प्राननि भाँवती, अपल निहारति नैंन ॥६३॥
सखी थार कर ते लियौ, राँनीं करी सचेत ।
राधा आई जानि कैं, रँचकि अंक भरि लेत ॥६४॥
या आनंद अरु प्रेम कौ, बरनै समरथ कौंन ।
बुद्धि विचार न आवही, गहैं सारदा मौंन ॥६५॥
उमग्यौ निधि अनुराग कौ, बाँधि सकै को पारि ।
सजनी निरवारि न सकत, सब दृग पूरति वारि ॥६६॥
राधा सम बेटी नहीं, कीरति सम नहि माइ ।
मिली जु तन मन उरझि कैं, किहि विधि सुरझयौ जाइ ॥
प्रेम जु अवसर तकतु हौ, तिन पायौ यह दाव ।
दुहुँ उर सबल जु संचरयौ, डारि दियौ उरझाव ॥६८॥
अतिमैं आदर प्रेम ने, पायौ यह जु मिलाप ।
मन करिकैं चाहति कुँवरि, याकौ बढ्यौ प्रताप ॥६९॥
अकह कहानी प्रेम की, जाके खेल अनन्त ।
नंद और वृषभाँन घर, रहत जु मूरति वंत ॥७०॥
सजनी उर हित विर्त्ति जो, तिन कियौ यह उपचार ।
मन काढे सुख गहर ते, समझि लाड की वार ॥७१॥

॥ चौपाई ॥

राँनी सोवत सी पुनि जागी ❀ सुता बलैया लैन जु लागी ।

भुज गहि लाई भवन मझार❁भेट्यौ आइ सकल परिवार ॥७२
मिली लागि उर काकी ताई❁कीरति हू ते प्रीति सवाई ।
लगी चरन रम्भा भौजाई❁कुँवरि भुजनि भरि कंठ लगाई ॥
गहकि मिल्यौ हित मूरति भैया❁प्यारी लीनी भूरि बलैया ।
एक मिली इक मिलिबैं धावैं❁इक घर जाइ फेरि उठि आवैं ॥
राज सभा श्री दाँमा गयौ❁सिर कर तात चरन सिर नयौ ।
नन्द प्रनाम जु पुनि पुनि कहि कै❁उठे भाँन सुत की भुज गहि कै॥
लई प्रनाँम अधिक हित माँन्यौं❁ परम सनेह सजन कौं जाँन्यौं ।
सुता मिलन कौं गवने जब हीं❁प्रेम भिजायौ हीयौ तब हीं ॥७६
बूझैं कुशल सबनि सुधि करैं❁राधा मिलन हियैं अरबरैं ।
नौ हू बन्धु उठे इक लार❁सब आये रावरि[१] जु मझार ॥७७॥
लली हरषि कै कंठ लगाई❁प्रान सुधन सौ राधा पाई ।
इत उत दृगनि वारि बहै ऐसैं❁झरै कनक गिरि झिरिना जैसैं[२]॥
नहि अस पिता श्रिष्टि विधि माँहीं❁राधा सम बेटी जग नाही ।
प्रेम कहाँ अस जो सम दीजै❁जा की सुविधि प्रसंशा कीजै ॥७९
तात कंठ तजि सकत न लली❁निरवारी जिहि तिहि विध भली।
बेटी ग्रह सूनौ हौ तो बिन❁सब ही सुधि जु करत है छिन २ ॥
तात बहुत दिन में सुधि लई❁जाहिप निकट विदेसिनि भई ।
करुना वचन सुता कौ सुनि कै❁भाँन हियौ जु गहबरयौ पुनि कै॥
भरि बैठे जु अजिर आगार❁मही भाँन कौ सब परिवार ।
काका ताऊ उठि उठि मिलैं❁सबहि प्रेम के सागर झिलैं ॥८२॥
ऐसौ पुर देखियैं न कोई❁जिहि राधा पद प्रीति न होई ।
को बिधनाँ दूजौ जग और❁जिन यह सुहृद रचे इक ठौर ॥८३

---

[१]—महलों मे । [२]—उपमा में श्रीजी कनक गिरि कंठ लगी है या स्वयं गोरे पिता हैं ।

गौर स्याम संग अतुलित प्रेम❀बिसरि गये सब कुल कृत नेम ।
देखे बिनु जु प्राँन अकुलाँहीं❀दौरि दौरि इहिं उहि घर जाहीं ॥
ज्यौं निवाँन[1] दिसि सलिता[2] बहै❀काहू की रोकी नहिं रहै ।
यौं ब्रज जननि सुभाइक[3] प्रीति❀काहू नहीं सिखाई रीति ॥८५
धाइ धाइ ऐसें सब आवैं❀मिले अनमिले से जु जनावैं ।
काकी ताई बूझति हित सौं❀राधा चित मिलाइ कै चित सौं ॥८६
कैसौ ससुर जु कैसी सासु❀कैसौ घोष नृपति कौ बासु ।
कैसी मिठ बोलनी जु भौंम❀कैसौ चलन नन्दीस्वर ग्राँम ॥८७॥
गोपनि कें ग्रह रचनाँ कैसी❀तैं दृग लखी बरनि अब तैसी ।
सकुचै जिनि तू चतुर महाई❀प्रथम महरि की बरनि बडाई ॥८८
हँसि हँसि अतिलडि आँनन मोरैं❀चितवति है ललिताकी ओरैं ।
ललिता सब ब्यौरौ करि कह्यौ❀श्रवन सुन्यौ सब हिय सुख लह्यौ
पुनि पुचकारि कहै यौं मैया❀भोजन करौ बहिनि अरु भैया ।
पाक रचे जहँ नांनां भांति❀जेंवति कुँवरि सखिनु रचि पांति ॥
ह्वाँ जेंवत सुधि करती तोहि❀मैया सुहथ जिमाइ जु मोहि ।
राधा अब तू भई बडेरी❀अरबी बाँन न छूटी तेरी ॥९१॥
जननी साँचु कहौं हौं तोकौं❀तो कर ग्रास रुचै अति मो कौं ।
ह्वाँऊँ तेरौ सौ सुख पायौ❀महरि रोहिनीं मोहि जिमायौ ॥९२
[4]कुँवरि भाग कहा करौं प्रकासु❀मिलि नव लाड़ लड़ावन सासु ।
तेरी काकी ताइनु बोलि❀गहनें डबा दिखाये खोलि ॥९३॥
हाटक चोखें रतननि जडे❀गढन हार ते सुघर जु बड़े ।
नाना विधि की रचना जिन में❀लाड महरि कौ झलकतु तिनमें ॥
लाइक घरनी नन्द महर की❀माइ कौतिकिन मुरलीधर की ।

१—नीचे की तरफ । २—नदी । ३—स्वाभाविक । ४—श्रीकीर्त्ति जी उत्तर देती हैं ।

समधिनि कारज कुशल हमारी❀जग में जस विस्तारन हारी॥
कीरति जू यौं बरनन करैं❀सुनि सुनि कैं बनिता हँसि परैं।
अतिलडि रुचि सौं भोजन कीयौ❀पूरन ह्वै जल अँचवन लीयौ॥
पलिंग बिछाइ बिछौंना करैं❀लाइ गेंदुवा कोमल धरैं।
भाँन वंश मणि राजति जहाँ❀कहत कहाँनी सजनी तहाँ॥९७
पुनि रचि सजनी बीरी देति❀प्रीति सहित गौरंगी लेति।
मैया मेरें नेरें आइ❀हौं आइ मंगल जु गवाइ॥९८॥
मो मन आनंद भयौ जु एतौ❀वरनि न सकै सारदा तेतौ।
बैठी हुती काल्हि उहिं ग्रांम❀आई आजु तात कें धाँम॥९९॥
धन्य बीर मेरौ श्री दाँम❀परम सुसील परम अभिराँम।
सादर मुहि बरसानें लायौ❀तात मात सौं आइ मिलायौ॥१००
सिमिटि सहेली मंगल गावैं❀तात मात पुनि बीर मल्हावैं।
निगम अगोचर रसमय जो हैं❀यह सुख वृष्टि करति ब्रज सो हैं॥
दोहा—नित्त अनादि अहिलादिनी, भांन वंश जस दैंन।
ब्रज लौकिक लीला रची, कौतिक कहत बनैं न॥१०२
लीला मित नहिं लाड मित, नहीं रूप मित होइ।
मति प्रमान सब लिखि गये, पार न पहुँच्यौ कोइ॥१०३॥
[१]ज्ञान कर्म तुस कूटतें, छाले परे हिय हाथ।
देखि महा करुना ढुरे, श्री राधा ब्रज नाथ॥१०४॥
रसमय चरित जु विस्तरे, रसिक जननि के हेत।
जागि बटोरत सुमति नर, अजहूं कुमति अचेत॥१०५॥
नमो दई बलवान निज, रची आसुरी शृष्टि।
नहीं परख अमृत जु विष, फूटी हिय की दृष्टि॥१०६॥

---

[१]—ज्ञान तथा कर्म रूपी भूसे को कूटते जीवों के हाथों तथा मन में छाले पड़ गये।

ब्रज वृन्दावन विहरहीं, दम्पति बेहद रूप ।
गावत सुनत रसज्ञ जन, लीला चरित अनूप ॥१०७॥
इहिं रस राचे रसिक जे, ते मेरे शिरमौर ।
हित नातें भींजे रहैं, पद रति साँवल गौर ॥१०८॥
जे प्रेरिक मो सुमति ते, दम्पति सुख सर हंश ।
वृन्दाबन हित रूप बलि, वन्दौं श्री हरि वंश ॥१०९॥
कौंनु सोधि दुलराइ हैं, दुहुँ घर कौ अनुराग ।
वृन्दाबन हित कृपा बिनु, होहि न गाढी लाग[1] ॥११०
[2]नीरस तरु सेवन अफल, फलु लहि रस मय बाग ।
वृन्दाबन हित गाइ नित, राधा रूप सुहाग ॥१११॥

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दाबनदास जी कृत श्री राधा तात ग्रह प्रवेश
पुर जन परिवार मिलन आनन्द बरनन छियासठवीं लहरी को
जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

❀ अथ सरसठवीं लहरी ❀

दोहा—श्री हरिवंश प्रनम्य पद, बरनौं कौतिक और ।
वृन्दारन्य रम्यौ चहत, रसिक जु सांवल गौर ॥१॥
इत उत आवें जांहिं नित, सखी संदेसौ दैन ।
उतकण्ठा बाढै मिलन, रूप देखिवें नैन ॥२
आइ सकत नहिं भाँन घर, रसिक जु नंद कुँवार ।
प्रिया वदन देख्यौ चहै, रोकै कुल व्योहार ॥३॥
करत विचार जु बुद्धि सौं, मुरलीधर इहि रीति ।
प्राँन भाँवती मिलन कौ, बढी उर गाढी प्रीति ॥४
प्रेम देव सुमिरन करत, ताकौ आइसु[3] पाइ ।

१—आसक्ति । २—शुष्क उपासनाएँ । ३—प्रेरणा या संकेत ।

[1]जजी जु मुरली गुन कलनि, भरी अनेक सुभाइ ॥५॥
वंशी त्रिभुवन मोहनी, ताही में सुर साधि ।
कानन जाइ बजाइयै, राधा नाम अराधि ॥६॥
चित्त आकरषन मंत्र यह, जपियै बारम्बार ।
होहि मनोरथ सिद्ध तब, यह कीयौ निरधार ॥७॥
षट रितु रहे फूल्यौ फल्यौ, वृन्दाबन कमनीय ।
सरद समय जग मग रह्यौ, भूषन ब्रज अवनीय ॥८
[3]छपा छबीलौ देखि कै, हिय जिय बढतु हुलास ।
सादर प्रिया बुलाइयै, बन में रचियै रास ॥९॥
रविजा तट सुर तरु निकट, कीजै ऐसौ गान ।
धुनि मग आवैं तरुनि मणि, मो प्रीतमा सुजान ॥१०॥
थिर चर तौ घूमैं सबै, सुनत मोहनी नाद ।
रीझे प्रिया विचत्तनी, मुहि दाइक अहलाद ॥११॥
जूथ अनंतनि मुकटमणि, सब जाके आधीन ।
अखिल कलनि सर्वेस्वरी, स्यामा परम प्रवीन ॥१२॥
मुरली प्रेम स्वरूपिनी, इत उत कौ हित जानि ।
सखि सहेली निपुन यह, भांति भांति सुख दानि ॥१३
सादर याहि बजाइ हौं, चलि कै वृन्दारन्य ।
मन वांछित करि है जु यह, तत सुख सुखी अनन्य ॥१४
यौं मोहन मन में मतौ, कीयौ सगुन मनाइ ।
भइ चित अधिक जु चटपटी, मिलियै किहि मिसि जाइ॥१५
हित ब्रत रूप सहेलरी, चाहति दुँहुँनि मिलापु ।

---

[1]—आज्ञा। [2]—उस वंशी का यजन किया जो स्वभाव से अनेक कला पूर्ण है।
[3]—रात्री या निशा।

पिय अभिलाष जु समझि कै, कहति कुँवरि सौं आपु ॥
वट संकेत चलौ कुँवरि, फूल तोरिबे काज ।
बन फूल्यौ सरवर कमल, सोभा देखौ आज ॥१७
कौतिक सुनि बिहँसी प्रिया, चली जु भोरैं भाइ ।
सुधि पाई ब्रजराज सुत, आये छदम[1] बनाइ ॥१८
सुन्दर सजनी सांवरी, बीनति फूल प्रवीन ।
तरु डारी गहि झूलहीं, कौतिक रचित नवीन ॥१९
प्रिया निकट ताकैं गई, कह्यौ छदम उहि हेत ।
रास रचन वृन्दा विपिन, वद्यौ स्याम संकेत ॥२०
बहुत खेल बन में रचे, नन्द गांव की भौंम ।
भेद न दीयौ सखिनु कौं, गई आपनैं धाँम ॥२१
प्रीतम कौ सुख दाइनी, प्रीतम वर्धन मान ।
फूलनि लै आई भवन, अतिलडि श्री वृषभाँन ॥२२
ब्यारु कर पौढन जु मिस, तन आलस जु जनाइ ।
चले रास उत्साह मन, लाल रसिक मणि राइ ॥२३
लाल वाट बन को गही, लकुट मुरलिका हाथ ।
जामें विद्या मोहनी, सो अति बल लइ साथ ॥२४
कुंज पुंज आनन्द कौं, [2]रजनीमुख सुख देत ।
हरि मन चाव बढावहीं, रास रचन कै हेत ॥२५
मधुर तेज मंडल मणिनु, वंशीवट के तीर[3] ।
रविजा निकट जु रम्य तट, ठाढे भये बलवीर ॥२६
लै कर मुख मुरली धरी, चरन चरन पर लाइ ।
मुकुट लटक ग्रींवा ललित, पोत वसन फहराइ[4] ॥२७

१—भेष बदल कर । २—सायंकाल । ३—लालजी । ४—त्रिभंग छवि ।

प्रेम देव आराधि कै, कियौ सुर सप्त अलाप ।
विधि विथकित संकर चकित, मुनि जन भूलै जाप ॥२८
मान पाइ मुरली बजी, मनौ अमी भई वृष्टि ।
अहा अहा सब हीं कहै, जेती विधि की सृष्टि ॥२९
भई दिगविजई बांसुरी, गाजी निपट गरूर ।
सुनि मनु रस संग्राम कौ, सजी छबीली सूर ॥३०॥
प्रीतम हिय की हिलग कौ, समझी प्रिया सुजान ।
धुनि मग ह्वै ऐसे चली, मनु चढि रूप विमान ॥३१
जे अनुगत रासेस्वरी, ते गवनी धुन लार ।
रुकै न काहू जतन ज्यौं, सावन सलिता धार ॥३२
अपने अपने ग्रेह ते, निकसी ऐसी भांति ।
मनु चली पिंजरनि चूरि कै, लालमुनी सजि पांति ॥३३
जूथ अनन्त सखी चली, श्री राधा के संग ।
[1]राका उमग्यो सिंधु मनु, बाढी रूप तरंग ॥३४
सरद जौन्ह[2] मिलि जगमगै, नग भूषन जु दुकूल ।
रास बुलाई ते बधू, राधा पद अनुकूल[3] ॥३५
पिय हिय हिलग तहाँ लगी, जो रस रूप निधाँन ।
ताकौ सुविधि अराध ही, मुरली कीजतु गाँन ॥३६
रास उमाह धरा[4] हिये, भई चेत्तन्निसँदेह ।
कोमल पद परसन जु उर, छिन छिन सरसति नेह ॥३७
पाइल बिछुवन की झनक, भनक परति पिय कान ।
तिन के आदर दैंन हित, आगे दौरत प्राँन ॥३८
आई प्रिया समीप जब, पिय मानत बड भाग ।

१—पूर्णचन्द्र । २—अनुगामी गोपी समूह । ३—चान्दनी । ४—ब्रज भूमि ।

रोक्यौ रुकतु न हिये ते, उमग्यौ निधि अनुराग ॥३९॥
भुज भरि कै सादर लई, प्रीतमु सींच सनेह ।
प्राँन एक इत उत मनौ, दिखियति हैं द्वै देह ॥४०
सनमानी सजनी सबै, रसिक सिखा मणि लाल ।
छवि वेली प्रफुलित मनौ, नवला नैंन विशाल ॥४१ ॥

॥ चौपाई ॥

लाल कलपतरु मूल विराजैं❀मनसिज निकर लगत पग लाजैं ।
मुकट लटक की चटक छबीली❀जगमगाति कलँगी जु रंगीली ॥
गंडनि रुरकति अलकैं ऐसें❀कमल फूल अलि भ्रमैं सु जैसें ।
को छबि केशरि खौर[1] बखानौं❀ससि पर पीत बदरिया मानौं[2] ॥४३
मृगमद तिलक लसति विवि रेखैं❀यह छबि अद्भुत बनैं जु देखैं ।
कुंडल रतन कपोलनि लोलैं❀रविजा जल में मनु रवि डोलैं॥४४
यौं थिरकतु बेशरि को मोती❀मनु गिरि सिखिर रमतु भृगुगोती[3] ।
आँनन काँनन छबि विस्तारी❀ससि निकरनि की उपमाँ टारी॥४५
चिबुक गाड अस छबि जु संजूत❀लखि उपमा वारौं फल नूत ।
कंबु कंठ उपमा कौ को है❀मनु छबि सींवा त्रिवली सोहै ॥४६
भुज लखि कै भुजंग विष भर्यौ❀कर लखि कमल कीचमें पर्यौ।
पीन अंस उर वर अति कमनी❀नाभि सुधा ह्रदनी छबि श्रवनी ॥४७
उदर लसै रोमावलि ऐसैं❀ तरु सिंगार अलि सैंना जैसैं ।
कटि लखि भयौ कुरुप मृगराइ[4]❀गिरि वन दुरैं जु लज्या पाइ ॥४८
जंघ देखि कै तन गति बदली❀थर थर कांपन लागे कदली ।
चरन अवनि कौ भूषन जांनौं❀नख राजत ससि अवली माँनौं ॥४९

---

[1]—तिलक । [2]—जैसे चन्द्रमाका पीले बादल ने ढका है । [3]—चन्द्र । [4]—शेर ।

चीरा सीस तास कौ राजै❀कंचुक उज्जल वरन विराजै।
धोती पीत कनक उपरैंनाँ❀सूथनि की छबि कहत बनैंनाँ ।।५०
फबी काछनी कंचन कोर❀पटुका ललित छबीले छोर।
नख सिख भूषन अति अभिराम❀हिये कुशम बैंजंती दाम ।।५१
ऐसी सोभा अंगनि धरैं❀मनसिज निकर रीझि पग परैं।
मोहन मदन रूप की हद है❀रास उमाहौ रैंन सरद है ।।५२।।
इहि छबि छके डुलावत ग्रींवाँ❀पिय सागर प्यारी छबि सींवाँ।
रासेस्वरि जु लसै सखि दल में❀निरुपम यह जु एक भुव तल में ।।
नव सत[1] सजे अंग छबि अगरी❀वारौं सृष्टि रोम इक सगरी।
प्रीतम कौं अहिलाद जु दैंनी❀कनक तनी बाला मृग नैंनी ।।५४
नखसिख सुन्दरि ऐसी बनी❀जाकी छबि जु प्रसंशत धनी[2]।
रुख लिये रहै रूप गरबीलौ❀प्रिया[3] प्रेम ताकौ कियौ ढीलौ।।५५
निर्त्त करन कौं इत उत काछैं❀सुगति लैंन लागैं दोऊ आछैं।
खेलत रास सरद की रजनी❀जंत्र बजावन लागी सजनी ।।५६
बाजति है मुरली सोहनी❀मंत्र उचारति जग मोहनी।
गति नौतन लै चलत जु स्याम❀रीझि देति स्याबास जु भाम[4] ।।
त्यौं त्यौं फुरैं कला जु अनंत❀थेइ थेइ वदन भामिनी कन्त।
सजनी मधुर गाँन उच्चरैं❀लाड भूमिका दम्पति भरैं ।।५८
अछन २ पद राखत भू पर❀बाजत कंकन किंकिनि नूपर।
हँसनि विचलैं ग्रींव कौ मोरैं❀आवैं मांन तान तब तोरैं ।।५९
[5]ठठुकि रहै अंसनि भुज दै कै❀पुनि मुरि चलैं नई गति लै कै।

१—नौसात अर्थात सोलह शृंगार। २—लालजी। ३—प्रिया-जी के प्रेम का उत्कर्ष कहा, कारण लाल जी में ऐश्वर्य अनिवार्य है सो प्रेम मे ढीलापन लाता है। ४—श्री लाडिली जू। ५—नाचते २ एक बार गल बैयां डाल कर रुक गए।

करतल पटकि लाड सौं लटकैं❀लै वारनैं सखी कर चटकैं ॥६०
कब हूं गावति हैं रहि नीरी❀कबहुँ देहिं बनाइ मुख बीरी ।
सुन्दर हस्तक भेद दिखावैं❀कब हूं हारावलि सुरझावैं ॥६१
कब हूं दृग दृग जोरैं चलैं❀कब हूं कहैं लई गति भलैं ।
कब हूं अनाघात[1] लै जाहिं❀समझि मुदित होंइ मन ही मांहि ॥
कुशल खिलार परस्पर जुरे❀भेद भाव सब पूरब फुरे ।
यह वृन्दावन रस कौ खेत❀चुनि चुनि गति जु अपूरब लेत ॥६३
उलहित हिये प्रेम की गोभा❀आँनन बढति अपूरब सोभा ।
भृकुटी हूं जु नित्त सौ करैं❀बरबस पिय कौ चित्त वित्त हरैं ॥६४
लाल ठगे से ठाढे रहैं❀चेतौ हँसि ललितादिक कहैं ।
कनक वसन घूँघट मुख मुरैं❀मनु ससि पीत बदरिया दुरैं ॥६५
प्रिया चरन पाइल[2] खिसि परीं❀प्रीतम रसिक सम्हारि जु करी ।
ताहि सँवारत अपने हाथ❀नेह परावधि सुत ब्रजनाथ ॥६६॥
सुख देखत रीझी सरवरी[3]❀जिन आगैं न एक डग धरी ।
गगन मगन ससि हूं ह्वै गयौ❀जिहि न एक पग आगैं दयौ ॥६७
रास रच्यौ कौतिक अति एह❀जडनि हिये संचरच्यौ सनेह ।
कॉंनन तरु बेली चेतन्य❀लख्यौ विलास भाग्य गनि धन्य ॥६८
उडगन हूं न ठौर तजि चले❀ये रिझवार रास के भले ।
पद लाली जु अवनि यौं छाई❀रीझि धरा मनु जीभ बिछाई ॥६९
हौं कठोर तरवा[4] सुकुँवार❀यह बड़ भागिन कियौ विचार ।
इहि विधि सौं वन रास खिलावैं❀अपनौ हूं अनुराग मिलावैं ॥
रविजा हूं जु थकित ह्वै रही❀प्रीति समझि आगैं नहि बही ।

१—विना शब्द । २—पाइजेब ३—शरद की वह रात । ३—चरन के तलवे अत्यन्त कोमल हैं मैं कठोर हूँ भूमि सोच में पड़ी है । ४—यमुना रास में सखी रूप में यहां रुकी ।

दम्पति विहरत इहि विधि रास❀कानन कीयौ विपुल प्रकास ॥७१
मनमथ कौ जु गर्व यौं हर्यौ❀डारि पंच सर पाइनि पर्यौ ।
प्रेम मई लीला विस्तरी❀काँम मई सी जानी परी ॥७२
काँम जु भयौ समझि भय भीत❀लखी अलौकिक यह रस रीति।
मैं तौ ब्रह्मादिक कौ छल्यौ❀ह्याँ मेरौ न पराक्रम चल्यौ ॥७३॥
मैं जानी रस वस हैं मेरे❀ये करैं केलि प्रेम के प्रेरे ।
थेई थेई वाँनी मुख तें कढै❀रास उमाहौ तन मन बढै ॥७४॥
प्रेम सरूपनि मुरली महा❀ताकौ कहौ पराक्रम कहा ।
काम बली हूं धुनि सुनि धूज्यौ❀मुरली नाद विश्व नें पूज्यौ ॥७५
[1]नमो मुरलिका भई जग विजई❀ब्रज की शृष्टि प्रेम सब भिजई।
धन्य राग जननी बड भागिनि❀पर हित करनी तू अनुरागिनि ॥
अतिसै रंग रास में राख्यौ❀कृष्ण रसामृत मुख लाग चाख्यौ।
उरप तिरप लै चलत जु ऐसे❀गौर स्याम छबि जोति जु जैसे ॥७७
ठठुक रहै धरि कै भुज अंस❀मंडल सरवर मनु जुग हंस ।
लै पट पीत प्रस्वेद पौंछि मुख❀रोंम रोंम बाढतु अतुलित सुख ॥
बैठे मूल कलपतरु कें लाग❀सिंघासन रतनांन रह्यौ जगमगि।
कोउ सखि मुख बीरी दै हरषीं❀कोउ भरि अंजुलि पुहुपनि वरषीं ॥
त्रिविधि पवन रुचि लै कै बही❀काँनन सोभा परति न कही ।
राकापति नभ विपुल प्रकास❀खेले जुगल जथा रुचि रास ॥८०
गौर स्याम तत सुख में सुखी❀करति उदौ बन[2] अलि ससि मुखी।
जहाँ तहँ काँनन छबि अवलोकैं❀कौतिक मुदित पलनि गति रोकैं॥
बन पति हूं[3] ऐसी छबि धरी❀सबहिनु के चित की वृति हरी।

---

[1]—श्री हरिवंश आचार्य्य महत्व। [2]—श्री वृन्दावन की देवी भी सखी रूप है वह अपनी बन संपति सोभा से सेवा कर रही है। [3]—वसन्त ऋतु।

वेली विटपनि कुशम विकास❀नव पल्लव पूरित जु सुवास॥८२
सरसिनि मांहिं कमोदनि लसी❀प्रीतम चन्द दरसि मनु हँसी।
रविजा पुलिन मनोहर जहाँ❀रस उनमद चलि आये तहाँ॥८३
करत प्रसंसा ताकी भूरि❀मन हुँ बिछाई चूर कपूर।
हौंसि हौंसि पग ता में धरैं❀कहूं लाल लाँबी डग भरैं॥८४॥
कहूं उछरि कैं भुज पटकावैं❀प्राँन भाँवती को जु रिझावैं।
कबहूं करैं अपूरब राग❀सब उर सरसि उठै अनुराग॥८५
कहौ प्रिया रागिनि जु कौंन❀या कौ रूप समझि सकौं हौं न।
प्रीतम तुम रसिकनि सिरमौर❀तुम ते कौंन[1] जानिमणि और॥
सब की बुद्धि जु बचननि तोलौ❀बटुवा समझि आपु नहिं खोलौ।
राग रागिनी ऐसी को है❀मुरली तुम न अलापी जो है॥८७
[2]तुम सर्वेस्वरि पूरन कला❀विद्या सब सेवत पद तला।
नाँम रागिनी का कहि देहु❀मो मन कौ जु हरौ सन्देहु॥८८
नाँम चितायौ गायौ ऐसैं❀प्रीतम प्रेम भीजि गये जैसैं।
रविजा थल की देखत सोभा❀त्यौं उलहै जु प्रेम उर गोभा॥८९
चन्द चाँदनी मनु च्वै परी❀पुलिन मनोहर मधि सो ररी।
रविजा तट अति सोभा संघट❀तहाँ आये नागरि नागर नट॥
भाग्य भरी अति लहरिनु सरसैं❀दम्पति सहित धाँम सुख दरसैं।
अति हिय हरषि परस जल कीयौ❀अँजरिनु भरि जु अमी ज्यौं पीयौ
स्वामिनि कहति सुनैं किन ललिता❀कहाँ रविजा सी प्यारी सलिता
अरी बहै नित धीर समीरैं❀सुख बरषनि वंसी वट नीरैं॥९२॥
तट निवास पसु पंछिनु दैंनी❀सींचत तोइ वेली तरु सैंनी।
नव नव लहरिनु बाढै ज्यौं२❀दरसि हौंहि सीतल दृग त्यौं२॥९३

---

[1] राग भेद के गान समझदारों में अग्रणी। [2] लालजी पूछ रहे हैं।

मारुत त्रिविधि देत अहिलाद❀यह कानन रविजा परसाद ।
सखी बुद्धि बल यह सुख तोलि❀रास खिलावति हैं मन खोलि ॥
जै रविसुता गुननि गंभीर❀जाके तीर रहै सुख भीर ।
लाल सुनी प्यारी मुख बाँनी❀कहत प्रिया तुम सत्य बखाँनी ॥९५
यह सुख वांछित हम ते लेहि❀हम कौ वांछित यह सुख देहि ।
तुम पद दासि जु मन करि चहैं❀याके भागिनु मित को कहैं ॥९६
सागर सात बेधि यह आवै❀बास सदा इहि काँनन भावै ।
नानाविधि इहि तट सुख संपति❀ताकी करो प्रसंशा दंपति ॥९७
कमनी कुँज जु आये तहाँ❀कुशम दलनि रची सज्या जहाँ ।
बिच २ अरुन नवल दल लैकैं❀सखिनु सँवारी अति मन दै कैं ॥
तापर उपरैंनी जु बिछाई❀मदन जीति गावति जु बधाई ।
गौर स्याम तहाँ निबसित भये❀पिय हिय बढे अभिलाष जु नये ॥
लता भँवन कमनींय बिहार❀ओट भईं सखी कौतिक हार ।
रौंम रौंम उलहति रस साखा❀सुख वितरित पुजवत अभिलाषा ॥
नूपुर वलय मधुर होइ धुनी❀मानौ पढति मैंन की मुनी ।
कबहूं होइँ भामिनि प्रतिकूल❀कबहूं रमैं जु ह्वै अनुकूल ॥१०१
नाइक निपुन लियें मन रहैं❀इहि विधि सुख को लाहो लहैं ।
विहरत दोऊ इक रस है कैं❀मदन मान शिर ठोकर दै कैं ॥१०२
मूरति वन्त रूप रस जहाँ❀ताको उपमा खोजौं कहाँ ।
पूरब सुख की भई चिन्हार❀उठन लगी रस की उदगार ॥१०३
जैसैं विहरत हे जु सुतन्तर❀एकौ पल न परतु हो अन्तर ।
दाइ भाइ[1] वे फुरित जु भये❀महा मगन रस में ह्वै गये ॥१०४
तत्सुख सुखी मगन भई सजनी❀दम्पति लाड केलि रस भजनी ।

---

[1] —दाव व भाव प्रेम वृद्धि के निमित उसी प्रकार फुरने लगे जैसे नित्यविहार मे हैं ।

रजनी हूं इछ्या लै बाढी❀कौतिक देखति रहि गइ ठाढी॥१०५॥
दिव्य रूप काँनन दरशायौ❀जुगल विनोद जातु नहि गायौ।
सुरत सूर दोउ अति सुकँवार❀इहिं छबि वारौं कोटिक मार॥१०६
गुपत प्रगट रस लीला भावैं❀या रस भेदहिं मरमीं पावैं।
आनँद वारिधि ब्रज में बहैं❀मति प्रमाँन सब कोई कहैं॥१०७
प्रगट जु लीला रचैं अनेक❀न्यारे होंहिं नाहिं पल एक।
या गति कौं लखि मकैं न कोऊ❀गौर स्याम समझत हैं दोऊ॥१०८
यह नर नारि मोहनी महा❀ईस्वरता लै करिये कहा।
ईस्वरता में कहा नहिं बनैं❀श्रुति पुरान आगम सब भनैं॥१०९
कमलापति वैकुँठ मझार❀कहा कावे करैं जु रस विस्तार।
मन ही करि सब कारज करैं❀दास कहा बाँनी विस्तरैं॥११०
अति प्रभुता गौ लोक जु धाँम❀सबहो विधि करि पूरन काँम।
कहा कोउ कहै सुनै कोउ कहा❀लखि ईस्वजं चकित होइ महा॥
ब्रह्म ग्याँन सुनि होत निरास❀नहिं कोउ स्वामीं नहिं कोउ दास।
कहा देखैं कहा कहै विसेष❀सूँन्य सान्य तहाँ रूप न रेष॥११२
ब्रज वृन्दावन रसमय कथा❀भावक जन वरनौं रुचि जथा।
लीला चरित कहे नहिं जांहि❀नित नव रचित विपिन ग्रह मांहिं॥
वासर और रैंनि कछु और❀करैं रस भोगी साँवल गौर।
सागर सम चरितनि मित नांहीं❀कहौ कौंन की बुद्धि समाही॥११४
इक मोहनी अंग सचि धरी❀दूजी मुरली धुनि विस्तरी।
तीजैं बंक दृगनि में दरसैं❀चौथैं वचन अमी ज्यौं वरसैं॥११५
पुनि संचरी विपिन सब ठौर❀जिन वस किये रसिक सिर मौर।
कुंज तलप मूरति मोहनी❀निकर मोहनी प्रिया सोहनीं॥११६
सखी मोहनी मोहनि अवनी❀रस विहार मोहनी जु कमनी।

खग मृग तरु मोहनी समूह❀अति मोहनि नाद कौतूह ॥

दोहा–प्रिया अंग अंग मोहनी, कीये रूप अनन्त ।
छबि रिझवारि रसिक मणि, क्यों न होइ बस कँत ॥
जा सिर छत्र सुहाग कौ, सुख सचि धर्यौ लिलाट ।
भावंता लेइ वारनैं, रस भोगो जु निराट ॥११९
कुंज ग्रेह नव नेहरा, जब उर होत प्रकास ।
बरनि सकत नहिं सहचरी, जद्दिप निकट निवास ॥१२०
कहिबे कौं अकुलात कवि, नहिं चिन्हार उहि देस ।
बिना कृपा रासेस्वरी, लहै न इहि सुख लेस ॥१२१
पारस मरमी रसिक जे, कृपा करैं जिहि ओर ।
हिय फुरै अनुभव जनित रस, राधा नंदकिशोर ॥१२२
वन्दौं श्री हरिवंश पद मुहि, सुबुद्धि वर दैंन ।
कहा न करै कृपा बली, गूंगौ उचरै बैंन ॥१२३
जिननि प्रकासे रस रतन, अति दुर्लभ जु अनूप ।
परखै रसिक सु जौहरी, वृन्दावन हिस रूप ॥१२४

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्रीराधावल्लभ रास रचन बन विहार मइया सुख बरनन सरसठवीं लहरी को
जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

❀ अथ अड़सठवीं लहरी ❀

दोहा–कोक कुशल रस रन सुभट, रस छाके सब अंग ।
तात भवन चाहत चल्यौ, राख्यौ अति स रंग ॥१
तीनि जाँम जांनि गई, रह्यौ जु पिछलौ जाँम !
करत प्रिया सौं बीनती, परम रसिक मणि स्यांम ॥२॥

ज्यौं पुर जन गुरु जन जु कोउ, लखै न आवत जात ।
सरद सरवरी देहु सुख, लेहु मांनि यह बात ॥३॥
ग्रह गवँनें परिकर सहित, अपनैं अपनैं ठौर ।
ऐसैं कौतिक नित नये, करत जु साँवल गौर ॥४॥
किधौं मोहनी तन बसै, किधौं मोहनी मंत्र ।
देखत भूले घोष जन, ये रचैं खेल सुतंत्र ॥५॥

॥ चौपाई ॥

भोर आइ कै मित्र जगावैं❀रंग महल में पौंढे पावैं ।
उठ बैठत चौकी पर लाल❀करत कूट कछु मरमी ग्वाल ॥६॥
दृग आँनन पर आलस भर्यौ❀रजनी जाग्यौ जानि जु पर्यौ ।
भोरहि कूट करन उठि आयौ❀तोहि कौंन से विप्र पठायौ ॥७॥
ऐसैं हँसि बोल्यौ अतिलडौ❀मित्र पारखू तू तौ बडौ ।
मैं काहू मुख सुनी कहाँनी❀सुख मैं रजनी जात न जाँनी ॥८॥
तेरे बचन साँचु मैं मांनैं❀यों जु उनींदे दृग पहिचानैं ।
भीतर गये सखनि लै साथ❀कर्यौ कलेऊ जननी हाथ ॥९॥
मैया लाड पोष अति पाइ❀चले चरावन बन में गाइ ।
तोरैं फूल कुँवरि सखिगन में❀कबहूं मिले लाल तहाँ बन में ॥
पूजन कुँवरि जाइ गिरिराज❀तहाँ मिलैं जु सुवन ब्रजराज ।
प्यारी वट संकेत जु जाइ❀तहाँ मिलैं कछु छदम बनाइ ॥११
कबहूं मिलैं दान मिस करिकैं❀दरसन चाह अधिक दृग हरि कैं ।
न्यौते जाँइ तीज त्यौहार❀कीरति घर ब्रजराज कुँवार ॥१२
नित नव लाड अपूरब जहाँ❀मोहन बसैं मांनि रुचि तहाँ ।
अधिक प्रीति वरसानैं ग्राँम❀सख्य सनेह स्याँम श्रीदाँम ॥१३

बिनु देखैं अकुलाइ जु माइ❁मुरलीधर कौं लेहि बुलाइ।
छिन छिन दुहुं घर बाढै चाह❁राधा हरि देखन जु उमाह॥१४
कनक तनी सुधि करै ब्रजरॉँनी❁तब भरि आवैं लोचन पॉँनी।
बैठे जाइ रोहिनी पास❁अपनै हिय कौ कहै हुलास॥१५॥
अब तौ बधू बुलाये चहिये❁मो सौं बात मते की कहिये।
बलि की माइ कहै सुनि लेहु❁पत्री लिखि कीरति कौं देहु॥१६
सुनी रोहिनी मुख यह सिछ्या❁राधा ग्रह जु बुलावन इछ्या।
प्रेम पत्रिका लिखति बनाइ❁नन्द घरनि मुरलीधर माइ॥१७
बात चितावन लागी जोई❁ज्यौं करुना कीरति उर होई।
व्याह समय की सुनी जु रीति❁उर उझली ताही विधि प्रीति॥१८
आइ सारदा प्रेरी बॉँनी❁लिखन लगी कछु प्रेम कहॉँनी।
राधा लाड रूप उर भरयौ❁अक्षर अक्षर सो विस्तरयौ॥१९
सिद्धि श्री सर्वोपरि जॉँनी❁सूरज वंश आदि रजधॉँनी।
सकल गुननि संपन्नि सदाई❁कीरति विदित पुराननि गाई॥२०
निर्मल तोइ सुरधुनी[1] मानौं❁पॉँवन करन सकल जग जानौं।
मही भॉँन की निर्मल करनी❁सुमतिनु भांति भांति करि बरनी॥
जस की गाथा वरनौं कहा❁गोधन पाल उदार जु महा।
देस भयानौ अतिसैं लसैं❁जहां तहां परजा निर्भय बसैं॥२२॥
वरसॉँनौ सुथान सर्वोपरि❁जाकौ उपमां को जग सरवरि[2]।
नौ सुत मही भांन कुल दीप❁तिन पर वारौं सकल महीप॥२३॥
तिन में श्रीवृषभांन विदित जग❁तिनकौ सील बखानौ कहां लग।
प्रभुता अति मुनि देव बखानी❁सील सुलक्षन कीरति रांनी॥२४
तुम ते अधिक ओप हम पाई❁इक रसना कहा करौं बडाई।

१—गंगा के समान निर्मल जल। २—सदृश या तुलना नहीं है।

पत्री बांचि अनुग्रह कीजौ❀पालागन जु हमारौ लीजौ ॥२५
सादर लीजौ बारम्बार❀सजन रीति समझति व्योहार ।
हम तुम वदले मन जु सनेह❀ह्यां ह्वां दरसति है द्वै देह ॥२६
ए जू श्री दांमा की माइ❀तुम गुन अगरी सील सुभाइ ।
कुशल छेम मंगल रहै नित इत❀तुम्हरी कुशल मनावति नित नित
इत उत श्रीपति गिरि जु प्रसाद❀नित नित बढत परम अहिलाद ।
तुम सब विधि लाइक जु महाई❀गुन गरुवे गरुवी ठकुराई ॥२८
सुता विवाह कियौ ऐसी विधि❀जामें भई टहलनी नव निधि ।
अष्ट सिधिनु भंडार जु भरयौ❀खरचत कबहुँ न टोटौ परयौ ॥२९
जस की विधि जु त्रिभुवन भई❀तुमहि दाहिनौ सब विधि दई ।
हमहिं दाइजौ इहि विधि दीयौ❀लोक लोक में साकौ कीयौ ॥३०
रावलि पति अरु गोकुल रांनौं❀एक प्रांन वपु द्वै हैं मांनौं ।
समधी सम जु लोक नहि ऐसें❀राधा कृष्ण जनक दोउ जैसें ॥३१
अस सन्तति विधि दुहुँ घर दई❀देखन चाह बढै नित नई ।
मन दै बात समझियौ मेरी❀पत्री लिखी सु गूढ पहेरी ॥३२॥
परम प्रवीन विचारि जु लीजौ❀दया दरेर सु हम पर कीजौ ।
जहँ रनिवास चातुरी तहां❀वचन अर्थ कौ खोजै जहां ॥३३॥
तुम राधाहि लडावति जैसें❀हौं हूं लाड करयौ चहौं तैसें ।
उठै अभिलाष घनेरी हीयैं❀सफल होंहिंगी तुम्हरैं कीयैं ॥३४॥
बात पाछिली जब सुधि आवै❀कहिबेकौ जु हियौ अकुलावै ।
व्याह समय ऐसौ रस वरष्यौ❀मुनि नर देव सबनि हिय हरष्यौ ॥
इत उत भई अधिक परसंश❀सूरज और सोम कुल वंश ।
सजन मिलत ऐसौ रंग राख्यौ❀धन्य धन्य देवनि हूं भाष्यौ ॥३६
वर वरनी जब फेरे परे❀थिर चर सबही आनंद भरे ।

मो तुम उरके रतन जु दोऊ[1]❀देखि प्रसंश करै सब कोऊ॥३७
दूलह दुलहिनि भागिनि बली❀सबनि सनेह कियौ विधि भली।
विधना लरज्यौ मेरी ओरी❀रचि पचि यह जु बनाई जोरी ॥३८
सोभा सींवा तुम अति लडो❀सील सुभाव गुननि करि बड़ो।
बरसाने सौं मुहि अति लहनौ❀जहँ भई राधा लोकनि गहनौ ॥३९
परम सभागौ मेरौ लला❀मुख पर वारौं ससि की कला।
जब दोऊ बैठे पालिक चार❀को को भये न कौतिक हार ॥४०॥
देखि कहत सब ब्रज के लोग❀विधि यह रच्यौ भलो संजोग।
तुम बडभागिन दोउ दुलराये❀बनितनि गायें विविध बधाये ॥४१
यह समयौ ह्वांईं बनि आयौ❀सुकृतिनु ही वह दरसन पायौ।
जहँ बैठे दोउ ब्रज के ईश❀गोप सभा अरु सकल मुनीश ॥४२
मणि जारिनु लगि तुम सुख देख्यौ❀अपनौ सुकृत सिंधु सम लेख्यौ।
तुम उर बाढ्यौ आनन्द जेतौ❀बिनु समभै कहि सकै जु केतौ ॥४३
तुम सौं कुँवरि विदा जब भई❀मन की गति जु और ह्वै गई।
रही कंठ लगि राधा लली❀जो नित लाड नई विधि पली ॥४४॥
माइ माइ पुनि पुनि उच्चरै❀नर नारी काउ धीर न धरै।
लई अंक भरि रावलि राइ❀नैंननि आनंदवारि चुचाइ ॥४५॥
प्रेम जीति लये पुर नर नारि❀भेंटी सब सौं भुजा पसारि।
वा दिन कौ कौतिक कहौं कहा❀सुनि मो मन करुना भई महा ॥
रांनी सुधि कीजै अब वह दिन❀मुहि बीतत है ऐसे पल छिन।
दीजै पठै चन्द सतमुखी❀देखि हौंहि जो मो दृग सुखी ॥४७॥
सुनियौ मन दै यह वीनती❀[2]जांनौ हल चल नहि इक रती।
थोरौ लिखन अधिक मानियौ❀अपु मन सम मो मन जानियौ॥४८

---

[1] —श्यामा श्याम। [2] —पत्र में जो कुछ लिखा एक रती भर भी झूठ नहीं है।

कनक तनी ज्यौं तुम कौं प्यारी❀त्यौं मुहि भावति भांन दुलारी।
बहु असीस राधा सौं कहियौ❀भाँन वंश मणि नीकैं रहियौ ॥४९
मेरौ लाड बिसार न दीजौ❀इहि घर की जु वेगि सुधि लीजौ।
लिखि पत्री ढाढिनि कर दई❀पुनि मुख वचन सुनावति भई ॥५०
पट भूषन पक्वान मिठाई❀नेगिनि सिर धरी दिये पठाई !
रहसी फूली ढाढिनि चली❀पद परसन हित कीरति लली ॥५१
आइ दई कीरतिहि असीस❀आदर पाइ नवायौ सीस।
कुँवरिहि देखि मुदित अति भई❀करजनि चटकि बलैया लई ॥
पुनि कीरति बूझति कुशरात❀कहौ महरि है नीकैं गात।
जसुमति कौ पालागन कहि कैं❀दई कर पत्री निकट जु रहि कैं ॥
कीरति लीनी सीस चढाइ❀बाचति है सादर चित लाइ।
अच्छर बाँचति प्रेम जु सरसै❀जसुमति कौ सनेह अति दरसै ॥५४
सुनि ढाढिनि कहि महरि सुनीति❀मुहि उनकैं मनकी परतीत।
वे जानत जु सजन रस रीति❀मेरी उन की गरुवी प्रीति. ॥५५
भई अभिलाष महरि मन जैसी❀विधना पूरी पारो तैसी।
राधा सम जु भाग है काकौ❀दुहुँ घर लाड़:सिन्धु सम जाकौ ॥५६
अब हौं पुजँऊ उन मन साधा❀आवैं जाईं दुहुँ घर राधा।
ढाढिनि सुनि प्रसन्न अति भई❀राँनी के चरननि में नई ॥५७
सुदिन सुधाइ नन्दपुर गई❀जाइ बधाई महरिहि दई।
सुनि जसुमति उर बढ्यौ सनेह❀राधा अब आवैंगी ग्रेह ॥५८॥
जननी जनक जु स्याँमाँ स्याँम❀रहैं सुख भीजैं आठौं जाँम।
ससुर ग्रेह आवैं अतिलडी❀सजि लावैं सुख संपति बढी ॥५९॥
हरषैं ब्रजराँनी ब्रज राँनौं❀पिय मन फूलनि कहा बखानौं।
सखी वृन्द सजि लावैं लार❀पुर बरषै आनन्द अपार ॥६०॥

ग्रह उपवन वन नित्य विहार❁करैं अतिलडौ नंद कुँवार ।
रस विलसन की घात जु फुरी❁कोऊ प्रगट कोउ करैं दुरी ॥६१॥
कब हूं बन बसि कै सुख लेत❁कब हूं तात भँवँन सुख देत ।
लीला ललित करैं दम्पति❁विलसैं अति रस सुख संपति ॥६२
जब अतिलडि बरसानैं आवैं❁प्रीतम नाँनाँ छद्म बनावैं ।
प्रिया रूप रस की फुलवारी❁रसिक भँमर तहाँ लाल बिहारी॥६३
जहाँ फुलवारि रमैं अलि तहाँ❁छिन अन्तर सहि सकहि जु कहाँ ।
नित खेलैं जु तात पुर आछैं❁नित वन जाइ गऊनि के पाछैं ॥६४॥
नित संतत रहै राधा साथ❁अचिरज लीला सुत ब्रज नाथ ।
प्रेमी जन कौ तजै न पास❁नित वृन्दावन कुँज विलास ॥६५
कबहुँ न ब्रज वृन्दावन तजै❁ब्रज जन नातौ मानि जु भजै ।
रसिक भक्ति सब साँचे करैं❁नीरस वदन जु फीके परैं ॥६६॥
सब अवतारनि कौ अवतारी❁दिन दूलह कानन जु विहारी ।
ब्रज सुख बरषै राधा धनी❁दरसाई रस संपति घनी ॥६७॥
ज्यौं कोउ देहरि दीपक धरै❁दोऊ ओर उज्यारौ करै ।
इत उत वस्तु धरी सब सूझै❁नैंन अछित नीकैं करि बूझै ॥६८
अँधे कौं समझाइ जु कहियै❁हाँ हाँ करै सरूप न लहियैं ।
जे हरि लीला चरित न चीन्हैं❁ते अन्धे नीरस मति हीनैं ॥६९
नव रस में जु मदन मोहनौ❁राधाबल्लभ अति सोहनौ ।
नन्द आत्मज अति प्रिय नाम❁नित सुख पले नन्द के धाम ॥७०
भये सिसु रूप नन्द अतिलड़े❁मंगल सजे नन्द घर बडे ।
नन्द दुलारे अति सुख दैंन❁सुन्दर स्याँम कमल दल नैंन ॥७१
जस वर्द्धन कुल गोप महीप❁मन अभिराम नन्द कुल दीप ।
अरि पूतना दयाल जु महा❁दई माइ गति बरनौं कहा ॥७२

[1]सकटासुर सिसु खेल जु भंज्यौ❀त्रनावर्त पापी बल गंज्यौ।
अति प्रिय लगी मृत्तिका खाई❀ईश्वरता मुख मध्य दिखाई॥७३
दधि कौ भाजन भंजन कर्यौ❀जननी ने कटि बन्धन धर्यौ।
लीला करी परम अभिराँम❀विदित भयौ दामोदर नाँम॥७४॥
अर्जुन जमला तरु भुव डारे❀सुत कुवेर के इहि मिस तारे।
रेती रवन जु रविजा तट में❀रमे तहाँ गोपनि सुत संघट में॥७५
गोकुल अरु महावन ग्राँम❀कीने चरित मनोहर स्याँम।
इत रावलि राधा औतरी❀घर घर सुभर[1] लच्छमी भरी॥७६
गौर तेज उद्दोत जु भयौ❀नीरस तिमिर सहज नसि गयौ।
दिन दिन आनन्द ब्रज में बढ्यौ❀गोपनि जस हरिं पुर लौं चढ्यौ॥
जननी आरजु गोपनि मनि❀जनक विदित रावलि कौ धनी।
हरि अहिलादिनि खेलैं ग्रेह❀कौतिक करैं पलैं नित नेह॥७८
दिन २ बढैं जु राज कुंवारी❀दिन दुलरावैं पुर नर नारी।
रावलि गोकुल बाल बिहार❀करि पुनि आये रविजा पार॥७९
बसे बरसाने वल्लवराज❀नन्दीस्वर जु नन्द सिरताज।
अखिल लोक प्रतिपालतु जो है❀बछरनि पाल कहायौ सो है॥
बछ्छासुर जु अघासुर मार्यौ❀महा दुष्ट परलंब पछार्यौ।
गिरि पूजन ऐसी बिधि करयौ❀घर घर ब्रज मंगल विस्तरयौ॥
सात दिना गिरि कर पर धरयौ❀इन्द्र गर्व इहि विधि सौं हरयौ।
प्रलय मेघ बरषे ब्रज ऊपर❀बून्द न एक पड़ी सो भू पर॥८२॥
लिये उबार गोप अरु गाइ❀सुरपति डरि वन्दै हरि पाइ।
दुसह ज्वाल वन प्रगटित भई❀ग्वाल गऊनि कौं संका दई॥८३॥
भये भयभीत करैं सब सोर❀देखि रहे जु मित्र मुख ओर।

१—लालजी की समग्र ऐश्वर्य लीला कहते हैं। १—ढेर के ढेर सुन्दरता के॥

जादू सौ कीनौ नंद लाल❀सीतल भई अगिनि तिहि काल ॥८४
मित्र मंत्र तू सीख्यौ कहाँ❀सीतल करी आगि छिन महाँ ।
वृषभ प्रचण्ड डहारतु आयौ❀ताहि देखि देवनि भय पायौ ॥८५
ताकौ कृष्ण खेल सौ कियौ❀असुर बली धरि पटकि जु दियौ ।
काली के सिर दण्ड जु धरयौ❀जल तें काढ़ि बाहिरौ करयौ ॥८६
धेनुक अतिबल सकुल संघारयौ❀गरो घोंटि व्योमासुर मारयौ ।
कृष्ण पराक्रम ऐसौ कियौ❀बक गहि चौंचि विदारयौ हियौ ॥८७
लै लै ग्रास ग्वार मुख दैंहिं❀कृष्ण स्वाद नीकौ विधि लैंहिं ।
जग्य भोगता सबकौ नाथ❀सो जैंवतु हैं ग्वारनि साथ ॥८८
विधि मन भई संदेह जु इछ्या❀इस्वरता की लैंन परिक्ष्या ।
लै गयौ बछ्छा ग्वाल चुराइ❀हरि रचि लीला और बनाइ ॥८९
ग्वार बाछरू बने अनंत❀विधि नहिं पायौ तिन कौ अंत ।
रस लीला मोहनी उपाई❀ताहि निरखि विधि बुद्धि भुलाई ॥९०
रूप अनंत दिखाये मोहन❀विधिना लग्यौ ठग्यौ सो जोहन ।
अवनी परयौ दंड की नांईं❀भयौ दीन अति हिय जिय मांईं ॥९१
प्रभु ईस्वर्ज न मुहि लखि परचौ❀मैं अभिमांन वादि यह करचौ ।
ब्रज धरु गुल्म लता ह्वै रहौं❀ब्रज जन चरन रैंनु हौं लहौं ॥९२
प्रभु की प्रभुता जब लखि परी❀तब विधिना यौं विनती करी ।
अग्या लै गयौ अपनैं धाम❀यौं विधि गर्व प्रहारयौ स्याम ॥९३
कृष्ध बाछरू बनै जु कभनी❀चाटी जीभ जु ब्रज की अवनी ।
इाह सम को हरिधाम जु और❀ब्रज वृन्दाबन सब सिरमौर ॥
केसी अपु बल अवनी कँपावै❀देवनि हूं संका उपजावै ।
छल बल हन्यौ ताहि बलिवीर❀ब्रजजन मेटी उर पीर ॥९५
सैंना सजा न गहे हथ्यार बाल खेल किये असुर प्रहार ।

दुर्यौ गोप गृह लोकनि धनी❀लीला ललित करी ब्रज घनी ॥९६
श्री भागौत व्यास शुक कही❀तिन प्रसाद सुर नर मुनि लही।
गोकुल रावलि लोक उजागर❀जहाँ रूप रस कौ बह्यौ सागर ॥९७
जामें उठी जु लहर अनंत❀गनत न लह्यौ सारदा अंत।
शिव विधि शेष न मित करि सके❀बडडे कवि बुध बल करि थके ॥
रावलि गोकुल गगन सुदेश❀जहाँ उदित अद्भुत राकेश।
निरवधि अमी रूप रस श्रये❀रसिक चकोर पिवत छकि गये ॥९८
निस वासर कौ जहाँ न नेम❀इक रस दरसै सरसै प्रेम।
जै जै ब्रजविपिन बिहारी❀रस वैभव सबहिनु तैं भारी ॥१००॥
गौर गरूर रूप गुन आगरी❀उपमा सम न शृष्टि विधि सगरी।
मुरलीधर सौं सुन्दर को है❀कोटि २ मनमथ मन मोहै ॥१०१
जारी अद्भुत भुव तल लसै❀नित ब्रज नित वृन्दावन बसै।
इहि विधि श्री हरिवंश चितायौ❀यह रस गरुवौ रसिकनि पायौ ॥
तिनकी कृपा बली लखि परी❀सूधी ब्रज भाषा में करी।
उक्ति जुक्ति चातुरि बहु नांहीं❀ब्रज जन नातौ यांके मांहीं ॥१०३
इहि नाते राचे जे जनाँ❀तिन पद रज वन्दौं मो मनाँ।
उज्जल रस उपासना एह❀कोविद कहि गये निरसन्देह ॥१०४॥
लोक वेद असमंजस रीति❀तहां न करैं रसिक जन प्रीति।
रस गुन रूप जु मूरति धरैं❀जुगल अंग कौ सेवन करैं ॥१०५॥
अचल अमाइक इक रस संपदा❀गौर स्याम विलसत सुख सदा।
नाँनाँ विधि लीला विस्तरैं❀रसिकनि पैं जु अनुग्रह करैं ॥१०६॥
कर्मठ कुटिल जु मायावादी❀यह जु कुतर्की सुख न सवादी।
कहौ सुनौ जिनि यह रस जिन सौं❀
कब हूं न सुख उपजै मिलि तिनसौं ॥१०७॥

राधा कृष्ण चरण अनुरागी❀ते जन इहि सुख के जु विभागी ।
प्रेम मगन ह्वै सुनै जु गावै❀श्रोता वक्ता मिलि सुख पावै ॥१०८
दोहा–प्रथम ही बाल चरित कहे, राधा नन्द कुँवार ।
कीरति जसुमति कह्यौ, पुनि जु लाड विस्तार ॥१०९॥
लीला माखन चोर पुनि, बच्छपाल गोपाल ।
नाँनाँ विधि कौतिक किये, मुरलीधर नंदलाल ॥११०॥
धनि कीरति की रति विमल, धन्य भयानैं भूप ।
जिन घर राधा लाडिली, रचे बहु खेल अनूप ॥१११॥
गोचारन ब्रजराज सुत, किये खेल विस्तार ।
कही सगाई व्याह विधि, गौंनौं मंगल चार ॥११२॥
दूलह दुलहिनि के भरे, लाड रतन या माँहिं ।
ब्रज प्रेमानन्द सिधु की, सीमा की मित नाँहिं ॥११३॥
अठसठि लहरी में गनो, बुद्धि वल सहित विवेक ।
ब्रज रस चरित उदधि बहै, बीते कलप अनेक ॥११४
मित करि सकै न आदि कवि, अब अस समरथ कौन ।
कहे जथा मति सबनि ही, पार लहि सकौं हौं न ॥११५
ब्रज वृन्दावन रस कथा, किन हूं लह्यौ न ओर ।
दम्पति चरित अगम्य है, जो कोउ कहै सो थोर ॥११६
रस लीला जग मोहनी, कीनी साँवल गोर ।
सो वरनी या ग्रन्थ में, कृपा रसिक सिर मौर ॥११७॥
कानन रास रहसि कह्यौ, पुनि षट रितु जु विलास ।
गुरु [१]हितरूप सुमति दई, हित [२]वृन्दावन दास ॥११८
श्री हरिवंश प्रसाद यह, ग्रंथ भयौ उतपन्य ।

१—श्रीगुरु का नाम । २—ग्रन्थकर्ता का अपना नाम ।

अति गरुवौ माधुर्ज रस, समझै रसिक अनन्य ॥११९
करि हैं कृपा रसग्य जन, जे जु अदूषित चित्त ।
ग्रंथ माहिले सुधन कौं, रहैं सम्हारत नित्त ॥१२०॥
ठारह सै अठतीस सुभ, संवत पौष जु मास ।
सुदिन ग्रन्थ पूरन भयौ, दुतिया ससि जु प्रकास ॥१२१
ब्रज लीला अति मोहनी, प्रगटी परम अनूप ।
प्रेम भक्ति उर वर्द्धनी, वृन्दाबन हित रूप ॥१२२॥
गुरु हित कृपा बली, ताकौ चाह्यौ होत ।
काको रोक्यौ रुकै ज्यौं, रवि ससि होत उदोत ॥१२३
यौं बल करि माधुर्ज रस, दरस्यौ नाँनाँ भाइ ।
वृन्दाबन हित रूप दत्त, कह्यौ सुन्यौ चित लाइ ॥१२४
श्री रूपलाल गोस्वामि के, सुवन किशोरीलाल ।
हित कुल मंडन जग विदित, भक्ति जगमगै भाल ॥
तिन कौ निज मन्दिर जहाँ, राजत राधा कंत ।
तहां यह ग्रंथ प्रगट भयौ, सुधन रसिक गुनवंत ॥१२६॥
गौर स्याम विहरैं जहाँ, तहाँ दियौ दृढ़ वास ।
ताही कौ लै नाम मुहि, कहै वृन्दाबन दास ॥१२७॥
धाँमी धाँम कृपाल ह्वै, मोहि कियौ निज भृत्य ।
तब दरसायौ माहिलौ, परिकर यह नित कृत्य ॥१२८॥
ब्रज प्रेमानन्द सिन्धु की, रस मय मधुरी गाज ।
सुनि सुनि प्रमुदित हौंहिगे, प्रेमी रसिक समाज ॥१२९
वाँनी अर्थ विचार चित्त, भजन भींजि रस रीति ।
केलिदास हस्ताच्छरनि, लिखी जु गरुवी प्रीति ॥१३०॥
नृपति बहादुर सिंह के, जुगल चरित हिय लाग ।

इहि नातैं छिन छिन बढै, कहन सुनन अनुराग ॥१३१
ब्रज प्रेमानन्द सिंधु में प्रगटे रतन अनेक ।
रसिक सुमति ही जौंहरी, जांनि पारखू एक ॥१३२॥
इक सत ऊपर षट सहस, सैंतालीस जु और ।
एतौ दोहा चौपई, लीला साँवल गौर ॥१३३॥
रस वर्द्धन सुख वर्द्धवी, मंगल वर्द्धनी एह ।
प्रेम भक्ति उर वर्द्धनी, वाँनी सनी सनेह ॥१३४
सागर मित जु सुमेर मित, मित अवनी आकास ।
प्रेमानंद सागर न मित, ब्रज वन रास विलास ॥१३५
जामल तंत्र जु उपनिसद, आगम वेद पुरान ।
सुमृति संहितनि मधि कही, ब्रज लीला परधाँन ॥१३६
दम्पति रुचि लै महत्तजन, बहु विधि कियौ विस्तार ।
वृन्दाबन हित रूप रस, सारासार बिचार ॥१३७॥

॥ इति श्रीब्रज प्रेमानन्द सागरे चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत श्री महरि मनोरथ पत्रिका
श्रीराधा कृष्ण लीला सूचनका वरनन अठमठवीं लहरी को
जै जै श्रीहित हरिवंश श्रीराधे ॥

* * *

आरति (श्री) ब्रज प्रेमानन्द सागर । लीला ललित नागरी नागर ।टेक॥ जोरि प्रगट दइ श्रीहरिवंश । नित दम्पति रसिकन सर्वंश ॥ सेइ ह्वै जीव कोष विध्वंस । पुनि व्यापै न काल भव का गर ॥१॥ पुनि प्रभु श्रीहित रूप लाल भए । श्रीवृन्दावनदास अपनए ॥ रविजा वर कहै चरित नये नए । पंचमाथैं कियौ प्रेम उजागर ॥२॥ गावत सुनत बढै रस रीति । इष्ट धाम गुरु नाम प्रतीति । भजन भावना की दृढ़ भीत । रसिक बनै रस कौ सौदागर ॥३॥ भाव सहित अरु ह्वै निष्काम ! अवगाहत है चिन्मय धाम ॥ कटै कलुष कलि को कटु काम । निज हित लागि भरौ हिय गागर ॥४॥

* * *

मूल ग्रन्थ प्राप्त:—श्रीयुत मुखिया ब्रजबल्लभ जी छोटी-सरकार वृन्दाबन।

दोहा–मुखिया ब्रजबल्लभ कृपा, भयौ जु सागर प्राप्त ।
ग्यारस मृगसिर कृष्ण कौ, भयौ जु लेख समाप्त ॥१॥
विंशति शत बारह अधिक, संवत कियौ निहाल ।
श्रीहरिवंश कृपा जु उर, मध्य निशा को काल ॥२॥
लेख लिखत अनुगत बढ्यौ, पद हूँ फुरे रसाल ।
निज हित पै किरपा भई, जिय हिय उमंग विशाल ॥३॥

पद १–डुबि रहौ ! व्रज प्रेमानन्द सागर । श्री वृन्दावन दास भरयौ सब रस सागर बिच गागर ॥१॥ दास्य सख्य वत्सल्य मधुर रस व्रज खेले नट नागर । उत रावलि बरसानैं नागरि राधा कियै उजागर॥२॥ श्रीहरिवंश कृपा फल लीला ललित लहरकौ आगर । निजहित रसिक होउगे काचे यह रस नहीं पिया गर ॥३॥

पद २–वन्दौं वृन्दाबन हित[1] चाचा । व्रज प्रेमानन्द सागर जिनि हित रूप कृपा बल राचा॥१॥ हित रसिकनि अनुगत अरु श्रीवन रसिकनि हित करि साँचा । रस माधुर्य्य प्रमाणित अनुभव युत वरन्यौ हित ढाँचा॥२॥ ललित [2]लौनि लीला बहु लखि लिखि सिद्ध भाव नहिं काचा । नित्य विहार प्राप्त करिवे कूँ मानौ प्रेम तमाचा ॥३॥ हौं बड़ भागी श्रीगुरु किरपा गह्यौ चरण मनु नाचा। जद्दिप नहिं अधिकारी निज तद्दिप यहि रस जाचा ।

पद ३–हौं कृतज्ञ वृन्दाबन दास। तुम्हरे व्रज प्रेमानन्द सागर कौ आस्वादन करि रस रास ॥१॥ लेख पुनः आवृति जाकी तीन बार भई सहज प्रकास । नित्य धाम हित किरपा तुम्हरी समुझि लही हौं दिन प्रतिपास ॥२॥ सहज दियौ निज हित कौं अनुगत श्रीहरिवंश विहार विलास। जन्म जन्म यहि मग नहिं चूकै जाँचत हौं करिकै विश्वास ॥३॥

पद ४–नन्द यसोमति कीरति भाँन । इनि लहि जन्म लह्यौ जग जस रस कहि न सकै सब तंत्र पुरान ॥१॥ सनकादिक नारद अज शंकर व्यास सुमति शुक सूत सुजान । कहि कहि सुनि सुनि त्रिपित भये नहिं मन मन अनुगत बुद्धि

---

[1]—ग्रन्थ कर्ता को चाचा जी करके सम्बोधन करते हैं। [2]—सलौनी ।

निशान ॥२॥ औरहुँ महतनि विनु मित वरणी सो महिमा सब रस की खान। अज हूं गाइ रहे गावहिंगे कल्प कल्प जुग जुग परमान ॥३॥ वरणित ब्रज प्रेमानन्द सागर बृन्दाबन हित दास महान। लिखि लिखि सो सागर निशि बासर अनुगत कृपा कियौ कछु पान ॥४॥ भव उद्धार हेतु पथ सेतू बिनु श्रम जीव लहैं कल्यान निज हित निज आस्वादन के मिस श्रीगुरु कृपा कियौ पद गान ॥५॥

पद—भाँन भँवन की रसमय ज्योती। कीरति की कीरति विस्तरनी की रति अखिल वंश रवि गोती ॥१॥ दाँम बिना बहिनी श्रीदाँमा सुख संपति सब सखियनि द्योती। चन्द्र वंश श्री कृष्णचन्द्र की चन्द्र हिये मणि शीतल स्रोती ॥२॥ भांननि नौ नन्दनि निकेत बसि नित नित नव नव मंगल प्रोती। यसुमति सुयस सीप संपुट में स्याम मोद हित अनुपम मोती ॥३॥ थिर चिर अखिल विश्व कन कन मँह च्वन च्वन रस माधुर्य्यं उदोती। सो समुझै चाखैं सो रस कन जिन सिर पै गुरु पद रज द्रौती ॥४॥ अखिल लोक सुर नाग ईश मुनि देवन कौं कहुँ सुलभ कि होती ? । जौ नहिं भांन भवँन अबतरती निजहित रसिकनि हिय कलधौती ॥५॥

पद— भाँन भँवन कौ भूषन राधा।

भांन पुरे की चिन्मय ज्योती, करति प्रकास अखंड अबाधा ॥१॥
भाँन वंश कौ भूतल माहीं, कियौ प्रदान सकल सुख साधा।
चन्द्रवंश यसुमति व्रजपति गृह, श्याम मोद विस्तार्यौ अगाधा ॥२॥
सकल सपचरी सखी सहेली, सुख साध्यौ जिहि पद आराधा।
निजहित रसिकन पदरज चिन्तत, श्रीहरिवंश भजन पथ लाधा ॥३॥

दोहा—वन्दौं श्री हित रसिक गुरु, नाम निकुंजनि दास।
प्रथम पुरोहित वंश निज, जन्म भूमि के खास ॥१॥
(श्री) जीतुलाल तव नाम शुभ, आइ शरण ब्रज धाँम।
युगल मधुर रस निष्ठ, अरु निष्ठ युगल के नाँम ॥२॥
निजहित पै किरपा करी, हित पथ प्रेरक आप।
रस माधुर्य्य उपासना, उपज्यौ हिये प्रताप[1] ॥३॥

---

[1]—शक्ति संचारक श्री सदगुरु देव श्री रामप्रताप जी शास्त्री।

'श्री ब्रज प्रेमानन्द सागर' का शुद्धि-पत्र

पृष्ठसं.	दो.चौ.सं.	अशुद्ध	शुद्ध
५	५२	अगं अगं	अँग अँग
२३	९	भाखनि	माखन
३०	५	ढोहा	ढोटा
३३	४०	बड़ा	बड़ी
३६	६३	भधि	मधि
५१	१०	गहा	गही
,,	१६	तच	तव
६३	१	षावस	पावस
६९	६२	मडल	मंडल
७४	३०	प्यारा	प्यारी
९२	३१	गोझूा	गोझा
,,	३४	झाझूो	झांझी
१०१	५९	घत	घृत
१२०	समाप्ती में	अठाहरवीं	सतरहवीं
१२४	३६	षरत	परत
१३२	४०	कुँववि	कुँवारि
१३४	६४	अग	अब
१४५	७६	कौकित	कौतिक
१५१	५८	किो	कियो
१५७	४१	टिप्पणि सं.६	७
१६०	टिप्पणी	३	२
१६९	११	लेहु	देहु
१८४	१६	गोत	गोती
१८५	३५	डोल	टोल
१८६	३८	टील	टोल
१९२	२२	ऐक	एक
२०८	८	छुवि	छबि
२११	४२	दूथ	दूध
२२२	८०	रग	रंग
२२४	४	प्रीपम	ग्रीषम
२३२	८६	तिकल	तिलक
२३८	३६	मोर	मोरे
२४०	६०	पटयौ	पढयौ
२४४	६	बुल	कुल
,,	७	घो	घोष
२५६	१८	बहत	बहुत
,,	२६	त	ते
२५७	३४	मिव	मित्र
२५६	५४	महत	कहत
२६०	६९	सनते	सुनत
,,	७३	हां	ह्वां
२६२	१२	भवँन	भवँन की
२६४	३२	अब सौ	अब तोसौ
२७३	८१	बड़	बड़े
२७४	८६	अभृत	अमृत
२७५	११	प्रेभुता	प्रभुता
२७६	२२	बहिर	बाहिर
२७८	४४	जच	जल
२८०	६४	उझल्यै	उझल्यौ
२९८	१०	एकगि	एकनि
३००	३०	चाचक	जाचक
३०१	४६	साध	साथ
३१५	१५	मंडध	मंडप
३२०	७६	टि. सं.-२	३
३२४	३२	मंलल	मंगल
३२९	२२	नप	नृप
३३२	५७	ठौ ै	ठौरै
३४०	३०	हरिपु	हरिष
३४४	७०	धन्व	धन्य
,,	७८	बुढयौ	बाढयौ
३५२	८५	गरी	गारी
३५०	७	दूलहू	दुलहू
३६३	४३	भामौ	भाग्यौ
३७०	११९	रुकग	रुकम

पृष्ठसं.	दो.चौ.सं.	अशुद्ध	शुद्ध
३७४	३२	कैं	करें
३७८	७२	वद्धर्नें	वर्द्धनें
३८३	४१	जूातु	जातु
३८८	८	जूोति	जोति
,,	९	अगिर	अजिर
,,	१२	जुनक	जनक
४००	३८	दबि	दर्बि
४०५	१७	कचन	कंचन
४०६	२४	सारा	सारो
४१०	७४	का	की
४१८	६३	मदरा	मदिलरा
४२५	४५	जसैं	जैसे
४२७	७०	गुग	जुग
४२८	७६	दर्ल्लभ	दुर्ल्लभ
४४३	४५	सादर	सोदर
४४४	६०	वार	वीर
,,	६१	मल्यौ	मेल्यौ
४४८	१०८	सममानैं	सनमानै
४५६	७५	बुद्धि	बुद्धि
४५७	टिप्पणी	श्याम	श्यामे
४५९	११	सवोपरि	सर्वोपरि
४६४	टिप्पणी	धाखाबाजा	धोखाबाजी
४६६	८२	ह्यां	ह्वां
४७६	८६	ब्रकराज	ब्रजराज
४८२	१२	पुराये	पुरायौ
४८७	६८	जोरा	जोरी
४८८	८०	द	है
५०५	५३	विशेषा	विशेषी
५०६	९६	हारा	हारी
५१०	१०२	पानी	पाती
५१२	१०	लानन्द	आनन्द
,,	१४	विहार	विहार टि.
५१५	४६	कौंन	कौन टि. २
५१६	५४	ढेरी	ढोरी २
,,	५६	पराकम	पराक्रम
५१८	टिप्पणी	५ सं०	२ सं०
५३५	२	वृषभांत	वृषभांन
५३९	४२	ठाढा	ठाढ़ी
,,	४५	साभा	सोभा
५४१	६३	निरसत	निसरत
५५६	१२४	हिस	हित
५६२	६३	भँभर	भँमर
५६३	८१	छछ्छासुर	बच्छासुर
५६४	९४	कृष्ध	कृष्ण
५६५	१००	जै जें	जै जै जै
५६६	१०९	जसुमति	जसुमति को
५६७	१२३	कृपाबली	कृपाअतिबली
,,	,,	रूक	रूकै
५६८	१३५	वद्धनी	वर्द्धनी

प्रकाशक का निवेदन—पंक्ति ५ में रचियिता के स्थान में रचियता पाठ है।

५३८ पृष्ठ में चौ० ३३ के प्रथम चरण के दूसरे पाद की शुद्धि इस प्रकार करके पढ़ें। "ऐसी बात सुनी मैं कान"